

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176104

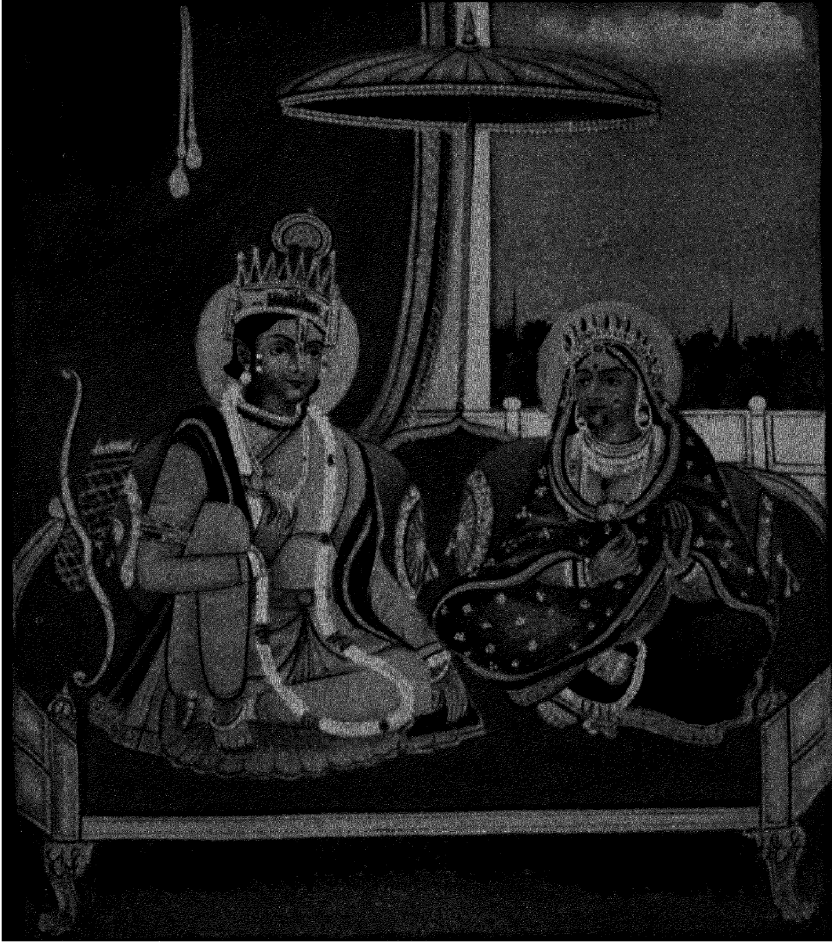
UNIVERSAL
LIBRARY

श्रीरामचन्द्राय नमः

श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

❀ रामायण ❀

आठो कारण्ड



प्रकाशक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,
भार्गव बुकडिपो, चौक, बनारस ।

पुस्तक मिलने का पता — रामनारायण लाल बुक्सेलर,
सकरकन्द गली, बनारस ।

मूल्य ८)

श्रीरामचन्द्राय नमः

श्री १०८ श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

रामायण

आठो काण्ड

८ तीनरंगा चित्र सहित

तुलसीदास जी का जीवन-चरित्र, माहात्म्य, रामकलेवा,
क्षेपक, तथा लवकुश काण्ड सहित ।

प्रकाशक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस ।

पुस्तक मिलने का पता—रामनारायण लाल बुकसेलर,
सकरकन्द गली, बनारस ।

सन् १९४७

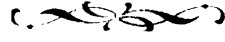
सोल डिस्ट्रीब्यूटर
श्री गंगा पुस्तकालय,
गायघाट, बनारस

प्रथमावृत्ति ७,०००

मुद्रक व प्रकाशक
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

अथ रामायणविषयानुक्रमणिका ।



बालकाण्ड (१)

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
मंगलाचरण	१	मखशाला गमन	११२
कथाप्रसंग	२	राम लपन छवि वर्णन	११३
सती सम्मोह	२८	सीय आगमन	११५
दक्ष यज्ञ	३२	धनुष भंग	११८
दक्ष यज्ञ विध्वंस	३३	जयमाला पहिराना	१२०
पारवती तपस्या	३६	परशुरामागमन	१२२
काम कौतुक	४१	” लक्ष्मण संवाद	१२४
रति वरदान	४३	” राम संवाद	१२७
शिव विवाह	४५	” मोह भंग	१२८
शिव पार्वती संवाद	५०	निमंत्रण पत्रिका प्रेषण	१२९
नारद मोह	६०	बरात की तैयारी	१३२
मनु सतरूपा तपस्या	६६	” गमन	१३४
” ” ” वरदान	६९	दशरथ जनक मिलाप	१३६
प्रतापभानु की कथा	७०	अगवानी	१३७
रावण दिग्विजय	८१	राम सीता विवाह	१४०
ब्रह्मा का पृथ्वी को धैर्य देना	८३	पाँव पखारनी	१४३
अग्नि का चरु प्रदान करना	८६	लक्ष्मणादि विवाह	१४५
नामकरण	८९	बरात विदाई	१५०
रामजी का बालरूप वर्णन	९०	सीय विदाई	१५१
श्रीराम बालचरित्र	९१	बारात गमन	१५३
विश्वामित्र जी की रामयाचना	९३	वरपरिच्छिन	१५४
अहिल्या उद्धार	९५	बरातियों की विदाई	१५६
राजा सगर की कथा	९७	वधुप्रवेश	१५७
गंगावतरण	१००	वसिष्ठजी की धर्मकथा	१५८
जनकपुर वर्णन	१०२		
जनकपुरावलोकन	१०४	अयोध्याकाण्ड (२)	
सीताराम प्रथम दर्शन	१०८	राजा दशरथ की अभिलाषा	१६१
गिरिजा पूजन	११०	श्रीरामजी का तिलक	१६३
		मंथरा का श्लोभ	१६६

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
मंथरा कैकेई सम्वाद	१६७	भरत बिदाई	२७८
कैकेई का कोप	१६६	रामजी का भरत स्नेह वर्णन	२८०
दशरथ का कैकेई को समझाना	१७१		
दशरथ का शोक	१७३	अरण्यकाण्ड (३)	
रामजी को वनवास	१७६	जयन्त का सीता को चोंच मारना	२८१
अयोध्यावासियों का विलाप	१७८	अत्रि मुनि और राम संवाद	२८२
कौशल्या का सदुपदेश	१८१	अत्रि मुनि का राम स्तुति करना	२८२
रामजी का सीता को उपदेश	१८३	श्रीराम सुतीक्ष्ण मिलन	२८७
श्रीसीता संवाद	१८५	सूर्पणखा नासा भंग	२६२
राम लक्ष्मण संवाद	१८७	खरदूषणवध	२६४
सुमित्रा का लक्ष्मण को उपदेश	१८६	सूर्पणखा का रावण को प्रेरित करना	२६५
वनयात्रा	१६९	सीताजी का अग्निप्रवेश	२६६
राजा निपाद का आतिथ्य	१६४	कपटमृगवध	२६८
रामजी का सुमंत को समझाना	१६६	श्रीसीताहरण	२६६
रामजी का गंगापार होना	१६८	जटायु द्वारा रामस्तुति	३०१
प्रयाग माहात्म्य	२००	नवधा भक्ति वर्णन	३०३
यमुनातटवासियों को श्रीराम दर्शन	२०२	पंपासर वर्णन	३०३
ग्रामीण स्त्रियों को राम परिचय	२०४	नारदजी का भ्रम निवारण	३०६
ग्रामवासियों का पङ्कतावा	२०५		
वाल्मीकिराममिलन	२०७	किष्किन्धा काण्ड (४)	
चित्रकूट निवास	२१०	सप्त ताल वेध	३१४
सुमंत का विपाद	२१४	श्रीराम बालि संवाद	३१५
„ दशरथ संवाद	२१६	बालि विनय	३१६
दशरथजी की मृत्यु	२१८	फटिक शिला पर वर्षा दृश्य	३१८
भरत का अयोध्या लौटना	२१६	सुग्रीव पर श्रीराम कोप	३२०
भरतजी का माताओं से मिलना	२२०	वानर सैन्य का एकत्रित होना	३२१
भरत का मंत्रियों को समझाना	२२२	श्रीसीताजी की खोज	३२३
भरत मनावन	२२४	बानरी दल संपाती मिलन	३२६
सुनैना कौशल्यादि मिलन	२६४	हनुमानजी की जन्मकथा	३२८
जनक भरत संवाद	२६६		
भरत विनय	२६६	सुन्दर काण्ड (५)	
राम भरत संवाद	२७४	हनुमानजी का समुद्र लॉघना	३३१
श्रीराम से भरत की प्रार्थना	२७६	हनुमान लंका प्रवेश	३३३

विषयानुक्रमणिका

५

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
रावण सीता संवाद	३३५	रावण का युद्ध संचालन	४४९
हनुमानजी का प्रकट होना	३३७	राम रावण युद्ध	४५१
श्रीहनुमान रावण संवाद	३४०	रावण वध	४६४
लंकादहन	३४३	विभीषण तिलक	४६६
राम को सीता का सन्देश सुनाना	३४५	सीताजी की अग्नि परीक्षा	४६८
श्रीरामजी का लंकाप्रस्थान	३४७	दशरथ आगमन इन्द्र स्तुति	४६९
विभीषण रावण संवाद	३४८	शिव तथा विभीषण स्तुति	४७१
विभीषण श्रीराम शरणागति	३५०	श्रीरामचन्द्रादि का पुष्पक यान से गमन	४७२
रामजी का निज स्वभाव वर्णन	३५२		
लक्ष्मणजी का रावण को पत्र	३५४	उत्तर काण्ड (७)	
शुक का रावण को उपदेश	३५४	श्रीहनुमान भरत मिलन	४७७
		राम भरत मिलन	४७८
लङ्का काण्ड (६)		रामराज्याभिषेक	४८१
श्रीहनुमान गोवर्धन वार्ता	३५९	वेदों द्वारा रामस्तुति	४८३
लंका में श्रीराम सेना	३६१	बानरों की विदाई	४८६
प्रहस्त का रावण को शिक्षा देना	३६३	राम राज्य में सुकाल	४९०
रावण का सभा में मुकुट गिरना	३६५	सनकादिकों को रामदर्शन	४९२
श्रीरामजी के सेनानायक	३६७	संतों का लक्षण वर्णन	४९४
अंगद रावण संवाद	३७१	श्रीरामजी के उपदेश से प्रसन्नता	४९६
मंदोदरी का रावण को समझाना	३७९	श्रीराम कथा श्रोताओं के लक्षण	४९८
वानर और राक्षसों का युद्ध	३८१	गरुड़ कागभुशुण्डि कथा	५०१
मेघनाद का युद्ध करना	३८५		
लक्ष्मणजी को शक्ति से मूर्छा	३८७	लवकुश काण्ड (८)	
कुम्भकरण का युद्ध	३९२	ब्राह्मण पिता के रहते पुत्र की मृत्यु	५४६
मेघनाद लक्ष्मण युद्ध	३९६	श्रीराम प्रति रजक की ताहिना	५४७
मेघनाद वा यज्ञ विध्वंस	४९७	श्रीसीताजी का त्याग	५५०
मृत मेघनाद की भुजा	३९९	अश्वमेध यज्ञ	५५२
सुलोचना का विलाप	४००	लवणासुर शत्रुघ्न संग्राम	५५७
सुलोचना का राम शरण जाना	४०४	लवकुश का अश्व बाँधना	५६२
सुलोचना का सती होना	४०८	लवकुश भरत संग्राम	५६४
अहिरावण का कपट करना	४०९	श्रीराम लवकुश परिचय	५६८
हनुमान मकरध्वज युद्ध	४१३	लवकुश की विजय	५७०
अहिरावण वध	४१५	धर्मराज का श्रीरामजी से मिलना	५७१
नारान्तक की कथा	४१७	श्रीरामजी की राज व्यवस्था	५७२
		श्रीरामजी का भक्तों सहित वैकुण्ठधाम जाना	५७४

बंदउँ सब के पद कमल, सदा जोरि जुगपानि ॥
 देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ।
 बंदउँ किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व ॥७॥

आकर चारि लाख चौरामी * जाति जीव जल-थल-नभ-वासी ॥
 सीय-राम-मय सब जग जानी * करउँ प्रनाम जोरि जुगपानी ॥
 जानि कृपा कर किंकर मोहू * सब मिलि करहु छाँड़ि छल छोहू ॥
 निज बुधिवल भरोस मोहि नाहीं * तातें बिनय करउँ सब पाहीं ॥
 करन चहउँ रघुपति-गुन-गाहा * लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥
 सूझ न एकउ अंग उपाऊ * मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
 मति अति नीच ऊँच रुचि आछी * चहिय अमिय जग जुरइन आछी ॥
 छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई * सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥
 जौ बालक कह तोतरि बाता * सुनिहहिं मुदितमन पितु अरु माता ॥
 हँमिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी * जे पर-दूषन-भूषन—धारी ॥
 निज कबित्त केहि लाग न नीका * सरस होउ अथवा अति फीका ॥
 जे परभनिति सुनत हरषाहीं * ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥
 जग बहु नर सुर-सरि-सम भाई * जे निज बाढि बढहिं जल पाई ॥
 सज्जन सुकृत-सिंधु-सम कोई * देखि पूर बिधु बाढइ जोई ॥
 दो०-भाग छोट अभिलाषु बड़, करउँ एक बिस्वास ।

पैहहिं सुख सुनि सज्जन सब, खल करिहहिं उपहास ॥८॥

खलपरिहास होइ हित मोरा * काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥
 हँसहिं बक दादुर चातकही * हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥
 कबित रमिक न राम-पद-नेहू * तिन कहँ सुखद हास रस एहू ॥
 भाषाभनिति भोरि मति मोरी * हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी ॥
 प्रभु-पद-प्रीति न सामुझि नीकी * तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी ॥
 हरि-हर-पद-रति मति न कुतरकी * तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुबरकी ॥

राम-भगति-भूषित जिय जानी * सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥
 कबि न होउँ नहिं बचनप्रबीनू * सकल कला सब बिद्याहीनू ॥
 आखर अरथ अलंकृति नाना * छंद प्रबंध अनेक बिधाना ॥
 भावभेद रसभेद अपारा * कबित-दोष-गुन बिबिध प्रकारा ॥
 कबित बिबेक एक नहिं मोरे * सत्य कहउँ लिखि कागज कोरे ॥
 दो ०--भनिति मोरि सब गुन-रहित, बिस्वबिदित गुन एक ।

सो बिचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्हके बिमल बिबेक ॥६॥

एहि महुँ रघुपति नाम उदारा * अति पावन पुरान-श्रुति-सारा ॥
 मंगल-भवन अमंगल-हारी * उमासहित जेहि जपत पुरारी ॥
 भनिति विचित्र सु-कबि-कृत जोऊ * रामनाम बिनु सोह न सोऊ ॥
 विधुवदनी सब भाँति सँवारी * सोह न बसन बिना बर नारी ॥
 सब गुन-रहित कुकबि-कृत बानी * राम-नाम-जस-अंकित जानी ॥
 सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही * मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥
 जदपि कबित रस एकउ नाहीं * रामप्रताप प्रगट एहि माहीं ॥
 सोइ भरोस मोरे मन आवा * केहि न सुसंग बड़प्पनु पावा ॥
 धूमउ तजै सहज करुआई * अगरुप्रसंग सुगंध बसाई ॥
 भनिति भदेस वस्तु भलि बरनी * रामकथा जग मंगलकरनी ॥
 छंद--मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।
 गति कूर कविता सरित की ज्यौँ सरित पावन एथ की ॥
 प्रभु-सुजस-संगति भनिति भलि होइहि सुजन-मन-भावनी ।
 भवअंग भूति मसान की सुमिरत सोहावनि पावनी ॥
 दो ०--प्रिय लागिहि अति सबहि मम, भनिति राम-जस-संग ।
 दारु बिचारु कि करइ कोउ, बंदिय मलय प्रसंग ॥
 स्याम सुरभि पय बिसद अति, गुनद करहिं सब पान ।

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी कृत

❀ रामशलाका प्रश्नावली ❀

सु	प्र	उ	वि	ही	सु	ग	व	सु	नु	वि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रं	वस	है	मं	लं	न	ल	य	न	अ
जसु	सा	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	वे	नो
त्य	र	न	कु	जा	म	रि	र	र	आ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सो	जे	ई	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
मि	र	त	र	स	ई	ह	व	व	प	वि	स	य	स	तु
म	का	।	र	र	मा	मि	मी	म्हा	।	जा	हू	हा	।	जू
ता	रा	रे	रा	ह	का	फ	षा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	का	मि	गा	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	म	स	रि	ग	द	न	प	म	खि	जि	मनि	त	जं
सि	सु	ध	न	का	मि	ज	रं	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	।	न	व	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ठा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	हू	सु	म्ह	रा	र	स	हि	र	त	न	खा	।	जा	।
र	सा	।	ला	धी	।	री	ज	हू	ही	पा	जू	ई	रा	रे

दोहा—श्री गणेश को सुमिरि के, शारद को धरि ध्यान ।

लिखित प्रश्न की रीति सो, उत्तर लीजो जान ॥ १ ॥

इसके प्रश्न करने की यह रीति है कि प्रश्नकर्ता श्रीरामचन्द्रजी का हृदय में ध्यान कर के किसी कोष्ठक में अँगूली धरे फिर उस अक्षरको किसी कागज अथवा पट्टी पर लिखे और फिर उस अक्षर से दसवाँ २ अक्षर यहाँ तक लेकर लिखे जिस कोष्ठक पर अँगूली धरी थी। ऐसा करने से एक चौपाई बनेगी उसी से अपना प्रश्न का फल जानना चाहिये परन्तु इतना ध्यान रहे कि कहीं चौपाई ठीक निकलती है और कहीं अक्षर ऊपर के नीचे और नीचे के ऊपर भी हो जाते हैं सो यथा योग्य मिला लेने चाहिये उसमें कुछ कठिनता नहीं है पढ़ने से स्पष्ट दीख पड़ते हैं और कोष्ठक में जहाँ “।” ऐसा संकेत है वह दीर्घ का है, यदि बीच की गणना में आ पड़े तो कुछ काम नहीं, परन्तु जिस अक्षर से दसवीं संख्या पर हो उस अक्षर को दीर्घ करना चाहिये।

उदाहरण (१) पहिले कोष्ठक पर हाथ धरा तो प्रथम “सु” आया फिर दशम २ अक्षर लेने से यह चौपाई बनी “सुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजहिं मन कामना तुम्हारी ॥” अब इस चौपाई में “हमारी” का अक्षर और “तुम्हारी” का अक्षर कोष्ठक में ह्रस्व है इनसे १० वीं संख्या पर “।” है इसलिए दीर्घ कर दिए।

श्रीगणेशाय नमः

रामायण माहात्म्य

प्रारम्भः

दोहा-गुरु हरिहर गुण ईशधी, सुमिरों तुलसीदास ।

रचत गोपाल माहात्म्य शुचि, रामायण सुखरास ॥ १ ॥

रामायण सुरतरु की छाया * दुख भये दूरि निकट जो आयौ ॥

सप्त काण्ड स्तम्भ सुहाई * दोहा लघु शाखा छवि छाई ॥

शुचि सोरठा सटीका कोई * पत्री बहु चौपाई जोई ॥

छन्दन की शोभा अति रूरी * जनु नवीन अंकुर छवि पूरी ॥

अक्षर सुमन रहे गहगाई * अति अद्भुत सुगन्ध कविताई ॥

विविध प्रकार अर्थ सोई फल * श्रोता सुमति स्वादु जाने भल ॥

भक्ति ज्ञान वैराग्य सरस रस * बीज दोग्य निर्गुण सर्गुण अस ॥

मुनि भुशुंडि शिव प्रथमहिं गाई * सोइ गाई जगहेतु गोसाई ॥

दोहा-तुलसीदास रामायण, नहिं करते परचार ।

कलिके कुटिल जीव ये, को करतो निस्तार ॥ २ ॥

रामायण सुरधेनु समाना * दायक अभिमत फल कल्याना ॥

गुणसमूह कवि सकै कौन गनि * जासु प्रभाव सरिस चिंतामनि ॥

रामअयन रामायण आही * बणि पार पावै को ताही ॥

रामायण अद्भुत फुलवारी * राम भ्रमर भूषित रुचि भारी ॥

श्री रामायण जेहि घरमाहीं * भूत प्रेत तहँ भूलि न जाहीं ॥

नहिं गति तहाँ दरिद्रहु केरी * जहँ श्री महावीर की फेरी ॥

यन्त्र मन्त्र सगुनौती जेती * रामायण महँ जानिय तेती ॥

प्रीति करै रामायण माहीं * तेहि सम भाग्यवन्त कोउ नाहीं ॥

दोहा-रामायण सम नहिं कोऊ, सब उपमा उपमेय ।

उपमा भाषा और की, कैसे कोउ कवि देय ॥ ३ ॥

त्रेता महँ भयो वालमीकि मुनि ❀ तेकलियुग भये तुलसिदास पुनि ॥
 शत करोरि रामायण भाषी ❀ इन मथि सार सुसूक्ष्म राखी ॥
 प्रथम काण्ड है बाल रसीला ❀ जन्म विवाह राम की लीला ॥
 द्वितिय अयोध्या कांड प्रकासा ❀ पितु आज्ञा रघुवर वनवासा ॥
 पुनि अरण्य किष्किधा भाष्यो ❀ तहँ सुग्रीव शरण महँ राख्यो ॥
 सुन्दर सुन्दरकाण्ड सुहावन ❀ युद्धकाण्ड महँ मारेउ रावन ॥
 सप्तम उत्तर परम अनूपा ❀ उत्सव प्रभु कौशलपुर भूपा ॥
 तुलसीकृत रामायण येती ❀ विविध प्रकार कथा है केती ॥
 दोहा-जग वारिध को पार नहिं, ऐसो है फैलाव ।

तुलसीदास कृपा करी, रचि रामायण नाव ॥ ४ ॥

श्री रामायण स्वर्ग निसेनी ❀ भक्तजनन कहँ आनँद देनी ॥
 श्री रामायण सतगुण माता ❀ यज्ञ जाहि पढ़ि होहिं सुज्ञाता ॥
 पाप समूह तूल की रासी ❀ रामायण धनंज्य कनकासी ॥
 मोहपुंज तमकिरणि तमारी ❀ काम अग्निकहँ शीतल वारी ॥
 रामायण शशि किरणि सुहाई ❀ सन्त चकोरन कहँ सुखदाई ॥
 धन्य धन्य श्री तुलसिदास धनि ❀ जगहित रामायण राखी भनि ॥
 नीच ऊँच जेते नरनारी ❀ श्रीरामायण सबकहँ प्यारी ॥
 रामायण सो नेह लगावै ❀ अधन अपत्य सो वित सुत पावै ॥
 दोहा--रामायण सो नेह किय, सिद्ध होत सब काम ।

है सबको कल्याणदा, पढ़ सुन लहु विश्राम ॥ ५ ॥

निगमादिक ते ब्रह्म कमंडल ❀ रामायण स्थित गंगाजल ॥
 भागीरथ सम तुलसिदास पुनि ❀ भाषा प्रचुर कीन जनु सुरधुनि ॥
 होति रहै एक ठाँव रामायण ❀ तेहि मग आवत पाप परायण ॥
 कल्लुक कानमहँ पड़ि गइ बाता ❀ चलत पंथ कहँ भयो प्रपाता ॥
 गिरतहिं तुरत छूटि तनु गयऊ ❀ तहँ अद्भुत इक अचरज भयऊ ॥
 ताहि लेन आये यमदूता ❀ निज पाशन वाँध्यो मजबूता ॥
 अति आतुर हरिजन तहँ आये ❀ छीन लीन बहु त्रास दिखाये ॥
 रामायण पै सुनि यह काना ❀ लै जैहँ वैठारि बिमाना ॥

दोहा--रामायण परताप सो, गयो पारषद साथ ।

दूत चले यमके सदन, खीभूत मीजत हाथ ॥ ६ ॥

निज दूतन देखेउ बिलखाता * पूछा भानुतनय कुशलाता ॥
 किन तुमकहँ दीन्हों दुख भाई * चार चतुर तुम देहु बताई ॥
 कहा कहौं तुमसों महाराजा * पूछत तुमाह न आवत लाजा ॥
 कोउ यक मृत्यु लोक बड़ भागी * तुलसीदास भयो वैरागी ॥
 रामकथा रामायण भाखी * सो लोगन घर घर धरि राखी ॥
 जे जे विविध भाँति कै पापी * मांसाहारी और सुरापी ॥
 ते सब मिलि रामायण सुनिहैं * कहिहैं लिखिहैं पढ़िहैं गुनिहैं ॥
 ते नहिं ऐहैं सदन तुम्हारे * सत्य सत्य नृप वचन हमारे ॥

दोहा--लेहु पाश ये आपने, राखहु अपने पास ।

अमल तुम्हारो उठो अब, सुनि यम भये उदास ॥ ७ ॥

अपनी व्यथा कहन नहिं पाये * तब लगि दूत और तहँ आये ॥
 कहन लगे रविसुत सो रोई * अब चाकरी न हमसो होई ॥
 जगमें कहूँ न हुक्म तिहारो * यह सुनि यम जकिरहेउ विचारो ॥
 अहो दूत मोहिं कहौ बुझाई * किन दीन्हों मम हुकुम उठाई ॥
 कहा कहौं कलु कही न जाई * तुलसिदाम इक भयो गोमाई ॥
 तिनकी रामायण जग व्यापी * तेइ कीन्हें पवित्र सब पापी ॥
 मेहम एक अधम गृह माहीं * अति दुख भयो जात कहि नाहीं ॥
 तहँ देखेउ इक कपि बलवाना * उग्ररूप सदृश हनुमाना ॥

दोहा--प्राणन को गाहक भयो, तव हम भये अति दीन ।

शरण शरण तव शरण है, अस्तुति बहुविधि कीन ॥ ८ ॥

तवतो है प्रसन्न कपिराई * हम सन पुनि परतीति कराई ॥
 धरी होय रामायण जहवाँ * कबहूँ भूलि न जायउ तहवाँ ॥
 जे श्रोता वक्ता रामायण * कबहूँ मति जायहु तेहि आयन ॥
 अस हमसों कपि शपथ कराई * तव छूटन पायो सुनु राई ॥
 सुनि यमराज बहुत घबराए * निकट बुलाय दूत समझाए ॥
 नाम रूप गुण कथा रामकी * कियउ न फेरी तौन धामकी ॥
 अजामील की सुरति करौजू * और न कलु चितमाँझ धरौजू ॥

थकि सो रहे दूत सुनि बानी ❀ धनि श्रीरामायण महरानी ॥
दोहा--रामायण तेजश्वरी, सत भाषा शिर मौर ।

यमपुर जाको शोर है, समताको नहिं और ॥ ९ ॥

पातक महा लग्यो किन होई ❀ रामायण सुनि रह्यो न कोई ॥
चाहै चारो फल का साधन ❀ करु रामायण को आराधन ॥
रामायण सुनि पाप पराने ❀ जिमि हिम ऋतु महँ मशकनसाने ॥
कलियुग तरन उपाय न कोई ❀ राम भजन रामायण सोई ॥
कथा रामायण की जहँ होई ❀ सो गृह गृह मति जानै कोई ॥
सो घर तीर्थ रूप सम भाँमै ❀ तहाँ गये सब पातक नाँमै ॥
पाप वास देही महँ तब लग ❀ श्रीरामायण सुनै न जब लग ॥
उदय पुरानी पुण्य होय जब ❀ रामायण महँ मन लागे तब ॥
दोहा--रामायण के सुनतही, छूटि जाय प्रेतत्व ।

जाके पढ़े सुने ते, सूभत है परतत्व ॥ १० ॥

को जाने रामायण को रस ❀ यह तो है सन्तन को सरबस ॥
बनज सनेही अलिगण जैसे ❀ भक्तन प्रिय रामायण तैसे ॥
त्यागि भक्तजन ग्रन्थ अनेकू ❀ धारण किये रामायण एकू ॥
भक्तन कहँ है भक्ति अनूपा ❀ रसिक जनन कहँ है रस रूपा ॥
ज्ञान मयी तिन कहँ जे ज्ञानी ❀ तुलसी तारण तरण बखानी ॥
काम क्रोध रुज बश संसारा ❀ औषधि रामायण अनुसार ॥
रामायण महँ नेह न जाको ❀ जीवत शवसम जानिय ताको ॥
रामायण जाकहँ प्रिय नाहीं ❀ वृथा जन्म ताको जगमाहीं ॥
दोहा--रामायण अमृत कथा, लेत न ताको स्वाद ।

तिनको निश्चय जानिये, हैं पूरे दनुजाद ॥११॥

रामायण बिधि कहौ विशारद ❀ सनत्कुमार सो भाषी नारद ॥
सहित विधान सुनै जो कोई ❀ सहज मुक्ति पावै नर सोई ॥
कार्तिक माघ चैत चितलाई ❀ नवदिन कहै कथा सुखदाई ॥
ब्रह्ममुहूर्त समय हो जवहीं ❀ कर्म करै शौचादिक तबहीं ॥
करै दन्तधावन लट जीरा ❀ मज्जन करै धरै मन धीरा ॥

पुनि रामायण पुस्तक अरचै * प्रेम सहित गंधादिक चरचै ॥
 अन्नमो नारायण मंत्र भनीजै * तीन आहुती होम करीजै ॥
 मन बच कर्म पाप तनु केरे * छूटि जात नहिं आवत नेरे ॥

दोहा--यहि विधि रामायण विधिहि, जे करिहहिं चितलाय ।

राम धाम ते जाइहैं, संश्रित दुखहिं मिटाय ॥१२॥

जो कछु कारज कहँ कोई जाई * सुमिरि चले सो यह चौपाई ॥
 प्रविशि नगर कीजै सब काजा * हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
 जो विदेश चाहै कुशलाई * तो यह सुमिरि चलै चौपाई ॥
 रथ चढ़ि सीय सहित दोउ भाई * चले बनहिं अवधहिं शिरनाई ॥
 भूत पिशाच जाहि जब लागे * यह सोरठा पढ़ै सो भाग ॥

सोरठा-- बन्दों पवनकुमार, खल बन पावक ज्ञानघन ।

जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचाप धर ॥१॥

शत्रु निवारण चहौ जो भाई * भावसहित जपु यह चौपाई ॥
 जाके सुमिरण ते रिपुनाशा * नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा ॥
 यह चौपाई जपै जो कोई * अन्न आदि दुख ताहि न होई ॥
 विश्व भरण पोषण कर जोई * ताकर नाम भरत अस होई ॥
 जो उत्सव चह विविध प्रकारा * करु यह चौपाई अनुसार ॥
 जबते राम व्याहि घर आये * नित नव मंगल मोद बधाये ॥
 जो चाहौ जगमहँ जय भाई * स्थिर हवै जपु यह चौपाई ॥
 सखा धर्ममय अस रथ जाके * जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
 है सबभाँति कार्य जगमाहीं * रामायण सो सब है जाहीं ॥

दोहा--सकल भाँति मनकामना, यह दोहा दातार ।

रामायण महँ खोजकरि, करु या को अनुसार ॥१३॥

वह शोभा सु समाज सुख, कहत न बनै स्वगेश ।

वरणै शारद शेष पुनि, सो रस जान महेश ॥१४॥

वरणों एक रुचिर इतिहासा * तुलसीदास जो कीन्ह तमासा ॥
 द्राविड़ अरु काशी महिपाला * कहुँ एकत्र रहे कछु काला ॥
 अतिशय प्रीति बढी दुहुँ माहीं * मनमें कपट लेश कछु नाहीं ॥

गर्भवती दोऊ नृपरानी * चली बात दुहुँहुन कहि डारी ॥
 द्राविड़ कही बात सुखरासी * सुनहु नृपति काशी के वासी ॥
 जन्म तव सुत सुता हमारे * अथवा मम सुत सुता तिहारे ॥
 अस संयोग होइ जो नाहू * हम तुम करहि विवाह उझाहू ॥
 सोहँ करि यह बात दृढ़ाई * संतत प्रीति रही अब भाई ॥
 सुखद समय आयो जब कोऊ * निज २ भवन गये नृप दोऊ ॥
 सोरठा--कन्या भइ दुहुँओर, जानो जात न दैवगति ।

कहि पठयो सुत मोर, द्राविड़ दूत काशी गये ॥ २ ॥

यह छल होत भयो जिहिलाई * सो वह हेतु कहीं मैं गाई ॥
 द्राविड़ पति निज गृह आओ जब * रानीसो अस कहत भयो तब ॥
 जो होई कन्या दुहुँ ओरा * तो मैं प्राण तजब बरजोरा ॥
 सुनि रानी राजा मुख बानी * मनमहँ बहुत भाँति भयमानी ॥
 उपरोहित को लिहिसि बुलाई * नृप दुराय यह बात बुझाई ॥
 मम अहिवात तुम्हारे हाथा * नहिं तो प्रभु मैं होव अनाथा ॥
 रानी द्रव्य दीन नहिं थोरी * भइ मायावस द्विज मति भोरी ॥
 सेवक सेवकायन वश कीन्हेसि * आदर मान दान बहु दीन्हेसि ॥
 दोहा--सेवक एक दिन तो तेहि, बाराणसी बसाय ।

तेहिते पाइसि खवरि सब, तब यह किहिसि उपाय ॥१५॥

पुत्र नाम धरि गुप्त रखायो * द्वादश वर्ष न द्वारे आयो ॥
 विदुषण कहेउ न कोऊ पेखे * ब्याह समय सब कोऊ देखे ॥
 मित्र मिलन हित चित अनुराग्यो * नेगी पठै ब्याह पुनि माग्यो ॥
 अति आनन्द चल्यो मग बेगी * काशी नृप पहुँ आयो नेगी ॥
 नृप मन मुदित पत्रिका बाँची * लै आवो बरात रँगराँची ॥
 आयो ब्याहन द्राविड़ राजा * खुली बात उपजी अति लाजा ॥
 क्रोधातुर काशी अवनीशा * कह कटिहों द्राविड़ कर शीशा ॥
 यह सुनि द्राविड़ अधिक डेराने * निज छल समझि २ पछिताने ॥
 दोहा--अति सभित अति दीन हवै, गये जहँ तुलसीदास ।

पाहि पाहि कहि पाँय परि, कहेउ करो दुख नास ॥१६॥

तव काशी नृप कहँ बुलवायो * तुलसीदास हित करि समुझायो ॥
 सुत कहि सुता जो व्याहन आयो * होय पुत्र तो होय बधायो ॥
 जो यह पुत्र होय महाराजा * करहिं विवाह साजि सब साजा ॥
 तुलसीदास वेदि बिरचार्इ * तहँ गणेश गौरी पधरार्इ ॥
 सिंहासन पै धरि रामायण * नव दिन भर कीन्ही पारायण ॥
 जो कन्या वर वेष बतायो * ताही को सन्मुख बैठायो ॥
 वक्ता आप सो श्रोता भई * दुनियाँ तहँ देखन सब गई ॥
 कथा सकल जब बाँचि सुनार्इ * तासु शीश कर धरेउ गोसार्इ ॥
 दोहा-अरु यह चौपाई पढ़ी, रामहिं सुमिरि प्रसन्न ।

तिहि अवसर वर ह्वै गयो, श्रीरामायण धन्य ॥१७॥

मंत्र महामणि विषय व्यालके * मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
 रामायण जब कही गुसार्इ * प्रगटन हित काशी फिरि आई ॥
 आदर कीन्ह न पंडित काऊ * कहँ जो हम सो करौं उपाऊ ॥
 जेहि स्थान कहौं तहँ जाहू * पोथी अब न देखावहु काहू ॥
 श्री आनन्द कान्ह ब्रह्मचारी * हम शिर मौर सुमहिमा भारी ॥
 जो याको वे आदर करिहँ * तो हम सब लै शीशहिं धरिहँ ॥
 गये आनन्द कान्ह पहुँ तत्पर * करत प्रशंसा प्रसन्न परस्पर ॥
 पोथी की चर्चा पुनि कीन्ही * देखन हेतु सो लै धरि लीन्ही ॥
 कछु दिन पढ़ी सहित अनुरागन * गये गुसार्इ पोथी माँगन ॥
 दोहा-पोथी दइ अरु अस कहेउ, होई आदर लोक ।

निजप्रमाण करि लिखि दियो, यह अद्भुत श्लोक ॥ १८ ॥

श्लोक--आनन्दकानने ह्यस्मिन् जंगमस्तुलसीतरुः ।

कविता मंजरी यस्य रामभ्रमरभूपितः ॥ १ ॥

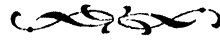
छन्द-धनि धन्य तुलसीदास जिन जग हेतु रामायण भनी ।

माहात्म्य अमित न कहि सकौ रस विषय महँ मो मतिसनी ॥

निज बुद्धि के अनुसार कहि गोपाल सब गुरु की दया ।
रघुवीर यशकी अधिकता श्रीसन्त जन करिहहिं मया ॥

दोहा--श्रीमत तुलसीदासजी, ह्वै प्रसन्न वर देहु ।
रामायण माहात्म्य सो, हरिजन करहिं सनेहु ॥१६॥

❀ इति रामायण माहात्म्य समाप्त ❀



आरती श्रीरामायणजी की

आरति श्री रामायण जी की । कीरति कलित ललित सियपीकी ॥ टेक ॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । बालमीक विज्ञान विशारद ॥
शुकसनकादि शेष अरु सारद । वरणि पवनसुत कीरति नीकी ॥ १ ॥
संतत गावत शंभु भवानी । औघट सम्भव मुनिवर ज्ञानी ॥
व्यास आदि कविपुंग बखानी । काग भुशुण्ड गरुड़ के ही की ॥ २ ॥
चारिउ वेद पुराण अष्टदस । छड़उ शास्त्र सब ग्रन्थन को रस ॥
तन मन धन संतन को सर्वस । सार अंश सम्मत सबही की ॥ ३ ॥
कलिमलहरणि विषय रसफीकी । सुभग सिंगार भक्ति युवती की ॥
हरणि रोग भव भूरि अमीकी । तात मात सब विधितुलसी की ॥ ४ ॥

राम कलेवा

छंद—भोर भये अपने कुमार को जनक बेगि बुलवाये ॥
सुनिके पितु सँदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये ॥
सादर किये प्रणाम चरण छुड़ लखि बोले मिथिलेसू ॥
गमनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्री अवध नरेसू ॥
बिनय सुनाय राय दशरथ सो पाय रजाय सचेतू ॥
आनहु चारिउ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू ॥
यह सुनि शीशनाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमंगा ॥
सखन समेत मंद हँसि गमने चढ़ि चढ़ि चपल तुरंगा ॥
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे ॥
मृदु मुसुकात वतात परस्पर पहुँचि गये जनवासे ॥
सखन सहित तहँ उतरि तुरंग ते मिथिलापति के बारे ॥
चारिहु सुत युत अवधराज को सादर जाय जुहारे ॥
अतिसुखनिधि लक्ष्मीनिधिको लखि सखनसहित सतकारे ॥
रघुकुलदीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे ॥
तेहिक्षण मानुज निरखि रामछवि सखन सहित सुखमाने ॥
लक्ष्मीनिधि मुख दरस पायके रामहु नैन जुड़ाने ॥
तब श्रीनिधि कर जारि भूप सों कोमल बैन उचारे ॥
करन कलेऊ हेत पठावो चारिहु राजदुलारे ॥
सुनि मृदु बचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसुकाने ॥
चारिहु कुँवर बुलाय वंगही विदा किये सुखसाने ॥
जनक नगर की जान तयारी सेवक सब सुख पागे ॥
निज निज प्रभुहिँ सँवारन लागे लै भूषण वरवागे ॥
रघुनन्दन शिर पाग जरकसी लसी त्रिमंगी वाँधी ॥
तिमि नौरंगी भुकी कलंगी रुचिरुचि पेचनि साधी ॥

कनककलित अतिललित मनिनिकी मंजुल मौर विराजी ॥
 सिंधुरमनि के सजे सेहरा जोहिं होत मन राजी ॥
 ताके कोर कोर चहुँ ओरन लगीं रतन की पाँती ॥
 जग मग जोत होत चहुँदेसिते लखि अँखिया न अघाती ॥
 कुण्डल लोलैं हलैं कपोलैं लगी अमोलैं मोती ॥
 जोबदार जगमगहिं जराऊ जुगल जँजीरन जोती ॥
 जालिम जोर जेहरी जुलफें जुवतिन जोबन हारी ॥
 छूटीं अलकैं दुहुँहिमि भलकैं मनहुँ मैन तरवारी ॥
 रतनारी कारी कजरारी अति अनियारी आँखें ॥
 रसवारी बरबस बसकारी प्यारी आनन राखें ॥
 अति अवरंगी रतिरमरंगी चढ़ी त्रिभंगी भौहैं ॥
 मनहु मदनके जुगधनु सोहैं जिहि जोहैं सोइ मोहैं ॥
 तिलक रसाल विशाल भालपर किमि बरनों छवि ताकी ॥
 जनु नव घन पर रीभ दामिनी नेम लियो थिरताकी ॥
 अरुन अधर बिच दामिनि द्युतिवर दमके दसनन पाँती ॥
 सन्मुख मुखकर जेहिदिशि बोले अजब छटा छहराती ॥
 जगमगात अति श्यामगात पर जरतारिन को जामा ॥
 ताके कोर कोर चहुँ ओरन जड़े रतन मनि ग्रामा ॥
 पीत सुफेटा सुछवि समेटा कमर लपेटा राजै ॥
 नवल पटूकौ करन लटूकौ काँधे पटुका भ्राजै ॥
 मनिमय कंकन सुखप्रद रंकन बंकन कर बिच बाँधे ॥
 जनु पुर जुवतिन मन जीतन को जंत्र बसी कर साधे ॥

दोहा—बरणि सकै को रामको, अनुपम दूल्ह वेष ।

जेहिलखि शिवसनकादिको, रहत न तनुहिं सरेष ॥

इमि सजि अनुज सहित रघुनन्दन चारिहु राजदुलारे ॥

बढ़े उमंगन चढ़े तुरंगन अंगन बसन सँवारे ॥

जे रघुवंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्राण पियारे ॥

चढ़े तुरंग संग तेउ गमने रामरंग मतवारे ॥
 बोले चोबदार लै नामन बिरदावली अलापैं ॥
 चंचल चमर चलै दुहुँ दिसिते छत्र सखा सिर ढापैं ॥
 रामवाम दिसि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं ॥
 चंचल बागे किये तुरंग की बातें करत हँसोहैं ॥
 जग बंदन जेहि नाम जाहिरो रघुनन्दन को बाजी ॥
 ताको गुण छवि कहँ लौं बरणों जोहि होत मन राजी ॥
 भूषित भूषन अंग अदूषन पूषन हय लखि लाजै ॥
 चोटिन तनियाँ गुथी सुमनियाँ पगु पैजनियाँ बाजै ॥
 जड़ित जवाहिर जीन जरी को जरबीली अति सोहैं ॥
 पूजि पटाको छटा कहै को काम लटा मन मोहैं ॥
 ललित लगाम दाम बहुकेरी अंकित नाम विराजे ॥
 सुखवि उमंगी भुकी त्रिभंगी मनिन कलंगी छाजै ॥
 जित रुख पावै तित पहुँचावै छन आवै छन जावै ॥
 जमि जमि थमि थमि थिरकि भूमि पर गतिनत तिन दरसावै ॥
 खीनी कटि पीनी खुरथालै बँधी नवीनी नालैं ॥
 लेत उतालैं सिंह उछालैं करैं समुद्र इक फालैं ॥
 धावल पावन पावत पीछू गरुडहु गर्व गँवावै ॥
 रघुनन्दन को वाजि लाड़िलो अनुपम कला दिखावै ॥
 नाम समुद्र मुद देत जनन को तापर भरत विराजै ॥
 श्रीरघुनन्दन के दहिने दिसि चलत चपल गति साजै ॥
 रोकत बागैं अति रिसि रागैं गरबित फुरकन लागैं ॥
 झमक झमाकी लै गति बाँकी दै झाँकी सुभ पागैं ॥
 कहँ नभ जावै सुरन भँकावै कहँ महि मोद मचावै ॥
 अवनी ते अरु आसमान लो जनु सोपान बनावै ॥
 फाँदत चंचल चारु चौकड़ी चपलाहू चख झापै ॥
 भरत कुँवर को तुरंग रँगिलो बरनि जाय कहु कापै ॥

चंपा नाम चाल चटकीलो जेहि पर रिपुहन भाये ॥
 सब समाज के आगे निरतत मोर कुरंग लजाये ॥
 जो कछु नेकहु हाथ उठावत कई हाथ उठ जातो ॥
 बार बार चुचुकार दुलारत ताहू पै न जुड़ातो ॥
 लखी घोड़ा लखन लाल को बाँको निपट चलाको ॥
 उड़ि उड़ि जात वायुमंडल को परत न महि पग ताको ॥
 तरफराय उड़िजात परत है लक्ष्मीनिधि हय पाहीं ॥
 उचित बिचारि हँसे रघुवंशी रामहिं मृदु मुसकाहीं ॥
 तोपें तुपच जुटै जहँ छुटै तहँ जाय सो टूटै ॥
 रनरस घूटै बीरन कूटै बीरन में जस लूटै ॥
 फुलभरियासो भरत धरत पग करत अनेक तमासो ॥
 दुरकन मुरकन थुरकन थरकन वरनि जाय कहु कासो ॥
 तकि तुरङ्ग की चंचलताई लषन कि देखि चढ़ाई ॥
 निमिबंसी रघुवंशी सिगरे ठगिसो रहे बिकाई ॥
 राम आदि जे कुँवर लाड़िले तेउ लखि भरे उछाहैं ॥
 रीझि रीझि तहँ लषनलाल को बारहिं बार सराहैं ॥
 इमि मग होत विलास विविध विधि विपुल वाजने वाजे ॥
 सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजे ॥
 कोउ तिय निरखि बदन की सुखमा अति सुखमहँ सो पागी ॥
 भरी सनेह देह सुधि भूली रामरूप अनुरागी ॥
 कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनु भूला ॥
 फूला नैन मैन मन भूला लागि प्रीति को हूला ॥
 कोउ घूँघट पट खोल सुन्दरी मणि मुँदरी लै पानी ॥
 देखत दूल्हा रूप रामको आनँद सिन्धु समानी ॥

दोहा—कोउ सूरति लखि साँवरी, तोरति तृण सुख पाग ।

मधुरी मूरति में पगी, निज मूरति सुख त्याग ॥

कोउ रघुनंदन छवि बिलोकि कै बोली सुनु सखि वयना ॥

राजकुँवर ये करन कलेऊ जात जनक के अयना ॥
 इनको श्रीनिधि गये लिवाई आये चारिहु वेटा ॥
 रँगभीने रघुवंशी छैला दशरथ राज दुल्हेटा ॥
 धनि यह भाग्य हमारी प्यारी निज भरि नैन निहारे ॥
 नतु दरसन दुर्लभ दूलह के रविकुल प्रान पियारे ॥
 भाग सोहाग आज भल पायो श्रीमिथिलेश कि वेटी ॥
 सुन्दर श्याम माधुरी मूरति निज निज भुज भर भेटी ॥
 बोली अपर सखी सुनु सजनी भली बात बनि आई ॥
 हमहु चलें सब जनक महल को हँसिये इन्हें हँसाई ॥
 इमि मृदु बातें करत परसपर भई प्रेमवश वामा ॥
 सुनत जात मुसुकात अनुज जुत कृपासिन्धु श्रीरामा ॥
 तुरँग नचावत मग छवि छावत बाजत बिपुल नगारे ॥
 चोपदार जागरें अलापत जनक नगर पगु धारे ॥
 द्वार समीप देखि अति सुन्दर मनिमय चौक सँवारे ॥
 राजकुँवर रघुवंशिन के तहँ ठाढ़ भये मतवारे ॥
 उतर जाय लहि सीयमातु पहँ नगर सुवासिन नारी ॥
 कंचन कलश सजे सिर ऊपर पल्लव दीप सँवारी ॥
 गावत मंगल गीत मनोहर करले कंचन थारी ॥
 परछन चलीं हेतु रघुवर को बहु आरती सँवारी ॥
 जाय समीप निहारि रामछवि दृग आनँद जल बाढ़ी ॥
 छकित रहीं वर बदन बिलोकत चकित रहीं तहँ ठाढ़ी ॥
 रामरूप रँसि रंग गईं रँगीली लखि दूलह सुख सारा ॥
 तन मन रह्यो सरेख न काहू को करै मंगलाचारा ॥
 प्रेम पयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी ॥
 परछन अली भलीविधि कीन्हो रोकि बिलोचन वारी ॥
 लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरँग ते चारिउ कुँवर उतारे ॥
 पाणि पकरि रघुनन्दन जी को भीतर महल सिधारे ॥

द्वीप द्वीप के जहँ महीप सब जनक समीप विराजे ॥
 बैठे सभा सकल निमिबंसी सुर अंसी इव छाजे ॥
 रघुनन्दन तहँ अनुज सखन युत सादर जाय जुहारे ॥
 देखत उठे सकल निमिबंसी जनक निकट बैठारे ॥
 कर गजरा कजरा दृगमें सेहरायुत मौर विराजी ॥
 दृलह भेष बिलोकि रामको भई सभा सब राजी ॥
 तहँ कर कछु दरवार जनक द्विग दशरथ राज दुलारे ॥
 लैके राय रजाय नाय शिर सासु समीप मिधारे ॥
 जहँ पिक वयनी सब सुख ऐनी बैठि सुनयना रानी ॥
 इन्द्रानी की कौन चलावै लखि रति रूप लुभानी ॥
 चन्द्रमुखी चहुँ ओर विराजै कोउ कर चमर डुलावै ॥
 कोउ सखि देखि राम की शोभा आरति मंगल गावै ॥
 तेहि छन तहाँ गये रघुनन्दन मन फंदन बर वंषा ॥
 देखत उठी सकल रनिवासैं रह्यो न तनुहिं सरेषा ॥
 करि आरती बारि मनिभूषन सादर पाँव पखारे ॥
 चारि रङ्ग के चारि सिंहासन चारिहु बर बैठारे ॥
 लखि छवि ऐना सासु सुनैना नैना पलक तजैना ॥
 भूली चैना बोलि सकैना कहत बनै ना बैना ॥
 तकि तकि रहीं तनक नहिं डोलै मगन महा मुद माहीं ॥
 राम रूप रँगि रही रँगिली आँसु बहे दृग जाहीं ॥
 इमि तहँ दशा बिलोकि सासु की राम गुनत मनमाहीं ॥
 काह भयो यह आजु रानि को पूछन में सकुचाहीं ॥
 चतुर सखी चित चरचि राम सां बोली मधुरी वानी ॥
 यह तुम्हार गुन है सब लालन और न कछु उर आनी ॥
 सुनत बचन यह तुरत धीर धरि जगी सुनैना रानी ॥
 बार बार बहु लीन्ह बलैया चूमि कपोलन पानी ॥
 माधुरि मूरति सावलि सूरत तकि तृण तोरति रानी ॥

रीभि रीभि तहँ राम रूप पै बिनही मोल बिकानी ॥
 पुनि कर जोरि राम सों रानी बोली अति मृदु मोई ॥
 उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रुचि हिय होई ॥
 यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारहु राज दुलारे ॥
 भरी भाग्य अनुराग सुनैना निज कर पाय पखारे ॥
 रचना अधिक पदक के पीढ़न बैठारे सब भाई ॥
 कंचन थारी मृदुल सुहारी परसी विविध मिठाई ॥
 रुचि अनुरूप भूपसुत जेवत पवन डुलावै सासू ॥
 बूझि बूझि रुचि व्यंजन परसे बरणि न जाय हुलासू ॥
 स्वाद सराहि पाय पुनि अँचये सखियन पान खवाये ॥
 बैठे पहिरि पोशाक सखनयुत विविध सुगन्ध लगाये ॥

दोहा—राज अयन सब चैन युत, राजें राजकुमार ।

जिनको हास विलास लखि, लाजहिं लाखनमार ॥

छन्द—तेहि अवसर सुधि पाय सखी मुख लक्ष्मीनिधि की नारी ॥
 नाम सिद्ध परमिद्ध जासु गुण रूप शील उजियारी ॥
 भाग सुहाग भरी सुठि सुन्दरि नव योवन मतवारी ॥
 रसिकन रीति प्रीति परबीनी रतिहि लजावन हारी ॥
 अतिगुनवान निधान रूपकी सबविधि सुभग सयानी ॥
 लक्ष्मीनिधि की प्राणपियारी निमि कुल की महरानी ॥
 अलवेली सरहज रघुवर की बड़ी सनेह श्रृंगारी ॥
 प्रीतम प्रीति निवाहन हारी रामरूप रिझवारी ॥
 चंचल चपल चहँ दिशि चितवति देखन को अतुराई ॥
 भरी उमंग संग सखियन लै तुरत राम ढिग आई ॥
 बदन चंद अरविन्द लिये कर विहँसत मन्दिर साँहै ॥
 राजकुँवर कर पकड़ि लाड़िली बोली तकि तिरछोहै ॥
 ऐ चितचोर किशोर भूप के वड़ चोर तुम प्यारे ॥
 सुरति हमारि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे ॥

उलटी बात कहौ जनि प्यारी आपन दोष दुराई ॥
 तुमहीं रहिउ छिपाय छवीली सुनत हमारि अवाई ॥
 हम आये तुम महलन भीतर तुमहिं न परयो जनाई ॥
 भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाइ समाई ॥
 सुनत राम के वचन लाड़िली बोली मृदु मुसुकाई ॥
 तुमरे घर की रीति लालजू इहाँ न चलै चलाई ॥
 सासु सुनयना के समीप महँ देत जवाव बनयना ॥
 पानि पकरि रघुनन्दनजी को गइ लिवाय निज अयना ॥
 चारि सिंहासन दै तहँ आसन भरी हुलासन प्यारी ॥
 बारहिं बार निहारि बदन छबि बहु आरती उतारी ॥
 मेलि सुकंठ मालती माला बसननि अतर लगायो ॥
 अंचल सो मुख पोंछि रामको निजकर पान खवायो ॥
 जहँ रति रंभा सरिस सुन्दरी बैठीं किये शृंगारै ॥
 कोउ कुसुमन की करनफूल रच कोउ कलंगी कोउ हारै ॥
 ललित लवंग कपूर मंग धरि कोउ सखि पान लगावै ॥
 कोउ कर पीकदान लिये ठाढ़ी कोउ सखि चमर डुलावै ॥
 निज निज साज सजे सब प्यारी रघुवर सन्मुख भावै ॥
 कोउ जल तुरही तार तमूरा कोउ करताल बजावै ॥
 कोउ सितार लै तार तार प्रति गूढ़ गतिन दरसावै ॥
 कोउ उपंग मुरचंग मिलावै दै मृदङ्ग सुख थापै ॥
 कोउ लै बीन नवीन सुरनते मनहु बसीकर जापै ॥
 कोउ मृगनैनी कोकिल बयनी पंचम राग अलापै ॥
 परत कानमें मधुर तान निज बिरहिन के जिय काँपै ॥
 इमि अभिराम धाम शोभा लखि रामकुँअर अनुरागे ॥
 बातें करत सिद्धि सरहज सो परम प्रेमरस पागे ॥
 जे निमिराज नेवत सुनि आई कोटिन राजकुमारी ॥
 राममिलन की बड़ी लालसा कहि न सकै सुकुमारी ॥

तिन यह सुन्यो कि सिद्धि सदन में आये चारिहु भाई ॥
 तुरतहिं तहँ पहुँची सब प्यारी जानि समय सुखदाई ॥
 देखि राजकुँवरी सब आई रामदरस की प्यासी ॥
 अति सन्मान कियो सबही को सिद्धि सदन सुभरासी ॥
 राम सुखवि देखन ते लागीं दृग आनंदजल बाढ़े ॥
 चष झषपरे रूप सागर में कढहिं नहीं अब काढ़े ॥
 मनिन मोर पर मोतिन कलँगी अलबेली अति सोहँ ॥
 राजतियन की कौन चलैहँ मुनियन को मन मोहँ ॥
 चिकन चिलकदार चुनवारी अलकें मुखपर छूटी ॥
 जोहत जहर चढ़त जुवतिन को जड़ी न लागत बूटी ॥
 लखि छविबरकी श्याम सुन्दर की भई मौन सुख सरकी ॥
 तरकी तनी कंचुकी करकी दरकी चूरी करकी ॥
 दोहा—मन लोभा सोभा निरखि, भईं विवश सुकुमारि ।

चकित छकित सब रह गईं, तनमनदसा बिसारि ॥

छं०—जे तिय मान अनूप रूप निज रही स्वरूप गुमानी ॥
 ते लखि रामवदन की सुखमा बिनही मोल विकानी ॥
 अति सुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी ॥
 तहँ प्यारी गारी रघुवरको देन दिवावन लागी ॥
 एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो ॥
 कानन सुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइ जायो ॥
 बोली सिद्धि सुनहु रघुनन्दन तुम हमार ननदोई ॥
 एक बात तुमसों हम पूछँ लाल ना राखहु गोई ॥
 होत व्याह संवन्ध सबन को अपने जातिहि माँही ॥
 निज बहिनी शृंगी ऋषि को तुम कैसे दियो विवाही ॥
 की उनको मुनीश लै भाग्यो की वोई सँग लागी ॥
 एती बात बतावहु लालन तुम रघुवंश अदागी ॥
 लषण कह्यो यह सुनो लाड़िली जेहि विधि जहँ लिखि दीना ॥

तहँ संयोग होत है ताको व्याह तो कर्म अधीना ॥
 कहँ हम राजकुँवर रघुवंशी कहँ बिदेह बैरागी ॥
 भयो हमार व्याह तुम्हरे घर बिधिगत गनै को भागी ॥
 औरो एक हाँस उर आवै अचरज है सब काहू ॥
 तुम तो हौ सिधि वै लक्ष्मीनिधि नारि नारि भो व्याहू ॥
 एक सखी कह सुनहु लालजी तुमहिं सकै को जीती ॥
 जाहिर अहै सकल जग माहीं तुम्हरे घर की रीती ॥
 अति उदार करतूतिदार सब अवधपुरी की बामा ॥
 खीर खाय पैदा सुत करतीं पति कर कछु नहिं कामा ॥
 सखी बचन सुनि तब रघुनन्दन बोले मृदु मुसुकाते ॥
 आपन चाल छिपावहु प्यारी कहहु आन की बातें ॥
 कोउ नहिं जन्मै मात पिता बिन बँधी वेद की नीती ॥
 तुम्हरे तौ महिते सब उपजैं अस हमरे नहिं रीती ॥
 बोली चन्द्रकला तेहि अवसर परम चतुर सुकुमारी ॥
 सिद्धि कुँवरि की लहुरी भनिगी लक्ष्मीनिधि की सारी ॥
 लरिकाई ते रह्यो लालजी तुम तपसिन सँग माहीं ॥
 ये छल छन्द फन्द कहँ पाये सत्य कहो हम पाहीं ॥
 की मुनि नारिन के सँग सीखे की निज भगिनी पासे ॥
 मीठो सीठो स्वाद लालजी बिन चाखे नहिं भासे ॥
 बोले भरत भली कहि सजनी तुमहुँ तो आवै कुमारी ॥
 बर्णहुँ पुरुष संग की बातें सो कहँ सीखेहु प्यारी ॥
 रहे मुनिन सँग ज्ञान सिखन को सो सब सिखे सिखाये ॥
 कामिनि काम कला अब सिखन हम तुम्हरे ढिग आये ॥
 सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसी तुम न बखानौ ॥
 तुमरी तो गिनती साधुन में लोक बात का जानौ ॥
 भरत कह्यो तुम साँची कहत हो हम साध परकाजी ॥
 ऐसी सेवा करो लाड़िली जाते हों हम राजी ॥

आये अयन अपूरव योगी अस निज मन गुन लीजै ॥
 अधर सुधारस को दै भोजन अतिथिहि पूजन कीजै ॥
 एक सखी कह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई ॥
 ऋषि मख राखन गये कुँवर ये तहँ हम अस सुधि पाई ॥
 इनको सुन्दर देखि काम बस तिया ताड़का आई ॥
 सो करतूति न भई लाल सो मारेहु तेहि खिसिआई ॥
 बोले रिपुहन सुनो भामिनी नाहक दोष न दीजै ॥
 जो करतूति बनी नहिं उनते सो हमसे भरि लीजै ॥
 बिन जाने करतूति सबन को तुम्हरे घर भो व्याहू ॥
 सोउ पछिताव रहै नहिं प्यारी अब करि लेहु समाहू ॥
 जाके हित तुम रोष बढ़ावहु सो मति करहु उपाई ॥
 वैसिनि सेवा में तुम्हरे हम हाजिर चारिउ भाई ॥
 सुनि बाणी रिपुदमन लालकी बोली कोउ सुकुमारी ॥
 कहँ पाई एती चतुराई कहिये लाल बिचारी ॥
 कीकहुँ मिली नारि गुण आगरि की गणिकन सँग कीन्हो ॥
 तीनों भाइन ते तुम्हरे महुँ लखियतु चिन्ह नवीनो ॥
 रिपुसन कह भल कह्यो भामिनी भेदिया भेदहिं जानै ॥
 गणिका नारिनहू ते सौगुण तुम्हें अधिक हम मानै ॥
 हमरो तुमरो चिन्ह लाडिली एकै भाँति लखाई ॥
 ताते सखी हमारि तुम्हारी चाही अवशि सगाई ॥
 सुनि नव उक्ति युक्ति की बातें बोली सिधि सुकुमारी ॥
 सुनिये रसिक राय रघुनन्दन आनँद कन्द बिहारी ॥
 अति अभिराम कामहुँ मोहत मूरति देखि तुम्हारी ॥
 कसे बची होयँगी तुमते अवधपुरी की नारी ॥
 यों कहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धिकुँवर सुख अयना ॥
 ताको हाथ पकरि रघुनन्दन बोले अति मृदु वयना ॥
 दोहा— जस मर्यादा जगत की, बाँध दियो करतार ।
 राजा रंक यती सती, करत सोइ व्यवहार ॥

छन्द—अनुचित उचित विचारि लोग सब तहँ तस राखत भाऊ ॥
 तुम तो अपने अस जानति हो सबही केर सुभाऊ ॥
 यह सुनि भरत लषन रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी ॥
 सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अति भई सुखारी ॥
 यहि विधि हँसी हँसाय रघुवर सों दै दिवाय मृदुगारी ॥
 नाना भाँति मनोरथ मनके लगीं करन सब प्यारी ॥
 कोउ सखि राम समीप जायके कहत कञ्चुक लगि कानै ॥
 करन कपोल परसि के प्यारी जन्म सुफल करि मानै ॥
 कोइ निज कोमल कमल करन ते चरन कमल प्रभु चापै ॥
 बार बार हिय लाय लाइली दूर करै तन तापै ॥
 रसिक शिरोमणि श्रीरघुनन्दन नवल नेह अभिलाषी ॥
 जस जाके हिय रही लालसा तस तेहिकी रुचि राखी ॥
 रघुनन्दन तब कह्यो सिद्धि से जो तुम देहु निदेसू ॥
 तो अब हम गवनैं जनवासे जहँ श्रीअवध नरेशू ॥
 सुनि यह बानी राजकुँवर की काँपि उठी उर आली ॥
 सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं बिरह विहाली ॥
 नेह बढ़ाय छकाय रूपरस आपु अवध अब जैहैं ॥
 हम बिरहिन के प्रान लाड़िले कहो कवन विधि रहिहैं ॥
 सुनि इमि आरत बेन तियन के तब करुना रस साने ॥
 कोमल चित कृपालु रघुनन्दन प्रीति रीति भल जाने ॥
 बोले बचन भक्त भय भंजन सुनहु तियहुँ सब कोई ॥
 अब मै कहौ सुभाव आपनो तुम्हें न राखहुँ गोई ॥
 शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक इनते और न भारी ॥
 तिनहूँ ते तुम अधिक पियारी सुनु सिधि राजकुमारी ॥
 जो कोउ प्रीति करै मोरे पर होय सुजान अजानो ॥
 प्रान समान सदा तेहि राखौं औगुन एक न मानौं ॥
 जिन जिन प्रेमिन केरि जगत में सुनियत बड़ी बड़ाई ॥

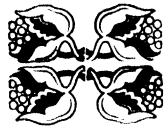
तिन तिन में बिचार जो देखहु सब में एक खुटाई ॥
 कर्म धर्म अरु धीर वीरता जोग सिद्धि चतुराई ॥
 ज्ञान ध्यान विज्ञान सुजनता राजनीति निपुनाई ॥
 इतने जीति सकैं नहिं मोहीं कोटिन करै उपाई ॥
 हार जाउँ प्रेमी प्रानी ते तहाँ न मोर बसाई ॥
 तुम तो सबै प्रेम की मूरति सूरति की बलिहारी ॥
 सिद्धि आदि सब राजकुमारी मोहिं प्रानहु ते प्यारी ॥
 तुम्हरे हिय अभिलाष आजु जो सो सब भाँति पुजैहौं ॥
 लौकिक लाज बचाय लाड़िली तुमते बिलग न ह्वैहौं ॥
 हम सब भाँति तुम्हारि साँवली तुम सब भाँति हमारी ॥
 सत्य सत्य ये सत्य वचन मम मानहु राजकुमारी ॥

दोहा—रघुनंदनके वचन सुनि, खुल्लिगे कपट किंवार ।

बढ्योप्रेम सब तियन के, तनिक न तनहिं सँभार ॥
 छंद—पुनि धरि धीरज अली भलीविधि जोरि पंकरुह पानी ॥
 सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं अति मृदुवानी ॥
 धन्य भाग हमरो रघुनन्दन हमते कोउ वड़ नाहीं ॥
 बूढ़त रहीं जगत सागर महँ राखि लीन्ह गहि बाहीं ॥
 हम नारी सब भाँति अनारी किये प्रीति मुदमोई ॥
 राजकुमार रावरे के सम कीन्ह कृपा नहिं कोई ॥
 प्रति उपकार होत नहिं हमते जस तुम्ह कीन्हें प्यारे ॥
 चन्द्र समान होहिं नहिं कबहुँ जुरहिं हजारन तारे ॥
 जेहिं जेहिं जोनि करम वस हमको जन्म विधाता देहीं ॥
 तहँ तहँ रासक राय रघुनन्दन तुमहीं मिलहु सनेही ॥
 वरु विधि कोटिन करै जातना या तन छन छन छूटै ॥
 हमरी तुम्हरी लगन लाडिले कौनहु जन्म न टूटै ॥
 सुनि वानी करुनारम सानी रघुवर अंतर जानी ॥
 सनमान्यो सब राजकुमारिन कहि कहि कोमल वानी ॥

सबसों विदा माँगि रघुनन्दन अनुज सहित पगुधारे ॥
 निकसे मानहु सिद्धि महल ते चारि चन्द्र ब्रविवारे ॥
 रोहिनि पान खवावत साथहिं चली सिद्धि सुख ऐना ॥
 आये राजमहल महँ सिगरे जहँ श्रीमातु सुनैना ॥
 चरन प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन जोरि सरोरुह पानो ॥
 विदा हेतु पुनि बचन सुनाये कहि अति कोमल बानी ॥
 सुनि ये बैना सासु सुनैना भरे प्रेम जल नैना ॥
 रहौ कि जाहु न कछु कहि आवै भूल गई सब बैना ॥
 पुनि धरि धीर अभूषण सुन्दर जे बड़ मोलके जानी ॥
 अनुज सखन जुत रामकुँवर को दीन्ह सुनैना रानी ॥
 सब सन विदा माँगि रघुनन्दन चले जनक ढिग आये ॥
 यथाजोग करि मान बड़ाई बहुविधि आनँद छाये ॥

दोहा—अस सब कहँ आनन्द दै, गये अवधनप पास ।
 कथा सुनाई नृपहिं सब, सुनि अति भयो हुलास ॥



आरती बजरंगबली की

आरती कीजे हनुमान ललाकी । दुष्ट दलन रघुनाथ ललाकी ।
जाके बलसे गिरवर कांपे । रोगदोष जाके निकट न झांके ॥ टेका ॥
अंजनी पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥ १ ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंकाजारि, सिया सुधि लाये ॥ २ ॥
लंका एसे कोट समुद्र ऐसी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ॥ ३ ॥
लंका जारि असुर सब मारे । सीताराम के काज सँवारे ॥ ४ ॥
लक्ष्मण सुरच्छि परे धरणी में । लाय सजीवन प्राण उवारे ॥ ५ ॥
पैठी पताल तोरि यमकातर । अहिरावण के भुजा उखारे ॥ ६ ॥
बाँए भुजा असुर संहारे । दहिने भुजा सब संत उवारे ॥ ७ ॥
सुरनर मुनिजन आरती उतारें । जैजैजै हनुमानजी उचारें ॥ ८ ॥

श्री गणेशाय नमः

अथ संकटमोचन हनुमानाष्टक ।

स०—बाल ममय रवि भक्ष लियो तव तीनहुँ लोक भयो अंधियारा ।
ताहि ते त्रास भई मवको यह संकट काहु ते जात न टागे ॥
देवन आनि करी चिन्तनी तव छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहि जानत है जगमें यह संकटमोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥
बालि के त्रास कर्पास वमै तहँ जात महा प्रभु पंथ निवारो ।
चौकि महामुनि श्राप दियो दिशिचारि फिरे न सुपास विचारो ॥
के द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दासको शोक निवारो ॥को०॥ २ ॥
अंगद के संग कीश अनेक गये मिय खोज कर्पाश पुकारो ।
जीवन ना बचिहो हमसो जु बिना मुध ले इतको पग धारो ॥
हेरि थके तट सिन्धु सबे तव ले मियकी मुधि प्राण उवारो ॥को०॥ ३ ॥
रावण त्रास दई सियको तव राक्षसि सोकाहि शोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महा प्रभु जाइ सबे रजनीचर मारो ॥
माँगत सीय अशोक सो आगि ताँ दे प्रभु मुद्रिका शोक निवारो ॥को०॥ ४ ॥
रावण युद्ध अचानक कीन्ह मु नाग के फाँस सबे शिर डारो ।
श्री रघुवीर समेत सबे दल मोह भयो तव संकट भारो ॥
आनि खगेशहि की हनुमान सो बंधन काटि के फाँस निवारो ॥को०॥ ५ ॥
बाण लगे उर लक्ष्मण के प्रभु प्राण तजो मृत रावण मारो ।
ले ग्रह बैद्य सुपेण समेत तबे गिरि द्रोण मुर्वीर उपारो ॥
आनि सजीवन हाथ दई तव लक्ष्मण के तुम प्राण उवारो ॥को०॥ ६ ॥
बन्धु समेत जवे महिरावण ले रघुनाथ पताल सिधारो ।
देवाहि पूजि भली विधि सो बलि देन दोऊ कर मन्त्र विचारो ॥
जाय सहाय भयो तवही महिरावण सेन समेत संहारो ॥को०॥ ७ ॥
काज किये बड़ लोगन के तुम वीर महा प्रभु देखि विचारो ।
कौन सो संकट मोहिं गरीब को सो तुमसो नहिं जात है टारो ॥
वेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ॥को०॥ ८ ॥

इति श्रीसंकटमोचनहनुमानाष्टक समाप्त ।

रामायण की प्रशंसा

कवित्त—रामायण मानम विचित्र त्यों पवित्र चारु गायो दास तुलसी निसारि सारि वंदनै । जाको यश द्वायो लोक लोकन प्रवेश केस मंत्रुल सुवेस पुंज ताप तीनि छेदनै ॥ भाग्यवन्त दानी खल चारी जो प्रसिद्ध आजु मुखमा सबद्ध हार विश्व जीव खेदनै । नौमि नौमि नौमि श्रीरामायण जु मारण्ड जाके उर उदित सो जान राम भेदनै ॥ १ ॥ पाव केहि पार कौन महिमा महान महा मानम रामायण की द्वाय रही जगमें । जाके पढ़े सुने गुने होत हैं सकल काम पूरण श्रीरामभक्ति पाव राम संग में ॥ साँचे करि नेम प्रेम थाँचे यहि नित्य जौन अबसो न ताप तीनि राच राम रंगमें । भाग्यवन्त ताहि जग दुलभ न लाभ कुछ काय मन वचन चलै जो याके मगमें ॥ २ ॥ भाग्यवन्त भूपदेश द्राविड़ नरेश काशी करि कविताई बात दोऊ ठाँक यों ठयो । होत सुत एक दिशि दूसरी जो कन्या का सु कीजियो विवाह विधि योग मुता द्वौ जयो । कौन छल द्राविड़ सुपुत्र कहि व्याहिवे को आयो लै बुरात बात खुलिजान त्यों भयो । तुलसी प्रसाद महा महिमा रामायण को सात दिन सुन सोई सुत ह्वे गयो ॥ ३ ॥ देखि यमदूत गये जगमें प्रचार महामानस रामायण को गावै नरनारियो । जाय यमराज पै रिसाय निज दंड फौस दीन्ह डारि सवन दुखारियो पुकारियो ॥ महाराज राज अब जगमें न आपु रह्यो भयो एक तुलसी सो हाल ऐसो करियो । भाग्यवन्त विरचित रामायण जु ताहि सब पढ़ि २ पापी वैकुण्ठ ही मिधारियो ॥ ४ ॥ अरे मेरे दूतो यह सब मेरी कान करो भूलिहू न जाइये सु ऐसे कवौ धामको । होय जहाँ मानस विचित्र यश रामजी को कीन्हों दास तुलसी को दानिमन कामको ॥ जोरि हाथ सादर नवाय पद-पद्म माथ वार २ दूरहिते कीजियो प्रणाम को । भाग्यवन्त बात यह साँची में पुकारि कहौ जानियो रामायण के धाम सीताराम को ॥ ५ ॥ दलिजातो दापन कराल कलिकाल युग अबलौ न नाम कहै धर्मका रहावतो । पटि जातो नरक निकाय महा पापिन सो बटि जातो दान दया भक्ति ना सुहावतो । वेद और पुराण सदग्रन्थ सब लोप होत भूलिहू न रामयश कोऊ कहै गावतो । भाग्यवन्त जोपे दास तुलसी न करि कृपा रामयश मानम रामायण वनावतो ॥ ६ ॥ खनिके पहार वेद शास्त्र और पुराण कौन रामयश माणिक अमोल खोजि लावतो । देश २ ग्राम २ घर २ कान २ अमृत समान रामयश कौन नावतो ॥ चारिहु वरन सब आश्रम मुपन्थ नाम राम सीय कथन को कौन छवि छावतो । भाग्यवन्त जोपे दास-तुलसी दयालु ह्वे न रामयश मानस विचित्र यश गावतो ॥ ७ ॥ चाहै फल जौन मन ताको ह्वे सकल यामें कल्पतरु रूप यह कलिमें प्रधान है । याकी छौह मुखद सगाहैं सब साधु सन्त भाग्यवन्त सेवक प्रकाश उर ज्ञान हैं । करिके सुनेम प्रेम गाव नित्य याहि जौन ताके रक्षक गुजान हनुमान हैं । आजु कलिकाल में कल्याण करि जीवन का मानस समान कछू दूसरो न आन है ॥ ८ ॥ जैसी कविताई श्री गोसाईं जूकी तैसी न उपाई कवि कोऊ भरि भूरि है । भाग्यवन्त जाकी गति अद्भुत न जानी जात वरन २ रहे आनन्द संग पूरि है । मानत प्रमाण जाकी राउ रंक आजु सब देवगण धारत सुमाथ जाकी धूरि है । धन्य धन्य श्रीरामायण प्रतापवन्त कलिजीव जीवन के जीवनको मूरि है ॥ ९ ॥ धन्य धन्य धन्य श्रीगोसाईं दास तुलसी द्वायो यश जाको लोक लोकन अपार है । देखिके कराल कलिकाल की करालताई आई दारि दया हरिमाया की पसार है ॥ रामयश मानस कठोर धारि लिये कर भाग्यवन्त जनु हेत आपु अवतार है । दापि कील भूपको सुथापि महि धर्म सेतु राजयश रामभक्ति कीन्हें विस्तार है ॥ १० ॥ छूटिगई त्रास कलिकाल की कराल जात वानिपरी गानका सुरामयश बरके । भाग्यवन्त फल रही धरा में सुभक्त चारु मानस प्रभाव पे न जात कोऊ नरके । प्रगटी सुरीति एक अद्भुत अनोखी और वरन २ माहि रामनाम रटके । घर २ आजु नरनारि के कर २ तुलसी प्रसाद माला खरखर सरके ॥ ११ ॥ भागु भागु रे कलंकी कूर हांसो कलि मोसो अब नेकहू न तेरो जोर चलेगो । आजलौं तु कीन्ह मनमानी निज राज काज अबना कछु चाह तरु तेरो फूलि फलैगो । भाग्यवन्त प्रवल प्रताप तुलसी के जगको छलनहार तूही आप छलैगो । रामयश मानस को रक्षक है महावीर मेरी ओर ह्वेके लेखे ताको सोई दलैगो ॥ १२ ॥

श्रीगणेशाय नमः
श्रीज्ञानकीवल्लभो विजयते

रामायण

बालकाण्ड

श्लोकाः

वर्णानामर्थसङ्घानां रमानां छन्दसामपि । मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे
वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थर्माश्वरम् ॥ २ ॥ वन्दे
बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् । यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र
वन्द्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ । वन्दे विशुद्धविज्ञानौ
कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्धवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करिणीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्ति विश्वम-
खिलं ब्रह्मादिदेवासुरा यत्सत्त्वादमृषेव भाति मकलं रज्जौ यथाऽहेर्ध्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहं तमशेषकारणपरं
रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणं
निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि । स्वान्तःसुखाय तुलसीरघुनाथगाथाभाषा-
निबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो ०--जेहि सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिवरवदन ।

करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभ-गुन-सदन ॥१॥

मूक होइ वाचाल, पंगु चढइ गिरिवर गहन ।

जासु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल-काल-मल-दहन ॥२॥

नील-सरोरुह-श्याम, तरुन--अरुन--वारिज--नयन ।

करउ सो मम उर धाम, सदा छीर-सागर-सयन ॥३॥

कुंद-इंदु-सम देह, उमारमन करुनाअयन ।
जाहि दीन पर नेह, करउ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥
बंदउँ गुरु-पद--कंज, कृपासिन्धु नररूप हरि ।
महा-मोह-तम--पुंज, जासु बचन रवि-कर-निकर ॥ ५ ॥

बंदउँ गुरु-पद-पदुम-परागा * सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥
अमिय-पूरि-मय चूरन चारू * समन सकल-भव-रुज-परिवारू ॥
सुकृत संभुतन विमलविभूती * मंजुल मंगल-मोदप्रसूती ॥
जन-मन-मंजु-मुकुर-मल-हरनी * किए तिलक गुन-गन-बस-करनी ॥
श्रीगुरु-पद-नख-मनि-गन-जोती * सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ॥
दलन मोहतम सोसुप्रकासू * बड़े भाग उर आवइ जासू ॥
उधरहिं विमलविलोचन ही के * मिटहिं दोष दुख भवरजनी के ॥
सूझहिं रामचरित मनिमानिक * गुपुत प्रकट जहँ जो जेहि खानिका ॥
दो०--जथा सुअंजन अंजि दृग, साधक सिद्ध सुजान ।

कौतुक देखहिं सैल बन, भूतल भूरि निधान ॥१॥

गुरु-पद-रज-मृदु-मंजुल-अंजन * नयन अमिय दृग-दोष-विभंजन ॥
तेहि करि विमल विवेक विलोचन * बरनउँ रामचरित भवमोचन ॥
बंदउँ प्रथम मही-सुर-चरना * मोह-जनित-संसय सब हरना ॥
सुजनसमाज सकल-गुन-खानी * करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥
साधुचरित सुभ सरिस कपासू * निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा * बंदनीय जेहि जग जसु पावा ॥
मुद-मङ्गल-मय संत-समाजू * जो जग जंगम तीरथराजू ॥
रामभगति जहँ सुरसरि-धारा * सरसइ ब्रह्मविचार प्रचारा ॥
विधि-निषेध-मय कलि-मल-हरनी * करमकथा रवि-नंदिनि बरनी ॥
हरि-हर-कथा विराजति बेनी * सुनत सकल-मुद-मंगल-देनी ॥

बट विस्वासु अटल निज धर्मा * तीरथराज समाज सुकर्मा ॥
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा * सेवत सादर समन कलेसा ॥
अकथ अलौकिक तीरथराऊ * देइ सद्य फल प्रकट प्रभाऊ ॥

दो०-सुनि समुझहिं जन मुदितमन, मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु, साधुसमाजु प्रयाग ॥२॥

मज्जनफल देखिय ततकाला * काक होहिं पिक बकउ मराला ॥
सुनि आचरज करइ जनि कोई * सत-संगति-महिमा नहिं गोई ॥
बालमीकि नारद घटजोनी * निज निजमुखनि कही निजहोनी ॥
जलचर थलचर नभचर नाना * जे जड़ चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई * जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई ॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ * लोकहु बेद न आन उपाऊ ॥
बिनु सतसंग विवेक न होई * रामकृपा बिनु सुलभ न सोई ॥
सतसंगति मुद-मंगल-मूला * सोइ फल सिधिसब साधन फूला ॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई * पारस परसि कुधातु सोहाई ॥
बिधिवस सुजन कुसंगति परहीं * फनि-मनि-सम निजगुनअनुसरहीं ॥
बिधि-हरिहर-कवि-कोविद बानी * कहत साधुमहिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कहि जात न कैसे * साकबनिक मनि-गन-गुन जैसे ॥

दो०--बंदउ संत समानचित, हित अनहित नहिं कोउ ।

अंजुलिगत सुभ सुमन जेमि, सम सुगंध कर दोउ ॥

संत सरलचित जगत हित, जानि सुभाउ सनेहु ।

बालबिनय सुनि करि कृपा, राम-चरन-रति देहु ॥३॥

बहुरि बंदि खलगन सतिभाये * जे बिनु काज दाहिनेहु बाये ॥
पर-हित-हानि लाभ जिन्ह केरे * उजरे हरष विषाद बसेरे ॥
हरि-हर-जस राकेस राहु से * परअकाज भट सहसबाहु से ॥

जे परदोष लखहिं सहमाखी * परहित घृत जिनके मन माखी ॥
 तेज कृमानु गोप महिषंसा * अघ-अवगुन-धन-धनी धनेसा ॥
 उदय केतुमम हित सबही के * कुंभकरन सम सोवत नीके ॥
 पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं * जिमि हिम उपल कृषीदल गरहीं ॥
 बंदउँ खल जम सेप सरोपा * सहसवदन बरनइ परदोषा ॥
 पुनि प्रनवउँ पृथुराजममाना * परअघ सुनइ सहसदम काना ॥
 वहुरि मक्र मम विनवउँ तेही * मंतत सुरानीक हित जेही ॥
 वचन बन्न जेहि सदा पियारा * सहसनयन परदोष निहारा ॥
 दो ०--उदासीन-अरि-मीत-हित, सुनत जरहिं खलरीति ।

जानि पानिजुग जोरि जन, विनती करइ सप्रीति ॥४॥
 में अपनी दिमि कीन्ह निहोरा * तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥
 बायम पलिअहि अतिअनुरागा * होहिं निरामिष कवहुँ कि कागा ॥
 बंदउँ संत असज्जन चरना * दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥
 विछुरत एक प्राण हरि लेहीं * मिलत एक दारुन दुख देहीं ॥
 उपजहिं एक संग जल माहीं * जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ॥
 सुधा सुरा मम साधु असाधू * जनक एक जग जलधि अगाधू ॥
 भल अनभल निज-निज करतूती * लहत सुजस अपलोक बिभूती ॥
 सुधा सुधाकर सुरसरि साधू * गरल अनल कलि-मल सरि व्याधू ॥
 गुन अवगुन जानत सब कोई * जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥
 दो ०--भलो भलाइहि पै लहइ, लहइ निचाइहि नीचु ।

सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीचु ॥ ५ ॥
 खल-अघ-अगुन साधु-गुन-गाहा * उभय अपार उदधि अवगाहा ॥
 तेहि तें कछु गुन दोष बखाने * संग्रह त्याग न विन पहिचाने ॥
 भलेउ पोच सब विधि उपजाये * गनि गुन दोष वंद बिलगाये ॥
 कहहिं बेद इतिहास पुराना * विधि प्रपंच गुन-अवगुन-साना ॥

दुख सुख पाप पुन्य दिन राती * साधु असाधु मुजाति कुजाती ॥
 दानव देव ऊँच अरु नीचू * अमिय मजीवनु माहुर मीचू ॥
 माया ब्रह्म जीव जगदीमा * लच्छि अलच्छि रंक अवनीमा ॥
 कासी मग सुरसरि कविनासा * मरु मारव महिदेव गवासा ॥
 सरग नरक अनुराग विरागा * निगम अगम गुन-दोष-विभागा ॥
 दो०-जड चेतन गुन दोषमय, विस्व कीन्ह करतार ।

संत हंस गुन गहाहिं पय, परिहरि वारिविकार ॥ ६ ॥
 अस विवेक जब देइ विधाता * तव तजि दोष गुनहि मनु राता ॥
 कालमुभाउ करम बरियाई * भलेउ प्रकृतिवस चुकइ भलाई ॥
 सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं * दलि दुख दोष विमल जसु देहीं ॥
 खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू * मिटइ न मलिन मुभाउ अभंगू ॥
 लखि सुवेष जग बंचक जेऊ * वेपप्रताप पूजिअहि तेऊ ॥
 उधरहिं अंत न होइ निवाहू * कालनेमि जिमि रावन राहू ॥
 किणहु कुवेष साधु मनमानू * जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥
 हानि कुसंग सुसंगति लाहू * लोकहु वेद विदित मध काहू ॥
 गगन चढ़इ रज पवनप्रसंगा * कीचहि मिलइ नीच-जल-संगा ॥
 साधु असाधु सदन सुक सारी * सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ॥
 धूम कुसंगति कारिख होई * लिखिय पुरान मंजु ममि सोई ॥
 सोइ जल अनल अनिल संघाता * होइ जलद जग-जीवन-धाता ॥

दो०-ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुजोग सुजोग ।
 होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग ॥
 सम प्रकास तम पाख दुहुँ, नाम भेद विधि कीन्ह ।
 ससि पोषक सोपक समुभि, जग जस अपजस दीन्ह ॥
 जड चेतन जग जीव जत, सकल राममय जानि ।

बंदउँ सब के पद कमल, सदा जोरि जुगपानि ॥
 देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ।
 बंदउँ किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व ॥७॥

आकर चारि लाग्य चौराभी * जाति जीव जल-थल-नभ-वासी ॥
 मीय-राम-मय मव जग जानी * करउँ प्रनाम जोरि जुगपानी ॥
 जानि कृपा कर किंकर मोहू * सब मिलि करहु छाँड़ि छल छोहू ॥
 निज बुधिवल भरोम मोहि नाही * तातें बिनय करउँ सब पाहीं ॥
 करन चहउँ रघुपति-गुन-गाहा * लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥
 सूझ न एकउ अंग उपाऊ * मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥
 मति अति नीच ऊँच रुचि आछी * चहिय अमिय जग जुरइन आछी ॥
 छमिहहिं सज्जन मोरि ठिठाई * सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥
 जौ बालक कह तोतरि बाता * सुनिहहिं मुदितमन पितु अरु माता ॥
 हँमिहहिं क्रूर कुटिल कुविचारी * जे पर-दूषन-भूषन—धारी ॥
 निज कवित केहि लाग न नीका * सरस होउ अथवा अति फीका ॥
 जे परभनिति सुनत हरषाहीं * ते बर पुरुष बहुत जग नाही ॥
 जग बहु नर सुर-भरि-सम भाई * जे निज बाढि बढहिं जल पाई ॥
 सज्जन सुकृत-सिंधु-सम कोई * देखि पूर विधु बाढइ जोई ॥
 दो०-भाग छोट अभिलाषु बड़, करउँ एक बिस्वास ।

पैहहिं सुख सुनि सृजन सब, खल करिहहिं उपहास ॥८॥

खलपरिहास होइ हित मोरा * काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥
 हँसहिं बक दादुर चातकही * हँसहिं मलिन खल विमल बतकही ॥
 कवित रमिक न राम-पद-नेहू * तिन कहँ सुखद हास रस एहू ॥
 भाषाभनिति भोरि मति मोरी * हँसिबं जोग हँसे नहिं खोरी ॥
 प्रभु-पद-प्रीति न सामुझि नीकी * तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी ॥
 हरि-हर-पद-रति मति न कुतरकी * तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुवरकी ॥

राम-भगति-भूषित जिय जानी * सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥
 कवि न होउँ नहिं बचनप्रवीनू * सकल कला सब विद्याहीनू ॥
 आखर अरथ अलंकृति नाना * छंद प्रबंध अनेक विधाना ॥
 भावभेद रसभेद अपारा * कवित-दोष-गुन विविध प्रकारा ॥
 कवित विवेक एक नहिं मोरे * सत्य कहउँ लिखि कागज कोरे ॥

दो ०--भनिति मोरि सब गुन-रहित, बिस्वबिदित गुन एक ।

सो बिचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्हके विमल विवेक ॥६॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा * अति पावन पुरान-श्रुति-सारा ॥

मंगल-भवन अमंगल-हारी * उमासहित जेहि जपत पुरारी ॥

भनिति विचित्र सु-कवि-कृत जोऊ * रामनाम विनु मोह न मोऊ ॥

विधुवदनी सब भाँति सँवारी * सोह न बसन विना बर नारी ॥

सब गुन-रहित कुकवि-कृत बानी * राम-नाम-जस-अंकित जानी ॥

सादर कहहिं सुनिहं बुध ताही * मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥

जदपि कवित रस एकउ नाही * रामप्रताप प्रगट एहि माहीं ॥

सोइ भरोस मोरे मन आवा * केहि न सुमंग बड़प्पनु पावा ॥

धूमउ तजै सहज करुआई * अगरुप्रमंग सुगंध बगई ॥

भनिति भदेस वस्तु भलि बरनी * रामकथा जग मंगलकरनी ॥

छंद--मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।

गति कूर कविता सरित की ज्यौँ सरित पावन शथ की ॥

प्रभु-सुजस-संगति भनिति भलि होइहि सुजन-मन-भावनी ।

भवअंग भूति मसान की सुमिरत सोहावनि पावनी ॥

दो ०--प्रिय लागिहि अति सबहि मम, भनिति राम-जस-संग ।

दारु विचारु कि करइ कोउ, बंदिय मलय प्रसंग ॥

स्याम सुरभि पय बिसद अति, गुनद करहिं सब पान ।

गिराग्राम्य सिय-राम-जस, गावहिं सुनहिं सुजान ॥१०॥

मनि-मानिक-मुकुता-अवि जैसी * अहि-गिरि- गज- मिरसोहन तैसी ॥
 नृपकिरीट तरुनीतनु पाई * लहहिं मकल मोभा अधिकारि ॥
 तैसेहि मु-कवि-कवित बुध कहहीं * उपजहिं अनत अनत अवि लहहीं ॥
 भगति हेतु विधिभवन विहाई * मुमिरत सारद आवति धाई ॥
 राम- चरित- मर विनु अन्हवायें * मो सम जाइ न कोटि उपायें ॥
 कवि कोविद अस हृदय विचारी * गावहिं हरिजस कलि-मल-हारी ॥
 कीन्हें प्राकृत - जन- गुन-गाना * सिर धुनि गिरा लगति पछिताना ॥
 हृदय सिंधु मति सीपि समाना * स्वाती सारद कहहिं सुजाना ॥
 जौं बरखइ बरबारि विचारू * होहिं कवित मुकुतामनि चारू ॥
 दो०--जुगति बेधि पुनि पोहिअहि, रामचरित बर ताग ।

पहिरहिं सज्जन विमल उर, सोभा अति अनुराग ॥११॥

जे जनमे कलिकाल कराला * करतव बायस वेष मराला ॥
 चलत कुपंथ वेदमग झाँड़े * कपट कलेवर कलिमल भाँड़े ॥
 बंचक भगत कहाइ राम के * किंकर कंचन कोह काम के ॥
 तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी * धिग धरमध्वज धंधक धोरी ॥
 जौं अपने अवगुन सब कहऊँ * बाढइ कथा पार नहिं लहऊँ ॥
 तातें मैं अति अल्प बखाने * थोरे महँ जानिहहिं मयाने ॥
 समुझि विविध विधि विनती मोरी * कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी ॥
 एतेहु पर करिहहिं जे संका * मोहिं तें अधिक ते जड़ मति रंका ॥
 कवि न होउँ नहिं चतुर कहावौं * मति-अनुरूप रामगुन गावौं ॥
 कहँ रघुपति के चरित अपारा * कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
 जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं * कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
 समुझत अमित रामप्रभुताई * करत कथा मन अति कदराई ॥
 दो०--सारद सेष महेस विधि, आगम निगम पुरान ।

नेति नेति कहि जासु गुन, करहिं निरंतर गान ॥१२॥

सब जानत प्रभुप्रभुता सोई * तदपि कहे विनु रहा न कोई ॥
 तहाँ वेद अस कारन राखा * भजनप्रभाउ भाँति बहु भाखा ॥
 एक अनीह अरूप अनामा * अज मच्चिदानंद परधामा ॥
 व्यापक विस्वरूप भगवाना * तेहि धरि देह चरित कृत नाना ॥
 सो केवल भगतन्ह हित लागी * परमकृपाल प्रनत - अनुरागी ॥
 जेहि जन पर ममता अति छोहू * जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू ॥
 गई बहोर गरीब नेवाजू * सरल सबल साहिव रघुराजू ॥
 बुध बरनहिं हरिजस अम जानी * करहिं पुनीत सुफल निज बानी ॥
 तेहि बल मैं रघुपति-गुन-गाथा * कहिहउँ नाइ रामपद माथा ॥
 मुनिन्ह प्रथम हरिकीरति गई * तेहि मग चलत मुगम मोहिं भाई ॥
 दो०-अति अपार जे सरित बर, जौं नृप सेतु कराहिं ।

चढ़ि पिपीलिकउ परमलघु, विनु स्रम पारहि जाहिं ॥१३॥

एहि प्रकार बल मनहिं देखाई * करिहौं रघुपतिकथा सुहाई ॥
 व्याम आदि कविपुंगव नाना * जिन्ह मादर हरिमुजस बगवाना ॥
 चरन-कमल बंदौं तिन्ह केरे * पुरवहु मकल मनोरथ मेरे ॥
 कलि के कविन्ह करौं परनामा * जिन्ह बरनं रघुपति-गुन-ग्रामा ॥
 जे प्राकृत कवि परम सयाने * भाषा जिन्ह हरिचरित बगवाने ॥
 भये जे अहहिं जे होइहहिं आगे * प्रनवौं सबहिं कपट छल त्यागे ॥
 होहु प्रमन्न देहु बरदानू * माधुममाज भनिति मनमानू ॥
 जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं * सो स्रम बादि बालकवि करहीं ॥
 कीरति भनिति भूति भलि सोई * सुर-मरि-मम सब कहँ हित होई ॥
 राम-सुकीरति भनिति भदेसा * असमंजस अम मोहिं अंदेसा ॥
 तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे * मिअनि सोहावनि टाट पटोरे ॥
 करहु अनुग्रह अस जिय जानी * विमल जमहिं अनुहरौ सुबानी ॥

दो०--सरल कवित कीरति विमल, सोइ आदरहिं सुजान ।
 सहज बयर विसराइ रिपु, जो सुनि करहिं बखान ॥
 सो न होइ विनु विमल मति, मोहि मतिबल अतिथोर ।
 करहु कृपा हरि जस कहउँ, पुनि पुनि करउँ निहोर ॥
 कविकोविद रघुवर चरित, मानस - मंजु - मराल ।
 बालबिनय सुनि सुरुचिलखि, मोपर होहु कृपाल ॥

सो०--बंदों मुनि-पद कंजु, रामायन जेहि निरमयेउ ।
 सखर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषन - सहित ॥
 बंदों चारिउ बेद, भव-वारिधि-बोहित सरिस ।
 जिन्हहिं न सपनेहु खेद, बरनत रघुवर विसद जस ॥
 बंदों विधि-पद-रेनु, भवसागर जेहि कीन्ह जहँ ।
 संत सुधा ससि धेनु, प्रगटे खल विप वारुनी ॥

दो०--विबुध-विप्र-बुध-ग्रह-चरन, बंदि कहों करजोरि ।

होइ प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोरि ॥१४॥

पुनि बंदों मारद सुरसरिता * जुगल पुनीत मनोहरचरिता ॥
 मज्जन पान पाप हर एका * कहत सुनत एक हर अबिवंका ॥
 गुर पितु मातु महेस भवानी * प्रनवौ दीनबंधु दिनदानी ॥
 सेवक स्वामि सखा सिय-पी के * हित निरुपधि सब विधि तुलसी के ॥
 कलि बिलोकि जगहित हरगिरिजा * सावर-मंत्र-जाल जिन्ह सिरिजा ॥
 अनमिल आखर अरथन जापू * प्रगट प्रभाउ महेसप्रतापू ॥
 सो महेस मोहिं पर अनुकूला * करहिं कथा मुद-मंगल-मूला ॥
 सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ * बरनउँ रामचरित चितचाऊ ॥
 भनिति मोरि सिवकृपा विभाती * ससिसमाज मिलि मनहुँ सुराती ॥

जे एहि कथहिं सनेह समेता * कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता ॥
होइहहिं राम - चरन - अनुरागी * कलि-मल-रहित सु-मंगल-भागी ॥
दो०--सपनेहुँ साचेहु मोहि पर, जौ हरगौरि पसाउ ।

तौ फुर होउ जो कहेउँ सब, भाषा भनिति प्रभाउ ॥१५॥

बंदौ अवधपुरी अतिपावनि * सरजूसरि कलि-कलुष-नसावनि ॥
प्रनवौ पुर - नर - नारि बहोरी * ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी ॥
सियनिंदक अघओघ नसाये * लोक विसोक बनाइ बसाये ॥
बंदौ कौसल्या दिसि प्राची * कीरति जासु सकल जग माँची ॥
प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू * विस्वसुखद खल-कमल-तुसारू ॥
दमरथराउ सहित सब रानी * सुकृत - सुमंगल - मूरति मानी ॥
करौ प्रनाम करम मन बानी * करहु कृपा सुतसेवक जानी ॥
जिन्हहिं बिरचि बड़ भयउ विधाता * महिमा- अवधि राम-पितु-माता ॥
सो०--बंदौ अवधभुआल, सत्य प्रेम जेहि रामपद ।

बिछुरत दीनदयाल, प्रिय तनु तून इव परिहरेउ ॥१६॥

प्रनवौ परिजनसहित बिदेहू * जाहि रामपद गूढ़ मनेहू ॥
जोग भोग महँ राखेउ गोई * राम विलोकत प्रगटेउ सोई ॥
प्रनवौ प्रथम भरत के चरना * जासु नेम ब्रत जाइ न बरना ॥
राम - चरन - पंकज मन जामू * लुबुध मधुप इव तजइ न पासू ॥
बंदौ लज्जिमन - पद - जल - जाता * मीतल-सुभग - भगत-सुख-दाता ॥
रघुपतिकीरति विमल पताका * दंड ममान भयउ जम जाका ॥
सेष सहस्रसीस जगकारन * जो अवतरेउ भूमि-भय- टारन ॥
सदा सो मानुकूल रह मोपर * कृपामिधु सौमित्रि गुनाकर ॥
रिपु - सूदन - पद - कमल नमामी * सूर सुमील भरतअनुगामी ॥
महावीर बिनवौ हनुमाना * राम जासु जस आपु बखाना ॥
सो०--प्रनवौ पवनकुमार, खल-वन-पावक ज्ञानधन ।

जासु हृदयआगार, बसहिं राम सर-चाप-धर ॥१७॥

कपिपतिरीड्य - निमाचर - राजा * अंगदादि जे कीसममाजा ॥
 बंदों मव के चरन मोहाए * अधम मरीर राम जिन्ह पाए ॥
 रघुपति - चरन - उपासक जेते * ग्वग मृग मुर नर अमुर ममेते ॥
 बंदों पदमरोज मव केरे * जे विनु काम राम के चरे ॥
 सुकमनकादि भगत मुनि नारद * जे मुनिबर विज्ञानविमारद ॥
 प्रनवों मवहिं धरनि धरि सीसा * करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥
 जनकमुता जगजननि जानकी * अतिसय प्रिय करुनानिधान की ॥
 ताके जुग- पद- कमल मनावों * जासु कृपा निरमल मति पावों ॥
 पुनि मन बचन कर्म रघुनायक * चरन कमल बंदों मव लायक ॥
 राजिवनयन धरे धनुमायक * भगत-विपति-भंजन मुखदायक ॥
 दो०--गिरा अरथ जल बीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न ।

बंदों सीतारामपद, जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ॥१८॥

बंदों रामनाम रघुवर को * हेतु कृमानु भानु हिमकर को ॥
 विधि-हरि-हर-मय वेदप्रान सो * अगुन अनूपम गुननिधान सो ॥
 महामंत्र जोइ जपत महेसू * कासी मुकुति हेतु उपदेसू ॥
 महिमा जासु जान गनराऊ * प्रथम पूजियत नामप्रभाऊ ॥
 जान आदिकवि नामप्रतापू * भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥
 महम-नाम-मम सुनि सिववानी * जपि जेईं पिय मंग भवानी ॥
 हरषे हेतु हेरि हर ही को * किय भूषन तियभूषन ती को ॥
 नामप्रभाउ जान सिव नीको * कालकूट फल दीन्ह अमी को ॥
 दो०--बरपा रितु रघुपतिभगति, तुलसी सालि सुदास ।

रामनाम बर बरनजुग, सावन भादवं मास ॥१९॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ * वरन विलोचन जन जिय जोऊ ॥
 सुमिरत सुलभ सुखद मव काहू * लोकलाहु पर-लोक-निबाहू ॥

कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके * रामलखन सम प्रिय तुलसी के ॥
 बरनत बरन प्रीति बिलगाती * ब्रह्म जीव सम महज सँघाती ॥
 नर नारायन सरिस सुभ्राता * जगपालक विसेपि जनत्राता ॥
 भगति-सु-तिय कल करनविभूषन * जग-हित-हेतु विमल विधुपूषन ॥
 स्वाद तोष सम सुगति सुधा के * कमठ सेप मम धर बसुधा के ॥
 जन-मन-मंजु-कंज-मधुकर से * जीह जसोमति हरि हलधर से ॥
 दो०--एक छत्र एक मुकुटमनि, सब बरननि पर जोउ ।

तुलसी रघुवरनाम के, बरन बिराजत दोउ ॥२०॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी * प्रीति परमपर प्रभु अनुगामी ॥
 नाम रूप दुइ ईसउपाधी * अकथ अनादि सुमामुझि माधी ॥
 को बड़ छोट कहत अपराधू * सुनि गुनभेद समुझिहहिं साधू ॥
 देखिअहिं रूप नामआधीना * रूपज्ञान नहिं नामबिहीना ॥
 रूप विसेष नाम विनु जाने * करतलगत न परहिं पहिचाने ॥
 सुमिरिय नाम रूप विनु देखे * आवत हृदय सनेह विसेखे ॥
 नाम-रूप-भगति अकथ कहानी * समुझत सुखद न परति बग्वानी ॥
 अगुन मगुन बिच नाम सुमाखी * उभयप्रबोधक चतुर दुभाखी ॥
 दो०--राम-नाम-मनि-दीपधरु, जीह देहरीद्वार ।

तुलसी भोतर बाहरहुँ, जौं चाहसि उँजियार ॥२१॥

नाम जीह जपि जागहिं जोगी * विरति विरंचि प्रपंच वियोगी ॥
 ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा * अकथ अनामय नाम न रूपा ॥
 जाना चाहहिं गूढ़गति जेऊ * नाम जीह जपि जानहिं तेऊ ॥
 साधक नाम जपहिं लउ लाए * होहिं मिद्ध अनिमादिक पाए ॥
 जपहिं नाम जन आरत भारी * मिटहिं कुमंकट होहिं सुखारी ॥
 रामभगत जग चारि प्रकारा * सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
 चहुँ चतुर कहँ नाम अधारा * ज्ञानी प्रभुहि विसेपि पियारा ॥

चहुँ जुग चहुँ सुति नामप्रभाऊ * कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥
दो०--सकल-कामना-हीन जे, राम-भगति-रस-लीन ।

नाम सुप्रेम-पियूष-हृद, तिनहुँ किए मन मीन ॥२२॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्मसरूपा * अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरे मत बड़ नाम दुहूते * किय जेहि जुग निजबस निजबूते ॥
प्रौढ़सुजन जनि जानहिं जन की * कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एक दारुगत देखिय एकू * पावक सम जुग ब्रह्मबिवेकू ॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें * कहेउँ नाम बड़ ब्रह्म राम तें ॥
व्यापक एक ब्रह्म अविनासी * सत चेतन घन आनँदरासी ॥
अस प्रभु हृदय अकृत अविकारी * सकल जीव जग दीन दुखारी ॥
नामनिरूपन नामजतन तें * सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥

दो०--निरगुन तें एहि भाँति बड़, नामप्रभाउ अपार ।

कहउँ नाम बड़ राम तें, निज बिचार अनुसार ॥२३॥

राम भगत हित नरतनु-धारी * सहि संकट किय साधु सुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा * भगत होहिं मुद-मंगल-बासा ॥
राम एक तापसतिय तारी * नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की * सहित सेन-सुत कीन्ह विवाकी ॥
सहित दोष-दुख दास दुरासा * दलइ नाम जिमि रवि निसि नासा ॥
भंजेउ राम आपु भवचापू * भव-भय-भंजन नामप्रतापू ॥
दंडकवन प्रभु कीन्ह सोहावन * जनमन अमित नाम किय पावन ॥
निसि-चर-निकर दले रघुनंदन * नाम सकल कलि-कलुष-निकंदन ॥

दो०--सबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्हि रघुनाथ ।

नाम उधारे अमित खल, बेदबिदित गुनगाथ ॥२४॥

राम सुकंठ विभीषन दोऊ * राखे सरन जान सब कोऊ ॥

नाम गरीब अनेक नेवाजे * लोक वेद बर विरद बिराजे ॥
 राम भालु-कपि-कटक बटोरा * सेतुहेतु सम कीन्ह न थोरा ॥
 नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं * करहु विचार मुजन मन माहीं ॥
 राम सकुल रन रावनु मारा * सीय सहित निजपुर पगु धारा ॥
 राजा राम अवध रजधानी * गावत गुन सुर मुनि बरवानी ॥
 सेवक सुमिरत नाम सप्रीती * विनु सम प्रवल मोहदल जीती ॥
 फिरत सनेहमगन मुख अपने * नामप्रसाद मोच नहिं सपने ॥
 दोहा-ब्रह्म राम तें नाम बड़, बर-दायक बर-दानि ।

राम चरित सत कोटि महँ, लिय महेस जिय जानि ॥२५॥

नामप्रसाद संभु अविनासी * माजअमंगल मंगलरामी ॥
 सुकसनकादि सिद्ध-मुनि-जोगी * नामप्रसाद ब्रह्म-सुख-भोगी ॥
 नारद जानेउ नामप्रतापू * जगप्रिय हरि हरि-हर-प्रिय आपू ॥
 नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसाद * भगतसिरोमनि भे प्रह्लाद ॥
 ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनाऊँ * पाएउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥
 सुमिरि पवनसुत पावन नाम * अपने बम करि राखे राम ॥
 अपत अजामिल गज गनिकाऊ * भये मुकुत हरि-नाम-प्रभाऊ ॥
 कहउँ कहाँ लगी नाम बड़ाई * राम न सकहिं नामगुन गाई ॥
 दोहा-नाम राम को कलपतरु, कलि कल्याननिवासु ।

जो सुमिरत भये भाँग तें, तुलसी तुलसीदासु ॥२६॥

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका * भये नाम जपि जीव विमोका ॥
 बेद - पुरान - संत - मत एहू * सकल-सुकृत-फल राममनेहू ॥
 ध्यान प्रथमजुग मखविधि दूजे * द्वापर परितोपन प्रभु पूजे ॥
 कलि केवल मल-मूल-मलीना * पापपयोनिधि जनमन मीना ॥
 नाम कामतरु काल कराला * सुमिरत ममन सकल जगजाला ॥
 रामनाम कलि अभिमतदाता * हित परलोक लोक पितुमाता ॥

नहिं कलि करम न भगति विवंकू * राम-नाम अवलंबन एकू ॥
 कालनेमि कलि कपटनिधानू * नाम सुमति ममरथ हनुमानू ॥
 दोहा-राम नाम नर केसरी, कनककसिपु कलिकाल ।

जापक जन प्रह्लाद जिमि, पालिहि दलि सुरसाल ॥२७॥

भाय कुभाय अनख आलमहूँ * नाम जपत मंगल दिमि दसहूँ ॥
 सुमिरि मो नाम राम-गुन-गाथा * करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥
 मोरि सुधारिहि मो सब भाँती * जागु कृपा नहिं कृपा अघाती ॥
 राम सुस्वामि कुसेवक मो सो * निज दिमि देखि दयानिधि पोसो ॥
 लोकहूँ वेद सुमाहिबरीती * विनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥
 गनी गरीब ग्राम नर नागर * पंडित मूढ मलीन उजागर ॥
 सुकवि कुकवि निज-मति-अनुहारी * नृपहि सराहत सब नर नारी ॥
 साधु सुजान सुसील नृपाला * ईस-अंश-भव परमकृपाला ॥
 सुनि सनमानहिं सबहिं सुजानी * भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥
 यह प्राकृत - महिपाल - सुभाऊ * जान सिरोमनि कोमलराऊ ॥
 रीझत रामसनेह निसोतें * को जग मंद मलिनमति मो तें ॥

दोहा--सठ सेवक की प्रीति रुचि, रखिहहिं राम कृपालु ।

उपल किये जलजान जेहिं, सचिव सुमति कपिभालु ॥

हौंहुं कहावत सब कहत, राम सहत उपहास ।

साहिब सीतानाथ सो, सेवक तुलसीदास ॥२८॥

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी * सुनि अघ नरकहूँ नाक सिकोरी ॥
 समुझि सहम मोहिं अपडर अपन * सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने ॥
 सुनि अवलोकि सुचित चख चाही * भगति मोरि मति स्वामि सराही ॥
 कहत नसाइ होइ हिय नीकी * रीझत राम जानि जन जी की ॥
 रहति न प्रभुचित चूक किये की * करत सुरति सयवार हिये की ॥

जेहि अघ बधेउ व्याध जिमि बाली * फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुवाली ॥
 सोइ करतूति विभीषन केरी * सपनेहुँ सो न राम हिय हेरी ॥
 ते भरतहि भेंटत सनमाने * राजसभा रघुवीर बखाने ॥

दोहा-प्रभु तरुतर कपि डार पर, ते किय आपु समान ।
 तुलसी कहूँ न राम से, साहिव सीलनिधान ॥
 राम निकाई रावरी, है सवही को नोक ।
 जौ यह साँची है सदा, तौ नीको तुलसी क ॥
 एहि विधि निजगुन दोष कहि, सवहि बहुरि सिरु नाइ ।
 बरनउँ रघुवर विसद जसु, सुनि कलिकल्प नसाइ ॥२६॥

जागवलिक जो कथा सुहाई * भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई ॥
 कहिहउँ मोइ संवाद बखानी * मुनहु सकल सज्जन सुख मानी ॥
 संभु कीन्ह यह चरित सुहावा * बहुरि कृपा करि उमहिं भुनावा ॥
 सोइ सिव कागभुसुण्डिहि दीन्हा * रामभगत अधिकारी चीन्हा ॥
 तेहि सन जागवलिक पुनि पावा * तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥
 ते स्रोता वक्ता समसीला * समदरसा जानहिं हरिलीला ॥
 जानहिं तीनि काल निज ज्ञाना * कर-तल-गत आमलक-ममाना ॥
 औरौ जे हरिभगत सुजाना * कहहिं सुनहिं ममुझहिं विधिनाना ॥

दो०-मैं पुनि निजगुरु सन सुनी, कथा सो सूकरखेत ।

समुझी नहिं तसि बालपन, तव अति रहेउँ अचेत ॥

स्रोता वक्ता ज्ञाननिधि, कथा राम कै गूढ़ ।

किमि समुझाँ मैं जीव जड़, कलि-मल-ग्रसित विमूढ़ ॥३०॥

तदपि कही गुरु वारहिं वारा * ममुझि परी कछु मति अनुमारा ॥
 भाषाबद्ध करवि मैं मोई * मोरे मन प्रबोध जेहि होई ॥

जस कळु बुधि-विंवक-वल मेरें * तम कहिहों हिय हरि के प्रेरें ॥
 निज - मन्देह - मोह - भ्रम - हरनी * करों कथा भव-सरिता-तरनी ॥
 बुधविस्वाम मकल - जन - रंजनि * रामकथा कलि-कलुष - विभंजनि ॥
 रामकथा कलि - पन्नग - भरनी * पुनि विंवकपावक कहँ अरनी ॥
 रामकथा कलि कामद गाई * सुजन - सर्जावनि - मूरि सोहाई ॥
 मोड वसुधातल मुधानरंगिनि * भयभंजनि भ्रम-भेक-भुअंगिनि ॥
 असुर - मेन - सम नरकनिकंदिनि * माधु-विबुध-कुल-हित-गिरि-नंदिनि ॥
 मंत - समाज - पयोधि - रमा मी * विस्व-भार-भर अचल छमा मी ॥
 जम-गन-मुँह-मसि जग जमुना मी * जीवन-मुकुति-हेतु जनु कासी ॥
 रामट्टि प्रिय पावनि तुलसी मी * तुलसिदास-हित हिय हुलसी मी ॥
 सिवप्रिय मेकल भैल-सुता मी * मकल-मिद्धि - सुख-मंपति-रामी ॥
 सद-गुन-सुर-गन-अंव अदिति मी * रघुवर-भगति-प्रेम परमिति मी ॥

दो० --रामकथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ।

तुलसी सुभगसनेह वन, सिय-रघुवीर-विहारु ॥३१॥

राम - चरित - चिंतामनि चारु * मंत-सुमति-तिय सुभग सिंगारु ॥
 जगमंगल गुनशाम राम के * दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
 सदगुरु ज्ञान विराग जोग के * विबुधवैद भव भीम रोग के ॥
 जननिजनक मिय - राम - प्रेम के * वीज सकल व्रत-धरम - नेम के ॥
 समन पाप - संताप - सोक के * प्रिय पालक पर-लोक-लोक के ॥
 सचिव सुभट भूपतिविचार के * कुंभज-लोभ-उदधि अपार के ॥
 काम-कोह-कलि-मल - करि-गन के * केहरि सावक जन-मन-वन के ॥
 अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के * कामद घन दारिद दवारि के ॥
 मंत्र-महा-मनि विषयव्याल के * मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
 हरन मोहतम दिनकरकर से * सेवक-मालि - पाल जलधर से ॥
 अभिमतदानि देव-तरु-वर से * मेवत सुजभ सुखद हरिहर से ॥

सुकवि-सरद-नभ मन उडगन से * राम - भगत-जन जीवनधन से ॥
 सकल सुकृतफल भूरि भोग से * जग हिन निरुपधि साधुलोग से ॥
 सेवक - मन - मानस - मराल से * पावन गंग - तरंग - माल से ॥

दो०--कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड ।

दहन राम-गुन-ग्राम जिमि, इंधन अनल प्रचंड ॥

रामचरित राकेस-कर-सरिस सुखद सब काहु ।

सज्जन कुमुद चक्रोर चित, हित विसेपि बड़ लाहु ॥३२॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भयानी * जेहि विधि मंकर कहा बयानी ॥

सो सब हेतु कहव मै गाई * कथा प्रबंध विचित्र बनाई ॥

जेहि यह कथा मुनी नहिं होई * जनि आचरज करै मुनि मोई ॥

कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी * नहिं आचरजु करहिं अम जानी ॥

रामकथा कै मिति जग नाहीं * अमि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥

नाना भाँति रामअवतारा * रामायन सतकोटि अपारा ॥

कल्पभेद हरिचरित सुहाए * भाँति अनंक मुनीसन्ह गाए ॥

करिय न संसय अम उर आनी * मुनिय कथा सादर रति मानी ॥

दो०--राम अनंत अनंत गुन, अमित कथाविस्तार ।

सुनि आचरजु न मानिहहिं, जिनके विमल विचार ॥३३॥

एहि विधि सब संसय करि दूरी * मिर धरि गुरु-पद-पंकज-धूरी ॥

पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी * करत कथा जेहि लाग न ग्योरी ॥

सादर सिवहि नाइ अब माथा * बरनों विमद राम-गुन-गाथा ॥

संवत सोरह मै इकतीसा * करौं कथा हरिपद धरि सीमा ॥

नौमी भौमवार मधुपामा * अवधपुरी यह चरित प्रकामा ॥

जेहि दिन रामजनम श्रुति गावहिं * तीरथ मकल तहाँ चलि आवहिं ॥

असुर नाग खग नर मुनि देवा * आइ करहिं रघुनायक सेवा ॥

जनम-महोत्सव रचहिं सुजाना * करहिं राम कल कीरति गाना ॥
दो०--मज्जहिं सज्जन बृंद बहु, पावन सरजू नोर ।

जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुंदर स्याम सरीर ॥३४॥

दरस परस मज्जन अरु पाना * हरौ पाप कह बंद पुराना ॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति * कहि न सकै सारदा विमलमति ॥
राम - धाम - दा पुरी सुहावनि * लोक समस्त बिदित जगपावनि ॥
चारि खानि जग जीव अपारा * अवध तजे तन नहिं संसारा ॥
सब विधि पुरी मनोहर जानी * सकल सिद्धिप्रद मंगलखानी ॥
विमल कथा कर कीन्ह अरंभा * सुनत नसाहिं काम मद दंभा ॥
राम-चरित - मानस एहि नामा * सुनत सवन पाइय विश्रामा ॥
मन-करि विषय अनलवन जरई * होइ सुखी जौं एहि सर परई ॥
राम-चरित - मानस मुनिभावन * विरचेंउ मंभु सुहावन पावन ॥
त्रिविध दोष दुखदारिद दावन * कलिकुचालि कुलि-कलुष-नसावन ॥
रचि महेस निज मानस राखा * पाइ सुसमउ सिवा सन भाखा ॥
तातें राम-चरित - मानस बर * धरेउ नाम हिय हेरि हरषि हर ॥
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई * सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥
दो०--जस मानस जेहिं विधि भयउ, जग प्रचार जेहि हेतु ।

अब सोइ कहाँ प्रसंग सब, सुमिरि उमावृषकेतु ॥३५॥

संभुप्रसाद सुमति हिय हुलसी * राम-चरित-मानस कवि तुलसी ॥
करइ मनोहर मति अनुहारी * सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू * बंद पुरान उदधि घन साधू ॥
बरषहिं राम सुजस बर वारी * मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुन जो कहहिं बखानी * सोइ स्वच्छता करइ मल हानी ॥
प्रेम भगति जो बरनि न जाई * सोइ मधुरता सुसीतलताई ॥
सो जलसुकृत सालि हित होई * रामभगतजन जीवन सोई ॥

मेधा महिगत सो जल पावन * मकिलि सवनमग चलेउ सुहावन ॥
 भरेउ सुमानस सुथल थिराना * सुखद सीत रुचि चारु चिराना ॥
 दो०--सुठि सुन्दर संवाद वर, बिरचे बुद्धि विचारि ।
 तेइ एहि पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि ॥३६॥

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना * ज्ञान नयन निरखत मनमाना ॥
 रघुपति महिमा अगुन अवाधा * बरनव सोइबर वारि अगाधा ॥
 रामसीय जस सलिल सुधासम * उपमा वीचि विलास मनोरम ॥
 पुरइनि मघन चारु चौपाई * जुगुति मंजु मनि मीप सुहाई ॥
 छंद मोरठा सुंदर दोहा * गोइ बहुरंग कमल कुल सोहा ॥
 अरथ अनूप सुभाव सुभासा * मोइ पराग मकरंद सुवासि ॥
 सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला * ज्ञान विराग विचार मराला ॥
 धुनि अवरैव कवित गुन जाती * मीन मनोहर ते बहु भाँती ॥
 अरथ धरम कामादिक चारी * कहव ज्ञान विज्ञान विचारी ॥
 नव रस जप तप जोग विरागा * ते मव जलचर चारु तडागा ॥
 सुकृती माधु नाम गुन गाना * ते विचित्र जल विहग ममाना ॥
 संत सभा चहुँ दिमि अँवराई * सदा रितु वसंत सम गाई ॥
 भगति निरूपन विविध विधाना * क्रमा दया दुम लता विताना ॥
 सम जम नियम फूल फल ज्ञाना * हरिपद रस वर वेद वखाना ॥
 औरौ कथा अनेक प्रसंगा * तेइ मुक पिक बहु बरन विहंगा ॥

दो०--पुलक वाटिका बाग वन, सुख सुविहंग विहारु ।

माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचन चारु ॥३७॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे * तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥
 सदा सुनहिं सादर नर नारी * तेइ सुर वर मानस अधिकारी ॥
 अति खल जे बिषई बक कागा * एहि मर निकट न जाहिं अभागा ॥

मंबुक भेक मेवार ममाना * इहाँ न विषय कथा रस नाना ॥
 तेहि कारन आवत हिय हारे * कामी काक बलाक विचारे ॥
 आवत एहि सर अति कठिनाई * राम कृपा विनु आइ न जाई ॥
 कठिन कुसंग कुपंथ कराला * तिन्ह के वचन बाध हरि व्याला ॥
 गृहकारज नाना जंजाला * तेइ अति दुर्गम मैल विमाला ॥
 बन बहु विषम मोह मद माना * नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥
 दो०--जे स्रद्धा-संबल-रहित, नहिं संतन्ह कर साथ ।

तिन कहँ मानस अगम अति, जिनहिं न प्रिय रहुनाथ ॥३८॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई * जातहि नींद जुड़ाई होई ॥
 जड़ता जाइ विषम उर लागा * गएहु न मज्जन पाव अभागा ॥
 करि न जाइ सर मज्जन पाना * फिरि आवै समेत अभिमाना ॥
 जौं बहोरि कोउ पूछन आवा * मरनिंदा करि ताहि बुझावा ॥
 सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही * राम मुकृपा विलोकहिं जेही ॥
 सोइ सादर सर मज्जन करई * महाघोर त्रयताप न जरई ॥
 ते नर यह सर तजहिं न काऊ * जिन्ह के रामचरन भल भाऊ ॥
 जो नहाइ चह एहि सर भाई * सो सतसंग करै मन लाई ॥
 अस मानस मानस चख चाही * भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही ॥
 भयेउ हृदय आनंद उझाहू * उमगेउ प्रेम—प्रमोद प्रवाहू ॥
 चली मुभग कविता सरिता मो * राम विमल जस जलभरिता सो ॥
 सरजू नाम सुमंगलमूला * लोक-वेद-मत मंजुल कूला ॥
 नदी पुनीत सुमानस नंदिनि * कलि-मल-त्रिन-तरु-मूल-निकंदिनि ॥
 दो०--स्रोत त्रिविध समाज पुर, ग्राम नगर दुहुँ कूल ।

संतसभा अनुपम अवध, सकल सुमंगलमूल ॥३९॥

रामभगति सुरसरिताहि जाई * मिली सुकीरति सरजू सुहाई ॥
 सानुज राम-समर-जम पावन * मिलेउ महानद मोन सुहावन ॥

जुग विच भगति देव-धुनि-धारा * मोहति महित सुविरति विचारा ॥
 त्रिविध ताप-त्रामक तिमुहानी * राममरूप मिधु ममुहानी ॥
 मानम मूल मिली सुरसरिही * मुनत मुजनमन पावन करिही ॥
 विच विच कथा विचित्र विभागा * जनु मरितीर तीर वन बागा ॥
 उमा - महेम - विवाह - वराती * ते जलचर अगनित बहु भाँती ॥
 रघुवर - जनम - अनंद - वधाई * भवँ तरंग मनोहरताई ॥
 दो०--बालचरित चहुँ बंधु के, बनजबिपुल बहुरंग ।

नृप रानी परिजन सुकृत, मधुकर वारिविहंग ॥४०॥

मीयस्वर्यवर कथा मुहाई * मरित मुहावनि मो ब्रवि छाई ॥
 नदी नाव पटु प्रसन्न अनका * केवट कुमल उतर मबिवेका ॥
 मुनि अनुकथन परस्पर होई * पथिकममाज मोह मरि मोई ॥
 धोर धार भृगुनाथ रिमानी * घाट सुवद राम वर वानी ॥
 मानुज राम - विवाह - उखाहू * मो मुभ उमग सुखद मव काहू ॥
 कहत मुनत हरपहिं पुलकाहीं * ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥
 रामतिलक हित मंगल माजा * परव जोग जनु जुरे ममाजा ॥
 काई कुमति केकई केरी * परी जासु फल विपति घनेरी ॥
 दो०--समन अमित उतपात सब, भरतचरित जपजाग ।

कलिअघ खलअवगुन कथन, ते जलमलवककाग ॥४१॥

कीरति मरित ब्रह्मँ रितु रूरी * ममय मुहावनि पावनि भूरी ॥
 हिम-हिमगैल- सुता - सिवव्याहू * मिगिर सुखद प्रभु-जनम-उखाहू ॥
 वरनव राम - विवाह - ममाजू * मो मुदमंगलमय रितुराजू ॥
 ग्रीषम दुमह राम - वन - गवनू * पंथ कथा खर आतप पवनू ॥
 बरगवा धोर निमाचररारी * सुकूल मालि मुमंगलकारी ॥
 राम राजसुख विनय बड़ाई * विमद सुखद मोह मरद मुहाई ॥
 मती धिरोमनि मिय-गुन-गाथा * मोह गुन अमल अनूपम पाथा ॥

भरतसुभाउ सुमीतलताई * मदा एकरम वरनि न जाई ॥

दो०--अवलोकनि बोलनि मिलनि, प्रीति परसपर हास ।

भायप भलि चहुँ बंधु की, जल माधुरी सुवास ॥४२॥

आरति विनय दीनता मोरी * लघुता ललित सुवारि न थोरी ॥

अदभुत मलिल मुनत गुनकारी * आम पिआम मनोमलहारी ॥

राम मुप्रेमहि पोपत पानी * हरत मकल कलि-कलुप-गलानी ॥

भव स्रम भोषक तोषक तोषा * ममन दुरित दुख दारिद दोषा ॥

काम कोह मद मोह नगावन * विमल विवेक विराग बढ़ावन ॥

सादर मज्जन पान किए तें * मिटहिं पाप परिताप हिए तें ॥

जिन्ह एहिं वारि न मानम धोए * ते कायर कलिकाल विगोए ॥

त्रिषित निरपि रविकरभववारी * फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी ॥

दो०--मति अनुहारि सुवारि गुन, गन गनि मन अन्हवाइ ।

सुमिरि भवानी संकरहि, कह कवि कथा सुहाइ ॥

अव रघुपति पद पंकरह, हिय धरि पाइ प्रसाद ।

कहों जुगल मुनिवर्य कर, मिलन सुभग संवाद ॥४३॥

भरद्वाज मुनि वसहिं प्रयागा * तिन्हहिं राममद अति अनुरागा ॥

तापस सम - दम-दया - निधाना * परमारथपथ परम सुजाना ॥

माघ मकरगत रवि जब होई * तीरथपतिहिं आव सब कोई ॥

देव दनुज किन्नर नरखेनी * सादर मज्जहिं सकल त्रिवेनी ॥

पूजहिं माधव - पद - जलजाता * परसि अपय बटु हरषहिं गाता ॥

भरद्वाज आस्रम अतिपावन * परमरम्य मुनिवर - मनभावन ॥

तहाँ होइ मुनि - रिषय समाजा * जाहि जे मज्जन तीरथ राजा ॥

मज्जहिं प्रात समेत उद्याहा * कहहिं परसपर हरि-गुन-गाहा ॥

दो०--ब्रह्मनिरूपन--धर्म विधि, वरनहिं तत्त्व-विभाग ।

कहहिं भगति भगवंत कै, संजुत-ज्ञान-विराग ॥४४॥

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं * पुनि भव निज निज आसम जाहीं ॥
 प्रति संवत अति होइ अनंदा * मकर मज्जि गवनहिं मुनिवृन्दा ॥
 एक बार भरि मकर नहाए * भव मुनीग आसमन्ह मिधाए ॥
 जागवलिक मुनि परम विवेकी * भरद्वाज राखे पद टंकी ॥
 सादर चरनसरोज पग्वारे * अतिपुनीत आसन बैठारे ॥
 करि पूजा मुनि मुजस बखानी * बोले अतिपुनीत मृदु-बानी ॥
 नाथ एक संसउ बड़ मोरें * करगत बेदतत्व सब तोरें ॥
 कहत सो मोहि लागत भय लाजा * जौ न कहौ बड़ होइ अकाजा ॥

दो ०--संत कहहिं अस नीति प्रभु, सुति पुरान मुनि गाव ।

होइ न विमल विवेक उर, गुरु सन कियें दुराव ॥४५॥

अस विचारि प्रगटौं निज मोहू * हरहु नाथ करि जन पर छोहू ॥
 रामनाम कर अमित प्रभावा * मंत - पुरान - उपनिषद गावा ॥
 मंतत जपत संभु अविनाशी * गिव भगवान ज्ञान-गुन-रामी ॥
 आकर चारि जीव जग अहहीं * कामी मरत परम पद लहहीं ॥
 सोपि राममहिमा मुनिराया * गिव उपदेश करत करि दाया ॥
 रामु कवन प्रभु पूछौं तोहीं * कहिय बुझाइ कृपानिधि मोहीं ॥
 एक राम अवधमकुमारा * तिन्ह कर चरित विदित संमारा ॥
 नारि विरह दुख लहेउ अपारा * भयउ रोप रन रावन मारा ॥

दोहा-प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि ।

सत्यधाम सर्वज्ञ तुम्ह, कहहु विवेक विचारि ॥४६॥

जैसें मिटै मोर भ्रम भारी * कहहु सो कथा नाथ विस्तारी ॥
 जागवलिक बोले मुसुकाई * तुम्हहिं विदित रघुपतिश्रुताई ॥
 रामभगत तुम्ह मन क्रम बानी * चतुराई तुम्हारि मैं जानी ॥

चाहहु मुने रामगुन गूढ़ा * कान्हिहु प्रसन्न मनहुँ अतिमूढ़ा ॥
 तात मुनहु मादर मन लाई * कइहुँ राम कै कथा गूढ़ाई ॥
 महा मोह भद्रिपेम विमान्ना * रामकथा कालिका करावा ॥
 रामकथा मर्मिकरन ममाना * मंत-चकोर करहि जेहि पाना ॥
 ऐमेइ मंमय कान्ह भवानी * महादेव तव कहा वग्वानी ॥

दोहा-कहाँ सो मतिअनुहारि अब, उमा-संभु-संवाद ।

भयउसमयजेहिहेतुजेहि, सुनुमानमिदिहिविपाद ॥४७॥

एक वार त्रेता जुग माहीं * संभु गये कुम्भज रिपि पाहीं ॥
 संग मती जगजननि भवानी * पूजे रिपि अश्वित्सेस्वर जानी ॥
 रामकथा मुनिवर्ज वग्वानी * मुनी महिम परम मुख मानी ॥
 रिपि पूछी हरिभगति महाई * कही संभु अधिकारी पाई ॥
 कहत सुनत रघुपति-गुन-गाथा * कलु दिन तहाँ रह गिरिनाथा ॥
 मुनि मन विदा माँगि त्रिपुरारी * चले भवन संग दलकुमारी ॥
 तेहि अक्कर भंजन भद्रिभारा * हरि रघुवंस लान्ह अवतारा ॥
 पिता वचन तजि गज उदारमी * दंडकवन विचरत अविनामी ॥

दोहा-हृदय विचारत जात हर, केहि विधि दरसनु होइ ।

गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु, गये जान सबु कोइ ॥

सो-संकर उर अति छोभु, सती न जानइ मरमु सोइ ।

तुलसी दरसन-लोभु, मन डरु लोचन लालची ॥४८॥

रावन मग्न मनुज-कर जाँचा * प्रभु विधिवचनु कीन्ह चह माँचा ॥
 जौ नहि जाउँ गहै पद्धितावा * करत विचारु न वनत वनावा ॥
 एहि विधि भये सोचवम ईमा * तेही ममय जाइ दमर्मासा ॥
 लान्ह नीच मारीचहि संगी * भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ॥
 करि कल मूढ़ हरी वैदेही * प्रभुप्रभाउ तम विदित न तेही ॥

मृग बधि बंधु महित हरि आये * आश्रमु देखि नयन जल झाण् ॥
 विरह विकल नर इव खुराई * ग्योजत विपिन फिस्त दोउ भाई ॥
 कबहुँ जोग वियोग न जाकें * देखा प्रगट विरहदुख ताकें ॥

दोहा-अतिविचित्र रघुपतिचरित, जानहिं परम सुजान ।

जे मतिमंद विमोहबस, हृदय धरहिं कलु आन ॥४६॥

संभु समय तेहि रामहिं देखा * उपजा हिय अतिहरपु विमेश्वा ॥
 भरि लोचन छविमिंधु निहारी * कुममय जानि न कीन्हि चिन्हारी ॥
 जय मच्चिदानंद जगपावन * अम कहि चलेउ मगोज नमावन ॥
 चले जात मिव मतीममेता * पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥
 मती मो दसा संभु कै देखा * उर उपजा मंदेहु विमेश्वा ॥
 संकर जगतवंद्य जगदीसा * सुर नर मुनि मव नावत मीमा ॥
 तिन्ह नृपसुतहिं कीन्ह परनामा * कहि मच्चिदानंद परधामा ॥
 भये मगन छवि तामु विलोकी * अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥

दोहा-ब्रह्म जो व्यापक विरज अज, अकल अनीह अभेद ।

सो कि देह धरि होइ नर, जाहि न जानत वेद ॥५०॥

विष्णु जो सुर हित नरतनु धारी * मोउ सर्वज्ञ जथा त्रिपुरारी ॥
 खोजइ मो कि अज्ञ इव नारी * ज्ञानधाम श्रीपति अमुगारी ॥
 संभुगिरा पुनि मृषा न होई * मिव सर्वज्ञ जान मवु कोई ॥
 अम संसय मन भयउ अपारा * होइ न हृदय प्रबोधप्रचाग ॥
 जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी * हर अंतरजामी मव जानी ॥
 सुनहि सती तव नारिसुभाऊ * संसय अम न धारय उर काऊ ॥
 जासु कथा कुम्भज रिपि गाई * भगति जासु में मुनिहिं मुनाई ॥
 सोइ मम इष्टदेव रघुवीरा * सेवत जाहि मदा मुनि धीरा ॥

छंद--मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत विमल मन जेहि ध्यावहीं ।

कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहों ॥
 सोइ रामव्यापक ब्रह्म भुवन-निकाय-पति मायाधनी ।
 अवतरेउ अपने भगत-हित निजतंत्रनितरघु-कुल-मनी ॥

सो०-लाग न उर उपदेसु, जदपि कहेउ सिव वार बहु ।

बोले विहँसि महेसु, हरि-माया-बलुजानि जिय । ५१॥

जौ तुम्हरे मन अति भन्देहू * तौ किन जाइ परीझा लेहू ॥

तव लागि बैठ अहउँ बट आहीं * जब लागि तुम्ह ऐहहु मोहि पाहीं ॥

जैमें जाइ मोह भ्रम भारी * करेहु सो जतन विवेक विचारी ॥

चलीं मती सिव आयसु पाई * करहिं विचारु करों का भाई ॥

इहाँ सम्भु अस मन अनुमाना * दन्दसुता कहँ नहिं कल्याना ॥

मोरेहु कहे न संसय जाहीं * विधि विपरीत भलाई नाहीं ॥

होइहि मोइ जो राम रचि राखा * को करि तरक बढ़ावै माखा ॥

अस कहि लगे जपन हरिनामा * गई मती जहँ प्रभु मुखधामा ॥

दो०--पुनि पुनि हृदय विचार करि, धरि सीता कर रूप ।

आगे होइ चलि पंथ तेहि, जेहि आवत नरभूप ॥५२॥

लल्लिमन दीख उमाकृत वंषा * चकित भये भ्रम हृदय विमेषा ॥

कहि न सकत कळु अति गंभीरा * प्रभुप्रभाउ जानत मतिधीरा ॥

मतीकपटु जानेउ सुरस्वामी * सबदरसी सबअन्तरजामी ॥

मुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना * मोइ सर्वज्ञ राम भगवाना ॥

सती कीन्ह चह तहहुं दुराऊ * देखहु नारि - सुभाउ - प्रभाऊ ॥

निज मायाबल हृदय बग्वानी * बोले विहँसि राम मृदुबानी ॥

जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू * पिताममेत लीन्ह निज नामू ॥

कहेउ बहोरि कहाँ वृषकेतू * विपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥

दो०--रामवचन मृदु गूढ सुनि, उपजा अति संकोचु ।

सती सभित महेश पहिं, चलीं हृदय बड़ मोचु ॥५३॥

मैं संकर कर कहा न माना * निज अज्ञान राम पर आना ॥
जाइ उतरु अब देइहौं काहा * उर उपजा अतिदारुन दाहा ॥
जाना राम सती दुख पावा * निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा ॥
सती दोख कौतुक मग जाता * आगे राम सहित श्रीभ्राता ॥
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा * सहित बंधु मिय मुन्दर बंधवा ॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना * सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रवीना ॥
देखे भिव विधि विष्णु अनेका * अमितप्रभाउ एक तेँ एका ॥
बन्दत चरन करत प्रभु सेवा * विविध वेष देखे मव देवा ॥

दो ०--सती विधात्रो इंदिरा, देखीं अमित अनूप ।

जेहि जेहि वेष अजादि सुर, तेहि तेहि तन अनुरूप ॥५४॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते * मक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते ॥
जीव चराचर जो मंसारा * देखे सकल अनेक प्रकारा ॥
पूजहिं प्रभुहिं देव बहु बंधवा * रामरूप दृमर नहिं देखा ॥
अवलोकै रघुपति बहुतेरे * मीतामहित न वेष धनरे ॥
मोइ रघुवर मोइ लछिमन सीता * देखि सती अति भई सभिता ॥
हृदय कंप तन मुधि कछु नाहीं * नयन मँदि बैठीं मग माहीं ॥
बहुरि विलोकेउ नयन उधारी * कछु न दीग्य तहँ दच्छकुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपद सीमा * चली तहाँ जहँ रहे गिरीमा ॥

दो ०--गई समाप महेश तव, हँसि पूछी कुसलात ।

लीन्हि परोछा कवन विधि, कहहु सत्य सब वात ॥५५॥

सती समुझि रघुवीरप्रभाऊ * भयवम मिथ मन कीन्ह दुराऊ ॥
कछु न परीछा लीन्हि गोमाई * कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाई ॥
जो तुम्ह कहा सो सृषा न होई * मोरें मन प्रतीति अति मोई ॥

तब मङ्कर देखेंउ धरि ध्याना * सर्ती जो कीन्ह चरित सब जाना ॥
 वहुरि गममायहि सिरु नावा * फेरि मतिहि जेहि भूठ कहावा ॥
 हरि इच्छा भारी बलवाना * हृदय विचारत सम्भु सुजाना ॥
 मती कीन्ह सीता कर वंषा * मिव-उर भयउ विपाद विमेषा ॥
 जो अब करों मती मन प्रीती * मिटे भगति-पथु होइ अनीती ॥
 दो०--परम पुनीत न जाइ तजि, किये प्रेम बड़ पापु ।

प्रगटि न कहत महेसकळु, हृदय अधिक संतापु ॥५६॥

तब मङ्कर प्रभुपद सिरु नावा * सुमिरत राम हृदय अम आवा ॥
 एहि तन मतिहि भेट मोहि नाहीं * मिव मङ्कल्प कीन्ह मन माहा ॥
 अम विचारि मङ्कर मति धारा * चले भवन सुमिरत रघुवीरा ॥
 चलत गगन भे गिरा सुहाई * जय महेस भलि भगति द्वाई ॥
 अमपन तुम्ह विनु करैको आना * रामभगत समरथ भगवाना ॥
 सुनि नभ गिरा मती उर सोचा * पूछा सिवहिं समेत सकोचा ॥
 कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला * सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥
 जदपि मती पूछा बहु भाँती * तदपि न कहेउ त्रिपुर आरती ॥
 दो०--सती हृदय अनुमान किय, सब जानेउ सर्वज्ञ ।

कीन्ह कपटु मे संभु सन, नारि सहज जड़ अज्ञ ॥

सो०--जल पय सरिस बिकाइ, देखहु प्रीति की रीति भलि ।

बिलग होइ रसु जाइ, कपटु खटाई परत पुनि ॥५७॥

हृदय सोचु समुझत निज करनी * चिंता अमित जाइ नहिं बरनी ॥
 कृपामिंधु मिव परम अगाधा * प्रगट न कहेउ मोर अघराधा ॥
 मङ्कररुख अवलोकि भवानी * प्रभु मोहि तजेउ हृदय अकुलानी ॥
 निज अघसमुझिनकळु कहिजाई * तपै अवाँ इव उर अधिकारि ॥
 सतिहिं समोव जानि बृषकेतू * कही कथा सुन्दर सुखहेतु ॥
 बरनत पंथ विविध इतिहासा * त्रिस्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥

तहँ पुनि सम्भुममुझि पन आपन * वेंटे वट तर करि कमलामन ॥
मङ्गर सहज मरूप सम्हारा * लागि समाधि अग्वंड अपारा ॥
दो०--सती बसहि कैलास तव, अधिक सोच मन भाहिं ।

मरगुन कोऊ जान कछु, जुग सम दिवस सिराहिं ॥५८॥

नित नव मोच सती उर भारा * कव जेहो दुख-मागर-पारा ॥
मैं जो कीन्ह रघुपतिअपमाना * पुनि पतिवचन मृषा करि जाना ॥
मो फल मोहिं विधाता दीन्हा * जो कछु उचित रहा मोह कीन्हा ॥
अव विधि अस बुझिय नहिं तोहा * मङ्गरविमुख जिआवमि मोही ॥
कहि न जाइ कछु हृदय गलानी * मन महँ रामहिं सुमिरि सयानी ॥
जो प्रभु दीनदयालु कहावा * आरनिह्यन वेद जसु गावा ॥
तो मैं विनय करौं कर जोरी * छूटउ बेगि देह यह मोरी ॥
जो मोरं सिवचरन मनेहू * मन क्रम वचन मत्य व्रत एहू ॥

दो०--तां सबदरसी सुनिय प्रभु, करो सो बेगि उपाइ ।

होइ मरन जेहि विनहिं स्रम, दुसह विपत्ति विहाइ ॥५९॥

एहि विधि दुखित प्रजेमकुमारी * अकथनीय दारुन दुख भारी ॥
वाते सम्वत महम सतार्मी * तर्जा समाधि मम्भु अविनार्मी ॥
रामनाम सिव सुमिरन लागे * जानेउ सती जगतपति जागे ॥
जाइ सम्भुपद वंदन कीन्हा * मन्मुख्य मङ्गर आमन दीन्हा ॥
लगे कहन हरिकथा रमाला * दच्छ प्रजेम भये तेहि काला ॥
देखा विधि विचारि सब लायक * दच्छहिं कीन्ह प्रजापतिनायक ॥
बड़ अधिकार दच्छ जव पावा * अति अभिमान हृदय तव आवा ॥
नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं * प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो०--दच्छ लिये गुनि बोलि सब, करन लगे बड़ जाग ।

नेवते सादर सकल सुर, जे पावत मप-भाग ॥६०॥

किन्नर नाग सिद्ध गंधर्वा * वधुन्ह समेत चले सुर सर्वा ॥
 विष्णु विरंचि महेश विहाई * चले सकल सुर जान वनाई ॥
 सर्ती विलोक व्याम विमाना * जात चले सुंदर विधि नाना ॥
 सुरसुंदरी करहि कल गाना * सुनत सवन छूटहि मुनिध्याना ॥
 पूछेउ तव मिव कहेउ बग्यानी * पिताजग्य सुनि कछु हरषानी ॥
 जौं महेश मोहि आयसु देही * कछु दिन जाइ रहउँ मिम एही ॥
 पतिपरित्याग हृदय दुखु भारी * कहइ न निज अपराध विचारी ॥
 बोलीं सर्ती मनोहर वानी * भय संकोच प्रेम रस सानी ॥
 दो०--पिताभवन उत्सव परम, जौं प्रभु आयसु होइ ।

तो मैं जाउं कृपायतन, सादर देखन सोइ ॥६१॥

कहेहु नीक मोरेहु मन भावा * यह अनुचित नहिं नेवत पठावा ॥
 दच्छ सकल निज मुता बोलाई * हमरें वयर तुम्हउ बिसराई ॥
 ब्रह्ममभा हम सन दुखु माना * तेहि तें अजहुँ करहि अपमाना ॥
 जौं विनु बोले जाहु भवानी * रहइ न सीखु सनेहु न कानी ॥
 जदपि मित्र-प्रभु-पितु-गुरु गेहा * जाइय विनु बोलेहु न संदेहा ॥
 तदपि विरोध मान जहँ कोई * तहाँ गये कल्याण न होई ॥
 भाँति अनक सम्भु ममुझावा * भावीबस न जान उर आवा ॥
 कह प्रभु जाहु जो विनहिं बोलाये * नहिं भलि बात हमारे भाये ॥
 दो०--कहि देखा हर जतन बहु, रहइ न दच्छ कुमारि ।

दिये मुख्य गन संग तव, विदा कीन्ह त्रिपुरारि ॥६२॥

पिताभवन जवँ गई भवानी * दच्छ त्राम काहु न सनमानी ॥
 सादर भलेहि मिली एक माता * भगिनी मिलीं बहुत मुमुकाता ॥
 दच्छ न कछु पूछी कुसलाता * सतिहि विलोकि जरे सब गाता ॥
 सती जाइ देखेउ तव जागा * कतहुँ न दीख संभु कर भागा ॥
 तब वित चहेउ जो सङ्कर कहेऊ * प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ ॥

पाञ्चिल दुख न हृदय अम व्यापा * जम यह भयउ महा परितापा ॥
जद्यपि जग दारुन दुख नाना * मव तें कठिन जातिअपमाना ॥
समुझि सो मतिहि भयउ अतिक्रोधा * बहुविधि जननी कीन्ह प्रबोधा ॥
दोहा—सिवअपमान न जाइ सहि, हृदय न होइ प्रबोध ।

सकल सभहिं हठि हटकि तव, बोलीं वचन सक्रोध ॥६३॥

मुनहु मभामद सकल मुनिंदा * कही मुनी जिन्ह संकरनिंदा ॥
सो फलु तुरत लहव मव काहू * भली भाँति पञ्चिताव पिताहू ॥
संत - संभु - श्रीपति - अपवादा * मुनिअ जहाँ तहँ अमि मरजादा ॥
काठिअ तासु जीभ जो बसाई * खवन मँदि नत चलिअ पराई ॥
जगदातमा महेश पुरारी * जगतजनैक मव के हितकारी ॥
पिता मंदसति निंदत तेही * दच्छ-मुक-संभव यह देही ॥
तजिहों तुरत देह तेहि हेतू * उर धरि चंद्रमौलि वृषकेतू ॥
अस कहि जोगअगिनितनु जारा * भयउ सकल मव हाहाकारा ॥
दोहा--सतीमरन सुनि संभुगन, लगे करन मव खीस ।

जग्यविधंस विलोकि भृगु, रच्छा कीन्हि मुनीस ॥६४॥

समाचार मव संकर पाए * वीरभद्र करि कोप पटाए ॥
जग्यविधंस जाई तिन्ह कीन्हा * सकल मुरन्ह विधिवत फल दीन्हा ॥
भै जगविदित दच्छगति मोई * जमि कछु संभु विमुख के होई ॥
यह इतिहास सकल जग जाना * तातें भै मंछेप बखाना ॥
सती मरत हरि मन बर माँगा * जनम जनम सिवपद अनुरागा ॥
तेहि कारन हिमगिरिगृह जाई * जनमी पारवती तनु पाई ॥
जव तें उमा भेलगृह जाई * सकल मिद्धि भंपति तहँ छाई ॥
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआषम कीन्हे * उचित वाप हिमभूधर दीन्हे ॥
दोहा--सदा सुमन-फल-सहित सब, द्रुम नव नाना जाति ।

प्रगटीं सुन्दर सेलपर, मनिआकर बहु भाँति ॥६५॥

सरिता मव पुर्नात जल बहहीं ❀ स्वग मृग मधुप मुखी सब रहहीं ॥
 महज बयर मव जीवन्ह त्यागा ❀ गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ॥
 मोह मैल गिरिजा गृह आपँ ❀ जिमि जन रामभगति के पाएँ ॥
 नित नूतन मंगल गृह ताम् ❀ ब्रह्मादिक गावहिं जस जासू ॥
 नारद ममाचार मव पाए ❀ कोतुकही गिरिगेह सिधाए ॥
 मैलराज वड़ आदर कान्हा ❀ पद पषारि वर आसनु दीन्हा ॥
 नारिमहित मुनिपद मिरु नावा ❀ चरनमलिल मव भवनु सिचावा ॥
 निज सौभाग्य बहुत गिरि वरना ❀ सुता बोलि मेली मुनिचरना ॥
 दोहा--त्रिकाल्मय सर्वग्य तुम्ह, गति सर्वत्र तुम्हारि ।

कहहु सुता के दोष गुन, मुनिवर हृदय विचारि ॥६६॥

कह मुनि विहँमि गृह मृदु वानी ❀ सुता तुम्हारि सकल गुनखानी ॥
 सुंदर महज सुभील सयानी ❀ नाम उमा अंत्रिका भवानी ॥
 सब लच्छनसंपन्न कुमारी ❀ होइहि संतत पियहि पियारी ॥
 मदा अचल एहि कर अहिवाता ❀ एहि तें जसु पइहहिं पितु माता ॥
 होइहि पूज्य सकल जग माहीं ❀ एहि मेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥
 एहि कर नाम सुमिरि मंमारा ❀ तिय चढ़िहहिं पतिव्रत अमिधारा ॥
 सैन सुवच्छन सुता तुम्हारी ❀ सुनहुँ जे अब अवगुन दुइ चारी ॥
 अगुन अमान मातुपितुर्हाना ❀ उदासीन सब संसय छीना ॥

दोहा--जोगी जटिल अकाम मन, नगन अमंगलबेख ।

अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि, परी हस्त असि रेख ॥६७॥

मुनि मुनि गिरा सत्य जिय जानी ❀ दुख दंपतिहि उमा हरषानी ॥
 नारदहू यह भेदु न जाना ❀ दमा एक समुझव बिलगाना ॥
 सकल सखी गिरजा गिरि मैना ❀ पुलक सरीर भरे जल नैना ॥
 होइ न मृषा देवरिषि भाखा ❀ उमा सो वचनु हृदय धरि राखा ॥
 उपजेउ सिवपदकमल सनेहू ❀ मिलन कठिन मन भा संदेहू ॥

जानि कुअवसरु प्रीति दुराई * मखि उछंग बैठी पुनि जाई ॥
 भूठि न होइ देवरिषिवानी * सोचहिं दंपति मखी मयानी ॥
 उर धरि धीर कहै गिरिराऊ * कहहु नाथ का करिअ उपाऊ ॥
 दोहा--कह मनीस हिमवंत सुनु, जो विधि लिखा लिलार ।

देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनहार ॥६८॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई * होइ करै जाँ देउ महाई ॥
 जस वर में वरनेउं तुम्ह पाहीं * मिलिहि उमहिं तस मंसय नाही ॥
 जे जे वर के दोष बखाने * ते सब सिव पहिं में अनुमाने ॥
 जाँ बिवाहु संकर सन होई * दोषउ गुन सम कह सबु कोई ॥
 जाँ अहिमेज मयन हरि करहीं * बुध कळु तिन्हकर दोषु न धरहीं ॥
 भानु कृसानु सर्व रस खाहीं * तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाही ॥
 सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई * सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥
 समरथ कहँ नहि दोषु गोमाई * रवि पावक सुरसरि की नाई ॥
 दोहा--जाँ अस हिंसिपा करहिं नर, जड़विवेक अभिमान ।

परहिं कल्प भरि नरक महँ, जीव कि ईस समान ॥६९॥

सुरसरिजलकृत वारुनि जाना * कवहुँ न संत करहिं तेहि पाना ॥
 सुरसरि मिलें सो पावन जैमं * ईम अनीसहि अंतरु तैमं ॥
 संभु सहज समरथ भगवाना * एहि बिवाह सब विधि कल्याना ॥
 दुराराथ्य पै अहहिं महेसू * आसुतोष पुनि किएँ कलेसू ॥
 जाँ तपु करै कुमारि तुम्हारी * भाविउ मेटि मकहिं त्रिपुरारी ॥
 जद्यपि वर अनेक जग माहीं * एहि कहँ सिव तजि दूमर नाही ॥
 वरदायक प्रनतारति - भंजन * कृपासिंधु मेवक - मन - रंजन ॥
 इच्छित फल विनु सिव अवरार्थे * लहिअ न कोटि जोग जप माधे ॥

दोहा--अस कहि नारद सुमिरि हरि, गिरिजाह दीन्हि असीस ।

होइहि यह कल्यान अव, संसय तजहु गिरोस ॥७०॥

कहि अम ब्रह्मभवन मुनि गयऊ * आगिल चरित सुनहु जस भयऊ ॥
 पतिहि एकांत पाइ कह मैना * नाथ न में ममुके मुनिवैना ॥
 जों धरु वरु कुलु होइ अनूपा * करिअ विवाहु सुता अनुरूपा ॥
 नत कन्या वरु रहउ कुआँरी * कंत उमा मम प्रानपियारी ॥
 जों न मिलिहि वरु गिरिजहि जोगू * गिरि जइ सहज कहिहि सबु लोगू ॥
 सोइ विचारि पति करेहु विवाहू * जेहि न बहोरि होइ उर दाहू ॥
 अम कहि परो चरन धरि भीमा * बोले सहित सनेह गिरीसा ॥
 वरु पावक प्रगटे ममि माहीं * नारदवचनु अन्यथा नाहीं ॥
 दोहा--प्रिया सोचु परिहरहु सब, सुमिरहु श्रीभगवान ।

पारवतिहि निरमएउ जेहि, सोइ करिहि कल्याण ॥७१॥

अब जौ तुमहि सुता पर नेहू * तौ अम जाइ मिग्वावनु देहू ॥
 करै सो तपु जेहि मिलहिं महेसू * आन उपाय न मिटिहि कलेसू ॥
 नारदवचन सगर्भ सहेतू * सुंदर सब गुन-निधि वृषकेतू ॥
 अस विचारि तुम्ह तजहु अमंका * सबहि भाँति मंकर अकलंका ॥
 मुनि पतिवचन हरपि मन माहीं * गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं ॥
 उमहि विलोकि नयन भरि बारी * सहित सनेह गोद बैठारी ॥
 बारहिं बार लेति उर लाई * गदगद कंठ न कलु कहि जाई ॥
 जगतमातु सर्वज्ञ भवानी * मातुमुखद बोली मृदुवानी ॥
 दोहा--सुनहि मातु मैं दीख अस, सपन सुनावों तोहिं ।

सुन्दर गौर सुविप्रवर, अस उपदेसेउ मोहिं ॥७२॥

करहि जाइ तपु सैलकुमारी * नारद कहा सो सत्य विचारी ॥
 मातुपितहि पुनि यह मत भावा * तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा ॥
 तपबल रचै प्रपंचु विधाता * तपुबल विष्णु सकल-जग-त्राता ॥
 तपबल मंभु करहिं संवारा * तपुबल मेष धरें महिभारा ॥
 तपअधार सब सृष्टि भवानी * करहि जाइ तपुअम जिय जानी ॥
 सुनत बचन विश्रमित महतारी * सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी ॥

एहि विधि गयउ कालु बहुवीती * नित नै होइ रामपद प्रीती ॥
 नेमु प्रेमु संकर कर देखा * अविचल हृदय भगति कै रेखा ॥
 प्रगटे रामु कृतज्ञ कृपाला * रूप-सील-निधि तेज बिसाला ॥
 बहु प्रकार संकरहि सराहा * तुम्ह बिनु अस व्रतु को निरवाहा ॥
 बहु विधि राम सिवहिं समुझावा * पारवती कर जनमु सुनावा ॥
 अतिपुनीत गिरिजा कै करनी * बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी ॥
 दोहा--अब बिनती मम सुनहु सिव, जौ मो एर निज नेहु ।

जाइ बिवाहहु सैलजहिं, यह मोहि माँगे देहु ॥७६॥

कह सिव जदपि उचित अस नाही * नाथबचन पुनि मेटि न जाहीं ॥
 मिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा * परम धरमु यह नाथ हमारा ॥
 मातु पिता गुरु प्रभु कै वानी * बिनहिं विचार करिअ सुभ जानी ॥
 तुम्ह सब भाँति परम-हित-कारी * अज्ञा मिर पर नाथ तुम्हारी ॥
 प्रभु तोषेउ सुनि संकरबचना * भगति विवंक धरमजुत रचना ॥
 कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ * अब उर राखेहु जो हम कहेऊ ॥
 अंतरधान भये अम भाखी * संकर सोइ मूरति उर राखी ॥
 तबहिं सप्तारिषि सिव पहिं आये * बोले प्रभु अति बचन सुहाये ॥
 दोहा--पारवती पहिं जाइ तुम्ह, प्रेमपरिच्छा लेहु ।

गिरिहि प्रेरि पठयेहु भवन, दूरि करेहु संदेहु ॥७७॥

तव रिषि तुरत गौरि पहुँ गयऊ * देखि दसा मुनि विसमय भयऊ ॥
 रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी * मूरतिवंत तपस्या जैसी ॥
 बोले मुनि सुनु सैलकुमारी * करहु कवन कारन तप भारी ॥
 केहि अवरधहु का तुम्ह चहहू * हम सन सत्य मरमु किन कहहू ॥
 कहत बचन मनु अति सकुचाई * हँसिहहु सुनि हमारि जडताई ॥
 मनु हठ परा न सुनइ सिखावा * चहत वारि पर भीति उठावा ॥
 नारद कहा सत्य सोइ जाना * बिनु पंखन्ह हम चहहिं उडाना ॥
 देखहु मुनि अविंवकु हमारा * चाहिय सदा सिवहिं भरतारा ॥
 दोहा--सुनत बचन बिहँसे रिषय, गिरिसंभव तव देह ।

नारद कर उपदेशु सुनि, कहहु वसेउ को गेह ॥७८॥

दच्छसुतन्ह उपदेशेन्हि जाई * तिन्ह फिरि भवनु न देखा आई ॥
 चित्रकेतु कर घरु उन घाला * कनककमिपु कर पुनि अम हाला ॥
 नारदसिष जे सुनहिं नर नारी * अवमि होहिं तजि भवनु भिग्वारी ॥
 मन कपटी तन सज्जन चीन्हा * आपु सरिम सवही चह कीन्हा ॥
 तेहि के वचन मानि विस्वासा * तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा ॥
 निर्गुन निलज कुबेप कपाली * अकुल अगेह दिगंबर व्याली ॥
 कहहु कवन सुखु अस वर पाये * भल भूलिहु ठग के वौराये ॥
 पंच कहे सिव सती विवाही * पुनि अबडेरि मराएन्हि ताही ॥
 दोहा--अब सुख सोवत सोरु नहिं, भीख माँगि भव खाहिं ।

सहज एकाकिन्ह के भवन, कवहुं कि नारि खटाहिं ॥७९॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा * हम तुम्ह कहँ वर नीक विचारा ॥
 अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला * गावहिं वेद जासु जसलीला ॥
 दूपनरहित सकल-गुन-रामी * श्रीपति पुर वैकुण्ठ-निवासी ॥
 अस वरु तुम्हहि मिलाउव आनी * सुनत विहँमि कह वचन भवानी ॥
 सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा * हठ न छूट छूटै वरु देहा ॥
 कनकउ पुनि पपान तें होई * जारेहु महजु न परिहर सोई ॥
 नारदवचन न मैं परिहरऊँ * वसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ ॥
 गुरु के वचन प्रतीति न जेही * सपनेहु सुगम न सुख मिधि तेही ॥
 दोहा--महादेव अवएन भवन, विष्णु सकलगुनधाम ।

जेहिकर मनु रम जाहि सन, तोह तेही सन काम ॥८०॥

जौं तुम्ह मिलतेहु प्रथममुनीसा * सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि मीमा ॥
 अब मैं जनमु संभु हित द्वारा * को गुन दूपन करै विचारा ॥
 जौं तुम्हरे हठ हृदय विसेपी * रहि न जाइ विनु किए वरेषी ॥
 तौ कौतुकिअन्ह आलग नार्ही * वर कन्या अनेक जग माहीं ॥
 जनम कोटि लगि रगरि हमारी * वरउँ संभु नतु रहउँ कुआँरी ॥

तजउँ न नारद कर उपदेसू * आपु कहहिं सतवार महेसू ॥
 में पाँ परउँ कहइ जगदंबा * तुम्ह गृह गवनहु भयउ विलंबा ॥
 देखि प्रेमु बोले मुनि ज्ञानी * जय जय जगदंबिके भवानी ॥
 दोहा--तुम्ह माया भगवान सिव, सकलजगतपितु मातु ।

नाइ चरनसिर मुनि चले, पुनि पुनि हरपत गातु ॥८१॥

जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाये * करि विनती गिरिजहिं गृह ल्याये ॥
 वहुरि सप्तारिषि सिव पहिं जाई * कथा उमा कै सकल सुनाई ॥
 भए मगन सिव सुनत मनंहा * हरपि सप्तारिषि गवने गेहा ॥
 मनु थिरु करि तव संभु सुजाना * लगे करन रघुनायकध्याना ॥
 तारकु अमुर भयउ तेहि काला * भुजप्रताप बल तेज विमाला ॥
 तेइ सब लोक लोकपति जीते * भए देव सुख संपति रीते ॥
 अजर अमर सो जीति न जाई * हारं सुर करि विविध लराई ॥
 तव विरंचि सन जाइ पुकारे * देखे विधि सब देव दुखारे ॥
 दोहा--सब सन कहा बुझाइ विधि, दनुजनिधन तव होइ ।

संभु - सुक्र - संभूत सुत, एहि जीते रन सोइ ॥८२॥

मोर कहा मुनि करहु उपाई * होइहि ईश्वर करिहि सहाई ॥
 सती जो तजी दच्छमख देहा * जनमी जाइ हिमाचलगेहा ॥
 तेइ तपु कीन्ह संभु पति लागी * सिव समाधि बैठे सब त्यागी ॥
 जदपि अहइ असमंजस भारी * तदपि बात एक सुनहु हमारी ॥
 पठवहु काम जाइ सिव पाहीं * करै छोभ संकर मन माहीं ॥
 तव हम जाइ सिवहिं सिर नाई * करवाउव विवाह बरिआई ॥
 एहि विधि भलेहिं देवहित होई * मत अतिनीक कहइ सब कोई ॥
 अस्तुति सुरन कीन्हि अतिहेतू * प्रगटेउ विषमवान झखकेतू ॥
 दोहा--सुरन्ह कही निजविपति सब, सुनिमन कीन्ह विचार ।

संभु विरोध न कुसल मोहि, विहंसिकहेउअसमार ॥८३॥

तदपि करव मैं काजु तुम्हारा * सुति कह परम धरम उपकारा ॥
 परहित लागि तजे जो देही * संतत संत प्रसंहिं तेही ॥
 अस कहि चलेउ सबहिं मिरु नाई * सुमनधनुष कर महित महाई ॥
 चलत मार अस हृदय विचारा * शिवविरोध ध्रुव मरन हमारा ॥
 तव आपन प्रभाउ विस्तारा * निजबस कीन्ह सकल संसारा ॥
 कोपेउ जबहिं वारि-चर-केतू * छन महँ मिटे सकल सुतिसेतू ॥
 ब्रह्मचर्ज व्रत संजम नाना * धीरज धरम ज्ञान विज्ञाना ॥
 सदाचार जप जोग विरागा * गमय विवेक कटक सब भागा ॥

छंद—भागेउ विवेकु महाइ महित सो सुभट मंजुग महि मुरे ।

सदग्रंथ पर्वत कंदरन्दि महँ जाइ तेहि अचसर दुरे ॥

होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा ।

दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहँ कोपि करधनुसर धरा ॥

दोहा--जे सजीव जग चर अचर, नारि पुरुष अस नाम ।

ते निजनिज मरजाद तजि, भए सकल बस काम ॥८४॥

सबके हृदय मदन अभिलाखा * लता निहारि नवहिं तरुमाखा ॥

नदी उमंगि अंबुधि कहँ धाई * मंगम करहिं तलाव तलाई ॥

जहँ अग्नि दसा जड़न की वरनी * को कहि सकइ सचेतन्ह करनी ॥

पसु पच्छी नभजलथलचारी * भए कामवस समय विसारी ॥

मदनअंध व्याकुल सब लोका * निमिदिनु नहिं अवलोकहिं कोका ॥

देव दनुज नर किन्नर व्याला * प्रेत पिमाच भूत वेताला ॥

इन्हकी दसा न कहेउँ वखानी * मदा काम के चरे जानी ॥

सिद्ध विरक्त महा मुनि जोगी * तेपि कामवस भये वियोगी ॥

छंद—भए कामवस जोगीस तापस पासरन की को कहे ।

देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥

अबला विलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अथलामयम् ।

दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयम् ॥

सोरठा--धरा न काहू धीर, सवके मन मनसिज हरे ।

जे राखे रघुवीर, ते उवरे तेहि काल महँ ॥८५॥

उभय घरी अम कौतुक भयऊ * जब लागि काम संभु पहुँ गयऊ ॥
 सिवहिं विलोकि मसंकेउ मारू * भयउ जथाथिति मव संमारू ॥
 भए तुरत जग जीव सुखारे * जिमि मद उतरि गए मतवारे ॥
 रुद्रहिं देखि मदन भय माना * दुराधर्य दुर्गम भगवाना ॥
 फिरत लाज कळु करि नहिं जाई * मरनु ठानि मन रचेमि उपाई ॥
 प्रगटेमि तुरत रुचिर रितुराजा * कुसुमित नव तरुराजि विराजा ॥
 बन उपवन वापिका तड़ागा * परम सुभग सब दिमाविभागा ॥
 जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा * देखि मुएहु मन मनसिज जागा ॥

छंद--जागइ मनोभव मुएहु मन बन सुभगता न परै कही ।

सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ॥

विकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ।

कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपञ्जरा ॥

दोहा--सकल कला करि कोटि विधि, हारेउ सेन समेत ।

चली न अचल समाधि सिव, कोपेउ हृदय निकेत ॥८६॥

देखि रसाल विटपवरसाखा * तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा ॥

सुमनचाप निज सर संधाने * अतिरिसि ताकि सवन लागि ताने ॥

झाड़ेउ विषम बान उर लागे * छूटि समाधि संभु तव जागे ॥

भयउ ईस मन छोम विसेखी * नयन उधारि सकल दिसि देखी ॥

सौरभपल्लव मदनु विलोका * भयउ कोपु कंपेउ त्रैलोका ॥

तव सिव तीसर नयन उधारा * चितवत कामु भयउ जरि झारा ॥

हाहाकार भयउ जग भारी * डरणे सुर भए असुर सुखारी ॥

समुझि कामसुखु सोचहिं भोगी * भये अकंटक साधक जोगी ॥

छंद--जोगी अकंटक भए पतिगति सुनति रति मुरझित भई ।

रोदति बदति बहु भाँति करुना करति संकर पहिं गई ॥

अतिप्रेम करि विनती विविध विधि जोरि कर मनमुख रही ।

प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही ॥

दोहा--अब तैं रति तव नाथ कर, होइहि नाम अनंग ।

बिनुबपु ब्यापिहि सवहि पुनि, सुनु निज मिलन प्रसंग ॥८७॥

जब जदुबंस कृष्णअवतारा * होइहि हरन महा महिभारा ॥

कृष्णतनय होइहिं पति तोरा * बचन अन्यथा होइ न मोरा ॥

रति गवनी सुनि संकर बानी * कथा अपर अब कहौं बखानी ॥

देवन समाचार सब पाये * ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाये ॥

सब सुर विष्णु विरंचि समेता * गये जहाँ सिव कृपानिकेता ॥

पृथक पृथक तिन्ह कीन्ह प्रसंसा * भये प्रसन्न चंद्रअवतंसा ॥

बोले कृपासिंधु बृषकेतू * कहहु अमर आये केहि हेतू ॥

कह विधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी * तदपि भगति वस विनवौं स्वामी ॥

दोहा--सकल सुरन्ह के हृदय अस, संकर परम उछाहु ।

निज नयनन्हि देखा चहहिं, नाथ तुम्हार विवाहु ॥८८॥

यह उत्सव देखिय भरि लोचन * सोइ कळु करहु मदन-मद-मोचन ॥

काम जारि रति कहँ वरु दीन्हा * कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा ॥

सासति करि पुनि करहिं पसाऊ * नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ ॥

पारवती तप कीन्ह अपारा * करहु तामु अब अंगीकारा ॥

सुनि विधि विनय समुझि प्रभुवानी * ऐम्ह होउ कहा सुख मानी ॥

तव देवन दुंदुभी बजाई * वरपि सुमन जय जय सुरसाई ॥

अवसर जानि सप्तारिषि आए * तुरतहि विधि गिरिभवन पठाए ॥

प्रथम गये जहँ रही भवानी * बोले मधुर वचन छलभानी ॥

दोहा--कहा हमार न सुनेहु तव, नारद के उपदेस ।

अब भा भूठ तुम्हार पन, जारेउ कामु महेस ॥८९॥

सुनि बोली मुमुकाइ भवानी * उचित कहेहु मुनिवर विजानी ॥

तुम्हरे जान कामु अब जारा * अब लागि मंभु रहे सुविकारा ॥
 हमरे जान मदा मिव जोगी * अज अनवद्य अकाम अभोगी ॥
 जौं में मिव मेयउँ अस जानी * प्रीति नमेत करम मन बानी ॥
 तौ हमार पन सुनहु मुनीमा * करिहहिं सत्य कृपानिधि ईमा ॥
 तुम्ह जो कहा हर जारेंउ मारा * मो अति बड़ अविबेकु तुम्हारा ॥
 तात अनल कर महज सुभाऊ * हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ ॥
 गण समीप मो अवगि नमाई * अमि मनमथ महेम कै नाई ॥
 दोहा--हिय हरपे मुनि वचन सुनि, देखि प्रीति विस्वास ।

चले भवानी नाइ सिर, गए हिमाचल पास ॥६०॥

सब प्रमंशु गिरिपतिहिं सुनावा * मदन दहन सुनि अति दुखु पावा ॥
 बहुरि कहेउ रति कर वरदाना * मुनि हिमवंत बहुत सुख माना ॥
 हृदय विचारि मंभु प्रभुताई * मादर मुनिवर लिए बोलाई ॥
 सुदिन सुनखत सुखरी मोचाई * वेगि वेदविधि लगन धराई ॥
 पत्री समरिपिन्ह मोइ दान्ही * गहि पद विनय हिमाचल कीन्ही ॥
 जाइ विधिहि तिन्ह दीन्हि मोपार्ती * वाँचत प्रीति न हृदय समार्ती ॥
 लगन वाँचि अज मवहि सुनाई * हरपे सुनि सब सुरसमुदाई ॥
 सुमनवृष्टि नभ बाजन बाजे * मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे ॥
 दोहा--लगे सवारन सकल सुर, वाहन विविध विमान ।

होहि सगुन मंगल सुखद, करहि अपछुरा गान ॥६१॥

मिवहिं मंभुगन करहि सिंगारा * जटामुकुट अहिमौरु सँवारा ॥
 कुंडल कंकन पहिरे व्याला * तन विभूति पट केहरिछाला ॥
 ससि ललाट सुंदर मिर गंगा * नयन तीनि उपवीत भुजङ्गा ॥
 गरल कंठ उर नर-मिर-माला * असिव वेप मिवधाम कृपाला ॥
 कर त्रिमूल अरु डमरु विराजा * चले वसह चढ़ि वाजहिं वाजा ॥
 देखि मिवहिं सुरतिय मुसुकाहीं * वरलायक दुलहिनि जग नाहीं ॥
 विष्णु विरंचि आदि सुरवाता * चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता ॥

सुरसमाज सब भाँति अनूपा * नहिं वरात दूलहअनुरूपा ॥
दोहा--विष्णु कहा अस विहँसि तब, बोलि सकल दिसिराज ।
विलग विलग होइ चलहु सब, निजनिज सहित समाज ॥६२॥

वर अनुहारि वरात न भाई * हँसी करैहहु परपुर जाई ॥
विष्णु वचन सुनि सुर मुसुकाने * निज निज सेन सहित विलगाने ॥
मनहीं मन महेश मुसुकाहीं * हरि के विंग्य वचन नहिं जाहीं ॥
अतिप्रिय वचन सुनत प्रिय केरे * भृंगिहि प्रेरि सकल मन टरे ॥
शिव अनुसामन सुनि सब आए * प्रभु पदजलज सीस तिन्ह नाए ॥
नाना वाहक नाना वेखा * विहँसे शिव समाज निज देखा ॥
कोउ मुखहीन विपुलमुख काहू * विनु पद कर कोउ बहु-पद वाहू ॥
विपुलनयन कोउ नयनविहीना * रिष्ट पुष्ट कोउ अति तनखीना ॥
छन्द--तनखीन कोउ अतिपीन पावन कोउ अपावन गति धरे ।

भूपन कराल कपाल कर सब मद्य सोनित तन भरे ॥

खर-स्वान-सुअर-सृगाल-मुख मन वेप अगनित को गनै ।

बहु जिनि सप्रेत पिमाच जोगि जमात वरनत नहिं बनै ॥

सोरठा--नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब ।

देखत अति विपरीत, बोलहिं वचन विचित्र विधि ॥६३॥

जस दूलह तसि वनी वराता * कौतुक विविध होहिं मग जाता ॥
इहाँ हिमाचल रचेउ विताना * अति विचित्र नहिं जाइ वग्वाना ॥
सैल सकल जहँ लगि जग माहीं * लघु विशाल नहिं वरनि मिराहीं ॥
वन मागर सब नदी तलावा * हिम गिरि सब कहँ नेवति पठावा ॥
काम रूप सुंदर तनु-धारी * सहित समाज मोह वर नारी ॥
आए सकल हिमाचल गेहा * गावहिं मंगल सहित मनहा ॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृह सवँराये * जथाजोग जहँ तहँ सब लाये ॥
पुर सोभा अवलोकि मुहाई * लागइ लघु विगंचिनिपुनाई ॥

छंद--लघु लागि विधि की निपुनता अवलोकि पुरसोभा मही ।

वन वाग कूप तड़ाग सरिता मुअग सब मक को कही ॥

मंगल विपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं ।
 वनिता पुरुष सुंदर चतुर छवि देखि मुनि मन मोहहीं ॥
 दोहा--जगदंबा तहँ अवतरी, सो पुर वरनि कि जाइ ।

रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख, नित नूतन अधिकाइ ॥६४॥

नगर निकट वरात मुनि आई * पुर खरभर सोभा अधिकाई ॥
 करि वनाव सब वाहन नाना * चले लेन सादर अगवाना ॥
 हिय हरपे सुरसेन निहारी * हरिहिं देखि अति भये सुखारी ॥
 सिवसमाज जब देखन लागे * विडरि चले वाहन सब भागे ॥
 धरि धीरज तहँ रहे सयाने * बालक सब लै जीव पराने ॥
 गये भवन पूछहिं पितु माता * कहहिं वचन भय कंपित गाता ॥
 कहिय कहा कहि जाइ न वाता * जम कर धारि किधौं बरिआता ॥
 वर वौराह बरद असवारा * व्याल कपाल विभूषन छारा ॥

छंद—तन छार व्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा ।

सँग भूत प्रेत पिशाच जोगिनि विकटमुख रजनीचरा ॥

जो जियत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही ।

देखिहि सो उमाविवाह घर घर वात असि लरिकन्ह कही ॥

दोहा--समुझि महेस समाज सब, जननि जनक मुसुकाहिं ।

बाल बुझाये विविध विधि, निडर होहु डर नाहिं ॥६५॥

लै अगवान वरातहिं आये * दिये सबहि जनवास सुहाये ॥
 मैना सुभ आरती सर्वाँरी * संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
 कंचनथार सोह वरपानी * परिछन चली हरहिं हरपानी ॥
 विकटवेष रुद्रहिं जब देखा * अबलन्ह उर भय भयउ विसेखा ॥
 भागि भवन पैठी अतित्रासा * गये महेस जहाँ जनवासा ॥
 मैना हृदय भयउ दुख भारी * लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी ॥
 अधिक सनेह गोद बैठारी * स्यामसरोज नयन भरि वारी ॥
 जेहि विधि तुम्हहिं रूप अस दीन्हा * तेहि जड़ बर बाउर कस कीन्हा ॥

छंद—कस कीन्ह बर बौराह विधि जेहि तुम्हहिं सुंदरता दई ।
जो फलु चहिय सुरतरुहिं सो बरवस बबूरहिं लागई ॥
तुम्ह सहित गिरि ते गिरउँ पावक जरउँ जलनिधि महँ परउँ ।
घर जाउ अपजस होउ जग जीवत बिवाह न हौँ करउँ ॥

दोहा-भई विकल अवलासकल, दुखित देखि गिरिनारि ।

करि विलाप रोदति बदाति, सुतासनेह सँभारि ॥६६॥

नारद कर मैं काह विगारा * भवन मोर जिन्ह बसत उजारा ॥
अस उपदेसु उमहिं जिन्ह दीन्हा * बौरे बरहिं लागि तप कीन्हा ॥
साँचेहु उन्हेके मोह न माया * उदासीन धन धाम न जाया ॥
पर-घर-धालक लाज न भीरा * बाँझ कि जान प्रसव की पीरा ॥
जननिहिं विकल विलोकि भवानी * बोली जुत विवेक मृदुवानी ॥
अस विचारि सोचहि मति माता * सो न टरै जो रचै विधाता ॥
करम लिखा जौ बाउर नाहू * तौ कत दोषु लगाइय काहू ॥
तुम्हसन मिटिहि कि विधिके अंका * मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका ॥

छन्द—जिनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं ।
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाव जहँ पाउव तहीं ॥
सुनि उमा बचन विनीत कोमल सकल अवला सोचहीं ।
बहु भाँति विधिहि ललाइ दूपन नयन वारि विमोचहीं ॥

दोहा—तेहि अवसर नारद सहित, अरु रिषिसप्त समेत ।

समाचार सुनि तुहिनगिरि, गवने तुरित निकेत ॥६७॥

तव नारद सबही समुझावा * पूरव-कथा-प्रसंग सुनावा ॥
मैना सत्य सुनहु मम वानी * जगदंबा तव सुता भवानी ॥
अजा अनादि मक्ति अविनाशनि * सदा संभु अरधंग निवासिनि ॥
जग-संभव-पावन-लय-कारिनि * निज इच्छा लीला-वपु-धारिनि ॥
जनमी प्रथम दच्छगृह जाई * नाम सती मुंदर तनु पाई ॥

तहउँ सती संकरहि विवाहीं ❀ कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥

एक बार आवत भिव मंगा ❀ देखेउ रघुकुल-कमल-पतंगा ॥

भयउ मोह सिव कहा न कीन्हा ❀ भ्रम वम वेष सीय कर लीन्हा ॥

छन्द-सियवेष सती जो कीन्हा तेहि अपराध संकर परिहरी ।

हरविरह जाइ बहोरि पितु के जग्य जोगानल जरी ॥

अब जनमि तुम्हरे भवन निजपति लागि दारुन तपु किया ।

अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्वदा संकरप्रिया ॥

दोहा-सुनि नारद के वचन तब, सब कर मिटा विपाद ।

छिन महँ व्यापेउ सकल पुर, घर घर यह संवाद ॥६८॥

तव मैना हिमवंत अनंदे ❀ पुनि पुनि पारवर्तापद वंदे ॥

नारि पुरुष सिसु जुवा सयाने ❀ नगर लोग सब अति हरपाने ॥

लगे होन पुर मंगल गाना ❀ भजे सबहि हाटकवट नाना ॥

भाँति अनेक भई जेवनारा ❀ सूपसास्त्र जस कछु व्यवहारा ॥

सो जेवनार कि जाइ वखानी ❀ बसहिं भवन जेहि मातु भवानी ॥

सादर बोले सकल वराती ❀ विष्णु विरञ्चि देव सब जाती ॥

विविधि पाँति बैठी जेवनारा ❀ लगे परोसन निपुन सुआरा ॥

नारिवृंद सुर जेवँत जानी ❀ लगीं देन गारी सृदुवानी ॥

छन्द-गारी मधुर सुर देहिं मुंदरि व्यंग वचन सुनावही ।

भोजन करहिं सुर अति विलंब विनोद सुनि सचुपावही ॥

जेवत जो बञ्चौ अनन्द सो मुख कोटिहू न परै कह्यौ ।

अँचवाइ दीन्हे पान गवने वास जहँ जाको रह्यौ ॥

दोहा--बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ, लगन सुनाई आइ ।

समय विलोकि विवाह कर, पठए देव बोलाइ ॥६९॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे ❀ सबहिं जयोचित आमन दीन्हे ॥

बेदी वेदविधान सर्वाँरी ❀ सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥

सिंहासन अतिदिव्य सुहावा ❀ जाइ न वरनि विचित्र बनावा ॥

बैठे सिव विप्रन्ह सिर नाई * हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई ॥
 बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई * करि सिंगार सखी लेइ आई ॥
 देखत रूप सकल सुर मोहे * बरनै छवि अस जग कवि कोहे ॥
 जगदंबिका जानि भववामा * सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा ॥
 सुन्दरता मरजाद भवानी * जाइ न कोटिन बदन बखानी ॥

छन्द-कोटिहु बदन नहिं बनइ बरनत जग-जननि-सोभा महा ।
 सकुचहिं कहत सुति सेश सारद मन्दमति तुलसी कहा ॥
 छविखानि मातु भवानि गवनी मध्य मण्डप सिव जहाँ ।
 अवलोकि सकइ न सकुचि पति-पद-कमल मनमधुकर तहाँ ॥

दोहा--मुनि अनुसासन गनपतिहिं, पूजेउ संभु भवानि ।

कोउ सुनि संसय करइ जनि, सुर अनादि जिय जानि ॥ १०० ॥

जसि विवाह कै विधि सुति गाई * महामुनिन्ह सो सब करवाई ॥
 गहि गिरीस कुस कन्या पानी * भवहि समरपी जानि भवानी ॥
 पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा * हिय हरपे तव सकल सुरेमा ॥
 वेदमन्त्र मुनिवर उच्चरहीं * जय जय जय संकर सुर करहीं ॥
 वाजहिं वाजनि विविध विधाना * सुमनवृष्टि नभ भइ विधि नाना ॥
 हर गिरिजा कर भयउ विवाहू * सकल भुवन भरि रहा उझाहू ॥
 दासी दास तुरग रथ नागा * धेनु बसन मनि वस्तु विभागा ॥
 अन्न कनक भाजन भरि जाना * दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥

छंद-दाइज दियो बहुभाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यौ ।

का देउँ पूरनकाम संकर चरनपंकज गहि रह्यौ ॥

सिव कृपासागरससुर कर संतोष सब भाँतिहि कियो ।

पुनि गहे पदपाथोज मैना प्रेमपरिपूरन हियो ॥

दोहा--नाथ उमा मम प्रान सम, गृहकिंकरी करेहु ।

छमेहु सकल अपराध अव, होइ प्रसन्न वरदेहु ॥ १०१ ॥

बहु विधि संभु सासु समुझाई * गवनी भवन चरन सिर नाई ॥
 जननी उमा बोलि तव लीन्ही * लेइ उछंग मुंदर सिख दीन्ही ॥
 करेहु सदा मंकर-पद पूजा * नारिधरम पति देव न दूजा ॥
 बचन कहत भरि लोचन बारी * बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी ॥
 कत विधि सृजी नारि जग माहीं * पराधीन सपनेहु सुख नाहीं ॥
 भइ अति प्रेम विकल महतारी * धीरज कीन्ह कुसमय विचारी ॥
 पुनिपुनि मिलति परति गहिचरना * परम प्रेम कछु जाइ न बरना ॥
 सब नारिन्ह मिलि भेंटि भवानी * जाइ जननिउर पुनि लपटानी ॥

छंद—जननी बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहू दर्ई ।

फिरि फिरि विलोकति मातुतनतव सखी लेइ सिव पहुँ गईं ॥

जाचक सकल संतोषि संकर उमा सहित भवन चले ।

सब अमर हरषे सुमन बरपि निसान नभ बाजे भले ॥

दोहा -चले संग हिमवंत तव, पहुँचावन अति हेतु ।

विविध भाँति परितोष करि, विदा कीन्ह वृषकेतु ॥१०२॥

तुरत भवन आये गिरिराई * सकल शैल सर लिये बोलाई ॥
 आदर दान विनय बहु माना * सब कर विदा कीन्ह हिमवाना ॥
 जबहिं संभु कैलासहि आये * सुर सब निज निज लोक सिधाये ॥
 जगतमातुपितु संभु भवानी * तेहि सिंगारु न कहौं बखानी ॥
 करहिं विविध विधि भोग बिलासा * गनन्ह समेत बसहिं कैलासा ॥
 हर-गिरिजा - विहार नित नयऊ * एहि विधि विपुल काल चलि गयऊ ॥
 तव जनमेउ षट्—वदन—कुमारा * तारकु असुरु समर जेहि मारा ॥
 आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * षणमुख जनम सकल जगु जाना ॥

छंद—जगु जान षणमुखजनमु करम प्रताप पुरुषारथ महा ।

तेहि हेतु मैं वृष-केतु-सुत कर चरित संछेपहि कहा ॥

यह उमा-संभु-विवाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं ।

कल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं ॥

दोहा--चरितसिंधु गिरिजा रमन, बेद न पावहिं पारु ।

बरनइ तुलसीदास किमि, अति-मति-मन्द गवाँरु ॥१०३॥

संभुचरित सुनि सरस मुहावा * भरद्वाज मुनि अतिमुख पावा ॥

बहु लालसा कथा पर बाढी * नयनु नीरु रोमावलि ठाढी ॥

प्रेमबिबस मुख आव न बानी * दसा देखि हरषे मुनि ज्ञानी ॥

अहो धन्य तव जनम मुनीसा * तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा ॥

सिव-गद-कमल जिन्हहिं रति नाहीं * रामहिं ते सपनेहुँ न मुहाहीं ॥

बिनु छल बिस्व-नाथ-पद नेहू * रामभगत कर लच्छन एहू ॥

सिव सम को रघु-पति-व्रत-धारी * बिनु अघ तजी सती असिनारी ॥

पन करि रघुपति भगति दृढ़ाई * को सिव सम रामहिं प्रिय भाई ॥

दोहा--प्रथमहिं मैं कहि सिवचरित, बूझा मरमु तुम्हार ।

सुचि सेवक तुम्ह राम के, रहित समस्त विकार ॥१०४॥

मैं जाना तुम्हार गुन सीला * कहीं सुनहु अब रघु-पति-लीला ॥

सुनु मुनि आजु समागम तोरे * कहि न जाइ जस मुख मन मोरे ॥

रामचरित अति अमित मुनीसा * कहिन मकहिं सतकोटि अहीसा ॥

तदपि जथासुत कहीं बखानी * सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी ॥

सादर दारुनारि सम स्वामी * राम सूत्रधर अंतरजामी ॥

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी * कवि-उर-अजिर नचावहिं बानी ॥

प्रनवों सोइ कृपालु रघुनाथा * बरनों बिसद तासु गुनगाथा ॥

परमरम्य गिरिवर कैलासू * सदा जहाँ सिव-उमा-निवासू ॥

दोहा--सिद्ध तपोधन जोगिजन, सुर किन्नर मुनिबृंद ।

बसहिं तहाँ सुकृती सकल, सेवहिं सिव सुखकंद ॥१०५॥

हरि-हर-बिमुख धरमरति नाहीं * ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं ॥

तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला * नित नूतन सुंदर सब काला ॥

त्रिविध समीर सुमीतल छाया * सिव-बिसाम-बिटप सुति गाया ॥

एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ * तरु बिलोकि उर अति सुख भयऊ ॥

निज कर डासि नाग-रिपु-झाला * बैठे सहजहिं संभु कृपाला ॥
 कुंद - इंद्रु - दर - गौर - सरीरा * भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा ॥
 तरुन - अरुन - अंबुज-सम चरना * नखदुति भगत-हृदय-तम-हरना ॥
 भुजग - भूति - भूषण त्रिपुरारी * आनन सरद - चंद - छवि - हारी ॥
 दोहा--जटामुकुट सुरसरित सिर, लोचननलिन विसाल ।

नीलकंठ लावन्यनिधि, सोह बालाबिधु भाल ॥१०६॥

बैठे सोह कामरिपु कैसे * धरे सरीर सांतरस जैसे ॥
 पारवती भल अवसरु जानी * गई संभु पहुँ मातु भवानी ॥
 जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा * वामभाग आसन हर दीन्हा ॥
 बैठीं सिवसमीप हरषाई * पूरब - जनम - कथा चित आई ॥
 पति-हिय-हेतु अधिक अनुमानी * बिहँसि उमा बोलीं प्रियवानी ॥
 कथा जो सकल-लोक-हितकारी * सोइ पूछन चह सैलकुमारी ॥
 बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी * त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी ॥
 चर अरु अचर नाग नर देवा * सकल करिहिं पद-पंकज-सेवा ॥
 दोहा--प्रभु समरथ सर्वज्ञ सिव, सकल--कला--गुन--धाम ।

जोग-ज्ञान-बैराग्य-निधि, प्रनतकलपतरु नाम ॥१०७॥

जौं मोपर प्रसन्न सुखरासी * जानिय सत्य मोहि निज दासी ॥
 तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना * कहि रघुनाथकथा विधि नाना ॥
 जासु भवन सुरतरु तर होई * सह कि दरिद्रजनित दुख सोई ॥
 ससिभूषण अस हृदय विचारी * हरहु नाथ मम मतिभ्रम भारी ॥
 प्रभु जे मुनि परमारथवादी * कहहिं राम कहँ ब्रह्म अनादी ॥
 सेष सारदा वेद पुराना * सकल करहिं रघुपति-गुन-गाना ॥
 तुम्ह पुनि राम राम दिन राती * सादर जपहु अनंगअराती ॥
 राम सो अवध-नृपति-सुत सोई * की अज अगुन अलखगति कोई ॥
 दोहा--जौं नृपतनय तो ब्रह्म किमि, नारिविरह मतिभोरि ।

देखि चरित महिमा सुनत, भ्रमति बुद्धि अतिमोरि ॥१०८॥

जौं अनीह व्यापक विभु कोऊ * कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ ॥
 अज्ञ जानि रिस उर जनि धरहु * जेहि विधि मोह मिटइ सोइ करहु ॥
 मैं बन दीख रामप्रभुताई * अति-भय-विकल न तुम्हहिं सुनाई ॥
 तदपि मलिनमन बोध न आवा * सो फलु भली भाँति हम पावा ॥
 अजहँ कछु संसय मन मोरे * करहु कृपा बिनवउँ करजोरे ॥
 प्रभु तव मोहि बहुभाँति प्रबोधा * नाथसो समुझि करहु जनि क्रोधा ॥
 तव कर अस विमोह अब नाहीं * रामकथा पर रुचि मन माहीं ॥
 कहहु पुनीत राम-गुन-गाथा * भुजग - राज - भूषन सुरनाथा ॥
 दोहा--बंदों पद धरि धरनि सिरु, बिनय करों करजोरि ।

बरनहु रघुवर-विसद-जसु, स्रुतिसिद्धांत निचोरि ॥१०६॥
 जदपिजोषितानहिं अधिकारी * दासी मन क्रम वचन तुम्हारी ॥
 गूढउ तत्त्व न साधु दुरावहिं * आरत अधिकारी जहँ पावहिं ॥
 अतिआरति पूछउँ सुरराया * रघुपतिकथा कहहु करि दाया ॥
 प्रथम सो कारन कहहु विचारी * निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी ॥
 पुनि प्रभु कहहु रामअवतारा * बालचरित पुनि कहहु उदारा ॥
 कहहु जथा जानकी विवाही * राज तजा सो दूपन काही ॥
 बन बसि कीन्हे चरित अपारा * कहहु नाथ जिमि रावन मारा ॥
 राज बैठि कीन्ही बहु लीला * सकल कहहु संकर सुखसीला ॥
 दोहा--बहुरि कहहु करुनायतन, कीन्ह जो अचरज राम ।

प्रजा सहित रघु-वंस-मनि, किमि श्रवने निजधाम ॥११०॥
 पुनिप्रभुकहहु सो तत्त्व बखानी * जेहि विज्ञान मगन मुनि ज्ञानी ॥
 भगति ज्ञान विज्ञान विरागा * पुनि सब बरनहु सहित विभागा ॥
 औरौ रामरहस्य अनेका * कहहु नाथ अतिविमल विवेंका ॥
 जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई * सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥
 तुम्ह त्रिभुवनगुरु वेद बखाना * आन जीव पावर का जाना ॥
 प्रसन्न उमा के सहज सुहाई * छलबिहीन मुनि सिवमन भाई ॥

हरहिय रामचरित मव आये * प्रेम पुलक लोचन जल छाये ॥
 श्री - रघुनाथ - रूप उर आवा * परमानंद अमित मुख पावा ॥
 दोहा-मगन ध्यानरस दंड जुग, पुनि मन वाहेर कीन्ह ।

रघुपतिचरित महेस तव, हरहित बरनइ लीन्ह ॥१११॥

भूठउ सत्य जाहि विनु जाने * जिमि भुजंग विनु रजु पहिचाने ॥
 जेहि जाने जग जाइ हेराई * जागे जथा सपनभ्रम जाई ॥
 बंदौ बालरूप मोइ रामू * सबसिधि मुलभ जपत जिसु नामू ॥
 मंगलभवन अमंगलहारी * द्रवउ सो दसरथ - अजिर - बिहारी ॥
 करि प्रनाम रामहिं त्रिपुरारी * हरपि मुधासम गिरा उचारी ॥
 धन्य धन्य गिरि - राज - कुमारी * तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ॥
 पूछेहु रघुपति - कथा - प्रसंगा * सकल लोक जग पावनि गंगा ॥
 तुम्ह रघुवीर - चरन - अनुरागी * कीन्हिहु प्रस जगतहित लागी ॥
 दोहा--रामकृपा तें पारवति, सपनेहु तव मन माहिं ।

सोक मोह संदेह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं ॥११२॥
 तदपि असंका कीन्हिहु सोई * कहत सुनत सब कर हित होई ॥
 जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना * सवनरंध्र अहिभवन समाना ॥
 नयनन्हि संतदरस नहिं देखा * लोचन मोरपंख कर लेखा ॥
 ते सिर कटुतुंबरि सम तूला * जे न नमत हरि - गुरु - पद-मूला ॥
 जिन्ह हरिभगति हृदय नहिं आनी * जीवत सब समान तेइ प्रानी ॥
 जो नहिं करइ राम - गुन - गाना * जीह सो दादुरजीह समाना ॥
 कुलिमकठोर निटुर सोइ छाती * मुनि हरिचरित न जो हरपाती ॥
 गिरिजा सुनहु राम कै लीला * सुरहित दनुज-बिमोहन-मीला ॥
 दोहा--रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब-सुख-दानि ।

सतसमाज सुरलोक सब, को न सुनइ अस जानि ॥११३॥

रामकथा सुंदर करतारी * संसयबिहंग उड़ावनहारी ॥

रामकथा कलि - विटप - कुठारी * सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥
 राम - नाम - गुन - चरित सुहाये * जनमु करमु अगनित सुति गाये ॥
 जथा अनंत राम भगवाना * तथा कथा कीरति गुन नाना ॥
 तदपि जथासुत जसि मति मोरी * कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी ॥
 उमा प्रसन्न तव सहज सुहाई * सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥
 एक बात नहिं मोहि सुहानी * जदपि मोहबस कहेहु भवानी ॥
 तुम्ह जो कहा राम कोउ आना * जेहि सुतिगाव धरहिं मुनि ध्याना ॥
 दोहा--कहहिं सुनहिं अस अधम नर, ग्रसे जे मोहपिसाच ।

पाखंडी हरि-पद-विमुख, जानहिं झूठ न साच ॥११४॥

अज्ञ अकोविद अंध अभागी * काई विषय मुकुरमन लागी ॥
 लंपट कपटी कुटिल विसेखी * सपनेहु संतसभा नहिं देखी ॥
 कहहिं ते वेद असंमत बानी * जिन्ह के सृज्ज लाभ नहिं हानी ॥
 मुकुर मलिन अरु नयनविहीना * रामरूप देखहिं किमि दीना ॥
 जिन्ह के अगुन न सगुन विवेका * जल्पहिं कल्पित वचन अनेका ॥
 हरि-माया-वस जगत भ्रमाहीं * तिन्हहिं कहत कळु अघटित नाहीं ॥
 बातुल भूत विबस मतवारे * ते नहिं बोलहिं वचन विचारे ॥
 जिन्ह कृत महा-मोह मद-पाना * तिन्ह कर कहा करिय नहिं काना ॥

सोरठा--असनिज हृदयविचारि, तजुसंसय भजुरामपद ।

सुनुगिरि-राज-कुमारि, भ्रम-तम-रवि-कर वचनमम ॥११५॥

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कळु भेदा * गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा ॥
 अगुन अरूप अलख अज जोई * भगत-प्रेम-वस सगुन मो होई ॥
 जो गुन रहित सगुन सोइ कैमे * जलु हिम उपल विलग नहिं जैमे ॥
 जासु नाम भ्रम - तिमिर - पतंगा * तेहि किमि कहिय विमोह प्रमंगा ॥
 राम सच्चिदानंद दिनेसा * नहिं तहँ मोह निमा - लव - लेमा ॥
 सहज प्रकासरूप भगवाना * नहिं तहँ पुनि विज्ञानविद्याना ॥
 हरष विषाद ज्ञान अज्ञाना * जीव धरम अहमिति अभिमाना ॥

राम ब्रह्म व्यापक जग जाना * परमानंद परेस पुराना ॥
दोहा--पुरुष प्रसिद्ध प्रकासनिधि, प्रगट परावरनाथ ।

रघु-कुल-मनिममस्वामिसोइ, कहिसिव नायउमाथ ॥११६॥

निज भ्रम नहिं समुझहिं अज्ञानी * प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्राणी ॥
जथा गगन घनपटल निहारी * झाँपेउ भानु कहहिं कुबिचारी ॥
चितव जो लोचन अंगुलि लाये * प्रगट जुगल ससि तेहि के भाये ॥
उमा रामविषयक अस मोहा * नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥
विषय करन सुर जीव समेता * सकल एक तें एक सचता ॥
सब कर परम प्रकासक जोई * राम अनादि अवधपति सोई ॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू * मायाधीस ज्ञान-गुन-धामू ॥
जासु सत्यता तें जड़ माया * भास सत्य इव मोहसहाया ॥
दोहा-रजत सीप महूँ भास जिमि, जथा भानु कर बारि ।

जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ, भ्रमनसकइ कोउ टारि ॥११७॥

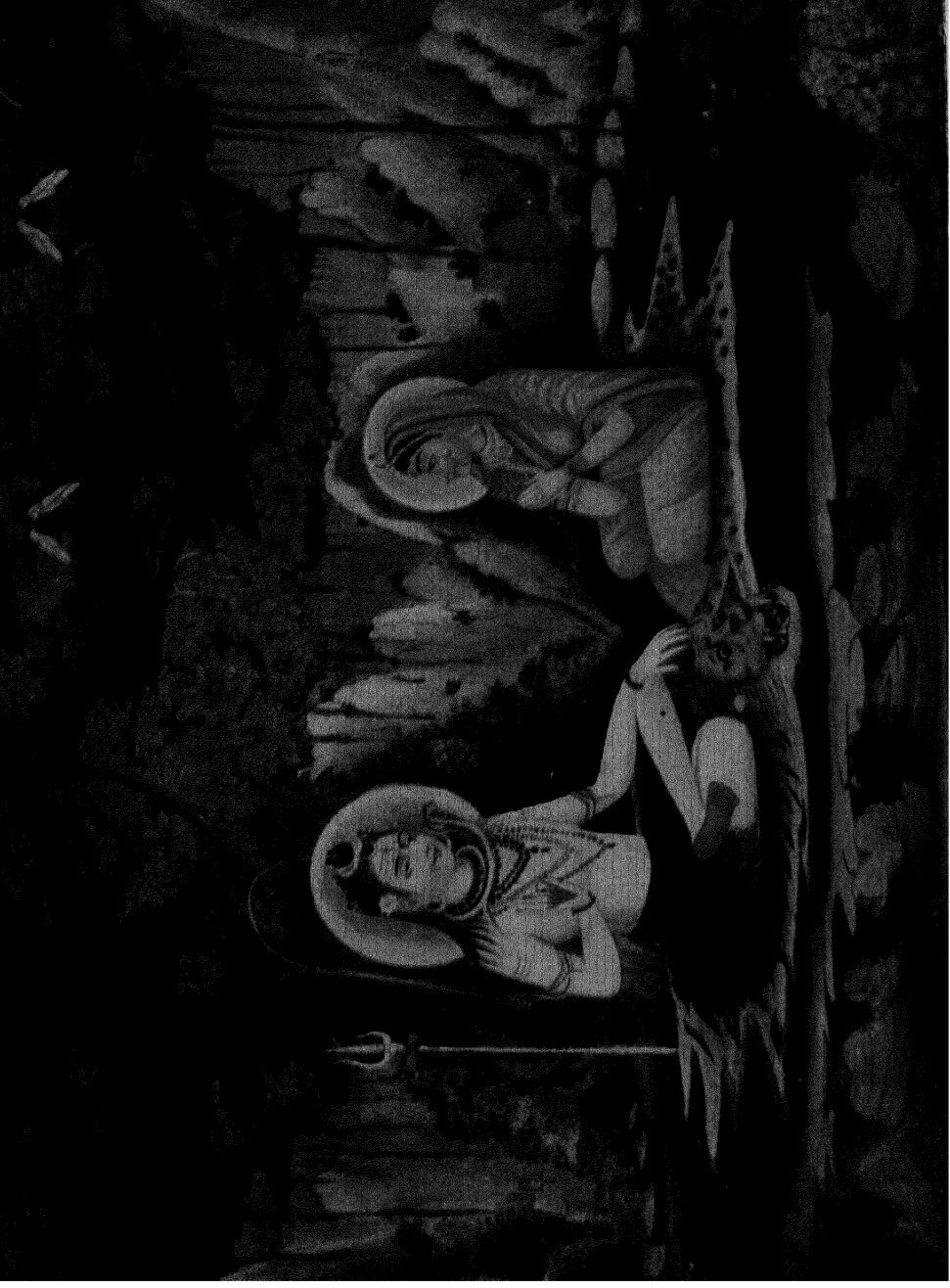
एहिविधि जग हरि आसित रहई * जदपि असत्य देत दुख अहई ॥
जौं सपने सिर काटइ कोई * बिनु जागे न दूरि दुख होई ॥
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई * गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई ॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा * मति अनुमान निगम अस गावा ॥
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना * कर बिनु करम करइ विधि नाना ॥
आननरहित सकल-रस-भोगी * बिनु वानी बकता बड़ जोगी ॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा * ग्रहइ घान बिनु बास असेखा ॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी * महिमा जासु जाइ नहिं वरनी ॥
दोहा-जेहि इमि गावहिं बेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।

सोइ दसरथसुत भगत हित, कोसलपति भगवान ॥११८॥

कासी मरत जंतु अवलोकी * जासु नामबल करौं विसोकी ॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी * रघुबर सब उर अंतरजामी ॥
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं * जनम अनेक रचित अध दहहीं ॥

बालकाण्ड ५१-७१

श्रीशिवपार्वती-सम्बाद



गिरजा सुनुहु राम के लीला । सुरहित दनुज विमोहन शीला ॥

सादर सुमिरन जे नर करहीं * भववारिधि गोपद इव तरहीं ॥
 राम सो परमातमा भवानी * तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी ॥
 अस संसय आनत उर माहीं * ज्ञान विराग सकल गुन जाहीं ॥
 सुनि सिव के भ्रमभंजन बचना * मिटि गइ सब कुतरक कै रचना ॥
 भइ रघुपति-पद-प्रीति प्रतीति * दारुन असंभावना बीती ॥
 दोहा-पुनिपुनि प्रभु-पद-कमल गहि, जोरि पंकरुहपानि ।

बोलीं गिरिजा बचन बर, मनहुँ प्रेमरस सानि ॥११६॥

ससिकरसम सुनि गिरा तुम्हारी * मिटा मोह सरदातप भारी ॥
 तुम्ह कृपालु सबु संसय हरेऊ * रामसरूप जानि मोहिं परेऊ ॥
 नाथ कृपा अब गयउ विषादा * सुखी भइउँ प्रभु-चरन-प्रसादा ॥
 अब मोहि आपनि किंकरि जानी * जदपि सहज जड़ नारि अयानी ॥
 प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू * जौं मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
 राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी * सर्व रहित सब-उर-पुर-बामी ॥
 नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू * मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू ॥
 उमाबचन सुनि परम विनीता * रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥
 दोहा--हिय हरषे कामारि तव, संकर सहज सुजान ।

बहु विधि उमहि प्रसंसि पुनि, बोले कृपानिधान ॥
 सोरठा--सुनु सुभ कथा भवानि, रामचरित मानस विमल ।
 कहा भुसुंढि बखानि, सुना विहगनायक गरुड़ ॥
 सो संवाद उदार, जेहि विधि भा आगे कहव ।
 सुनहु रामअवतार, चरित परम सुन्दर अनघ ॥
 हरिगुन नाम अपार, कथारूप अगनित अमित ।
 मैं निज-मति-अनुसार, कहौं उमा सादर सुनहु ॥१२०॥

सुनु गिरजा हरिचरित सुहाये * विपुल विमद निगमागम गाये ॥
 हरिअवतार हेतु जेहि होई * इदमित्यं कहि जाइ न सोई ॥

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी * मत हमार असु मुनहि सयानी ॥
 तदपि मंत मुनि वंद पुराना * जमकल्लु कहहिं स्व-मति-अनुमाना ॥
 तम में सुमुग्धि सुनावौ तोही * ममुझि परइ जम कारन मोही ॥
 जब जब होइ धरम के हानी * बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥
 करहिं अनीति जाइ नहिं वरनी * मीदहिं विप्र धनु सुर धरनी ॥
 तव तव प्रभु धरि विविध मरीरा * हरहिं कृपानिधि मज्जनपीरा ॥
 दोहा--असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज-सुति-सेतु ।

जग विस्तारहिं विषद जसु, रामजनमु कर हेतु ॥१२१॥

सोइ जम गाइ भगत भवतरही * कृपासिंधु जन हित तनु धरही ॥
 रामजनम के हेतु अनेका * परम विचित्र एक तें एका ॥
 जनम एक दुइ कहउं बग्वानी * सावधान मुनु सुमति भवानी ॥
 द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ * जय अरु विजय जान सब कोऊ ॥
 विप्रघ्नाप तें दनउं भाई * तामम असुर देह तिन्ह पाई ॥
 कनककमिपु अरु हाटक लोचन * जगत विदित सुर-पति-मद-मोचन ॥
 विजई समर वीर विख्याता * धरि बराह वपु एक निपाता ॥
 होइ नरहरि दसर पुनि मारा * जन प्रह्लादसुजस विस्तारा ॥
 दोहा--भये निसाचर जाइ तेइ, महावीर बलवान ।

कुम्भकरन रावन सुभट, सुरविजई जग जान ॥१२२॥

मुकुत न भये हते भगवाना * तीनि जनम द्विजवचन प्रमाना ॥
 एक वार तिन्ह के हित लागी * धरेउ मरीर भगत अनुरागी ॥
 कश्यप अदिति तहाँ पितु माता * दसरथ कौमल्या विख्याता ॥
 एक कला एहि विधि अवतारा * चरित पवित्र किए संसारा ॥
 एक कल्प भुर देखि दुस्वारे * समर जलंधर सन मथ हारे ॥
 संभु कीन्ह संग्राम अपारा * दनुज महाबल मरइ न मारा ॥
 परम सती असुराधिपनारी * तेहि बल ताहिन जितहिं पुरारी ॥
 दोहा--छल करि टारेउ तासु व्रत, प्रभु सुरकारज कीन्ह ।

जब तेहि जानेउ मरमु तब, साप कोप करि दीन्ह ॥१२३॥

तासु साप हरि दीन्ह प्रवाना * कौतुकनिधि कृपाल भगवाना ॥
 तहाँ जलंधर रावन भयऊ * रन हति राम परम पद दयऊ ॥
 एक जनम कर कारन एहा * जेहि लगि राम धरी नर देहा ॥
 प्रतिअवतार कथा प्रभु केरी * सुनु मुनि बरनी कविन्ह घनेरी ॥
 नारद साप दीन्ह एक बारा * कल्प एक तेहि लगि अवतारा ॥
 गिरिजा चकित भई सुनि बानी * नारद विष्णुभगत मुनि ज्ञानी ॥
 कारन कवन साप मुनि दीन्हा * का अपराध रमापति कीन्हा ॥
 यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी * मुनिमन मोह आचरज भारी ॥
 दोहा--बोले बिहँसि महेस तब, ज्ञानी मृदु न कोइ ।

जेहि जस रघुपति करहिं जब, सो तस तेहि छन होइ ॥

सोरठा--कहौ राम-गुन-गाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ।

भवभंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मान मद ॥१२४॥

हिम-गिरि - गुहा एकअतिपावनि * बह ममीप सुस्मरी मुहावनि ॥
 आस्रम परम पुनीत मुहावा * देखि देवरिपि मन अति भावा ॥
 निरखि सैल सरि विपिनविभागा * भयउ रमा - पति - पद अनुगगा ॥
 मुमिरत हरिहि सापगति वार्धा * सहज विमल मन लागि समार्धी ॥
 मुनिगति देखि सुरेस डेराना * कामहिं बोलि कीन्ह मनमाना ॥
 सहित सहाय जाहु मम हेतू * चलेउ हरपि हिय जल-चर-केतू ॥
 मुनासीर मन मह अस्मि त्रासा * चहत देवरिपि मम पुर वामा ॥
 जे कामी लोलुप जग माहीं * कुटिल काक इव सवहि डेराहीं ॥

दोहा--सख हाड़ लैइ भाग सठ, स्वान निरखि मृगराज ।

छीन लैइ जनिजानि जड़, तिमि सुरपतिहि न लाज ॥१२५॥

तेहि आस्रमहि मदन जब गथऊ * निज माया वसंत निरमयऊ ॥
 कुसुमित विविध विग्रह बहुरंगा * कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा ॥
 चली मुहावनि त्रिविध बयारी * कामकृमानु बदावनिहारी ॥

रंभादिक सुरनारि नवीना * सकल असम-सर - कला - प्रवीना ॥
 करहिं गान बहु तान तरंगा * बहु विध क्रीडहिं पानि पतंगा ॥
 देखि सहाय मदन हरषाना * कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधि नाना ॥
 कामकला कछु मुनिहि न व्यापी * निज भय डरेउ मनोभव पापी ॥
 सीम कि चाँपि सकइ कोउ तामू * बड़ रग्ववार रमापति जासू ॥
 दोहा--सहित सहाय सभीत अति, मानि हारि मन मैन ।

गहेसि जाइ मुनिचरन तव, कहि सुठि आरत बैन ॥१२६॥
 भयउ न नारद मन कछु रोषा * कहि प्रिय बचन काम परितोषा ॥
 नाइ चरन सिरु आयसु पाई * गयउ मदन तव सहित सहाई ॥
 मुनि मुर्मालता आपनि करनी * सुर - पति - सभा जाइ सब बरनी ॥
 मुनि भव के मन अचरज आवा * मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ॥
 तव नारद गवने सिव पाहीं * जिता काम अहमिति मन माहीं ॥
 मारचरित संकरहि सुनाये * अतिप्रिय जानि महेस सिखाये ॥
 बार बार विनवौं मुनि तोही * जिमि यह कथा सुनायहु मोही ॥
 तिमि जनि हरिहि सुनायहु कबहूँ * चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूँ ॥
 दोहा--संभु दीन्ह उपदेस हित, नहिं नारदहि सुहान ।

भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरिइच्छा बलवान ॥१२७॥
 राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई * करइ अन्यथा अस नहिं कोई ॥
 संभुवचन मुनि मन नहिं भाये * तब विरंचि के लोक सिधाये ॥
 एक बार करतल बर बीना * गावत हरिगुन गानप्रवीना ॥
 छीरसिंधु गवने मुनिनाथा * जहँ बस श्रीनिवास सुतिमाथा ॥
 हरषि मिलेउ उठि रमानिकेता * बैठे आसन रिषिहि समेता ॥
 बोले विहँसि चराचरराया * बहुते दिनन्ह कीन्हि मुनि दाया ॥
 कामचरित नारद सब भाखे * जद्यपि प्रथम बरजि सिवराखे ॥
 अतिप्रचंड रघुपति कै माया * जेहि न मोह अस को जग जाया ॥
 दोहा--रुख बदन करि बचन मृदु, बोले श्रीभगवान ।

तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं, मोह मार मद मान ॥१२८॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके * ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके ॥
 ब्रह्मचरज - ब्रत - रत मतिधीरा * तुम्हहिं कि करइ मनोभव पीरा ॥
 नारद कहेउ सहित अभिमाना * कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥
 करुनानिधि मन दीख विचारी * उर अंकुरेउ गर्वतरु भारी ॥
 वेगि सो मैं डारिहौं उखारी * पन हमार सेवकहितकारी ॥
 मुनि कर हित मम कौतुक होई * अवसि उपाय करवि मैं सोई ॥
 तब नारद हरिपद सिरु नाई * चले हृदय अहमिति अधिकारि ॥
 श्रीपति निज माया तब प्रेरी * सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥
 दोहा--बिरचेउ मगु महुँ नगर तेहि, सतजोजन बिस्तार ।

श्री-निवास-पुरतें अधिक, रचना विविध प्रकार ॥१२९॥

बसहिं नगर सुंदर नर नारी * जनु बहु मनमिज रति तनुधारी ॥
 तेहि पुर बसइ सीलनिधि राजा * अगनित हय गय सेन समाजा ॥
 सत सुरेस सम विभव विलासा * रूप तेज बल नीति निवासा ॥
 बिस्वमोहनी तासु कुमारी * श्री विमोह जेहि रूप निहारी ॥
 सोइ हरि माया सब-गुन-खानी * सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
 करइ स्वयंवर सो नृपबाला * आये तहुँ अगनित महिपाला ॥
 मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ * पुरवासिन्ह सब पूछत भयऊ ॥
 सुनि सब चरित भूपगृह आये * करि पूजा नृप मुनि बैठाये ॥
 दोहा--आनि देखाई नारदहिं, भूपति राजकुमारि ।

कहहु नाथ गुन दोष सब, एहि के हृदय विचारि ॥१३०॥

देखि रूप मुनि विरति विसारी * वड़ी बार लगि रहे निहारी ॥
 लच्छन तासु विलोकि भुलाने * हृदय हरप नहिं प्रगट बखाने ॥
 जो एहि बरइ अमर सोइ होई * समरभूमि तेहि जीत न कोई ॥
 सेवहिं सकल चराचर ताही * बरइ सीलनिधि कन्या जाही ॥
 लच्छन सब विचारि उर राखे * कलुक बनाइ भूप सन भाखे ॥

मुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं * नारद चले मोच मन माहीं ॥
 करौं जाइ मोइ जतन विचारी * जेहि प्रकार मोहि बरइ कुमारी ॥
 जप तप कछु न होइ तेहि काला * हे विधि मिलइ कवन विधि वाला ॥
 दोहा--एहि अवसर चाहिय परम, सोभा रूप विसाल ।

जो बिलोकि रीभइ कुअँरि, तब मेलइ जयमाल ॥१३१॥

हरि मन माँगों सुंदरताई * होइहि जाति गहरु अति भाई ॥
 मोरे हित हरि मम नहिं कोऊ * एहि अवसर महाय मोइ होऊ ॥
 बहुविधिविनय कीन्हि तेहि काला * प्रगटउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥
 प्रभु बिलोकि मुनिनयन जुडाने * होइहि काजु हिये हरषाने ॥
 अति आरति कहि कथा सुनाई * करहु कृपा करि होहु सहाई ॥
 आपन रूप देहु प्रभु मोही * आन भाँति नहिं पावौं ओही ॥
 जेहि विधि नाथ होइ हित मोरा * करहु मो बेगि दाम मैं तोरा ॥
 निज मायाबल देखि विसाला * हिय हँसि बोले दीनदयाला ॥
 दोहा--जेहि विधि होइहि परमहित, नारद सुनहु तुम्हार ।

सोइ हम करव न आन कछु, वचन न मृपा हमार ॥१३२॥

कुपथ माँग रुजव्याकुल रोगी * बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी ॥
 एहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ * कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥
 मायाविवस भये मुनि मूढा * समुझी नहिं हरिगिरा निगूढा ॥
 गवने तुरत तहाँ रिषिराई * जहाँ स्वयंवरभूमि बनाई ॥
 निज निज आसन बैठे राजा * बहु वनाव करि सहित समाजा ॥
 मुनिमन हरष रूप अति मोरे * मोहितजि आनहि बरिहि न भोरे ॥
 मुनिहित कारन कृपानिधाना * दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥
 सो चरित्र लखि काहु न पावा * नारद जानि सबहि सिरु नावा ॥
 दोहा--रहे तहाँ दुइ रुद्रगन, ते जानहिं सब भेउ ।

विप्रबेष देखत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ ॥१३३॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई * हृदय रूप अहमिति अधिकारि ॥

तहँ बैठे महेसगन दोऊ * विप्रवेष गति लखइ न कोऊ ॥
 करहिं कूटि नारदहि सुनाई * नीकि दीन्ह हरि सुंदरताई ॥
 रीझिहि राजकुअँरि ब्रवि देखी * इनहिं वरिहि हरि जानि विसेखी ॥
 मुनिहि मोह मन हाथ पराये * हँसहिं संभुगन अति सचुपाये ॥
 जदपि मुनिहिं मुनि अटपटि बानी * समुझि न परइ बुद्धि भ्रममानी ॥
 काहु न लखा मो चरित विसेखा * सो सरूप नृपकन्या देखा ॥
 मर्कटबदन भयंकर देही * देवत हृदय क्रोध भा तेही ॥

दोहा--सखी संग लेइ कुअँरि तव, चलि जनु राजमराल ।

देखत फिरइ महीप सब, करसरोज जयमाल ॥१३४॥

जेहि दिमि बैठे नारद फूली * सो दिमि तेह न बिलोकी भूली ॥
 पुनि पुनि मुनि उकमहिं अकुलाही * देखि दसा हरगन मुमुकाही ॥
 धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला * कुअँरि हरपि भेलेउ जयमाला ॥
 दुलहिन लेइ गे लच्छिनिवासा * नृपसमाज सब भयउ निरामा ॥
 मुनि अतिविकल मोहमति नाँठी * मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी ॥
 तव हरगन बोले मुमुकाई * निज मुख मुकुर विलोकहु जाई ॥
 अस कहि दोउ भागे भय भारी * वदन दीख मुनि वारि निहारी ॥
 वेप विलोकि क्रोध अति बाढा * तिन्हहिं भराप दीन्ह अति गाढा ॥

दोहा--होहु निसाचर जाइ तुम्ह, कपटी पापी दोउ ।

हँसेहु हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेहु मुनि कोउ ॥१३५॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा * तदपि हृदय संतोष न आवा ॥
 फरकत अधर कोप मन माहीं * सपदि चले कमलापति पाहीं ॥
 देइहौं साप कि मरिहौं जाइ * जगत मोरि उपहास कराई ॥
 बीचहि पंथ मिले दनुजारी * संग रमा मोइ राजकुमारी ॥
 बोले मधुर वचन सुरसाई * मुनि कहँ चले विकल की नाई ॥
 सुनत वचन उपजा अतिक्रोधा * मायावस न रहा मन बोधा ॥
 परसंपदा सकहु नहिं देखी * तुम्हरे इरिपा कपट विसेखी ॥

मथत सिंधु रुद्रहि वौरायहु * सुरन्ह प्रेरि विषपान करायहु ॥
दोहा--असुर सुरा विष संकरहि, आपु रमामनि चारु ।

स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह, सदा कपट व्यवहारु ॥१३६॥
परमस्वतंत्र न सिर पर कोई * भावइ मनहिं करहु तुम्ह सोई ॥
भलेहि मंद मंदेहि भल करहु * विममय हरष न हिय कछु धरहु ॥
उहंकि उहंकि परिचहु सब काहु * अतिअमंक मन सदा उझाहु ॥
करम सुभासुभ तुम्हहिं न बाधा * अब लगि तुम्हहिं न काहु साधा ॥
भले भवन अब वायन दीन्हा * पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा * सोइ तनु धरहु साप मम एहा ॥
कपि आकृति तुम्हकीन्हि हमारी * करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ॥
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी * नारि विरह तुम्ह होव दुखारी ॥
दोहा--साप सीस धरि हरषि हिय, प्रभु बहु विनती कीन्हि ।

निजमाया कै प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्हि ॥१३७॥
जव हरिमाया दूर निवारी * नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ।
तव मुनि अतिसभीत हरिचरना * गहे पाहि प्रनतारतिहरना ॥
मृषा होउ मम साप कृपाला * मम इच्छा कह दीनदयाला ॥
मैं दुर्वचन कहे बहुतरे * कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे ॥
जपहु जाइ संकर - सत - नामा * होइहि हृदय तुरत विश्रामा ॥
कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरे * असि परतीति तजहु जनि भोरे ॥
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी * सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥
अस उर धरि महि विचरहु जाई * अब न तुम्हहि माया नियराई ॥
दोहा--बहु विधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु, तब भये अंतरधान ।

सत्यलोक नारद चले, करत राम - गुन-गान ॥१३८॥
हरगन मुनिहि जात पथ देखी * विगत मोह मन हरष विसेखी ॥
अतिसभीत नारद पहिं आये * गहि पद आरत वचन सुनाये ॥
हरगन हम न विप्र मुनिराया * बड़ अपराध कीन्ह फलु पाया ॥

साप अनुग्रह करहु कृपाला * बोले नारद दीनदयाला ॥
 निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ * वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥
 भुजबल बिस्व जितव तुम्ह जहिआ * धरिहहिं विष्णु मनुजतनु तहिआ ॥
 समर मरन हरिहाथ तुम्हारा * होइहहु मुकुत न पुनि संमारा ॥
 चले जुगल मुनिपद मिरु नाई * भये निमाचर कालहि पाई ॥
 दोहा--एक कल्प एहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार ।

सुररंजन सज्जन सुखद, हरि भंजन-भुवि-भार ॥१३६॥

एहि विधि जनम करम हरि केरे * सुंदर सुखद विचित्र घनरे ॥
 कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं * चारु चरित नाना विधि करहीं ॥
 तव तव कथा मुनीसन्ह गाई * परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥
 विविध प्रसंग अनूप बखाने * करहिं न मुनि आचरजु सयाने ॥
 हरि अनंत करिकथा अनंता * कहहिं मुनिहिं बहुविधि सब संता ॥
 रामचंद्र के चरित सुहाये * कल्प कोटि लागि जाहिं न गाये ॥
 यह प्रसंग मैं कहा भवानी * हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी ॥
 प्रभु कौतुकी प्रनत-हितकारी * सेवत सुलभ मकल दुखहारी ॥
 सोरठा--सुर नर मुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल ।

अस विचारि मन माहिं, भजिय महा-माया-पतिहि ॥१४०॥

अपर हेतु मुनु सैलकुमारी * कहउँ विचित्र कथा विस्तारी ॥
 जेहिकारन अज अगुन अरूपा * ब्रह्म भयउ कोमल - पुर - भूपा ॥
 जो प्रभु विपिन फिरत तुम्ह देखा * बंधु ममेत धरे मुनिवंखा ॥
 जासु चरित अवलोकि भवानी * सती सरीर रहिहु बौरानी ॥
 अजहुं न छाया मिटति तुम्हारी * तासु चरित मुनु भ्रम-रुज-हारी ॥
 लीला कीन्हि जो तेहि अवतारा * सो मव कहिहौं मति अनुमारा ॥
 भरद्वाज मुनि संकर वानी * सकुचि सप्रेम उमा मुमुकानी ॥
 लगे बहुरि वरनइ वृषकेतू * सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥

दोहा--सो मैं तुम्ह सन कहउँ सब, सुनु मुनीस मन लाइ ।

रामकथा कलि-मल-हरनि, मंगल करनि सुहाइ ॥१४१॥

स्वायंभू मनु अरु मतरूपा * जिन्ह तें भइ नरमृष्टि अनूपा ॥
 दंपति धरम आचरन नीका * अजहुं गाव सुति जिन्ह कै लीका ॥
 नृप उत्तानपाद सुत ताम् * ध्रुव हरिभगत भयउ सुत जासू ॥
 लघुसुत नाम प्रियव्रत ताही * वेद पुरान प्रमंसहिं जाही ॥
 देवहृति पुनि तामु कुमारी * जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी ॥
 आदि देव प्रभु दीनदयाला * जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला ॥
 मांख्यमात्र जिन्ह प्रगट बखाना * तत्त्वत्रिचार निपुन भगवाना ॥
 तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला * प्रभुआयसु मव विधि प्रतिपाला ॥
 सोरठा--होइ न विषय विराग, भवन बसत भा चौथपनु ।

हृदय बहुत दुख लाग, जनम गयउ हरिभगति विनु ॥१४२॥
 बरवम राज सुतहि तव दीन्हा * नारि ममेत गवन वन कीन्हा ॥
 तीरथ वर नैमिष विख्याता * अतिपुर्नात साधक-मिधि-दाता ॥
 वमहिं तहाँ मुनि-मिद्ध-ममाजा * तहँ हिय हरपि चलेउ मनु राजा ॥
 पंथ जात सोहहिं मतिधीरा * ज्ञान भगति जनु धरे सरीरा ॥
 पहुँचे जाइ धेनु - मति - तीरा * हरपि नहाने निरमल नीरा ॥
 आये मिलन मिद्ध मुनि ज्ञानी * धरमधुरंधर नृपरिषि जानी ॥
 जहँ जहँ तीरथ रहे मुहाये * मुनिन्ह सकल सादर करवाये ॥
 कृमसरीर मुनिपट परिधाना * सतसमाज नित सुनहिं पुराना ॥
 दोहा--द्वादस अच्छर मंत्र पुनि, जपहिं सहित अनुराग ।

वासुदेव-पद-पंकरुह, दंपति मन अति लाग ॥१४३॥

करहिं अहार साक फल कंदा * सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥
 पुनि हरि हेतु करन तप लागे * बारिअधार मूल फल त्यागे ॥
 उर अभिलाष निरंतर होई * देखिय नयन परम प्रभु सोई ॥
 अगुन अखंड अनंत अनादी * जेहि चिंतहिं परमारथवादी ॥
 नंति नंति जेहि वेद निरूपा * चिदानंद निरूपाधि अनूपा ॥
 संभु विरंचि विष्णु भगवाना * उपजहिं जासु अंस तें नाना ॥
 ऐसेउ प्रभु सेवकबस अहई * भगत हेतु लीला तनु गहई ॥

जौ यह वचन मृत्यु सुति भाषा * तौ हमार पूजिहि अभिलाषा ॥
दोहा--एहि विधि बीते वर षष्ट, सहस बारि आहार ।

संवत सप्त सहस्र पुनि, रहे समोरअधार ॥१४४॥

वरप सहस्र दस त्यागेउ सोऊ * ठाढ़े रहे एक पग दोऊ ॥
विधि-हरि-हर तप देखि अपारा * मनु समीप आये बहु बारा ॥
माँगहु वर बहु भाँति लोभाये * परम धीर नहिं चलहिं चलाये ॥
अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा * तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा ॥
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी * गति अनन्य तापस नृप रानी ॥
माँगु माँगु वर भइ नभवानी * परम गँभीर कृपामृत सानी ॥
मृतकजिआवनि गिरा सुहाई * सवनरंध्र होइ उर जव आई ॥
हृष्ट पुष्ट तन भये सुहाये * मानहु अवाहिं भवन ते आये ॥

दोहा--सवन-सुधा-सम वचन सुनि, पुलक प्रहृष्टित गात ।

बोले मनु करि दंडवत, प्रेम न हृदय समात ॥१४५॥

सुनु सेवक - सुर-तरु सुरधेनु * विधि-हरि - हर - बंदित - पद-रेनु ॥
संवत सुलभ सकल-सुख-दायक * प्रनतपाल स - चराचर - नायक ॥
जौ अनाथहित हम पर नेहू * तौ प्रसन्न होइ यह वर देहू ॥
जो सरूप बस सिवमन माहीं * जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥
जो भुमुंडि-मन मानस-हंसा * सगुन अगुन जेहि निगम प्रगंसा ॥
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन * कृपा करहु प्रनतारतिमोचन ॥
दंपतिवचन परम प्रिय लागे * मृदुल विनीत प्रेम - रस - पागे ॥
भगतबञ्जल प्रभु कृपानिधाना * विस्ववाम प्रगटे भगवाना ॥

दोहा--नीलसरोरुह नीलमनि, नील-नीर-धर-स्याम ।

लाजहिं तनुसोभा निरखि, कोटि कोटि सत काम ॥१४६॥

सरद - मयंद - वदन अविमीवाँ * चारु कपोल त्रिबुक दर ग्रीवाँ ॥
अधर अरुन रद सुंदर नामा * विधु-कर-निकर-विनिंदक हामा ॥
नव-अंबुज - अंबक - अवि नीकी * चितवनि ललित भावती जी की ॥
भृकुटि मनोज-चाप-अवि हारी * तिलक ललाटपटल दुतिकारी ॥
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा * कुटिल केम जनु मधुपममाजा ॥

उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला * पदिक हार भूपन मनिजाला ॥
 केहरिकंधर चारु जनेऊ * बाहुविभूपन सुंदर तेउ ॥
 करि-कर-सरिस मुभग भुजदंडा * कटि निपंग कर सर कोदंडा ॥
 दोहा--तडितविनिंदक पीतपट, उदर रेख बर तीनि ।

नाभि मनोहर लैति जनु, जमुन-भवर-छविछीनि ॥१४७॥

पदराजीव वरनि नहिं जाहीं * मुनि-मन-मधुपवमहिं जिन्हमाहीं ॥
 वामभाग सोभति अनुकूला * आदिसक्ति छविनिधि जगमूला ॥
 जासु अंम उपजहिं गुनखानी * अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥
 भृकुटिविलास जासु जग होई * राम वामदिशि सीता सोई ॥
 छविममुद्र हरिरूप त्रिलोकी * एकटक रहे नयनपट रोकी ॥
 चितवहिं सादर रूप अनूपा * तृषि न मानहिं मनुसतरूपा ॥
 हरपिविषम तनुदमा भुलानी * परे दंड इव गहि पद पानी ॥
 भिर परमे प्रभु निज-कर-कंजा * तुरत उठाय करुणापुंजा ॥

दोहा--बोले कृपानिधान पुनि, अति प्रसन्न मोहि जानि ।

माँगहु बर जोइ भाव मन, महादानि अनुमानि ॥१४८॥

मुनि प्रभुवचन जोरि जुग पानी * धरि धीरज बोले मृदुवानी ॥
 नाथ देखि पदकमल तुम्हारे * अत्र पूरे सब काम हमारे ॥
 एक लालमा बडि उर माहीं * सुगम अगम कहि जाति सो नाहीं ॥
 तुम्हहिं देत अति सुगम गोसाईं * अगम लाग मोहि निज कृपनाई ॥
 जथा दरिद्र विबुधतरु पाई * बहु संपति माँगत सकुचाई ॥
 तासु प्रभाउ जान नहिं सोई * तथा हृदय मम संसय होई ॥
 सो तुम्ह जानहु अंतरजामी * पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
 सकुच विहाइ माँगु नृप मोही * मोरे नहिं अदेय कछु तोही ॥

दोहा--दानिसिरोमनि कृपानिधि, नाथ कहीं सतभाउ ॥

चाहौ तुम्हहिं समान सुत, प्रभु सन कवन दुराउ ॥१४९॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले * एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥
 आपु सरिस खोजौ कहँ जाई * नृप तव तनय होव मैं आई ॥
 सतरूपहि बिलोकि करजोरे * देवि माँगु बरु जो रुचि तोरे ॥

जो बरु नाथ चतुर नृप माँगा * सोइ कृपाल मोहि अतिप्रिय लागा ॥
 प्रभु परंतु सुठि होति छिटाई * जदपिभगतहित तुम्हहिं सुहाई ॥
 तुम्ह ब्रह्मादिजनक जगस्वामी * ब्रह्म सकल-उर-अंतरजामी ॥
 अस समुद्रत मन संसय होई * कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई ॥
 जे निज भगत नाथ तव अहहीं * जो सुख पावहिं जो गति लहहीं ॥
 दोहा--सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति, सोइ निज चरन सनेहु ॥

सोइ विवेकु सोइ रहनि प्रभु, हमहिं कृपा करि देहु ॥१५०॥

सुनि मृदु गूढरुचिर वचरचना * कृपासिंधु बोले मृदुवचना ॥
 जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं * मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं ॥
 मातु विवेक अलौकिक तोरे * कवहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे ॥
 वंदि चरन मनु कहेउ बहोरी * अउर एक विनती प्रभु मोरी ॥
 सुत विषयक तव पद रति होऊ * मोहि बड़ मूढ़ कहइ किन कोऊ ॥
 मनिविनु फनि जिमिजलविनुमीना * ममजीवन तिमि तुम्हहिं अर्धाना ॥
 अस बरु माँगि चरन गहि रहेऊ * एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ ॥
 अब तुम्ह मम अनुमासन मानी * बसहु जाइ सुर-पति-रजधानी ॥
 सोरठा--तहँ करि भोग विसाल, तात गये कछु काल पुनि ॥

होइहहु अवधभुआल, तव मैं होव तुम्हार सुत ॥१५१॥

इच्छामय नखंप सवारे * होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारे ॥
 अमन्ह सहित देह धरि ताता * करिहउँ चग्नि भगत-सुख-दाता ॥
 जेहि सुनि सादर नर बड़भागी * भव तरिहहिं ममता मद त्यागी ॥
 आदिसक्ति जेहि जग उपजाया * सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥
 पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा * सत्य सत्य पन सत्य हमारा ॥
 पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना * अंतरधान भये भगवाना ॥
 दंपति उर धरि भगति कृपाला * तेहि आस्रमनि बसे कछु काला ॥
 समय पाइ तनु तजि अनयासा * जाइ कीन्ह अमरावतिवासा ॥
 दोहा--यह इतिहास पुनीति अति, उमहि कहा वृपकेतु ॥

भरद्वाज सनु अपर पुनि, राजजनम कर हेतु ॥१५२॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी * जो गिरिजा प्रति संभु बघवानी ॥

विश्वविदित एक कैकय देस * मत्यकेतु तहँ वमड नरेसू ॥
 धरमधुरंधर नीतिनिधाना * तेज प्रताप मील बलवाना ॥
 तेहि के भये जुगलमुन वीरा * मत्र-गुन-धाम महारन-धीरा ॥
 राजधनी जो जेठ सुत आही * नाम प्रतापभानु अम ताही ॥
 अपर सुतहि अरिमर्दन नामा * भुजवल अतुल अचल मंग्रामा ॥
 भाइहि भाइहि परम मर्माती * सकल दोष छल वरजित प्रीती ॥
 जेठ सुतहि राज नृप दीन्हा * हरि हित आपु गवन वन कीन्हा ॥
 दोहा--जब प्रतापरवि भयउ नृप, फिरी दोहाई देस ॥

प्रजा पाल अतिवेद विधि, कतहुँ नहीं अघलेस ॥१५३॥

नृप - हित - कारकमचिवमयाना * नाम धरमरुचि सुक समाना ॥
 सचिव मयान बंधु बलवीरा * आपु प्रतापपुंज रनधीरा ॥
 मेन मंग चतुरंग अपारा * अमित सुभट सब समर जुझारा ॥
 मेन विलोकि राउ हरपाना * अरु वाजे गहगहे निगाना ॥
 विजय हेतु कटकई बनाई * सुदिन साधि नृप चलेउ वजाई ॥
 जहँ तहँ परी अनेक लराई * जीते सकल भूप वरिआई ॥
 सप्त दीप भुजवल वम कीन्हे * लेइ लेइ दंड झाँड़ि नृप दीन्हे ॥
 सकल-अवनि-मंडल तेहि काला * एक प्रतापभानु महिपाला ॥
 दोहा--स्ववस विश्व करि वाहुवल, निज पुर कीन्ह प्रवेसु ॥

अरथ-धरम-कामादि सुख, सेवइ समय नरेसु ॥१५४॥

भूप - प्रतापभानु - बल पाई * कामधेनु भइ भूमि सुहाई ॥
 सब-दुग्ध-वरजित प्रजा सुखारी * धरममील सुंदर नर नारी ॥
 सचिव धरमरुचि हरि-पद-प्रीती * नृप-हित-हेतु मिखव नित नीती ॥
 गुरु सुर संत पितर महिदेवा * करइ सदा नृप सब कै सेवा ॥
 भूप धरम जे बंद बखाने * सकल करइ सादर सुख माने ॥
 दिन प्रति देइ विविध विधि दाना * सुनइ सास्त्रवर वेद पुराना ॥
 नाना बापी कूप तड़ागा * सुमनवाटिका सुंदर वागा ॥
 विप्रभवन सुरभवन सुहाये * सब तीरथन्ह विचित्र वनाये ॥

दोहा--जहँ लगि कहे पुरान सुति, एक एक सब जाग ॥

वार सहस्र सहस्र नृप, किये सहित अनुराग ॥१५५॥

हृदय न कछु फल अनुसंधाना * भूप विवंकी परममुजाना ॥
 करइ जे धरम करम मन वानी * वासुदेव अरपित नृप ज्ञानी ॥
 चढ़ि बरवाजि वार एक राजा * मृगया कर सब साजि ममाजा ॥
 विंध्याचल गँभीर वन गयऊ * मृग पुनीत बहु मारत भयऊ ॥
 फिरत विपिन नृप दीख बराहू * जनु वन दुरेउ समिहि ग्रमि राहू ॥
 वड़ विधु नहिं समात मुअ माहीं * मनहुं क्रोधवम उगिलत नाहीं ॥
 कोल-कराल-दसन-झवि गाई * तनु विसाल पीवर अधिकारि ॥
 घुरघुरात हय आरव पायें * चकित विलोकत कान उठायें ॥

दोहा--नील महीधर सिखर सम, देखि विसाल बराहु ॥

चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप, हाँकि न होइ निवाहु १५६

आवत देखि अधिक रव वार्जा * चलेउ बराह मरुगति भाजी ॥
 तुरत कीन्ह नृप मरुसंधाना * महि मिलि गयउ विलोकत वाना ॥
 तकि तकि तीर महीम चलावा * करि छल मुअर मरीरु बचावा ॥
 प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा * रिसवम भूप चलेउ मंग लागा ॥
 गयउ दरि घन गहन बराहू * जहँ नाहिं न गज-वाजि-निवाहू ॥
 अति अकेल वन विपुल कलेमू * तदपि न मृगमग तजइ नरेमू ॥
 कोल विलोकि भूप वड़ धीरा * भागि पैठ गिरगुहा गँभीरा ॥
 अगम देखि नृप अति पद्धितारि * फिरेउ महावन परेउ भुलारि ॥

दोहा--खेद खिन्न छुद्धिततृपित, राजा वाजिसमेत ॥

खोजत व्याकुलसरितसर, जलविनु भयउअचेत १५७

फिरत विपिन आस्रम एक देखा * तहँ वस नृपति कपट-मुनि-वेखा ॥
 जासु देस नृप लीन्ह छुड़ाई * ममर सेन तजि गयउ पराई ॥
 समय प्रतापभानु कर जानी * आपन अति अममय अनुमानी ॥
 गयउ न गृह मन बहुत गलानी * मिला न राजहि नृप अभिमानी ॥
 रिस उर मारि रंक जिमि राजा * विपिन वसइ तापस के साजा ॥
 तासु समीप गवन नृप कीन्हा * यह प्रतापरवि तेहि तव चीन्हा ॥

राउ तृपित नहिं सो पहिचाना * देखि मुंषेप महामुनि जाना ॥
उतरि तुरग तें कीन्ह प्रनामा * परम चतुर न कहेंउ निजनामा ॥

दोहा--भूपति तृपित विलोकि तेहि, सरवर दीन्ह देखाइ ॥

मज्जनपान समेत हय, कीन्ह नृपति हरपाइ ॥१५८॥

गै स्रम मकल मुग्धी नृप भयऊ * निजआस्रम तापम लेइ गयऊ ॥
आसन दीन्ह अस्तरवि जानी * पुनि तापम बोलेउ मृदुवानी ॥
को तुम्ह कम बन फिरहु अकेले * सुंदर जुवा जीव परहेले ॥
चक्रवर्ति के लच्छन तोरे * देखत दया लागि अति मोरे ॥
नाम प्रतापभानु अरुनीसा * तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा ॥
फिरत अहेरे परेऊँ भुलाई * वडें भाग देखेऊँ पद आई ॥
हम कहँ दुरलभ दरम तुम्हारा * जानत हौं कछु भल होनिहारा ॥
कह मुनि तात भयउ अँधियारा * जोजन सत्तरि नगर तुम्हारा ॥

दोहा--निसा घोर गंभीर बन, पंथ न सुनहु सुजान ।

बसहु आजु अस जानि तुम्ह, जायहु होत विहान ॥

तुलसी जसि भवितव्यता, तैसी मिलइ सहाइ ।

आपु न आवइ ताहि पहिं, ताहि तहाँ लेइ जाइ ॥१५९॥

भलेहि नाथ आयसु धरि सीमा * वाँधि तुरग तरु बैठ महीसा ॥
नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही * चरन वंदि निज भाग्य सराही ॥
पुनि बोलेउ मृदुगिरा सुहाई * जानि पिता प्रभु करउँ ढिठाई ॥
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी * नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥
तेहि न जान नृपनृपहि सो जाना * भूप मुहद सो कपट सयाना ॥
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा * बल बल कीन्ह चहइ निज काजा ॥
समुझि राजसुख दुखित अराती * अवाँ अनल इव मुलगइ छाती ॥
सरल बचन नृप के सुनि काना * बयर सँभारि हृदय हरपाना ॥

दोहा--कपट बोरि बानी मृदुल, बोलेउ जुगुति समेत ।

नाम हमार भिखारि अब, निर्धन रहित निकेत ॥१६०॥

कह नृप जे विज्ञान निधाना * तुम्ह सारिखे गलितअभिमाना ॥
रहहिं अपनपौ भदा दुराये * सब विधि कुमल कुंषेप बनाये ॥

तेहि तें कहहिं संत सुति टरे * परम अकिंचन प्रिय हरि केरे ॥
 तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा * होत विरंचि सिवहि संदेहा ॥
 जोऽसि सोऽसि तव चरन नमामी * मो पर कृपा करिअ अब स्वामी ॥
 सहज प्रीति भूपति कै देखी * आपु विषय विस्वाम विसेखी ॥
 सब प्रकार राजहि अपनाई * बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
 मुनु सतिभाउ कहउं महिपाला * इहाँ बसत वीते बहु काला ॥
 दोहा--अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ, मैं न जनावउं काहु ।

लोकमान्यता अनलसम, कर तपकानन दाहु ॥

सोरठा--तुलसी देखि सुबेखु, मूलहिं मृदु न चतुर नर ।

सुन्दरकेकिहिपेखु, बचनसुधासमअसनअहिं ॥ १६१ ॥

तातें गुपुत रहउं जग माहीं * हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥
 प्रभु जानत सब विनहि जनाये * कहहु कवन मिधि लोक रिझाये ॥
 तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरे * प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे ॥
 अब जौं तात दुरावउं तोही * दारुन दोष घटइ अति मोही ॥
 जिमि जिमि तापस कथइ उदासा * तिमि तिमि नृपहि उपज विस्वामा ॥
 देखा स्ववम करम-मन-वानी * तव बोला तापस बगव्यानी ॥
 नाम हमार एकतनु भाई * मुनि नृप बोलेउ पुनि मिरु नाइ ॥
 कहहु नाम कर अरथ बग्यानी * मोहि मेवक अति आपन जानी ॥
 दोहा--आदि सृष्टि उपजी जवहि, तव उतपति भइ मोरि ।

नाम एकतनु हेतु तेहि, देह न धरी बहोरि ॥ १६२ ॥

जनि आचरजु करहु मन माहीं * मुत तप तें दुर्लभ कळु नाहीं ॥
 तपवल तें जग मृजइ विधाता * तपवल विष्णु भये परित्राता ॥
 तपवल संभु करहिं संहारा * तप तें अगम न कळु संमारा ॥
 भयउ नृपहि मुनि अति अनुरागा * कथा पुरातन कहइ मो लागा ॥
 करम धरम इतिहास अनंका * करइ निरूपन विगति विवेका ॥
 उद्धव-पालन - प्रलय - कहानी * कहैमि अमित आचरज बग्यानी ॥
 मुनि महीप तापसवम भयऊ * आपन नाम कहन तव लयऊ ॥
 कह तापस नृप जानउं तोही * कीन्हेउ कपट लाग भल मोही ॥

सोरठा--सन् महीस असि नीति, जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप ।

मोहि तोहिपर अतिप्रीति, सोइ चतुरताविचारि तव ॥१६३॥

नाम तुम्हार प्रतापदिनेमा * मत्यकेतु तव पिता नरेमा ॥
 गुरुप्रमाद सब जानिअ राजा * कहिअ न आपन जानिअकाजा ॥
 देखि तात तव महज सुधाई * प्रीतिप्रतीति नीति निपुनाई ॥
 उपजि परी ममता मन मोरे * कहउँ कथा निज पूछे तोरे ॥
 अब प्रमन्न मैं समय नाही * माँगु जो भूप भाव मन माहीं ॥
 मुनि सुबचन भूपति हरपाना * गहि पद विनय कान्हि विधिनाना ॥
 कृपासिंधु मुनि दरसन तोरे * चारि पदारथ करतल मोरे ॥
 प्रभुहि तथापि प्रमन्न विलोकी * माँगि अगम वरु होउँ अमोकी ॥

दोहा--जरा मरन दुख रहित तनु, समर जितइ जनि कोउ ।

एकछत्र रिपुहीन महि, राज कल्प सत होउ ॥१६४॥

कह तापम नृप ऐसेइ होऊ * कारन एक कठिन सुनु सोऊ ॥
 कालउ तव पद नाइहि मीमा * एक विप्रकुल छाँड़ि महीमा ॥
 तपवल विप्र सदा बरिआरा * तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा ॥
 जौं विप्रन्ह वस करहु नरेमा * तौ तव सब विधि विष्णु महेमा ॥
 चल न ब्रह्मकुल मन बरिआई * सत्य कहउँ दोउ भुजा उठाई ॥
 विप्रस्राप विनु सुनु महिपाला * तोर नास नहिं कवनहुँ काला ॥
 हरपेउ राउ वचन मुनि तामू * नाथ न होइ मोर अब नासू ॥
 तव प्रमाद प्रभु कृपानिधाना * मो कहँ सर्वकाल कल्याना ॥

दोहा--एवमस्तु कहि कपटमुनि, बोला कुटिल बहोरि ।

मिलव हमारभुलावनिज, कहहु त हमहिं न खोरि ॥१६५॥

तातें मैं तोहि बरजउँ राजा * कहे कथा तव परम अकाजा ॥
 छठें खवन यह परत कहानी * नास तुम्हार सत्य मम वानी ॥
 यह प्रगटे अथवा द्विजसापा * नास तोर सुनु भानुप्रतापा ॥
 आन उपाय निधन तव नाही * जौं हरिहर कोपहिं मन माहीं ॥
 सत्य नाथ पद गहि नृप भाखा * द्विज-गुरु-कोप कहहु को राखा ॥
 राखइ गुरु जौं कोप विधाता * गुरुविरोध नहिं कोउ जगत्राता ॥

जौं न चलव हम कहे तुम्हारे * होउ नास नहिं सोच हमारे ॥
एकहि डर डरपत मन मोरा * प्रभु महि - देव - माप अतिघोरा ॥
दोहा-होहिं विप्र वस कवनविधि, कहहु कृपा करि सोउ ।

तुम्ह तजि दीनदयाल निज, हितून देखउँ कोउ ॥१६६॥

मुनु नृप विविध जतन जग माहीं * कष्टमाध्य पुनि होहिं कि नाहीं ॥
अहइ एक अति सुगम उपाई * तहाँ परंतु एक कठिनाई ॥
मम आधीन जुगुति नृप सोई * मोर जाव तव नगर न होई ॥
आजु लगे अरु जब तें भयऊँ * काहू के गृह ग्राम न गयऊँ ॥
जौं न जाउँ तव होइ अकाजू * बना आइ अममंजम आजू ॥
मुनि महीस बोलेउ श्रुतु वानी * नाथ निगम अग्नि नीति बखानी ॥
बड़े सनेह लखुन्ह पर करहीं * गिरि निज मिरन्हि मदातून धरहीं ॥
जलधि अगाध मौलि वह फेनू * मंतत धरनि धरत मिर रेनू ॥
दोहा--अस कहि गहे नरेस पद, स्वामी होहु कृपाल ।

मोहि लागि दुख सहिय प्रभु, सज्जन दीनदयाल ॥१६७॥

जानि नृपहि आपन आधीना * बोला तापम कपट प्रधीना ॥
सत्य कहउँ भूपति मुनु तोही * जग नाहिन दुर्लभ कळु माहीं ॥
अवसि काज में करिहउँ तोरा * मन तन वचन भगत तें मोरा ॥
जोग जुगुति तप मंत्रप्रभाऊ * फलइ तवहिं जब करिअ दुराऊ ॥
जौं नरेस में करउँ रमोई * तुम्ह परुमहु मोहि जान न कोई ॥
अन्न मो जोइ जोइ भोजन करई * मोइ मोइ तव आयमु अनुभरई ॥
पुनि तिन्ह के गृह जेवइ जोऊ * तव वस होइ भूप मुनु मोऊ ॥
जाइ उपाय रचहु नृप एहू * मंतत भरि संकल्प करेहू ॥

दोहा--नित नूतन द्विज सहस सत, बरेहु सहित परिवार ।

मैं तुम्हरे संकल्प लागि, दिनहिं करव ज्यौनार ॥१६८॥

एहि विधि भूप कष्ट अति थोरें * होइहहिं मकल विप्र वस तोरें ॥
करिहहिं विप्र होम मुख सेवा * तेहि प्रसंग महजहिं वस देवा ॥
अउर एक तोहि कहउँ लखाऊ * में एहि वेष न आउव काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया * हरि आनव में करि निज माया ॥

तपवल तेहि करि आपु ममाना * रग्विहउँ इहाँ वरप परवाना ॥
 में धरि तामु वेप मुनु राजा * मव विधि तोर मवारव काजा ॥
 गइ निमि बहुत मयन अव कीजे * मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥
 में तपवल तोहि तुरग समेता * पहुँचइहउँ सोवतहिं निकेता ॥
 दोहा--में आउव सोइ वेप धरि, पहिचानेउ तव मोहि ।

जव एकांत बुलाइ सब, कथा सुनावउँ तोहि ॥१६६॥

मयन कीन्ह नृप आयमु मानी * आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी ॥
 समित भूप निद्रा अति आई * सो किमि सोव सोच अधिकई ॥
 कालकेतु निमिचर तहँ आवा * जेहि सूकर होइ नृपहि भुलावा ॥
 परममित्र तापसनृप केरा * जानइ सो अति कपट घनरा ॥
 तेहि के मत सुत अरु दस भाई * स्वल अति अजय देव-दुख-दाई ॥
 प्रथमहिं भूप ममर मव मारे * विप्र मंत मुर देखि दुखारे ॥
 तेहि स्वल पाछिल वयरु मँभारा * तापम नृप मिलि मंत्र विचारा ॥
 जेहि रिपुछय मोइ रचन्हि उपाऊ * भावी वस न जानु कलु राऊ ॥
 दोहा--रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु करि गनिय न ताहु ।

अजहुँ देत दुख रविससिहि, सिर अवसेपित राहु ॥१७०॥

तापम नृपनिज मग्वहिं निहारी * हरपि मिलेउ उठि भयउ सुखारी ॥
 मित्रहि कहि मव कथा सुनाई * जातुधानु बोला सुख पाई ॥
 अव साधेउँ रिपु सुनहु नरेमा * जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥
 परिहरि सोचि रहहु तुम्ह सोई * विनु औपध विआधि विधि खोई ॥
 कुलसमेत रिपुमूल बहाई * चौथे दिवस मिलव में आई ॥
 तापसनृपहि बहुत परितोषी * चला महाकपटी अतिरोषी ॥
 भानुप्रतापहि बाजिसमेता * पहुँचायेसि छन माँझ निकेता ॥
 नृपहि नारि पहिं सयन कराई * हयगृह बाँधेसि बाजि बनाई ॥
 दोहा--राजा के उपरोहितहि, हरि लेइ गयउ बहोरि ।

लेइ राखेसि गिरिखोह महँ, माया करि मति भोरि ॥१७१॥

आपु विरचि उपरोहितरूपा * परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ॥
 जागेउ नृप अनभये विहाना * देखि भवन अति अचरजु माना ॥

मुनिमहिमा मन महँ अनुमानी * उठेउ गवहिं जेहि जान न रानी ॥
 कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही * पुर नरनारि न जानेउ केही ॥
 गये जामजुग भूपति आवा * घर घर उत्सव बाज बधावा ॥
 उपरोहितहि देख जब राजा * चकित विलोक मुमिरिसोइकाजा ॥
 जुगसम नृपहि गये दिन तीनी * कपटी मुनिपद रहि मति लीनी ॥
 समय जानि उपरोहित आवा * नृपहि मते सब कहि समुझावा ॥
 दोहा--नृप हरपेउ पहिचानि गुरु, भ्रमवस रहा न चेत ।

बरे तुरत सतसहस बर, विप्र कुटुंब समेत ॥१७२॥

उपरोहित जेवनार बनाई * छरस चारि विधि जमि सुतिगाई ॥
 मायामय तेहि कीन्ह रसोई * विंजन बहु गनि सकइ न कोई ॥
 विविध मृगन्ह कर आमिष राँधा * तेहि महँ विप्रमामु खल माँधा ॥
 भोजन कहँ सब विप्र बोलाये * पग पषारि मादर बैठाये ॥
 परुसन जबहिं लाग महिपाला * भइ अकामचानी तेहि काला ॥
 विप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू * हे वड़ि हानि अन्न जनि खाहू ॥
 भयउ रसोई भू-सुर-मामू * सब द्विज उठे मानि विस्वामू ॥
 भूप विकल मति मोह भुलानी * भावी वम न आव मुख वानी ॥
 दोहा--बोले विप्र सकोप तव, नहिं कछु कीन्ह विचार ।

जाइ निसाचर होहु नृप, मृद सहित परिवारू ॥१७३॥

छत्रबंधु तैं विप्र बोलाई * घालै लिये महित समुदाई ॥
 ईश्वर राखा धरम हमारा * जइहमि तैं समेत परिवारा ॥
 संवत मध्य नास तव होऊ * जलदाता न रहिहि कुल कोऊ ॥
 नृप सुनि साप विकल अतित्रासा * भई वहोरि वरगिरा अकामा ॥
 विप्रहु साप विचारि न दीन्हा * नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥
 चकित विप्र सब सुनि नभवानी * भूप गयउ जहँ भोजनखानी ॥
 तहँ न असन नहिं विप्र सुआरा * फिरेउ राउ मन नोच अपारा ॥
 सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई * त्रमित परेउ अवनी अकुलाई ॥
 दोहा--भूपति भारी मिटइ नहिं, जदपि न दूपन तोर ।

किये अन्यथा होइ नहिं विप्रसाप अतिघोर ॥१७४॥

अथ क्षेपक

जो करि कपट छले जग काहू * देइहि ईश अधम गति वाहू ॥
 विप्र वचन मुनि नृप अकुलाना * उठिपुनि विनयकीन्ह विधिनाना ॥
 पुनि पुनि पद गहि कहेउ भुआला * शाप अनुग्रह करहु कृपाला ॥
 जव तुम होव निशाचर जाई * ब्रह्म वंश तामम तनु पाई ॥
 अजग अमर अतुलित प्रभुताई * जग विख्यात वीर दोउ भाई ॥
 होइहिं जवहिं पराभव चारी * तव तुम सेउव देव पुरारी ॥
 शिव प्रमाद बर पाइ बहोरी * होइहें मव जग प्रभुता तोरी ॥
 मिलहिं तोहिं तव मनत कुमारा * तव तुम समुझव शाप हमारा ॥

दोहा-तुम पृच्छव निस्तार निज, सादर सुनहु नरेश ।

सब परिवार उधार तव, होइहें मुनि उपदेश ॥

रति क्षेपक

अस कहि सब महिदेव मिथाये * समाचार पुरलोगन्ह पाये ॥
 सोचहिं दृपन देवहि देहीं * विचरत हंस काग किय जेहीं ॥
 उपरोहितहि भवन पहुँचाई * असुर तापसहि खवरि जनार्ई ॥
 तेहि ग्वल जहँ तहँ पत्र पठाये * सजि सजि सेन भूप सब धाये ॥
 घेरंन्हि नगर निमान वजाई * विविधभाँति नित होइ लराई ॥
 जूमे मकल सुभट करि करनी * बंधुसमेत परेउ नृप धरनी ॥
 सत्य-केतु-कुल कोउ नहिं वाँचा * विप्रमाप किमि होइ असाँचा ॥
 रिपु जिति सब नृप नगर वसाई * निज पुर गवने जय जस पाई ॥

दोहा--भरद्वाज सुनु जाहि जव, होइ विधाता वाम ।

धूरि मेरुसम जनक जम, ताहि ब्यालसम दाम ॥१७५॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा * भयउ निसाचर सहित समाजा ॥
 दम मिर ताहि बीम भुजदंडा * रावन नाम वीर वरिखंडा ॥
 भूपअनुज अरि - मर्दन - नामा * भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥
 सचिव जो रहा धरमरुचि जासू * भयउ विमात्र बंधु लघु तामू ॥
 नाम विभीषन जेहि जगु जाना * विष्णुभगत विज्ञाननिधाना ॥
 रहे जे सुत मेवक नृप केरे * भये निमाचर घोर घनेरे ॥
 कामरूप खल जिनिस अनेका * कुटिल भयंकर विगतविधेका ॥

कृपारहित हिंसक सब पापी * वरनि न जाइ विस्वपरितापी ॥
दोहा--उपजे जदपि पुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप ।

तदपि मही-सुर-साप-बस, गये सकल अधरूप ॥१७६॥

कीन्ह विविध तप तीनिउँ भाई * परम उग्र नहिं वरनि सो जाई ॥
गयउ निकट तप देखि विधाता * माँगहु वर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि विनती पद गहि दसमीसा * बोलेउ वचन मुनहु जगदीसा ॥
हम काहू के मरहिं न मारे * बानर मनुज जाति दुइ वारे ॥
एवमस्तु तुम्ह बड तप कीन्हा * मैं ब्रह्मा मिलि तेहि वर दीन्हा ॥
पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गयऊ * तेहि विलोकिमन विममय भयऊ ॥
जौं एहि खल नित करव अहारू * होइहि मव उजारि मंगारू ॥
सारद प्रेरि तासु मति फेरी * माँगेसि नींद माम पट केरी ॥
दोहा--गए विभीषन पास पुनि, कहेउ पुत्र वर माँगु ॥

तेहि माँगेउ भगवंत-पद, कमल अमल अनुरागु ॥१७७॥

तिन्हहिं देइ वर ब्रह्म सिधाय * हरपित ते अपने गृह आये ॥
मयतनुजा मंदोदरिनामा * परममुंदरी नारिल्लामा ॥
सोइ मय दीन्हि रावनहि आनी * होइहि जातुधानपति जानी ॥
हरपित भयउ नारि भलि पाई * पुनि दोउ बंधु विआहेमि जाई ॥
गिरि त्रिकूट एक सिंधु मँझारी * विधिनिर्मित दुर्गम अति भारी ॥
सोइ मयदानव बहुरि सवारौ * कनकरचित मनिभवन अपारा ॥
भोगावति जस अहि-कुल-बामा * अमरावति जमि सकनिवासा ॥
तिन्हतें अधिक रम्य अति बंका * जगविख्यात नाम तेहि लंका ॥
दोहा--खाईं सिंधु गँभीर अति, चारिहु दिसि फिरि आव ।

कनककोट मनिखचित दृढ, वरनि न जाइ वनाव ॥

हरिप्रेरित जेहि कल्प जोइ, जातुधानपति होइ ।

सूर प्रतापी अतुलबल, दलसमेत वस सोइ ॥१७८॥

रहे तहाँ निमिचर भट भारे * ते सब गुरन्ह समर मंहारे ॥
अव तहँ रहहिं मरु के प्रेरे * रच्छक कोटि जच्छपति केरे ॥
दसमुख कतहुँ खवरि अमि पाई * सेन साजि गढ घेरमि जाई ॥

देखि विकट भट बड़ि कटकाई * जच्छ जीव लेइ गयउ पराई ॥
 फिरि सब नगर दसानन देखा * गयउ सोच सुख भयउ बिसेखा ॥
 सुंदर सहज अगम अनुमानी * कीन्हि तहाँ रावन रजधानी ॥
 जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे * सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥
 एक बार कुंवर पर धावा * पुष्पकजान जीति लेइ आवा ॥
 दोहा--कौतकही कैलास पुनि, लीन्हेसि जाइ उठाइ ॥

मनहुँ तौलि निज बाहुबल, चला बहुत सुख पाइ ॥१७६॥

सुख संपति सुत मेन सहाई * जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई ॥
 नित नूतन सब बाढत जाई * जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥
 अतिबल कुम्भकरन अस भ्राता * जेहि कहँ नहिँ प्रतिभट जग जाता ॥
 करइ पान सोवइ पटमासा * जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा ॥
 जौ दिन प्रति अहार कर सोई * बिस्व बंगि सब चौपट होई ॥
 समरधोर नहिँ जाइ बखाना * तेहि सम अमित वीर बलवाना ॥
 बारिदनाद जेठ सुत तासू * भट महँ प्रथम लीक जग जासू ॥
 जेहि न होइ रन सनमुख कोई * सुरपुर नितहि परावन होई ॥
 दोहा--कुमुख अकंपन कुलिसरद, धूमकेतु अतिकाय ।

एक एक जग जीति सक, ऐसे सु-भट-निकाय ॥१८०॥

कामरूप जानहिँ सब माया * मपनेहुँ जिन्ह के धरम न दाया ॥
 दसमुख बैठ सभा एक वारा * देखि अमित आपन परिवारा ॥
 सुतसमूह जन परिजन नाती * गनइ को पार निमाचरजाती ॥
 सेन विलोकि सहज अभिमानी * बोला बचन क्रोध-मद-मानी ॥
 मुनहु सकल रजनी-चर-जूथा * हमरे वैरी विबुधवरूथा ॥
 ते सनमुख नहिँ करहिँ लराई * देखि सबल रिपु जाहिँ पराई ॥
 तिन्ह कर मरन एक विधि होई * कहउँ बुझाई सुनहु अब सोई ॥
 द्विजभोजन मख होम सराधा * सब कै जाइ करहु तुम बाधा ॥
 दोहा--छुधाछीन बलहोन सुर, सहजहिँ मिलिहहिँ आइ ।

तब मारिहउँ कि छाडिहउँ, भली भाँति अपनाइ ॥१८१॥

मेघनाथ कहँ पुनि हँकरावा * दीन्ही सिख बल बैयरु वदावा ॥

जे सुर समरधीर बलवाना * जिन्हके लखिं कर अभिमाना ॥
 तिन्हहिं जीति रन आनेसु वाँधी * उठि भुत पितुअनुसासन काँधी ॥
 एहि विधि सवहीं आज्ञा दीन्ही * आपुनि चलेउ गदा कर लीन्ही ॥
 चलत दसानन डोलति अरुनी * गर्जत गर्भ सवहिं सुररवनी ॥
 रावन आवत सुनेउ सकोहा * देवन्ह तके मेरु-गिरि-खोहा ॥
 दिगपालन्ह के लोक सुहाये * सूने सकल दसानन पाये ॥
 पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी * देइ देवतन्ह गारि प्रचारी ॥
 रन-मद-मत्त फिरइ जग धावा * प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा ॥
 रवि ससि पवन बरुन धनधारी * अगिनि काल जम सब अधिकारी ॥
 किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा * हटि सवही के पंथहि लागा ॥
 ब्रह्मसृष्टि जहँ लागि तनुधारी * दस-मुख-अस वर्ती नर नारी ॥
 आयसु करहिं सकल भयभीता * नवहिं आइ नित चरन विनीता ॥
 दोहा--भुजबल विस्व वस्य करि, राखेसि कोउ न स्वतंत्र ।

मंडलीकमनि रावन, राज करइ निजमंत्र ॥

देव-जच्छ-गंधर्व-नर-किन्नर-नाग-कुमारि ।

जीति वरीं निज-बाहु-बल, बहु-सुंदर-बर-नारि ॥ १८२ ॥

इंद्रजीत सन जो कलु कहेऊ * सो सब जनु पहिलेहि करि रहेऊ ॥
 प्रथमहिं जिन्हकहँ आयसु दीन्हा * तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा ॥
 देखत भीमरूप सब पापी * निसि - चर - निकर देवपरितापी ॥
 करहिं उपद्रव असुरनिकाया * नानारूप धरहि करि माया ॥
 जेहि विधि होइ धरम निर्मूला * सो सब करहिं वेदप्रतिकूला ॥
 जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिं * नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं ॥
 सुभ आचरनु कतहुँ नहिं होई * देव विप्र गुरु मान न कोई ॥
 नहिं हरिभगति जग्य जप दाना * सपनेहुँ सुनिय न वेद पुराना ॥

छंद-जप जोग विरागा तप मखभागा सवन सुनइ दसमीमा ।

आपुन उठि धावइ रहइ न पावइ धरि सब घालइ खीसा ॥

अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धरम सुनिय नहिं काना ।

तेहि बहु विधि त्रासइ देस निकासइ जो कह वेद पुराना ॥

सोरठा-वरांन न जाइ अनीति, घोर निसाचर जो करहिं ।

हिंसा पर अति प्रीति, तिन्ह के पापहिं कवनि मिति ॥ १८३ ॥
 वाढ़ खल बहु चोर जुआरा * जे लंपट पर-धन पर-दारा ॥
 मानहिं मातु पिता नहिं देवा * साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ॥
 जिन्ह के यह आचरन भवानी * ते जानहु निमिचर सब प्राणी ॥
 अतिमय देखि धरम कै ग्लानी * परमसभीत धरा अकुलानी ॥
 गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही * जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ॥
 सकलधरम देखइ विपरीता * कहि न सकइ रावन भयभीता ॥
 धेनुरूप धरि हृदय विचारी * गई तहाँ जहँ सुर-मुनि-झारी ॥
 निजसंताप सुनाएसि रोई * काहू तें कछु काज न होई ॥

छंद-सुर मुनि गंधर्वा मिलि करि सर्वा गे विरंचि के लोका ।

सँग गो-तनु-धारी भूमि विचारी परम विकल भय सोका ॥

ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोर कछु न बसाई ।

जा करि तें दासी सो अविनासी हमरउ तोर सहाई ॥

सोरठा--धरनि धरहि मन धीर, कह विरंचि हरिपद सुमिरु ।

जानत जन की पीर, प्रभु भंजहिं दारुन विपति ॥ १८४ ॥
 बैठे सुर सब करहिं विचारा * कहँ पाइय प्रभु करिअ पुकारा ॥
 पुर बैकुंठ जान कह कोई * कोउ कह पयनिधि महँ बस सोई ॥
 जा के हृदय भगति जस प्रीती * प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहि रीती ॥
 तेहि समाज गिरजा में रहेऊँ * अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ ॥
 हरि व्यापक सर्वत्र समाना * प्रेम तें प्रकट होहिं मैं जाना ॥
 देस काल दिसि विदिसिहु माहीं * कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥
 अग-जग-मय सब रहित विरागी * प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ॥
 मोर बचन सबके मन माना * साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥
 दोहा--सुनि विरंचि मन हरष तन, पुलकि नयन वह नीर ।

अस्तुति करत जोर कर, सावधान मतिधीर ॥ १८५ ॥

छंद-जय जय सुरनायक जन-सुख-दायक प्रनतपाल भगवंता ।

गो-द्विज-हित-कारी जय असुरारी सिंधु-सुता-प्रिय-कंता ॥

पालन सुर धरनी अद्भुतकरनी मरमु न जानइ कोइ ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई ॥
जय जय अविनासी सब-घट-वासी व्यापक परमानंदा ।
अविगत गोतीतं चरितपुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहि लागि विरागी अतिअनुरागी विगतमोह मुनिबृंदा ।
निसिवासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दृजा ।
सो करउ अधारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भव-भय-भंजन मुनि-मन-रंजन खंडन विपतिबरूथा ।
मन वच क्रम बानी ब्याडि सयानी सरन मकल-सुर-यूथा ॥
मारद सुति सेषा रिषय असेषा जा कहँ कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भव-वारिधि-मंदर सब विधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा ॥

दोहा--जानि सभय सुर भूमि सुनि, वचन समेत सनेह ।

गगन गिरा गम्भीर भई, हरनि सोकसंदेह ॥१८६॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा * तुम्हहि लागि धरिहउं नखेसा ॥
अंसन्ह सहित मनुजअवतारा * लेइहउं दिन - कर-बंस-उदारा ॥
कस्यप अदिति महातप कीन्हा * तिन्ह कहँ में पूरव वर दीन्हा ॥
ते दसरथ कौसल्या रूपा * कोमलपुरी प्रगट नरभूपा ॥
तिन्ह के गृह अवतरिहौं जाई * रघु-कुल-तिलक सो चारिउ भाई ॥
नारदवचन सत्य सब करिहौं * परम मक्तिममेत अवतरिहौं ॥
हरिहौं सकल भूमिगरुआई * निर्भय होहु देव समुदाई ॥
गगन ब्रह्मवानी सुनि काना * तुरत फिरे सुर हृदय जुडाना ॥
तव ब्रह्मा धरनिहि समुझावा * अभय भई भरोस जिय आवा ॥

दोहा--निज लोकहि विरंचि गे, देवन्ह इहइ सिखाइ ।

बानरतनु धरि धरनि महँ, हरिपद सेवहु जाइ ॥१८७॥

गये देव सब निज निज धामा * भूमि सहित मन कहँ बिलामा ॥

जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा * हरपे देव बिलंब न कीन्हा ॥
 वन-चर-देह धरी छिति माहीं * अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं ॥
 गिरि-तरु-नख-आयुध सब बीरा * हरिमारग चितवहिं मतिधीरा ॥
 गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी * रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥

अथ क्षेपक

यह चरित्र दशकन्धर जाना * सूर्य वंश से हानि न माना ॥
 नाम दिलीप भूप जब भयऊ * तिन समीप रावण तव गयऊ ॥
 विप्ररूप धरि रावण आवा * पूजा करि रानिन वैठावा ॥
 तव रावण प्रगिटिसि निज देहा * रानिन उर भा अति सन्देहा ॥
 भाजि गई सब मंदिर माहीं * पुनि सो आवा भूपति पाहीं ॥
 देखा नृप हरि ध्यान लगावा * इक चरित्र तहँ भूप दिखावा ॥
 उत्तर दिशि इक कानन जाई * घेरिसि सिंह धेनु बरिआई ॥
 कियो भाँति जब धेनु लवाई * निज मुख आरति कूक सुनाई ॥
 दोहा--धर्मधुरंधर नीति युत, सुनु दिलीप महिपाल ।

रक्षा मम तुम करहु अब, सिंहमार तत्काल ॥

मुनि महीप यह आरति बानी * तंदुल इक मारयो शर तानी ॥
 मंत्र पढ़ा तंदुल शर आवा * तुरत सिंह कहँ मार गिरावा ॥
 धरि बटुरूप पूछ सब काहू * उत्तर दिशि गा निशिचर नाहू ॥
 मरा सिंह लखि निज गृह आवा * देखि अमित बल मन भय पावा ॥
 जब दिलीप निज मंदिर आये * रानिन ने निज वचन सुहाये ॥
 अमित क्रोध करि कर लै पानी * मंत्र पढ़ा मन यह अनुमानी ॥
 गिरी त्रिकूट सह लंका सारी * बोरेहु सब कहँ सिन्धु मझारी ॥
 दक्षिण दिशि नृप जलहिं चलावा * बहुसर होइ लंका कहँ आवा ॥
 दोहा--तोड़ फोड़ तिहि लंक को, कछुक छुड़ाइस आय ।

मन्दोदरिअति दीन हवै, वचन कहेसि बिलखाय ॥

अवधि नृपति की खँचि दुहाई * लंका कहँ उन लीन्ह बचाई ॥
 तव शर निकर नृपति तिहि ठामा * बीर धुरीण महा बलधामा ॥
 पुनि बहु दिवस गये रघुराजा * प्रगटे अवध कीन्ह यह काजा ॥

पवन मंत्र पढ़ बाण चलावा * लंकागढ़ कहँ कल्लुक गिरावा ॥
 मयतनया बिनती बहु कीन्हा * भइ बकसीस झाँड़ि शर दीन्हा ॥
 पुनि अज भये नृपति तिहि ठामा * बीर धुरीण महा बलधामा ॥
 कल्लु लंका उन फोरि दहाई * मयतनया पुनि फेरि चलाई ॥
 अज सुत दशरथ भये नृपाला * रावण उर भा शोच कराला ॥
 दोह-लभ्यो तपस्या करन अति, बिन अहार बिनु वारि ।

विधिलख तप तिहि असुर कर, बोले बचन सँभारि ॥

पुत्र माँगु मोसो वरदाना * जो तेरे चित महँ अनुमाना ॥
 रावण तव बोला मुमुकाई * देहु मोहिं वरदान सुहाई ॥
 दशरथ अंश नाहिं सुत होई * धाता तुम राखहु जनि गोई ॥
 तव ब्रह्मा निज मन दुख पावा * एवमस्तु कह ताहि सुनावा ॥
 हुइ प्रसन्न रावण गृह आवा * कोशलपुर कहँ पुनि किय धावा ॥
 पहुँचि तहाँ बहु कीन उपाई * कौशल्या कहँ लीन चुराई ॥
 गयो सिंधु पहुँ मच्छ बुलायो * सोँपि ताहि निज घर पुनि आयो ॥
 विधि रखि देह तुरत रावण कर * कन्या जाय लीन्ह तेहिते वर ॥
 दोहा--मंजूषा में बन्द करि, गे विरंचि निज लोक ।

रोदन इमि कन्या करै, जिमि बन कके कोक ॥

तव सुमन्त वन में चलि आवा * रोदन शब्द सुना तिहि ठावा ॥
 बलकर खोलेसि जाय कियारी * कौशल्या यह गिरा उचारी ॥
 मोहि लै चलहु पिता के धामा * तव सुमन्त लै गयउ ललामा ॥
 देख सुमन्तहिं नृपति उचारे * को हौ तुम कहु भेद दुलारे ॥
 अवधपुरी दशरथ भूपाला * मंत्री तिनकर हौं भूआला ॥
 सुनि दशरथहिं नृपति बुलवायो * कन्या दे निज मन सुख पायो ॥

इति चोपक

यह सब रुचिर चरित मैं भापा * अब सो सुनहु जो बचहिं रापा ॥
 अवधपुरी रघु-कुल-मनि-राऊ * वेदविदित तेहि दसरथ नाऊ ॥
 धरम-धुरंधर गुननिधि ज्ञानी * हृदय भगति मति सारंगपानी ॥
 दोहा--कौशल्यादि नारि प्रिय, सब आचरन पुनीत ।

पतिअनुकूल प्रेम दृढ़, हरि-पद-कमल विनीत ॥१८८॥

एक वार भूपति मन माहीं * भइ गलानि मोरे सुत नाहीं ॥
 गुरुगृह गयेउ तुरत महिपाला * चरन लागि करि विनय विसाला ॥
 निज दुख सुख सब गुरुहि मुनायउ * कहि वसिष्ठ बहु विधि समुझायउ ॥
 धरहु धीर होइहहिं सुत चारी * त्रि-भुवन-विदित भगत-भय-हारी ॥
 मृंगीरिषिहि वसिष्ठ बोलावा * पुत्रकाम सुभ जज्ञ करावा ॥
 भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे * प्रगटे अगिनि चरु कर लीन्हे ॥
 जो वसिष्ठ कछु हृदय विचारा * सकलकाज भा सिद्ध तुम्हारा ॥
 यह हवि बाँटि देहु नृप जाई * जथाजोग जेहि भाग बनाई ॥

दोहा--तव अदृश्य भये पावक, सकल सभहि समुभाइ ।

परमानंदमगन नृप, हरप न हृदय समाइ ॥१८९॥

तवहि राय प्रियनारि बोलाई * कौसल्यादि तहाँ चलि आई ॥
 अरधभाग कौसल्यहि दीन्हा * उभय भाग आध कर कीन्हा ॥
 कैकेई कहँ नृप सो दयऊ * रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥
 कौसल्या कैकेई हाथ धरि * दीन्ह मुमित्रहि मन प्रमन्न करि ॥
 एहि विधि गर्भसहित सब नारी * भई हृदय हरषित सुख भारी ॥
 जा दिन तें हरि गर्भहि आये * सकललोक सुख संपति ज्ञाये ॥
 मंदिर महँ सब राजहिं रानी * सोभा सील तेज की खानी ॥
 सुखजुत कछुक काल चलि गयऊ * जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥

दोहा--जोग लगन ग्रह बार तिथि, सकल भये अनुकूल ।

चर अरु अचर हरषजुत, रामजनम सुखमूल ॥१९०॥

नवमी तिथि मधुमास पुनीता * सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥
 मध्य दिवस अति सीत न घामा * पावन काल लोकविसामा ॥
 सीतल मंद सुरभि वह वाऊ * हरषित सुर संतन्ह मन चाऊ ॥
 बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा * सबहिं सकल सरितामृतधारा ॥
 सो अवसर विरंचि जव जाना * चले सकल सुर साजि विमाना ॥
 गगन विमल संकुल सुरजूथा * गावहिं गुन गन्धर्ववरूथा ॥
 बरषहिं सुमन सुअंजलि साजी * गहगहि गगन दुंदुभी वाजी ॥

अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा * बहु विधि लावहिं निज-निज-सेवा ॥
दोहा--सुर समूह विनती करि, पहुँचे निज-निज-धाम ।

जगनिवास प्रभु प्रगटे, अखिल-लोक-विश्राम ॥१६१॥

छन्द--भये प्रगट कृपाला परम दयाला कौमल्या-हित-कारी ।
हरषित महतारी मुनि-मन-हारी अदभुतरूप विचारी ॥
लोचन-अभिरामं तनुघनस्यामं निजआयुध भुज चारी ।
भूषण वनमाला नयनविसाला सोभामिंधु स्वरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहिं विधि करउँ अनंता ।
माया-गुन-ज्ञानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥
करुना-सुख-सागर सब-गुन-आगर जेहिं गावहिं सुति मंता ।
सो मम हित लागी जनअनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥
ब्रह्मांडनिकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहे ।
मम उर सो वासी यह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहे ॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुतविधि कीन्ह चहे ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजिय सिमुलीला अति-प्रिय-सीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक मुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥

दोहा--विप्र-धेनु-सुर-संत हित, लीन्ह मनुज अवतार ।

निज-इच्छा-निर्मित-तन, माया-गुन-गो-पार ॥१६२॥

सुनि सिसुरुदन परम प्रिय बानी * संभ्रम चलि आई सब रानी ॥
हरषित जहँ तहँ धाई दामी * आनंदमगन सकल पुरवामी ॥
दसरथ पुत्रजनम मुनि काना * मानहुं ब्रह्मानन्दसमाना ॥
परमप्रेम मन पुलक सरीरा * चाहत उठन करत मति धीरा ॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई * मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानन्द पूरि मन राजा * कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा * आय द्विजन्ह सहित नृप द्वारा ॥

अनुपम बालक देखिन्हि जाई * रूपरामि गुन कहि न सिराई ॥
दोहा--तव नंदीमुख स्वाह करि, जातकरम सबकीन्ह ।

हाटक धेनु बसन मनि, नप बिप्रन्ह कहें दीन्ह ॥१६३॥

ध्वज पताक तोरने पुर झावा * कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा ॥
सुमन वृष्टि अकाम ते होई * ब्रह्मानन्दमगन सब लोई ॥
बृंद बृंद मिलि चली लोगाई * सहज सिंगार किये उठि धाई ॥
कनककलस मङ्गल भरि थारा * गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥
करि आरति नेवझावरि करहीं * वार वार सिसुचरनन्हि परहीं ॥
मागध सुत वन्दि गुनगायक * पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥
सरवस दान दीन्ह सब काहू * जेहि पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृग मद-चन्दन-कुंकुम-कीचा * मची सकल बीथिन्ह विच वीचा ॥

दोहा--गृह गृह बाज वधाव सुभ, प्रगटे सुखमाकंद ॥

हरपवंत सब जहँ तहँ, नगर नारि-नर-बृंद ॥१६४॥

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ * सुंदर सुत जनमत भईं ओऊ ॥
वोह सुख संपति समय समाजा * कहि न सकइ सारद अहिराजा ॥
अवध पुरी सोहइ एहि भाँति * प्रभुहि मिलन आईं जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन मुकुचानी * तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥
अगरधूप बहु जनु अंधियारी * उडाहि अवीर संध्या अनुमानी ॥
मंदिर-मनि-समूह जनु तारा * नृप-गृह-कलस सो इंद्र उदारा ॥
भवन-बंद-धुनि अति मृदु बानी * जनु खग-मुखर-समय जनु सानी ॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना * एक मास तेइ जात न जाना ॥

दोहा--मासदिवस कर दिवस भा, मरम न जानइ कोइ ॥

रथसमेत रवि थाकेउ, निसा कवन विधि होइ ॥१६५॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना * दिनमनि चले करत गुनगाना ॥
देखि महोत्सव सुरु मुनि नागा * चले भवन वरनत निज भागा ॥
अउरउ एक कहउ निज चोरी * सुनुगिरिजा अतिदृढ़ मति तोरी ॥
काकभुमुंडि मंग हम दोऊ * मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ ॥
परमानंद प्रेम-सुख-फूले * बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ॥

यह सुभ चरित जान पै सोई * कृपा राम कै जापर होई ॥
 तेहि अक्सर जो जेहि विधि आवा * दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥
 गज रथ तुरग हेम गो हीरा * दीन्हे नृप नाना विधि चीरा ॥
 दोहा--मन संतोष सबन्हि के जँह तहँ देहिं असीस ॥

सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईस ॥१६६॥

कल्लुक दिवस वीते एहि भाँति * जात न जानिय दिन अरु राती ॥
 नामकरन कर अक्सर जानी * भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी ॥
 करि पूजा भूपति अस भाखा * धरिय नाम जो मुनि गुनि राखा ॥
 इन्ह के नाम अनेक अनूपा * में नृप कहव स्वमति अनुरूपा ॥
 जो आनंदसिंधु सुखरासी * सीकर तें त्रैलोक सुपासी ॥
 सो सुखधाम राम अस नामा * अखिललोक दायक विषामा ॥
 विस्वभरन पोपन कर जोई * ता कर नाम भरत अस होई ॥
 जा के मुमिरन तें रिपुनासा * नाम सत्रुहन वेद प्रकासा ॥

दोहा--लच्छन धाम रामप्रिय, सकल-जगत-आधार ॥

गुरु बसिष्ठ तेहि राखा, लछिमन नाम उदार ॥१६७॥

धरे नाम गुरु हृदय विचारी * वेदतत्त्व नृप तव मुत चारी ॥
 मुनिधन जनमरवम सिव प्राणा * बाल-केलि-रम तेहि सुख माना ॥
 वारेहि तें निज हित पति जानी * लछिमन राम-चरन-रति मानी ॥
 भरत सत्रुहन दूनउ भाई * प्रभुमेवक जसि प्रीति बड़ाई ॥
 स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी * निरखहिं छवि जननी तृन तोरी ॥
 चारिउ सील-रूप-गुन-धामा * तदपि अधिक सुखमागर रामा ॥
 हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा * सूचत किरन मनोहर हामा ॥
 कवहुँ उछंग कवहुँ बरपलना * मातुदुलारहिं कहि प्रिय ललना ॥

दोहा--व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन विगतविनोद ॥

सो अज प्रेम-भगति-बस, कौसल्या के गोद ॥१६८॥

काम - कोटि-छवि स्यामसरीरा * नील कंज वारिद गंभीरा ॥
 अरुन - चरन - पंकज - नखजोती * कमलदलन्हि बैठे जनु मोती ॥
 रेख कुलिस ध्वज अंकुम सोहड़ * नूपुर धुनि मुनि मुनिमन मोहड़ ॥

कटि किंकिनि उदर त्रय रंखा * नाभि गँभीर जान जिन्ह देखा ॥
 भुज विमाल भूषन जुत भूरी * हिय हरिनग्न अति सोभा रूरी ॥
 उर मनिहार पदिक का सोभा * विप्रचरन देखत मन लोभा ॥
 कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई * आनन अमित-मदन - छवि छाई ॥
 दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे * नामा तिलक को वरनइ पारे ॥
 सुंदर सवन सुचारु कपोला * अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥
 चिक्कन कच कुंचित गभुआरे * बहु प्रकार रचि मातु सवारै ॥
 पीत झंगुलिया तनु पहिराई * जानु-पानि-विचरनि मोहि भाई ॥
 रूप सकहिं नहिं कहि सुति सेखा * सो जानहिं सपनेहुँ जिन्ह देखा ॥
 दोहा--सुखसंदोह मोहपर, ग्यान-गिरा-गोतीत ।

दंपति परम प्रेमवस, कर सिसुचरित पुनीत ॥१६६॥

एहि विधि राम जगत-पितु-माता * कोसल-पुर-वामिन्ह सुखदाता ॥
 जिन्ह रघुनाथचरन रति मानी * तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥
 रघुपतिविमुख जतन कर कोरी * कवन सकइ भवबंधन छोरी ॥
 जीव चराचर वम के राखे * सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥
 भृकुटिविलास नचावइ ताही * अस प्रभु छाडि भजिय कहु काही ॥
 मन क्रम बचन छाडि चतुराई * भजत कृपा करिहहिं रघुराई ॥
 एहि विधि सिसुविनोद प्रभु कीन्हा * सकल-नगर-वामिन्ह सुख दीन्हा ॥
 लेइ उछंग कवहुँक हलरावइ * कवहुँ पालने घालि झुलावइ ॥
 दोहा--प्रेममगन कोसल्या, निसि दिन जात न जान ।

सुत-सनेह-वस माता, बालचरित कर गान ॥२००॥

एक बार जननी अन्हवाये * करि सिंगार पलना पौढ़ाये ॥
 निज-कुल - इष्ट-देव भगवाना * पूजा हेतु कीन्ह असनाना ॥
 करि पूजा नैवेद्य चढावा * आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
 बहुरि मातु तहवाँ चलि आई * भोजन करत देख सुत जाई ॥
 गइ जननी सिसु पहिं भयभीता * देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥
 बहुरि आइ देखा सुत सोई * हृदय कंप मन धीर न होई ॥
 इहा उहाँ दुइ बालक देखा * मति भ्रम मोर कि आन बिसेखा ॥

देखि राम जननी अकुलानी * प्रभु हैंसि दीन्ह मधुर मुमुकानी ॥
दोहा--दिखरावा मातहि निज, अदभुत रूप अखंड ।

रोम रोम प्रति लागे, कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥२०१॥

अगनित रवि ससि सिव चतुरानन * बहुगिरि सरितमिधु महिकानन ॥
काल करम गुन ग्यान सुभाऊ * सोउ देखा जो मुना न काऊ ॥
देखी माया सब विधि गाढी * अतिसुभीत जोरे कर ठाढी ॥
देखा जीव नचावइ जाही * देखी भगति जो छोड़ ताही ॥
तन पुलकित बचन मुख न आवा * नयन भूँदि चरनहि सिरु नावा ॥
विषमयवंति देखि महतारी * भये बहुरि सिसुरूप खरारी ॥
अस्तुति करि न जाइ भय माना * जगतपिता में सुत करि जाना ॥
हरि जननी बहुविधि समुझाई * यह जनि कतहुँ कहमि मुनु माई ॥
दोहा--बार बार कौसल्या, विनय करइ कर जोरि ।

अब जान कवहुँ व्यापइ, प्रभु मोहि माया तोरि ॥२०२॥

बालचरित हरि बहुविधि कीन्हा * अति आनँद दामन्ह कहँ दीन्हा ॥
कलुक काल बीते सब भाई * बड़े भये परिजन-मुख-दाई ॥
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई * विप्रन्ह पुनि दखिना बहु पाई ॥
परम मनोहर चरित अपारा * करन फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
मन-क्रम-वचन - अगोचर जोई * दमरथअजिर विचर प्रभु मोई ॥
भोजन करत बोल जब राजा * नहिँ आवत तजि बालममाजा ॥
कौसल्या जब बोलन जाई * ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिँ पराई ॥
निगम नेति सिव अंत न पावा * ताहि धरइ जननी हाँठ धावा ॥
धूमर धूरि भरे तनु आये * भूपति विहँसि गोद बैठये ॥
दोहा--भोजन करत चपल चित, इत उत अवसरु पाइ ।

भाजि चले किलकत मुख, दधिओदन लपटाइ ॥२०३॥

बालचरित अतिमरल मुहाये * मारद सेप मंभु सुति गाये ॥
जिन्ह कर मनइन्ह सन नहिँराता * ते जन वंचित किए विधाता ॥
भए कुमार जबहिँ सब भ्राता * दीन्ह जनऊ गुरु-पितु-माता ॥
गुरुगृह गए पढ़न रघुराई * अल्प काल विद्या सब आई ॥

जाकी सहज स्वाम सुति चारी * सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥
 विद्या-विनय-निपुण गुनमीला * खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥
 करतल वान धनुष अति मोहा * देखत रूप चराचर मोहा ॥
 जिन्ह वीथिन्ह विहरहिं सब भाई * थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥
 दोहा--कोसल-पुर-बासी नर, नारि वृद्ध अरु बाल ।
 प्रानहुँ तैं प्रिय लागत, सब कहँ राम कृपाल ॥२०४॥

अथ चपक

एक दिन एक सलूका आयउ * भूपति द्वारे कपिहिं नचायउ ॥
 देख राम मचलाई ठानी * मौकहँ कीश मँगावहु आनी ॥
 तव नरेश बहु कीश मँगाये * एकहु रघुपति मनहिं न भाये ॥
 तव बसिष्ठ कह दूत पठावहु * पंपहिं से हनुमंत बुलावहु ॥
 मुनि गुरु वचन दूत पठवाये * तिन जा वचन सुकंठ सुनाये ॥
 मुन संदेश हनुमन्त हँकारी * कहेउ अवधपुर जाउ सुखारी ॥
 रघुपति निरखि पवन सुत आये * कण्ठ लाय निज सखा बनाये ॥
 राम एक दिन चंग उड़ाई * इन्द्रलोक में पहुँची जाई ॥
 सुर पति सुत वधु चंग निहारी * पकड़ी तिन्ह अस हृदय विचारी ॥
 इहां राम पकड़ी चंग जानी * कहेउ जाइ देखहु कपि मानी ॥
 सुरपुर पहुँचि नारि के हाथा * बोले देखि छांडु हरिनाथा ॥
 विहँमि कह्यो विन दरशन पाये * छांडुब नाहिं राम मन भाये ॥
 प्रेम विवस तिहि लखि हनुमाना * जाइ सकल प्रभु पास वखाना ॥
 जाइ कहेउ बोले भगवाना * चित्रकूट दर्शन मनमाना ॥
 दोहा--प्रभुकी वाणी सुनतही, जाय कह्यो हनुमान ।

चित्रकूटमें जाहु तुम, दरशन निश्चय जान ॥

तिन तब करते तुरत ही, दीन्ही छोड़ पतंग ।

खँचलई प्रभु बेगही, खेलत बालक संग ॥

इति चपक

बंधु सखा संग लेहिं बुलाई * वन मृगया नित खेलहिं जाई ॥
 पावन मृग मारहिं जिय जानी * दिन प्रति नृपहिं देखावहिं आनी ॥

जे मृग रामवान के मारे * ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥
 अनुज सखा संग भोजन करहीं * मातु पिता अज्ञा अनुमरहीं ॥
 जेहि विधि सुखी होहिं पुरलोगा * करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ॥
 वेद पुरान सुनहिं मन लाई * आपु कहहिं अनुजन्ह ममुझाई ॥
 प्रातकाल उठि कै रघुनाथा * मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
 आयसु माँगि करहिं पुरकाजा * देखि चरित हरपै मन राजा ॥

दोहा--व्यापक अकल अनीह अज, निर्गुन नाम न रूप ।

भगत-हेतु नाना विधि, करत चरित्र अनूप ॥२८५॥

यह सब चरित कहा मैं गाई * आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥
 विस्वामित्र महामुनि ज्ञानी * बसहिं विपिन सुभ आसम जानी ॥
 जहँ जप जज्ञ जोग मुनि करहीं * अति मारीच मुवाहुहि डरहीं ॥
 देखत जज्ञ निसाचर धावहिं * करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥
 गाधि-तनय-मन चिंता व्यापी * हरि विनु मरिहिन निमिचर पापी ॥
 तव मुनिवर मन कीन्ह विचारा * प्रभु अवतरेंउ हरन महिभारा ॥
 एहू मिस देखें पद जाई * करि बिनती आनैं दोउ भाई ॥
 ज्ञान-विराग-सकल-गुन-अयना * सो प्रभु में देखव भरि नयना ॥
 दोहा--बहु विधि करत मनोरथ, जात लागि नहिं वार ।

करि मज्जन सरजूजल, गए भूप दरवार ॥२८६॥

मुनि आगमन सुना जब राजा * मिलन गएउ ले विप्र समाजा ॥
 करि दंडवत मुनिहिं सनमानी * निज आसन वैठारेंहि आनी ॥
 चरन पखारि कीन्ह अति पूजा * मो सम आजु धन्य नहिं दृजा ॥
 विविध भाँति भोजन करवावा * मुनिवर हृदय हरप अति पावा ॥
 पुनि चरनन्हि मले सुत चारी * राम देखि मुनि देह विमारी ॥
 भये मगन देखत मुख सोभा * जनु चकोर प्रगनसगि लोभा ॥
 तव मन हरषि वचन कह राऊ * मुनि अस कृपा न कीन्हहु काऊ ॥
 केहि कारन आगमन तुम्हारा * कहहु सो करत न लावै वारा ॥
 असुरसमूह सतावहिं मोही * मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥
 अनुजसमेत देहु रघुनाथा * निशि-चर-वध में होव सनाथा ॥

दोहा--देहु भूप मन हरपित, तजहु माह अज्ञान ।

धर्म सुजस प्रभु तुम कहँ, इन्ह कहँ अति कल्याण ॥२०७॥

मुनि राजा अति अप्रिय वानी * हृदय कंप मुखदुति कुम्हिलानी ॥

चौथेपन पायउं सुत चारी * विप्र वचन नहि कहेहु विचारी ॥

मांगहु भूमि धेनु धन कोसा * मरवम देउं आजु सह रोसा ॥

देह प्रानतें प्रिय कळु नाहीं * मोउ मुनि देउं निमिष एक माहीं ॥

मव सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाई * राम देत नहिं बनै गुमाई ॥

कहँ निमिचर अति घोर कठोरा * कहँ भुंदर सुत परम किमोरा ॥

मुनि नृपगिरा प्रेम-रस-सानी * हृदय हरप माना मुनि ज्ञानी ॥

तव वमिष्ठ बहु विधि समुझावा * नृप संदेह नास कहँ पावा ॥

अति आदर दोउ तनय बुलायं * हृदय लाइ बहुभाँति सिखाये ॥

मेरे प्राननाथ सुत दोऊ * तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥

दोहा--सौंपे भूप रिपिहि सुत, बहुविधि देइ असीस ।

जननी भवन गए प्रभु, चले नाइ पद सीस ॥

सोरठा--पुरुषसिंह दोउ वीर, हरषि चले मुनि भय हरन ।

कृपासिंधु मतिधोर अखिल विस्व कारन करन ॥२०८॥

अरुन नयन उर बाहु विशाला * नीलजलज तनु स्याम तमाला ॥

कटि पट पीत कमर वर भाथा * रुचिर-चाप-सायक दुहुं हाथा ॥

स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई * विश्वामित्र महानिधि पाई ॥

प्रभु ब्रह्मन्य देव में जाना * मोहि निति पिता तजेउ भगवाना ॥

चले जात मुनि दीन्हि देखाई * सुनि ताड़का क्रोध करि धाई ॥

एकहि वान प्रान हरि लीन्हा * दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥

तव रिपि निज नाथहि जिय चीन्ही * विद्यानिधि कहँ विद्या दीन्हीं ॥

जातें लागि न छुधा पिपासा * अतुलित बल तन तेज प्रकासा ॥

दोहा--आयुध सर्व समर्पि के प्रभु निज आश्रम आनि ।

कंद मूल फल भोजन दीन्हि भगति हित जानि ॥२०९॥

प्रात कहा मुनि सन खुराई * निर्भय जज्ञ करहु तुम्ह जाई ॥

होम करन लागे मुनिभारी * आपु रहे मख की रखवारी ॥
 सुनि मारीच निसाचर कोही * लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥
 विनु फर बान राम तेहि मारा * सत जोजन गा सागरपारा ॥
 पावकसर सुवाहु पुनि मारा * अनुज निसाचर कटकु संघारा ॥
 मारि असुर द्विज-निर्भय-कारी * अस्तुति करहिं देव-मुनि-भारी ॥
 तहँ पुनि कळुक दिवस रघुराया * रहे कीन्हि विप्रन्ह पर दाया ॥
 भगति हेतु बहु कथा पुराना * कहे विप्र जद्यपि प्रभु जाना ॥
 तव मुनि सादर कहा बुभाई * चरित एक प्रभु देखिय जाई ॥
 धनुषजज्ञ मुनि रघु-कुल-नाथा * हरषि चले मुनिवर के साथी ॥
 आस्रम एक दीख मग माहीं * खग मृग जीव जंतु कोउ नाहीं ॥
 पूछा मुनिहि मिला प्रभु देखी * सकल कथा मुनि कही विमेश्वरी ॥
 दोहा--गौतम नारि साप वस उपल देह धरि धीर ।

चरन कमल निज चाहति कृपा करहु रघुवीर ॥ २१० ॥

छंद--परसत पदपावन सोकनसावन प्रगट भई तपपुत्र सही ।
 देखत रघुनायक जन-सुख-दायक सनमुख होइ कर जोरि रही ॥
 अति प्रेमु अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवै वचन कही ।
 अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगुल नयन जलधारवही ॥
 धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपतिकृपा भगति पाई ।
 अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ॥
 मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावनरिपु जन-सुख-दाई ।
 राजीवविलोचन भव-भय-मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई ॥
 मुनि साप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
 देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहै लाभ संकर जाना ॥
 बिनती प्रभु मोरी मैं मतिभोरी नाथ न मांगों वर आना ।
 पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥
 जेहि पद सुरमरिता परमपुनीता प्रगट भई सिव सीम धरी ।
 सोई पदपंकज जेहि पूजत अज मम मिर धरेउ कृपाल हरी ॥

एहि भाँति मिथारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी ।
जो अति मन भावा सो बर पावा गै पतिलोक अनंद भरी ॥

दोहा--अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारन रहित दयाल ।
तुलसिदास सठ ताहि भजू, छाड़ि कपट जंजाल ॥२११॥
चले राम लक्ष्मिन मुनि संगे * गए जहाँ जगपावनि गंगा ॥

अथ नृपक

अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रणामा * बहु प्रकार मुख पायउ रामा ॥
पुनि सुरमरि उत्पति रघुराई * कौशिक सन पूछा मिर नाई ॥
कह मुनि प्रभु तब कुल इकराजा * नाम सगर तिहुँ लोक विराजा ॥
तिहिके युग भामिनि सुकुमारी * केशिनिज्येष्ठ सुमति लघु प्यारी ॥
सब प्रकार संपति गुण भ्राजा * सुत विहीन मन विस्मय राजा ॥
एक समय भामिनि दोउ साथी * गये वन तनय हेतु रघुनाथा ॥
सवन सुफल तरु सुन्दर नाना * तहँ भृगु मुनि तपतेज निधाना ॥
दोहा--सहित नारि नृप मुदित मन, रहे वर्ष शत एक ।

कीन्हे तप बल देखि भृगु, अस्तुति कीन्ह अनेक ॥

कहि निज दुख प्रणाम नृप कीन्हा * दै अशीश तव मुनिवर दीन्हा ॥
नृप नारी सन पुनि अस भाषा * लेहु सो बर जो जेहि अभिलाषा ॥
मुनि मुनि वचन शीश तिन्ह नावा * देहु नाथ तुम कहँ जो भावा ॥
एकहि कहा एक सुत होना * दूसरि महस साठि सुत लोना ॥
हर्षित भयउ सुभग बर पाई * हाथ जोरि चरणनि शिर नाई ॥
सहित भामिनिन्हि अवधहि आयउ * हर्ष सहित कलु दिवस गँवायउ ॥
जानि सुधरि मुनखत सुखदाई * तब केशिनि असमंजस जोई ॥
मुमति प्रसव तुम्हारि इक सोई * भए सुत प्रगट कहे मुनि जाई ॥
घृतघट सुन्दर तुरत मँगाए * ते सब सुतनृप तिन्ह महँ नाए ॥
दोहा--इहिविधि भए सकल सुत, पूजे सब मन काम ।

जाइदिवसनिशिहर्षवश, सुनहुराम घनश्याम ॥

होहिं मुकाल सकल मन चीते * इहिसुख बसत बहुत दिन वीते ॥
सरयू नदी अवध जो अहई * विमल सलिल उत्तर तट बहई ॥

प्रजालोक के बालक नाना * नित उठि तहाँ करें अस्नाना ॥
 असमंजस तहँ तरणी आनी * तिनहिं चढ़ाइ बोरि निजपानी ॥
 भये प्रजा सब परम दुखारी * बालकवध मुनि मुनहु खरारी ॥
 सकल गये जहँ बैठ नृपाला * बोले वचन नाइ पद भाला ॥
 तुम नृप चहहु प्रजा प्रति पाला * सुत तुम्हार भा मवकर काला ॥
 तजव देश तव सुनहु नरेशू * बिना तज नहिं मिटै कलेशू ॥
 दोहा--तव सुत कीन्हे पाप बहु, मारे बालक वृन्द ।

तुमकहँ प्राणसमान यह, सकलप्रजनकहँ मन्द ॥

प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा * सुतहिं देशते वाहर कीन्हा ॥
 तासु तनय जगविदित प्रभाऊ * गुणनिधि अंशुमान तेहि नाऊ ॥
 गये प्रजा सब निज निज धामा * भये बिलोकि मनहिं विश्रामा ॥
 बहुरि नृपति मन कीन्हे विचारा * आइ गयउ पन चौथ हमारा ॥
 द्विज मंत्रिन गुरु सुतहु बुलाये * हिमगिरिविन्ध्यमध्य तव आये ॥
 रुचिर वंदिका एक बनाई * देखत वनै वरनि नहिं जाई ॥
 मख अरम्भ छाड़े तव तुरगा * वेगवन्त जिमि देखिय उरगा ॥
 दोहा--सुरपति सुनिभय दारुणहिं, मनमहँ करि अनुमान ।

आनतुरंग तिन्ह लीन्हेउ, मर्म न काहू जान ॥

राखे आनि कपिल मुनि पाहीं * कोउ न जान काहु गति नाहीं ॥
 जुगवत रहे जे सुभट सयाने * लेत तुरंग तिनहु नहिं जाने ॥
 तिन सब आय कहा नृप पाहीं * महाराज हम कहत डराहीं ॥
 लीन्हे तुरंग को जान न कोई * कहा करिय जो आयसु होई ॥
 सुनत वचन नृप विस्मय पाये * सकल सुतन कहँ तुरत बुलाये ॥
 जाहु तुरंग तुम हेरहु जाई * सकल चले चरणन शिरनाई ॥
 सुमन बाटिका उपवन वागा * मरित कूप बाटिका तड़ागा ॥
 नगर गाँव मुनीश थल नाना * गिरि कन्दर कानन अस्थाना ॥

सोरठा-इहिविधि शोधेउ जाइ, आये सब मिलि भूपपहिं ।

चरणन माथहि नाइ, बोले प्रभु कहँ अश्व नहिं ॥

खोदहु महि सुत फेरि पठाए * चले सकल पूरव दिशि आए ॥

तिनके कर जनु वज्र समाना * योजन भरि खोदहिं बलवाना ॥
 शोधत महि पताल सब आए * दिग्गज देखि सबन शिरनाए ॥
 इहि विधि पुनि दूमर गज देखा * अतिउत्तम गुण विमल विशेषा ॥
 तीमर देखि प्रदक्षिण कीन्हा * पुनि उत्तर दिशि शोधन लीन्हा ॥
 दिग्गज श्वेत देखि सुखपाए * सकलकपिल मुनि पहुँ चलिआए ॥
 दोहा--देखिन आइ तुरंग तब, बाँधा मुनिवर पास ।

बोले वचन सकुद्ध हुइ, भा चह सबकर नास ॥

खोदी महि हम चारिउ कोधा * रे रे दुष्ट बहुत तोहिं शोधा ॥
 मुनत वचन मुनि चितवा जबहीं * भये भस्म क्षणमहँ सब तबहीं ॥
 यहाँ नृपति अंशुमान बुलाए * नहिं आए सुत तिन्हहिं पठाए ॥
 चलेउ नाइ पद शीश कुमारा * विष्णुभक्त दुहुकुल उजियारा ॥
 जहँतहँ निरखि मुनिनके धामा * पूछि खबरी करि दंड प्रणामा ॥
 इहिविधि ग्योजत मग महँ जाता * मिलेउ गरुड़ सुमतीकर भ्राता ॥
 चरण परत तब आशिष दयऊ * जरे सकल जिहिविधि सो कहेऊ ॥
 बहुरि गरुड़ बोले सुनु ताता * मैं तोहिं कहौं सुनो इक वाता ॥
 सोरठा--करु सुत सोइ उपाय, गंगा आवहिं अवनि महँ ।

दरशन ते अघ जाइ, मञ्जन कीन्हे परम हित ॥

षष्टिसहस्र सुत तरिहहिं यहि विधि * गंगा पाइ परम पावनि निधि ॥
 सुनि अम वचन हृदय अति भाये * सहित गरुड़ मुनिवर पहुँ आये ॥
 भूप गरुड़ मुनि चरणन नायउ * पूर्वकथा भूपतिहिं सुनायउ ॥
 आशिष देइ तुरंग मुनि दीन्हा * हर्षित हृदय गवन तब कीन्हा ॥
 नगर समीप गरुड़ पहुँचाई * गयउ भवन तब निज रघुराई ॥
 इहाँ तुरंग लै नृप शिरनाई * षष्टिसहस्र सुत मरण सुनाई ॥
 विस्मय हर्ष विवस नृप भयऊ * कीन्हे यज्ञ दान बहु दयऊ ॥
 बहुविधि नृपति राज तब कीन्हा * प्रजा लोग कहँ अतिमुखदीन्हा ॥
 दोहा--अंशुमान कहँ राज दे, निज मन हरि पद लाग ।

गयउ सरगतपकाज बन, हृदय अधिक अनुराग ॥

तासु तनय दिलीप नृप भयऊ * बन तपहेतु उत्तर दिशि गयऊ ॥

अतिहि अगम तप कीन्ह नृपाला * भए कालवश गये कल्लु काला ॥
 केहि विधि कहूँ दिलीप प्रभुताई * सेवहिं सकल नृपति तिहिं आई ॥
 भागीरथ अस सुत भये जासू * पितु सम नीति अधिक उरतासू ॥
 तिन्हहि बोलि नृप दीन्हेउ राजू * आपु चले उठि तप के काजू ॥
 मनमँह करत पंथ अनुमाना * सुरसरि आव तजौ तनु प्राणा ॥
 इहिविधि करत विचार भुआला * जाइ कीन्ह तप परम विशाला ॥
 सोरठा--करत विचार भुआल, जाइ कीन्ह वन परम तप ।

बीते कछु इक काल, देह तजी कोउ प्रगट नहिं ॥

इहाँ भगीरथ मन अस भयऊ * पितु न आव बहु दिनचलियगयऊ ॥
 काकुत्स्थ नाम तासु सुत रहेऊ * दीन्हा राजनीति बहु कहेऊ ॥
 कहि सब पूर्व कथा सुत पाहाँ * दीन्ह अशीश चलेउ नर नाहाँ ॥
 अतिहि निबिड़ बन तहँ नृप आए * सुरसरि हेतु तपहिं मन लाए ॥
 एक चरण दोउ भुजा उठाए * रवि सम्मुख चितवहिं मन लाए ॥
 देखि उग्र तप विधि चलि आए * बोले नृपसन बचन सुहाए ॥
 चाहहु नृप सु लेहु वरदाना * बोले नृप करि अजहिं प्रणामा ॥
 जो माँगौ सो जानत अहहू * मोसन माँगन प्रभु किमि कहहू ॥
 सोरठा--तदपि कहौ प्रभु देहु, वर शुभ संतति बृद्धकर ।

दूसर करहु सनेहु, गंगा आवहि अवनि पर ॥

एवमस्तु कहि पुनि विधि कहहीं * सुरसरि देउँ राखिको सकहीं ॥
 छूट जाइ पुनि तुरत रसातल * फिरहिं नृपति सुनिय पुनिभूतल ॥
 तेहिते कहूँ इक तोहि उपाहीं * अति दयालु शंकर मनमाहीं ॥
 सोइ सक राखि देवसरि आजू * ताहि जपे सब होइहिं काजू ॥
 असकहि निधि अंतरहित भयऊ * बहुरि भगीरथ शिव तप ठयऊ ॥
 विबुध वर्ष अंगुष्ठ अहारा * बार बार शिव नाम उचारा ॥
 शिव कृपालु प्रगटे तव आई * हाथ जोरि नृप कह शिरनाई ॥
 मैं राखव सुरसरि दै आशा * बहुरि उमापति गै कैलाशा ॥
 दोहा--उहाँ देवसरि शिव बचन, सुनि मन कीन्ह विचार ।

जात रसातल शिव सहित, जात न लावौ बार ॥

अंतर्यामी शिवहिं उपाई * निज शिर जटा मुअगम बनाई ॥
 इहाँ भगीरथ अस्तुति कीन्हा * मुनिमृदु गिरा छाँडि विधि दीन्हा ॥
 छूटत मोर भयउ अति भारी * चकित देव अहि दिग्गज चारी ॥
 मुरसरि पुनि शिव जटा समानी * एक वर्ष तहँ रही भुलानी ॥
 कौतुक देखि सकल मुर हर्ष * कहि जयजयति मुमन तिहि वर्ष ॥
 बहुरि भगीरथ मुमिगण कीन्हा * शिव तब डारि बुन्द इक दीन्हा ॥
 तिहते भई तीन जल धारा * एक गई नभ एक पतारा ॥
 गइ नभ मो भइ अघकर नाशिनि * देवन धरा नाम मंदाकिनि ॥

सोरठा--दुसरी गई पताल, नाम प्रभावति हरन दुख ।

तिसरी गंग विशाल, सुर संतन कहँ करन सुख ॥

आइ भगीरथ तव शिग्नावा * बोली मुरसरि बचन सुहावा ॥
 वेगदंत नृप रथ तें आनू * तुरग मरुत गति जिमि रथ भानू ॥
 तिहिरथ चढ़ि नृप चलु मम आगे * चलिहों में तव पीछे लागे ॥
 मुनि नृप तुरत दिव्य रथ आना * चढ़ेउ हृदय सुमिरत भगवाना ॥
 चली अग्रकरि नृपहिं मुरसरी * देवन मुदित मुमन झर करी ॥
 चलत तेज कलु वरणि न जाई * टूटहिं तरु गिरि शिला सुहाई ॥
 करहिं कुलाहल बहु जिवजाती * कमठनक व्याकुल बहु भाँती ॥
 मज्जन करहिं देवता आई * मुनि गण सिद्ध रहे तहँ आई ॥

सोरठा--तर्पण कर मन लाइ, हर्ष हृदय नहिं जात कहि ।

दरशन ते अघजाइ, तरहिं सकल सुर मुनि कहहिं ॥

करि जो मज्जन तप मनलाई * तिनकी महिमा कहि न सिराई ॥
 स्यंदनपर नृप मोहत कैसे * तेजवन्त रवि देखिय जैसे ॥
 लाँघत शैल सुहावन दंशा * पाछे मुरसरि अग्र नरेशा ॥
 हरिद्वार ममीप जब आई * तीर्थ देखि मुरसरि मन भाई ॥
 तीरथहू मन भा सुख भारी * आदि प्रयाग पहुँचि अघहारी ॥
 तहँ मज्जन कीन्हें दुख जाई * बहुरि देवसरि काशी आई ॥
 मो शिवपुरी सहज मुग्धदाई * वरणि न जाइ मनोहरताई ॥
 औरो तीर्थ विविध विधि जानी * गई तहाँ किमि कहाँ बखानी ॥

मगलोगन कहँ करत सनाथा * जाइ चली इहि विधि रघुनाथा ॥

दोहा--मिली जाइ पुनि उदधि महँ, उदधि हृदय सुखमान ।

लगे कहन भागीरथहिं, तुम सम धन्य न आन ॥

कीन्हों अस जस करहिं न कोई * तप महिमा बल कम नहिं होई ॥

सगर तनय तारे ततकाला * हर्षवंत तब भयो नृपाला ॥

औरो रहे जे कुल महँ कोऊ * तिनके मंग तरे अब मोऊ ॥

सकल सुरन मंग तहाँ विधाता * नृप मन आय कही अति वाता ॥

धन्य भागीरथ जग यश लयऊ * तुम समान नृप और न भयऊ ॥

आपनि मत्य प्रतिज्ञा कियऊ * मंवंत वेद जनन मुख दयऊ ॥

गंगामागर मव कोइ कहहीं * अघ उत्क देवत रवि डरहीं ॥

भागीरथी नाम अस कहहीं * मुनिमुर मिद्धनाग यशलहहीं ॥

अस विधि कहि निज लोकहि धाये * यहाँ भागीरथ अति मुख पाये ॥

छन्द--पाये अमित मुख बहुरि पूजा सुरसरिहि मनलाइके ।

तब दीन्ह आशिष मुदित गंगा नृप गये मुख पाइके ॥

इहि भाँति मुनि गंगाकथा तब रामऋषि चरणन नये ।

कह दामतुलसी रामलपणहिं महामुनि आशिष दये ॥

दोहा--कौशिक आशिष अमियसम, पाय हर्ष रघुनाथ ।

प्रभु सुखपाइ कहा बहुरि, बेगि चलो मुनिनाथ ॥

इति क्षेपक

गाधिमृनु मव कथा सुनाई * जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥

तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाये * विविध दान महिदेवन्ह पाये ॥

हरषि चले मुनि-बृन्द-सहाया * बेगि विदेह नगर नियराया ॥

पुररम्यता राम जब देखी * हरषे अनुज - समेत विमेषी ॥

वापी कूप सरित सर नाना * मल्लिल सुधामम मनिसांपाना ॥

गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा * कूजत कल बहुवरन विहंगा ॥

वरन वरन विक्रमे वनजाता * त्रिविध समीर सदा सुखदाता ॥

दोहा--सुमनबाटिका बाग वन, बिपुल विहंगनिवास ॥

फूलत फलतसुपल्लवत, सोहत पुर चहुँ पास ॥२१२॥

बने न वरनत नगरनिकाई * जहाँ जाइ मन तहें लोभाई ॥
 चारु बजार विचित्र अँवारी * मनिमय विधि जनु स्वकर सवारी ॥
 धनिक बनिक बर धनद समाना * बैठे मकल वस्तु लै नाना ॥
 चौहट सुंदर गली सुहाई * मंतत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥
 मंगलमय मंदिर सब केरें * चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें ॥
 पुर - नर - नारि सुभग सुचि संता * धरममील ज्ञानी गुनवंता ॥
 अति अनूप जहँ जनकनिवामू * विथकहिं विबुध विलोकि विलासू ॥
 होत चकित चित कोट विलोकी * सकल-भुवन-सोभा जनु रोकी ॥
 दोहा--धवलधाम मनि-पुरट-पट, सुघटित नाना भाँति ।

सियनिवास सुंदर सदन, सोभा किमि कहि जाति ॥२१३॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा * भूप भीर नट मागध भाटा ॥
 बनी विमाल बाजि - गज - साला * हय - गय - रथ - संकुल सब काला ॥
 सर सचिव सेनप बहुतेरे * नृपगृहसुरिस सदन सब केरे ॥
 पुर बाहिर सर सरित समीपा * उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा ॥
 देखि अनूप एक अँवराई * सब सुपाम सब भाँति सुहाई ॥
 कौसिक कहेउ मोर मनु माना * इहाँ रहिअ रघुवीर सुजाना ॥
 भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता * उतरे तहँ मुनि - बृंद - समेता ॥
 विस्वामित्र महामुनि आए * समाचार मिथिलापति पाए ॥
 दोहा--संग सचिव सुचि भूरिभट, भूसुर वर गुरु ज्ञाति ।

चले मिलन मुनिनायकहि, मुदित राउ एहि भाँति ॥२१४॥

कीन्ह प्रनाम चरन धरि माथा * दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥
 विप्रबृंद सब सादर बंदे * जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे ॥
 कुसल प्रसन्न कहि वारहिं वारा * विस्वामित्र नृपहिं बैठारा ॥
 तेहि अवसर आए दोउ भाई * गए रहे देखन फुलवाई ॥
 स्याम गौर मृदु वयस किसोरा * लोचन सुखद विस्व-चित-चोरा ॥
 उठे सकल जब रघुपति आए * विस्वामित्र निकट बैठाए ॥
 भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता * वारि विलोचन पुलकित गाता ॥

मूरति मधुर मनोहर देखी * भयउ विदेहु विदेहु विसेखी ॥
दोहा--प्रेममगन मन जानि नृपु, करि विवेकु धरि धीर ।

बोलेउ मुनिपद नाइ सिरु, गदगद गिरा गँभीर ॥२१५॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक * मुनि-कुल-तिलक कि नृप-कुल-पालक ॥

ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा * उभय वेष धरि की सोइ आवा ॥

सहज विरागरूप मन मोरा * थकित होत जिमि चंदचकोरा ॥

तातें प्रभु पूछौं सतिभाऊ * कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥

इन्हहिं बिलोकत अति अनुरागा * बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥

कह मुनि बिहँसि कहेहु नृप नीका * बचन तुम्हार न होइ अलीका ॥

ये प्रिय सबहि जहाँ लगि प्राणी * मन मुसुकाहिं राम मुनि बानी ॥

रघुकुल-मनि दमरथ के जाए * मम हित लागि नरेस पठाए ॥

दोहा--राम लखन दोउ बंधु बर, रूप - सील - बल - धाम ।

मख राखेउ सब साखि जगु, जिते असुर संग्राम ॥२१६॥

मुनि तव चरन देखि कह राऊ * कहि न मकौं निज पुन्यप्रभाऊ ॥

सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता * आनन्दहू के आनन्ददाता ॥

इन्ह कै प्रीति परस्पर पावनि * कहि न जाइ मन भाव मुहावनि ॥

सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू * ब्रह्म जीव इव सहज मनहू ॥

पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू * पुलक गान उर अधिक उच्चाहू ॥

मुनिहि प्रसंमि नाइ पद सीसू * चलेउ लिवाइ नगर अवनामू ॥

सुंदर सदन सुखद सब काला * तहाँ वाम ले दीन्ह भुआला ॥

करि पूजा सब बिधि सेवकाई * गयेउ राउ गृह विदा कराई ॥

दोहा--रिषय संग रघु-वंस-मनि, करि भोजन विश्रामु ।

बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवस रहा भरि जामु ॥२१७॥

लपनहृदय लालसा विसेखी * जाइ जनकपुर आइय देखी ॥

प्रभुभय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं * प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥

राम अनुजमन की गति जानी * भगतवद्वलता हिय हुलमानी ॥

परमबिनीत सकुचि मुसुकाई * बोले गुरुअनुमामन पाई ॥

नाथ लपन पुर देपन चहहीं * प्रभुमकोच डर प्रगट न कहहीं ॥

जौं राउर आयमु में पावउँ * नगर देखाइ तुरत लै आवउ ॥
 मुनि मुनीम कह बचन सप्रीती * कम न राम तुम्ह राखहु नीती ॥
 धरम-मेतु-पालक तुम्ह ताता * प्रेमविवस संवक-सुख-दाता ॥
 दोहा--जाइ देखि आवहु नगर, सुखनिधान दोउ भाइ ।

करहु सुफल सब के नयन, सुन्दर बदन देखाइ ॥ २१८ ॥

मुनि-पद-कमल-बंदि दोउ भ्राता * चले लोक-लोचन-सुख-दाता ॥
 बालकबृंद देखि अति मोभा * लगे मंग लोचन मनु लोभा ॥
 पीतवसन परिकर कटि भाथा * चारु चाप सर सोहत हाथा ॥
 तन अनुहरत सुचन्दन खोरी * स्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
 केहरिकंधर बाहु विमाला * उर अति रुचिर नाग-मनि-माला ॥
 सुभग मोन सरसी-रुह-लोचन * बदन मयंक ताप-त्रय-मोचन ॥
 कानन्हि कनकफूल छविदेहीं * चितवत चितहिं चोरि जनु लेहीं ॥
 चितवनि चारु भृकुटि वर बाँकी * तिलक-रेख-मोभा जनु चाकी ॥
 दोहा--रुचिर चौतनी सुभग सिर, मेचक कुंचित केस ।

नख-सिख-सुंदर बंधु दोउ, सोभा सकल सुदेस ॥ २१९ ॥

देखन नगर भूपसुत आए * ममाचार पुरवासिन्ह पाए ॥
 धाए धाम काम सब त्यागी * मनहुँ रंक निधि लूटन लागी ॥
 निरखि सहज मुन्दर दोउ भाई * होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥
 जुवती भवनझरोखन्हि लागीं * निरखहिं रामरूप अनुरागीं ॥
 कहहिं परस्पर बचन सप्रीती * सखि इन्ह कोटि-काम-छवि जीती ॥
 सुर नर असुर नाग मुनि माहीं * सोभा असि कहुँ सुनियत नाहीं ॥
 विष्णु चारि भुज विधि मुख चारी * विकटवेख मुख पंच पुरारी ॥
 अपर देव अस कोउ न आही * यह छवि सखी पटतरिय जाही ॥

दोहा--बयकिसोर सुखमासदन, स्यामगौर सुखधाम ।

अंग अंग पर वारिअहि, कोटि कोटिसत काम ॥ २२० ॥

कहहु सखी अस को तनु धारी * जो न मोह अस रूप निहारी ॥
 कोउ सप्रेम बोली मृदुवानी * जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥
 ए दोऊ दसरथ के दोटा * बालमरालन्हि के कल जोटा ॥

मुनि-कौसिक-मख के रखवारे * जिन्ह रनञ्जिर निसाचर मारे ॥
 स्यामगात कल कंजविलोचन * जो मारीच-सुभुज-मद-मोचन ॥
 कौसल्यासुत सो सुखवानी * नामु रामु धनुमायक पानी ॥
 गौर किसोर वेष वर काञ्चे * कर सर चाप राम के पाञ्चे ॥
 लक्ष्मणु नामु राम-लघु-भ्राता * मुनु सखि तामु सुमित्रा माता ॥
 दोहा--विप्रकाजु करि बंधु दोउ, मग मुनिबधु उधारि ॥

आए देखन चापमख, सुनि हरपीं सब नारी ॥२२१॥

देखि रामञ्जवि कोउ एक कहई * जोगु जानकिहि यह बरु अहई ॥
 जो सखि इन्हहि देख नरनाहू * पन परिहरि हठि करै विवाहू ॥
 कोउ कह ए भूपति पहिचान * मुनिसमेत सादर मनमान ॥
 सखि परंतु पन राउ न तजई * विधिवस हठि अविवेकहि भजई ॥
 कोउ कह जौ भल अहइ विधाता * सब कहँ सुनिय उचित-फल-दाता ॥
 तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू * नाहिं न आलि इहाँ संदेहू ॥
 जौ विधिवस अस वनै मँजोगू * तौ कृतकृत्य होहिं मव लोगू ॥
 सखि हमरे आरति अति ताते * कबहुँक ए आवहिं एहि नाते ॥
 दोहा--नाहिं त हम कहँ सुनहु सखि, इन्ह कर दरसन दूरि ॥

यह संघट तब होइ जब, पुन्य पुराकृत भूरि ॥२२२॥

वोली अपर कहेहु सखि नीका * एहि विवाह अतिहित मवहीका ॥
 कोउ कह संकरचाप कठोरा * ए स्यामल मृदुगात किमोग ॥
 सब असमंजस अहइ मयानी * यह मुनि अपर कहे मृदुवानी ॥
 सखि इन्ह कहँ कोउकोउ असकहहीं * बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहां ॥
 परसि जामु पद-पंकज-धूरी * तरी अहिल्या कृत-अघ-भूरी ॥
 सो कि रहिहि विनु मिवधनु तोरें * यह प्रतीति परिहरिअ न भोरें ॥
 जेहि विरंचि रचि सीय सवारी * तेहि स्यामल बरु रचेउ विचारी ॥
 तामु वचन सुनि सब हरपानी * ऐमेइ होउ कहहिं मृदुवानी ॥
 दोहा--हिय हरपहिं बरपहिं सुमन, सुमुखि-सुलोचनि-चंद्र ॥

जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ, तहँ तहँ परमानंद ॥२२३॥

पुर पूरव दिसिगे दोउ भाई * जहँ धनु-मख-हित भूमि बनाई ॥

अतिविस्तार चारु गच ढारी * विमलवेदिका रुचिर सर्वाँरी ॥
 चहुँ दिमि कंचनमंच विमाला * रच जहाँ बैठहिं महिपाला ॥
 तेहि पाछे ममीप चहुँ पामा * अपर मंचमंडली विलासा ॥
 कलुक ऊँचि सब भाँति सुहाई * बैठहिं नगर लोग जहँ जाई ॥
 तिन्हके निकट विमाल सुहाए * धवलधाम बहुवरन बनाए ॥
 जहँ बैठे देखहिं सब नारी * जथाजोग निजकुल अनुहारी ॥
 पुर बालक कहि कहि मृदुवचना * सादर प्रभुहि देखावहिं रचना ॥
 दोहा--सब सिसु एहि मिस प्रेमवस, परसि मनोहर गात ॥

तन पुलकहिं अति हरप हिय, देखि दोख दोउ भ्रात ॥२२४॥

सिसु सब राम प्रेमवस जाने * प्रीतिममेत निकेत बखाने ॥
 निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई * सहित सनेह जाइं दोउ भाई ॥
 रामु देखावहिं अनुजहि रचना * कहि मृदु मधुर मनोहर वचना ॥
 लवनिमेष महुँ भुवननिकाया * रचै जासु अनुसासन माया ॥
 भगति हेतु सोइ दीन-दयाला * चितवत चकित धनुष-मख-साला ॥
 कौतुकु देखि चले गुरु पाहीं * जानि बिलंबु त्राम मन माहीं ॥
 जासु त्राम डर कहँ डर होई * भजनप्रभाउ देखावत सोई ॥
 कहि बातें मृदु मधुर सुहाई * किए बिदा बालक बरिआई ॥
 दोहा--सभय सप्रेम विनीत अति-सकुच-सहित दोउ भाइ ॥

गुरु-पद-पंकज नाइ सिर, बैठे आयसु पाइ ॥२२५॥

निमिप्रवेस मुनि आयसु दीन्हा * सबही संध्याबंदन कीन्हा ॥
 कहत कथा इतिहास पुरानी * रुचिर रजनि जुगजाम सिरानी ॥
 मुनिवर सयन कीन्ह तब जाई * लगे चरन चाँपन दोउ भाई ॥
 जिन्हके चरनसरोरुह लागी * करत विविध जप जोग विरागी ॥
 तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते * गुरु-पद-कमल पलोटत प्रीते ॥
 बार बार मुनि आज्ञा दीन्ही * रघुवर जाइ सयन तब कीन्ही ॥
 चाँपत चरन लषन उर लायें * सभय सप्रेम परम सचुपायें ॥
 पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता * पौढ़े धरि उर पदजलजाता ॥
 दोहा--उठे लषन निसि बिगत सुनि, अरुन-सिखा-धुनि कान ॥

गुरु तें पहिलेहि जगतपति, जागे राम सुजान ॥२२६॥

सकल सौच करि जाइ नहाए * नित्य निवाहि मुनिहि सिर नाए ॥
 समय जानि गुरुआयसु पाई * लेन प्रमून चले दोउ भाई ॥
 भूपवागु बर देखेउ जाई * जहँ बमन्तरितु रही लोभाई ॥
 लागे बिटप मनोहर नाना * बरन बरन बर बेलिबिताना ॥
 नव पल्लव फल सुमन सुहाए * निज सम्पति सुररुख लजाए ॥
 चातक कोकिल कीर चकोरा * कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥
 मध्य बाग सर सोह सुहावा * मनिसोपान विचित्र बनावा ॥
 विमलसलिल सरसिज बहुरङ्गा * जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥
 दोहा--बागुतडागु विलोकि प्रभु, हरषे बन्धु समेत ।

परमरभ्य आराम यह, जो रामहिं सुख देत ॥२२७॥

चहुँ दिसि चितइ पूछि मालीगन * लगे लेन दल फूल मुदितमन ॥
 तेहि अवसर सीता तहँ आई * गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥
 संग सखी सब सुभग सयानी * गावहिं गीत मनोहर बानी ॥
 सर समीप गिरिजागृह सोहा * बरनि न जाइ देखि मन मोहा ॥
 मज्जन करि सर सखिन्ह समेता * गई मुदितमन गौरिनिकेता ॥
 पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा * निज अनुरूप सुभग बर मांगा ॥
 एक सखी सिय संग विहाई * गई रही देखन फुलवाई ॥
 तेहि दोउ बन्धु विलोके जाई * प्रेमविवम सीता पहिं आई ॥

दोहा--तासु दसा देखी सखिन्ह, पुलक गात जल नयन ।

कहु कारन निजहरष कर, प्रछहिं सब मृदु बयन ॥२२८॥

देखन बागु कुअँर दुइ आए * बयकिसोर सब भाँति सुहाए ॥
 स्याम गौर किमि कहउ बखानी * गिरा अनयन नयन विनु बानी ॥
 सुनि हरषीं सब सखी सयानी * मियहिय अति उत्कंठा जानी ॥
 एक कहइ नृप सुत तेइ आली * मुने जे मुनि सँग आए काली ॥
 जिन्ह निजरूप मोहनी डारी * कीन्हे स्वप्न नगर-नर-नारी ॥
 बरनत छवि जहँ तहँ मव लोगू * अरुमि देखिअहि देखन जोगू ॥
 तासु बचन अति मियहि सुहाने * दरम लागि लोचन अकुलाने ॥

चली अग्र करि प्रिय सखि सोई * प्रीति पुरातनि लखै न कोई ॥
दोहा--सुमरि सीय नारदबचन, उपजी प्रीति पुनीत ।

चकितविलोकतिसकलदिसि, जनु सिसु मृगी सभीत ॥२२६॥

कंकन-किंकिनि-नूपुर-धुनि सुनि * कहत लपन मन राम हृदय गुनि ॥
मानहुँ मदन दुंदुर्भा दीन्ही * मनसा विस्वविजय कहँ कीन्ही ॥
अस कहि फिर चितये तेहि ओरा * मिय-मुख-मसि भये नयन चकोरा ॥
भये विलोचन चारु अचंचल * मनहुँ सकुचि निमि तजे दृगंचल ॥
देखि सीय सोभा मुख पावा * हृदय सराहत बचनु न आवा ॥
जनु विरंचि मव निजनिपुनाई * विरचि विस्व कहँ प्रगटि देख्यै ॥
सुंदरता कहँ सुन्दर करई * छविग्रह दीपमिखा जनु बरई ॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी * केहि पटतरौं विदेहकुमारी ॥
दोहा--सियसोभाहिय बरनि प्रभु, आपनि दसा विचारि ।

बोले सुचि मन अनुज सन, बचन समय अनुहारि ॥२३०॥

तात जनकतनया यह सोई * धनुपजज्ञ जेहि कारन होई ॥
पूजन गौरि सखी लै आई * करत प्रकास फिरइ फुलवाई ॥
जासु विलोकि अलौकिक सोभा * सहज पुनीत मोर मन छोभा ॥
सो मव कारन जान विधाता * फरकहि सुभग अंग सुनु भ्राता ॥
रघुवंसिन्ह कर सहज सुभाऊ * मनु कुपंथ पगु धरें न काऊ ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी * जेहि सपनेहु परनारि न हेरी ॥
जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी * नहिं लावहिं परतिय मन डीठी ॥
मंगल लहहिं न जिन्ह कै नाहीं * ते नरवर थोरे जग माहीं ॥
दोहा--करत बतकही अनुज सन, मन सियरूप लुभान ।

गख-सरोज-मकरंद-छवि, करै मधुप इव पान ॥२३१॥

चितवति चकित चहुँ दिसि सीता * कहँ गये नृपकिशोर मन चिंता ॥
जहँ विलोकि मृग-सावक-नयनी * जनु तहँ बरिस कमल-सीत सेनी ॥
लता अोट तव सखिन लखाए * स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥
देखि रूप लोचन ललचाने * हरपे जनु निजनिधि पहिचाने ॥
थके नयन रघु-पति-छवि देखे * पलकन्हिहू परिहरीं निमेखे ॥

अधिक सनेह देह भइ भोरी * सरदसमिहि जनु चितव चकोरी ॥
लोचनमग रामहिं उर आनी * दिन्हे पलककपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन्ह प्रेमवस जानीं * कहिन सकहिं कळु मन सकुचानीं ॥
दोहा--लताभवनतें प्रगट भये, तेहि अवसर दोउ भाइ ॥

निकसे जनु जुग विमलविधु, जलदपटल विलगाइ ॥२३२॥

सोभासीवँ सुभग दोउ वीरा * नील-पीत जलजाम - मरीरा ॥
मोरपंख सिर सोहत नीके * गुच्छा विच विच कुमुमकली के ॥
भाल तिलक स्रमविंदु मुहाये * सवन सुभग भूपन छवि छाये ॥
विकट भृकुटि कच घँघरवारे * नवसरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला * हासविलाम लेत मन मोला ॥
मुखछवि कहिन जाइ मोहि पाहीं * जो विलोकि बहु काम लजाहीं ॥
उर मनिमाल कंबुकल ग्रीवाँ * काम-कलभ-कर भुज बलसीवाँ ॥
गुमनसमेत वामकर दोना * साँवर कुअँर सखी मुठि लोना ॥

दोहा--केहरिकटि पट पीत धर, सुखमा-सील-निधान ।

देखि भानु-कुल-भूपनहि, विसरा सखिन्ह अपान ॥२३३॥

धरि धीरजु एक आलि सयानी * सीता सन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू * भूपकिसोर देखि किन लेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उधारे * मनमुख दोउ रघुसिंह निहारे ॥
नखसिख देखि राम कै सोभा * मुमिरि पितापनु मन अति छोभा ॥
पगवस सखिन्ह लखी जब सीता * भयं गहरु मव कहहिं मर्माता ॥
पुनि आउव एहि विरियाँ काली * अम कहि मन विहँगी एक आली ॥
गूढ गिरा मुनि मिय सकुचानी * भएउ विलंब मातुभय मानी ॥
धरि वडि धीर राम उर आने * फिरि आपनपउ पितुवम जाने ॥

दोहा--देखन मिस मृग विहँग तरु, फिरइ बहोरि बहोरि ।

निरखि निरखि रघुवीरछवि, वाढैं प्रीति न थोरि ॥२३४॥

जानि कठिन सिवचाप विसरति * चली राखि उर स्यामल भूरति ॥
प्रभु जब जात जानकी जानी * सुख मनह सोभा गुन खानी ॥
परम-प्रेम-मय मृदुमसि कीन्ही * चारु चित्त भीती लिखि लीन्ही ॥

गई भवानी भवन बहोरी * बंदि चरन बोली करजोरी ॥
 जय जय गिर-वर-राज-किमोरी * जय महेस-मुख-चंद-चकोरी ॥
 जय गज-बदन-पडानन-माता * जगतजननि दामिनि-दुति-गाता ॥
 नहिं तव आदि अन्त अवसाना * अमितप्रभाउ बेद नहिं जाना ॥
 भव-भव- बिभव- पराभव- कारिनि * बिस्व बिमोहिनि स्व-बस-बिहारिनि ॥
 दोहा--पतिदेवता सुतीय महुँ, मातु प्रथम तब रेख ।

महिमा अमित न सकहिं कहि, सहस सारदा सेख ॥२३५॥
 सेवत तोहि सुलभ फल चारी * वरदायिनी त्रिपुरारि पियारी ॥
 देवि पूजि पदकमल तुम्हारे * सुर नरमुनि सब होहिं सुखारे ॥
 मोर मनोरथ जानहु नीके * बसहु सदा उरपुर सबही के ॥
 कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेही * अस कहि चरन गहे बैदेही ॥
 बिनय-प्रेम-बस भई भवानी * खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
 सादर सियप्रसाद सिर धरेऊ * बोली गौरि हरषु उर भरेऊ ॥
 सुनु सिय सत्य असीस हमारी * पूजहि मनकामना तुम्हारी ॥
 नारदवचन सदा सुचि साँचा * सो वर मिलिहि जाहि मन राँचा ॥
 छंद-मन जाहि राँचेउ मिलिहि सो वर सहज सुंदर साँवरो ।
 करुनानिधान सुजान सीलसनेहु जानत रावरो ॥
 एहि भाँति गौरि असीस सुनि सियसहित हिय हर्षित अली ।
 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदितमन मंदिर चली ॥
 सोरठा--जानि गौरि अनुकूल, सिय-हिय-हरष न जात कहि ।

मंजुल-मंगल-मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥२३६॥

हृदय सराहत सीय लोनाई * गुरुसमीप गवने दोउ भाई ॥
 राम कहा सब कौसिक पाहीं * सरल सुभाव छुआ छल नाहीं ॥
 सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही * पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥
 सुफल मनोरथ होहिं तुम्हारे * राम लषन सुनि भये सुखारे ॥
 करि भोजन मुनिवर बिज्ञानी * लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
 विगतदिवस गुरु आयसु पाई * संध्या करन चले दोउ भाई ॥
 प्राचीदिसि ससि उयेउ सुहावा * सिय-मुख-सरिस देखि सुख पावा ॥

बहुरि विचार कीन्ह मन माहीं * सीय-वदन-सम हिमकर नाहीं ॥
दो०--जनम सिंधु पुनि बंधु विष, दिन मलीन सकलंकु ।

सिय-मुख समता पाव किमि, चंद्र वापुरो रंकु ॥ २३७ ॥

घटै बढै विरहिनि-दुख-दाई * प्रसै राहु निज संधिहि पाई ॥
कोक-सोक-प्रद पंकजद्रोही * अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥
बैदेही-मुख-पटतर दीन्हे * होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे ॥
सिय-मुख-अबि विधुव्याज बखानी * गुरु पहिं चले निसा बड़ि जानी ॥
करि मुनि-चरन-सरोज प्रनामा * आयसु पाइ कीन्ह विषामा ॥
विगतनिसा रघुनायक जागे * बंधु विलोकि कहन अम लागे ॥
उयेउ अरुन अवलोकहु ताता * पंकज - लोक - कोक - मुख-दाता ॥
बोले लषन जोरि जुग पानी * प्रभु-प्रभाव-सूचक मृदुबानी ॥
दो०--अरुनउदय सकुचे कुमुद, उडु-गन-जोति मलीन ।

तिमि तुम्हार आगमन सुनि, भये नृपति बलहीन ॥ २३८ ॥

नृप सब नखत करहिं उँजियारी * टारि न सकहिं चापतम भारी ॥
कमल कोक मधुकर खग नाना * हरपे सकल निसा अवसाना ॥
ऐसेहि प्रभु सब भगत तुम्हारे * होइहहिं दूटे धनुष सुखारे ॥
उयेउ भानु विन स्रम तम नासा * दुरे नखत जग तेज प्रकासा ॥
रवि निज-उदय-व्याज रघुराया * प्रभुप्रताप सब नृपन्ह दिखाया ॥
तव भुज-बल-महिमा उदघाटी * प्रगटी धनु विघटनपरिपाटी ॥
बंधुवचन सुनि प्रभु मुसुकाने * होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥
नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आये * चरनमरोज सुभग मिर नाये ॥
सतानंद तव जनक बोलाये * कौसिक मुनि पहिं तुरत पठाये ॥
जनकबिनय तिन्ह आनि सुनाई * हरपे बोलि लिये दोउ भाई ॥
दोहा--सतानंदपद बंदि प्रभु, बैठे गुरु पहिं जाइ ॥

चलहु तात मुनि कहेउ तव, पठवा जनक बोलाइ ॥ २३९ ॥

सीयस्वयंबर देखिअ जाई * ईस काहि धों देइ बड़ाई ॥
लषन कहा जसभाजन सोई * नाथ कृपा तव जा पर होई ॥
हरपे मुनि सब सुनि बरवानी * दीन्ह अमीस सवहि सुखु मानी ॥

पुनि मुनि-वृन्द-समेत कृपाला * देखन चले धनुष-मुख-साला ॥
 रंगभूमि आये दोउ भाई * अमि सुधि सब पुरवासिन्ह पाई ॥
 चले सकल गृहकाज बिसारी * बाल जुवान जरठ नर नारी ॥
 देखी जनक भीर भइ भारी * सुचि सेवक सब लिये हँकारी ॥
 तुरत सकल लोगन्ह पहि जाहू * आमन उचित देहु सब काहू ॥
 दोहा--कहि मृदुबचन विनीत तिन्ह, बैठारे नर नारि ।

उत्तम मध्यम नीच लघु, निज निज थल अनुहारि ॥२४०॥

राजकुअँर तेहि अवसर आये * मनहुँ मनोहरता तन छाये ॥
 गुनसागर नागर वरवीरा * सुंदर स्यामल - गौर - सरीरा ॥
 राजसमाज विराजत रुरे * उडुगन महुँ जनु जुग विधु पूरे ॥
 जिन्ह कै रही भावना जैसी * प्रभुमूरति तिन्ह देखी तैसी ॥
 देखहि भूप महा रनधीरा * मनहुँ वीररस धरे सरीरा ॥
 डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी * मनहुँ भयानकमूरति भारी ॥
 रहे अमुर बल छोनिप बेखा * तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥
 पुरवासिन्ह देखे दोउ भाई * नरभूषन लोचन - मुख - दाई ॥
 दोहा--नारि विलोकहिं हरपि हिय, निज-निज-रुचि अनुरूप ।

जनु सोहत श्रृंगार धरि, मूरति परम अनूप ॥२४१॥

विदुषन्ह प्रभु विराटमय दीसा * बहु-मुख-कर-पग-लोचन-सीसा ॥
 जनकजाति अवलोकहिं कैमे * सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे ॥
 सहित बिदेह बिलोकहिं रानी * भिसुमम प्रीति न जाइ बखानी ॥
 जोगिन्ह परम-तत्त्व-मय भामा * सांत-सुद्ध-सम सहज प्रकासा ॥
 हरिभगतन देखे दोउ भ्राता * इष्टदेव इव सब-सुख-दाता ॥
 रामहिं चितव भाव जेहि मीया * सो सनेह मुख नहिं कथनीया ॥
 उर अनुभवति न कहि सक सोऊ * कवन प्रकार कहइ कवि कोऊ ॥
 जेहि विधि रहा जाहि जस भाऊ * तेहि तस देखेउ कोसलराऊ ॥
 दोहा--राजत राजसमाज महँ, कोसल - राज - किसोर ।
 सुन्दर-स्यामल-गौर-तनु, बिस्व-बिलोचन - चोर ॥२४२॥
 सहज मनोहरमूरति दोउ * कोटि-काम-उपमा लघु सोउ ॥

सरद-चंद्र-निंदक मुख नीके * नीरजनयन भावते जी के ॥
 चितवनि चारु मार-मद-हरनी * भावत हृदय जात नहिँ वरनी ॥
 कलकपोल सुतिकुण्डल लोला * चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला ॥
 कुमुद-बंधु-कर-निंदक हासा * भृकुटी विकट मनोहर नासा ॥
 भालविमाल तिलक झलकाहीं * कच विलोकि अलिअवलि लजाहीं ॥
 पीत चैतनी सिरन्ह सुहाई * कुमुमकली विच बीच बनाई ॥
 रेखा रुचिर कंबु कलश्रीवाँ * जनु त्रिभुवन सोभा की सीवाँ ॥
 दोहा--कुंजर-मनि-कंठाकलित, उरन्हि तुलसिकामाल ।

वृषभकंध केहरिठवनि, बलर्नाधि बाहु विसाल ॥२४३॥

कटि तूनीर पीन पट वाँधे * कर सर धनुष वाम वर काँधे ॥
 पीत-जग्ग-उपवीत सोहाये * नखसिख मंजु महा अवि अयाये ॥
 देखि लोग सब भये सुखारे * एक टक लोचन चलत न तारे ॥
 हरपे जनक देखि दोउ भाई * मुनि-पद-कमल गहे तव जाई ॥
 करि विनती निजकथा सुनाई * रंगअवनि सब मुनिहि देखाई ॥
 जहँ जहँ जाहिँ कुअँरवर दोऊ * तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ ॥
 निज निज रुख रामहिँसब देखा * कोउ न जान कलु मरम विमेखा ॥
 भलि रचना मुनि नृप मन कहेऊ * राजा मुदित महामुख लहेऊ ॥
 दोहा--सब मंचन्ह तें मंच एक, सुंदर विसद विसाल ।

मुनिसमेत दोउ बंधु तहँ, बैठारे महिपाल ॥२४४॥

प्रभुहि देखि सब नृप हिय हारे * जनु राकेम उदय भये तारे ॥
 अस प्रतीति सबके मन माहीं * राम चाप तोरव सक नाहीं ॥
 विनु भंजेहु भवधनुष विसाला * मेलिहि सीय रामउर माला ॥
 अस विचारि गवनहु घर भाई * जमु प्रतापु बल तेज गवाँई ॥
 विहँसे अपर भूप मुनि वानी * जे अविबेक अंध अभिमानी ॥
 तोरेहु धनुष व्याहु अवागाहा * विनु तोरे को कुअँरि वियाहा ॥
 एक बार कालहु किन होऊ * मियहित ममर जितव हम मोऊ ॥
 यह सुनि अपर भूप मुसुकाने * धरमसील हरिभगत मयाने ॥
 सोरठा--सीय वियाहब राम, गरव दूरि करि नृपन्ह को ।

जीति को सक संग्राम, दसरथ के रनवाँकुरे ॥२४५॥

ब्रथा मरहु जनि गाल बजाई * मनमोदकन्हि कि भूख बुताई ॥
 मिश्र हमारि सुनि परम पुनीता * जगदंबा जानहु जिय सीता ॥
 जगतपिता रघुपतिहि विचारी * भरि लोचन छवि लेहु निहारी ॥
 सुंदर मुखद सकल-गुन-रागी * ए दोउ बंधु संभु-उर-चामी ॥
 सुधाभमुद्र ममीपु विहाई * मृगजल निरखि मरहु कत धाई ॥
 करहु जाइ जा कहु जोइ भावा * हम तौ आजु जनमफलु पावा ॥
 अम कहि भले भूप अनुरागे * रूप अनूप विलोकन लागे ॥
 देखहिं सुर नभ चढ़े विमाना * वरपहिं गुमन करहिं कल गाना ॥
 दोहा--जानि सुअवसर सीय तव, पठई जनक बोलाइ ।

चतुर सखी सुंदर सकल, सादर चलीं लेवाइ । २४६ ॥

सिय मोभा नहिं जाइ वशानी * जगदंबिका रूप-गुन-खानी ॥
 उपमा सकल मोहि लघु लागी * प्राकृत-नारि-अंग-अनुरागी ॥
 सिय वरनिअ तेहि उपमा देई * कुकत्रि कहाइ अजम को लेई ॥
 जौं पट्टरिअ तीय महँ सीया * जग अमि जुवति कहाँ कमनीया ॥
 गिरा मुखर तनुअरध भवानी * रति अतिदुखित अतनुपति जानी ॥
 विष वारुनी बंधु प्रिय जेही * कहिअ रमासम किमि वैदेही ॥
 जौं छवि-सुधा-पयो-निधि होई * परम-रूप-मय कच्छप मोई ॥
 सोभा रजु मंदरु सिंगारू * मथै पानिपंकज निज मारू ॥

दोहा--एहि विधि उपजै लच्छि जब, सुंदरता-सुख-मूल ।

तदपि सकोचसमेत कवि, कहहिं सीय सम तूल ॥२४७॥

चलीं सङ्ग लै मखी सयानी * गावति गीत मनोहर बानी ॥
 सोह नवलतनु सुंदर सारी * जगतजननि अतुलित छवि भारी ॥
 भूपन सकल सुदेस सुहाये * अंग अंग रचि सखिन्ह बनाये ॥
 रंगभूमि जब सिय पगु धारी * देखि रूप मोहे नर नारी ॥
 हरषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई * वरषि प्रमृन अपञ्जरा गाई ॥
 पानिसरोज सोह जयमाला * अवचट चितये सकल भुआला ॥
 सीय चकितचित रामहि चाहा * भये मोहवस मव नरनाहा ॥

मुनिममीप देखे दोउ भाई * लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥
दोहा--गुरु-जन-लाज समाज वड़, देखि सीय सकुचानी ।

लगी विलोकन सखिन्ह तन, खुबीरहि उर आनि ॥२४८॥

रामरूप अरु सियद्वि देखी * नरनारिन्ह परिहरी निमेषी ॥
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं * विधि मन विनय करहिं मन माहीं ॥
हरु विधि वेगि जनकजइताई * मति हमार अमि देहि मुहाई ॥
बिनु विचार पन तजि नरनाहू * मीय राम कर करै वियाहू ॥
जग भल कहिहि भाव मव काहू * हठ कीन्हें अंतहु उर दाहू ॥
एहि लालमा मगन मव लोग * वर साँवरो जानकी जोगू ॥
तव बंदीजन जनक बोलाये * विरदावली कहत चलि आये ॥
कह नृप जाइ कहहु पन मोरा * चले भाट हिय हरप न थोरा ॥

दोहा--बोले बंदी वचनवर, सुनहु सकल महिपाल ।

पन विदेह कर कहहिं हम, भुजा उठाइ विसाल ॥२४९॥

नृप-भुज-बलु-विधु मिवधनु राहू * गरुअ कठोर विदित सब काहू ॥
रावन वान महाभट भारे * देखि मरामन गवहिं मिधार ॥
सोइ पुरारिकोदंड कठोरा * राजममाज आजु जेइ तोरा ॥
त्रि-भुवन-जय-समेत वैदेही * विनहिं विचार वरै हठि तेही ॥
सुनि पन सकल भूप अभिलापे * भट मानी अतिमय मन मापे ॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई * चले इष्टदेवन्ह मिरु नाई ॥
तमकि ताकि तकि मिवधनु धरहीं * उठइ न कोटि भाँति बल करहीं ॥
जिन्ह के कळु विचार मन माहीं * चापममीप महीप न जाहीं ॥
दोहा--तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप, उठै न चलहिं लजाइ ॥

मनहुँ पाइ भट-बाहु-बल, अधिक अधिक गरुआइ ॥२५०॥

भूप सहसदस एकहिं वारा * लगे उठावन टरै न टारा ॥
डगे न संभुमरामन कैमें * कामीवचन मतीमन जेमें ॥
मव नृप भये जोग उपहामी * जेमे विनु विराग संन्यामी ॥
कीरति विजय वीरता भारी * चले चापकर वरवम हारी ॥
श्रीहत भयं हारि हिय राजा * बैठे निज निज जाइ ममाजा ॥

नृपन्ह विलोकि जनक अकुलाने * बोले वचन रोष जनु साने ॥
 दीप दीप के भूपति नाना * आये सुनि हम जो पन ठाना ॥
 देव दनुज धरि मनुजमरीरा * विपुलवीर आये रनधीरा ॥

दोहा--कुअँरि मनोहर विजय बड़ि, कीरति अतिकमनीय ॥

पावनिहार विरंचि जनु, रचेउ न धनुदमनीय ॥२५१॥

कहहु काहि यह लाभु न भावा * काहु न मंकरचाप चढ़ावा ॥
 गहे चढ़ाउव तोख भाई * तिल भरि भूमि न मके छुड़ाई ॥
 अब जनि कोउ माखे भट मानी * वीरविहीन मही में जानी ॥
 तजहु आम निज-निज-गृह जाहु * लिखा न विधि वैदेहिविवाहु ॥
 मुकून जाइ जो पन परिहरऊ * कुअँरि कुअँरि रहउ का करऊ ॥
 जाँ जमतेऊ विनु भट भुवि भाई * तो पन करि होतेऊँ न हँसाई ॥
 जनकवचन सुनि मव नरनारी * देखि जानकिहि भये दुखारी ॥
 माखे लपन कुटिल भई भौँहें * रदपट फरकत नयन रिमौहें ॥

दोहा--कहि न सकत रघु-वीर-डर, लगे वचन जनु वान ।

नाइ राम-पद-कमल सिर, बोले गिरा प्रमान ॥२५२॥

रघुवंसिन्ह महँ जहँ कोउ होई * तेहि समाज अस कहे न कोई ॥
 कही जनक जमि अनुचित वानी * विद्यमान रघु-कुल-मनि जानी ॥
 सुनहु भानु-कुल-पंकज-भानू * कहौ सुभाउ न कछु अभिमानू ॥
 जाँ तुम्हार अनुसासन पावै * कंदुक इव ब्रह्मांड उठावै ॥
 काँचि घट जिमि डारौ फोरी * सकं मेरु मूलक इव तोरी ॥
 तव प्रतापमहिमा भगवाना * का वापुरो पिनाक पुराना ॥
 नाथ जानि अस आयसु होऊ * कौतुक करै विलोकि हम सोऊ ॥
 कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौ * जोजन सत प्रमान लै धावौ ॥

दोहा--तोरौ छत्रकदण्ड जिमि, तव प्रतापवल नाथ ।

जौ न करौ प्रभु-पद-सपथ, कर न धरै धनु भाथ ॥२५३॥

लपन सकोप वचन जब बोले * डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
 सकल लोक सब भूप डेराने * सियहिय हरष जनक सकुचाने ॥
 गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं * मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं ॥

सयनहिं रघुपति लपन निवारे * प्रेमममेत निकट बैठारे ॥
 विस्वामित्र समय सुभ जानी * बोले अति-सनेह-मय बानी ॥
 उठहु राम भंजहु भवचापा * मेटहु तात जनकपरितापा ॥
 मुनि गुरुवचन चरन मिरु नावा * हरष विपाद न कळु उर आवा ॥
 ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये * ठवनि जुवा मृगराज लजाये ॥

दोहा--उदित उदय-गिरि-मंच पर, रघुवर बालपतंग ।

विगसे संतसरोज सब, हरषे लोचनभृंग ॥२५४॥

नृपन्ह केरि आसा निमि नागी * वचन नखतअवली न प्रकामी ॥
 मानो महिष कुमुद सकुचाने * कपटी भूप उलक लुकाने ॥
 भये विसोक कोक मुनि देवा * वरपहिं सुमन जनावहिं मेवा ॥
 गुरुपद वंदि सहित अनुरागा * राम मुनिन्ह सन आयसु मांगा ॥
 सहजहि चले सकल-जग-स्वामी * मत्त-मंजु-वर-कुंजर-गाभी ॥
 चलत राम सब पुर-नर-नारी * पुलक-धूरि-तन भये सुखारी ॥
 वंदि पितर सब सुकृत सँभारे * जौं कळु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥
 तौ सिवधनु मृनाल की नाई * तोरहिं गम गनेम गोमाई ॥

दोहा--रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन्ह समीप बोलाइ ।

सीतामातु सनेहवस, वचन कहे विलखाइ ॥२५५॥

सखि सब कौतुक देखनिहारे * जेउ कहावत हित ह्यारे ॥
 कोउ न बुझाइ कहे नृप पाहीं * ए बालक अमि हठ भल नाहीं ॥
 रावन वान लुआ नहिं चापा * हारे सकल भूप करि दापा ॥
 सो धनु राज-कुअँर-कर देहीं * बालमराल कि मंदर लेहीं ॥
 भूपसयानप सकल मिरानी * मग्नि विधिगति कहिजातिनजानी ॥
 बोली चतुर सुखी मृदु वानी * तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥
 कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा * मोखेउ मुजम सकल मंभाग ॥
 रविमंडल देखत लघु लागा * उदय तामु त्रि-भुवन-तम भागा ॥

दोहा--मंत्र परमलघु जासु वस, विधि हरि हर सुर सब ।

महा-मत्त-गज-राज कहँ, वस कर अंकुस खर्व ॥२५६॥

काम कुसुम-धनु-सायक लीन्हे * सकलभुवन अपने वस कीन्हे ॥

देवि तजिय संमय अम जानी * मंजव धनुष राम सुनु रानी ॥
 सर्वाबचन सुनि भइ परतीती * मिठा विषाद वढी अतिप्रीती ॥
 तव रामहिं विनोकि वेदेही * मभय हृदय विनवति जेहि तेही ॥
 मनहीं मन मनाव अकुलानी * होउ प्रमन्न महेश भवानी ॥
 करहु सुफल आपन सेवकाई * करि हिन हरहु चापगरुआई ॥
 गननायक वरदायक देवा * आजु लगे कीन्हिउँ तव सेवा ॥
 वार वार सुनि विनती मोरी * करहु चापगुरुता अति थोरी ॥
 दोहा--देवि देखि रघु-वीर-तन, सुर मानव धरि धीर ।

भरे विलोचन प्रेमजल, पुलकावली सरीर ॥२५७॥
 नीके निरखि नजन भरि सोभा * पितृपनु सुमिरि बहुरि मन बोभा ॥
 अहह तात दारुनहठ ठानी * ममुञ्जत नहिं कछु लाभ न हानी ॥
 सचिव सभय सिख देइ न कोई * बुधममाज बड़ अनुचित होई ॥
 कहँ धनु कुलिमहु चाहि कठोरा * कहँ स्यामल मृदुगात किमोरा ॥
 विधि केहि भाँति धरें उर धीरा * गिरिम-सुमन-कन बेधिय हीरा ॥
 सकल सभा के मति भइ भोरी * अब मोहि संभु-चाप-गति तोरी ॥
 निजजड़ता लोगन्ह पर डारी * होहु हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
 अतिपरिताप सीयमन माहीं * लवनिमेष जुगमथ सम जाहीं ॥
 दोहा--प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि, राजन लोचत लोल ।

खलत मनसिज-मीन-जुग, जनु विधुमंडल डोल ॥२५८॥
 गिराअलिनि मुखपंजक रोकी * प्रगट न लाजनिमा अवलोकी ॥
 लोचनजल रह लोचनकोना * जैसे परम कृपन कर सोना ॥
 सकुची व्याकुलता वड़ि जानी * धरि धीरज प्रतीति उर आनी ॥
 तन मन बचन मोर पन साँचा * रघु-पति-पद-सरोज चितु राँचा ॥
 तौ भगवान सकल-उर-वासी * करिहहिं मोहि रघुवर कै दासी ॥
 जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू * सो तेहि मिलै न कछु संदेहू ॥
 प्रभुतन चितइ प्रेमपन ठाना * कृपानिधान रामु सब जाना ॥
 सियहि विलोकि तकेउ धनु कैसे * चितव गरुड़ लघुव्यालहि जैसे ॥
 दोहा--लपन लखेउ रघु-वंस-मनि, ताकेउ हरकोदंड ।

पुलकि गात बोले वचन, चरन चापि ब्रह्मंड ॥२५६॥

दिभिकुंजरहु कमठ अहि कोला * धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥
 राम चहहिं संकरधनु तोरा * होहु मजग मुनि आयसु मोरा ॥
 चापसमीप रामु जब आये * नरनारिन्ह सुर सुकृत मनाये ॥
 सब कर संसय अरु अज्ञानू * मंद महीपन्ह कर अभिगानू ॥
 भृगुपति केरि गरव गरुआई * मुर-मुनि-वरन्ह केरि कदराई ॥
 सिय कर सोच जनकपछितावा * रानिन्ह कर दारुन-दुख-दावा ॥
 मंभुचाप बड बोहिन पाई * चढे जाइ सब मंग बनाई ॥
 राम-बाहु-बल-मिंधु अपारू * चाहत पार नहिं कोउ कनहारू ॥

दोहा--राम विलोके लोग सब, चित्र लिखे से देखि ।

चितई सीय कृपायतन, जानी विकल विसेखि ॥२६०॥

देखी विपुल विकल वैदेही * निमिप विहात कल्पसम तेही ॥
 तृपित वारि विनु जो तन त्यागा * मुए करइ का मुधा तड़ागा ॥
 का बरषा जब कृपी सुखाने * नमथ चुक पुनि का पछिजाने ॥
 अम जिय जानि जानकी देखी * प्रभु पुनक लखि प्रीति विसेखी ॥
 गुरुहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा * अतिनाचव उठाइ धनु लीन्हा ॥
 दमकेउ दामिनि जिमि जब लखऊ * पुनि नम-धनु-मंडल-गम भयऊ ॥
 लेत चढ़ावत खंचत गाढ़े * काहु न लखा देख्य मव ठाढ़े ॥
 तेहि छन राम मध्य धनु तोरा * भयउ भुवन धुनि धोर कठारा ॥

छंद--भरे भुवन धोर कठार ख रविवाजि तजि मारग चले ॥

चिकरहिं दिग्गज डालि महि अहि कोल क्रम कलमले ॥

सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे मकल विकल विचारहीं ॥

कादंड खंडउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं ॥

सोरठा--संकरचाप जहाज, सागर रबुवर-बाहु-बल ।

बूट सो सकल समाज, चढे जो प्रथमहिं मोहवस ॥२६१॥

प्रभु दोउ चापखंड महि डारे * देखि लोग मव भये मुखारे ॥
 कौसिक-रूप पयोनिधि पावन * प्रेमवागि अवगाह सुहावन ॥
 राम - रूप - राकेस निहारी * बढत वीधि पुलकावलि भारी ॥

वाजे नभ गहगहे निमाना * देववधू नाचहिं करि गाना ॥
 ब्रह्मादिक मुर मिद्ध मुनीसा * प्रभुहि प्रमंसहिं देहिं असीसा ॥
 वरषहिं मुमन रंग बहु माला * गावहिं किन्नर गीत रसाला ॥
 रही भुवन भरि जय जय बानी * धनुष-भंग-धुनि जात न जानी ॥
 मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी * भंजउ राम संभुधनु भारी ॥
 दोहा--वंदी मागध सूतगन, विरद वदहिं मतिधीर ।

करहिं निछावरिलोग सब, हय गय धन मनि चौर ॥२६२॥

झाँझि मृदंग मंख महनाई * भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई ॥
 वाजहिं बहु वाजने सुहाये * जहँ तहँ जुवतिन मंगल गाये ॥
 सखिन्ह सहित हरपी सब रानी * सूखत धानु परा जनु पानी ॥
 जनक लहेउ सुख सोच विहाई * पैरत थके थाह जनु पाई ॥
 श्रीहत भये भूप धनु टूटे * जैसे दिवस दीपझवि छूटे ॥
 मीयसुखहि वरनिय केहि भाँती * जनु चातकी पाइ जलस्वाती ॥
 रामहि लपन विलोकत कैसे * समिहि चकोरकिसोरकु जैसे ॥
 सतानंद तव आयसु दीन्हा * सीता गमन राम पहिं कीन्हा ॥
 दोहा--संग सखी सुंदर चतुर, गावहिं मंगलचार ।

गवनी बाल-मराल-गति, सुखभा अङ्ग अपार ॥२६३॥

सखिन्ह मध्य मिय मोहति केमी * छवि-गन-मध्य महाछवि जैमी ॥
 करसरोज जयमाल सुहाई * बिस्व-विजय-सोभा जनु छाई ॥
 तन सकोचु मन परमउद्वाहू * गूढप्रेम लखि परै न काहू ॥
 जाइ समीप राम छवि देखी * रहि जनु कुअँरि चित्रअवरेखी ॥
 चतुर सखी लखि कहा बुझाई * पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
 सुनत जुगल कर माल उठाई * प्रेमविवस पहिराइ न जाई ॥
 सोहत जनु जुगजलज सनाला * ससिहि समीत देत जयमाला ॥
 गावहिं छवि अवलोकि सहेली * मिय जयमाल रामउर मेली ॥

सोरठा--रघुवर उर जयमाल, देखि देव वरषहिं सुमन ।

सकुचे सकलभुआल, जनु विलोकि रवि कुमुदगन ॥२६४॥

पुर अरु व्योम वाजने वाजे * खल भये मलिन साधु सब राजे ॥

सुर किन्नर नर नाग मुनीसा * जयजय जय कहि देहिं अमीसा ॥
 नाचहिं गावहिं विबुधबधूटी * वार वार कुसुमावलि छूटी ॥
 जहँ तहँ विप्र वेदधुनि करहीं * वंदी विरदावलि उचरहीं ॥
 महि पातालु नाक जसु व्यापा * राम वरी सिय भंजेउ चापा ॥
 करहिं आरती पुर-नर-नारी * देहिं निझावर चित्त विमारी ॥
 सोहति मीय राम कै जोरी * क्वि मृंगार मनहुँ एक ठोरी ॥
 मखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता * करत न चरनपरम अतिभीता ॥
 दोहा—गौतम-तिय-गति सुरति करि, नहिं परसति पग पानि ।

मन विहँसे रघु-वंस-मनि, प्रीति अलौकिक जानि ॥२६५॥

तव मिय देखि भूप अभिलाषे * कूर कपूत मूढ़ मन मापे ॥
 उठि उठि पहिरि सनाह अभागे * जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥
 लेहु छँडाय मीय कह कोऊ * धरि बाँधहु नृपबालक दोऊ ॥
 तोरे धनुष चाँड़ नहिं मरई * जीवत हमहिं कुअँरि को वरई ॥
 जौं विदेहु कछु करै सहाई * जीतहु ममर महित दोउ भाई ॥
 माधुभूप बाले सुनि बानी * राजसमाजहिं लाज लजानी ॥
 बलु प्रतापु वीरता वड़ाई * नाक पिनाकहि मंग मिधाई ॥
 सोइ सूरता कि अय कहँ पाई * असि बुधि तौ विधि मुँह मजि लाई ॥
 दोहा--देखहु रामहिं नयन भरि, तजि इरपा मद कोहु ।

लपन-रोप-पावक-प्रबलु, जानि सलभ जानि होहु ॥२६६॥

वैनतेयपलि जिमि चह कागू * जिमि मम चह नाग-अरि-भागू ॥
 जिमि चह कुमल अकारन कोही * सब संपदा चह सिवद्रोही ॥
 लोभी लोलुप कीरति चहई * अकलंकता कि कामी लहई ॥
 हरि-पद-विमुख परमगति चाहा * तम तुम्हार लालच नरनाहा ॥
 कोलाहल सुनि मीय सकानी * मखी लेवाइ गई जहँ रानी ॥
 राम सुभाय चले गुरु पाहीं * मियमनेहु वरनत मन माहीं ॥
 रानिन्ह सहित सोचवस मीया * अय धौं विधिहि काह करनीया ॥
 भूप वचन सुनि इत उत तकहीं * लपन रामडर बोलि न सकहीं ॥
 दोहा--अरुन नयन भृकटीकुटिल, चितवन नृपन्ह सकोप ।

मनहुँ मत्त-गज-गन निरखि, सिंहकिसोरहि चोप ॥२६७॥

खरभर देखि विकल पुरनारी * सब मिलि देहिं महीपन्ह गारी ॥
 तेहि अवसर मुनि मिव-धनु-भंगा * आये भृगु-कुल-कमल-पतंगा ॥
 देखि महीप भकल सकुनाने * वाज झपट जनु लवा लुकाने ॥
 गौर मरीर भूति भलि आजा * भालविमाल त्रिपुंड विराजा ॥
 मीम जटा ममिवदन मुहावा * रिमिवम कल्लुक अरुन होइ आवा ॥
 भृकुटीकुटिल नथन रिम राते * सहजहुँ चितवत मनहुँ रिमाते ॥
 वृषभ कंध उर बाहु विमाला * चारु जनेउ माल मृगबाला ॥
 कटि मुनि बभन तून दुइ बांधे * धनु मर कर कुठार कल कांधे ॥
 दोहा--संत बेप करनी कठिन, बरनि न जाइ सरूप ।

धरि मुनितनु जनु वीररस, आयेउ जहँ सब भूप ॥२६८॥

देखत भृगु-पति-बेपु कराला * उठे सकल भयविकल भुआला ॥
 पितुगमेत कहि निज निज नामा * लगे करन सब दंडप्रनामा ॥
 जेहि सुभाय चितवहिं हित जानी * सो जानै जनु आइ खुटानी ॥
 जनक बहोरि आइ गिरुनावा * सीय बोलाइ प्रनाग करावा ॥
 आमिष दीन्हि सखी हरपानी * निज समाज ले गई मयानी ॥
 विस्वामित्र मिले पुनि आहँ * पद मरोज मेले दोउ भाई ॥
 राम लपन दमरथ के होटा * देखि असीस दीन्ह भल जोटा ॥
 रामहिं चितइ रहे भरि लोचन * रूप अपार मार-मद-मोचन ॥
 दोहा--बहार विलोकि विदेह सन, कहहु काह अति भीर ।

प्रहृत जानि अजान जिमि, व्यापेउ कोपु सरीर ॥२६९॥

ममाचार कहि जनक सुनाये * जेहि कारन महीप सब आये ॥
 सुनत बचन तव अनत निहारे * देखे चापखंड महि डारे ॥
 अति रिम बोले बचन कठोरा * कहु जइ जनक धनुस केइ तोरा ॥
 वेगि देखाउ भृह न त आजू * उलटौं महि जहँ लगि तव राजू ॥
 अतिडर उतर देत नृप नाहीं * कुटिल भूप हरपे मन माहीं ॥
 सुर मुनि नाग नगर-नर-नारी * सोचहिं सकल त्राम उर भारी ॥
 मन पळिताति भीयमहतारी * विधि अब सवरी वात विगारी ॥

भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता ॥ अरधनिमेष कल्पमम बीता ॥

दोहा--सभय विलोकें लोग सब, जानि जानकी भीर ।

हृदय न हरप विपाद कछु, बोले श्रीरघुवीर ॥२७०॥

नाथ संभु-धनु-भंजनि-हारा ॥ होइहि कोउ एक दास तुम्हारा ॥

आयसु काह कहिअ किन मोही ॥ सुनि रिगाइ बोले मुनि कोही ॥

सेवक सो जां करे सेवकाई ॥ अरिकरनी करि करिय तराई ॥

सुनहु राम जेइ मिव धनु तोरा ॥ महम-बाहु-मम सो गिणु सोरा ॥

सो विलगाउ विहाइ ममाजा ॥ नत मारे जइहें मव राजा ॥

सुनि मुनिवचन लपन मुसुकाने ॥ बोले परमुधरहि अपमाने ॥

वहु धनुहीं तोरी लरिकाई ॥ कचहुँ न अमि रिम कीन्ह गोपाई ॥

एहि धनु पर ममता केहि हेनु ॥ सुनि रिगाइ कह भृगु-पति-केनु ॥

दोहा--रे नृपबालक कालवस, बोलत तोहि न सँभार ।

धनुहीं सम वि-भुरारि-धनु, विदित सकळ संसार ॥२७१॥

लपन कहा हँसि हमरे जाना ॥ सुनहु देव सा धनुष सजाना ॥

का अति लामु जन धनु तोरे ॥ देवा राम नयन के मोरे ॥

लुअन दृष्ट रघुपतिहु न दोष ॥ सुनि विनु काज करिय कत रोष ॥

बोले चितइ परमु की ओरा ॥ रे मठ मुनिहि मुवाउ न मोरा ॥

बालक बोलि बधे नाहि नोही ॥ सेवक मुनि जइ जानहि मोही ॥

बालब्रह्मचारी अतिकोही ॥ विभविदित अत्रिय कुल-दोही ॥

भुजबल भूमि भूप विनु कान्ही ॥ त्रिपुल वार महिदेवन्ह दान्ही ॥

महस-बाहु-भुज-वेदनि-हारा ॥ परमु विलोक महिपकुमाग ॥

दोहा--पातुपितहि जनि सोच वस, करसि महीपकिसोर ।

गरभन के अरभकदलन, परसु मोर अति घोरा ॥२७२॥

विहँसि लपन बोले सुदुवानी ॥ अहो मुनीम महाभट मानी ॥

पुनि पुनि मोहि देखाव कुठार ॥ चहत उड़ावन फँकि पदार ॥

इहाँ कुम्हड़वतिया काउ नाहीं ॥ जे तरजना देखि मणि जाहीं ॥

देखि कुठार गरभन बाना ॥ में कछु कहा महिन अभिमाना ॥

भृगुकुल ममुझि जनेउ विनाकी ॥ जां कछु कहहु मही रिम रोकी ॥

गुर महिगुर हरिजन अरु गाई * हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ॥
 वधे पाप अपकीरति हारै * मारतहू पा परिय तुम्हारै ॥
 कोटि-कुलिस-सम वचन तुम्हारा * व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ॥
 दोहा--जो बिलोकि अनुचित कहेउं, छमहु महामुनि धीर ॥

सुनि सरोप भृगु-वंस-मनि, बोले गिरा गँभीर ॥२७३॥

कौमिक मुनहु मंद यह बालक * कुटिल कालवस निज-कुल-घालक ॥
 भानु - वंस राकेस - कलंक * निपट निरंकुस अबुध असंक ॥
 कालकवलु होइहि ब्रन माहीं * कहौं पुकारि खोरि मोहि नाहीं ॥
 तुम्ह हटकहु जाँ चहहु उवारा * कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥
 लपन कहेउ मुनि मुजम तुम्हारा * तुम्हहिं अलत को वरनै पारा ॥
 अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी * बार अनेक भाँति बहु बरनी ॥
 नहिं मंतोष तो पुनि कलु कहहु * जनि रिगिरोकि दुसह दुख सहहु ॥
 वीरव्रती तुम्ह धीर अब्योभा * गारी देत न पावहु मोभा ॥
 दोहा--सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु ।

विद्यमान रिपु पाइरन, कायर करहिं प्रलापु ॥२७४॥

तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा * बार बार मोहि लागि बोलावा ॥
 सुनत लपन के वचन कठोरा * परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥
 अब जनि देई दोष मोहि लोगू * कटुवादी बालक बधजोगू ॥
 बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा * अब यह मरनहार भा साँचा ॥
 कौमिक कहा लमिअ अपराधू * बाल-दोष-गुन गनहिं न माधू ॥
 कर कुठार मैं अकरनकोही * आगे अपराधी गुरुद्रोही ॥
 उत्तर देत छाँड़उं विन मारे * केवल कौसिक सील तुम्हारे ॥
 न तु एहि काटि कुठार कठोरे * गुरुहि उरिन होतेउं सम थोरे ॥
 दोहा--गाधिसूनु कह हृदय हँसि, मुनिहि हरिअरे सूभ ।

अयमय खाँट न ऊखमय, अजहुँ न बूभ अबूभ ॥२७५॥

कहेउ लपन मुनि सील तुम्हारा * को नहिं जान विदित संसारा ॥
 माता पितहि उरिन भये नीके * गुरु रिन रहा सोच बड़ जीके ॥
 सो जनु हमरेहि माथे काढा * दिन चढ़ि गयेउ व्याज बहु बाढा

अब आनिअ व्यवहरिया बोली * तुरत देउं में थैली खोली ॥
 सुनि कटुवचन कुठार सुधारा * हाय हाय सब मभा पुकारा ॥
 भृगुवर परसु देखावहु मोही * विप्र विचारि वचौ नृपद्रोही ॥
 मिले न कवहु सुभट रन गाढ़े * द्विज देवता घरहिं के वाढ़े ॥
 अनुचित कहि सब लोग पुकारे * रघुपति सैनहिं लपन निवारै ॥
 दोहा-लपनउतर आहुतिसरिस, भृगु-वर-कोप कृसानु ।

बढ़त देखि जलसमवचन, बोले रघु-कुल-भानु ॥२७६॥

नाथ करहु बालक पर ओहू * सूध दूधमुख करिय न कोहू ॥
 जौ पै प्रभुप्रभाउ कछु जाना * तौ कि बरावरि करत अयाना ॥
 जौ लरिका कछु अचगारि करहीं * गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं ॥
 करिअ कृपा मिसु सेवकु जानी * तुम्हसम सील धीर मुनि ज्ञानी ॥
 रामवचन सुनि कछुक जुड़ाने * कहिकछु लपन बहुरि मुमुकाने ॥
 हँसत देखि नखमिख रिस व्यापी * राम तौर भ्राता बड़ पापी ॥
 गौर सरीर स्याम मन माहीं * काल-कूट-मुख पयमुख नाहीं ॥
 सहज टेढ़ अनुहरै न तोही * नीच मीचसम देख न मोही ॥
 दोहा--लपन कहेउ हँसि सुनहु मुनि, क्रोध पाप कर मूल ।

जेहि बसजन अनुचित करहिं, होहिं विस्वप्रतिकूल ॥२७७॥

में तुम्हार अनुचर मुनिराया * परिहरि कोप करिअ अब दाय़ा ॥
 टूट चाप नहिं जुरहि रिमाने * बैठिअ होइहहिं पाय पिराने ॥
 जौ अतिप्रिय तौ करिअ उपाई * जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई ॥
 बोलत लपनहिं जनकु डेराहीं * मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं ॥
 थर थर काँपहिं पुर-नर-नारी * छोट कुमार खोट बड़ भारी ॥
 भृगुपति सुनि सुनि निर्भय बानी * रिस तन जरै होइ बलहानी ॥
 बोले रामहिं देइ निहोरा * वचौ विचारि बंधु लघु तोरा ॥
 मन मलीन तनु सुंदर कैमे * विप-रस-भरा कनकघट जैमे ॥
 दोहा--सुनि लछिमन विहँसे बहुरि, नैन तरेरे राम ।

गुरु समीप गवने सकुचि, परिहरि बानी वाम ॥२७८॥

अतिविनीत भृदु सीतल बानी * बोले राम जोरि जुगपानी ॥

सुनहु नाथ तुम्ह महज सुजाना * बालकवचन करिअ नहिं काना ॥
 वररै बालक एक सुभाऊ * इन्हहिं न संत विदृषहिं काऊ ॥
 तेहि नार्हीं कल्लु काज विगारा * अपराधी में नाथ तुम्हारा ॥
 कृपा कोप वध बंध गोसाईं * मो पर करिअ दास की नाई ॥
 कहिअ वेगि जेहि विधि रिमि जाई * मुनिनायक सोइ करौं उपाई ॥
 कह मुनि राम जाइ रिस कैमे * अजहुँ अनुज तव चितव अनैमे ॥
 एहि के कंठ कुठार न दीन्हा * तो मैं काह कोप करि कीन्हा ॥
 दोहा--गर्भ खवाहिं अवनिपरवनि, सुनि कुठारगति घोर ।

परसु अछत देखेउं जियत, बैरी भूपकिसोर ॥२७६॥

वहै न हाथ दहै रिस छाती * भा कुठार कुंठित नृपघाती ॥
 भयेउ वाम विधि फिरेउ सुभाऊ * मोरे हृदय कृपा कसि काऊ ॥
 आजु दैव दुख दुसह सहावा * सुनि सौमित्र बहुरि सिरु नावा ॥
 बाउकृपा मूरति अनुकला * बोलत बचन झरत जनु फूला ॥
 जौं पै कृपा जरहिं मुनि गाता * क्रोध भये तनु राखु विधाता ॥
 देखु जनक हठि बालक एहू * कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू ॥
 वेगि करहु किन आँखिन ओटा * देखत छोट खोट नृपढोटा ॥
 बिहँमे लपन कहा मुनि पार्हीं * मूँदे आँखि कतहुँ कोउ नार्हीं ॥
 दोहा-परसुराम तब राम प्रति, बोले उर अति क्रोधु ।

संभुसरासन तोरि सठ, करसि हमार प्रबोधु ॥२८०॥

बंधु कहे कटु संमत तोरे * तूँ छल विनय करमि कर जोरे ॥
 करु परितोष मोर संग्रामा * नाहित छाँडु कहाउव रामा ॥
 छल तजि करहि समर सिवद्रोही * बंधुसहित न त मारौं तोही ॥
 भृगुपति बकहिं कुठार उठाये * मन मुसुकाहिं राम सिरु नाए ॥
 गुनहु लपन कर हम पर रोषू * कतहुँ सुधाइहु तें बड़ दोषू ॥
 टेढ़ जानि बंदइ सब काहू * बक चंद्रमहि ग्रसै न राहू ॥
 राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा * कर कुठार आगे यह सीसा ॥
 जेहि रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी * मोहि जानिअ आपन अनुगामी ॥
 दोहा--प्रभु सेवकहिं समरु कस, तजहु बिप्रवर रोसु ।

बेष बिलोकें कहेसि कछु, बालकहू नहिं दोसु ॥२८१॥

देखि कुठार - बान - धनु - धारी * भइ लरिकहि रिस बीरु विचारी ॥
 नामु जान पै तुम्हहिं न चीन्हा * वंससुभाय उतरु तेइ दीन्हा ॥
 जौं तुम्ह अवतेहु मुनि की नाई * पदरज सिर मिसु धरत गोसाईं ॥
 छमहु चूक अनजानत केरी * चहिअ विप्रउर कृपा घनेरी ॥
 हमहिं तुम्हहिं सरबरि कस नाथा * कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा ॥
 राम मात्र लघु नाम हमारा * परसुसहित बड़ नाम तुम्हारा ॥
 देव एकगुन धनुष हमारे * नवगुन परम पुनीत तुम्हारे ॥
 सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे * छमहु विप्र अपराध हमारे ॥
 दोहा--बार बार मुनि विप्रवर, कहा राम सन राम ।

बोले भृगुपति सरुष हँसि, तहूँ बंधुसम वाम ॥२८२॥

निपटहि द्विज करि जानहि मोही * मैं जस विप्र सुनावौं तोही ॥
 चाप सुवा सर आहुति जानू * कोपु मोर अतिघोर कृसानू ॥
 समिध सेन चतुरंग सुहाई * महामहीप भये पसु आई ॥
 मैं यह परसु काटि बलि दीन्हे * समरजग्य जग कोटिक कीन्हे ॥
 मोर प्रभाउ विदित नहिं तोरे * बोलसि निदरि विप्र के भोरे ॥
 भंजेउ चापु दापु बड़ बाढा * अहमिति मनहुँ जीति जग ठाढा ॥
 राम कहा मुनि कहहु विचारी * रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी ॥
 छुवतहि टूक पिनाक पुराना * मैं केहि हेतु करौं अभिमाना ॥
 दोहा--जौं हम निदरहिं विप्र बदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ ।
 तौ अस को जग सुभट जेहि, भयवस नावहि माथ ॥२८३॥
 देव दनुज भूपति भट नाना * समबल अधिक होउ वलवाना ॥
 जौं रन हमहिं प्रचारै कोऊ * लरहिं सुखेन काल किन होऊ ॥
 अत्रिय तनु धरि समर सकाना * कुलकलंक तेहि पाँवर जाना ॥
 कहाँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी * कालहु डरहिं न रन रघुवंसी ॥
 विप्रवंस कै असि प्रभुताई * अभय होइ जौ तुम्हहिं डेराई ॥
 सु निमृदुबचन गूढ़ रघुपति के * उधरे पटल परसु-धर-मति के ॥
 राम रमापति कर धनु लेहू * खँचहु मिटै मोर संदेहू ॥

देत चाप आपुहि चलि गयेऊ * परसुराम मन विममय भयेऊ ॥
दोहा--जाना रामप्रभाउ तव, पुलक प्रफुल्लित गात ।

जोरि पानि बोले बचन, हृदय न प्रेम समात ॥२८४॥

जय रघुवंस - बनज - बन - भानू * गहन-दनुज-कुल-दहन कृमानू ॥
जय सुर - विप्र - धेनु - हित - कारी * जय मद-मोह-कोह-भ्रम-हारी ॥
विनय-मील - करुना - गुन - सागर * जयति बचनरचना अतिनागर ॥
सेवकसुखद सुभग सब अंगा * जय मरीरञ्जवि कोटिअनंगा ॥
करौं काह मुख एक प्रसंसा * जय महेस - मन - मानस - हंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउं अज्ञाता * छमहु छमामंदिर दोउ भाता ॥
कहि जय जय जय रघु-कुल-केतू * भृगुपति गये बनहिं तप हेतू ॥
अपभय सकल महीप डेराने * जहँ तहँ कायर गवहिं पराने ॥
दोहा-देवन दीन्ही दुंदुभी, प्रभु पर वरपहिं फूल ।

हरपे पुर-नर-नारि सब, मिटा मोहमय मूल ॥२८५॥

अति गहगहे बाजने बाजे * सवहिं मनोहर मंगल साजे ॥
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनी * करहिं गान कल कोकिलवयनी ॥
मुख विदेह कर बरनि न जाई * जनमदरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥
विगतत्राम भइ मीय मुखारी * जनु विधु उदय चकोरकुमारी ॥
जनक कीन्ह कौमिकहि प्रनामा * प्रभुप्रसाद धनु भंजेंउ रामा ॥
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई * अब जो उचित सो कहिअगोसाई ॥
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रवीना * रहा विवाह चापआधीना ॥
दूटत ही धनु भयेउ विवाह * सुर नर नाग विदित सबकाह ॥
दोहा-तदपि जाइ तुम्ह करहु अब, जथा-वंस-व्यवहार ।

बूझि विप्र कुल वृद्धगुरु, बेदविदित आचारु ॥२८६॥

दूत अवधे पुर पठवहु जाई * आनहिं नृप दमरथहि बोलाई ॥
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला * पठये दूत बोलि तेहि काला ॥
बहुरि महाजन सकल बोलाये * आइ सबन्हि सादर मिरु नाये ॥
हाट बाट मंदिर सुरवासा * नगर सवारहु चारिहु पास ॥
हरषि चले निज निज गृह आये * पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥

रचहु विचित्र वितान बनाई * मिर धरि बचन चले सचुपाई ॥
 पठये बोलि गुनो तिन्ह नाना * जे वितान-विधि-कुमल सुजाना ॥
 विधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा * विरचे कनककदलि के खंभा ॥
 दोहा--हरितमनिन्ह के पत्र फल, पटुमराग के फूल ।

रचना देखि विचित्र अति, मन विरंचि कर भूल ॥२८७॥

वेनु हरित-मनि-मय सब कीन्हे * मरलसपरन परहिं नहिं चीन्हे ॥
 कनककलित अहिबेलि बनाई * लखि नहिं परै सपरन मुहाई ॥
 तेहि के रचि पवि बंध बनाये * विच विच मुकुता दाम मुहाये ॥
 मानिक मरकत कुलिम पिरोजा * चीरि कोरि पचि रचे मरोजा ॥
 किये भृंग वहुंरंग विहंगा * गुंजहिं कूजहिं पवनप्रभंगा ॥
 सुरप्रतिमा खंभन्हि गदि काढी * मंगलद्रव्य लिये मव ठाढी ॥
 चौके भाँति अनेक पुराई * सिंधुर-मनि-मय महज मुहाई ॥
 दोहा--सौरभपट्टव सुभग सुठि, किये नील-मनि-कोरि ।

हेमबौरु मरकत घवरि, लसत पाटमय डोरि ॥२८८॥

रचे रुचिर वर बंदनवारे * मनहुँ मनोभव फंद सवारै ॥
 मंगल कलस अनेक बनाय * ध्वजपताक पट चँवर मुहायै ॥
 दीप मनोहर मनिमय नाना * जाइ न वरनि विचित्र विताना ॥
 जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही * सो वरनै अम मति कवि केही ॥
 दूलह राम रूप-गुन-सागर * सो वितान तिहुँ लोक उजागर ॥
 जनकभवन कै सोभा जैमी * गृह गृह प्रति पुर देखिय तैमी ॥
 जेहि तिरहुति तेहि समय निहारी * तेहि लघु लगत भुवनदम चारी ॥
 जो संपदा नीचगृह सोहा * सो विलोकि सुरनायक मोहा ॥
 दोहा-वसै नगर जेहि लच्छि करि, कपट नारि वर बेपु ।

तेहि पुर कै सोभा कहत, सकुचहिं सादर सेपु ॥२८९॥

पहुँचे दूत रामपुर पावन * हरपे नगर विलोकि मुहावन ॥
 भूपद्वार तिन्ह खबर जनाई * दसरथ नृप मुनि लिये बोलाई ॥
 करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही * मुदित महीप आपु उटि लीन्ही ॥
 बारि विलोचन बाँचत पाती * पुलक गात आई भरि छाती ॥

राम लपन उर कर बर चीठी * रहि गये कहत न खाटी मीठी ॥
 पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची * हरषी सभा बात सुनि साँची ॥
 खेन्त रहे तहाँ मुधि पाई * आयं भरत सहित हित भाई ॥
 पूञ्जत अतिमनंह सकुचाई * तात कहाँ तें पाती आई ॥
 दोहा-कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ, अहहिं कहहु केहि देस ।

सुनि सनेहसाने बचन, बाँची वहरि नरेस ॥ २६० ॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता * अधिक सनेह समात न गाता ॥
 प्रीति पुनीत भरत कै देखी * सकलसभा सुख लहेउ विसेखी ॥
 तब नृप दूत निकट बैठारै * मधुर मनोहर बचन उचारै ॥
 भैया कहहु कुसल दोउ वारै * तुम्ह नीके निजनयन निहारै ॥
 स्यामल गौर धरं धनुभाथा * बय किमोर कौसिकमुनि साथी ॥
 पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ * प्रेमविवग्ग पुनि पुनि कह राऊ ॥
 जा दिन तें मुनि गये लेवाई * तब तें आजु साँचि सुधि पाई ॥
 कहहु विदेह कवम विधि जानै * मुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने ॥
 दोहा-सूनहु मही-पति-मुकुट-मनि, तुम्ह सम धन्य न कोउ ।

राम लपन जिन्ह के तनय, विस्वविभूषन दोउ ॥ २६१ ॥

पूञ्जन जोग न तनय तुम्हारे * पुरुपसिंह तिहुँ पुर उँजियारे ॥
 जिन के जम प्रताप के आगे * समि मलीन रवि सीतल लागे ॥
 तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे * देखिअ रवि कि दीप कर लीन्हे ॥
 सीयस्वयंवर भूप अनेका * सिमिटें सुभट एक तें एका ॥
 संभुमरामन काहु न टारा * हारे सकल वीर वरियारा ॥
 तीनि लोक महँ जे भट मानी * मव कै सकति संभुधनु भारी ॥
 सकै उठाइ मुरासुर मेरू * सोउ हिय हारि गयेउ करि फेरू ॥
 जेहि कौनुक भिवसैल उठावा * सोउ तेहि सभा पराभव पावा ॥
 दोहा-तहाँ राम रघु-वंस-मनि, सुनिअ महामहिपाल ।

भंजेउ चापप्रयास विनु, जिमि गज पंकजनाल ॥ २६२ ॥

सुनि सरोष भृगुनायक आयं * बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाये ॥
 देखि रामबलु निजधनु दीन्हा * करि बहु विनय गवन वन कीन्हा ॥

राजन रामु अतुलबल जैमे * तेजनिधान लपन पुनि तैमे ॥
 कंपहिं भूप बिलोकत जा के * जिमि गज हरिकिमोर के ताके ॥
 देव देखि तव बालक दोऊ * अब न आँखि तर आवत कोऊ ॥
 दूत - बचन - रचना प्रिय लागी * प्रेम - प्रताप - वीर - रम - पागी ॥
 सभाममेत राउ अनुरागे * दूतन्ह देन निछावरि लागे ॥
 कहि अनीति ते मँदहिं काना * धरमु बिचारि मवहिं सुख माना ॥
 दोहा-तव उठि भूप बसिष्ठ कहँ, दीन्हि पत्रिका जाइ ।

कथा सुनाई गुरुहि सब, सादर दूत बोलाइ ॥२६३॥

सुनि बोले गुरु अति सुख पाई * पुन्यपुरुष कहँ महि सुख झाई ॥
 जिमि सरिता सागर महँ जाहीं * जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
 तिमि सुख संपति विनहिं बोलाये * धरममील पहिं जाहिं सुभाये ॥
 तुम्ह गुरु -विप्र -धेनु -सुर - सेवी * तमि पुनीत कौमल्या देवी ॥
 सुकृती तुम्ह समान जग माहीं * भयउ न हे कोउ होनउ नाहीं ॥
 तुम्ह तें अधिक पुन्य वड़ का के * राजन राम-सरिस सुत जा के ॥
 वीर विनीत धरम -व्रत - धारी * गुनसागर वर बालक चारी ॥
 तुम्ह कहँ सर्वकाल कल्याना * सजहु वरात वजाइ निमाना ॥

दोहा-चलहु बेगि सुनि गुरुवचन, भलेहि नाथ सिरु नाइ ।

भूपति गवने भवन तव, दूतन्ह वास देवाइ ॥२६४॥

राजा सब रनिवास बोलाई * जनकपत्रिका बाँचि सुनाई ॥
 सुनि संदेह सकल हरपानि * अपरकथा सब भूप बखानी ॥
 प्रेमप्रफुल्लित राजहिं रानी * मनहुँ मिश्रिनि मुनि वारिदवानी ॥
 मुदित असीस देहिं गुरुनारी * अति - आनंद - मगन महतारी ॥
 लेहिं परसपर अतिप्रिय पाती * हृदय लगाइ जुड़ावहिं झार्ती ॥
 राम लपन कै कीरति करनी * बारहिं वार भूपवर वरनी ॥
 मुनिप्रसाद कहि द्वार सिधाये * रानिन्ह तव महिदेव बोलाये ॥
 दिये दान आनंदसमेता * चले विप्रवर आसिप देता ॥
 सोरठा--जाचक लिये हँकारि, दीन्हि निछावरि कोटि विधि ।

चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दसरथके ॥२६५॥

कहत चले पहिरं पट नाना * हरपि हने गहगहे निसाना ॥
 ममाचार मव लोगन्ह पाये * लागे घर घर होन बधाये ॥
 भुवन चारि दस भरा उझाहू * जनक - सुता - रघुवीर - विवाहू ॥
 सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे * मग गृह गली सवारन लागे ॥
 जद्यपि अवध सदैव मुहावनि * रामपुरी मंगलमय पावनि ॥
 तदपि प्रीति कै रीति सुहाई * मंगलरचना रची बनाई ॥
 ध्वज पताक पट चामर चारू * द्वावा परमविचित्र बजारू ॥
 कनककलम तोरन मनिजाला * हरद दूब दधि अञ्जत माला ॥
 दोहा--मंगलमय निज-निज-भवन, लोगन्ह रचे बनाइ ।

वीथी सीची चतुरसम, चौके चारू पुराइ ॥२६६॥

जह तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि * गजि नवसप्त सकल-दुति-दामिनि ॥
 विधुवदनी मृग-मावक - लोचनि * निजमरूप रति-मान-विमोचनि ॥
 गावहिं मंगल मंजुल बानी * सुनि कलख कलकंठ लजानी ॥
 भूपभवन किमि जाइ बखाना * विस्वविमोहन रचैउ विताना ॥
 मंगलद्रव्य मनोहर नाना * राजत वाजत विपुल निसाना ॥
 कतहुँ विरद बंदी उचरहीं * कतहुँ बेदधुनि भृगुर करहीं ॥
 गावहिं सुंदरि मंगलगीता * लेइ लेइ नाम राम अरु सीता ॥
 बहुत उझाहु भवन अति थोरा * मानहु उमगि चला चहुँ ओरा ॥
 दोहा--सोभा दसरथ भवन कै, को कवि वरनै पार ।

जहाँ सकल-सुर-सीस-मनि, राम लीन्ह अवतार ॥२६७॥

भूप भरत पुनि लिये बोलाई * हय गय स्यंदन साजहु जाई ॥
 चलहु बेगि रघुवीर - वराना * सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता ॥
 भरत सकल साहनी बोलाये * आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये ॥
 रवि रुचि जीन तुरग तिन्ह माजे * वरन वरन बरवाजि विराजे ॥
 सुभग सकल सुठि चंचल करनी * अय इव जरत धरत पग धरनी ॥
 नाना जाति न जाहिं बखाने * निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने ॥
 तिन्ह सब छैल भये अमवारा * भरतसरिस बय राजकुमारा ॥
 सब सुंदर मव भूपनधारी * कर सरचाप तून कटि भारी ॥

दोहा-छरे छबीले छैल सब, सूर सुजान नवीन ।

जुग-पद-चर असवार प्रति, जे असि-कला-प्रवीन ॥२६८॥

बाँधे विरद वीर रनगाढ़े * निकमि भये पुर बाहिर ठाढ़े ॥
 फेरहिं चतुर तुरग गति नाना * हरषहिं सुनि सुनि पनव निमाना ॥
 रथ सारथिन्ह विचित्र बनाये * ध्वज पताक मनि भूपन लाये ॥
 चवँर चारु किंकिनि धुनि करहीं * भानु - जानु - मोभा अपहरहीं ॥
 स्यामकरन अगनित हय होते * ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते ॥
 सुंदर सकल अलंकृत सोहे * जिन्हहिं विलोकत मुनिमन मोहे ॥
 जे जल चलहिं थलहि की नाई * टाप न बूढ़ वंग अधिकारई ॥
 अस्र मस्र सब साज बनाई * रथी सारथिन्ह लिये बोलाई ॥

दोहा-चढ़ि चढ़ि रथ बाहिर नगर, लागी जुरन बरात ।

होत सगुन सुंदर सबन्हि, जो जेहि कारज जात ॥२६९॥

कलित करिवरन्हि परी अँवारी * कहि न जाइ जेहि भाँति मवारी ॥
 चले मत्तगज घंट विराजी * मनहुँ सुभग सावन-धन-राजी ॥
 बाहन अपर अनेकबिधाना * मित्रिका सुभग सुखामन जाना ॥
 तिन्ह चढ़ि चले विप्र-वर-बृंदा * जनु तनु धरं सकल-सुति-खंदा ॥
 मागध सूत बंदि गुनगायक * चले जान चढ़ि जो जेहि लायक ॥
 वंमर ऊँट बृषभ बहु जाती * चले वस्तु भरि अगनित भाँती ॥
 कोटिन्ह कावँरि चले कहारा * विविधवस्तु को बरनै पारा ॥
 चले सकल - सेवक - समुदाई * निज-निज-साधु-समाजु बनाई ॥

दोहा-सब के उर निर्भर हरषु, पूरित पुलक सरीर ।

कबहि देखिबइ नयनभार, रामलपन दोउ वीर ॥३००॥

गरजहिं गज घंटाधुनि घोरा * रथरव वाजिहिंस चहुँ ओरा ॥
 निदरि घनहिं घुम्परहिं निमाना * निज पराइ कल्लु मुनिअन काना ॥
 महाभीर भूपति के द्वारे * रज होइ जाइ पपान पवारै ॥
 चढी अटारिन्ह देखहिं नारी * लिये आरती मंगलथारी ॥
 गावहिं गीत मनोहर नाना * अतिआनंद न जाइ बखाना ॥
 तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी * जोते रवि - हय - निंदक वार्जी ॥

दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने * नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने ॥
 राजसमाज एक रथ साजा * दूसर तेजपुंज अतिभ्राजा ॥
 दोहा-तेहि रथ रुचिर बसिष्ठ कहैं, हरपि चढ़ाइ नरेसु ।

आपु चढेउ स्यंदन सुमिरि, हर गुरु गौरि गनेसु ॥३०१॥

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसे * सुर-गुरु-मंग पुरंदर जैसे ॥
 करि कुलरीति वंदविधि राज * देखि सबहि सब भाँति बनाऊ ॥
 सुमिरि राम गुरुआयसु पाई * चले महीपति संख बजाई ॥
 हरपे विबुध बिलोकि वराता * वरखहिं सुमन सु-मंगल-दाता ॥
 भयेउ कोलाहल हय गय गाजे * व्योम वरात बाजने बाजे ॥
 सुर नर नाग सुमंगल गाई * सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
 घंट-घंटी-धुनि वरनि न जाहीं * सरव करहिं पायक फहराहीं ॥
 करहिं बिदूषक कौतुक नाना * हासकुसल कलगान सुजाना ॥

दोहा--तुरग नचावहिं कुअँर वर, अकनि मृदंग निसान ।

नागर नट चितवहिं चकित, डगहिं न ताल बँधान ॥३०२॥

बनै न वरनत बनी वराता * होहिं सगुन सुंदर सुभदाता ॥
 चारा चापु वाम दिसि लेई * मनहुँ सकल मंगल कहि देई ॥
 दाहिन काग सुखेत मुहावा * नकुलदरस सब काहू पावा ॥
 मानकूल बह त्रिविध बयारी * सधट सवाल आव वरनारी ॥
 लोवा फिर फिरि दरस देखावा * सुरभी सनमुख सिसुहि पियावा ॥
 मृगमाला फिरि दाहिनि आई * मंगलगन जनु दीन्ह देखाई ॥
 छेमकरी कह छेम विसेखी * स्यामा वाम सुतरु पर देखी ॥
 सनमुख आयेउ दधि अरु मीना * करपुस्तक दुइ विप्र प्रवीना ॥

दोहा--मंगलमय कल्याणमय, अभिमत-फल-दातार ।

जनु सब साँचे होन हित, भये सगुन एक बार ॥३०३॥

मंगल सगुन सुगम सब ताके * सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके ॥
 रामसरिम वर दुलहिनि सीता * समधी दसरथ जनक पुनीता ॥
 सुनि अम व्याह सगुन सब नाचे * अब कीन्हे विरंचि हम साचे ॥
 एहि विधि कीन्ह वरात पयाना * हय गय गाजहिं हने निसाना ॥

आवत जानि भानु - कुल - केतू * भरितन्हि जनक वँधायें मेतू ॥
 वीच वीच बरवासु बनाये * सुर - पुर - मरिस संपदा छाये ॥
 असन मयन बर वसन सुहाये * पावहि मव निज निज मन भाये ॥
 नित नूतन सुख लखि अनुकूले * सकल वरातिन्ह मंदिर भूले ॥
 दोहा--आवत जानि वरातवर, सुनि गहगहे निसान ।

सजि गज रथ पदचर तुरग, लैन चले अगवान ॥३०४॥

कनककलम भरि कोपर थारा * भाजन ललित अनेकप्रकारा ॥
 भरे सुधासम सब पकवाने * भाँति भाँति नहिं जाहिं बखाने ॥
 फल अनेक बरवस्तु सुहाई * हरपि भेंट हित भूप पठाई ॥
 भूपन वसन महामनि नाना * खग मृग हय गय बहुविधि जाना ॥
 मंगल सगुन सुगंध सुहाये * बहुत भाँति महिपाल पठाये ॥
 दधि चिउरा उपहार अपारा * भरि भरि कावँरि चले कहारा ॥
 अगवानन्ह जब दीखि वराता * उर आनंद पुलक भर गाता ॥
 देखि बनाव सहित अगवाना * मुदित वरातिन्ह हने निमाना ॥
 दोहा--हरपि परसपर मिलनहित, कछुक चले वगमेल ।

जनु आनंदसमुद्र दुइ, मिलत विहाई सुबल ॥३०५॥

वरपि मुमन सुरसुंदरि गावहिं * मुदित देव दुंदुभी बजावहिं ॥
 बस्तु सकल राखी नृप आगे * विनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागे ॥
 प्रेमसमेत राय मव लीन्हा * भइ वकमीम जाचकन्हि दीन्हा ॥
 करि पूजा मान्यता बड़ाई * जनवामे कहँ चले लेवाई ॥
 बसन विचित्र पाँवड़े परहीं * देखि धनदु धनमद परिहरहीं ॥
 अतिमुंदर दीन्हेउ जनवासा * जहँ मव कहँ मव भाँति सुपामा ॥
 जानी सिय वरात पुर आई * कछु निज महिमा प्रगटि जनाई ॥
 हृदय सुमिरि सब सिद्धि बोलाई * भूपपहुनई करन पठाई ॥
 दोहा--सिधि सब सियआयसु अकनि, गई जहाँ जनवास ।

लिये संपदा सकलसुख, सुर-पुर-भोग-विलास ॥३०६॥

निजनिज वाम विलोकि वराती * सुरमुख सकल मुलम मव भाँती ॥
 विभवभेद कछु कोउ न जाना * सकल जनक कर करहिं बखाना ॥

सियमहिमा रघुनायक जानी * हरषे हृदय हेतु पहिचानी ॥
 पितुआगमन सुनत दोउ भाई * हृदय न अति आनंदु अमाई ॥
 सकुचन्ह कहि न मकत गुरुपाहीं * पितु-दरसन-लालच मनु माहीं ॥
 विस्वामित्र विनय बड़ि देखी * उपजा उर संतोष विसेखी ॥
 हरषि वंधु दोउ हृदय लगाये * पुलक अंग अंबक जल छाये ॥
 चले जहाँ दसरथ जनवासे * मनहुँ सरोवर तकेउ पियासे ॥
 दोहा--भूप विलोके जवहिं मुनि, आवत सुतन्ह समेत ।

उठेउ हरषि सुखसिंधु महुँ, चले थाह सी लेत ॥३०७॥

मुनिहिं दंडवत कीन्ह महीसा * वार वार पदरज धरि सीसा ॥
 कौसिक राउ लिये उर लाई * कहि असीम पूछी कुसलाई ॥
 पुनि दंडवत करत दोउ भाई * देखि नृपति उर सुख न समाई ॥
 सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे * मृतकमरीर प्राण जनु भेटे ॥
 पुनि वसिष्ठपद सिर तिन्ह नाये * प्रेममुदित मुनिवर उर लाये ॥
 विप्रबृंद बंदे दुहुँ भाई * मनभावती असीम पाई ॥
 भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा * लिये उठाइ लाइ उर रामा ॥
 हरषे लषन देखि दोउ भ्राता * मिले प्रेम-परि-पूरित गाता ॥

दोहा--पुरजन परिजन जातिजन, जाचक मंत्री मीत ।

मिले जथाविधि सवाहे प्रभु, परमकृपालु बिनीत ॥३०८॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी * प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥
 नृप समीप सोहहिं सुत चारी * जनु धनधरमादिक तनुधारी ॥
 सुतन्ह समेत दसरथाहि देखी * मुदित नगर-नर-नारि विसेखी ॥
 सुमन वरषि सुर हनहिं निसाना * नाकनटी नाचहिं करि गाना ॥
 सतानंद अरु विप्र सचिवगन * मागध सूत विदुष बंदीजन ॥
 सहित बरात राउ सनमाना * आयसु माँगि फिरे अगवाना ॥
 प्रथम बरात लगन तें आई * ता तें पुर प्रमोद अधिकारै ॥
 ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं * बड़इ दिवसनिसि विधि सन कहहीं ॥

दोहा--रामु सीय सोभाअवधि, सुकृतअवधि दोउ राज ।

जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस, मिलि नर-नारि-समाज ॥३०९॥

जनक - सुकृत - मूरति वैदेही * दसरथसुकृत राम धरे देही ॥
 इन्ह सम काहु न सिव अवरार्ध * काहु न इन्ह समान फल लाधे ॥
 इन्ह सम कोउ न भयेउ जग माहीं * है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं ॥
 हम सब सकल सुकृत कै रासी * भये जग जनमि जनक-पुर-वामी ॥
 जिन्ह जानकी-राम-द्वि देखी * को सुकृती हम सरिस विमंखी ॥
 पुनि देखव रघु-बीर-विवाह * लेव भली विधि लोचन लाहू ॥
 कहहिं परस्पर कोकिलवयनी * एहि विवाह बड़ लाभ सुनयनी ॥
 बड़े भाग विधि बात बनाई * नयनअतिथि होइहहिं दोउ भाई ॥
 दोहा--बारहिं बार सनेहबस, जनक बोलाउब सीय ।

लैन आइहहिं बंधु दोउ, कोटि-काम-कमनाय ॥३१०॥

विविध भाँति होइहि पहुनाई * प्रिय न काहि अम मासुर माई ॥
 तब तब राम लपनहिं निहारी * होइहहिं सब पुरलोग सुखारी ॥
 सखि जस राम लपन कर जोटा * तैमेइ भूप संग दुइ टोटा ॥
 स्याम गौर सब अंग सुहाये * ते सब कहहिं देखि जे आये ॥
 कहा एक मैं आजु निहारे * जनु विरंचि निजहाथ मँवारे ॥
 भरतु रामही की अनुहारी * सहसा लखि न सकहिं नरनारी ॥
 लपन सत्रुसूदन एकरूपा * नख मित्र तें सब अंग अनूपा ॥
 मन भावहिं मुख वरनि न जाहीं * उपमा कहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥

छंद-उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहूँ कविकोविद कहहिं ।

बल-विनय-विद्या-मील-सोभा-सिंधु इन्ह मे एइ अहहिं ॥

पुर नारि सकल पसारि अंचल विधिहि बचन सुनावहीं ।

व्याहिअहु चारिउ भाइ एहि पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

सोरठा-कहहिं परस्पर नारि, बारिबिलोचन पुलक तन ।

सखि सब करव पुरारि, पुन्य-पयो-निधि भूप दोउ ॥३११॥

एहि विधि सकल मनोरथ करहीं * आनँद उमगि उमगि उर भरहीं ॥

जे नृप सीयस्वयंवर आये * देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाये ॥

कहत रामजसु विसद विसाला * निज निज भवन गये महिपाला ॥

गये बीति कछु दिन एहि भाँती * प्रमुदित पुरजन सकल वराती ॥

मंगलमूल लगनदिन आवा * हिमरितु अग्रहनमासु सुहावा ॥
 ग्रह तिथि नखत जोगु वर वारू * लगनसोधि विधि कीन्ह विचारू ॥
 पठै दीन्हि नारद मन मोई * गनी जनक के गनकन्ह जोई ॥
 सुनी सकल लोगन यह वाता * कहहिं जोतिपी आहि विधाता ॥
 दोहा-धनु-धूलि-बेला विमल, सकल-सुमंगल-मूल ।

विप्रन्ह कहेउ विदेह सन, जानि सगुन अनुकूल ॥३१२॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा * अब विलंब कर कारन काहा ॥
 सतानंद तव सचिव बोलाये * मंगल सकल साजि सब ल्याये ॥
 संख निमान पनव बहु वाजे * मंगलकलस सगुन सुभ साजे ॥
 सुभग सुआसिनि गावहिं गीता * करहिं वेदधुनि विप्र पुनीता ॥
 लेन चले सादर एहि भाँती * गये जहाँ जनवास बराती ॥
 कोसलपति कर देखि समाजू * अति लघु लाग तिन्हहिं सुरराजू ॥
 भयेउ समउ अब धारिय पाऊ * यह सुनि परा निमानहिं घाऊ ॥
 गुरुहि प्रवृत्ति करि कुलविधि राजा * चले संग मुनि-साधु-समाजा ॥
 दोहा-भाग्यविभव अवधेस कर, देखि देव ब्रह्मादि ।

लगे सराहन सहसमुख, जानि जनम निज वादि ॥३१३॥

सुरन्ह सुमंगल अवसर जाना * वरपहिं सुमन बजाइ निमाना ॥
 मिव ब्रह्मादिक विबुध बरूथा * चढ़े विमानहिं नाना जूथा ॥
 प्रेम-पुलक-तन हृदय उझाहू * चले विलोकन रामविआहू ॥
 देखि जनकपुर सुर अनुरागे * निजनिज लोक सबहि लघु लागे ॥
 चितवहिं चकित विचित्र विताना * रचना सकल अलौकिक नाना ॥
 नगर - नारि - नर रूपनिधाना * सुधर सुधरम सुभील सुजाना ॥
 तिन्हहिं देखि सब सुर-सुर-नारी * भये नखत जनु विधु उँजियारी ॥
 विधिहि भयेउ आचरजु विसेखी * निज करनी कछु कतहुँ न देखी ॥
 दोहा-सिव समभाये देव सब, जनि आचरज भुलाहु ।

हृदय विचारहु धीर धरि, सिय-रघु-बीर-विआहु ॥३१४॥

जिन्ह कर नामु लेत जग भाहीं * सकल-अमंगल-मूल नसाहीं ॥
 करतल होहि पदारथ चारी * तेइ सिय रामु कहेउ कामारी ॥

एहि विधि संभु सुरह समुझावा * पुनि आगे बरवमह चलावा ॥
 देवह देखे दसरथ जाता * महामोदु मन पुलकित गाता ॥
 साधु समाजु संग महिदेवा * जनु तनु धरे करहिं सुख मेवा ॥
 सोहत साथ सुभग सुत चारी * जनु अपवरग सकल तनुधारी ॥
 मरकत-कनक-बरन बर जोरी * देखि सुरन्ह भइ प्रीति न थोरी ॥
 पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरपे * नृपहि सराहि सुमन तिन्ह वरपे ॥
 दोहा-रामरूप नख-सिख-सुभग, वारहिं वार निहारि ।

पुलक गात लोचन सजल, उमासमेत पुरारि ॥३१५॥

केकि-कंठ-दुति स्यामल अंगा * तड़ितविनिंदक वमन सुरंगा ॥
 व्याहविभूषन विविध वनाये * मंगलमय सब भाँनि मुहाये ॥
 सरद-बिमल-विधु-बदन मुहावन * नयन नवल-राजीव-जजावन ॥
 सकल अलौकिक सुंदरताई * कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥
 वंधु मनोहर मोहहिं संगी * जात नचावत चपल तुरंगा ॥
 राजकुअँर बरवाजि देखावहिं * वंमप्रमंमक विरद सुनावहिं ॥
 जेहि तुरंग पर रामु विराजे * गति बिलोकि ग्यगनायकु लाजे ॥
 कहि न जाइ मब भाँति मुहावा * वाजिवंधु जनु काम बनावा ॥

छंद-जनु बाजिवंधु बनाइ मनमिजु रामहित अतिमोहई ।

आपने बय बल रूप गुन गति सकल भुवन विमोहई ॥

जगमगत जीन जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे ।

किंकिनि ललामु लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥

दोहा--प्रभुमनसहिं लयलीन मनु, चलत बाजि छवि पाव ।

भूपितउडुगन तड़ितवनु, जनु वर बरहि नचाव ॥३१६॥

जेहि वर बाजि रामु असवारा * तेहि सारदहु न बरने पारा ॥
 संकर राम - रूप - अनुरागे * नयन पंचदस अतिप्रिय लागे ॥
 हरि हितसहित रामु जब जोहे * रमासमेत रमापति मोहे ॥
 निरखि रामछवि विधि हरपाने * आठै नयन जानि पछिताने ॥
 सुर - सेनप - उर बहुत उछाहू * विधि तें डवढ़ सु-लोचन-लाहू ॥
 रामहिं चितव सुरेस सुजाना * गौतमसाप परमहित माना ॥

देव सकल सुरपतिहि मिहाहीं * आजु पुरंदरमम कोउ नाही ॥
मुदित देवगन रामहिं देखी * नृपसमाज दुहुँ हरष बिसेखी ॥

छंद-अतिहरष राजसमाजु दुहुँ दिमि दुंदुभी बाजहिं घनी ।

वरपहिं सुमन सुर हरषि कहि जयजयति जय रघु-कुल-मनी ॥

एहि भाँति जानि बरात आवत वाजने बहु बाजहीं ।

रानी मुआसिनि वोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ॥

दोहा--सजि आरती अनेक विधि, मंगल सकल सवाँरि ।

चलीं मुदित परिछन करन, गजगामिनि बरनारि ॥३१७॥

विधुवदनी सब सब मृगलोचनि * सब निज तनछविरति-मद-मोचनि ॥

पहिरे बरन बरन बर चीरा * सकल विभूषन सजे सरीरा ॥

सकल सुमंगल अंग बनाये * करहिं गान कलकंठ लजाये ॥

कंकन किंकिनि नूपुर वाजहिं * चाल विलोकि काम गज लाजहिं ॥

बाजहिं वाजन विविधप्रकारा * नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥

सची सारदा रमा भवानी * जे सुरतिय मुचि महज मथानी ॥

कपट - नारि - वर - बेष बनाई * मिलीं सकल रनिवासहिं जाई ॥

करहिं गान कल मंगलवानी * हरषविवस सब काहु न जानी ॥

छंद-को जान केहि आनंदवस सब ब्रह्म बर परिछन चलीं ।

कलगान मधुर निमान वरपहिं सुमन सुर सोभा भलीं ॥

आनंदकंज विलोकि दूतह सकल हिय हरषित भई ।

अंभोज-अंबक-अंबु उमगि सुअंस पुलकावलि छई ॥

दोहा-जो सुख भा सिय-मातु-मन, देखि राम-वर-बेषु ।

सो न सकहिं कहिकलप-सत, सहस सारदा सेषु ॥३१८॥

नयन नीरु हटि मंगल जानी * परिछन करहिं मुदित मन रानी ॥

वेदविहित अरु कुलआचारु * कीन्ह भली विधि सब व्यवहारु ॥

पंच सबद सुनि मंगल गाना * पट पाँवड़े परहिं विधि नाना ॥

करि आरती अरघ तिन्ह दीन्हा * राम गवन मंडप तब कीन्हा ॥

दसरथ सहित समाज विराजे * विभव विलोकि लोकपति लाजे ॥

समय समय सुर बरपहिं फूला * सांति पढ़हिं महिभुर अनुकूला ॥

नभ अरु नगर कोलाहल होई * आपन पर कछु सुनै न कोई ॥
एहि विधि रामु मंडपहिं आये * अरघु देइ आमन बैठाये ॥

छंद-वैठारि आसन आरती करि निरखि वरु सुख पावहीं ।
मनि वसन भूपन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि मुरवर विप्रवेष बनाइ कौतुक देखहीं ।
अवलोकि रघु-कुल-कमल-रवि-ध्रुवि सुफल जीवन लेखहीं ॥

दोहा--नाऊ बारी भाट नट, रामनिच्छावरि पाइ ।

मुदित असीसहिं नाइसिर, हरपु न हृदय समाइ ॥३१६॥

मिले जनकु दसरथु अतिप्रीती * करि वैदिक लौकिक सब रीती ॥
मिलत महा दोउ राज विराजे * उपमा खोजि खोजि कविलाजे ॥
लही न कतहुँ हारि हिय मानी * इन्ह सम एइ उपमा उर आनी ॥
सामथ देखि देव अनुरागे * सुमन वरपि जसु गावन लागे ॥
जगु विरंचि उपजावा जब ते * देखे सुने व्याह बहु तव ते ॥
सकल भाँति सम साजु समाजू * सम समधी देखे हम आजू ॥
देवगिरा सुनि सुंदर साँची * प्रीति अलौकिक दुहुँ दिमि माँची ॥
देत पाँवडे अरघु सुहाये * सादर जनकु मंडपहिं ल्याये ॥

छन्द-मंडप विलोकि विचित्ररचना रुचिरता मुनिमन हरे ।

निजपानि जनक सुजान सब कहँ आनि मिहासन थरे ॥

कुल-इष्ट-सरिस वसिष्ठ पूजे विनय करि आमिष लही ।

कौसिकहिं पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही ॥

दोहा--वामदेव आदिक रिषय, पूजे मुदित महीस ।

दिये दिव्य आसन सबहि, सब सन लही असीस ॥३२०॥

बहुरि कीन्ह कोसलपति पूजा * जानि ईससम भाव न दृजा ॥
कीन्हि जोरि कर विनय बड़ाई * कहि निज भाग्य विभव बहुताई ॥
पूजे भूपति सकलवराती * समधीमम मादर सब भाँती ॥
आसन उचित दिये सब काहू * कहउँ कहा मुख एक उद्धाहू ॥
सकलवरात जनक सनमानी * दान मान विनती वर बानी ॥
विधि हरिहर दिसिपति दिनराऊ * जे जानहिं रघु-धीर-प्रभाऊ ॥

कपट - विप्र - वर - वेपु वनाये * कौतुक देखहिं अति मचुपाये ॥
पूजे जनक देवसम जाने * दिये सुआसन विनु पहिचाने ॥

छन्द--पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई ।
आनंदकंद विलोकि दृलह उभय दिशि आनंदमई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानमिक आसन दये ।
अवलोकि सीतु सुभाउ प्रभु को विबुधमन प्रमुदित भये ॥

दोहा--रामचंद्र-मुख-चन्द्र-छवि, लोचन चारु चकोर ।

करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोदु न थोर ॥३२१॥

ममउ विलोकि वसिष्ठ बोलाये * सादर सतानंद सुनि आये ॥
वेगि कुअँरि अब आनहु जाई * चले मुदित मुनिआयसु पाई ॥
रानी सुनि उपरोहित वानी * प्रमुदित मखिन्ह समेत सयानी ॥
विप्रवध कुलवृद्ध बोलाई * करि कुलरीति सुमंगल गाई ॥
नारिवेष जे सुर - वर - वामा * सकल सुभाय सुन्दरी स्यामा ॥
तिन्हहिं देखि सुख पावहिं नारी * विनु पहिचानि प्रान ते प्यारी ॥
वार वार मनमानहिं रानी * उमा-रमा - सारद - सम जानी ॥
सीय सवँरि समाज वनाई * मुदित मंडपहिं चलीं लेवाई ॥

छन्द--चलि ल्याइ सीतहि मर्घी सादर मजि सुमंगल भामिनी ।

नव मम साजे सुंदरी सब मत्त - कुंजर - गामिनी ॥

कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं ।

मंजीर नूपुर कलित कंकन तालगति वर वाजहीं ॥

दोहा--सोहति वनितावृन्द महँ, सहज सुहावनि सीय ।

छवि-ललना-गुन मध्यजनु, सुखमा तिय कमनीय ॥३२२॥

मिय सुंदरता वरनि न जाई * लघुमति बहुत मनोहरताई ॥

आवत दीखि वरातिन्ह सीता * रूपरामि सब भाँति पुनीता ॥

सबहि मनहिं मन किये प्रनामा * देखि राम भये पूरनकामा ॥

हरषे दमरथ सुतन्ह समेता * कहिन जाइ उर आनंद जेता ॥

सुर प्रनाम करि वरिसहिं फूला * मुनि-असीस-धुनि मंगलमूला ॥

गान - निमान - कोलाहलु भारी * प्रेम - प्रमोद - मगन नरनारी ॥

एहि विधि सीय मण्डपहिं आई * प्रमुदित भांति पढ़हिं मुनिराई ॥
तेहि अचर कर विधि व्यवहारू * दुहुँ कुलगुरु सब कीन्ह अचारू ॥

छन्द-आचार करि गुरु गौरि गनपति मुदित विप्र पुजावहीं ।

सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अतिमुख पावहीं ॥

मधुपर्क मंगलद्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महँ चहें ।

भरे कनककोपर कलस मो तव लिये परिचारक रहें ॥

कुलरीति प्रीतिसमेत रवि कहि देत सबु सादर किये ।

एहि भांति देव पुजाइ मीतहि सुभग सिंहासन दिये ॥

सिय-राम-अवलोकनि परमपर प्रेम काहु न लखि परे ।

मन-बुद्धि-वर-बानी-अगोचर प्रगट कवि कैमे करे ॥

दोहा--होम समय तनु धरि अनलु, आतसुख आहुति लेहिं ।

विप्रवेप धरि वेद सब, कहि विवाहविधि देहिं ॥३२३॥

जनक-पाट-महिषी जग जानी * सीयमातु किमि जाइ बधानी ॥

सुजम सुकृत सुख सुंदरताई * सब समेटि विधि रची बनार्ई ॥

समउ जानि मुनिवरन्ह बोलाई * सुनत सुआमिनि सादर ल्याई ॥

जनक-वाम-दिसि सोह सुनयना * हिमगिरि मंग बनी जनु भयना ॥

कनककलस मनिकोपर रूरे * सुचि-सुगंध-मंगल-जल-पूरे ॥

निजकर मुदित राय अरु रानी * धरे राम के आगे आनी ॥

पढ़हिं वेद मुनि मंगलवानी * गगन गुमन अरि अचर जानी ॥

वर विलोक दंपति अनुरागे * पाय पुनीत पखारन लागे ॥

छन्द-लागे पखारन पायपंकज प्रेम तनु पुलकावली ।

नभ नगर गान-निसान-जय-धुनि उमगि जनु चहुँ दिगि चली ॥

जे पद मरोज मनोज-अरि-उर-भर मदव विराजहीं ।

जे सुकृत सुमिरत विमलता मन मकल कलिमल भाजहीं ॥

जे परमि मुनिवनिता लही गति रही जो पातकमई ।

मकरंद जिन्ह को मंभुमिर सुचिता अवधि भुर वरनई ॥

करि मधुप मुनि मन जोगिजन जे मेइ अभिमत गति लहें ।

ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहें ॥

वर-कुअँरि-करतल जोरि साखोच्चार दोउ कुलगुरु करें ।
 भयो पानिगहनु त्रिलोकि विधि सुर मनुज मुनि आनंद भरे ॥
 मुखमूल दृलह देखि दंपति पुलक तनु हुलस्यो हिये ।
 करि लोक-बंद-विधान कन्यादान नृपभूपन किये ॥
 हिमवंत जिमि गिरिजा महेमहि हरिहि श्री मागर दई ।
 तिमि जनक रामहि मिय समरपी विस्व कल कीरति नई ॥
 क्यों करै विनय विदेह कियो विदेह मूरति भावँरी ।
 करि होम विधिवत गाँठि जोरी होन लागी भावँरी ॥

दोहा--जयधुनि बंदी-बेद धुनि, मंगलगान निसान ।

सुनि हरपहिं वरसहिं विबुध, सुर-तरु-सुमन सुजान ॥३२४॥

कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं * नयनलाभ सब सादर लेहीं ॥
 जाइ न वरनि मनोहर जोरी * जो उपमा कहु कहीं सो थोरी ॥
 राम सीय सुन्दर प्रतिब्राहीं * जगमगाति मनिखंभन्ह माहीं ॥
 मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा * देखत राम विवाह अनूपा ॥
 दरसलालसा सकुच न थोरी * प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
 भये मगन सब देखनिहारे * जनक समान अपान विचारे ॥
 प्रमुदित मुनिन्ह भावँरी फेरी * नेगसहित सब रीति निवेरी ॥
 राम सीयमिर सुंदर देहीं * सोभा कहि न जात विधि केहीं ॥
 अरुन पराग जलजु भरि नीके * ससिहि भूप अहि लोभ अमी के ॥
 बहुरि वसिष्ठ दीन्ह अनुमामन * वर दुलहिनि बैठे एक आसन ॥

छन्द--बैठे वरासन राम जानकि मुदित मन दसरथु भये ।

तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपने सुकृत-सुर-तरु-फल नये ॥
 भरि भुवन रहा उच्चाहु राम विवाहु भा सबही कहा ।
 केहि भाँति वरनि मिरात रसना एक यहु मंगलु महा ॥
 तव जनक पाइ वसिष्ठ आयसु व्याहसाज सवाँरिके ।
 मांडवी सुतिकीरति उर्मिला कुअँरि लई हँकारिके ॥
 कुस-केतु-कन्या प्रथम जो गुन-सील-सुख-सोभा-मई ।
 सब रीति-प्रीति-समेत करि सो व्याहि नृप भरतहि दई ॥

जानकी-लघु-भगिनी सकल सुंदर मिरोमनि जानि कै ।
 सो तनय दीन्ही व्याहि लपनहि सकल बिधि मनमानि कै ॥
 जेहि नाम सुतिकीरति सुलोचनि मुमुखि सब गुनआगरी ।
 सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप मील उजागरी ॥
 अनुरूप बर दुलहिनि परमपर लगि सकुचि हिय हरपहीं ।
 सब मुदित सुंदरता मराहहिं मुमन मुरगन बरपहीं ॥
 सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं ।
 जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं ॥

दोहा—मुदित अवधपति सकलसुत, बधुन्ह समेत निहारि ।

जनु पाये महि-पाल-मनि, क्रियन्ह सहित फल चारि ॥३२५॥

जसि रघुवीर व्याहविधि बरनी * मकलकुअँर व्याहे तेहि करनी ॥
 कहि न जाइ कलु दाइज भूरी * रहा कनकमनि मंडप पूरी ॥
 कंवल बमन विचित्र पटोरे * भाँति भाँति बहुमोल न थोरे ॥
 गज रथ तुरग दास अरु दामी * धेनु अलंकृत कामदुहा मी ॥
 वस्तु अनेक करिअ किमि लेखा * कहि न जाइ जानहिं जिन्ह देखा ॥
 लोकपाल अवलोकि मिहाने * लीन्ह अवधपति सब मुख माने ॥
 दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा * उवरा मो जनवामेहि आवा ॥
 तव करि जोरि जनक मृदुवानी * बोले सब धरात मनमानी ॥

छंद—मनमानि सकल बरात आदर दान विनय बड़ाइ के ।

प्रमुदित महा मुनिबृंद वंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै ॥
 सिर नाइ देव मनाइ सब मन कहत कर मंपुट किये ।
 मुर माधु चाहत भाव मिंधु कि तोष जलअंजलि दिये ॥
 कर जोरि जनक बहोरि बंधुममेत कोमलराय मों ।
 बोले मनोहर बयन मानि मनह मील सुभाय मों ॥
 मनबंध राजन रावरे हम बड़े अब सबविधि भये ।
 येहि राज माज ममेत सेवकु जानिबी विनु गथ लये ॥
 ए दारिका परिचारिका करि पालवी करुनामई ।
 अपराध छमिवो बोलि पठये बहुत हों दीख्यो कई ॥

पुनि भानु-कुल-भूपन सकल-मनमान-निधि समधी किये ।
 कहि जात नहिं विनती परमपर प्रेम परिपूरन हिये ॥
 बृदारकागन मुनत वरपहिं राउ जनवामेहिं चले ।
 दुंदुभी जयधुनि वेदधुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
 तव मखी मंगलगान करत मुनीभ्रम्रायमु पाइ के ।
 दृलह दुलहिनिन्हि महित मुंदर चलीं कोहवर ल्याइ के ॥

दोहा-पुनि पुनि रामहिं चितवसिय, सकुचति मन सकुचैन ।

हरत मनोहर-मीन-छवि प्रेम पियासे नैन ॥३२६॥

स्याम मरीर सुभाय सुहावन * सोभा कोटि-मनोज-लजावन ॥
 जावकजुत पदकमल सुहाये * मुनि-मन-मधुप रहत जिन्ह छाये ॥
 पीत पुनीत मनोहर धोती * हरत वाल-रवि-दामिनि-जोती ॥
 कल किंकिन कटिमूत्र मनोहर * बाहु विमाल विभूपन सुंदर ॥
 पीत जनेउ महाछवि देई * करमुद्रिका चोरि चित लेई ॥
 मोहत व्याहमाज सब माजे * उर आयउ भूपन उर राजे ॥
 पियर उपरना काँथा मोती * दुहुँ आँधरन्हि लगे मनि मोती ॥
 नयन कमल कल कुंडल काना * बदन सकल मौंदर्जनिधाना ॥
 सुंदर भृकुटि मनोहर नागा * भालतिलकु रुचिरता निवासा ॥
 मोहत मोरु मनोहर माथे * मंगलमय मुकुतामनि गाथे ॥

छन्द-गाथं महामनि मोरु मंजुल अंग सब चितचोरहीं ।

पुरनारि सुरमुन्दरी वरहिं विलोकि सब तून तोरहीं ॥

मनि वसन भूपन बारि आरति करहिं मंगल गावहीं ।

सुर सुमन वरिगहिं मृत मागध वंदि मुजस सुनावहीं ॥

कोहवरहिं आने कुअँर कुअँरि सुआमिनिन्हि सुख पाइ के ।

अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ के ॥

लहकोरि गौरि मिग्वाव रामहिं मीय मन सारद कहें ।

रनिवासु हाम-विलास-रस-वम जनम को फल सब लहें ॥

निज-पानि-मनि महँ देखि प्रतिमूरति सु-रूप-निधान की ।

चालति न भुजबल्ली विलोकनि-विरह-भय-वस जानकी ॥

कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली ।
 बर कुअँरि सुन्दर सकल सखी त्रिवाइ जनवासेहिं चली ॥
 तेहि समय सुनिय असीम जहँ तहँ नगर नभ आनँद महा ।
 चिरजिअहु जोरी चारु चारयो मुदितमन मवही कहा ॥
 जोगींद्र भिद्र मुनीम देव विलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।
 चले हरपि वरपि प्रमून निज-निज-लोक जय जय जय भनी ॥

दोहा--सहित बधूटिन्ह कुअँर सब, तव आये पितु पास ।

सोभा मंगल मोद भरि, उमगेउ जन जनवास ॥३२७॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती * पठये जनक बोलाइ बराती ॥
 परत पाँवड़े बसन अनूपा * सुतन्ह मभेत गवन किय भूपा ॥
 सादर सब के पाय पखारे * जथाजांग पीढ़न बठारे ॥
 धोये जनक अवध - पति - चरना * सील भनेहु जाइ नहिं वरना ॥
 बहुरि राम-पद-पंकज धोये * जे हर हृदयकमल गहँ गये ॥
 तीनिउ भाइ रामभम जानी * धोये चरन जनक निजपानी ॥
 आसन उचित मवहि नृप दीन्हे * बोलि मूपकारी सब लीन्हे ॥
 सादर लगे परन पनवारे * कनककील मनिपान मवारे ॥

दोहा--सूपोदन सुरभी सरपि, सुन्दर स्वाहु पुनीत ।

छन महँ सब के परसि गे, चतुर सुआर विनीत ॥३२८॥

पंचकवल करि जेवन लागे * गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
 भाँति अनेक परे पकवाने * सुधामरिम नहिं जाहिं बखाने ॥
 परुमन लगे सुआर सुजाना * विंजन विविध नाम को जाना ॥
 चारि भाँति भोजन विधि गाई * एक एक विधि बरनि न जाई ॥
 छ रस रुचिर विंजन बहु जाती * एक एक रग अगनिन भाँती ॥
 जेवत देहिं मधुर धुनि गारी * लेइ लेइ नाथ पुरुष अरु नारी ॥
 समय मुहावनि गारि विगजा * हँमत राउ मुनि महित ममाजा ॥
 एहि विधि मवही भोजन कीन्हा * आदर महित आचमन दीन्हा ॥

दोहा--देइ पान पूजे जनक, दसरथ सहित समाज ।

जनवासेहि गवने मुदित, सकल-भूप-सिरताज ॥३२९॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं * निमिपमरिसदिनजामिनि जाहीं ॥
 वड़े भार भू - पति - मनि जागे * जाचक गुनगन गावन लागे ॥
 देखि कुअँर वर वधुन्ह ममेता * किमि कहि जात मोद मन जेता ॥
 प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं * महाप्रमोदु प्रेमु मन माहीं ॥
 करि प्रनामु पूजा कर जोरी * बोले गिरा अमिअ जनु वारी ॥
 तुम्हरी कृपा मुनहु मुनिराजा * भयेंउ आजु मैं पूरनकाजा ॥
 अब मव विप्र बोलाइ गुमाई * देहु धेनु सब भाँति बनाई ॥
 मुनि गुरु करि महिपाल बडाई * पुनि पठये मुनिबृंद बोलाई ॥
 दोहा--वामदेव अरु देवरिपि, बालमीकि जाबालि ।

आये मुनि-वर-निकर तव, कौसिकादि तपसालि ॥३३०॥

दण्ड प्रनामु मवहि नृप कीन्हे * पूजि सप्रेम वरासन दीन्हे ॥
 चारि लच्छ वरधेनु माँगाई * काम-सुरभि-मम मील सुहाई ॥
 मव विधि सकल अलंकृत कीन्ही * मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्ही ॥
 करत विनय बहुविधि नरनाहू * लहेउ आजु जग जीवनलाहू ॥
 पाइ असीसु महीम अनंदा * लिये बोलि पुनि जाचकबृंदा ॥
 कनक वसन मनि हय गय स्यंदन * दिये वृञ्जि रुचि रवि-कुल-नंदन ॥
 चले पढ़त गावत गुनगाथा * जय जय जय दिन-कर-कुल-नाथा ॥
 एहि विधि राम-विआह-उच्चाहू * मकै न वरनि सहसमुख जाहू ॥
 दोहा--वार वार कौसिक चरन, सीसु नाइ कह राउ ।

यह सबु सुखु मुनिराज तव, कृपा-कटाच्छ-प्रभाउ ॥३३१॥

जनक सनेह मीलु कर तृती * नृपु सब भाँति सराह विभूती ॥
 दिन उठि विदा अबधपति माँगा * राखहिं जनक सहित अनुरागा ॥
 नित नूतन आदर अधिकारै * दिन प्रति मुहम भाँति पहुनाई ॥
 नित नव नगर अनंद उच्चाहू * दसरथ गवन सुहाइ न काहू ॥
 बहुत दिवस बीते एहि भाँती * जनु सनेहरजु बंधे वराती ॥
 कौसिक सतानंद तव जाई * कहा विदेह नृपहि समुझाई ॥
 अब दसरथ कहँ आयसु देहू * जद्यपि अँडि न सकहु सनेहू ॥
 भलेहिं नाथ कहि सचिव बोलाये * कहि जय जीव सीस तिन्ह नाये ॥

दोहा-अवधनाथु चाहत चलन, भीतर करहु जनाउ ।

भये प्रेमवस सचिव सुनि, विप्र सभासद राउ ॥३३२॥

पुरवासी सुनि चलिहि बराता * पूछत विकल परसपर वाता ॥
 सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने * मनहुँ साझ सरसिज सकुचाने ॥
 जहँ जहँ आवत बसे बराती * तहँ तहँ भिद्ध चला बहुभाँती ॥
 विविधि भाँति मेवा पकवाना * भोजनसाज न जाइ बगवाना ॥
 भरि भरि बसह अपार कहारा * पठये जनक अनेक सुआरा ॥
 तुरग लाख रथ सहस पचीसा * मकल सवारै नख अरु सीमा ॥
 मत्त सहस दस सिंधुर साजे * जिन्हहिं देखि दिमकुंजर लाजे ॥
 कनक बसन मनि भरि भरि जाना * महिषी धेनु वस्तु विधि नाना ॥

दोहा--दाइज अमित न सकिअ कहि, दीन्ह विदेह बहोरि ।

जो अवलोकत लोकपति, लोक-संपदा थोरि ॥३३३॥

सब समाज एहि भाँति बनाई * जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥
 चलिहि बरात सुनत सब रानी * विकल मीनगन जनु लघु पानी ॥
 पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं * देइ अमीम मिग्वावन देहीं ॥
 होयेहु संतत पियहि पियारी * चिर अद्विवात अमीम हमारी ॥
 सासु-ससुर-गुरु-मेवा करेहु * पतिरुख लखि आयसु अनुमरेहु ॥
 अति-सनेह-वस मग्गी सयानी * नारिधरमु मिग्वाहिं मृदुवानी ॥
 सादर सकल कुअँरि ममुझाई * रानिन्ह चार बार उर लाई ॥
 बहुरि बहुरि भेटहिं महतारी * कहहिं विगंचि रची कत नारी ॥

दोहा--तेहि अवसर भाइन्ह सहित, राम भानु-कुल-केतु ।

चले जनकमंदिर मुदित, विदा करावन हेतु ॥३३४॥

चारिउ भाइ सुभाय सुहाये * नगर-नारि-नर देखन धाये ॥
 कोउ कह चलन चहतहहिं आजू * कीन्ह विदेह विदा कर माजू ॥
 लेहु नयन भरि रूप निहारी * प्रिय पाहुने भूपसुत चारी ॥
 को जानै केहि सुकृत सयानी * नयन अतिथि कीन्हे विधि आनी ॥
 मरनसील जिमि पाव पियूवा * सुरतरु लहे जनम कर भूया ॥
 पाव नारकी हरिपदु जैमे * इन्ह कर दरसन हम कहँ तैमे ॥

निरग्वि राममोभा उर धरहू * निज-मन-फनि-भूरति-मनि करहू ॥
एहि विधि भवहि नयनफल देवा * मयं कुअँरं मव राजनिकेता ॥
दोहा--रूपसिंधु सब बंधु लग्नि, हरपि उठेउ रनिवासु ।

करहिं निछावरि आरती, महा मुदित मन सासु ॥३३५॥

देग्वि राम झवि अतिअनुगामी * प्रेम विधम पुनि पुनि पद लागीं ॥
रही न लाज प्रीत उर झई * महज मनेह वरनि किमि जाई ॥
भाइन्ह सहित उवाटि अन्हवाये * करम अमन अनि हेतु जेवाये ॥
बोले रामु सुधवमर जानी * मीठ-मनेह-सकुच-मय बानी ॥
राउ अवध पुर बहन भिधाये * विदा होल हम हहाँ पठाये ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू * बालक जानि करब नित नेहू ॥
मुनत बचन बिलग्येउ रनिवासु * योनि न सकहिं प्रेम बस सामु ॥
हृदय लगाइ कुअँरि मव लीन्हीं * पतिन्हसोंपि विनती अति कीन्हीं ॥

छंद--करि विनय मिय रामहिं ममरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै ।

बनि जाउँ तात मुजान तुम कहँ विदित गति मव की अहे ॥

परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय मिय जानिबी ।

तुलसी सुमीम मनेह लग्नि निज किंकरी करि गानिबी ॥

सोरठा-तुम परिपूरनकाप, जान सिगोमनि भाव प्रिय ।

जन-गुन-गाहकराम, दोष-दलन करुनायतन ॥३३६॥

अम कहि नही बरन गहि रानी * प्रेमपंक जनु गिरा मपानी ॥
मुनि मनेहमानी बरवानी * बहु विधि राम मागु मनवानी ॥
राम विदा माँगा करजोरी * कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी ॥
पाइ अमीम बहुरि मिरु नाई * भाइन्ह सहित चले रघुराई ॥
मंजु-मधुर-भूरति उर आनी * भई मनेह भियिल मव रानी ॥
पुनि धीरज धरि कुअँरि हँकारी * बार बार भेटहिं महतारी ॥
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी * वढी परमपर प्रीति न थोरी ॥
पुनिपुनि मिलति मखिन्ह बिलगाई * बाल बन्धु जिमि धेनु लवाई ॥
दोहा-प्रेम विवस नरनारि सब, सखिन्ह सहित रनिवासु ।

मानहुँ कीन्ह विदेहपुर, करुना-विरह-निवासु ॥३३७॥

सुक सारिका जानकी ज्याये * कनकपिंजरन्हि राखि पठाये ॥
 व्याकुल कहहिं कहाँ वैदेही * सुनि धीरजु परिहरै न केही ॥
 भये विकल खग मृग एहि भाँती * मनुजदसा कैमे कहि जाती ॥
 बंधुसमेत जनकु तव आये * प्रेम उमगि लोचन जल द्वाये ॥
 सीय विलोकि धीरता भारी * रहे कहावत परम विरागी ॥
 लीन्हि राय उर लाइ जानकी * मिठी महाभरजाद ज्ञान की ॥
 समुझावत सब मखिव मयाने * कीन्ह विचारु अनभर जाने ॥
 वारहिंवार सुता उर लाई * मजि मुंदर पालकी मँगाई ॥

दोहा-प्रेम विवस परिवार सब, जानि सुलगन नरेस ।

कुअँरि चढ़ाई पालकिन्ह, सुमिरे सिद्ध गनेस ॥३३८॥

बहुविधि भूप सुता समुझाई * नागिधरम कुलरीति मिथवाई ॥
 दासी दाम दिये बहुतरे * मुचि मेवक जे प्रिय गिय करे ॥
 सीय चलन व्याकुल पुरवामी * होहिं मगुन सुभ मंगलरामी ॥
 भूमुर मखिव समेत समाजा * गंग चले पहुँचावन राजा ॥
 समय विलोकि वाजनं वाजे * ग्य गज वाजि बगातिन्ह भाजे ॥
 दमरथ धिप्र बोनि भव लीन्हे * दान मान परिपूर्ण कीन्हे ॥
 चरन-मरोज-धरी धरि सीमा * मुदित महीपति पाइ अमीमा ॥
 सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना * मंगलमूल मगुन भये नाना ॥

दोहा-सुर प्रभून वरपहिं हरपि, करहिं अपञ्चरा गान ।

चले अवधपति अवधपुर, मुदित वजाइ निसान ॥३३९॥

नृप करि विनय महाजन फेरे * ग़ादर मकल माँगने रेरे ॥
 भूषन वसन वाजि गज दीन्हे * प्रेम पाँपि ठाढ़े मव कीन्हे ॥
 वार वार विरदावलि भार्या * फिरे मकल रामहिं उर राख्या ॥
 बहुरि बहुरि कोमलपति कहहीं * जनक प्रेमवम फिरै न चहहीं ॥
 पुनि कह भूपति वचन मुहाये * फिरिअ महीप दृगि वड़ि आये ॥
 राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े * प्रेमप्रवाह विलोचन वाढ़े ॥
 तव विदेहु बोले कर जोरी * वचन मनेहमुधा जनु वोरि ॥
 करौं कवन विधि विनय बनाई * महागज मोहि दीन्हि बड़ाई ॥

दोहा-कोसलपति समधी सजन, सनमाने सब भाँति ।

मिलनि परसपर विनय अति, प्रीति न हृदय समाति ॥३४०॥

मुनिमंडलिहि जनक सिरु नावा * आभिरवाद सबहि मन पावा ॥

सादर पुनि भेंटें जामाता * रूप-सील-गुन-निधि सब भ्राता ॥

जोरि पंक-रुह-पानि सुहाये * बोले वचन प्रेम जनु जाये ॥

राम करौं केहि भाँति प्रमंमा * मुनि-महेस-मन-मानस-हंसा ॥

करहिं जोग जोगी जेहि लागी * कोह मोह ममता मद त्यागी ॥

व्यापक ब्रह्म अलख अविनायी * चिदानंद निरगुन गुनरासी ॥

मनममेत जेहि जान न वानी * तरकि न सकहिं मकल अनुमानी ॥

महिमा निगम नेति कहि कहई * जो तिहुँ काल एकरस अहई ॥

दोहा--नयनविषय मो कहूँ भयेउ, सो समस्त-सुख-मूल ।

सबहि लाभ जगजीव कहँ, भयेईस अनुकूल ॥३४१॥

मवहिं भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई * निज निज जानि लीन्ह अपनाई ॥

होहिं सहस दस सारद सेखा * करहिं कलपकोटिक भरि लेखा ॥

मोर भाग्य राउर गुनगाथा * कहिं न सिराहिं सुनहु रघुनाथा ॥

मैं कछु कहौं एक बल मोरे * तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥

बारवार माँगौं कर जोरे * मनु परिहरै चरन जनि भोरे ॥

सुनि बर वचन प्रेम जनु पोषे * पूरनकाम रामु परितोषे ॥

करि बर विनय सगुर सनमाने * पितु कौसिक वसिष्ठ सम जाने ॥

विनती बहुरि भरत सन कीन्ही * मिलि मप्रेम पुनि आसिष दीन्ही ॥

दोहा-मिले लषन रिपुसूदनहिं, दीन्हि असीस महीस ।

भये परसपर प्रेमबस, फिरि फिरि नावहिं सीस ॥३४२॥

बार बार करि विनय बड़ाई * रघुपति चले संग सब भाई ॥

जनक गहे कौसिकपद जाई * चरनरेनु सिर नयनन्हि लाई ॥

सुनु मुनीसवर दरसन तोरे * अगम न कछु प्रतीति मन मोरे ॥

जो सुख मुजस लोकपति चहहीं * करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥

सो सुख मुजस सुलभ मोहि स्वामी * सब सिधि तव दरसन अनुगामी ॥

कीन्हि विनय पुनि पुनि सिरु नाई * फिरे महीस आसिषा पाई ॥

चली बरात निसान वजाई * मुदित झोट बड़ सब समुदाई ॥
 रामहिं निरखि ग्राम-नर-नारी * पाइ नयनफलु होहिं सुखारी ॥
 दोहा-बीच बीच बर वास करि, मगलोगन्ह सुख देत ।

अवध समीप पुनीत दिन, पहुँची आइ जनेत ॥३४३॥

हने निसान पवन बर वाजे * भेरि-संख-धुनि ह्य गय गाजे ॥
 झाँझि विरव डिंडिमी सुहाई * सरस राग वाजहिं सहनाई ॥
 पुरजन आवत अकनि बराता * मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥
 निज निज सुंदर मदन सवाँरे * हाट वाट चौहट पुर द्वारे ॥
 गली सकल अरगजा मिचाई * जहँ तहँ चौके चारु पुराई ॥
 बना बजारु न जाइ बखाना * तोरन केतु पताक विताना ॥
 सफल पूगफल कदलि रमाला * रोपे वकुल कदंब तमाला ॥
 लगे सुभग तरु परमत धरनी * मनिमय आलवाल कल करनी ॥

दोहा-विविध भाँति मंगलकलस, गृह गृह रचे सवाँरि ।

सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघु-बर-पुरी निहारि ॥३४४॥

भूपभवनु तेहि अवसर सोहा * रचना देखि मदनमन मोहा ॥
 मंगल सगुन मनोहरताई * रिधि मिधि सुख संपदा सुहाई ॥
 जनु उच्चाह सब महज सुहायें * तनु धरि धरि दमरथगृह आयें ॥
 देखन हेतु रामवेदेही * कहहु लालमा होइ न केही ॥
 जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि * निजलखि निदरहिं मदनबिलासिनि ॥
 सकल सुमंगल मजे आरती * गावाहिं जनु बहु वेष भारती ॥
 भूपतिभवन कोलाहल होई * जाइ न बरनि ममउ सुख मोई ॥
 कौसल्यादि राममहतारी * प्रेमविवम तनुदमा विमारी ॥

दोहा-दिये दान विप्रन्ह विपुल, पूजि गनेस पुरारि ।

प्रमुदित परमदरिद्र जनु, पाइ पदारथ चारि ॥३४५॥

मोद-प्रमोद-विवस मय माता * चलहिं न चरन मिथिल भयें गाता ॥
 रामदरस हित अतिअनुरागी * परिछन माजु मजन सब लागी ॥
 विविध विधान वाजने वाजे * मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥

हरद दूध दधि पल्लव फ़ला * पान पूगफल मंगलमूला ॥
 अच्छन अंकुर रोचन लाजा * मंजुल मंजरि तुलसि विराजा ॥
 लुहे पुरटघट महज मुहाय * मदन सकुच जनु नीड़ वनाये ॥
 मगुन सुगंध न जाइ वस्यानी * मंगल सकल मजहि मव रानी ॥
 रानी आरती बहुत विधाना * मुदित करहि कल मंगल गाना ॥
 दोहा-कनकथार भरि मंगलान्ह, कमल करन लिये पात ।

चलों मुदित परिछन करन, पुलकपल्लवित गात ॥३४६॥

शृपधूम नभ मेचक भयऊ * मावन धनधमंड जनु ठयऊ ॥
 सुर-तरु-सुमन-माल सुर वरपहि * मनहुँ वलाक अवलि मनु करपहि ॥
 मंजुल मनिमय बंदनवारे * मनहुँ पाक-रिपु-चाप मवारै ॥
 प्रगटहि दुर्गहि अटन पर भामिनि * चारुचपल जनु दमकहि दामिनि ॥
 दुंदुभिधुनि धनगरजनि घोरा * जाचक चातक दादुर मोरा ॥
 सुर सुगंध सुचि वरपहि वारी * सुखा सकल भूमि पुर-नर-नारी ॥
 समउ जानि सुर आयभु दीन्हा * पुर प्रवेशु रघु-कुल-मनि कीन्हा ॥
 सुभिरि संभु गिरिजा गनराजा * मुदित मदीपति महित समाजा ॥
 दोहा-होहि सगुन वरपहि सुमन, सुर दुंदुभी वजाइ ।

विबुधवधू नाचहि मुदित, मंजुल मंगल गाइ ॥३४७॥

मासध सत वंदि नट नागर * गावहिं जसु तिहुँ लोक उजागर ॥
 जयधुनि विमल वेद-वर-वानी * दस दिसि मुनिअ मु-मंगल-मानी ॥
 विपुल वाजन वाजन लागे * नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥
 वने वरानी वरनि न जाही * महामुदित मन मुख न समाही ॥
 पुरवामिन्ह तव राय जोहारे * देखत रामहिं भये सुखारे ॥
 करहिं निझावरि मनिगन चीरा * वारि विलोचन पुलक सरीरा ॥
 आरति करहिं मुदित पुरनारी * हरपहिं निरखि कुअर वर चारी ॥
 मित्रिका सुभग आहार उधारी * देखि दुलहिनिन्ह होहि सुखारी ॥
 दोहा-एहि विधि सबही देत सुख, आये राजदुआर ।

मुदित मातु परिछन करहिं, वधुन्ह समेत कुमार ॥३४८॥

करहिं आरती वारहिं वाग * प्रेम प्रमोद कहै को पारा ॥
 भूपन मनि पट नाना जाती * करहिं निझावरि अगनित भाँती ॥
 बधुन्ह ममेत देखि सुत चागी * परमानंदमगन महतारी ॥
 पुनि पुनि सीय-राम-झवि देखी * मुदित सुफल जग जीवनु लेखी ॥
 मखी सीयमुख पुनि पुनि चाही * गान करहिं निज मूकृत गगड़ी ॥
 वरमहिं सुमन झनहिं झन देवा * नाचहिं गावहिं लावहिं मेवा ॥
 देखि मनोहर चारिउ जोरी * मारद उपमा मकल हँदारी ॥
 देत न वनहिं निपट लहु लागी * एकटक रही रूपचनुभागी ॥
 दोहा-निगमनीति कुलरीति करि, अरघ पावँडे देत ।

बधुन्ह सहित सुत परिछि सब, चलीं लेवाइ निकेत ॥३४६॥

चारि पिहामम महज सुहाये * जनु मनोज निज हाथ वनाये ॥
 तिन्ह पर कुअँरि कुअँर वैठारे * मादर पाय पुनीन पवारै ॥
 घूप दीप नैवेद्य वेदविधि * पूजे वरदुलहिनि पंगलनिधि ॥
 वारहिंवार आरती करहीं * व्यजन चारु चामर मिर टाहीं ॥
 वस्तु अनेक निझावरि होहीं * भरी प्रमोद मातु मव मोहीं ॥
 पावा परमतरव जनु जोगी * असुन लहेउ जनु मंतत रोमी ॥
 जनमरंकु जनु पारस पावा * अंधहिं लोचनलामु मुहावा ॥
 मूकवदन जमु मारद छार्डे * मानहुँ ममर मूर जय पाई ॥

दोहा-एहि सुखतें सत-कोटि-गुन, पावहिं मातु अनंदु ।

भाइन्ह सहित विआहि घर, आयेरनु-कुल-चंदु ॥

लोकरीति जननी करहिं, वर दुलहिनि सकुचाहिं ।

मोहु विनोहु विलोकि वड़, रामु मनहिं मुसुकाहिं ॥३५०॥

देवपिनर पूजे विधि नीकी * पूजी मकल वामना जी की ॥
 सवहि वंदि माँगहिं वरदाना * भाइन्ह सहित रामकल्याना ॥
 अंतरहित मूर आमिप देहीं * मुदित मातु अंचल भगि लेहीं ॥
 भूपति बोलि वगती लीन्हे * जान वमन मनि भूपन दीन्हे ॥
 आयमु पाइ राग्यि उर रामहिं * मुदित गयेसव निज निज धामहिं ॥
 पुर-नर-नारि मकल पहिराये * घर घर वाजव लगे बधाये ॥

जाचक जन जाचहिं जोइ जोई * प्रमुदित राउ देहिं मोइ सोई ॥
 सेवक मकल वजनियाँ नाना * पूरन किये दान सनमाना ॥
 दोहा-देहिं असीस जोहारि सब, गावहिं गुन-गन-गाथ ।

तव गुरु-भूसुर-सहित गृह, गवन कीन्ह नरनाथ ॥३५१॥

जो बसिष्ठ अनुसामन दीन्हा * लोक वंद विधि सादर कीन्हा ॥
 भू-सुर-भीर देखि सब रानी * सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥
 पाय पखारि मकल अन्हवाये * पूजि भली विधि भूप जेवाये ॥
 आदर दान प्रेम परिपोषे * देत अमीस चले मन तोषे ॥
 बहु विधि कीन्हि गाधि-सुत-पूजा * नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥
 कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी * रानिन्ह सहित लीन्हि पगधूरी ॥
 भीतर भवन दीन्ह वर वासू * मन जोगवत रह नृपरनिवास ॥
 पूजे गुरु-पद-कमल बहोरी * कीन्ह विनय उर प्रीति न थोरी ॥
 दोहा-बधुन्ह समेत कुमार सब, रानिन्ह सहित महीस ।

पुनि पुनि वंदत गुरुचरन, देत असीस मुनीस ॥३५२॥

विनय कीन्ह उर अति अनुरागे * सुत संपदा राखि नृप आगे ॥
 नेग माँगि मुनिनायक लीन्हा * आसिरवाद बहुत विधि दीन्हा ॥
 उर धरि रामुहिं मीयसमेता * हरषि कीन्ह गुरु गवन निकेता ॥
 विप्रबधू सब भूप बोलाई * चैल चारुभूपन पहिराई ॥
 बहुरि बोलाई सुआमिनि लीन्ही * रुचि विचारि पहिरावनि दीन्ही ॥
 नेगी नेग जोग सब लेहीं * रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ॥
 प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने * भूपति भली भाँति सनमाने ॥
 देव देखि रघु-वीर-विवाहू * बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥

दोहा-चले निसान बजाइ सुर, निज-निज-पुर सुख पाइ ।

कहत परसपर रामजस, प्रेम न हृदय समाइ ॥३५३॥

सब विधि सबहि समदि नरनाहू * रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
 जहँ रनिवास तहाँ पगु धारे * सहित बधूटिन्ह कुअँर निहारे ॥
 लिये गोद करि मोद समेता * को कहि सकै भयेउ सुख जेता ॥
 वधू सप्रेम गोद बैठारी * बार बार हिय हरषि दुलारी ॥

देखि समाज मुदित रनिवासु * सव के उर आनँद कियो बासु ॥
 कहेउ भूप जिमि भयेउ विवाहू * सुनि सुनि हरष होइ सब काहू ॥
 जनकराजगुन सील बड़ाई * प्रीतिरीति संपदा सुहाई ॥
 बहुविधि भूप भाट जिमि बरनी * रानी सब प्रमुदित मुनि करनी ॥
 दोहा-सुतन्ह समेत नहाइ नृप, बोलि विप्र गुरुज्ञाति ।

भोजन कीन्ह अनेक विधि, घरी पंचगइ राति ॥३५४॥

मंगलगान करहिं वरभामिनी * भइ मुखमूल मनोहर जामिनि ॥
 अँचइ पान सब काहू पाये * स्रग-सुगंध-भूषित लवि ल्याये ॥
 रामहिं देखि रजायसु पाई * निज-निज-भवन चले मिर नाई ॥
 प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई * समउ समाज मनोहरताई ॥
 कहि न सकहिं सत मादर मंगू * बंद विरंचि महेश गनेसू ॥
 सो मैं कहौ कवन विधि वरनी * भूमिनाग मिर धरइ कि धरनी ॥
 नृप सब भाँति सवाहि मनमानी * कहि मृदुवचन बोलाई रानी ॥
 वधू लरिकिनी परघर आई * राखेहु नयन पलक की नाई ॥

दोहा--लरिका समित उनीदबस, सयन करावहु जाइ ।

अस कहि गे बिस्रामगृह, रामचरन चितु लाइ ॥३५५॥

भूपवचन सुनि सहज मुहाये * जटित कनकमनि पलंग डमाये ॥
 सुभग-सुरभि-पय-फेनु समाना * कोमल कलित सुपेती नाना ॥
 उपबरहन वर वरनि न जाहीं * स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥
 रतन दीप सुठि चारु चँदोवा * कहत न वनइ जान जेइ जोवा ॥
 सेज रुचिर रचि राम उठाये * प्रेमसमेत पलंग पौढाये ॥
 अज्ञा पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही * निज-निज-मेज सयन तिन्ह कीन्ही ॥
 देखि स्याम मृदु मंजुल गाता * कहाँ मप्रेम वचन सब माता ॥
 मारग जात भयावन भारी * केहि विधि तात ताड़का मारी ॥
 दोहा--घोर निसाचर विकट भट, समरगनहिं नहिं काहु ।

मारे सहित सहाय किमि, खल मारीच सुवाहु ॥३५६॥

मुनिप्रसाद बलि तात तुम्हारी * ईस अनेक करवरे टारी ॥

मखरखवारी करि दुहँ भाई * गुरुप्रसाद सब विद्या पाई ॥
 मुनि निय तरी लगत पग धूरी * कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥
 कमठ-पीठि पविकूट कठोरा * नृप समाज महँ भिवधनु तोरा ॥
 विस्व विजय जसु जानकि पाई * आयं भवन व्याहि सब भाई ॥
 सकल अमानुष करम तुम्हारे * केवल कौमिक कृपा सुधारे ॥
 ब्राह्म सुफल जग जनम हमारा * देखि तात बिधुवदन तुम्हारा ॥
 जे दिन गये तुम्हहिं विनु देखे * ते विरंचि जनि पारहि लेखे ॥
 दोहा--राम प्रतोपी मातु सब, कहि विनीत वर बैन ।

सुमिरि संभु-गुरु-विप्र-पद, किये नौद्वस नैन ॥३५७॥

नौदहु बदन मोह सुठि लोना * मनहुँ साँझ मरगीरुह मोना ॥
 धर धर करहिं जागरन नारी * देखि परस्पर मंगल गारी ॥
 पुरी विराजति राजनि रजनी * रानी कहहिं बिलोकहु सजनी ॥
 सुंदरि वधुन्ह मामु लै मोई * फनिकन्ह जनु मिर मनि उर मोई ॥
 प्रात पुनीतकाल प्रभु जागे * अरुनचूड़ वर बोलन लागे ॥
 वंदि मागधन्ह गुनगन गाये * पुरजन द्वार जोहारन आये ॥
 वंदि विप्र गुरु सुर पितु माता * पाइ अमीम मुदित सब भ्राता ॥
 जननिन्ह मादर बदन निहारे * भूपतिसंग द्वार पगु धारे ॥
 दोहा--कीन्ह सौच सब सहज सुचि, सरित पुनीत नहाइ ।

प्रातक्रिया करि तात पहिं, आये चारिउ भाइ ॥३५८॥

भूप बिलोकि लिये उर लाई * बैठे हरपि रजायमु पाई ॥
 देखि राम सब सभा जुड़ानी * लोचन-लाभु-अवधि अनुमानी ॥
 पुनि वसिष्ठ मुनि कौमिक आये * सुभग आमनन्हि मुनि वैठाये ॥
 सुतन्ह ममेत पूजि पद लागे * निरखि राम दोउ गुरु अनुगामे ॥
 कहहिं वसिष्ठ धरम इतिहासा * सुनहिं महीप सहित रनिवामा ॥
 मुनिभन अगम गाधि-सुत-करनी * मुदित वसिष्ठ विपुलविधि बरनी ॥
 बोले बाबदेव सब साँची * कीरति कलित लोक तिहुँ माँची ॥
 मुनि आनंद भयेउ सब काहू * राम-लपन-उर अधिक उछाहू ॥

दोहा--मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस एहि भांति ।

उमगी अवध अनंद भरि, अधिक अधिक अधिकाति ॥३५६॥

सुदिन सोधि कलकंकन छोरे * मंगल मोद विनोद न थोरे ॥

नित नव सुख सुर देखि सिहाहीं * अवध जनम जाचहिं विधि पाहीं ॥

विस्वामित्र चलन नित चहहीं * राम - मनेह - विषय - वम रहहीं ॥

दिन दिन सयगुन भूपतिभाऊ * देखि सराह महा-मुनि-राऊ ॥

मांगत विदा राउ अनुरागे * सुतन्ह समेत ठाढ़ भये आगे ॥

नाथ सकल मंपदा तुम्हारी * में भेवक समेत गुन नारी ॥

करवि सदा लरिकन्ह पर छोहू * दरसन देत रहव मुनि मोहू ॥

अस कहि राउ सहित सुत रानी * परेउ चरन सुख आव न वानी ॥

दीन्हि असीम विप्र बहु भाँती * चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥

राम मप्रेम संग सब भाई * आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥

दोहा--रामरूप भूपतिभगति, व्याह उछाह अनंद ।

जात सराहत मनहिं मन, मुदित गाधि-कुल-खंद ॥३६॥

वामदेव रघु-कुल-गुरु ज्ञानी * वहुरि गाधिसुत कथा वखानी ॥

मुनि मुनि मुजम मनहिं मन राऊ * वरनत आपन पुन्यप्रभाऊ ॥

वहुरे लोग रजायसु भयऊ * सुतन्ह समेत नृपति भूट गयऊ ॥

जहँ तहँ रामव्याह सब गावा * मुजम पुनीत लोक निहँ व्यावा ॥

आये व्याहि राम घर जव तें * वमे अनंद अवध मव मव तें ॥

प्रभुविवाह जस भयेउ उछाहू * सकहिं न वरनि गिरा अहिनाहू ॥

कवि-कुल-जीवन-पावन जानी * राम-सीय - जम मंगलखानी ॥

तेहिं तें में कळु कहा वखानी * करन पुनीत हेतु निज-वानी ॥

खंद—निज-गिरा-पावनि-करन कारन रामजमु तुलसी कव्यो ।

रघु-वीर-चरित अपार वारिधि पार कवि कौने लख्यो ॥

उपवीत व्याह उछाह मंगल मुनि जे मादर गावहीं ।

बैदेहि-राम-प्रसाद तें जन सर्वदा सुख पावहीं ॥

अथ श्लोक

छन्द-मुनि गाय कहीं गिरीश कन्या धन्य अधिकारी सही ।
 नित प्रीति अनुपम मुतन हरिगुण भक्ति अनुपम ते लही ॥
 रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वंगि बुझावई ।
 यह जानि तुलसी दास मन क्रम वचन हरि गुण गावई ॥

दोहा--कठिन काल मल ग्रसित तनु, साधन कछुक न होइ ।
 यह विचारि विश्वास करि, हरि सुमिरै बुध सोइ ॥

सो०-मन हरि पद अनुराग, करहु त्याग नाना कपट ।
 महा मोह निशि जाग, सोवत वीते काल बहु ॥

इति श्लोक

सोरठा--सिय-रघु-वीर-विवाहु, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
 तिन्ह कहँ सदा उछाह, मंगलायतन रामजसु ॥३६१॥

इति बालकाण्ड ममाप्त ॥

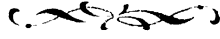


श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामायण

अयोध्याकाण्ड



श्लोकाः

यस्याङ्गे च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके । भाले वालविधु-
गले च गरलं यस्योरभि व्यालराट् ॥ मोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वा-
धिपः सर्वदा । शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥१॥
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः । मुखाम्बुज-
श्रीरघुनन्दनस्य मे सदाऽस्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥२॥ नीलाम्बुजश्यामल-
कोमलाङ्गं मीताममारोपितवामभागम् । पाणौ महासायकचारुचापं नमामि
रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दोहा--श्रीगुरु-चरन-सरोज-रज, निज-मनु-मुकुरु सुधारि ।

बरनों रघुवर-बिमल-जसु, जो दायकु फल चारि ॥

जब तें राम व्याहि घर आयें * नित नवमंगल मोद बधायें ॥
भुवन चारि दस भूधर भारी * सुकृत मेघ बरषहिं सुखबारी ॥
रिधि सिधि संपति नदी सुहाई * उमगि अवध अंबुधि कहूँ आई ॥
मनिगन पुर-नर-नारि-मुजाती * मुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥
कहि न जाइ कछु नगर बिभूती * जनु एतनिअँ विरंचि करतूती ॥
सब विधि सब पुरलोग सुखारी * रामचंद-मुख-चंदु निहारी ॥
मुदित मातु सब सखी सहेली * फलित त्रिलोकि मनोरथ बेली ॥
राम - रूप - गुन - सीलु - सुभाऊ * प्रमुदित होहिं देखि सुनि राऊ ॥
दोहा--सब के उर अभिलाषु अस, कहहिं मनाइ महेसु ।

आपु अछत जुवराज पदु, रामहिं देउ नरेसु ॥ १ ॥

अथ क्षेपक

एक वार जानकी समेता * बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥
तेहि अवसर अपि नारद आये * मुर हित लागि विरंचि पठाये ॥
देखि राम सहसा उठि धाये * करि प्रणाम आसन बैठाये ॥
मुनु मुनि विषय निरत जे प्राणी * हम सारिखे देह अभिमानी ॥
तिनकहँ सत्यंगति तव होई * करै कृपा जाकहँ प्रभु सोई ॥
कह मुनि तव महिमा रघुराया * मै जानौं कछु तुम्हरी दाया ॥
सहज स्वभाव प्रणत अनुरागी * नरतनु धरेउ दास हित लागी ॥
उदर चराचर मेलि जो सोवा * अस्तन पान लागि सोइ रोवा ॥
निर्मम मुक्त निरामय जोई * दशरथ सुत कहि गाइय सोई ॥
दोहा--जानि सकहु ते जानहु, निर्गुण सगुण स्वरूप ।

मम हिय पंकज भंगइव, बसहु राम नररूप ॥

ब्रह्म भुवन मैं रह्यो कृपाला * गावत तव गुण दीन दयाला ॥
असि इच्छा उपजी मन माहीं * देख्यो चरण बहुत दिन नाहीं ॥
अवध चलत विरंचि मोहिं जाना * कीन्हीं विनय लागि मम काना ॥
ज्यहि हित लीन मनुज अवतारा * नाथ ताहि अब करिय सँभारा ॥
सुनत बचन रघुपति मुसुकाने * मुनि अजहँ विरंचि भय माने ॥
कहहु तात ब्रह्महिं समुझाई * कछु दिन गये देखिहँ आई ॥
रामरूप उर धरि मुनि नारद * चले करत गुणगान विशारद ॥
तव रघुपति सीतहिं समुझाई * पूर्व कथा सब हेतु मुनाई ॥
दोहा--जग संभव स्थिति प्रलय, जाकी भृकुटि बिलास ।

सो प्रभु यत्न विचारत, केहिविधि निशिचर नाश ॥

इति क्षेपक

एक समय सब सहित समाजा * राजसभा रघुराज विराजा ॥
सकल-सुकृत-मूर्ति नरनाहू * रामसुजसु सुनि अतिहि उच्चाहू ॥

नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे * लोकप करहिं प्रीतिरुख राषे ॥
 त्रिभुवन तीनिकाल जगमाहीं * भूरि भाग दसरथसम नाहीं ॥
 मंगलमूल राम सुत जासू * जो कह्यु कहिअ थोर सबु तासू ॥
 राय सुभाय मुकुरु कर लीन्हा * वदनु विलोकि मुकुट सम कीन्हा ॥
 सवनसमीप भये सित केसा * मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥
 नृप जुवराजु राम कहँ देहू * जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥
 दोहा--यह विचारु उर आनि नृप, सुदिनु सुअवसरु पाइ ।

प्रेम पुलकि तन मुदित मन, गुरुहि सुनायेउ जाइ ॥ २ ॥

कहइ भुआल सुनिअ मुनिनायक * भये राम सब विधि सब लायक ॥
 सेवक सचिव सकल पुरवासी * जे हमरे अरि मित्र उदासी ॥
 सबहिं रामुप्रिय जेहि विधि मोही * प्रभु अमीस जनु तनु धरि मोही ॥
 विप्र सहित परिवार गोसाईं * करहिं छोहु मव रउरहि नाई ॥
 जे गुरु-चरन-रेनु मिर धरहीं * ते जनु सकल विभव बस करहीं ॥
 मोहि सम यह अनुभयउ न दजें * सबु पायेउँ रज पावनि पूजें ॥
 अब अभिलाषु एकु मन मोरे * पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
 मुनि प्रसन्न लखि सहज मनेहू * कहेउ नरेमु रजायमु देहू ॥
 दोहा--राजन राउर नामु जसु, सब अभिमतदातार ।

फलअनगामी महिपमनि, मन अभिलाषु तुम्हार ॥ ३ ॥

सब विधि गुरु प्रसन्न जिय जानी * बोलेउ राउ रहमि मृदुवानी ॥
 नाथ रामु करिअहि जुवराजू * कहिअ कृपा करि करिअ ममाजू ॥
 मोहि अछत यहु होइ उछाहू * लहाहिं लोग सब लोचन लाहू ॥
 प्रभुप्रसाद सिव सबइ निवाहीं * यह लालसा एक मन माहीं ॥
 पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ * जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥
 सुनि मुनि दसरथ वचन सुहाये * मंगल-मोद-मूल मन भाये ॥
 सुनु नृप जासु विमुख पछिताहीं * जासु भजन विनु जरनि न जाहीं ॥
 भयेउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी * रामु पुनीत प्रेम-अनुगामी ॥
 दोहा--बेगि विलंबु न करिअ नृप, साजिअ सबुइ समाजु ।

सुदिनु सुमंगल तबहिं जब, रामु होहिं जुबराजु ॥४॥

मुदित महीपति मंदिर आये * सेवक सचिव सुमंत्र बोलाये ॥
 कहि जय जीव सीस तिन्ह नाये * भूप सुमंगल वचन सुनाये ॥
 प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आजू * रामहिं राय देहु जुबराजू ॥
 जौ पंचहि मत लागइ नीका * करहु हरषि हिय रामहिं टीका ॥
 मंत्री मुदित सुनत प्रियवानी * अभिमत विरव परेउ जनु पानी ॥
 विनती मचिव करहिं कर जोरी * जियहु जगतपति बरिस करोरी ॥
 जगमंगल भल काजु विचारा * बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥
 नृपहिं मोदु सुनि सचिव सुभाखा * बढ़त बौड़ जनु लही सुसाखा ॥
 दोहा-कहेउ भूप मुनिराज कर, जोइजोइ आयस होइ ।

राम-राज-अभिषेक-हित, बेगि करहु साइ सोइ ॥ ५ ॥

हरषि मुनीस कहेउ मृदुवानी * आनहु सकल सु-तीरथ-पानी ॥
 औषध मूल फूल फल पाना * कहे नाम गनि मंगल नाना ॥
 चामर चरम बसन बहु भाँती * रोम पाट पट अगनित जाती ॥
 मनिगन मंगलवस्तु अनेका * जो जग जोगु भूपअभिषेका ॥
 वेदविदित कहि सकल विधाना * कहेउ रचहु पुर विविधविताना ॥
 सफल रमाल पूंगफल केरा * रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥
 रचहु मंजु मनि चौकइ चारू * कहहु बनावन बेगि बजारू ॥
 दोहा--ध्वज पताक तोरन कलस, सजहु तुरग रथ नाग ।

सिर धरि मुनिवर बचन सबु, निज-निज-काजहिं लाग ॥६॥

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा * मो तेहि काजु प्रथम जनु कोन्हा ॥
 विप्र साधु सुर पूजत राजा * करत रामहित मंगलकाजा ॥
 सुनत रामअभिषेक सुहावा * बाज गहागह अवध बधावा ॥
 राम-सीय-तन सगुन जनाये * फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
 पुलकि सप्रेम परमपर कहहीं * भरत-आगमनु-सूचक अहहीं ॥
 भये बहुत दिन अतिअवसेरी * सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
 भरतसरिस प्रिय को जग माहां * इहइ सगुनफलु दूसर नाहीं ॥

रामहिं बंधुसोचु दिन राती * अंडन्हि कमठ हृदय जेहि भाँती ॥
दोहा—एहि अवसर मंगलु परम, सनि रहसेउ रनिवासु ।

सोभत लखि बिधु बढत जन, बारिधि बीचिबिलासु ॥७॥

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाये * भूषन बसन भूरि तिन्ह पाये ॥
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं * मंगलकलस सजन सब लागीं ॥
चौकड़ चारु सुमित्रा पूरी * मनिमय विविधभाँति अतिरूरी ॥
आनंद मगन राममहतारी * दिये दान बहु बिप्र हँकारी ॥
पूजी ग्रामदेवि सुर नागा * कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
जेहि बिधि होइ राम कल्याण * देहु दया करि सो बरदानू ॥
गावहिं मंगल कोकिलबयनी * बिधुबदनी मृग—सावक—नयनी ॥

दोहा—राम-राज-अभिषेकु सुनि, हिय हरपे नरनारि ।

लगे सुमंगल सजन सब, बिधि अनुकूल विचारि ॥८॥

तब नरनाह बसिष्ठ बोलाये * रामधाम सिख देन पठाये ॥
गुरु आगमनु सुनत रघुनाथा * द्वार आइ पद नायेउ माथा ॥
सादर अरघ देइ घर आने * सोरहभाँति पूजि सनमाने ॥
गहे चरन सियसहित बहोरी * बोले रामु कमल कर जोरी ॥
सेवकसदन स्वामिआगमनू * मंगलमूल अमंगलदमनू ॥
तदपि उचित जन बोलि सप्रीती * पठइय काज नाथ असि नीती ॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू * भयउ पुनित आजु यह गेहू ॥
आयसु होइ सो करउ गोसाईं * सेवकु लहइ स्वामिसेवकाई ॥

दोहा—सुनि सनेहसाने बचन, मुनि रघुबरहि प्रसंस ।

राम कस न तुम्ह कहहु अस, हंस-बंस-अवतंस ॥९॥

बरनि राम गुन सील सुभाऊ * बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ ॥
भूप सजेउ अभिषेकसमाजू * चाहत देन तुम्हहिं जुवराजू ॥
राम करहु सब संजम आजू * जौं बिधि कुसल निवाहइ काजू ॥
गुरु सिख देइ राय पहिं गयऊ * राम हृदय अस विसमय भयऊ ॥
जनमे एक संग सब भाई * भोजन सयन केलि लरिकाई ॥
करनबेध उपवीत बियाहा * संग संग सब भयउ उछाहा ॥

विमलवंस यह अनुचित एक * वंधु विहाइ वड़ेहिं अभिषेकू ॥
 प्रभु मप्रेम पछितानि सुहाई * हरउ भगतमन कै कुटिलाई ॥
 दोहा--तेहि अक्सर आये लपन, मगन प्रेम आनंद ।

सनमाने प्रिय वचन कहि, रघु-कुल-कैरव-चंद ॥१०॥

बाजहिं बाजन विविधि विधाना * पुरप्रमोद नहिं जाइ बखाना ॥
 भरतआगमनु मकल मनावहिं * आवहिं बेगि नयनफल पावहिं ॥
 हाट बाट घर गली अथाई * कहहिं परमपर लोग लोगाई ॥
 कालि लगन भलि केतिक वारा * पूजिहि विधि अभिलाषु हमारा ॥
 कनकमिहामन मीयममेता * बैठहिं रामु होइ चित चेता ॥
 मकल कहहिं कब होइहि काली * विधन मानवहिं देव कुचाली ॥
 तिन्हहिं सुहाइ न अवध वधावा * चोरहिं चंदिनि राति न भावा ॥
 सादर बोलि विनय सुर करहीं * वारहिं वार पाँय लै परहीं ॥
 दोहा--विपति हमारी विलोकि बडि, मातु करिअ सोइ आजु ।

रामु जाहिं बन राजु तजि, होइ सकल सुरकाजु ॥११॥

सुनि सुरविनय ठाढ़ि पछिताती * भइउँ मरोजविपिन हिमराती ॥
 देखि देव पुनि कहहिं निहोरी * मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी ॥
 विसमय - हरष - रहित रघुराऊ * तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ॥
 जीव करमवस मुख-दुख-भागी * जाइअ अवध देवहित लागी ॥
 बारवार गहि चरन मँकोची * चली विचारि विबुधमति पोची ॥
 ऊँच निवास नीच करतूती * देखि न सकहिं पराइ विभूती ॥
 आगिल काजु विचारि बहोरी * करिहहिं चाह कुसल कवि मोरी ॥
 हरषि हृदय दसरथपुर आई * जनु ग्रहदसा दुसह दुखदाई ॥
 दोहा--नामु मंथरा मन्दमति, चेरी कैकड़ केरि ।

अजस पेटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि ॥१२॥

दीख मंथरा नगरु बनावा * मंजुल मंगल बाज वधावा ॥
 पूछेमि लोगन्ह काह उद्धाहू * रामतिलक सुनि भा उरदाहू ॥
 करइ विचारु कुबुद्धि कुजाती * होइ अकाज कवनि विधि राती ॥
 देखि लागि मधु कुटिल किराती * जिमि मँव तकइ लेउँ केहि भाँती ॥

भरतमातु पहिं गइ बिलखानी * का अनमनि हमि कह हँसि रानी ॥
 उतरु देइ नहिं लेइ उसासू * नारिचरित करि दारइ आँसू ॥
 हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे * दीन्ह लपन मिख अम मन मोरे ॥
 तवहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि * छाँड़इ स्वाम कारि जनु माँपिनि ॥
 दोहा—सभय रानि कह कहसि किन, कुसल रामु महिपाल ।

लपन भरतुरिपुदमनु सुनि, भा कबरी उर साल ॥१३॥
 कत मिख देइ हमहिं कोउ माँई * गालु करव केहि कर बलु पाई ॥
 रामहिं छाड़ि कुमल केहि आजू * जिनहिं जनेसु देइ जुवराजू ॥
 भयउ कौमिलहि विधि अति दाहिन * देखत गरव रहत उर नाहिन ॥
 देखहु कस न जाइ सब मोभा * सो अवलोकि मोर मनु बोभा ॥
 पूतु विदेस न सोचु तुम्हारे * जानतिहहु बस नाहु हमारे ॥
 नींद बहुत प्रिय सेज तुराई * लखहु न भूप कपट चतुराई ॥
 सुनि प्रिय बचन मलिनमनु जानी * भुकी रानि अब रहु अरगानी ॥
 पुनि अस कबहुँ कहसि घर फोरी * तव धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी ॥
 दोहा—काने खोरे कबरे, कुटिल कुचाली जानि ।

तिय विसेपि पुनि चैरि कहि, भरतमातु मुसुकानि ॥१४॥
 प्रियवादिनि मिख दीन्हिउँ तोही * मपनेहु तो पर कोपु न मोही ॥
 सुदिनु सु-मंगल-दायकु सोई * तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥
 जेठ स्वामि सेवक लघु भाई * यह दिन-कर-कुल-रीति मुहाई ॥
 रामतिलकु जौ साँचउ काली * देउँ माँगु मन भावत आली ॥
 कौसल्यासम सब महतारी * रामहिं सहज सुभाय पियारी ॥
 मो पर करहिं सनेहु विमेखो * में करि प्रीति परीछा देखी ॥
 जौ विधि जनमु देइ करि बोहू * होहिं राममिय पूतपतोहू ॥
 प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरे * तिन्हके तिलक बोभु कस तोरे ॥
 दोहा—भरतसपथ तोहि सत्य कहु, परिहरि कपट दुराउ ।

हरष समय विसमय करसि, कारन मोहि सुनाउ ॥१५॥
 एकहि बार आम सब पूजी * अब कछु कहव जीभ करि दूजी ॥
 फोरै जोग कपारु अभागा * भलेउ कहत दुख रउरहिं लागा ॥

कहहिं भूठि फुरि बात बनाई * ते प्रिय तुम्हहिं करुइ में माई ॥
 हमहुँ कहव अब ठकुर सोहाती * नाहिं त मौन रहव दिन राती ॥
 करि कुरूप विधि परवस कीन्हा * बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा ॥
 कोउ नृप होउ हमहिं का हानी * चेरि छाँड़ि अब होव कि रानी ॥
 जारइ जोगु सुभाउ हमारा * अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
 तातें कछुक बात अनुसारी * छमिअ देवि बड़ि चूक हमारी ॥

दोहा-गूढ़-कपट-प्रिय-वचन सुनि, तोय अधरबुधिरानि ।

सरमाया बस बैरिनिहि, सुहृद जानि पतियानि ॥१६॥

सादर पुनि पुनि पूछति ओही * मबरीगान मृगी जनु मोही ॥
 तसि मति फिरी अहइ जमि भावी * रहसी चेरि घात जनु फावी ॥
 तुम्ह पूछहु मैं कहत डेराऊँ * धरेउ मोर घरफोरी नाऊँ ॥
 सजि प्रतीति बहुविधि गढ़ि छोली * अवध साढ़साती तव बोली ॥
 प्रिय सियरामु कहा तुम्ह रानी * रामहिं तुम्ह प्रिय सो फुरि वानी ॥
 रहा प्रथम अब ते दिन बीते * समउ फिरे रिपु होहिं पिरीते ॥
 भानु कमल - कुल-पोषनि-हाग * विनु जर जारि करइ सोइ छारा ॥
 जरि तुम्हारि चह सवति उखारी * रूँधहु करि उपाय बर वारी ॥

दोहा-तुम्हहिं न सोचु सोहाग बल, निज बस जानहु राऊ ।

मन मलीन महुँ मीठ नृपु, राउर सरल सुभाउ ॥१७॥

चतुर गँभीर राममहतारी * बीचु पाइ निजबात सवाँरी ॥
 पठ्ये भरतु भूप ननिअउरें * राम - मातु - मत जानव रउरें ॥
 सेवहिं सकल सवति मोहि नीके * गरबित भरतमातु बल पी के ॥
 सालु तुम्हार कौसिलहि माई * कपट चतुर नहिं होइ जनाई ॥
 राजहिं तुम्ह पर प्रेमु विसेखी * सवति सुभाउ मकइ नहिं देखी ॥
 रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई * राम-तिलक-हित लगन धराई ॥
 यह कुल उचित राम कहुँ टीका * सबहि सुहाइ मोहि सुठ नीका ॥
 आगिल बात समुझि डर मोही * देउ दैव फिरि सो फलु ओही ॥

दोहा-रचि पचि कोटिक कुटिलपन, कोन्हेसि कपटप्रबोध।

कहेसि कथा सत सवति कै, जेहिविधि बाढ़ विरोध ॥१८॥

भाबीबस प्रतीति उर आई * पूछु रानि पुनि सपथ देवाई ॥
 का पूछहु तुम्ह अबहु न जाना * निज हित अनहित पसु पहिचाना ॥
 भयेउ पाखु दिन सजत समाजू * तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥
 खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे * मत्य कहे नहिं दोषु हमारे ॥
 जौ असत्य कछु कहब बनाई * तौ विधि देइहि हमहिं सजाई ॥
 रामहिं तिलक कालि जौ भयेऊ * तुम्ह कहूँ विपति बीजुविधि बयेऊ ॥
 रेख खँचाइ कहउँ बल भाखी * भामिनि भइहु दूध कइ माखी ॥
 जौ सुत सहित करहु सेवकाई * तौ घर रहहु न आन उपाई ॥
 दोहा--कद्रू विनतहि दोन्ह दुख, तुम्हहिं कौसिला देव ॥

भरतु बंदि गृह सेइहहिं, लपुनु रामु के नेव ॥१६॥

कैकयसुता सुनत कटुवानी * कहि न सकइ कछु महमि सुखानी ॥
 तन पसेउ कदली जिमि काँपी * कुवरी दसन जीभ तव चाँपी ॥
 कहि कहि कोटिक कपटकहानी * धीरज धरहु प्रबोधेसि रानी ॥
 कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाटू * जिमि न नवइ फिरि उकठि कुकाटू ॥
 फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली * बकिहि मराहइ मानि मराली ॥
 सुनु मंथरा बात फुरि तोरी * दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी ॥
 दिन प्रति देखहुँ राति कुमपनें * कहउँ न तोहि मोहबसु अपनें ॥
 काह करै सखि सूधसुभाऊ * दाहिन वाम न जानउँ काऊ ॥
 दोहा--अपने चलत न आजु लागि, अनभल काहु क कीन्ह ।

केहि अघ एकहि बार मोहि, दैअ दुसह दुख दीन्ह ॥२०॥

नैहर जनमु भरब बरु जाई * जियत न करव मवति सेवकाई ॥
 अरिबस दउ जियावत जाही * मरनु नीक तेहि जीव न चाही ॥
 दीनवचन कह बहुविधि रानी * सुनि कुवरी तिय माया ठानी ॥
 अम कस कहहु मानि मन ऊना * सुख सोहागु तुम्ह कहँ दिन दना ॥
 जेहि राउर अतिअनभल ताका * सोइ पाइहि यहु फलु परिपाका ॥
 जब तें कुमत सुना मैँ स्वामिनि * भूख न वासर नींद न जामिनि ॥
 पूछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्हु खँची * भरत भुआल होहिं यह साँची ॥
 भामिनि करहु त कहउँ उपाऊ * हइ तुम्हरी मेवावस राऊ ॥

दोहा--परउँ कृप तुअ बचन पर, सकौं पृत पति त्यागि ।

कहसि मोर दुख देखि बडु, कस न करव हित लागि ॥२१॥

कुवरी करि कबुली कैकेई * कपटछुरी उरपाहन टेई ॥

लखइ न रानि निकट दुख कैमें * चरइ हरित त्रिन बलिपसु जैमें ॥

सुनत वात मृदु अंत कोठरी * देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥

कहइ चरि सुधि अहइ कि नाहीं * स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं ॥

दुइ वरदान भूप सन थाती * माँगेहु आज जुड़ावहु छाती ॥

सुतहि राजु रामहि वनवासु * देहु लेहु सब सवतिहुलासु ॥

भूपति रामसपथ जव करई * तव माँगेहु जेहि बचन न टरई ॥

होइ अकाजु आजु निसि बीते * वचनु मोर प्रिय मानहु जी ते ॥

दोहा--बडु कुघातु करि पातकिनि, कहेसि कोपगृह जाहु ।

काज सवारैहु सजग सब, सहसा जनि पतियाहु ॥२२॥

कुवरिहि रानि प्रानप्रिय जानी * वार वार बड़ि बुद्धि बखानी ॥

तोहि सम हितु न मोर संसारा * बहे जात कर भइसि अधारा ॥

जौं विधि पूरव मनोरथु काली * करौं तोहि चखपूतरि आली ॥

बहुविधि चरिहि आदरु देई * कोपभवन गवनी कैकेई ॥

विपति बीजु बरमारितु चरि * भुइँ भइ कुमति कैकेई केरी ॥

पाइ कपटजलु अंकुर जामा * बर दोउ दल दुखफल परिनामा ॥

कोप समाजु साजि सब मोई * राजु करत निज कुमति विगोई ॥

राउर नगर कोलाहल होई * यह कुबालि कछु जान न कोई ॥

दोहा--प्रमुदित पुर नरनारि सब, सजहिं सुमंगल चार ।

एक प्रबिसहि एक निर्गमहिं, भीर भूप दरबार ॥२३॥

बालसखा सुनि हिय हरपाहीं * मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं ॥

प्रभु आदरहिं प्रेमु पहिचानी * पूछहिं कुसल खेम मृदुवानी ॥

फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई * करत परसपर रामबड़ाई ॥

को रघुबीरसरिस संसारा * सीलु सनेहु निवाहनिहारा ॥

जेहि जेहि जोनि करमवस भ्रमहीं * तहँ तहँ ईसु देउ यह हमहिं ॥

सेवक हम स्वामी सियनाहू * होउ नात यहू और निबाहू ॥

अस अभिलाषु हृदय सब काहू * कैकयसुता हृदय अतिदाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नसाई * रहइ न नीच मते चतुराई ॥
दोहा--साँभ समय सानंद नृप, गयेउ कैकेइ गेह ।

गवनु निठुरतानिकट किय, जनु धरि देह सनेह ॥२४॥

कोपभवन सुनि सकुचेउ राज * भयवस अगहुइ परइ न पाऊ ॥
सुरपति बमइ बाँहबल जाके * नरपति सकल रहहिं रुख ताके ॥
सौ सुनि तियरिस गयउ सुखाई * देखहु कामप्रताप बड़ाई ॥
सूल कुलिस अमि अँगवनिहारे * ते रतिनाथ सुमनसर मारे ॥
सभय नरेसु प्रिया पहिं गयऊ * देखि दमा दुख दारुन भयऊ ॥
भूमिसयन पट मोट पुराना * दिये डारि तन भूपन नाना ॥
कुमतिहि कसि कुवंसता फावी * अन-अहिवातु-मूच जनु भावी ॥
जाइ निकट नृप कह मृदुवानी * प्रानप्रिया केहि हेतु रिमानी ॥

छंद--केहि हेतु रानि रिमानि परसत पानि पतिहि निवारई ।

मानहुँ सरोप भुअंगभामिनि विषम भाँति निहारई ॥

दोउ वासना रसना दमन वर परम ठाहरु देखई ।

तुलसी नृपतिभवितव्यता वस काम कौतुक लेखई ॥

सोरठा--वार वार कह राउ, सुमुखि सुलोचनि पिकवचनि ।

कारन मोहि सुनाउ, गजगामिनि निजकोप-कर ॥२५॥

अनहित तोर प्रिया केइ कीन्हा * केइ दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा ॥
कहु केहि रंकाह करउं नरेसू * कहु केहि नृपहि निकामउं देसू ॥
सकउं तोर अरि अमरउ मारी * काह कीट वपुरे नरतारी ॥
जानसि मोर सुभाउ बरोरू * मन तव आनन चंद चकोरू ॥
प्रिया प्रान सुत सरवसु मोरे * परिजन प्रजा सकल वस तोरे ॥
जौं कलु कहउं कपट करि तोही * भामिनि राम-सपथ-मत मोही ॥
विहँसि माँगु मनभावति वाता * भूपन सजहि मनोहर गाता ॥
घरी कुघरी समुझि जिय देखू * बेगि प्रिया परिहरहि कुबेगू ॥
दोहा--यह सुनि मन गुनि सपथ बाड़, विहँसि उठी मतिमंद ।

भूपन सजति विलोकि मृग, मनहुँ किरातिनिफंद ॥२६॥

पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी * प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी ॥
 भामिनि भयेउ तोर मनभावा * घरघर नगर अनंदवधावा ॥
 रामहिं देउँ कालि जुबराजू * सजहि सुलोचनि मंगलसाजू ॥
 दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरू * जनु छुइ गयेउ पाक बरतोरू ॥
 ऐसेउ पीर बिहँसि तेहि गोई * चोरनारि जिमि प्रगटि न रोई ॥
 लखी न भूप कपट चतुराई * कोटि-कुटिल-मनि गुरू पढ़ाई ॥
 जद्यपि नीतिनिपुन नरनाहू * नारिचरित जलनिधि अ्रवगाहू ॥
 कपटसनेहु बढ़ाइ बहोरी * बोली बिहँसि नयन मुँह-मोरी ॥
 दोहा--माँगु माँगु पै कहहु पिय, कबहुँ न देहु न लेहु ।

देन कहेहु बरदान दुइ, तेउ पावत संदेहु ॥२७॥

जानेउँ मरमु राउ हँसि कहई * तुम्हहि कोहाव परम प्रिय अ्रहई ॥
 थाती राखि न माँगहु काऊ * बिसरि गयेउ मोहि भोर सुभाऊ ॥
 भूठेहु हमहिं दोष जनि देहू * दुइ कै चारि माँगि किन लेहू ॥
 रघु-कुल-रीति सदा चलि आई * प्रान जाहु बरु बचनु न जाई ॥
 नहिं असत्यसम पातकपुंजा * गिरि सम होहिं कि कोटिक गुंजा ॥
 सत्यमूल सब सुकृत सुहाये * वेद पुरान विदित मुनि गाये ॥
 तेहि पर राम सपथ करि आई * सुकृत - सनेह - अवधि रघुराई ॥
 बात दढ़ाइ कुमति हँसि बोली * कुमत-कुबिहँग-कुलह जनु खोली ॥
 दोहा--भूप मनोरथ सुभग बन, सुख सु-बिहंग-समाजु ।

भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति, बचन भयंकर बाजु ॥२८॥

सुनहुँ प्रानप्रिय भावत जी का * देहु एक बर भरतहि टीका ॥
 मागउँ दूसर बर कर जोरी * पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी ॥
 तापसबंध बिसेषि उदासी * चौदह बरिस रामु बनवासी ॥
 सुनि मृदुबचन भूपहिय सोकू * ससिकर छुअत विकल जिमि कोकू ॥
 गयेउ सहमि नहिं कछु कहि आवा * जनु सचान बन झपटेउ लावा ॥
 बिबरन भयेउ निपट नरपालू * दामिनि हनेउ मनहुँ तरु तालू ॥
 माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन * तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥
 मोर मनोरथ सुर-तरु-फूला * फरत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥

अवध उजारि कीन्हि कैकई * दीन्हेमि अचल विपति कै नई ॥

दोहा--कवने अवसर का भयेउ, गयउँ नारिविस्वास ।

जोग-सिद्धि-फल-समय जिमि, जतिहि अविद्यानास ॥२६॥

एहि विधि राउ मनहिं मन झाँखा * देखि कुभाँति कुमति मनु माँगा ॥

भरत कि राउर पूत न होही * आनेहु मोल बेसाहि कि मोही ॥

जो सुनि सर अस लागु तुम्हारे * काहे न बोलहु बचनु सँभारे ॥

देहु उतर अरु कहहु कि नाही * सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माही ॥

देन कहेहु अब जनि बरु देहु * तजहु सत्य जग अपजस लेहु ॥

सत्य सराहि कहेहु बरु देना * जानेहु लेइहि माँगि चवेना ॥

सिवि दधीचि बलि जो कछु भाषा * तनुधनु तजेउ बचन पनु राखा ॥

अति-कटु-वचन कहति कैकई * मानहु लोन जरे पर देई ॥

दोहा--धरम-धुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राय ।

सिर धुनि लीन्हि उसास असि, मारेसि मोहि कठाय ॥३०॥

आगे दीखि जरति रिमि भारी * मनहु रोष तरवारि उधारी ॥

मूठि कुबुद्धि धार निटुराई * धरी कूबरी सान बनाई ॥

लखी महीप कराल कठोरा * सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा ॥

बोलेउ राउ कठिन करि झती * बानी मघिनय तासु सोहाती ॥

प्रिया वचन कम कहमि कुभाँती * भीरु प्रतीति प्रीति करि हाँती ॥

मोरें भरत राम दुइ आँखी * सत्य कहउँ करि संकर साखी ॥

अवसि दूत मै पठउव प्राता * ऐहहिं वंगि सुनत दोउ भ्राता ॥

सुदिन सोधि सव साजु सजाई * देउँ भरत कहँ राजु बजाई ॥

दोहा--लोभु न रामहिं राजु कर, बहुत भरत पर प्रीति ।

मैं बड़ छोट विचारि जिय, करत रहेउँ नृपनीति ॥३१॥

राम-सपथ-सत कहउँ सुभाऊ * राममातु कछु कहेउ न काऊ ॥

मैं सव कीन्ह तोहि बिनु पूछे * तेहि तें परेउ मनोरथ छूछे ॥

रिस परिहरु अब मंगल साजू * कछु दिन गये भरत जुवराजू ॥

एकहि वात मोहि दुख लागा * बर दूसर असमंजस माँगा ॥

अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा * रिस परिहास कि साँचहु साँचा ॥

कहु तजि रोषु रामअपराधु * सव कोउ कहइ रामु सुठि साधु ॥
 तुहँ मराहसि करसि मनहू * अब सुनि मोहि भयेउ संदेहू ॥
 जामु मुभाउ अरिहि अनुकूला * सो किमि करिहि मातुप्रतिकूला ॥
 दोहा--प्रिया हास रिस परिहरहि, माँगु विचारि विवेकु ।

जेहि देखउँ अब नयनभरि, भरत राज अभिषेकु ॥३२॥

जिअइ मीन वरु वारिविहीना * मनि विनु फनिक जिअइ दुखदीना ॥
 कहउँ सुभाउ न ब्रल मन माहीं * जीवन मोर रामु विनु नाहीं ॥
 समुझि देखु जिय प्रिया प्रवीना * जीवन राम - दरस - आधीना ॥
 सुनि मृदुवचन कुमति अति जरई * मनहुँ अनल आहुति घृत परई ॥
 कहइ करहु किन कोटि उपाया * इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥
 देहु कि लेहु अजस करि नाहीं * मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥
 राम साधु तुम्ह माधु मयाने * राममातु भलि सब पहिचाने ॥
 जस कौसिला मोर भल ताका * तस फल उन्हहिं देउँ करि साका ॥
 दोहा--होत प्रात मुनिबेप धरि, जौं न राम बन जाहिं ।

मोर मरनु राउर अजसु, नृप समुझिय मन माहिं ॥३३॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी * मानहुं रोप तरंगिनि बाढ़ी ॥
 पाप पहार प्रगट भइ सोई * भरी क्रोध जल जाइ न जोई ॥
 दोउ बर कूल कठिन हठ धारा * भँवर कूवरी - वचन - प्रचारा ॥
 ढाहत भूपरूप तरुमूला * चली विपतिवारिधि अनुकूला ॥
 लखी नरेस वात सब साँची * नियमिसु मीच मीस पर नाँची ॥
 गहि पद विनय कीन्हि बैठारी * जनि दिन-कर-कुल होसि कुठारी ॥
 माँगु माथ अबहीं देउँ तोही * रामविरह जनि मारसि मोही ॥
 राखु राम कहँ जेहि तेहि भाँती * नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती ॥
 दोहा--देखी ब्याधि असाधि नृप, परेउ धरनि धुनि माथ ।

कहत परम आरतवचन, राम राम रघुनाथ ॥३४॥

व्याकुल राउ सिथिल सब गाता * करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता ॥
 कंठ सूख मुख आव न बानी * जनु पाठीन दीन विनु पानी ॥
 पुनि कह कटु कठोर कैकेई * मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ॥

जौं अंतहु अस करतव रहेऊ * माँगु माँगु तुम्ह केहि बल कहेऊ ॥
 दुइ कि होइ एक समय भुआला * हंसव ठाई फुलाउव गाला ॥
 दानि कहाउव अरु कृपनाई * होइ कि खेम कुमल रौताई ॥
 झँड़हु बचन कि धीरज धरहु * जनि अचला जिमि करुना करहु ॥
 तनु तिय तनय धाम धनु धरनी * सत्यसंध कहँ तृनसम बरनी ॥
 दोहा--मरमवचन सुनि राउ कह, कहु कछु दोष न तोर ।

लागेउ तोहि पिसाच जिमि, काल कहावत मोर ॥३५॥

चहत न भरत भूपतिहि भोरे * विधिवस कुमति बमी जिय तोरे ॥
 सो सब मोर पापपरिनाभू * भयउ कुठाहर जेहि विधि वामू ॥
 सुवस बसिहि फिरि अवध सुहाई * सब गुनधाम राम - प्रभुताई ॥
 करिहहिं भाइ सकल सेवकाई * होइहि तिहुँ पुर रामवडाई ॥
 तोर कलंक मोर पछिताऊ * मुयेहु न मिटिहि न जाइहि काऊ ॥
 अब तोहि नीक लाग करु सोई * लोचन ओट बैहु मुँह गोई ॥
 जब लागि जिअउँ कहउँ करजोरी * तव लागि जनि कछु कहसि बहोरी ॥
 फिरि पछितैहमि अंत अभागी * मारसि गाइ नहारू लागी ॥
 दोहा--परेउ राउ कहि कोटिविधि, काहे करसि निदानु ।

कपटसयानि न कहति कछु, जागति मनहुँ मसानु ॥३६॥

राम राम रट विकल भुआलू * जनु विनु पंख विहंग बंहालू ॥
 हृदय मनाव भोरु जनि होई * रामहिं जाइ कहइ जनि कोई ॥
 उदय करहु जनि रवि रघुकुलगुर * अवध विलोकि मूल होइहि उर ॥
 भूप्रीति कैकइकठिनाई * उभयअवधि विधि रची बनाई ॥
 बिलपत नृपहि भयेउ भिनुसारा * वीना - वेनु - संख - धुनि द्वारा ॥
 पढ़हिं भाट गुन गावहिं गायक * मुनत नृपहि जनु लागहिं सायक ॥
 मंगल सकल सुहाहिं न कैसें * सहगामिनिहिं विभूपन जैसें ॥
 तेहि निसि नींद परी नहिं काहू * रामदरस लालसा उखाहू ॥
 दोहा--द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदित रवि देखि ।

जागे अजहुँ न अवधपति, कारन कवन विसेखि ॥३७॥

पछिले पहर भूपु नित जागा * आजु हमहिं बड़ अचरजु लागा ॥

जाहु सुमंत्र जगावहु जाई * कीजिय काजु रजायसु पाई ॥
 गये सुमंत्र तव राउर पाहीं * देखि भयावन जात डेराहीं ॥
 धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा * मानहुँ विपति - विषाद - बसेरा ॥
 पूछे कोउ न ऊतरु देई * गये जेहि भवन भूप कैकेई ॥
 कहि जय जीव बैठ भिर नाई * देखि भूपगति गयेउ सुखाई ॥
 सोच विकल विवरन महि परेऊ * मानहुँ कमलमूल परिहरेऊ ॥
 सचिव समीत सकइ नहिं पूछी * बोली असुभभरी सुभछूछी ॥
 दोहा—परी न राजहि नींद निसि, हेतु जान जगदीसु ।

रामु रामु रटि भोरु किय, कहइ न मरमु महीसु ॥३८॥

आनहु रामहिं बेगि बोलाई * ममाचार तव पूछेहु आई ॥
 चलेउ सुमंत्र रायख्व जानी * लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी ॥
 सोच विकल मग परइ न पाऊ * रामहिं बोलि कहहिं का राऊ ॥
 उर धरि धीरज गयेउ दुआरे * पूछहिं सकल देखि मनमारें ॥
 समाधानु करि मो सबही का * गयेउ जहाँ दिन-कर-कुल - टीका ॥
 राम सुमंत्रहि आवत देखा * आदर कीन्ह पितासम लेखा ॥
 निरखि बदन कहि भूपरजाई * रघु-कुल-दीपहिं चलेउ लेवाई ॥
 राम कुभाँति सचिव मँग जाहीं * देखि लोग जहँ तहँ विलखाहीं ॥
 दोहा—जाइ देखि रघु-बंस-मनि, नरपति निपट कुसाजु ।

सहामि परेउ लखि सिंघिनिहि, मनहुँ बृद्ध गजराजु ॥३९॥

सूखहिं अधर जरहिं सब अंगू * मनहुँ दान मनिहीन भुअंगू ॥
 सरख समीप देखि कैकेई * मानहुँ मीच धरी गनि लेई ॥
 करुनामय मृदु राम—सुमाऊ * प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ॥
 तदपि धीर धरि समउ विचारी * पूछी मधुर बचन महतारी ॥
 मोहि कहु मातु तात-दुख-कारन * करिय जतन जेहि होइ निवारन ॥
 सुनहु राम भव कारन एहू * राजहिं तुम्ह पर बहुत सनेहू ॥
 देन कहेन्हि माँहि दुइ वरदाना * माँगेहुँ जा कछु मोहि सुहाना ॥
 सो सुनि भयउ भूपउर सोचू * छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू ॥
 दोहा—सत सनेहु इत बचनु उत, संकट परेउ नरेसु ।

सकहु त आयसु धरहु सिर, मेदहु कठिन कलेसु ॥४०॥
 निधरक बैठि कहै कटुबानी * सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥
 जीभ कमान बचन सर नाना * मनहुँ महिप मृदु-लज्ज-समाना ॥
 जनु कठोरपनु धरे सरीरु * सिखइ धनुषविद्या वरवीरु ॥
 सब प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई * बैठि मनहुँ तनु धरि निदुराई ॥
 मन मुसुकाइ भानु-कुल-भानू * राम सहज - आनंद - निधानू ॥
 बोले बचन विगत सब दूपन * मृदु मंजुल जनु बागविभूपन ॥
 सुनु जननी मोइ सुत बड़भागी * जो पितु - मातु - वचन-अनुरागी ॥
 तनय मातु - पितु - तोषनि - हारा * दुर्लभ जननि मकलमंसारा ॥
 दोहा-मुनिगन मिलनु बिसेपि वन, सबहि भाँति हित मोर ।

तेहिमहँ पितुआयसु बहुरि, संमत जननी तोर ॥४१॥

भरत प्रानप्रिय पावहिं राजू * विधि सबविधि मोहिं मनमुख आजू ॥
 जौं न जाउं वन ऐमेहु काजा * प्रथम गनिय मोहि भूढसमाजा ॥
 सेवहिं अरंडु कलपतरु त्यागी * परिहरि अमृत लेहि विषु माँगी ॥
 तेउ न पाइ अस समउ चुकाहीं * देखि विचारि मातु मनमाहीं ॥
 अंब एक दुख मोहि विसेखी * निपट विकल नरनायक देखी ॥
 थोरिहि बात पितहि दुख भारी * होति प्रतीति न मोहि महतारी ॥
 राउ धीरु गुन-उदधि-अगाधू * भा मोहि तें कहु वड़ अपराधू ॥
 ता तें मोहि न कहत कहु राऊ * मोरि सपथ तोहि कहु मतिभाऊ ॥

दोहा--सहज सरल रघुवरवचन, कमति कुटिल करि जान ।

चलइ जौंक जिमि बक्राति, जद्यपि सलिल समान ॥४२॥

रहसी रानि रामरुख पाई * बोली कपट मनेह जनाई ॥
 सपथ तुम्हार भरत कइ आना * हेतु न दूगर में कहु जाना ॥
 तुम्ह अपराधु जोगु नहिं ताता * जननी-जनक-बंधु-मुख-दाता ॥
 राम सत्य सब जो कहु कहहु * तुम्ह पितु-मातु-वचन-रत अहहु ॥
 पितहिं बुझाइ कहहु बलि मोई * चौथेपन जेहि अजमु न होई ॥
 तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहि दीन्हे * उचित न तासु निरादरु कीन्हे ॥
 लागहिं कुमुखवचन सुभ कैसे * मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥

रामहिं मातुवचन सब भाये * जिमि सुरसरिगत सलिल सुहाये ॥
दोहा--गइ मुसुखा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवट लीन्ह ।

सचिव रामआगमन कहि, विनय समयसम कीन्ह ॥४३॥

अवनिय अकनि रामु पगु धारे * धरि धीरजु तव नयन उघारे ॥
सचिव मँभारि राउ बैठारे * चरन परत नृप रामु निहारे ॥
लिये मनेहविकल उर लाई * गइ मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥
रामहिं चितइ रहेउ नरनाहू * चला बिलोचन बारिप्रवाहू ॥
सोकविवम कल्लु कहइ न पारा * हृदय लगावत बारहिं वारा ॥
विधिहि मनाव राउ मनमाहीं * जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं ॥
सुमिरि महेमहि कहइ निहोरी * विनती सुनहु सदा सिव मोरी ॥
आसुतोप तुम्ह अवर दानी * आरति हरहु दीनजन जानी ॥

दोहा--तुम्ह प्रेरक सब के हृदय, सो मति रामहिं देहु ।

वचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि सील सनेहु ॥४४॥

अजम होउ जग सुजम नमाऊ * नरक परउँ वरु सुरपुर जाऊ ॥
सब दुख दुमह सहावहु मोहीं * लोचनओट राम जनि होहीं ॥
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला * पीपर-पात-सरिस मन डोला ॥
रघुपति पितहि प्रेम वम जानी * पुनि कल्लु कहिहि मातु अनुमानी ॥
देस कालु अवसर अनुमारी * बोले वचन विनीत विचारी ॥
तात कहउँ कल्लु करउँ दिठार्ई * अनुचित क्रमव जानि लरिकाई ॥
अति-लघु-घात लागि दुखपावा * काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा ॥
देखि गोसाइहिं पूछिउँ माता * सुनि प्रसंगु भये सीतल गाता ॥

दोहा--मंगलसमय सनेहवस, सोच परिहरिअ तात ।

आयसु देइअ हरपि हिय, कहि पुलके प्रभुगात ॥४५॥

धन्य जनसु जगतीतल तासू * पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू ॥
चारि पदारथ करतल ता के * प्रिय पितुमातु प्रानसम जाके ॥
आयसु पामि जनमफल पाई * ऐहउँ बेगिहि होउ रजाई ॥
विदा मातु मन आवउँ माँगी * चलिहउँ वनहिं बहुरि पग लागी ॥
अस कहि रामु गवन तव कीन्हा * भूप सोकवस उतरु न दीन्हा ॥

नगर व्यापि गइ वात सुतीखी * लुअत चढ़ी जनु सब तन वीखी ॥
मुनि भये विकल सकल नर नारी * वेंलि बिटप जिमि देखि द्वारी ॥
जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई * बड़ विषादु नहिं धीरज होई ॥
दोहा--मुख सुखाहिं लोचन सवहिं, सोकु न हृदय समाइ ।

मनहुँ करुन-रस-कटकई, उतरी अवध बजाइ ॥४६॥
मिलेहिं माँझ विधि वात विगारी * जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी ॥
एहि पापिनिहि बूझि का परेऊ * झाइ भवन पर पावक धरेऊ ॥
निजकर नयन काहि चह दीखा * डारि सुधा विप चाहत चीखा ॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी * भइ रघु-वंस-बेनु-वन आगी ॥
पालव वैठि पेंडु एहि काटा * सुख महँ सोक ठाटु धरि ठाटा ॥
सदा राम एहि प्रानसमाना * कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥
मत्य कहहिं कवि नारिसुभाऊ * सबविधि अगम अगाध दुराऊ ॥
निजप्रतिविंबु बरुक गहि जाई * जानि न जाइ नारिगति भाई ॥
दोहा--काह न पावकु जारि सक, का न समुद्र समाइ ।

का न करइ अवला प्रवल, केहि जग काल न खाइ ॥४७॥
का सुनाइ विधि काह सुनावा * का देखाइ चह काह देखावा ॥
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा * वर विचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा ॥
जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु * अवलाविवस ग्यान गुन गा जनु ॥
एक धरमपरमिति पहिचाने * नृपहि दोसु नहिं देहिं मयाने ॥
मिवि-दधीचि-हरिचंद - कहानी * एक एक मन कहहिं बखानी ॥
एक भरत कर संमत कहहीं * एक उदाम भाय मुनि रहहीं ॥
कान मूँदि कर रद गहि जीहा * एक कहहिं यह वात अलीहा ॥
सुकृत जाहिं अस कहत तुम्हारे * राम भरत कहँ प्रानपियारे ॥
दोहा--चंद चवड वरु अनलकन, सुधा होइ विप तूल ।

सपनेहुँ कवहुँ न करहिं कछु, भरत रामप्रतिकूल ॥४८॥
एक विधातहि दूपन देहीं * सुधा देखाइ दीन्ह विषु जेहीं ॥
खरभरु नगर मोच सब काह * दुमह दाह उर मिटा उखाह ॥
विप्रबधू कुलमान्य जठेरी * जे प्रिय परम कैकई केरी ॥

लगीं देन मिख मीलु मराही * वचन बानसम लागहिं ताही ॥
 भरत न मोहि प्रिय रामसमाना * मदा कहहु यह सब जग जाना ॥
 करहु राम पर सहजमनेहु * केहि अपराध आजु बन देहु ॥
 कबहुँ न कियेहु मवति आरेसू * प्रीति प्रतीति जान सब देसू ॥
 कौसल्या अब काह बिगारा * तुम्ह जेहि लागि बत्र पुर पारा ॥
 दोहा--सीय कि पिय संग परिहरिहि, लषनु कि रहिहहिं धाम ।

राजु कि भूँ जब भरत पुर, नपु कि जिइहि विनु राम ॥४६॥

अस बिचारि उर झाड़हु कोहु * सोक कलंक कोटि जनि होहु ॥
 भरतहिं अवमि देहु जुवराजू * कानन काह राम कर काजू ॥
 नाहिन रामु राज के भूखे * धरमधुरीन विषयरस रूखे ॥
 गुरुगृह बसहिं राम तजि गेहु * नृप मन अस बर दूसर लेहु ॥
 जौं नहिं लगिहहु कहें हमार * नहिं लागिहि कलु हाथ तुम्हारे ॥
 जौं परिडास कीन्हि कलु होई * तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ॥
 रामसरिम मुत कानन जोगू * काह कहिहि सुनि तुम्ह कहँ लोगू ॥
 उठहु बेगि सोइ करहु उपाई * जेहि विधि सोक कलंक नसाई ॥

छंद—जेहि भाँति सोक कलंक जाइ उपाय करि कुल पालही ।

हठि फेरु रामहिं जात बन जनि बात दूसरि चालही ॥

जिमि भानु विनु दिन प्रान विनु चंदु विनु जिमि जामिनी ।

तिमि अवध तुलसीदास प्रभु विनु समुझि धौं जिय भामिनी ॥

सोरठा—सखिन्ह सिखावन दीन्ह, सुनत मधुर परिनाम हित ।

तेइ कछु कान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥५०॥

उतरु न देइ दुसह रिस रूखी * मृगिन्ह चितव जनु बाधिनि भूखी ॥
 व्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी * चली कहत मतिमंद अभागी ॥
 राज करत यह दैव बिगोई * कीन्हेसि अस जस करइ न कोई ॥
 एहि विधि बिलपहिं पुर-नर-नारी * देहिं कुचालहिं कोटिक गारी ॥
 जरहिं विषमजर लेहिं उसामा * कवनि राम विनु जीवन आसा ॥
 विपुल वियोग प्रजा अकुलानी * जनु जल-चर-गन सूखत पानी ॥
 अतिबिषादबस लोग लोगार्ई * गये मातु पहिं राम गोसाई ॥

मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ * मिटा सोच जनि राखइ राज ॥
दोहा-नवगयंद रघुबीरमन, राजु अलान समान ।

छूट जानि बनगवनु सुनि, उर अनंद अधिकान ॥५१॥

रघु-कुल-तिलक जोरि दोउ हाथा * मुदित मातु पद नायेउ माथा ॥
दीन्ह असीस लाइ उर लीन्हे * भूषनबसन निञ्जावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चुंबति माता * नयन नेहजलु पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदय लगाये * स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये ॥
प्रेम प्रमोदु न कछु कहि जाई * रंक धनदपदवी जनु पाई ॥
सादर सुंदरबदन निहारी * बोली मधुरबचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी * कवहिं लगन मुद-मंगल-कारी ॥
सुकृत सील सुख सीव सुहाई * जनमलाभ कह अवधि अधाई ॥
दोहा-जेहि चाहत नरनारि सब, अतिआरत एहि भाँति ।

जिमि चातकि चातक त्रिषित, वृष्टि सरद रितु स्वाति ॥५२॥

तात जाउँ बलि बंगि नहाइ * जो मन भाव मधुर कछु खाइ ॥
पितुसमीप तब जायहु भैया * छइ बड़ि बार जाइ बलि मैया ॥
मातुबचन सुनि अतिअनुकूला * जनु सनेह-सुर-तरु के फूला ॥
सुखमकरंद भरे खियमूला * निरखि राम-मनु-भवरु न भूला ॥
धरमधुरीन धरमगति जानी * कहेउ मातु सन अति-मृदु-बानी ॥
पिता दीन्ह मोहि काननराजू * जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ॥
आयसु देहि मुदितमन माता * जेहि मुदमंगल कानन जाता ॥
जनि सनेह बस डरपसि भोरें * आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥
दोहा--बरष चारि दस बिपिन बसि, करि पितु-बचन-प्रमान ।

आइ पाय पुनि देखिहों, मन जनि करसि मलान ॥५३॥

बचन विनीत मधुर रघुवर के * सरसम लगे मातुउर करके ॥
सहमि सूखि सुनि सीतलबानी * जिमि जवास परे पावस पानी ॥
कहि न जाइ कछु हृदय-विषाद * मनहुँ मृगी सुनि केहरिनाद ॥
नयन सजल तन थरथर काँपी * माँजहि खाइ मीन जनु माँपी ॥
धरि धीरज सुतबदन निहारी * गदगदबचन कहति महतारी ॥

तात पितहि तुम्ह प्रानपियारे * देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥
 राज देन कहँ सुभदिन साधा * कहेउ जान वन केहि अपराधा ॥
 तात सुनावहु मोहि निदानू * को दिन-कर-कुल भयउ कृसानू ॥
 दोहा--निरखि रामरुखसचिवसुत, कारन कहेउ बुभाइ ।

सुनि प्रसंगु रहि भूक जिमि, दसा बरनि नहिं जाइ ॥५४॥

राखि न सकइ न कहि मक जाइ * दुहँ भाँति उर दारुन दाहू ॥
 लिखत सुधाकर गा लिखि राहू * विधिगति वामु सदा सब काहू ॥
 धरम सनेह उभय मति धेरी * भइ गति साँप ब्रह्मंदरि केरी ॥
 राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू * धरम जाइ अरु बंधुविरोधू ॥
 कहउँ जान वन तौ बड़ि हानी * मंकट-सोच-विवस भइ रानी ॥
 बहुरि समुक्ति तियधरम मयानी * रामभरत दोउ मुत मम जानी ॥
 सरलसुभाउ राममहतारी * बोली वचन धीर धरि भारी ॥
 तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका * पितुआयसु सब धरम क टीका ॥

दोहा--राजुदेन कहि दीन्ह वन, मोहिं न सो दुखलेसु ।

तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि, प्रजहि प्रचंड कलेसु ॥५५॥

जौं केवल पितु आयसु ताता * तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥
 जौं पितुमातु कहेउ वन जाना * तौ कानन मत-अवध-समाना ॥
 पितु वनदेव मातु वनदेवी * खग मृग चरनसरोरुह सेवी ॥
 अंतहु उचित नृपहि वनबासू * बय विलोकि हिय होइ हरासू ॥
 बड़भागी वन अवध अभागी * जो रघु-वंस-तिलक तुम्ह त्यागी ॥
 जौं मुत कहउँ संग मोहि लेहू * तुम्हरे हृदय होइ संदेहू ॥
 पूत परमप्रिय तुम्ह सवही के * प्रान प्रान के जीवन जी के ॥
 ते तुम्ह कहहु मातु वन जाऊँ * मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊँ ॥

दोहा--यह विचारि नहिं करउँ हठ, भूठ सनेह बढाइ ।

मानि मातकर नात बलि, सुरतिविसरि जनि जाइ ॥५६॥

देव पितर सब तुम्हहिं गोसाईं * राखहु नयन पलक की नाईं ॥
 अवधि अंबु प्रियपरिजन मीना * तुम्ह करुनाकर धरमधुरीना ॥
 अस विचारि सोइ करहु उपाई * सवहिं जिअत जेहि भेंटहु आई ॥

जाहु सुखेन वनहिं बलि जाऊँ * करि अनाथ जन-परिजन-गाऊँ ॥
 सब कर आजु सुकृतफल वीता * भयेउ करालकाल विपरीता ॥
 बहुविधि बिलपि चरन लपटानी * परमअभागिनि आपुहि जानी ॥
 दारुन-दुसह-दाह उर व्यापा * बरनि न जाइ विलापकल्पापा ॥
 राम उठाइ मातु उर लाई * कहि मृदुवचन बहुहि समुभाई ॥
 दोहा--समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाइ ।

जाइ सासु-पद-कमल-जुग, बंदि बैठि सिरु नाइ ॥५७॥

दीन्हि असीस सासु मृदुवानी * अतिसुकुमारि देखि अकुलानी ॥
 बैठि नमित मुख सोचति सीता * रूपरामि पति-प्रेम-पुनीता ॥
 चलन चहत बन जीवननाथू * केहि सुकृती सन होइहि माथू ॥
 की तनु प्रान कि केवल प्राना * विधि करतव कछु जाइ न जाना ॥
 चारु चरननख लेखति धरनी * नूपुरमुखर मधुर कवि बरनी ॥
 मनहुँ प्रेमवस विनती करहीं * हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं ॥
 मंजुविलोचन मोचति वारी * बोली देखि राममहतारी ॥
 तात सुनहु सिय अतिसुकुमारी * सासु-मसुर-परिजनहिं पियारी ॥
 दोहा-पिता जनक भूपालमनि, ससुर भानु-कुल-भानु ।

पति रवि-कुल-कैरव-विपिन-विधु गुन-रूप-निधानु ॥५८॥

मैं पुनि पुत्रवधू प्रिय पाई * रूपरामि गुन माल मुहाई ॥
 नयनपुतरि करि प्रीति बढाई * राखेउँ प्रान जानकिहि लाई ॥
 कल्पवलि जिमि बहु विधि लाली * सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
 फूलत फलत भयेउ विधि वामा * जानि न जाइ काह परिनामा ॥
 पलंगपीठ तजि गोद हिंडोरा * सिय न दीन्ह पगु अवनिकटोग ॥
 जिवनमूरि जिमि जोगवत रहेऊँ * दीपवाति नहिं टारन कहेंऊँ ॥
 सोइ सिय चलन चहति बन साथी * आयसु काह होइ रधुनाथा ॥
 चंद-किरन-रस-रसिक चकोरी * रविरुख नयन सकै किमि जोरी ॥
 दोहा-करि केहरि निसिचर चरहिं, दुष्ट जंतु वन भूरि ।

विषवाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवनि भूरि ॥५९॥

वनहित कोल किगत किसोरी * रची विरंचि विषय-मुख-भोरी ॥

ते कि सदा सबदिन मिलहिं, सबुइ समय अनुकूल॥६२॥

नरअहार रजनीचर चरहीं * कपटवेष विधि कोटिक करहीं ॥
 लागइ अति पहार कर पानी * विपिन विपति नहिं जाइ बग्यानी ॥
 ब्याल कराल विहँग बन घोरा * निसि-चर-निकर नारि-नर-चोरा ॥
 डरपहिं धीर महन सुधि आये * भृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाये ॥
 हंसगवनि तुम्ह नहिं बनजोगू * सुनि अपजसु मोहिं देइहि लोच ॥
 मानस - सलिल - सुधा प्रतिपाली * जिअइ कि लवनपयोधि मराली ॥
 नव - रसाल - बन विहरनसीला * सोह कि कोकिल विपिन करीला ॥
 रहहु भवन अस हृदय विचारी * चंदवदनि दुख कानन भारी ॥
 दोहा-सहज सुहृद-गुर-स्वामि-सिख, जो न करइ सिर मानि ।

सो पछिताइ अघाइ उर, अवसि होइ हितहानि ॥६३॥

सुनि मृदुवचन मनोहर पियके * लोचन ललित भरे जल सिय के ॥
 सीतलसिख दाहक भइ कैसें * चकइहि सरदचंद निमि जैसें ॥
 उतरु न आव विकल वैदेही * तजन चहत सुचि स्वामि सनेही ॥
 वरबस रोकि विलोचनवारी * धरि धीरज उर अवनिकुमारी ॥
 लागि मासुपग कह कर जोरी * छमवि देवि वड़ि अविनय मारी ॥
 दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई * जेहि विधि मोर परमहित होई ॥
 मैं पुनि समुझि दीखि मनमाहीं * पिय-विथांग-सम दुख जग नाहीं ॥
 दोहा-प्राननाथ करुनायतन, सुंदर सुखद सुजान ।

तुम्ह विनु रघु-कुल-कुमुद-विधु, सुरपुर नरक-समान ॥६४॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई * प्रियपरिवार सुहृद समुदाई ॥
 सासु ससुर गुरु सजन सहाई * सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
 जहँ लागि नाथ नेह अरु नाते * पिय विनु तियहि तरनिहुँ ते ताते ॥
 तनु धनु धामु धरनि पुरराजू * पतिबिहीन सब मांकसमाजू ॥
 भोग रोगसम भूषन भारू * जम - जातना - मग्गि मंसारू ॥
 प्राननाथ तुम्ह विनु जग माहीं * मो कहँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥
 जिअ विनु देह नदी विनु वारी * तैमिअ नाथ पुरुष विनु नारी ॥
 नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे * सरद-विमल-विधु-वदन निहारे ॥

दोहा-खग मृग परिजन नगर बन, बलकल विमल दुकूल ।

नाथसाथ सुर-सदन-सम, परनसाल सुखमूल ॥६५॥

बनदेवी बनदेव उदारा * करिहहिं सासु-ससुर-सम-सारा ॥
 कुस - किसलय - साथरी मुहाई * प्रभुसंग मंजु मनोजतुराई ॥
 कंद मूल फल अमिअ अहारू * अवध-सौध-सत-सरिस पहारू ॥
 छिनुछिनु प्रभु-पद-कमल विलोकी * रहिहहुँ मुदित दिवस जिमि कोकी ॥
 बनदुख नाथ कहे बहुतेरे * भय विषाद परिताप घनेरे ॥
 प्रभु-वियोग-लव-लेम-समाना * सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
 अस जिय जानि सुजान सिरोमनि * लेइअ संग मोहि छॉड़िअ जनि ॥
 विनती बहुत करौं का स्वामी * करुनामय उर-अंतर-जामी ॥
 दोहा--राखिअ अवध जो अवधिलगि, रहत जानिअहि प्रान ।

दीनबंधु सुंदर सुखद, सील-सनेह-निधान ॥६६॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी * छिनु छिनु चरनमरोज निहारी ॥
 सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं * मारग जनित सकल खम हरिहौं ॥
 पाय पखारि बैठ तरुआही * करिहौं वाउ मुदित मनमाही ॥
 खम-कन-सहित स्याम तनु देखे * कहँ दुख समउ प्रानपति पंखे ॥
 सम महि तृन-तरु-पल्लव डासी * पाय पलोटिहि सब निमि दासी ॥
 बारवार मृदुमूरति जोही * लागिहि तात वयारि न मोही ॥
 को प्रभुसंग मोहि चितवनि हारा * सिंघवधुहि जिमि ससक सियारा ॥
 मैं सुकुमारि नाथ बनजोगू * तुम्हहिं उचित तप मो कहँ भोगू ॥
 दोहा--ऐसेउ वचन कठोर सुनि, जाँ न हृदय विलगान ।

तौ प्रभु-विषम-वियोग-दुख, सहिहहि पावँर प्रान ॥६७॥

अस कहि सीय विकल भइ भारी * वचनवियोग न सकी सँभारी ॥
 देखि दसा रघुपति जिय जाना * हठि राखे नहिं राखिहि प्राना ॥
 कहेउ कृपाल भानु-कुल-नाथा * परिहरि सोच चलहु बन साथी ॥
 नहिं विषाद कर अवसर आजू * बेगि करहु बन-गवन-समाजू ॥
 कहि प्रियवचन प्रिया समुझाई * लगे मातुपद आसिप पाई ॥
 बेगि प्रजादुख मेटव आई * जननी निटुर बिसरि जनि जाई ॥

फिरिहि दसा विधि बहुरि कि मोरी * देखिहौं नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुधरी तात कब होइहि * जननी जिअत बदनविधु जोइहि ॥
दोहा--बहुरि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुवर तात ।

कबहिं बोलाइ लगाइ हिय, हरपि निरपिहौं गात ॥६८॥

लखि सनेह कातरि महतारी * वचन न आव विकल भइ भारी ॥
राम प्रबोध कीन्ह विधि नाना * समउ सनेह न जाइ बखाना ॥
तब जानकी सासुपग लागी * सुनिय माय में परम अभागी ॥
सेवा समय दैव बन दीन्हा * मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा ॥
तजब छोभ जनि आँड़िअ छोहू * करम कठिन कछु दोष न मोहू ॥
सुनि सियवचन सासु अकुलानी * दसा कवनि विधि कहौं बखानी ॥
वारहिं वार लाइ उर लीन्ही * धरि धीरज सिख आसिप दीन्ही ॥
अचल होउ अहिवात तुम्हारा * जब लगि गंग-जमुन-जल-धारा ॥
दोहा--सीतहि सासु असीस सिख, दीन्ह अनेकप्रकार ।

चली नाइ पदपदुम सिरु, अति हित वारहिं वार ॥६९॥

समाचार जब लखिमन पाये * व्याकुल विलखि बदन उठि धाये ॥
कंप पुलक तन नयन सनीरा * गहे चरन अति प्रेम अर्धारा ॥
कहि न मकत कछु चितवत ठाढ़े * मीन दीन जनु जल ते काढ़े ॥
सोच हृदय विधि का होनिहारा * सब मुख मुकृत मिरान हमारा ॥
मो कहँ काह कहव रघुनाथा * रग्विहहिं भवन कि लेइहहिं साथी ॥
राम बिलोकि बंधु कर जोरे * देह गंह सब मन तृन तोरे ॥
बोले वचन राम नयनागर * सील-सनेह-सरल-सुख-सागर ॥
तात प्रेमबस जनि कदराहू * ममुक्ति हृदय परिनाम उझाहू ॥
दोहा--मातु-पिता-गुरु-स्वामि-सिख, सिर धरि करहिं सुभाय ।

लहेउ लाभ तिन्ह जनम कर, न तरुजनम जग जाय ॥७०॥

अस जिय जानि मुनहु सिख भाई * करहु मातु-पितु-पद-मेवकाई ॥
भवन भरत रिपुसूदनु नाहीं * राउ वृद्ध मम दुख मन माहीं ॥
मैं बन जाऊँ तुम्हहिं लेइ साथी * होइ सबहिं विधि अवध अनाथा ॥
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारु * मव कहँ परइ दुमह-दुख-भारु ॥

रहहु करहु मव कर परितोषु * न तरु तात होइहि वड़ दोषु ॥
 जासु राज प्रियप्रजा दुखारी * मो नृपु अवमि नरकअधिकारी ॥
 रहहु तात अमि नीति विचारी * मुनत लपन भये व्याकुल भारी ॥
 मिअरं वचन मृषि गये कसे * परमत तुहिन तामरस जैसे ॥
 दोहा--उतरु न आवत प्रेमवस, गहे चरन अकुलाइ ।

नाथ दासु मै स्वामि तुम्ह, तजहु त कहा बसाइ ॥७१॥

दीन्हि मोहि मिश्र नीक गोमाई * लागि अगम अपनी कदराई ॥
 नरवर धीर धरम-धुर-धारी * निगम नीति कहँ ते अधिकारी ॥
 मै मिसु प्रभु-मनेह-प्रतिपाला * मंदर मेरु कि लेहि मराला ॥
 गुरु पितु मातु न जानउ काहू * कहउ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥
 जहँ लगि जगत मनेह मगाई * प्रीतिप्रतीति निगम निजु गाई ॥
 मोरे मवहि एक तुम्ह स्वामी * दीनबंधु उर-अंतर-जामी ॥
 धरम नीति उपदेसिअ ताही * कीरति-भूति-सुगति-प्रिय जाही ॥
 मन-क्रम-वचन चरनरत होई * कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥
 दोहा--करुनासिंधु सुबंधु के, सुनि मृदुवचन विनीत ।

समुभाये उर लाइ प्रभु, जानि सनेह समीत ॥७२॥

माँगहु विदा मातु मन जाई * आवहु बेगि चलहु बन भाई ॥
 मुदित भये सुनि रघुवर वानी * भयेउ लाभ वड़ गइ बड़ि हानी ॥
 हरषित हृदय मातु पहिं आये * मनहुँ अंध फिरि लोचन पाये ॥
 जाइ जननि पग नायउ माथा * मनु रघुनंदन-जानकि-साथा ॥
 पूछे मातु मलिन मन देखी * लपन कहा मव कथा विसेखी ॥
 गई सहमि सुनि वचन कठोरा * मृगी देखि दव जनु चहुँओरा ॥
 लपन लखेउ भा अनरथ आजू * एहि सनेह वस करव अकाजू ॥
 माँगत विदा सभय सकुचाही * जाइ संग विधि कहिहि कि नाही ॥
 दोहा--समुक्ति सुमित्रा राम-सिय-रूप-सुसील-सुभाउ ।

नृपसनेह लखि धुनेउ सिर, पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥७३॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी * सहज सुहद बोली मृदुवानी ॥
 तात तुम्हारि मातु बैदेही * पिता रामु सव भाँति सनेही ॥

अवध तहाँ जहँ रामनिवासू * तहईँ दिवसु जहँ भानुप्रकासू ॥
 जौँ पै सीय रामु वन जाहीं * अवध तुम्हार काजु कळु नाही ॥
 गुरु पितु मातु बंधु सुर साई * सेइअहि सकल प्रान की नाई ॥
 राम प्रानप्रिय जीवन जी के * स्वारथरहित मखा मवही के ॥
 पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें * सब मानिअहि राम के नातें ॥
 अस जिय जानि संग वन जाहू * लेहु तात जग जीवनलाहू ॥
 दोहा--भरि भागभाजन भयेहु, मोहि समेत बलि जाउँ ।

जौँ तुम्हरे मन छाँड़ि छल, कीन्ह रामपद ठाउँ ॥७४॥

पुत्रवती जुवती जग सोई * रघु-पति-भगत जासु सुतु होई ॥
 न तरु बाँझ भलि वादि विअानी * रामविमुख सुत तें हित हानी ॥
 तुम्हरेहि भाग राम वन जाहीं * दमर हेतु तात कळु नाही ॥
 सकल सुकृत कर बड़ फल गहू * राम-मीय-पद महज मनहू ॥
 राग रोष इरिपा महु मोहू * जनि मपनेहुँ इन्ह के बम होहू ॥
 सकल प्रकार बिकार विहाई * मन क्रम वचन करेहु मेवकाई ॥
 तुम्ह कहँ वन मव भाँति सुपासू * मंग पितु मातु रामु मिय जासू ॥
 जेहि न रामु वन लहहिं कलेसू * सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू ॥
 छन्द-उपदेसु यह जेहि जात तुम्हें राममिय मुख पावहीं ।
 पितु मातु प्रिय परिवारु पुर मुख मुरति वन विसरावहीं ॥
 तुलसी सुतहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आगिष दई ।
 रति होउ अविरल अमल मिय-रघु-वीर-पद नितनित नई ॥

सोरठा--मातुचरन सिर नाइ, चले तुरत संकित हृदय ।

बागुर बिषम तोराइ, मनहुँ भाग मगु भागवस ॥७५॥

गये लषनु जहँ जानकिनाथ * भे मन मुदित पाइ प्रिय माथ ॥
 बंदि राम-मिय-चरन सुहाये * चले मंग नृपमंदिर आये ॥
 कहहिं परमपर पुर-नर-नारी * भलि वनाइ विधि बात विगारी ॥
 तन कृम मन दुख वदन मलीने * विकल मनहुँ मार्गी मधु छीने ॥
 कर मीजहिं सिर धुनि पछिताहीं * जनु विनु पंग्व विहंग अकुलाहीं ॥
 भइ बड़ि भीर भूप दरवारा * वरनि न जाइ विपाद अपारा ॥

सचिव उठाइ राउ बैठारे * कहि प्रियवचन रामु पगु धारे ॥
सियसमेत दोउ तनय निहारी * व्याकुल भयेउ भूमिपति भारी ॥

दोहा--सीयसहित सुत सुभग दोउ, देखि देखि अकुलाइ ।

बारहि वार सनेहवस, राउ लेइ उर लाइ ॥ ७६ ॥

सकइ न बोलि विकल नरनाहू * मोकजनित उर दारुन दाहू ॥
नाइ मीम पद अतिअनुरागा * उठि रघुवीर विदा तव मांगा ॥
पितु अमीस आयसु मोहि दीजै * हरषममय विममउ कत कीजै ॥
तात किये प्रिय प्रेमप्रमाद * जम जग जाइ होइ अपवाद ॥

सुनि सनेहवस उठि नरनाहाँ * बैठारे रघुपति गहि बाहाँ ॥
सुनहु तात तुम्ह कहँ मुनि कहहीं * राम चराचरनायक अहहीं ॥
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी * ईसु देइ फल हृदय विचारी ॥
करइ जो करम पाव फल मोई * निगम नीति अमि कह सबु कोई ॥

दोहा--अउर करइ अपराध कोउ, अउर पाव फल भोगु ।

अतिविचित्र भगवंतगति, को जग जानइ जोगु ॥७७॥

राय राम राखन हित लागी * बहुत उपाय किये छलु त्यागी ॥
लखा रामरुख रहत न जाने * धरम-धुरं-धर धीर सयाने ॥
तव नृप सीय लाइ उर लीन्ही * अतिहित बहुत भाँति सिख दीन्ही ॥
कहि बन के दुख दुसह सुनाये * सासु ससुर पितु सुख समुझाये ॥

सिय मनु रामचरन अनुरागा * धरु न सुगम बन विषम न लागा ॥
अउरउ सबहि मीय समुझाई * कहि कहि विपिन विपति अधिकाई ॥
सचिवनारि गुरनारि सयानी * सहित सनेह कहहिं मृदुवानी ॥
तुम्ह कहँ तौ न दीन्ह बनवासू * करहु जो कहहिं ससुर-गुरु-सासू ॥

दोहा-सिख सीतलि हित मधुर मृदु, सुनि सीतहि न सोहानि ।

सरद-चंद-चंदिनि लगत, जनु चकई अकुलानि ॥७८॥

सीय सकुचवस उतरु न देई * सो मुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मुनि-पट-भूषन-भाजन आनी * आगे धरि बोली मृदु बानी ॥
नृपहिं प्रानप्रिय तुम्ह रघुवीरा * सील सनेह न छाँड़िहि भीरा ॥
सुकृत सुजस परलोकु नसाऊ * तुम्हहिं जान बन कहिहि न काऊ ॥

अस विचारि सोइ करहु जो भावा * राम जननिसिख सुनि सुखु पावा ॥
 भूपहि बचन वानसम लागे * करहिं न प्रान पयान अभागे ॥
 लोग विकल मुरुद्धित नरनाहू * काह करिय कछु सूझ न काहू ॥
 राम तुरत मुनिबंधु बनाई * चले जनक जननिहिं सिरुनाई ॥
 दोहा--सजि बन-साजु-समाजु सब, बनिता-बंधु-समेत ।

बंदि विप्र-गुर-चरन प्रभु, चले करि सबहि अचेत ॥७६॥
 निकसि बसिष्ठद्वार भये ठाढ़े * देखे लोग विरहदव दाढ़े ॥
 कहि प्रिय बचन सकल समुझायें * विप्रबृंद रघुबीर बोलाये ॥
 गुरु सन कहि बरषासन दीन्हें * आदर दान विनयबस कीन्हें ॥
 जाचक दान मान संतोपे * मीत पुनीत प्रेम परितोपे ॥
 दासी दास बोलाइ बहोरी * गुरुहिं सोंपि बोले कर जोरी ॥
 सब कै सार सँभार गोसाईं * करवि जनक जननी की नाईं ॥
 बारहिं बार जोरि जुग पानी * कहत राम सब मन मृदुवानी ॥
 सोइ सब भाँति मोर हितकारी * जेहि तें रहइ भुआल सुखारी ॥
 दोहा--मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहिं दुख दीन ।

सोइ उपाय तुम्ह करेहु सब, पुरजन परम प्रवीन ॥८०॥
 एहि विधि राम सबहिं समुझावा * गुरु-पद-पदुम हरपि मिरु नावा ॥
 गनपति गौरि गिरीष मनाई * चले असीम पाइ रघुराई ॥
 रामु चलत अति भयेउ विपाद * मुनि न जाइ पुर आरतनाद ॥
 कुसगुन लंक अवध अतिमोक * हृष-विपाद - विवस सुरलोक ॥
 गइ मुरुद्धा तब भूपति जागे * बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
 रामु चले बन प्रान न जाहीं * केहि मुख लागि रहत तन माहीं ॥
 एहि तें कवन व्यथा बलवाना * जो दुख पाइ तजिहि तनु प्राना ॥
 पुनि धरि धीर कहें नरनाहू * लेइ रथु मंग सखा तुम्ह जाहू ॥
 दोहा--सुठि सुकुमान कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारी ।

रथ चढ़ाइ देखराइ वनु, फिरेहु गये दिन चारि ॥८१॥
 जौं नहिं फिरिं धीर दोउ भाई * मत्यमंध दृढवत रघुराई ॥
 तौ तुम्ह विनय करेहु कर जोरी * फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी ॥

जब सिय कानन देखि डेराई * कहेहु मोर सिख अवसरु पाई ॥
 सासु ससुर अस कहेउ मँदेसू * पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू ॥
 पितुगृह कवहुँ कवहुँ ससुरारी * रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
 एहि विधि करेहु उपायकदंबा * फिरइ त होइ प्रानअवलंबा ॥
 नाहिं त मोर मरन परिनामा * कछु न बसाइ भये विधि बामा ॥
 अस कहि मुरुखि परा महि राऊ * राम लषनु - सिय आनि देखाऊ ॥
 दोहा-पाइ रजायसु नाइसिरु, रथु अति वेग बनाइ ।

गयेउ जहाँ वाहर नगर, सीयसहित दोउ भाइ ॥८२॥

तब सुमंत्र नृपवचन सुनाये * करि बिनती रथ राम चढ़ाये ॥
 चढ़ि रथ मीयसहित दोउ भाई * चले हृदय अवधहि सिरु नाई ॥
 चलत रामु लखि अवध अनाथा * विकल लोग सब लागे साथी ॥
 कृपासिंधु बहुविधि समुझावहिं * फिरहिं प्रेमवग्ग पुनि फिरि आवहिं ॥
 लागति अवध भयावनि भारी * मानहुँ कालराति अँधियारी ॥
 घोर जंतुमम पुर-नर-नारी * डरपहिं एकहिं एक निहारी ॥
 घर ममान परिजन जनु भूता * सुत हित मीत मनहुँ जमदूता ॥
 वागन्ह विटप बेलि कुम्हिलाहीं * मरित सरोवर देखि न जाहीं ॥
 दोहा-हय गय कोटिन्ह केलिमृग, पुरपसु चातक मोर ।

पिक रथांग सुक सारिका सारस हंस चकोर ॥८३॥

रामवियोग विकल सब ठाढ़े * जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े ॥
 नगरु सकल बन गहबर भारी * खग मृग विपुल सकल नरनारी ॥
 विधि कैकई किरातिनि कीन्हीं * जेहि देव दुमहदमहुँ दिसि दीन्हीं ॥
 सहि न सके रघु-वर - विरहागी * चले लोग सब व्याकुल भागी ॥
 सबहिं विचारु कीन्ह मनमाहीं * राम लषल सिय विनु सुख नाहीं ॥
 जहाँ रामु तहँ सबुइ समाजू * विनु रघुवीर अवध नहिं काजू ॥
 चले साथ अस मंत्रु दृढ़ाई * सुरदुर्लभ सुखसदन विहाई ॥
 राम-चरन-पंकज प्रिय जिन्हहीं * विषय भोग बस करहिं कि तिन्हहीं ॥
 दोहा-बालक वृद्ध विहाइ गृह, लगे लोग सब साथ ।

तमसा-तोर निवासु किय, प्रथम दिवसरघुनाथ ॥८४॥

रघुपति प्रजा प्रेमवस देखी * सदय हृदय दुख भयेउ विमेषी ॥
 करुनामय रघुनाथ गोसाई * वेगि पाइअहि पीर पराई ॥
 कहि सप्रेम मृदुवचन सुहाये * बहुविधि राम लोग ममुझायें ॥
 किये धरम - उपदेश घनेरे * लोग प्रेमवम फिगहिं न फेरे ॥
 सील सनेह छाँड़ि नहिं जाई * अममंजमवम भे रघुराई ॥
 लोग सोग-सम-वस गये सोई * कलुक देवमाया मति मोई ॥
 जवहिं जामजुग जामिनि वीती * राम मचिव मन कहेउ मप्रीती ॥
 खोज मारि रथ हाँकहु ताता * आन उपाय वनिहिं नहिं वाता ॥
 दोहा--राम लपनु सिय जान चढ़ि, संभुचरन सिरु नाइ ।

सचिव चलायेउ तुरत रथ, इत उत खोज ठुराइ ॥८५॥

जागे सकल लोग भये भोरु * गे रघुनाथ भयेउ अति सोरु ॥
 रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं * रामराम कहि चहुँ दिसि धावहिं ॥
 मनहुँ वारिनिधि बड़ जहाजु * भयेउ दिकल बड़ वनिकममाजू ॥
 एकहिं एक देहिं उपदेसू * तजे राम हम जानि कलेसू ॥
 निंदहिं आपु सराहहिं मीना * धिग जीवन रघु-वीर-विहीना ॥
 जौ पै प्रियवियोग विधि कीन्हा * तौ कम मरन न माँगे दीन्हा ॥
 एहि विधि करत प्रलापकलापा * आयें अवध भरे परितापा ॥
 विषमवियोग न जाइ बघाना * अवधिआम मव राखहिं प्राना ॥
 दोहा--राम-दरस-हित नेम व्रत, लगे करन नरनारि ।

मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन विहीन तमारि ॥८६॥

सीता-सचिव-सहित दोउ भाई * संगवरपुर पहुँचे जाई ॥
 उतरे राम देवसरि देखी * कीन्ह दंडवत हरष विमेषी ॥
 लपन सचिव सिय किये प्रनामा * मवहिं सहित सुख पायउ रामा ॥
 गंग सकल-मुद-मंगल - मूला * सब सुखकरनि हरनि सब सूला ॥
 कहि कहि कोटिक कथाप्रसंगा * रामु विलोकहिं गंगतरंगा ॥
 सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई * विबुध-नदी-महिमा अधिकाई ॥
 मज्जनु कीन्ह पंथसम गयेऊ * सुत्रि जल पियत मुदित मन भयेऊ ॥
 सुमिरत जाहि मिटइ स्रमभारु * तेहि स्रम यह लौकिकव्यवहारु ॥

दोहा—सुद्ध सच्चिदानंदमय, कंद भानु - कुल-केतु ।

चरित करत नरअनुहरत, संसृति-सागर-सेतु ॥ ८७ ॥

यह मुधि गुह निपाद जब पाई * मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥
 लिये फल मूल भेंट भरि भारा * मिलन चलेउ हिय हरष अपारा ॥
 करि दंडवत भेंट धरि आगे * प्रभुहि बिलोकत अतिअनुरागे ॥
 सहज - मनेह - विवम रघुराई * पूछी कुमल निकट वैठाई ॥
 नाथ कुमल पदपंकज देखे * भयेउं भागभाजन जन लेखे ॥
 देव धरनि - धन-धाम तुम्हारा * मैं जून नीच सहित परिवारा ॥
 कृपा करिय पुर धारिय पाऊ * थापिय जन सब लोग सिद्धाऊ ॥
 कहेहु सत्य सबु मगा सुजाना * मोहि दीन्ह पितु आयमु आना ॥
 दोहा—वरष चारिदस वास बन, मुनि-व्रत-बेषु-अहारु ।

ग्रामवास नहिं उचित सुनि, गुहहि भयेउ दुखभारु ॥ ८८ ॥

राम-लपन-सिय-रूप निहारी * कहहिं मप्रेम ग्राम-नर-नारी ॥
 ते पितु मातु कहहु सखि कैसे * जिन्ह पठ्ये बन बालक ऐसे ॥
 एक कहहिं भल भूपति कीन्हा * लोयनलाहु हमहिं विधि दीन्हा ॥
 तब निपादपति उर अनुमाना * तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥
 लेइ रघुनाथहि ठाउँ देखावा * कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
 पुरजन करि जोहारु घर आये * रघुवर संध्याकरन सिधाये ॥
 गुह सर्वाँरि सारथी डसाई * कुम-किमलय-मय मृदुल मुहाई ॥
 मुचि फल मूल मधुर मृदु जानी * दोना भरि भरि राखेसि आनी ॥
 दोहा—सिय-सुमंत्र-भ्राता-सहित, कंद मूल फल खाइ ।

सयन कीन्ह रघु-वंस-मनि, पाय पलोटत भाइ ॥ ८९ ॥

उठे लपनु प्रभु सोवत जानी * कहि सचिवहि सोवन मृदुबानी ॥
 कल्लुक दूरि सजि बानसरासन * जागन लगे बैठि बीरासन ॥
 गुह बोलाई पाहरू प्रतीती * ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती ॥
 आपु लपन पहिं बैठेउ जाई * कटि भाथा सरचाप चढ़ाई ॥
 सोवत प्रभुहि निहारि निपाद * भयेउ प्रेमबम हृदय विपाद ॥
 तनु पुलकित जलु लोचन वहरै * बचन सप्रेम लपन सन कहई ॥

भूपति-भवन सुभाय सुहावा * सुर-पति-सदन न पटतर पावा ॥
मनि-मय-रचित चारु चौवारे * जनु रतिपति निजहाथ सवारे ॥

दोहा-सुचि सुविचित्र सु-भोग-मय, सुमन सुगंध सुवास ।

पलंग मंजु मनिदीप जहँ, सब विधि सकल सुपास ॥६०॥

विविध वसन उपधान तुराई * वीरफेन मृदु विसद सुहाई ॥
तहँ सियराम सयन निसि करहीं * निज ब्रवि रति-मनोज-मद हरहीं ॥
ते सिय-रामु माधुरी सोये * समित वसन विनु जाहिं न जोये ॥
मातु पिता परिजन पुरवाभी * सखा सुमील दास अरु दासी ॥
जोगवहिं जिन्हहिं प्राण की नाई * महि मोवन तेइ राम गोसाई ॥
पिता जनक जग विदित प्रभाऊ * समुर सुरेममखा रघुराऊ ॥
रामचंद्र पति मो वैदेही * सोवन महि विधि वाम न केही ॥
सिय रघुवीर कि कानन जोगू * करम प्रधान मत्य कह लोगू ॥

दोहा--कैकयनंदिनि मंदमति, कठिन कुटिलपन कीन्ह ।

जेहि रघुनंदन जानकिहि, सुखअवसर दुख दीन्ह ॥६१॥

भइ दिन-कर-कुल-विटप-कुटारी * कुमति कीन्ह भव विस्व दुखारी ॥
भयउ विपाद निषादहि भारी * रामसीय महिसयन निहारी ॥
बोले लपन मधुर-मृदु-बानी * ज्ञान-विराग-भगति - रस सानी ॥
काहुन काउ सुख दुख कर दाता * निज कृत करम भोग सब भ्राता ॥
जोग वियोग भोग भल मंदा * हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥
जनमु मरनु जहँ लगि जगजालू * संपति विपति करमु अरु कालू ॥
धरनि धामु धनु पुर परिवारू * मरगु नरकु जहँ लगि व्यवहारू ॥
देखिय सुनिय गुनिय मन माहीं * मोह भूल परमारथ नाही ॥

दोहा--सपने होइ भिखारि नृपु, रंक नाकपति होइ ।

जागें लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोइ ॥६२॥

अस विचारि नहिं काजिय रोषू * काहुहि वादि न देख्य दोषू ॥
मोहनिमा सबु मोवनिहारा * देखिय सपन अनक प्रकारा ॥
एहि जग जामिनि जागहिं जोगी * परमारथी प्रपंचवियोगी ॥
पानिय तवहिं जीव जग जागा * जव सब विषय विलास विरागा ॥

होइ विवेक मोहभ्रम भागा * तव रघु-नाथ-चरन अनुरागा ॥
 सखा परम परमाशु गह * मन-क्रम-वचन रामपद नेह ॥
 राम ब्रह्म परमाश्रुपा * अविगत अलख अनादि अनूपा ॥
 सकल-विकार-रहित गतभेदा * कहि नित नेति निरूपहिं वेदा ॥
 दोहा--भगत भूमि भूसुर सुरभि, सुर हित लागि कृपाल ।

कात चरित धरि मनुज तन, सुनत मिटहिं जगजाल ॥६३॥

सखा समुझि अस परिहारि मोह * सिय - रघुवीर - चरन रत होह ॥
 कहत रामगुन भा भिनुमारा * जागे जगमंगल—दातारा ॥
 सकल सौच करि राम नहावा * सुचि सुजान वटछीर मंगावा ॥
 अनुजसहित गिर जटा बनाये * देखि सुमंत्र नयनजल द्वाये ॥
 हृदय दाहु अति बदन मर्तना * कह कर जोरि वचन अति दीना ॥
 नाथ कहेउ अस कामलनाथा * लेह रथ जाहु राम के साथी ॥
 बन देखाइ मुरसरि अन्हवाई * आनेहु फेरि वेगि दोउ भाई ॥
 लखनु रामु सिय आनेहु पेरी * अंमय सकल संकोच निवैरी ॥
 दोहा—नप अस कहेउ नोसाई जस, कहइ करउँ बलि सोइ ।

करि विनती पायन्ह परेउ, दीन्ह बालजिमि रोइ ॥६४॥

तात कृपा करि कीजिय सोई * जा तें अवध अनाथ न होई ॥
 मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा * तात धरम मतु तुम्ह सब सोधा ॥
 सिवि दधोच हरिचंद नरेसा * सहे धरमहित कोटि कलेसा ॥
 रंतिदेव बलि भूप सुजाना * धरम धरेउ सहि संकट नाना ॥
 धरमु न दूसर सत्यसमाना * आगम निगम पुरान बखाना ॥
 मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा * तजे तिहुँपुर अपजमु द्वाया ॥
 संभावित कहें अपजसलाहु * मरन-कोटि-सम दारुन दाहु ॥
 तुम्ह सन तात बहुत का कहऊं * दियें उतरु फिरि पातक लहऊं ॥
 दोहा—पितुपद गहि कहि कोटि नति, विनय करव कर जोरि ।

चिंता कवनिहुँ बात कै, तात करिय जनि मोरि ॥६५॥

तुम्ह पुनि पितुसम अतिहित मोरे * विनती करौं तात कर जोरे ॥
 सब विधि सोइ करतव्य तुम्हारे * दुख न पाव पितु सोच हमारे ॥

मुनि रघु-नाथ - मन्त्रि - संवाद ॥ भयउ मपरिजन विकल निपाद ॥
 पुनि कछु लपन कही कदवानी ॥ प्रभु वरजेउ बड़ अनुचित जानी ॥
 सकुचि राम निजसपथ देवाई ॥ लपनमँदेसु कहिय जनि जाई ॥
 कह सुमंत्रु पुनि भूप मँदेसु ॥ महिन मकिहि भिय विपिन कलेसू ॥
 जेहि विधि अवध आव फिरि मीया ॥ सोइ रघुवरहि तुम्हहि करनीया ॥
 न तरु निपट अवलंबविहीना ॥ में न जियव जिमि जल विनु मीना ॥
 दोहा--मइकेँ ससुरें सकलसुख, जवहिँ जहाँ मन मान ।

तहँ तव रहिहि सुखेन सिय, जव लगि विपति विहान ॥६६॥

विनती भूप कीन्ह जेहि भाँती ॥ आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥
 पितुमँदेस मुनि कृपानिधाना ॥ मियहि कीन्ह भिय कोटि विधाना ॥
 मामु ससुर गुरु प्रिय परिवार ॥ तिरहु तन्त्र कर भिटइ स्वँभार ॥
 मुनि पतिवचन कहति वैदेहा ॥ मुनहु धानपति परममनेही ॥
 प्रभु करुनामय परमविनेकी ॥ तनु तजि रहति द्यौह किमि लंकी ॥
 प्रभा जाइ कहँ मानु विहाई ॥ कहँ चंद्रिका अहु तजि जाई ॥
 पतिहि प्रेममय विनथ मुनाई ॥ कहति मन्त्रि मन गिरा मुहाई ॥
 तुम्ह पितु-ससुर-सरिम हितकारी ॥ उतरु देउ फिरि अनुचित भारी ॥
 दोहा--आरतिवस सनमुख भइउ, विलसुन मानव तात ।

आरज-सुत-पद-कमल विनु, बाँद जहाँ लगि नात ॥६७॥

पितु - वैभव - विलास में डीठा ॥ नृप-भनि-मुकुट मिलत पदपीठा ॥
 सुखनिधान अम पितुग्रह मोरें ॥ प्रियविहीन मन भाव न मोरें ॥
 ससुर चक्रवड कोसलगऊ ॥ भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
 आगे होइ जेहि सुरपति लेई ॥ अरधमिहामन आसनु देई ॥
 ससुर एतादम अवधनिवास ॥ प्रिय परिवार मातुमम मामू ॥
 विनु रघुपति - पद - पदुम-परागा ॥ मोहि कोउ मपनहुँ सुखद न लागी ॥
 अगम पंथ वन भूमि पहारा ॥ करि केहरि सर सरित अपारा ॥
 कोल किरात कुरंग विहंगा ॥ मोहि सब सुखद प्रान-पति-संगा ॥
 दोहा--सासु ससुर सन मोरि हंति, विनय करवि परि पाँय ।

मोर सोचु जनि करिय कछु, में वन सुखी सुभाय ॥६८॥

प्राननाथ प्रियदेवर साथ * धीर धुरीन धरें धनु भाथा ॥
 नहिं मग स्रम भ्रम दुख मन मोरें * मोहिलगि मोचुकरिय जनि भोरें ॥
 सुनि सुमंत्रु सिय सीतलवानी * भयउ विकल जनु फनि मनिहानी ॥
 नयन सूझ नहिं मुनइ न काना * कहिन सकइ कलु अति अकुलाना ॥
 राम प्रवोधु कीन्ह बहुभाँती * तदपि होति नहिं सीतल छाती ॥
 जतन अनेक साथहित कीन्हे * उचित उतर रघुनंदन दीन्हे ॥
 मेटि जाइ नहिं रामरजाई * कठिन करमगति कलु न वसाई ॥
 राम-लषन-सिय-पद सिरु नाई * फिरेउ वनिक जिमि मूर गवाँई ॥
 दोहा--रथ हाँकेउ हय रामतन, हेरि हेरि हिहिनाहिं ।

देखिनिपाद विषादवस, धुनहिं सीस पछिताहिं ॥६६॥

जासु वियोग विकल पसु ऐसैं * प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसैं ॥
 वरवस राम सुमंत्रु पठाये * मुरसरितीर आपु तव आये ॥
 माँगी नाव न केवट आना * कहइ तुम्हार मरमु में जाना ॥
 चरन-कमल-रज कहँ सब कहइ * मानुषकरनि मूरि कलु अहई ॥
 छुअत सिला भइ नारि सुहाई * पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
 तरनिउँ मुनिघरनी होइ जाई * वाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥
 एहि प्रतिपालउँ सब परिवारू * नहिं जानउँ कलु और कवारू ॥
 जौँ प्रभु पार अवसि गा चहहू * मोहि पदपदुम पखारन कहहू ॥

छंद—पदकमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।

मोहि राम राउरि आन दसरथसपथ सब साँची कहौं ॥

वरु तीर मारहु लषन पै जब लगि न पाय पखारिहौं ।

तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पारु उतारिहौं ॥

दोहा—सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे ।

बिहँसे करुना ऐन, चितइ जानकी-लषन-तन ॥१००॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई * सोइ करु जेहि तव नाव न जाई ॥
 बेगि आनु जल पाय पखारू * होत बिलंब उतारिहि पारू ॥
 जासु नाम सुमिरत एक वारा * उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
 सोइ कृपालु केवटहि निहोरा * जेहि जग किय तिहुँ पगहुँ तें थोरा ॥

पदनख निरखि देवसरि हरषी * सुनि प्रभुवचन मोह मति करपी ॥
 केवट रामरजायसु पावा * पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥
 अतिआनंद उमगि अनुरागा * चरनसरोज पखारन लागा ॥
 बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं * एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाही ॥
 दोहा—पद पखारि जलपान करि, आपु सहित परिवार ।

पितर पारु करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लेइ पार ॥१०१॥

उतरि ठाढ़ भये सुरसरिंता * सीय राम गुह लपन समता ॥
 केवट उतरि दंडवत कीन्हा * प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ॥
 पियहिय की सिय जाननिहारी * मनिमुंदरी मन मुदित उतारी ॥
 कहेउ कृपाल लेहु उतराई * केवट चरन गहेउ अकुलाई ॥
 नाथ आजु मैं काह न पावा * मिटे दोष—दुख—दारिद—दावा ॥
 बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी * आजु दीन्ह विधि वनि भलि भूरी ॥
 अब कछु नाथ न चाहिय मोरें * दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥
 फिरती वार मोहि जोइ देवा * सो प्रसाद मैं सिर धरि लेवा ॥
 दोहा—बहुत कीन्ह प्रभु लपन सिय, नहिं कछु केवट लेइ ।

विदा कीन्ह करुनायतन, भगति विमल वर देइ ॥१०२॥

तव मज्जन करि रघुकुलनाथा * पूजि पारथिव नायउ माथा ॥
 सिय सुरसरिहिं कहेउ कर जोरी * मातु मनोरथ पुरउवि मोरी ॥
 पति-देवर-संग कुसल वहांरा * आइ करउं जेहि पूजा तोरी ॥
 सुनि सियविनय प्रेम-रस-सानी * भइ तव विमल वारि वरबानी ॥
 सुनु रघु-वीर-प्रिया बैदेही * तव प्रभाउ जग विदित न केही ॥
 लोकप होहिं विलोकत तोरे * तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरें ॥
 तुम्ह जो हमहिं बड़ि विनय सुनाई * कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बड़ाई ॥
 तदपि देवि मई देवि असीसा * सफल होन हित निजवागीसा ॥
 दोहा—प्राननाथ देवरसहित, कुसल कोसला आइ ।

पूजेहि सब मनकामना, सुजसु रहिहि जग छाइ ॥१०३॥

गंगवचन सुनि मंगलमूला * मुदित सीय सुरसरि अनुकूला ॥
 तव प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू * सुनत सूख मुख भा उर दाहू ॥

दीनवचन गुह कह कर जोरी * विनय सुनहु रघु-कुल-मनि मोरी ॥
 नाथ साथ रहि पंथ देखाई * करि दिन चारि चरनसेवकाई ॥
 जेहि वन जाइ रहव रघुराई * परनकुटी में करवि सुहाई ॥
 तव मोहि कहँ जगि देव रजाई * मोइ करिहों रघु-बीर-दोहाई ॥
 सहजसनेह राम लखि ताम् * मंग लीन्ह गुह हृदय हुलासू ॥
 पुनि गुह ज्ञाति बोलि मव लीन्ह * करि परितोष बिदा तव कीन्ह ॥
 दोहा-तव गनपति सिव सुमिरि प्रभु, नाइ सुरसरिहिं माथ ।

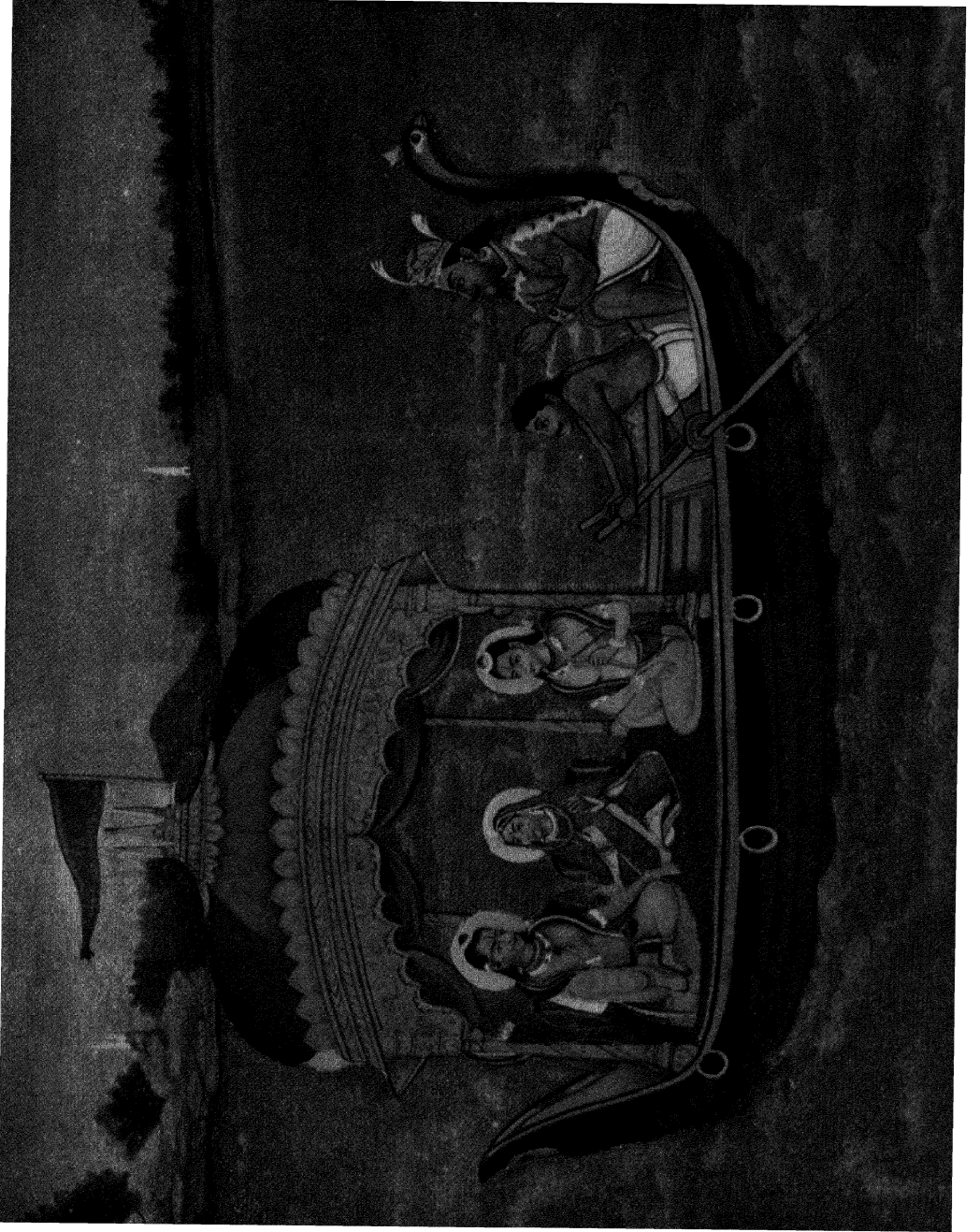
सखा-अनुज-सिय-सहित वन, गवन कीन्ह रघुनाथ ॥१०४॥

तेहि दिन भयेउ विटप तर वासू * लपन सखा मव कीन्ह सुपासू ॥
 प्रात प्रातकृत करि रघुराई * तीरथराजु देखि प्रभु जाई ॥
 सचिव सत्य सदा प्रियनारी * माधवमरिम मीत हितकारी ॥
 चारि पदारथ भरा भंडारू * पुन्य प्रदेम देम अति चारू ॥
 क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा * मपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा ॥
 सेन सकल तीरथ वरवीरा * कलुप-अनीक-दलन रनधीरा ॥
 मंगमु सिंहासन सुटि मोहा * छत्रु अपयवटु मुनिमन मोहा ॥
 चवरँ जमुन अरु गंग तरंगा * देखि होहिं दुख दारिद भंगा ॥
 दोहा-सेवहि सुकृती साधु सुचि, पावहिं सव मन काम ।

बंदी वेद-पुरान-गन, कहहि विमल गुनग्राम ॥१०५॥

को कहि सकइ प्रयागप्रभाऊ * कलुप - पुंज - कुंजर - मृग - राज ॥
 अम तीरथपति देखि सुहावा * मुखसागर रघुवर सुखपावा ॥
 कहि मिथ लपनहिं सखहिं सुनाई * श्रीमुख तीरथ - राज - वड़ाई ॥
 करि प्रनाम देखत वन वागा * कहत महातम अति अनुरागा ॥
 एहि विधि आइ विलोकी बनी * सुमिरत सकल सुमंगल देनी ॥
 मुदित नहाइ कीन्हि सिवसेवा * पूजि जथाविधि तीरथदेवा ॥
 तव प्रभु भरद्वाज पहिं आयं * करत दंडवत मुनि उर लाये ॥
 मुनि-मन-मोद न कलु कहि जाई * ब्रह्मानंदरासि जनु पाई ॥
 दोहा-दीन्हि असौस मुनीस उर, अति अनंदु अस जानि ।

लोचनगोचर सुकृतफल, मनहुँ कियेविधि आनि ॥१०६॥



पद् पखारि जलपान करि, आपु सहित परिवार । भार्गव भूषण प्रेस, बनारस । (कार्पी गश्ट)
पितर पारु करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लेइ पार ॥

कुसलप्रसन्न करि आसन दीन्हे ❀ पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ॥
 कंद मूल फल अंकुर नाके ❀ दिये आनि मुनि मनहुँ अमी के ॥
 सीय-लपन-जन-सहित सुहाये ❀ अति रुचि राम मूलफल खाये ॥
 भये विगतस्रम राम मुखारे ❀ भरद्वाज श्रुतुवचन उचारे ॥
 आजु सुफल तप तीरथ त्यागू ❀ आजु सुफल जप जोग विरागू ॥
 सुफल सकल-सुभ-साधन-साजू ❀ राम तुम्हहि अवलोकत आजू ॥
 लाभ अवधि सुख अवधि न दूरी ❀ तुम्हरे दरस आम सब पूजी ॥
 अब करि कृपा देहु वर एहू ❀ निज-पद-सरसिज सहजसनेहू ॥
 दोहा-करम वचन मन छाँडि छल, जब लागि जन न तुम्हार ।

तव लागि सुखसपनेहुँ नहीं, किये कोटिउपचार ॥ १०७ ॥

मुनि मुनिवचन राम मकुचाने ❀ भाव भगति आनंद अधाने ॥
 तव रघुवग मुनि मुजम सुहावा ❀ कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा ॥
 सो बड़ सो सब-गुन-गन-गंहू ❀ जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥
 मुनि रघुवार परसपर नवहीं ❀ वचन अगोचर सुख अनुभवहीं ॥
 यह मुधि पाइ प्रयागनिवासी ❀ बटु तापम मुनि मिद्ध उदासी ॥
 भरद्वाजआस्रम सब आयें ❀ देखन दमरथमुअन सुहायें ॥
 राम प्रनाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित भयें लहि लोयन लाहू ॥
 देहिं अमीस परमसुख पाई ❀ फिरें सराहत मुंदरताई ॥

दोहा-राम कीन्ह विस्वाम निसि, प्रात प्रयाग नहाइ ।

चले सहित सिय लपन जन, मुदित मुनिहिं सिरुनाइ ॥ १०८ ॥

राम मप्रेम कहेउ मुनि पाहीं ❀ नाथ कहिय हम केहि मग जाहीं ॥
 मुनि मन विहँसि राम मन कहहीं ❀ सुगम सकलमगु तुम्ह कहें अहहीं ॥
 साथ लागि मुनि सिष्य बोलाये ❀ मुनि मन मुदित पचास क आयें ॥
 सबन्हि राम पर प्रेम अपारा ❀ सकल कहहिं मगु दीख हमारा ॥
 मुनि बटु चारि संग तव दीन्हे ❀ जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे ॥
 करि प्रनाम रिषि आयसु पाई ❀ प्रमुदित हृदय चले रघुराई ॥
 ग्राम निकट निकसहिं जब जाई ❀ देखहिं दरस नारिनर धाई ॥
 होहिं सनाथ जनमफलु पाई ❀ फिरिं दुखित मन संग पठाई ॥

दोहा—विदा किये बटु विनय करि, फिरे पाइ मनकाम ।

उतरि नहाये जमुनजल, जो सरीरसम स्याम ॥१०६॥

सुनत तीरवासी नरनारी * धाये निज निज काज विसारी ॥
 लपन - राम - मिय - सुंदरताई * देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई ॥
 अति लालभा सवहिं मन माहीं * नाउं गाउं बूझत सकुचाहीं ॥
 जे तिन्ह महँ वयविरिध मयाने * तिन्ह करि जुगुति राम पहिचाने ॥
 सकलकथा तिन्ह सवहिं सुनाई * वनहि चले पितुआयसु पाई ॥
 सुनि सविपाद सकल पछिताहीं * रानी राय कीन्हि भल नाहीं ॥
 तेहि अबसर एक तापस आवा * तेजपुंज लघुवयस सुहावा ॥
 कवि अलपितगति त्रेपु विरागी * मन - क्रम - बचन रामअनुरागी ॥

दोहा—सजल नयन तन पुलकि निज, इष्टदेउ पहिचानि ।

परेउ दंड जिमि धरनितल, दसान जाइ बखानि ॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा * परमरंक जनु पारसु पावा ॥
 मनहुं प्रेम परमारथ दोऊ * मिलत धरं तन कह सब कोऊ ॥
 बहुरि लपन पायन्ह सोइ लागा * लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ॥
 पुनि सिय-चरन-धूरि धरि सीमा * जननि जानि सियु दीन्ह असीमा ॥
 कीन्ह निपाद दंडवत तेही * मिलेउ मुदित लखि राममनेही ॥
 पियत नयनघुट रूपु पियूवा * मुदित सुअमनु पाइ जिमि भूवा ॥
 ते पितु मातु कहहु मखि कैसे * जिन्ह पठये वन बालक ऐसे ॥
 राम - लपन - सिय - रूप निहारी * होहिं सनेह बिकल नरनारी ॥

दोहा--तव रघुवीर अनेकविधि, सखहि सिखावनु दीन्ह ।

रामरजायसु सीस धरि, भवन गवँनु तेई कीन्ह ॥१११॥

पुनि सिय राम लपन कर जोरी * जमुनहिं कीन्ह प्रनाम बहोरी ॥
 चले ससीय मुदित दोउ भाई * रवितनुजा कै करत बड़ाई ॥
 पथिक अनेक मिलहिं मग जाता * कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
 राजलपन सब अंग तुम्हारे * देखि सोचु अति हृदय हमारे ॥
 मारग चलहु पयादेहिं पाये * ज्योतिष भूट हमारेहि भाये ॥
 अगमु पंथु गिरि कानन भारी * तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी ॥

करि केहरि बन जाइ न जोई * हम संग चलहिं जो आयसु होई ॥
जाव जहाँ लगि तहँ पहुँचाई * फिरव बहोरि तुम्हहिं सिर नाई ॥
दोहा—एहि विधि पूछहिं प्रेम बस, पुलकगात जल नैन ।

कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं, कहि विनती मृदु बैन ॥११२॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं * तिन्हहिं नाग-सुर-नगर मिहाहीं ॥
केहि सुकृती केहि घरी बसाये * धन्य पुन्यमय परम सुहाये ॥
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं * तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥
पुन्यपुंज मग-निकट-निवासी * तिन्हहिं मराहहिं सुर-पुर-वासी ॥
जे भरि नयन विलोकहि रामहिं * सीता-लपन-सहित धनस्यामहिं ॥
जे सर सरित राम अरवगाहहिं * तिन्हहिं देव-सर-सरित मराहहिं ॥
जेहि तरुतर प्रभु बैठहिं जाई * करहि कल्पतरु तासु वड़ाई ॥
परसि राम - पद - पदुम - परागा * मानति भूमि भूरि निजभागा ॥
दोहा—छाहँ करहिं घन विबुधजन, वरपहिं सुमन सिहाहिं ।

देखत गिरि बन विहंग मृग, राम चले मग जाहिं ॥११३॥

सीता - लपन - सहित रघुराई * गाँव निकट जव निकसहिं जाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी * चलहिं तुरत गृह काज विमारी ॥
राम-लपन-सिय-रूप निहारी * पाइ नयनफलु होहिं मुग्धारी ॥
सजल विलोचन पुलक सरीरा * सब भये मगन देखि दोउ वीरा ॥
बरान न जाइ दसा तिन्ह केरी * लहि जनु रंकन्ह सुर-मनि-देरी ॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं * लोचन लाहु लेहु छन एहीं ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे * चितवत चले जाहिं संग लागे ॥
एक नयनमग छवि उर आनी * होहिं सिथिल तन मन वरवानी ॥
दोहा—एक देखि बटछाहँ भलि, डसि मृदुल तृन पात ।

कहहिं गवाँइअ छिनुक सम, भवनव अवहिं कि प्रात ॥११४॥

एक कलस भरि आनाहिं पानी * अँचइय नाथ कहहिं मृदुवानी ॥
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी * रामु कृपालु मुर्माल विमेशी ॥
जानी समित सीय मन माहीं * धरिक विलम्ब कीन्ह बटछाहीं ॥
मुदित नारिनर देखहिं सोभा * रूपअनूप नयन मन लोभा ॥

एकटक मव मोहहिं चहुँओग ॥ रामचंद्र - मुख - चंद्र - चकोरा ॥
 तरुन-तमाल-बरन तनु मोहा ॥ देखत कोटि-मदन-मन मोहा ॥
 दामिनिवरन लपन मुठि नीके ॥ नखगिख सुभग भावते जीके ॥
 मुनिपट कटिन्ह कम तूनीरा ॥ मोहहिं करकमलानि धनुतीरा ॥
 दोहा-जटा मुकुट सीसनि सुभग, उर भुज नयन विसाल ।

सरद-परव-विधु-बदन बर, लसत स्वैद-कन-जाल ॥११५॥

बरनि न जाड मनोहर जोरी ॥ मोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥
 राम - लपन - मिय - सुंदरतार्ई ॥ मव चितवहिं चित मन मति लार्ई ॥
 थके नारि नर प्रेम पियामे ॥ मवहुँ मृगी मृग देखि दियासे ॥
 सीयममीण श्राभतिय जाही ॥ पूछत अनियमहे मकुचाही ॥
 वार वार मव लागहि पाये ॥ कहहि वचन मृदुमरल सुभाये ॥
 राजकुमारि विनय हम करही ॥ तिय सुभाय कलु पूछत डरही ॥
 स्वामिनि अविनय दमवि हमारे ॥ विलगु न मानव जानि गवारी ॥
 राजकुअँर दोउ महज भलोने ॥ इन्ह तें लहि दुति धरकत मोने ॥
 दोहा-स्यामल गौर किसोर बर, सुंदर सुखमा ऐन ।

सरद-सर्वरी-नाथ-मुख, सरदसरोरुह नैन ॥११६॥

कोटि मनोज लजावनिहारे ॥ मुमुक्षि कहहु को आहि तुम्हारे ॥
 सुनि मनहमथ मंजुलवानी ॥ मकुचि माय मन महुँ सुमुकानी ॥
 तिनहिं विलोकि विलोकति धरनी ॥ दुहुँ मकोच मकुचनि वरवनी ॥
 मकुचि सप्रेम बाल-भृग-नैनी ॥ बोली मधुरवचन पिकवैनी ॥
 महज सुभाय सुभग तन गोरे ॥ नाम लपन लघुदेवर मोरे ॥
 बहुरि बदनत्रिधु अंचल टाँकी ॥ पियतन चितड मोह करि बाँकी ॥
 म्वंजनमंजु तिरीछे नैननि ॥ निजपतिकहेउ तिन्हहिं सियमैननि ॥
 भई मुदित मव श्राभवधूटी ॥ रंकन्ह रायरामि जनु लूटी ॥
 दोहा-अतिसप्रेम सियपाय परि, बहुविधि देहिं असीस ।

सदा सोहागिनि होहु तुम्ह, जवलागि महिअहिसीस ॥११७॥

पारवतीसम पतिप्रिय होहु ॥ देवि न हम पर छाँड़व छोहु ॥
 पुनि पुनि विनय करिय कर जोरी ॥ जौं एहि मारग फिरिय बहोरी ॥

दरसन देव जानि निज दाम्नी ॥ लखी भीय मत्र प्रेमपियासी ॥
 मधुरवचन कहि कहि परितोषी ॥ जनु कुमुदिनी कौमुदी पोपी ॥
 तवहिं लपन रघुवरसख जानी ॥ पृथ्वेउ मगु लोगन्हि मृदुवानी ॥
 सुनत नारिनर भये दुख्यारी ॥ पुलकित गान विलोचन वारी ॥
 मिटा मोद मन भये मलीने ॥ विधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने ॥
 समुझि करम गति धीरज कीन्हा ॥ सोधि भुगम मगु तिन्हकहि दीन्हा ॥
 दोहा—लपन-जानकी-सहित तव, गवन कीन्ह रघुनाथ ।

फेरे सब प्रियवचन कहि लिये लाइ मन साथ ॥११८॥

फिरत नारिनर अनि पछिताही ॥ देवहि दोषु देहिं मन माही ॥
 सहित विपाद परमपर कहती ॥ विधिभरतव उलट गव अहती ॥
 निपट निरकुम निरुन निरक ॥ जोहि मरि कीन्ह मरुज सकलंकू ॥
 रस कलपतरु सागर साग ॥ लेहि पश्ये वन राजकुमारा ॥
 जों ऐ इन्हहिं दीन्ह वनवास ॥ कीन्ह वादि विधि भोगविलास ॥
 ए विचरहिं मग विनु पदत्राना ॥ गचे वादि विधि वाहन नाना ॥
 ए महि परहिं डाम कुमपाता ॥ सुभामेज कत मृजत विधाता ॥
 तरु-वर-वास इन्हहिं विधि दीन्हा ॥ धवलधाम रवि रवि सम कीन्हा ॥

दोहा—जों ए पुनि-पट-धर अटिक, सुंदर सुठि सुकुमार ।

विविधभांति भूपन वसन, वादि किये करतार ॥११९॥

जों ए कंद मूल फल खाही ॥ वादि सुधादि अमन जग माही ॥
 एक कहहिं ए सहज सुहाये ॥ आपु प्रगट भये विधि न बनाये ॥
 जह लगि वेद कही विधिकरनी ॥ मवन नपन मन गोचर वरनी ॥
 देखहु ग्योञि भुवन दमनारी ॥ कह अग पुरुष कहाँ अमि नारी ॥
 इन्हहिं देखि विधि मनु अनुगना ॥ पश्यत जोग वनावट लागी ॥
 कीन्ह बहुत सम एक न आये ॥ लेहि इगिया वन आनि दुराये ॥
 एक कहहिं हम बहुत न जानहिं ॥ आपुहिं परम धन्य करि मानहिं ॥
 ते पुनि पुन्यपुंज हम लेखे ॥ जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे ॥

दोहा—एहि विधि कहि कहि वचन प्रिय, लेहि नयन भरिनीर ।

किमि चलिहहिं मारग अगम, सुठि सुकुमार सरीर ॥१२०॥

नारि मनेह विकलवस होहीं * चकई साँफ ममय जनु सोहीं ॥
 मृदु-पद-कमल कठिन मगु जानी * गहवरि हृदय कहहिं बरवानी ॥
 परसत मृदुलचरन अरुनारे * सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥
 जौं जगदीस इन्हहिं वनु दीन्हा * कस न सुभनमय मारगु कीन्हा ॥
 जौं माँगा पाइय विधि पाहीं * ए रखिअहि सखि आँखिन्ह माहीं ॥
 जे नरनारि न अवसर आये * तिन्ह सिय राम न देखन पाये ॥
 सुनि सुरूप बूझहिं अकुलाई * अब लगि गये कहाँ लगि भाई ॥
 समरथ धाइ विलोकहिं जाई * प्रमुदिन फिरहिं जनमफलु पाई ॥
 दोहा--अबला वालक वृद्धजन, कर सौजहिं पछिताहिं ।

होहिं प्रेमवस लोग इमि, रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥१२१॥

गावँ गावँ अम होइ अनंद * देखि भानु - कुल - कैरव - चंद्र ॥
 जे यह समाचार सुनि पावहिं * ते नृपरानिहिं दोष लगावहिं ॥
 कहहिं एक अतिभल नरनाहू * दीन्ह हमहिं जेहि लोचनलाहू ॥
 कहहिं परमपर लोग लोगार्ई * बातें सरल मनेह सुहाई ॥
 ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाये * धन्य सो नगरु जहाँ तें आये ॥
 धन्य सो देस सैल वन गाऊँ * जहँ जहँ जाहिं धन्य मोइ ठाऊँ ॥
 मुख पायउ विरंगि रचि तेही * ए जेहि के मव भाँति सनेही ॥
 राम-लपन-पथि-कथा सुहाई * रही सकल मग कानन छाई ॥
 दोहा--एहि विधि रघु-कुल-कमल-रवि, मग लोगन्ह सुखदेत ।

जाहिं चलै देखत विपिन, सिय-सौमित्रि-समेत ॥१२२॥

आगे राम लपन वने पाछे * तापसवेष विराजत काछे ॥
 उभय बीच सिय मोहति कैसी * ब्रह्म - जीव - विच माथा जैसी ॥
 बहुरि कहउँ छवि जमि मन बसई * जनु मधु-मदन-मध्य रति लसई ॥
 उपमा बहुरि कहउँ जिय जोही * जनु बुध विधु विच रोहिनि सोही ॥
 प्रभु-पद-रेख बीच विच सीता * धरति चरन मग चलति समीता ॥
 सीय - राम - पद - अंक बराये * लपन चलहिं मगु दाहिन वायें ॥
 राम-लपन-सिय-प्रीति सुहाई * वचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
 खग मृग मगन देखि छवि होहीं * लिये चोरि चित राम बटोही ॥

दोहा--जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय, सियसमेत दोउ भाइ ।

भव-मग-अगम अनंद तेइ, विनु स्वम रहे सिराइ ॥१२३॥

अजहुँ जासु उर सपनेहु काऊ * वसहु लपन-सिय-राम वटाऊ ॥
 राम-धाम-पथ पाइहि सोई * जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई ॥
 तव रघुवीर समित सिय जानी * देखि निकट वट मीतल-पानी ॥
 तहँ बसि कंद मूल फल खाई * प्रात नहाइ चले रघुराई ॥
 देखत वन सर मैल मुहाये * वालमीकिआत्मम प्रभु आये ॥
 राम दीग्व मुनिवास सुहावन * सुंदर गिरि कानन जल पावन ॥
 सरनि सरोज विटप वन फूले * गुंजत मंजु मधुप रम भूले ॥
 खग मृग विपुल कोलाहल करहीं * विरहित बैर मुदित मन चरहीं ॥

दोहा--सुचि सुंदर आसुमु निरखि, हरपे राजिवनेन ।

सुनि रघु-वर-आगमन मुनि, आगे आयेउ लैन ॥१२४॥

मुनि कहँ राम दंडवत कीन्हा * आसिरवाद विप्रवर दीन्हा ॥
 देखि रामझवि नयन जुड़ाने * करि मनमान आसुमहिँ आने ॥
 मुनिवर अतिथि प्रानथिय पाये * कंद मूल फल मधुर मँगाये ॥
 सिय मौमित्रि राम फल खाये * तव मुनि आसन दिये सुहाये ॥
 वालमीकि मन आनंद भारी * मंगलपूगति नयन निहारी ॥
 तव करकमल जोरि रघुराई * बोले वचन स्वयन-मुख-दाई ॥
 तुम्ह त्रि-काल-दरमी मुनिनाथा * विस्व वदर जिमि तुम्हरे हाथा ॥
 अस कहि प्रभु सब कथा वखानी * जेहि जेहि भाँति दीन्ह वनु रानी ॥

दोहा--तात वचन पुनि मातुहित, भाइ भरत अस राउ ।

मो कहँ दरस तुम्हार, प्रभु, सबमम पुन्यप्रभाउ ॥१२५॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे * भये सुकृत सब सुफल हमारे ॥
 अब जहँ राउर आयसु होई * मुनि उदवंगु न पावइ कोई ॥
 मुनि तापस जिन्ह तें दुख लहहीं * ते नरेस विनु पावक दहहीं ॥
 मंगलमूल विप्रपरितोष * दहइ कोटि कुल भू-सुर-रोष ॥
 अस जिय जानि कहिय सोइ ठाऊँ * भिय-मौमित्रि-सहित जहँ जाऊँ ॥
 तहँ रचि रुचिर परन-तृन-साला * वासु करउं कहु काल कृपाला ॥

सहज सरल मुनि रघुवरवानी ॥ माधु माधु बोले मुनि ज्ञानी ॥
कस न कहहु अस रघु-कुल-केतू ॥ तुह पालक संतत सुतिसेतू ॥
छंद-सुति-सेतु-पालक राम तुह जगदीसमाया जानकी ।

जो मृजति जग पालति हरति रुच्य पाइ कृपानिधान की ॥
जो महसमीस अहीस महि धरु लपन स-चराचर-धनी ।
मुरकाज धरि नरराज तनु चले दलन म्वल-निमिचर-अनी ॥

सोरठा--राम सरूप तुम्हार, वचनअगोचर बुद्धिपर ।

अविगत अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह ॥१२६॥

जग पंग्वन तुह देखनिहारै ॥ विधि-हरि-मंभु - नचावनिहारै ॥
तेउ न जानहिं मरम तुम्हारा ॥ अउर तुम्हहिं को जाननिहारा ॥
सोइ जानइ जेहि देहु जनाई ॥ जानत तुम्हहिं तुम्हइ होइ जाई ॥
तुम्हरिहि कृपा तुम्हहिं रघुनंदन ॥ जानहिं भगत भगत-उर-चंदन ॥
चिदानंदमय देह तुम्हारी ॥ विगतविकार जान अधिकारी ॥
नरतनु धरेउ संत - सुर - काजा ॥ कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि मुनि चरित तुम्हारे ॥ जइ सोइहिं बुध होहिं सुखारे ॥
तुह जो कहहु करहु सबु सांचा ॥ जस काळिय तस चाहिय नाचा ॥
दोहा-पृछेहु मोहिं कि रहाँ कहँ, मैं पृछत सकुचाउँ ।

जहँ न होहु तहँ देहु कहि, तुम्हहिं देखावउँ ठाउँ ॥१२७॥

मुनि मुनिवचन प्रेमरस माने ॥ सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने ॥
वालमीकि हँसि कहहिं बहोरी ॥ वानी मधुर अमियरस बोरी ॥
मुनहु राम अब कहउँ निकेता ॥ जहाँ वसहु मिय-लपन-समेता ॥
जिन्ह के सवन ममुद्रममाना ॥ कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे ॥ तिन्हके हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे ॥
लोचन चातक जिन्ह करि रापे ॥ रहहिं दरमजलधर अभिलापे ॥
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी ॥ रूपविंदु जल होहिं मुखारी ॥
तिन्ह के हृदयसदन सुखदायक ॥ वसहु बंधु-मिय-सह रघुनायक ॥
दोहा-जस तुम्हार मानस विमल, हंसिनि जीहा जासु ।

मुकताहल गुनगन चुनइ, राम वसहु मन तासु ॥१२८॥

प्रभुप्रसाद सुचि सुभग सुवासा * सादर जासु लहइ नित नासा ॥
 तुम्हहिं निवेदित भोजन करहीं * प्रभुप्रसाद पट भूषन धरहीं ॥
 सीस नवहिं सुर-गुरु-द्विज देखी * प्रीतिमहित करि विनय विसेखी ॥
 कर नित करहिं रामपद पूजा * रामभरोस हृदय नहिं दृजा ॥
 चरन रामतीरथ चलि जाहीं * राम वसहु तिन्ह के मन माहीं ॥
 मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा * पूजहिं तुम्हहिं महित परिवारा ॥
 तरपन होम करहिं विधि नाना * विप्र जेवाँइ देहिं बहुदाना ॥
 तुम्ह तें अधिक गुरुहिं जिय जानी * सकल भाय सेवहिं सनमानी ॥
 दोहा--सब करि माँगहिं एकु फलु, राम-चरन-रति होउ ।

तिन्ह के मनमंदिर वसहु, सिय रघुनंदन दोउ ॥१२६॥

काम कोह मद मान न मोहा * लोभ न ज्योभ न राग न द्रोहा ॥
 जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया * तिन्ह कें हृदय वसहु रघुराया ॥
 सब के प्रिय सब के हितकारी * दुख-सुख-सरिस प्रमंसा गारी ॥
 कहहिं सत्य प्रियवचन विचारी * जागत सोवत सरन तुम्हारी ॥
 तुम्हहिं छाँड़ि गति दूसरि नाहीं * राम वसहु तिन्ह के मनमाहीं ॥
 जननीसम जानहिं परनारी * धन पराव विप तें विप भारी ॥
 जे हरषहिं परसंपति देखी * दुखित होहिं परविपति विसेखी ॥
 जिन्हहिं राम तुम्ह प्रान पियारे * तिन्हके मन सुभमदन तुम्हारे ॥
 दोहा--स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिन के सबतुम्ह तात ।

मनमंदिर तिन्ह के वसहु, सीयसहित दोउ भ्रात ॥१३०॥

अवगुन तजि सबके गुन गहहीं * विप्र-धनु-हित संकट सहहीं ॥
 नीतिनिपुन जिन्हकइ जग लीका * घर तुम्हार तिन्ह कर मन नीका ॥
 गुन तुम्हार समुझइ निजदोसा * जेहि मत्र भाँति तुम्हार भरोसा ॥
 रामभगत प्रिय लागहिं जेही * तेहि उर वसहु सहित वेदेही ॥
 जाति पाँति धन धरम बड़ाई * प्रिय परिवार सदन सुखदाई ॥
 सब तजि तुम्हहिं रहइ लउ लाई * तेहि के हृदय रहहु रघुराई ॥
 सरग नरक अपवरग समाना * जहँ तहँ ~~के~~ ~~हृदय~~ ~~धरुका~~ ~~न~~ ॥
 कर्म-वचन-मम ~~राउर~~ ~~करा~~ * राम-~~प्रस~~ ~~ह~~ ~~तेहि~~ ~~एके~~ ~~पंडर~~ ~~उर~~ ~~उर~~ ॥

दोहा--जाहिन चाहिय कबहुँ कछु, तुम्ह सन सहज सनेह ।

बसहु निरंतर तासु मन, सो राउर निज गेह ॥१३१॥

एहि विधि मुनिवर भवन देखाये * बचन सप्रेम राममन भाये ॥
 कह मुनि सुनहु भानु-कुल-नायक * आसुमु कहउ समय सुखदायक ॥
 चित्रकूट गिरि करहु निवास * तहँ तुम्हार सब भाँति सुपास ॥
 मैल मुहावन कानन चारु * करि-केहरि-मृग-विहंग विहारु ॥
 नदी पुनीत पुरान बखानी * अत्रिप्रिया निज-तप-बल आनी ॥
 सरसरिधार नाउँ मंदाकिनि * जा सब-पातक-पोतक-डाकिनि ॥
 अत्रि-आदि-मुनि-वर बहु बसहीं * करहिं जोग जप तप तन कसहीं ॥
 चलहु सफल सम सब कर करहु * राम देहु गौरव गिरिवरहु ॥

दोहा--चित्र-कूट-महिमा अमित, कही महामुनि गाइ ।

आइ नहाये सरित वर, सिय समेत दोउ भाई ॥१३२॥

रघुवर कहेउ लपन भल घाट * करहु कतहुँ अब ठाहर ठाट ॥
 लपन दीख पय उतर करारा * चहुँदिसि फिरेउ धनुष जिमिनारा ॥
 नदी पनच सर सम दस दाना * सकल कलुष कलिसाउज नाना ॥
 चित्रकूट जनु अचल अहेरी * चुकइ न घात मार मुठभेरी ॥
 अस कहि लपन ठाँव देखरावा * थल विलोकि रघुवर मुख पावा ॥
 रमेउ राममन देवन्ह जाना * चले सहित सुरपति परधाना ॥
 कोल - किरात - वेष सब आये * रचे परन-तून-सदन मुहाये ॥
 बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला * एक ललित लघु एक विसाला ॥

दोहा--लपन-जानकी-सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत ।

सोह मदन मुनिवेष जनु, रति-रितु-राज-समेत ॥१३३॥

अमरनाग किन्नर दिसि पाला * चित्रकूट आये तेहि काला ॥
 राम प्रनाम कीन्ह सब काहू * मुदित देव लहि लोचन लाहू ॥
 बरषि सुमन कह देव समाजू * नाथ सनाथ भये हम आजू ॥
 करि बिनती दुख दुसह सुनाये * हरषित निज-निज-सदन सिधाये ॥
 चित्रकूट रघुनंदन आये * समाचार सुनि सुनि मुनि आये ॥
 आवत देखि मुदित मुनिबृंदा * कीन्ह दंडवत रघु-कुल-चंदा ॥

मुनि रघुवरहिं लाइ उर लेहीं * सुफल होन हित आसिप देहीं ॥
सिय-सौमित्रि-राम-ञ्जवि देखहिं * साधन सकल सफल करि लेखहिं ॥
दोहा—जथायोग सनमानि प्रभु, विदा किये मुनिबृन्द ।

करहिं जोग जप जागतप, निज आस्रमनि सुछन्द ॥१३४॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई * हरपे जनु नवनिधि घर आई ॥
कंद मूल फल भरि भरि दोना * चले रंक जनु लूटन सोना ॥
तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता * अपर तिन्हहिं पूछहिं मगु जाता ॥
कहत सुनत रघुवीर निकाई * आइ मबन्हि देखे रघुराई ॥
करहिं जोहारु भेंट धरि आगे * प्रभुहि बिलोकहिं अति अनुरागे ॥
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े * पुलक सरार नयन जल वाढ़े ॥
राम सनेह मगन सब जानें * कहि प्रिय वचन सकल मनमानें ॥
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी * वचन विनीत कहहिं कर जोरी ॥
दोहा—अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभु पाय ।

भाग हमारे आगमनु, राउर कोसलराय ॥१३५॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा * जहँ जहँ नाथ पाउँ तुम्ह धारा ॥
धन्य विहंग मृग काननचारी * सफल जनम भये तुम्हहिं निहारी ॥
हम सब धन्य सहितु परिवारा * दीख दरस भरि नयन तुम्हारा ॥
कीन्ह वासु भल ठाउँ विचारी * इहाँ सकल रितु रहव सुग्वारी ॥
हम सब भाँति करवि सेवकाई * करि-केहरि-अहि-चाव बराई ॥
बन वेहड़ गिरि कंदर खोहा * सब हमार प्रभु पग पग जोहा ॥
जहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब * सर निरभर भल ठाउँ देखाउब ॥
हम सेवक परिवार समेता * नाथ न मकुचव आयसु देता ॥

दोहा—बेदवचन मुनिमन अगम, ते प्रभु करुनाअयन ।

वचन किरातन्ह के सुनत, जिमि पितुबालक वयन ॥१३६॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा * जानि लेउ जो जाननिहारा ॥
राम सकल-बन-चर तब तोपे * कहि मृदुवचन प्रेम परिपोपे ॥
विदा किये सिरु नाइ सिधाये * प्रभुगुन कहत सुनत घर आये ॥
एहि विधि सिय समेत दोउ भाई * वसहिं विपिन सुर-मुनि-सुख-दाई ॥

जव तें आइ रहे रघुनायक * तव तें भयेउ वनु मंगल-दायक ॥
 फूलहिं फलहिं विटप विधि नाना * मंजु-बलित-वर-बेलि-विताना ॥
 सुर-तरु-सरिस सुभाय सुहाये * मनहुं विबुधवन परिहरि आये ॥
 गुंज मंजुतर मधुकर खेनी * त्रिविध बयारि बहइ सुखदेनी ॥
 दोहा--नीलकंठ कलकंठ सुक, चातक चक्क चकोर ।

भाँति भाँति बोलहिं विहँग, सवनसुखद चितचोर ॥१३७॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा * विगत बैर विचरहिं सब संगी ॥
 फिरत अहेर रामद्वि देखी * होहिं मुदित मृगबंद विसेखी ॥
 विबुधविपिन जहँ लगि जग माहीं * देखि रामवन सकल सिहाहीं ॥
 सुरसरि सरसइ दिन-कर-कन्या * मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
 सब सर सिंधु नदी नद नाना * मंदाकिनि कर करहिं बखाना ॥
 उदय अस्त गिरि अरु कैलास * मंदर मेरु सकल-सुर-बास ॥
 सैल हिमाचल आदिक जेते * चित्रकटजस गावहिं तेते ॥
 विंध मुदित मन सुख न समाई * सम विनु विपुल बड़ाई पाई ॥

दोहा-चित्रकूट के विहँग मृग, बेलि विटप तून जाति ।

पुन्यपुंज सब धन्य अस, कहहिं देव दिनराति ॥१३८॥

नयनवंत रघुवरहि विलोकी * पाइ जनम फल होहि विसोकी ॥
 परसि चरनरज अचर मुखारी * भये परमपद के अधिकारी ॥
 सो बन सैल सुभाय सुहावन * मंगलमय अति-पावन-पावन ॥
 महिमा कहिय कवनि विधि तासू * सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥
 पयपयोधि तजि अवध विहाई * जहँ सिय-लपन-राम रहे आई ॥
 कहि न सकहिं सुखमा जसि कानन * जौ सत सहस होहिं सहसानन ॥
 सो मैं बरनि कहौ विधि केहीं * डावरकमठ कि मंदर लेहीं ॥
 सेवहिं लपन करम-मन-बानी * जाइ न सील सनेह बखानी ॥

दोहा-छिनु छिनु लखि सिय-राम-पद, जानि आपु परनेह ।

करत न सपनेहुँ लपन चित, बंधु-मातु-पितु-गेह ॥१३९॥

रामसंग सिय रहति मुखारी * पुर-परिजन-गृह-सुरति विसारी ॥
 छिनु छिनु पिय-विधु-बदन निहारी * प्रमुदित मनहुँ चकोर कुमारी ॥

नाह नेहु नित बढ़त विलोकी * हरपित रहति दिवम जिमि कोकी ॥
 सियमनु रामचरन अनुरागा * अवध-सहस-सम वनु प्रियलागा ॥
 परनकुटीप्रिय प्रियतम संगी * प्रिय परिवारु कुरंग विहंगा ॥
 सासु-ससुर-सम मुनितिय मुनिवर * असन अपिय मम कंद मूलफर ॥
 नाथ साथ साथरी मुहाई * मयन - सयन - सय - सम सुखदाई ॥
 लोकप होहिं विलोकत जासू * तेहि कि मोहि मक विषयविलासू ॥
 दोहा—सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृन सम विषय विलासु ।

रामप्रिया जग जननि सिय, कछु न आचरजु तासु ॥१४०॥

सीय लपन जेहि विधि सुख लहहीं * सोइ रघुनाथ करहिं सोइ कहहीं ॥
 कहहिं पुरातनि कथा कहानी * सुनहिं लखन सिय अतिसुख मानी ॥
 जब जब राम अवध सुधि करहीं * तब तब वारि विलोचन भरहीं ॥
 सुमिरि मातु पितु परिजन भाई * भरत - मनह - सील - सेवकाई ॥
 कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी * धीरज धरहिं कुसमउ विचारी ॥
 लखि सिय लपनु विकल होइ जाहीं * जिमि पुरुषहिं अनुसर परिछाहीं ॥
 प्रिया-बंधु-गति लखि रघुनंदन * धीर कृपाल भगत-उर-चंदन ॥
 लगे कहन कछु कथा पुनीता * सुनि सुख लहहिं लपनु अरु माता ॥
 दोहा—राम-लपन-सीता-सहित, सोहत परननिकेत ।

जिमि वासव बस अमरपुर, सची-जयंत-समेत ॥१४१॥

जोगवहिं प्रभु सियलपनहिं कैसे * पलक विलोचनगोलक जैसे ॥
 सेवहिं लपन सीय रघुवीरहिं * जिमि अविषंकी पुरुष मरीरहिं ॥
 एहि विधि प्रभु बन बसहिं सुखारी * ग्वग-मृग-मुर - तापम - हित-कारी ॥
 कहेउ राम-बन-गवन सुहावा * सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा ॥
 फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुँचाई * सचियमहित रथ देखेसि आई ॥
 मंत्री विकल विलोकि निषाद * कहि न जाइ जस भयउ विषाद ॥
 राम राम सिय लपन पुकारी * परेउ धरजितल व्याकुल भारी ॥
 देखि दखिनदिसि हय हिहिनाहीं * जनु विनु पंगु विहंग अकुलाहीं ॥
 दोहा—नहिं तृन चरहिं न पियहिं जल, मोचहिं लोचनवारि ।

व्याकुल भयउ निषाद सब, रघु-वर-वाजि निहारि ॥१४२॥

धरि धीरज तव कहइ निषाद * अत्र सुमंत्र परिहरहु विषाद ॥
 तुम्ह पंडित परमारथज्ञाता * धरहु धीर लखि विमुख विधाता ॥
 विविधकथा कहि कहि मृदुवानी * रथ वैठारेउ बरबस आनी ॥
 सोकसिथिल रथु सकइ न हाँकी * रघु-वर-विरह-पीर उर बाँकी ॥
 चरफराहिं मग चलहिं न घोरे * वनमृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
 अटुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछे * राम वियोग विकल दुख तीछे ॥
 जो कह रामुलपनु वैदेही * हिकरि हिकरि हित हेरहिं तेही ॥
 वाजि विरहगति कहि किमि जाती * विनुमनिफनिक बिकलजेहि भाँती ॥
 दोहा-भयउ निषाद विषादवस, देखत सचिवतुरंग ।

बोलि सुसेवक चारि तव, दिये सारथीसंग ॥१४३॥

गुह सारथिहि फिरे पहुँचाई * विरहविषाद बरनि नहिं जाई ॥
 चले अवध लेइ रथहि निषादा * होहिं छनहिं छन मगन विषादा ॥
 सोच सुमंत्र विकल दुखदीना * धिग जीवन रघु-वीर-विहीना ॥
 रहिहि न अंतहु अधमुसरीरु * जसु न लहेउ विद्युरत रघुवीरु ॥
 भये अजस-अध-भाजन प्राणा * कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥
 अहह मंद मन अवसर चूका * अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
 मींजि हाथ मिर धुनि पछिताई * मनहुँ कृपिन धनरासि गवाँई ॥
 विरद बाँधि बरवीरु कहाई * चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥
 दोहा--विप्र विवेकी बैदविद, संमत साधु सुजाति ।

जिमि धोखे मदपान कर, सचिव सोच तेहि भाँति ॥१४४॥

जिमि कुलीनतिय साधु सयानी * पतिदेवता करम - मन - वानी ॥
 रहै करमवस परिहरि नाहू * सचिवहृदय तिमि दारुनदाहू ॥
 लोचन सजल डीठि भइ थोरी * सुनइ न सवन विकल मति भोरी ॥
 सूखहिं अधर लागि मुह लाटी * जिउ न जाइ उर अवधिकपाटी ॥
 विबरन भयउ न जाइ निहारी * मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
 हानि गलानि विपुल मन व्यापी * जम-पुर-पंथ सोच जिमि पापी ॥
 बचनु न आव हृदय पछिताई * अवध काह मै देखव जाई ॥
 रामरहित रथ देखिहि जोई * सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ॥

दोहा--धाइ पूछिहहिं मोहिं जब, विकल नगर नरनारि ।

उतरु देव में सबहिं तव, हृदय बज बैठारि ॥१४५॥

पुछिहहिं दीन दुखित जब माता * कहव काह में तिन्हहिं विधाता ॥

पूछिहिं जबहिं लपनमहतारी * कहिहौं कवन मुँदेस सुखारी ॥

रामजननि जब आइहि धाई * सुमिरि वच्छ जिमि धनु लवाई ॥

पूछत उतर देव में तेही * गे वन राम लपनु बैदेही ॥

जोइ पूछिहिं तेहि ऊतरु देवा * जाइ अवध अब यह सुख लेवा ॥

पुछिहहिं जबहिं राउ दुखदीना * जिवनु जासु रघुनाथअधीना ॥

देइहौं उतरु कवन मुँह लाई * आयउं कुसल कुअरं पहुँचाई ॥

सुनत लपन - सिय - राम-मुँदेसू * तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ॥

दोहा--हृदय न विदरेउ पंक जिमि, विछुरत प्रीतम नीर ।

जानत हौं मोहि दीन्ह विधि, यह जातना सरीर ॥१४६॥

एहि विधि करत पंथ पछितावा * तममातीर तुरत रथ आवा ॥

बिदा किये करि विनय निषादा * फिरे पाँय परि विकल विषादा ॥

पैठत नगर सचिव सकुचाई * जनु मारेसि गुरु-ब्राह्मन-गाई ॥

बैठि विटपतर दिवसु गवाँवा * साँझ समय तव अवसर पावा ॥

अवधप्रवेश कीन्ह अँधियारे * पैठ भवन रथ राखि दुआरे ॥

जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये * भूपद्वार रथ देखन आये ॥

रथ पहिचानि विकल लखि घोरं * गरहिं गात जिमि आतप ओरं ॥

नगर-नारि-नर व्याकुल कैसें * निघटत नीर मीनगन जैसें ॥

दोहा--सचिवआगमनु सुनत सब, विकल भयउ रनिवासु ।

भवन भयंकरु लाग तेहि, मानहुँ प्रेतनिवासु ॥१४७॥

अतिआरति सब पूछहिं रानी * उतरु न आव विकल भइ बानी ॥

सुनई न सवन नयन नहिं सूझा * कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा ॥

दासिन्ह दीख सचिव विकलाई * कौसल्यागृह गई लेवाई ॥

जाइ सुमंत्र दीख कस राजा * अमियरहित जनु चंद विराजा ॥

आसन - सयन-विभूषन - हीना * परेउ भूमितल निपट मलीना ॥

लेइ उसास सोच एहि भाँती * सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ॥

लेत सोत्र भरि छिनु छिनु छाती * जनु जरि पंख परेउ संपाती ॥
 राम राम कह रामसनेही * पुनि कह राम लपन बैदेही ॥
 दोहा-देखि सचिव जय जीव कहि, कीन्हेउ दंड प्रनामु ।

सुनत उठेउ व्याकुल नृपति, कहु सुमंत्र कहैं रामु ॥१४८॥

भूप सुमंत्र लीन्ह उर लाई * बूढ़त कछु अधार जनु पाई ॥
 सहित सनेह निकट बैठारी * पूछत राउ नयन भरि दारी ॥
 रामकुसल कहु मखा मनेही * कहैं रघुनाथ लपन बैदेही ॥
 आने फेरि कि वनहिं भिधाये * सुनत सचिवलोचन जल छाये ॥
 सीक विकल पुनि पूछ नरंसू * कह सिय-राम-लपन-संदेसू ॥
 राम-रूप-गुन-सील-सुभाऊ * सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥
 राज सुनाइ दीन्ह वनवासू * सुनि मन भयेउ न हरप हरामू ॥
 म्मो सुत विह्वरत गये न प्राणा * को पापी बड़ मोहि समाना ॥
 दोहा-सखा रामु-सिय-लपनु जहैं, तहाँ मोहि पहुँचाउ ।

॥ ॥ नाहिं त चाहत चलन अब, प्रान कहों सतिभाउ ॥१४९॥

पुनि पुनि पूछत मंत्रिहि राऊ * प्रियतम-सुअन-संदेस सुनाऊ ॥
 करहि मखा सोइ बेगि उपाऊ * रामु-लपन-सिय नयन देखाऊ ॥
 अत्रिभ धीर धरि कह मृदुबानी * महाराज तुम्ह पंडित ज्ञानी ॥
 वीर सुधीर धुरंधर देवा * साधुसभाज सदा तुम्ह सेवा ॥
 जनमे मरन सब दुख सुख भोगा * हानि लाभ प्रियमिलन वियोगा ॥
 कौसल करम बस होहिं गोसाईं * बरवस राति दिवस की नाईं ॥
 मुखा हरपहिं जड़ दुख विलग्वाहीं * दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं ॥
 धीरजु धरहु विवेक विचारी * झाड़िय सोच सकल हितकारी ॥

दोहा-प्रथम वासु तमसा भयेउ, दूसरि सुरसरि तीर ।

॥ ॥ न्हाइ रहे जलपान करि, सियसमेत दोउ बीर ॥१५०॥

कैवट कीन्ह बहुत सेवकाई * सो जामिनि सिंगरौर गवाई ॥
 धीरप्रात बटखीर मंगावा * जटामुकुट निज सीस बनावा ॥
 रामसखा तब नाव मंगाई * प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
 आपके वानधनु धरे बनाई * आपु चढ़े प्रभुआयसु पाई ॥

विकल विलोकि मोहि रघुवीरा * बोले मधुरवचन धरि धीरा ॥
 तात प्रनामु तात सन कहेहू * वार वार पदपंकज गहेहू ॥
 करवि पाय परि विनय वहीरी * तात करिय जनि चिंता मोरी ॥
 वनमग मंगल कुमल हमारे * कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारे ॥
 छन्द-तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।

प्रतिपालि आयसु कुमल देखन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥

जननी सकल परितोषि परि परि पाय करि विनती घनी ।

तुलसी करेहु सोइ जतन जेहि कुमली रहहिं कोसलधनी ॥

सौरठा-गुरु सन कहव सँदेसु, वार वार पदपदुम गहि ।

करव सोइ उपदेसु, जेहि न सोच मोहि अवधपति ॥ १५१ ॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी * तात मुनायेहु विनती मोरी ॥

सोइ सब भाँति मोर हितकारी * जा तें रह नरनाह मुखारी ॥

कहव सँदेसु भरत के आये * नीति न तजिइ राजपदु पाये ॥

पालेहु प्रजहि करम - मन-वानी * सेयेहु मातु सकल सम जानी ॥

अउर निवाहेहु भायप भाई * करि पितु - मातु-सुजन-सेवकाई ॥

तात भाँति तेहि राखव राऊ * सोच मोर जेहि करइ न काऊ ॥

लपन कहे कछु बचन कडोरा * वरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥

वार वार निज सपथ देवाई * कहवि न तात लपनलरिकाई ॥

दोहा-कहि प्रनामु कछु कहन लिय, सिय भइ सिथिल सनेह ।

थकित बचन लोचन सजल, पुलक पल्लवित देह ॥ १५२ ॥

तेहि अवसर रघुवर रुख पाई * केवट पारहिं नाव चलाई ॥

रघु-कुल-तिलक चले एहि भाँती * देखेउँ ठाढ़ कुलिम धरि छाती ॥

मैं आपन किमि कहउँ कलेसू * जियत फिरउँ लेइ राममँदेसू ॥

अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ * हानि गलानि सोच वस भयऊ ॥

सूत बचन सुनतहि नरनाहू * परेउ धरनि उर दारुनदाहू ॥

तलफत विषम मोह मन मापा * माँजा मनहुँ मीन कहँ व्यापा ॥

करि विलाप सब रोवाहिं रानी * महाविपति किमि जाइ वखानी ॥

सुनि विलाप दुखहू दुख लागा * धीरजहू कर धीरज भागा ॥

दोहा-भयेउ कोलाहलु अवध अति, सुनि नृप राउर सोरु ।

विपुल विहँगवन परेउ निसि, मानहुँ कुलिस कठोरु ॥१५३॥

प्राण कंठगत भयेउ भुआलू * मनिविहीन जनु व्याकुल व्यालू ॥
 इंद्री सकल विकल भई भारी * जनु सरसरमिज वन विनु वारी ॥
 कौमल्या नृप दीख मलाना * रवि-कुल-रवि अथयेउ जिय जाना ॥
 उर धरि धीर राममहतारी * बोली वचन समय अनुमारी ॥
 नाथ समुझि मन करिय विचारू * राम - वियोग - पयोधि अपारू ॥
 करनधार तुम्ह अवधजहाजू * चढेउ सकल प्रिय - पथिक-समाजू ॥
 धीरजु धरिय त पाइय पारू * नाहिं त बूडिहि सबु परिवारू ॥
 जौं जिय धरिय विनय पिय मोरी * रामु लपनु सिय मिलहिं बहोरी ॥
 दोहा--पिया वचन मृदु सुनत नृप, चितयेउ आँखि उघारि ।

तलफत मीन मलीन जनु, सींचत सीतलवारि ॥१५४॥

धरि धीरज उठि बैठि भुआलू * कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालू ॥
 कहाँ लपन कहँ रामसनेही * कहँ प्रिय - पुत्र - बधू बैदेही ॥
 विलपत राउ विकल बहुभाँती * भइ जुगसरिस सिराति न राती ॥
 तापस-अंध - साप सुधि आई * कौमल्यहि सब कथा सुनाई ॥
 भयउ विकल वरनत इतिहासा * रामरहित धिग जीवनआभा ॥
 सो तनु राखि करव मैं काहा * जेहि न प्रेमपनु मोर निवाहा ॥
 हा रघुनंदन प्राणपिरीते * तुम्ह विनु जियत बहुत दिन बीते ॥
 हा जानकी लपन हा रघुवर * हा पितु-हित-चित-चातक-जलधर ॥

दोहा-राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।

तनु परिहरि रघुवरविरह, राउ गयेउ सुरधाम ॥१५५॥

जियन मरन फल दसरथ पावा * अंड अनेक अमल जसु छावा ॥
 जियत राम-विधु - बदन निहारा * रामविरह करि मरनु सर्वाँरा ॥
 सोकविकल सब रोवहिं रानी * रूप सीलु बलु तेजु बखानी ॥
 करहिं विलाप अनेक प्रकारा * परहिं भूमितल बारहिं वारा ॥
 विलपहिं विकल दास अरु दासी * घर घर रुदन करहिं पुरवासी ॥
 अथयेउ आजु भानु - कुल - भानू * धरमअवधि गुन - रूप- निधानू ॥

गारी सकल कैकइहि देहीं * नयनविहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
एहि विधि बिलपत रैनि बिहानी * आये सकल महामुनि ज्ञानी ॥
दोहा-तब वसिष्ठ मुनि समयसम, कहि अनेक इतिहास ।

सोक निवारेउ सबहि कर, निज विग्यान प्रकास ॥२५६॥

तेल नाव भरि नृपतनु राखा * दूत बोलाइ बहुरि अस भाखा ॥
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू * नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥
एतनेइ कहेउ भरत सन जाई * गुरु बोलाइ पठयेउ दोउ भाई ॥
सुनि मुनिआयसु धावन धाये * चले बंगि बरबाजि लजाये ॥
अनरथु अवध अरंभेउ जय तें * कुमगुन होहिं भरत कहैं तय तें ॥
देखहिं राति भयानकसपना * जागि करहिं कटु कोटि कल्पना ॥
बिप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना * सिव अभिपेक करहिं विधिनाना ॥
माँगहिं हृदय महंस मनाई * कुमल मातु पितु परिजन भाई ॥
दोहा-एहि विधि सोचत भरत मन, धावन पहुँचे आइ ।

गुरुअनुसासन सवन सुनि, चले गनेसु मनाइ ॥१५७॥

चले समीरबंग हय हाँके * नाँघत सरित मैल वन बाँके ॥
हृदय सोचु बड़ कळु न सोहाई * अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई ॥
एक निमेष वरषसम जाई * एहि विधि भरत नगर नियराई ॥
असगुन होहिं नगर पैठारा * रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥
खर सियार बोलहिं प्रतिकूला * सुनि सुनि होइ भरतमन सूला ॥
श्रीहत सर सरिता वन बागा * नगर विसेपि भयावनु लाग्गा ॥
खग मृग हय गज जाहिं न जोयें * राम-वियोग-कुरोग विगोयें ॥
नगर-नारि - नर निपट दुखारी * मनहुँ सवन्हि सब संपति हारी ॥
दोहा--पुरजन मिलहिं न कहहिं कळु, गवहिं जोहारहिं जाहिं ।

भरतकुसल पूछि न सकहिं, भयविपाद मन माहिं ॥१५८॥

हाट बाट नहिं जाहिं निहारी * जनु पुर दह दिसि लागि द्वारी ॥
आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि * हरपी रवि-कुल-जलरुह-चंदिनि ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई * द्वारेंहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥
भरत दुखित परिवारु निहारा * मानहुँ तुहिन वनजवनु मारा ॥

कैकई हरपित एहि भाँती * मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥
 सुतहि समोच देखि मन मारे * पूछति नैहर कुसल हमारे ॥
 सकल कुमुल कहि भरत सुनाई * पूछी निज-कुल-कुसल भलाई ॥
 कहु कह तात कहाँ सब माता * कह सिय रामु लपन प्रियभ्राता ॥
 दोहा--सुनि सुतवचन सनेहमय, कपटनीर भरि नैन ।

भरत-स्रवन-मन-सूल सम, पापिनि बोली बैन ॥१५६॥

तात बात में सकल सवाँरी * भइ मंथरा सहाय विचारी ॥
 कछुक काज विधि बीच विगारेउ * भूपति सुर-पति-पुर पगु धारेउ ॥
 सुनत भरतु भये विवस विपादा * जनु सहमेउ करि केहरिनादा ॥
 तात तात हा तात पुकारी * परे भूमितल व्याकुल भारी ॥
 चलत न देखन पायउँ तोही * तात न रामहिं सौँपेहु मोही ॥
 बहुरि धीर धरि उठे सँभारी * कहु पितुमरन हेतु महतारी ॥
 सुनि सुतवचन कहति कैकई * मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥
 आदिहु तें सब आपनि करनी * कुटिल कठोर मुदितमन बरनी ॥
 दोहा--भरतहि विसरेउ पितुमरन, सुनत राम-वन-गौनु ।

हेतु अपनपउ जानिजिय, थकित रहे धरि मौनु ॥१६०॥

विकल विलोकि सुतहि समुझावति * मनहुँ जरे पर लोन लगावति ॥
 तात राउ नहिं सोचइ जोगू * बिढ़इ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू ॥
 जीवत सकल जनम फल पाए * अन्त अमर-पति-सदन सिधाए ॥
 अस अनुमानि सोच परिहरहू * सहित समाज राज पुर करहू ॥
 सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू * पाकेँ लत जनु लाग अँगारू ॥
 धीरज धरि भरि लेहिं उसासा * पापिनि सबहिं भाँति कुल नासा ॥
 जौँ पै कुरचि रही अति तोही * जनमत काहे न मारे मोही ॥
 पेड़ काटि तें पालउ सींचा * मीनजियन निति बारि उलीचा ॥

दोहा--हंसबसु दसरथु जनकु, राम लपन से भाइ ।

जननी तूँ जननी भई, विधि सन कछु न बसाइ ॥१६१॥

जबतैँ कुमति कुमत जिय ठयऊ * खंड खंड होइ हृदय न गयऊ ॥
 बर माँगत मन भइ नहिं पीरा * गरि न जीह मुँहपरेउ न कीरा ॥

भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही * मरनकाल विधि मति हरि लीन्ही ॥
 विधिहुँ न नारि हृदयगति जानी * सकल कपट अघ अवगुन खानी ॥
 सरल सुसील धरमरत राज * सो किमि जानइ तीयसुभाऊ ॥
 अस को जीव जंतु जग माहीं * जेहि रघुनाथ प्रान प्रिय नाहीं ॥
 भे अति अहित राम तेउ तोही * को तूँ अहसि सत्य कहु मोही ॥
 जो हसि सो हसि मुहुँ मसि लाई * आँखि अोट उटि बैठहि जाई ॥
 दोहा-राम-विरोधी हृदय तें, प्रगट कीन्ह विधि मोहि ।

मो समान को पातकी, वादि कहों कछु तोहि ॥ १६२ ॥

सुनि सत्रुघुन मातुकुटिलाई * जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥
 तेहि अवसर कुबरी तहँ आई * बसन विभूषन विविध बनाई ॥
 लखि रिस भरेउ लपन-लघु-भाई * वरत अनल घृतआहुति पाई ॥
 हुमगि लात तकि कूबर मारा * परि मुँह भरि महि करत पुकारा ॥
 कूबर टूटउ फूट कपारू * दलितदसन मुख रुधिरप्रचारू ॥
 आह दइअ मैं काह नसावा * करत नीक फल अनइस पावा ॥
 सुनि रिपुहन लखि नख सिख खोटी * लगे घसीटन धरि धरि झोंटी ॥
 भरत दयानिधि दीन्हि छुड़ाई * कौसल्या पहिं गे दोउ भाई ॥

दोहा--मलिनबसन विवरन विकल, कृस सरीर दुखभारू ।

कनक-कल्प-वर-बेलि-वन, मानहुँ हनी तुपारू ॥ १६३ ॥

भरतहिं देखि मातु उटि धाई * मुरुझित अवनि परी झई आई ॥
 देखत भरत विकल भये भारी * परे चरन तनदसा विसारी ॥
 मातु तात कहँ देहि देखाई * कहँ सिय रामुलपनु दोउ भाई ॥
 केकइ कत जनमी जग माँझा * जौँ जनमि त भइ काहे न बाँझा ॥
 कुलकलंकु जेहि जनमेउ मोही * अपजसभाजन प्रिय-जन-द्रोही ॥
 को त्रिभुवन मोहि सरिस अभागी * गति अमि तोरि मातु जेहि लागी ॥
 पितु सुरपुर वन रघु-वर-केतू * मैं केवल सब अनरथहेतू ॥
 धिग मोहि भयेउँ वेनु-वन-आगी * दुसह - दाह-दुख - दृषन - भागी ॥

दोहा-मातु भरत के वचन मृदु, सुनि पुनि उठोँ सँभारि ।

लिये उठाइ लगाइ उर, लोचन मोचति बारि ॥ १६४ ॥

सरल सुभाय माय हिय लाये * अतिहित मनहुँ राम फिरि आये ॥
 भेंटउ वहुरि लपन-लघु-भाई * सोक सनेह न हृदय समाई ॥
 देखि सुभाउ कहत मव कोई * राममातु अस काहे न होई ॥
 माता भरत गोद वैठारै * आँसु पौछि मृदुबचन उचारै ॥
 अजहुँ वच्छ वलि धीरजु धरहू * कुसमउ समुक्ति सोक परिहरहू ॥
 जनि मानहु हिय हानि गलानी * काल-करम-गति अघटित जानी ॥
 काहुहि दोम देहु जनि ताता * भा मोहि सब विधि वाम विधाता ॥
 जो एतेहु दुख मोहि जियावा * अजहुँ को जानइ का तेहि भावा ॥
 दोहा--पितुआयसु भूपन बसन, तात तजे रघुबीर ।

विसमउ हरप न हृदय कछु, पहिरे बलकर चीर ॥ १६५ ॥

मुख प्रसन्न मनु राग न रोष * सबकर सब विधि करि परितोष ॥
 चले त्रिपिन सुनि मिय मँग लागी * रहइ न राम - चरन - अनुरागी ॥
 सुनतहि लपन चले उठि माथा * रहहिं न जतन किये रघुनाथा ॥
 तव रघुपति सबही मिरु नाई * चले संग मिय अरु लघु भाई ॥
 रामु लपनु मिय वनहिं सिधाये * गइउं न संग न प्रान पठाये ॥
 एहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगे * तउ न तजा तनु प्रान अभागे ॥
 मोहि न लाज निज देहु निहारी * रामसरिस सुत मैं महतारी ॥
 जिअइ मरइ भल भूपति जाना * मोर हृदय सत-कुलिस-समाना ॥
 दोहा--कौसल्या के बचन सुनि, भरतसहित रनिवासु ।

ब्याकुल विलपत राजगृह, मानहुँ सोकनिवासु ॥ १६६ ॥

विलपहिं विकल भरत दोउ भाई * कौसल्या लिये हृदय लगाई ॥
 भाँति अनेक भरत समुझाये * कहि विवेकमय बचन सुनाये ॥
 भरतहु मातु सकल समुझाई * कहि पुरान सुति कथा सुहाई ॥
 छलविहीन सुचि सरल सुबानी * बोले भरत जोरि जुगपानी ॥
 जे अघ मातु-पिता-सुत मारे * गाइगोठ महि - सुर-पुर जारे ॥
 जे अघ तिय-बालक-बध कीन्हे * मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
 जे पातक उतपातक अहहीं * करम-बचन-मन-भव कवि कहहीं ॥
 ते पातक मोहि होहु विधाता * जौं एहुँ होइ मोर मत माता ॥

दोहा--जे परिहरि हरि-हर-चरन, भजहिं भूतगन घोर ।

तिन्ह कइ मोहि देउ विधि, जौं जननी मत मोर ॥१६७॥

बेचहिं वेद धरम दुहि लेहीं * पियुन पराय पाप कहि देहीं ॥
 कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी * वेदविदूषक विस्वविरोधी ॥
 लोभी लंपट लोलुपचारा * जे ताकहिं परधनु परदारा ॥
 पावउँ मैं तिन्ह कै गति घोरा * जौं जननी एहु संमत मोरा ॥
 जे नहिं साधुसंग अनुरागे * परमारथपथ विमुख अभागे ॥
 जे न भजहिं हरि नरतनु पाई * जिन्हहिं न हरि-हर-सुजसु मुहाई ॥
 तजि सुतिपंथु वामपथ चलहीं * बंचक विरचि बेषु जगु छलहीं ॥
 तिन्ह कइ गति मोहि संकर देऊ * जननी जौं एहु जानउँ भेऊ ॥

अथ श्लेषक

छंद—मन बचन कर्म कृपायतन कर दाम में सुनु मातुरी ।

उर वसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी ॥

अस कहत लोचन बहत जल, तनु पुलक नख खेलत मही ।

हियलाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभु-पद-रत मही ॥

इति श्लेषक

दोहा--मातु भरत के बचन सुनि, साँचे सरल सुभाय ।

कहति रामप्रिय तात तुम्ह, सदा बचन मनकाय ॥१६८॥

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे * तुम्ह रघुपतिहिं प्रान तें प्यारे ॥
 विधु विष चवइ सवइ हिमु आर्गी * होइ वारिचर वारिविरागी ॥
 भये ज्ञान वरु मिटइ न मोहू * तुम्ह रामहिं प्रतिकूल न होहू ।
 मत तुम्हार एह जो जग कहहीं * सो मपनेहुँ मुख सुगति न लहहीं ॥
 अस कहि मातु भरत हिय लाये * थनपय सवहिं नयनजल छाये ॥
 करत विलाप बहुत एहि भाँती * बैठहिं वीति गई सव राती ॥
 वामदेव बसिष्ठ तव आये * सचिव महाजन सकल बोलाये ॥
 मुनि बहुभाँति भरत उपदेसे * कहि परमारथ बचन सुदेसे ॥

दोहा--तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आजु ।

उठे भरत गुरु बचन सुनि, करन कहेउ सव काजु ॥१६९॥

नृपतनु वेद विहित अन्हवावा * परमविचित्र विमान वनावा ॥
 गहि पग भरत मातु सब राखी * रहीं राम दरसन अभिलाखी ॥
 चंदन-अगर-भार बहु आये * अमित अनेक सुगंध सुहाये ॥
 सरजुतीर रचि चिता बनाई * जनु सुर-पुर-सोपान सुहाई ॥
 एहि विधि दाहक्रिया सब कीन्ही * विधिवत न्हाइ तिलांजुलि दीन्ही ॥
 सोधि सुमृति सब वेद पुराना * कीन्ह भरत दसगात विधाना ॥
 जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा * तहँ तम सहस्र भाँति सबु कीन्हा
 भये विसुद्ध दिये सब दाना * धेनु वाजि गज वाहन नाना ॥
 दोहा--सिंहासन भूपन बसन, अन्न धरनि धन धाम ।

दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरन काम ॥१७०॥

पितुहित भरत कीन्हि जसि करनी * सो मुख लाख जाइ नहिं वरनी ॥
 सुदिन सोधि मुनिवर तव आये * सचिव महाजन सकल बोलाये ॥
 बैठे राजसभा सब जाई * पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥
 भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे * नीति-धरम-मय वचन उचारे ॥
 प्रथम कथा सब मुनिवर वरनी * कइकइ कुटिल कीन्हि जसि करनी ॥
 भूप धरमव्रत सत्य सराहा * जेहि तनु परिहरि प्रेम निवाहा ॥
 कहत राम-गुन-सील-सुभाऊ * सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥
 बहुरि लपन-सिय-प्रीति बखानी * सोक सनेह मगन मुनिज्ञानी ॥
 दोहा--सुनहु भरत भावी प्रवल, विलखि कहेउ मुनिनाथ ।

हानि लाभु जीवनु मरनु, जस अपजस विधि हाथ ॥१७१॥

अस विचारि केहि देइय दोषू * व्यरथ काहि पर कीजिय रोषू ॥
 तात विचार करहु मन माहीं * सोचजोग दसरथ नृप नाहीं ॥
 सोचिय विप्र जो वेदविहीना * तजि निज धरम विषय लयलीना ॥
 सोचिय नृपति जो नीति न जाना * जेहि न प्रजा प्रिय प्रानसमाना ॥
 सोचिय बयसु कृपिन धनवानू * जो न अतिथिसिवभगतिसुजानू ॥
 सोचिय सूद्र विप्र अवमानी * मुखर मानप्रिय ज्ञानगुमानी ॥
 सोचिय पुनि पतिबंधक नारी * कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
 सोचिय बटु निजव्रत परिहरई * जो नहिं गुरुआयसु अनुसरई ॥

दोहा--सोचिय गृही जो मोहबस, करइ करमपथ त्याग ।

सोचिय जती प्रपंचरत, विगत विवेक विराग ॥१७२॥

बैपानस सोइ सोचन जोगू * तप विहाइ जेहि भावइ भोगू ॥

सोचिय पिसुन अकारनक्रोधी * जननि-जनक-गुरु - बंधु-बिरोधी ॥

सबबिधि सोचिय परअपकारी * निज तनुपोषक निरदय भारी ॥

सोचनीय सवही विधि सोई * जो न छाडि छल हरिजन होई ॥

सोचनीय नहिं कोसलराऊ * भवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥

भयेउ न अहइ न अब होनिहारा * भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥

विधि हरि हर सुरपति दिसिनाथा * वरनहिं सब दसरथ-गुन-गाथा ॥

दोहा--कहहु तात केहि भाँति कोउ, करिहि बड़ाई तासु ।

रामलपन तुम्ह शत्रुहन, सरिस सुअन सुचि जासु ॥१७३॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी * बादि विपादु करिय तेहि लागी ॥

एहु सुनि समुझि सोच परिहरहु * सिर धरि राजरजायसु करहु ॥

राय राजपदु तुम्ह कह दीन्हा * पितावचन फुर चाहिय कीन्हा ॥

तजे रामु जेहि वचनहि लागी * तनु परिहरेउ रामविरहागी ॥

नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना * करहु तात पितुवचन प्रमाना ॥

करहु सीस धरि भूपरजाई * हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥

परसुराम पितुअग्या राखी * मारी मातु लोग सब साखी ॥

तनय जजातिहि जौवन दयऊ * पितुअग्या अघ अजस न भयऊ ॥

दोहा--अनुचित उचित विचारु तजि, जे पालहिं पितु बयन ।

ते भाजन सुख सुजस के, बसहिं अमरपति अयन ॥१७४॥

अवसि नरेस वचन फुर करहु * पालहु प्रजा सोक परिहरहु ॥

सुरपुर नृप पाइहि परितोषू * तुम्ह कहँ सुकृत सुजसु नहिं दोषू ॥

बेदविहित संमत सवही का * जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥

करहु राज परिहरहु गलानी * मानहु मोर वचन हित जानी ॥

सुनि सुख लहब रामवैदेही * अनुचित कहव न पंडित केही ॥

कौसल्यादि सकल महतारी * तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी ॥

मरम तुम्हार राम कर जानिहि * सो सब विधि तुम्ह सनभल मानिहि ॥

सौंपेहु राज राम कें आये * सेवा करेहु सनेह सुहाये ॥
दोहा--कीजिय गुरुआयसु अवासि, कहहिं सचिव कर जोरि ।

रघुपति आये उचित जस, तस तब करब बहोरि ॥१७५॥

कौमल्या धरि धीरज कहई * पूत पथ्य गुरुआयसु अहई ॥
सो आदरिय करिय हित मानी * तजिय विपादु कालगति जानी ॥
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू * तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा * तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा ॥
लग्नि विधि वाम कालकठिनाई * धीरज धरहु मातु बलि जाई ॥
सिर धरि गुरुआयसु अनुमरहू * प्रजा पालि पुर-जन-दुख हरहू ॥
गुरु के वचन सचिव अभिनंदनु * सुने भरत हिय हित जनु चंदनु ॥
सुनी बहोरि मातु मृदुवानी * सोल - सनेह - सरल - रस सानी ॥

छंद--सानी सरलरस मातुवानी सुनि भरत व्याकुल भये ।

लोचनसरोरुह स्रवत सींचत विरह उर अंकुर नये ॥

सो दमा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की ।

तुलमी सराहत सकल मादर सीवँ महजसनेह की ॥

सोरठा--भरतु कमलकर जोरि, धीर-धुरं-धर धीर धरि ।

वचन अमिय जनु बोरि, देत उचित उत्तर सबहि ॥१७६॥

मोहि उपदेमु दीन्ह गुरु नीका * प्रजा सचिव संमत सबही का ॥
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा * अवासि सीम धरि चाहँ कीन्हा ॥
गुरु-पितु - मातु - स्वामि- हित-वानी * सुनि मन मुदित करिय भलि जानी ॥
उचित कि अनुचित किये विचारू * धरमु जाइ सिर पातकभारू ॥
तुम्ह तउ देहु सरल सिखु सोई * जो आचरत मोर भल होई ॥
जद्यपि यह समुझत हउ नीकें * तदपि होत परितोषु न जी कें ॥
अब तुम्ह त्रिनय मोरि सुनि लेहू * मोहि अनुहरत सिखावनु देहू ॥
ऊतरु देउँ छमव अपराधू * दुखित-दोष-गुन गनहिं न साधू ॥

दोहा--पितु सुरपुर सिय राम बन, करन कहहु मोहि राजु ।

एहि ते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काजु ॥१७७॥

हित हमार सिय-पति-सेवकाई * सो हरि लीन्ह मातुकुटिलाई ॥

मैं अनुमानि दीखि मन माहीं * आन उपाय मोर हित नाहीं ॥
 सोकममाजु राजु केहि लेखें * लपन-राम-सिय-पद विनु देखें ॥
 बादि वसन विनु भूषन भारू * बादि विरति विनु ब्रह्मविचारू ॥
 सरुज मरीर बादि बहु भोगा * विनु हरिभगति जाय जप जोगा ॥
 जायु जीव विनु देह सुहाई * बादि मोरु मबु विनु रघुराई ॥
 जाउं राम पहि आयमु देहू * एकहि आँक मोर हित एहू ॥
 मोहि नृप करि भल आपन चहहू * मोउ मनह जड़ताबम कहहू ॥

दोहा--कैकेइसुअन कुटिल मति, रामविमुख गतलाज ।

तुम्ह चाहत सुख मोहबस, मोहिसे अधमु के राज ॥ १७८ ॥

कहाँ माँच मव सुनि पतियाहू * चाहिय धरममील नरनाहू ॥
 मोहि राजु हटि देखहहु जबहीं * रमा रमातल जाइहि तवहीं ॥
 मोहि समान को पापनिवासू * जेहि लागि मीयराम बनवासू ॥
 राय राम कहूँ काननु दीन्हा * विछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥
 मैं सठ सब अनरथ कर हेतू * बैठ बात सब सुनउं मचतू ॥
 विनु रघुवीर बिलोकि अवासू * रहे प्रान सहि जग उपहासू ॥
 राम पुनीत विषयरस रूखे * लोलुप भूमिभोग के भूखे ॥
 कहूँ लागि कहौं हृदयकठिनाई * निदरि कुलिसु जेहि लही बड़ाई ॥

दोहा--कारन तें कारज कठिन, होइ दोसु नहिं मोर ।

कुलिस अस्थि तें उपल तें, लोह कराल कठोर ॥ १७९ ॥

कैकेइभव तनु अनुरागे * पावँर प्रान अघाइ अभागे ॥
 जौं प्रियविरह प्रान प्रिय लागें * देखव सुनव बहुत अब आगें ॥
 लपन-राम-सिय कहूँ वनु दीन्हा * पठइ अमरपुर पतिहित कीन्हा ॥
 लीन्ह विधवपन अपजसु आपू * दीन्हैउ प्रजहिं सोकु मंतापू ॥
 मोहि दीन्ह सुख सुजस सुराजू * कीन्ह कैकेई सब कर काजू ॥
 एहि तें मोर काह अब नीका * तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका ॥
 कैकेइजठर जनमि जग माहीं * यह मो कहूँ कलु अनुचित नाहीं ॥
 मोरि बात सब विधिहिं बनाई * प्रजा पाँच कत करहु सहाई ॥

दोहा--ग्रहग्रहीत पुनि बातबस, तेहि पुनि बीछी मार ।

ताहि पियाइय बारुनी, कहहु कवन उपचार ॥ १८० ॥

कैकइसुअन जोगु जग जोई * चतुर विरंचि दीन्ह मोहि सोई ॥
 दमरथतनय राम - लघु - भाई * दीन्हि मोहि विधि वादि वड़ाई ॥
 तुम्ह सवु कहहु कदावन टीका * रायरजायसु सव कहँ नीका ॥
 उतरु देउँ केहि विधि केहि केही * कहहु सुखेन जथा रुचि जेही ॥
 मोहि कु - मातु - समेत विहाई * कहहु कहिहि के कीन्हि भलाई ॥
 मो विनु को सचराचर माहीं * जेहि सियरामु प्रानप्रिय नाहीं ॥
 परमहानि सबु कहँ वड़ लाहू * अदिनु मोर नहिं दूषन काहू ॥
 संसय सील प्रेम वस अहहू * सबुइ उचित सबु जो कछु कहहू ॥

दोहा--राममातु सुठि सरलचित, मो पर प्रेम विसेखि ।

कहइ सुभाय सनेहवस, मोरि दीनता देखि ॥ १८१ ॥

गुरु विवेकसागर जगु जाना * जिन्हहिं विस्व कर-बदर-समाना ॥
 मो कहँ तिलकसाज सज मोऊ * भये विधि विमुख विमुख सब कोऊ ॥
 परिहरि रामसीय जग माहीं * कोउ न कहिहि मोर मतु नाहीं ॥
 सो मैं सुनव सहव सुख मानी * अंतहु कीच तहाँ जहँ पानी ॥
 डर न मोहि जग कहहि कि पोचू * परलोकहु कर नाहिंन सोचू ॥
 एकइ उर वस दुसह दवारी * मोहि लगि भे सियरामु दुखारी ॥
 जीवनलाहु लपन भल पावा * सबु तजि रामचरन मनु लावा ॥
 मोर जनम रघुवरवन लागी * भूठ काह पछिताउँ अभागी ॥

दोहा--आपनि दासुन दीनता, कहउँ सवहि सिरु नाइ ।

देखे विनु रघु-नाथ-पद, जिय कै जरनि न जाइ ॥ १८२ ॥

आन उपाउ मोहि नहिं सूझा * को जिय कै रघुवर विनु बूझा ॥
 एकहि आँक इहै मन माहीं * प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं ॥
 जद्यपि मैं अनभल अपराधी * भइ मोहि कारन सकलउपाधी ॥
 तदपि सरन सनमुख मोहि देखी * छमि सव करिहहिं कृपा विसेखी ॥
 सील सकुचि सुठि सरल सुभाऊ * कृपा - सनेह - सदन रघुराऊ ॥
 अरिहु क अनभल कीन्ह न रामा * मैं सिसु सेवक जद्यपि वामा ॥
 तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी * आयसु आसिष देहु सुबानी ॥

जेहि सुनि विनयमोहिजनु जानी * आवहिं वहुरि रामु रजधानी ॥
दोहा--जद्यपि जनम कुमातु तें, में सठ सदा सदास ।

आपन जानि न त्यागिहहिं, मोहि रघु-वीर-भरोस ॥१८३॥
भरत वचन सब कहँ प्रिय लागे * राम - सनेह - सुधा जनु पागे ॥
लोग वियोग-विषम-विष दागे * मंत्र सबीज सुनत जनु जागे ॥
मातु सचिव गुरु पुर-नर-नारी * सकल सनेह विकल भये भारी ॥
भरतहिं कहहिं सराहि सराही * राम-प्रेम-भूरति-तनु आही ॥
तात भरतु अस काहे न कहहू * प्रान समान रामप्रिय अहहू ॥
जो पावरु अपनी जड़ताई * तुम्हहिं सुगाइ मातुकुटिलाई ॥
सो सठ कोटिक-पुरुष-समेता * वसहिं कलपसत नरकनिकेता ॥
अहि-अध-अवगुन नहिं मनि-गहई * हरइ गरल दुख दारिद दहई ॥
दोहा--अवसि चलिय वन राम जहँ, भरत मंत्र भल कीन्ह ।

सोकसिंधु बूड़त सबहिं, तुम्ह अवलंबनु दीन्ह ॥१८४॥

भा सब के मन मोद न थोरा * जनु धनधुनि सुनि चातक मोरा ॥
चलत प्रात लखि निरनउ नीकें * भरत प्रान प्रिय भे सबही कें ॥
मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई * चले सकल घर विदा कराई ॥
धन्य भरत जीवनु जगमाही * सील सनेह सराहत जाही ॥
कहहिं परसपर भा बड़ काजू * सकल चलइ कर साजहिं साजू ॥
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी * सो जानइ जनु गरदनि मारी ॥
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू * को न चहइ जग जीवन लाहू ॥
दोहा--जरउ सो संपति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाइ ।

सनमुख होत जो रामपद, करइ न सहस सहाइ ॥१८५॥

घर घर साजहिं वाहन नाना * हरषु हृदय परभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू * नगर वाजि गज भवन भंडारू ॥
संपति सब रघुपति कै आही * जौं विनु जतनु चलों तजि ताही ॥
तौ परिनाम न मोरि भलाई * पापसिरोमनि साइँदोहाई ॥
करइ स्वामिहित सेवक सोई * दूखन कोटि देइ किन कोई ॥
अस विचारि सुत्रि सेवक बोले * जे सपनेहुं निजधरमु न डोले ॥

कहि सबु मरमु धरमु भल भाखा * जो जेहि लायक सो तहँ राखा ॥
करि मव जतन राखि रखवारे * राममातु पहिं भरत सिधारे ॥

दोहा--आरत जननी जानि सबु, भरत सनेहसुजान ।

कहेउ बनावन पालकी, सजन सुखासन जान ॥१८६॥

चक्र चक्रि जिमि पुर-नर-नारी * चहत प्रात उर आरत भारी ॥
जागत सब निसि भयउ विद्वाना * भरत बोलाये सचिव सुजाना ॥
कहेउ लेहु मव तिलकममाजू * वनहिं देव मुनि रामहिं राजू ॥
वेगि चलहु सुनि मचिव जोहारे * तुरत तुरग रथ नाग सवारे ॥
अरुंधती अरु अगिनिसमाऊ * रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ॥
बिप्रबृंद चढ़ि वाहन नाना * चले मकल तप-तेज-निधाना ॥
नगर लोग सब सजि मजि नाना * चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ॥
सिबिका सुभग न जाहिं वखानी * चढ़ि चढ़ि चलत भईं मव रानी ॥
दोहा--सौंपि नगर सुचि सेवकनि, सादर सबहिं चलाइ ।

सुमिरि राम-सिय-चरन तव, चले भरत दोउ भाइ ॥१८७॥

राम-दरम-बस मव नरनारी * जनु करि करिनि चले तकि वारी ॥
वन सिय रामु ममुझि मन माहीं * मानुज भरत पयादेहि जाहीं ॥
देखि सनेहु लोग अनुरागे * उतरि चले ह्य गय रथ त्यागे ॥
जाइ समीप राखि निजडोली * राममातु मृदुवानी बोली ॥
तात चढ़हु रथ बलि महतारी * होइहि प्रिय परिवारु दुखारी ॥
तुम्हरं चलत चलिहि मव लोगू * सकल मोक कृम नहिं मग जोगू ॥
भिर धरि बचन चरन सिरु नाई * रथ चढ़ि चलत भये दोउ भाई ॥
तमसा प्रथमदिवस करि वासू * दूसर गोमतितीर निवासू ॥

दोहा--पय अहार फल असन एक, निसि भोजन एक लोग ।

करत रामहित नेम व्रत, परिहरि भूपन भोग ॥१८८॥

सई तीर बसि चले बिहाने * संगवेरपुर मव नियराने ॥
समाचार सब सुने निषादा * हृदय विचार करइ सविषादा ॥
कारन कवन भरतु वन जाहीं * है कछु कपटभाउ मन माहीं ॥
जौ पै जिय न होति कुटिलाई * तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥

जानहिं मानुज रामहिं मारी * करौं अकंटक राज सुखारी ॥
 भरत न राजनीति उर आनी * तव कलंकु अब जीवनहानी ॥
 सकल-सुरासुर जुरहिं जुझारा * रामहिं समर न जीतनिहारा ॥
 का आचरज भरत अस करहीं * नहिं विषवेलि अमिय फल फरहीं ॥
 दोहा-अस विचारि गुह ग्याति सन, कहेउ सजग सब होहु ।

हथवाँसहु बोरहु तरनि, कीजिय घाटारोहु ॥ १८६ ॥
 होहु सँजोइल रोकहु घाटा * टाटहु सकल मरइ के टाटा ॥
 सनमुख लोह भरत सन लेऊं * जियत न सुरमरि उतरन देऊं ॥
 समर मरनु पुनि सुर-सरि-तीरा * रामकाज ब्रनभंगु सरीरा ॥
 भरत भाइ नृपु मैं जन नीचू * बड़े भाग अमि पाइअ मीचू ॥
 स्वामिकाज करिहउँ रन रारी * जस धवलिहउँ भुवन दस चारी ॥
 तजउँ प्रान रघु-नाथ-निहोरे * दुहँ हाथ मुद् मोदक मोरे ॥
 साधुसमाज न जा कर लेखा * राम भगत महँ जासु न रेखा ॥
 जाय जियत जग सो महि भारू * जननी - जौवन - विटप - कुठारू ॥

दोहा--विगतविषाद निषादपति, सबहि बढाइ उछाहु ।

सुमिरि राम माँगेउ तुरत, तरकस धनुष सनाहु ॥ १८७ ॥

बंगहु भाइहु सजहु सँजोऊ * सुनि गजाइ कदराइ न कोऊ ॥
 भलेहि नाथ सब कहहिं सहरषा * एकहिं एक बढावहिं कग्पा ॥
 चले निषाद जोहारि जोहारी * सूर सकल रन रूचइ रारी ॥
 सुमिरि राम-पद-पंकज-पनहीं * भाथा बाँधि चढाइन्हि धनहीं ॥
 अँगरी पहिरि कँडि सिर धरहीं * फरसा बाँस सेल मम करहीं ॥
 एक कुसल अति ओड़न खाँडे * कूदहिं गगन मनहुँ छिति छाँडे ॥
 निज निज साज समाज बनाई * गुहराउतहिं जोहारे जाई ॥
 देखि सुभट मव लायक जान * लै लै नाम मकल सनमान ॥

दोहा--भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काज बड़ मोहि ।

सुनि सरोष बोले सुभट, बीर अधीर न होहि ॥ १८८ ॥

रामप्रताप नाथ बल तोरें * करहिं कटकु विनु भट विनु घोरें ॥
 जीवत पाउ न पाछें धरहीं * रुंड - मुंड - मय मेदिनि करहीं ॥

दीख निपादनाथ भल टोलू * कहेउ बजाउ जुभाऊ ढोलू ॥
 एतना कहत छीक भइ वायें * कहेउ मगुनिअन्ह खेत सुहायें ॥
 बूढु एक कह मगुन विचारी * भरतहि मिलिअ न होइहि रारी ॥
 रामहि भरतु मनावन जाहीं * सगुन कहइ अम विग्रहु नाहीं ॥
 सुनि गुह कहइ नीक कह बूढा * सहभा करि पछिताहिं विमूढा ॥
 भरत-सुभाउ-मीलु विनु बूझे * वड़ि हितहानि जानि विनु जूझे ॥
 दोहा--गहहु घाट भट सिमिटि सव, लैउँ मरम मिलि जाइ ।

बूझि मित्र अरि मध्य गति, तव तस करिहुँ आइ ॥ १६२ ॥

लखव मनहु सुभाय सुहायें * वैर प्रीति नहिं दुरइ दुरायें ॥
 अम कहि भेंट मँजोवन लागे * कंद मूल फल खग मृग मांगे ॥
 मीन पीन पाठीन पुराने * भरि भरि भार कहारन्ह आने ॥
 मिलन भाजु मजि मिलन मिधायें * मंगलमूल सगुन सुभ पायें ॥
 देखि दूरि तें कहि निजनामू * कीन्ह मुनीमहि दंडप्रनामू ॥
 जानि रामप्रिय दीन्ह असीसा * भरतहि कहेउ बुभाइ मुनीसा ॥
 रामसखा सुनि संदनु त्यागा * चले उतरि उमगत अनुरागा ॥
 गाउँ जाति गुह नाउँ सुनाई * कीन्ह जोहारु माथ महि लाई ॥
 दोहा--करत दंडवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उर लाइ ।

मनहुँ लपन सन भेंट भइ, प्रेमन हृदयसमाइ ॥ १६३ ॥

भेंटत भरतु ताहि अतिप्रीती * लोग सिहाहिं प्रेम कै रीती ॥
 धन्य धन्य धुनि मंगलमूला * सुर सराहि तेहि वरिसहिं फूला ॥
 लोक बंद सब भाँतिहि नीचा * जासु छाँहें लुइ लेइय सीचा ॥
 तेहि भरि अंक राम-लघु-भ्राता * मिलत पुलकपरिपूरित गाता ॥
 राम राम कहि जे जमुहाहीं * तिन्हहिं न पापपुंज समुहाहीं ॥
 एहि तौ राम लाइ उर लीन्हा * कुलसमेत जगु पावन कीन्हा ॥
 करम-नास-जलु सुरसरि परई * तेहि को कहहु सीस नहिं धरई ॥
 उलटा नामु जपत जग जाना * बालमीकि भये ब्रह्म समाना ॥
 दोहा--स्वपच सबर खस जनम जड़, पावँर कोल किरात ।

राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ॥ १६४ ॥

नहिं अचरजु जुग जुग बलि आई * केहि न दीन्हि रघुवीर वड़ाई ॥
 राम-नाम-महिमा सुर कहहीं * सुनिसुनि अबध लोग सुखु लहहीं ॥
 रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा * पूखी कुमल सुमंगल खेमा ॥
 देखि भरत कर सीलु सनेहू * भा निषाद तेहि समय विदेहू ॥
 सकुच सनेहु मोटु मन वाढा * भरतहि बितवत एकटक ठाढा ॥
 धरि धीरजु पद वंदि बहोरी * विनय सप्रेम करत कर जोरी ॥
 कुमल मूल पदपंकज पेखी * मै तिहुँ काळ कुमल निज लेखी ॥
 अब प्रभु परम अनुग्रह तोरें * तहित कोटि कुल मंगल मोरें ॥
 दोहा--समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय जोइ ॥

जो न भजइ रघु-वीर-पद, जग विधिवंचित सोइ ॥ १६५ ॥

कपटी कायर कुमति कुजाती * लोक बंद बाहेर सब माँति ॥
 राम कीन्ह आपन जवहो तें * भयउँ भुवन-भूपन तवहीं तें ॥
 देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई * मिलेउ बहोरि भरत-लघु-भाई ॥
 कहि निषाद निज नाम सुवानी * सादर सकल जोहारी रानी ॥
 जानि लपनसम देहिं अमीमा * जियहु मुग्धी मय लाख्य वरीमा ॥
 निरखि निषाद नगर-नर-नारी * अये सुखां जनु लपन निहारी ॥
 कहहिं लहेउ एहि जीवन लाहू * भेंटउ राम-पद भारि बाहू ॥
 सुनि निषाद निज-भाग-बड़ाई * प्रमुदित मन लह चलेउ लेवाई ॥
 दोहा--सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि स्व पाइ ।

घर तरु तर सर बाग वन, वास बनायेन्हि जाइ ॥ १६६ ॥

सुंगवरपुर भरत दीख जव * भे मनेहवस अंग मिथिल तव ॥
 सोहत दिये निषादहि लागू * जनु तनु धरें विनय अनुरागू ॥
 एहि विधि भरत सेनु सबु संगी * दीख जाइ जग पावनि गंगा ॥
 रामघाट कहँ कीन्ह प्रनामू * भा मन मगन मिले जनु रामू ॥
 करहिं प्रनाम नगर-नर-नारी * मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥
 करि मज्जनु माँगहि कर जोरी * रामचंद्रपद प्रीति न थोरी ॥
 भरत कहेउ सुरमारि तव रेनू * सकल-मुखद-सेवक-सुर-धेनू ॥
 जोरि पानि वर माँगहु एहू * सीय-राम-पद महज मनेहू ॥

दोहा-एहि विधि मज्जन भरत करि, गुरु अनुसासन पाइ ।

मातु नहानीं जानिं सब, डेरा चले लेवाइ ॥१६७॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा * भरत सोधु सवही कर लीन्हा ॥

सुरसेवा करि आयसु पाई * राममातु पहिं गे दोउ भाई ॥

चरन चाँपि कहि कहि मृदुवानी * जननी सकल भरत मनमानी ॥

भाइहिं मौपि मातुमवकाई * आपु निषादहि लीन्ह बोलाई ॥

चले सखा कर मों कर जोरें * मिथिल मरीर मनेहु न थोरें ॥

पूळत सखहि सो ठाउँ देखाऊ * नेकु नयन-मन-जरनि जुड़ाऊ ॥

जहँ मिय रामु लपन निसि मोये * कहत भरे जल लोचनकोये ॥

भरतवचन सुनि भयउ विषाद * तुरत तहाँ लइ गयउ निषाद ॥

दोहा--जहँ सिंसुपा पुनीततरु, रघुवर किय विश्रामु ।

अतिसनेह सादर भरत, कीन्हे दंड प्रनाम ॥१६८॥

कुम माथरी निहारि मुहाई * कीन्ह प्रनाम प्रदच्छिन जाई ॥

चरन-रेख-रज आँखिन्ह लाई * वरन न कहत प्रीति अधिकारी ॥

कनकविंदु दुइ चारिक देखे * राखे सीम सीयमम लेखे ॥

सजल बिलोचन हृदय गलानी * कहत सखा मन वचन सुवानी ॥

श्रीहत मीयविरह दुतिहीना * जथा अवध नरनारि विलीना ॥

पिता जनक देउँ पटतर केही * करतल भोग जोग जग जेही ॥

मसुर भानु-कुल-भानु भुआलू * जेहि मिहात अमरावतिपालू ॥

प्राननाथु रघुनाथ गोसाईं * जो बड़ होत सो रामबड़ाई ॥

दोहा--पतिदेवता सु-तीय-मनि, सीय साथरी देखि ।

बिहरत हृदय न हहरि हर, पवितें कठिन बिसेखि ॥१६९॥

लालनजोग लखन लघु लोने * भे न भाइ अस अहहिं न होने ॥

पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे * सिय रघुवीरहिं प्रानपियारे ॥

मृदुमूरति सुकुमार सुभाऊ * ताति वाउ तन लाग न काऊ ॥

ते बन सहहिं विपति सब भाँती * निदरे कोटि कुालस एहि छाती ॥

राम जनमि जगु कीन्ह उजागर * रूप सील सुख सब गुनमागर ॥

पुरजन परिजन गुरु पितु माता * रामसुभाउ सबहि सुखदाता ॥

बैरिउ रामबड़ाई करहीं * बोलेनि मिलनि विनय मन हरहीं ॥
सादर कोटि कोटि सत सेवा * करिन सकहिं प्रभु-गुन-गन-लेखा ॥
दोहा--सुखसरूप रघुवंस-मनि, मंगल-मोद-निधान ।

ते सोवत कुस डसि महि, विधिगति अतिबलवान् ॥२००॥

राम सुना दुख कान न काऊ * जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ ॥
पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती * जोगवहिं जननि सकल दिनराती ॥
ते अब फिरत विपिन पदचारी * कंद - मूल - फल - फूल अहारी ॥
धिग कैकई अमंगलमूला * भइमि प्रान - प्रियतम- प्रतिकूला ॥
मैं धिगधिग अघउदधि अभागी * मव उतपात भयउ जेहि लागी ॥
कुलकलंकु करि सृजेउ विधाता * माइद्रोह मोहि कीन्ह कुमाता ॥
सुनि मप्रेम समुभाव निषादू * नाथ करिअ कत वादि विषादू ॥
राम तुम्हहिं प्रिय तुम्ह प्रिय रामहिं * एह निरजोसु दोसु विधि वामहिं ॥
छंद—विधि वाम की करनी कठिन जेहि मातु कीन्ही बावरी ।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सरहना रावरी ॥
तुलसी न तुम्ह मां राम प्रीतमु कहत हौं माँहें कियें ।
परिनाम मंगल जानि अपने अनिये धीरज हियें ॥

सोरठा--अंतरजानी रोम, सकुच सप्रेम कृपायतन ।

चलिय करिय विश्रामु, यह विचारि दृढ़ आनि मन ॥२०१॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा * वाम चले सुमिरत रघुवीरा ॥
यह सुधि पाइ नगर-नर-नारी * चले विलोकन आरत भारी ॥
परदखिना करि करहिं प्रनामा * देहिं कैकईहि खोरि निकामा ॥
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं * वामविधातहि दूषन देहीं ॥
एक सराहहिं भरतमनेहू * कोउ कह नृपति निवाहेउ नहू ॥
निंदहिं आपु सराहि निषादहि * को कहि सकइ विमोहविषादहि ॥
एहि विधि राति लोगु सबु जागा * भा भिनुमारु गुदारा लागा ॥
गुरुहिं सुनाव चढ़ाइ सुहाई * नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दंड चारि महँ भा सब पारा * उतरि भरत तव सबहि सँभारा ॥
दोहा--प्रातक्रिया करि मातुपद, बंदि गुरुहि सिर नाइ ।

आगे किये निपादगन, दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०२॥

कियेउ निपादनाथ अगुआई * मातु पालकी सकल चलाई ॥
 साथ बोआइ भाइ लघु दीन्हा * विप्रन्ह महित गवनु गुरु कीन्हा ॥
 आपु सुरसरिहिं कीन्ह प्रनामू * सुमिरे लपनमहित सियरामू ॥
 गवने भरत पयादेहि पाये * कोतल संग जाहिं डोरिआये ॥
 कहहिं मुसेवक वारहिं वारा * होइय नाथ अस्व असवारा ॥
 रामु पयादेहि पाय सिधाये * हव कहँ रय गज वाजि बनाये ॥
 सिरभर जाउँ उचित अम मोरा * सब तें सेवकधरमु कठोरा ॥
 देखि भरतगति सुनि मृदुवानी * सब सेवकगन गरहिं गलानी ॥
 दोहा--भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेसु प्रयाग ।

कहत राम सिय राम सिय, उमगि उमगि अनुराग ॥२०३॥

झलका झलकत पायन्ह कैमें * पंकजकोम ओसकन जैसें ॥
 भरत पयादेहि आयें आजू * भयउ दुखित सुनि सकलसमाजू ॥
 खवरि लीन्ह सब लोग नहाये * कीन्ह प्रनामु त्रिवेनिहि आये ॥
 सविधि सितामित नीर नहाने * दिये दान महिसुर सनमाने ॥
 देखत स्यामल - धवल - हलारे * पुलकि सरार भरत कर जोरे ॥
 सकल - काम - प्रद तीरथराऊ * वेदविदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
 मागउँ भीख त्याग निजधरमू * आरत काह न करइ कुकरमू ॥
 अस जिय जानि सुजान सुदानी * सफल करहिं जग जाचकवानी ॥
 दोहा--अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहहुँ निरवान ।

जनम जनम रति रामपद, यह वरदानु न आन ॥२०४॥

जानहु रामु कुटिल करि मोही * लोग कहउ गुरु - साहिव-द्रोही ॥
 सीता - राम - चरन रति मोरें * अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें ॥
 जलदु जनम भरि सुरति विसारउ * जाचत जलु पविपाहन डारउ ॥
 चातकु रटनि घटें घटि जाई * बढ़े प्रेम सब भाँति भलाई ॥
 कनकहि वान चढ़इ जिमि दाहें * तिमि प्रिय-तम-पद नेम निवाहें ॥
 भरतवचन सुनि माँझ त्रिवेनी * भइ मृदुवानि सु - मंगल - देनी ॥
 तात भरत तुम्ह सब विधि साधू * राम-चरन - अनुराग-अगाधू ॥

वादि गलानि करहु मन माहीं * तुम्ह सम रामहिं कोउ प्रिय नाहीं ॥
दोहा--तनु पुलकेउ हिय हरषु सुनि, बेनिवचन अनुकूल ।

भरत धन्य कहि धन्य सुर, हरषित वरषहिं फूल ॥२०५॥

प्रमुदित तीरथ - राज - निवासी * बैखानम वटु गृही उदामी ॥
कहहिं परसपर मिलि दस पाँचा * भरथ सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥
सुनत राम - गुन - ग्राम सुहाये * भरद्वाज मुनिवर पहिं आये ॥
दंडप्रनाम करत मुनि देखे * मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे * दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे ॥
आसन दीन्ह नाइ सिरु वैटे * चहत सकुच गृह जनु भजि पेटे ॥
मुनि पूछव किल्लु यह वड सोचू * बोले रिषि लखि सीलसँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई * विधिकरतब पर किल्लु न बसाई ॥

दोहा--तुम्ह गलानि जिय जनि करहु, समुभि मातुकरतूति ।

तात कैकइहि दोष नहिं, गई गिरा मतिधूति ॥२०६॥

इहउ कहत भल कहिहि न कोऊ * लोक वेद बुधसंमत दोऊ ॥
तात तुम्हार विमलजस गाई * पाइहि लोकउ वेद वड़ाई ॥
लोक - वेद - संमत सब कहई * जेहि पितु देइ राजु सो लहई ॥
राउ सत्यव्रत तुम्हहिं बोलाई * देत राज सुख धरम वड़ाई ॥
रामगवन वन अनरथमूला * जो मुनि सकल विस्व भइ सूला ॥
सो भावीवस रानि अयानी * करि कुचालि अंतहु पछितानी ॥
तहउँ तुम्हार अल्प अपराधू * कहइ सो अधम अयान असाधू ॥
करतेहु राज त तुम्हहिं न दोषू * रामहिं होत सुनत संतोषू ॥
दोहा--अब अति कीन्हेहु भरत भल, तुम्हहिं उचित मत एहु ।

सकल-सुमंगल-मूल जग, रघुवरचरन सनेहु ॥२०७॥

सो तुम्हार धन जीवनप्राना * भूरि भाग को तुम्हहिं ममाना ॥
यह तुम्हार आचरज न ताता * दसरथमुअन राम-प्रिय-भ्राना ॥
सुनहु भरत रघु-पति-मन माहीं * प्रेमपात्र तुम सम कोउ नाहीं ॥
लषन राम सीतहिं अतिप्रीती * निमि सब तुम्हहिं सराहत बीती ॥
जाना मरम नहात प्रयागा * मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा ॥

तुम्ह पर अम सनेह रघुवर के * सुख जीवन जग जस जड़ नर के ॥
 यह न अधिक रघुवीरवड़ाई * प्रनत - कुटुंब - पाल रघुराई ॥
 तुम्ह तउ भरत मोर मत एहू * धरे देह जनु रामसनेहू ॥
 दोहा-तुम्ह कहँ भरत कलंक यह, हम सब कहँ उपदेसु ।

राम-भगति-रस-सिद्ध हित, भा यह समउ गनेसु ॥२०८॥

नवविधु विमल तात जमु तोरा * रघुवरकिंकर - कुमुद - चकोरा ॥
 उदित मदा अथइहि कवहुँ ना * घटिहि न जग नभ दिन दिन दना ॥
 कोक तिओक प्रीति अति करिही * प्रभुप्रतापु रवि अविहि न हरिही ॥
 निमि दिन सुखद मदा मव काहू * ग्रमिहि न कैकइकरतव राहू ॥
 पूरन रामु - सु - प्रेम - पियूषा * गुरुअवमान दोख नहिं दूषा ॥
 रामभगत अब अमिय अघाहू * कीन्हेउ सुलभ सुधा वसुधाहू ॥
 भूप भगीरथ सुरमरि आनी * सुमिरत सकल-सु-मंगल - खानी ॥
 दसरथ-गुन-गन वरनि न जाहौं * अधिक कहा जेहि मम जग नाहीं ॥

दोहा--जासु सनेह-सकोच-बस, राम प्रगट भये आइ ।

जे हर-हिय-नयननि कवहुँ, निरखे नहीं अघाइ ॥२०९॥

कीरति विधु तुम्ह कीन्ह अनूपा * जहँ बस राम प्रेम-मृग-रूपा ॥
 तात गलानि करहु जिय जायें * डरहु दरिद्रहि पारस पायें ॥
 मुनहु भरत हम भूठ न कहहीं * उदासीन तापस वन रहहीं ॥
 मव साधन कर सुफल मुहावा * लषन-राम - मिय - दरसनु पावा ॥
 तेहि फल कर फलु दरम तुम्हारा * महित प्रयाग सुभाग हमारा ॥
 भरत धन्य तुम्ह जगु जस जयऊ * कहि अम प्रेम मगन मुनि भयऊ ॥
 मुनि मुनिवचन सभामद हरषे * साधु सराहि सुमन सुर वरषे ॥
 धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा * मुनि मुनि भरत मगन अनुरागा ॥

दोहा-पुलकगात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन ।

करि प्रनामु मुनिमंडलिहि, बोले गदगद बैन ॥२१०॥

मुनिसमाज अरु तीरथराजू * साँचिहु सपथ अघाइ अकाजू ॥
 एहि थल जौ कुळ कहिय बनाई * एहि सम अधिक न अघ अधमाई ॥
 तुम्ह सर्वग्य कहउँ सतिभाऊ * उर - अंतरजामी रघुराऊ ॥

मोहि न मातुकरतव कर सोचू * नहिं दुख जिय जग जानहिं पोचू ॥
 नाहिं न डरु विगरहि परलोकू * पितहु मरन कर मोहि न सोकू ॥
 सुकृत सुजस भरि भुवन सुहायें * लब्धिमन-राम-भरिस सुत पायें ॥
 रामविरह तजि तन छनमंगू * भूप सोच कर कवन प्रसंगू ॥
 राम-लपन-सिय विनु पग पनहीं * करि मुनिवेष फिरहिं बन वनहीं ॥
 दोहा--अजिन बसन फल असन महि, सयन डासि कुस पात ।

बसि तरुतर नित सहत हिम, आतपवरषा वात ॥२११॥

एहि दुख दाह दहइ दिन छाती * भूख न वामर नींद न राती ॥
 एहि कुरोग कर औपध नाहीं * सोधेउँ मकलबिस्व मन माहीं ॥
 मातु कुमत बढ़ई अधमूला * तेहिं हमार हित कीन्ह बसूला ॥
 कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्र * गाड़ि अवधि पाड़ि कठिन कुमंत्र ॥
 मोहि लागि यह कुटाटु तेहिं ठाटो * घालेमि सब जग बाहर बाटो ॥
 मिटइ कुजोगु राम फिरि आयें * बसइ अवध नहिं आन उपायें ॥
 भरतवचन मुनि मुनि सुख पाई * सबहिं कीन्हि बहु भाँति वड़ाई ॥
 तात करहु जनि सोचु विसेखी * सब दुख मिटिहि रामपग देखी ॥

दोहा--करि प्रबोध मुनिवर कहेउ, अतिथि प्रेमप्रिय होहु ।

कंद मूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥

मुनि मुनिवचन भरतहिय सोचू * भयउ कुअवमर कठिन मँकोचू ॥
 जानि गरुड गुरुगिरा बहोरी * चरन बंदि बोले कर जोरी ॥
 सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा * परमधरम यह नाथ हमारा ॥
 भरतवचन मुनिवर मन भायें * सुचि सेवक मिप निकट बोलायें ॥
 चाहिय कीन्हि भरतपहुनाई * कंद मूल फल आनहु जाई ॥
 भलेहि नाथ कहि तिन्ह सिर नायें * प्रमुदित निज निज काज सिधायें ॥
 मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता * तसि पूजा चाहिय जस देवता ॥
 मुनि रिधिसिधि अनिमादिक आई * आयसु होइ सो करहिं गोसाई ॥

दोहा--रामविरह ब्याकुल भरत, सानुज सहित समाज ।

पहुनाई करि हरहु स्वम, कहा मुदित मुनिराज ॥२१३॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनि-वर-बानी * बड़ भागिनि आपुहि अनुमानी ॥

कहहिं परमपर मिधिसमुदाई * अतुलित अतिथि राम-लघु-भाई ॥
 मुनिपद बंदि करिय सोइ आज * होइ सुखी सब राजसमाजू ॥
 अम कहि रचें रुचिर गृह नाना * जेहि विलोकि विलखाहिं विमाना ॥
 भोग विभूति भरि भरि राखे * देखत जिन्हहिं अमर अभिलाखे ॥
 दासी दाम माजु सब लीन्हे * जोगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे ॥
 सबु समाजु सजि सिधिपल मार्ही * जे सुख सुरपुर सपनेहुं नाहीं ॥
 प्रथमहिं वास दिये सब केही * सुंदर मुखद जथारुचि जेही ॥
 दोहा--बहुरि सपरिजन भरत कहँ, रिपि अस आयसु दीन्ह ।

विधि-विसमय-दायकु विभव, मुनिवर तपवल कीन्ह ॥२१४॥
 मुनिप्रभाउ जव भरत विलोका * सब लघु लगे लोकपति लोका ॥
 मुख समाजु नहिं जाइ वखानी * देखत विरति विमारहिं ग्यानी ॥
 आसन मथन मुवमन विताना * वन वाटिका विहंग मृग नाना ॥
 सुरभि फूल फल अमियममाना * विमल जलामय विविध विधाना ॥
 अमन पान सुचि अमिय अमी से * देखि लोग सकुचात जमी से ॥
 सुरसुरभी सुरतरु सबही कें * लखि अभिलापु सुरेस मची कें ॥
 रितु बसंत वह त्रिविध वयारी * सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
 सक चंदन वनितादिक भोगा * देखि हरप विमभयवस लोगा ॥
 दोहा--संपति चकई भरतु चक, मुनिआयसु खेलवार ।

तेहि निसि आस्रमपिंजरा, राखे भा भिनुसार ॥२१५॥
 कीन्ह निमज्जनु तीरथराजा * नाइ मुनिहिं सिरुसहित समाजा ॥
 रिपिआयसु असीम सिर राखी * करि दंडवत विनय बहु भाखी ॥
 पथ-गति-कुसुल साथ सब लीन्हे * चले चित्रकटहि चितु दीन्हे ॥
 रामसखा कर दीन्हे लागू * चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥
 नहिं पदत्रान सीम नहिं छाया * पेसु नेसु व्रतु धरसु अमाया ॥
 लपन - राम - मिय - पंथ - कहानी * पूछत मखहि कहत मृदुवानी ॥
 राम - वास - थल - चिटप विलोकें * उरअनुराग रहत नहिं रोकें ॥
 देखि दसा सुर बरिसहिं फूला * भइ मृदु महि मग मंगलमूला ॥
 दोहा--कियें जाहिं छाया जलद, सुखद बहइ बरवात ।

तस मगु भयउ न राम कहँ, जस भा भरतहिं जात ॥२१६॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे * जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ॥
 ते सब भये परम - पद - जोगू * भरतदरम मेटा भवरोगू ॥
 यह वड़ि वात भरत कह नाहीं * सुमिरत जिनहिं रामु मन माहीं ॥
 वारक राम कहत जग जेऊ * होत तरन तारन नर तेऊ ॥
 भरतु राम प्रिय पुनि लघुभ्राता * कम न होइ मगु मंगलदाता ॥
 मिद्ध माधु मुनिवर अम कहहीं * भरतहिं निरखि हरषु हियु लहहीं ॥
 देखि प्रभाउ सुरेसहि मोचू * जगु भल भलेहि पांच कहँ पांच ॥
 गुरु मन कहेउ करिय प्रभु सोई * रामहि भरतहि भेंट न होई ॥

दोहा--राम सँकोची प्रेमवस, भरतु सपेम पयोधि ।

बना वात विगरत चहति, करिय जतनु छलु सोधि ॥२१७॥

वचन सुनत सुरगुरु मुमुकाने * महमनयन विदु लोचन जाने ॥
 कह गुरु वादि छोम छल छौड़ * इहाँ कपट कर होइहि भाँड़ ॥
 माया - पति - सेवक मन माया * करइ त उलटि परइ सुरगाया ॥
 तव किल्लु कीन्ह रामरुख जानी * अव कुचालि करि होइहि हानी ॥
 सुनु सुरेस रघु - नाथ - सुभाऊ * निजअपगध गिमाहिं न काऊ ॥
 जो अपराध भगत कर करई * राम - गोप - पावक मो जरई ॥
 लोकहु वंद विदित इतिहामा * यह महिमा जानहिं दुरवामा ॥
 भरतमरिस को राममनेही * जगु जप राम रामु जप जेही ॥

दोहा--मनहुँ न आनिय अमरपति, रघुवर-भगत-अकाजु ।

अजसु लोक परलोक दुख, दिन दिन सोकसमाजु ॥२१८॥

सुनु सुरेस उपदेसु हमारा * रामहिं सेवक परमपियारा ॥
 मानत मुख सेवकसेवकाई * सेवकवैर वैर अधिकाई ॥
 जद्यपि सम नहिं राग न रोष * गहहिं न पाप पुन्य गुन दोष ॥
 करम प्रधान विस्व करि राग्या * जो जस करइ सो तम फल चाखा ॥
 तदपि करहिं सम-विषम-विहारा * भगत अभगत हृदय अनुसार ॥
 अगुन अलेप अमान एक रस * रामु सगुन भये भगत-प्रेम-वस ॥
 राम सदा सेवकरुचि राखी * वंद - पुरान - साधु - सुर - साखी ॥

अस जिय जानि तजहु कुटिलाई * करहु भरत - पद - प्रीति सुहाई ॥
दोहा-रामभगत परहितनिरत, परदुख दुखी दयाल ।

भगतसिरोमनि भरत तें, जनि डरपहु सुरपाल ॥२१६॥

सत्यमंध प्रभु सुर-हित-कारी * भरत राम - आयसु - अनुमारी ॥
स्वार्थविवस विकल तुम्ह होहू * भरतदोसु नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुरवर सुर-गुरु-वर-वानी * भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥
वरपि प्रसून हरपि सुरराऊ * लगे सराहन भरतसुभाऊ ॥
एहि विधि भरत चले मग जाहीं * दमा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
जवहिं रामु कहि लेहिं उमासा * उमगत पेमु मनहुँ चहुँ पाया ॥
द्रवहिं वचन सुनि कुलिस पपाना * पुरजन पेमु न जाइ बखाना ॥
बीच वास करि जमुनहिं आये * निरखि नीरु लोचन जल छाये ॥
दोहा-रघु-वर-वरन बिलोकि वर, बारि समेत समाज ।

होत मगन वारिधि विरह, चढ़े विवेक जहाज ॥२२०॥

जमुनतीर तेहि दिन करि वामू * अयेउ समयसम मयहिं सुपासू ॥
रातिहिं घाट घाट की तरनी * आई अगनित जाहिं न बरनी ॥
प्रात पार भये एकहि सेवा * तोपे रामसखा की सेवा ॥
चले नहाइ नदिहि सिरु नाई * साथ निपादनाथ दोउ भाई ॥
आगे मुनि-वर-ब्राहन आलें * राजसमाज जाइ सब पाळें ॥
तेहि पाळें दोउ बंधु पयादें * भूपन बसन वेष सुठि सादें ॥
मेवक सुहृद सचिवसुत साथ * सुमिरत लपनु सीय रघुनाथा ॥
जहँ जहँ राम-वाम-विश्रामा * तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥
दोहा-मगवासी नरनारि सुनि, धामकाम तजि धाइ ।

देखि सरूप सनेह सब, मुदित जनमफलु पाइ ॥२२१॥

कहहिं सप्रेम एक एक पाहीं * रामलपनु मखि होहिं कि नाही ॥
बय बपु वरन रूपु सोइ आली * मील सनेहु सरिस मम चाली ॥
वेषु न सो मखि सीय न मंगा * आगे अनी चली चतुरंगा ॥
नहिं प्रमन्नमुख मानम खेदा * मखि मंदेहु होइ येहि भेदा ॥
तासु तरक तियगन मन मानी * कहहिं सकल तेहि सम न सयानी ॥

तेहि सराहि वानी फुरि पूजी * बोली मधुरबचन तिय दूजी ॥
कहि सपेम सब कथाप्रसंगू * जेहि विधि राम-राज-रस भंगू ॥
भरतहि बहुरि सराहन लागी * सील मनह सुभाय सुभागी ॥

दोहा—चलत पयादेहि खात फल, पिता दीन्ह तजि राजु ।

जात मनावन रघुवरहिं, भरतसरिस को आजु ॥२२२॥

भायप भगति भरत आचरनू * कहत सुनत दुख-दूपन-हरनू ॥
जो किछु कहव थोर मखि सोई * रामबंधु अस काहे न होई ॥
हम सब मानुज भरतहिं देखें * भइन्ह धन्य जुवतीजन लेखें ॥
मुनि गुन देखि दमा पछिताहीं * कैकइ-जननि-जोग मुतु नाहीं ॥
कोउ कह दूपनु रानिहि नाहिन * विधि मबु कीन्ह हमहिं जो दाहिन ॥
कहँ हम लोक-वेद-विधि-हीनी * लघुतिय कुल-करतृता-मलीनी ॥
बसहिं कुदेम कुगावँ कुवामा * कहँ यह दरसु पुन्यपरिनामा ॥
अम अनंदु अचरजु प्रतिग्रामा * जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥

दोहा—भरतदरसु देखत खुलेउ, मग लोगन्ह कर भागु ।

जनु सिंघलवासिन्ह भयउ, विधिवस सुलभ प्रयागु ॥२२३॥

निज-गुन-सहित राम-गुन-गाथा * सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनिआस्रम सुरधामा * निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा ॥
मनहीं मन माँगहिं बर एहू * सीय-राम-पद-पदुम मनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल बनवामी * वैश्वानम बटु जती उदामी ॥
करि प्रनामु पूछहिं जेहि तेही * केहि बन लपनु रामु बेदेही ॥
ते प्रभुममाचार मब कहहीं * भरतहिं देखि जनमफलु लहहीं ॥
जे जन कहहिं कुमल हम देखे * ते प्रिय राम-लपन-मम लेखे ॥
एहि विधि ब्रह्मत मबहिं सुवानी * सुनत राम बन-वाम-कहानी ॥

दोहा—तेहि वासर बसि प्रातहीं, चले सुमिरि रघुनाथ ।

रामदरस की लालसा, भरत सरिस सब साथ ॥२२४॥

मंगल सगुन होहिं मब काहू * फरकहिं मुखद विलोचन बाहू ॥
भरतहि सहित समाज उझाहु * मिलिहहिं रामु मिटिहि दुपदाहू ॥
करत मनोरथ जम जिय जाकें * जाहिं मनहमुरा मब झाकें ॥

सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं ❀ विहवल बचन प्रेमवस बोलहिं ॥
 रामसखा तेहि समय देखावा ❀ मैलमिरोमनि सहज सुहावा ॥
 जासु ममीप सरित-पय-तीरा ❀ सीयसमेत बसहिं दोउ बीरा ॥
 देखि करहिं मव दंडप्रनामा ❀ कहि जय जानकिजीवन रामा ॥
 प्रेममगन अस रामममाजू ❀ जनु फिरि अवध चले रघुराजू ॥
 दोहा--भरत प्रेम तेहि समय जस, तस कहि सकइ न सेषु ।

कविहि अगम जिमि ब्रह्मसुख, अह-मम-मलिन-जनेषु ॥२२५॥

सकल सनेह सिथिल रघुवर के ❀ गये कोस दुइ दिनकर ढरके ॥
 जलु थलु देखि वसे निमि बीते ❀ कीन्ह गवनु रघु-नाथ-पिरीते ॥
 उहाँ रामु रजनी अवसेखा ❀ जागें सीय सपन अस देखा ॥
 सहित समाज भरत जनु आये ❀ नाथवियोग ताप तन ताये ॥
 सकल मलिनमन दीन दुखारीं ❀ देखी सासु आन अनुहारीं ॥
 सुनि सियसपन भरे जल लोचन ❀ भये सोचवस सोचविमोचन ॥
 लपन सपन यह नीक न होई ❀ कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ॥
 अस कहि बंधुसमेत नहाने ❀ पूजि पुरारि साधु सनमाने ॥
 छन्द--सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भये ।
 नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आसम गये ॥
 तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे ।
 सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे ॥

सोरठा--सुनत सुमंगल वैन, मन प्रमोद तन पुलक भर ।

सरदसरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥२२६॥

बहुरि सोच वस भे सियरवनू ❀ कारन कवन भरतआगमनू ॥
 एक आइ अस कहा बहोरी ❀ सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
 सो सुनि रामहिं भा अति सोचू ❀ इत पितुवच उत बंधुमँकोचू ॥
 भरतसुभाउ समुझि मन माहीं ❀ प्रभुचित हित थिति पावत नाहीं ॥
 समाधान तब भा यह जानें ❀ भरत कहे महुँ साधु सयानें ॥
 लपन लखेउ प्रभु-हृदय-खभारू ❀ कहत समयसम नीतिविचारू ॥
 विनु पूछें कहुँ कहुँ गोसाईं ❀ सेवकु समय न ढीठु ढिठाईं ॥

तुम्ह सर्वग्य सिरोमनि स्वामी * आपनि समुञ्जि कहउँ अनुगामी ॥

दोहा--नाथ सुहृद सुठि सरलचित, सील-सनेह-निधान ।

सब पर प्रीति प्रतीति जिय, जानिय आपु समान ॥२२७॥

विषयी जीव पाइ प्रभुताई * मूढ़ मोहवम होहिं जनाई ॥

भरतु नीतिरत साधु सुजाना * प्रभु-पद-प्रेम सकलजग जाना ॥

तेऊ आजु राजपदु पाई * चले धरममरजाद मेटाई ॥

कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी * जानि राम वनवास एकाकी ॥

करि कुमंत्र मन साजि समाजू * आये करइ अकंटक राजू ॥

कोटिप्रकार कलपि कुटिलाई * आये दल बटोरि दोउ भाई ॥

जौं जिय होति न कपट कुवाली * केहि सोहाति रथ-वाजि-गजाली ॥

भरतहि दोष देइ को जायें * जग बौराइ राजपदु पायें ॥

दोहा--ससि गुरु-तिय-गामी नहुप, चढ़ेउ भूमि-सुर-जान ।

लोकवेद तें विमुख भा, अधम न बेनसमान ॥२२८॥

सहसवाहु सुरनाथ त्रिसंकू * केहि न राजपद दीन्ह कलंकू ॥

भरत कान्ह यह उचित उपाऊ * रिपु रिन रंच न राखव काऊ ॥

एक कीन्हि नहिं भरत भलाई * निदरे राम जानि असहाई ॥

समुञ्जि परिहि सोउ आजु त्रिसेखी * समर सरोप राममुखु पेखी ॥

एतना कहत नीतिरस भूला * रन-रस-विटप पुच्छक मिस फूला ॥

प्रभुपद बंदि सीसरज राखी * बोले सत्य सहज बलु भाखी ॥

अनुचित नाथ न मानव मोरा * भरत हमहिं उपचार न थोरा ॥

कहँ लगि सहिय रहिय मन मारें * नाथसाथ धनु हाथ हमारें ॥

दोहा--छत्रिजाति रघुकुल जनमु, रामअनुज जगु जान ।

लातहुँ मारे चढ़ति सिर, नीच को धूरिसमान ॥२२९॥

उठि कर जोरि रजायसु माँगा * मनहुँ वीररस सोवत जागा ॥

बाँधि जटा सिर कसि कटि माथा * साजि मरामन सायकु हाथा ॥

आजु रामसेवक जसु लेऊँ * भरतहिं समर सिखावन देऊँ ॥

रामनिरादर कर फल पाई * सोवहु समरसेज दोउ भाई ॥

आइ बना भल सकलसमाजू * प्रगट करउँ रिस पाखिल आजू ॥

जिमि करिनिकर दलइ मृगराजू * लेइ लपंदि लवा जिमि बाजू ॥
 तैमंहि भरतहि सेनसमेता * सानुज निदरि निपातउं खेता ॥
 जौं महाय कर संकरु आई * तौ मारउं रन रामदोहाई ॥
 दोहा-अतिसरोप मापे लपन, लखि सुनि सपथप्रवान ।

सभय लोक सब लोकपति, चाहत भभरि भगान ॥२३०॥

जग भयमगन गगन भइ वानी * लपन-वाहु-बल विपुल बखानी ॥
 तात प्रतापप्रभाउ तुम्हारा * को कहि मकइ को जाननिहारा ॥
 अनुचित उचित काज कलु होऊ * समुझि करिय भल कह सब कोऊ ॥
 सहसा करि पाळे पछिताहीं * कहहिं बंद बुध ते बुध नाहीं ॥
 सुनि सुरवचन लपन सकुचाने * राम सीय सादर सनमाने ॥
 कही तात तुम्ह नीति मुहाई * सब तें कठिन राजमद भाई ॥
 जो अँचवत मातहिं नृप तेई * नाहिं न साधु सभा जेहि सेई ॥
 सुनहु लपन भल भरतसरीसा * विधिप्रपंच महँ सुना न दीसा ॥
 दोहा-भरतहि होइ न राजमद, विधि-हरि-हर-पद पाइ ।

कवहुँ कि काँजोसीकरनि, छीरसिंधु विनसाइ ॥२३१॥

तिमिरुतरुन तरनिहि मकु गिलई * गगनु मगन मकु मेघहि मिलई ॥
 गोपद जल बूढ़हि घटजोनी * सहज छमा वरु झाड़इ छोनी ॥
 मसकफूँक मकु मेरु उड़ाई * होइ न नृपमद भरतहि भाई ॥
 लपन तुम्हार मपथ पितुआना * सुचि सुबंधु नहिं भरतसमाना ॥
 सगुनु खीरु अवगुनजल ताता * मिलइ रचइ परपंचु विधाता ॥
 भरत हंस रवि-बंस-तड़ागा * जनमि कीन्ह गुन-दोष-विभागा ॥
 गहि गुन पय तजि अवगुन बारी * निजजस जगत कीन्हि उँजियारी ॥
 कहत भरत - गुन - सील-सुभाऊ * पेमपयोधि मगन रघुराऊ ॥
 दोहा-सुनि रघुवरवानी विबुध, देखि भरत पर हेतु ।

सकल सराहत राम सौं, प्रभु को कृपानिकेतु ॥२३२॥

जौं न होत जग जनम भरत को * सकल-धरम-धुर धरनि धरत को ॥
 कबि-कुल-अगम भरत-गुन-गाथा * को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा ॥
 लपन राम सिय सुनि सुरवानी * अतिसुख लहेउ न जाइ बखानी ॥

इहाँ भरतु सब सहित सहाये * मंदाकिनी पुनीत नहाये ॥
 सरितसमीप राखि सब लोगा * माँगि मातु-गुरु-सचिव-नियोगा ॥
 चले भरत जहँ सियरघुराई * साथ निषादनाथ लघुभाई ॥
 समुक्ति मातुकरतव सकुचाहीं * करत कुतरक कोटि मन माहीं ॥
 राम-लषन-मिय सुनि मम नाऊँ * उठिजनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ ॥
 दोहा-मातु मतेँ महँ मानि मोहि, जो किछु कहहिं सो थोर ।

अघअवगुन छमि आदरहिं, समुक्ति आपनी ओर ॥२३३॥

जौ परिहरहिं मलिन मन जानी * जौ मनमानहिं मेवक मानी ॥
 मोरे सरन राम की पनहीं * राम सुस्वामि दोष सब जनहीं ॥
 जग जस भाजन चातक मीना * नेम पेम निज निपुन नवीना ॥
 अस मन गुनत चले मग जाता * सकुच सनेह मिथिल सब गाता ॥
 फेरति मनहिं मातुकृत खोरी * चलत भगनिबल धीरजधोरी ॥
 जव समुक्त रघुनाथसुभाऊ * तव पथ परत उताइल पाऊ ॥
 भरतदसा तेहि अवसर कैसी * जलप्रवाह जल-अलि-गति जैसी ॥
 देखि भरत कर सोचु सनेह * भा निषाद तेहि समय विदेह ॥
 दोहा-लगे होन मंगल सगुन, सुनि गुनि कहत निषादु ।

मिटिहि सोच होइहि हरपु, पुनि परिनाम विषादु ॥२३४॥

सेवक बचन सत्य सब जानें * आस्रमनिकट जाइ नियरानें ॥
 भरत दीख वन-सैल-समाजू * मुदित लुधित जनु पाइ सुनाजू ॥
 ईति भीति जनु प्रजा दुखारी * त्रिविध ताप पीडित ग्रहभारी ॥
 जाइ सुराज मुदेस सुखारी * होहि भगतगति तेहि अनुहारी ॥
 रामवास वनमंपति भ्राजा * सुखी प्रजा जनु पाइ सुगजा ॥
 सजिव विरागु विवेकु नरेसू * विपिन सुहावन पावन देसू ॥
 भट जमनियम सैल रजधानी * सांति सुमति सुचि सुंदर रानी ॥
 सकल अंग मंपन्न सुराऊ * रामचरनआसित चित चाऊ ॥
 दोहा-जीति मोह-महि-पाल-दल, सहित विवेक भुआलु ।

करत अकंटक राजु पुर, सुख संपदा सुकालु ॥२३५॥

वनप्रदेस मुनिवास घनरे * जनु पुर नगर गाउँगन खरे ॥

विपुल विचित्र विहंग मृग नाना * प्रजाममाज न जाइ बखाना ॥
 खगदा करि हरि वाघ बराहा * देखि महिष बृष साजु सराहा ॥
 बयरु विहाय चरहिं एक मंगा * जहँ तहँ मनहुँ मेन चतुरंगा ॥
 झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं * मनहुँ निमान विविधविधि वाजहिं ॥
 चक्र चकोर चातक मुक पिक गन * कूजत मंजु मराल मुदितमन ॥
 अलिगन गावत नाचत मोरा * जनु सुराज मंगल चहुँ ओरा ॥
 वलि विटप तून सफल सफूला * मव समाजु मुद-मंगल-मूला ॥
 दोहा-रामसैल सोभा निरखि, भरतहृदय अतिपेमु ।

तापस तपफल पाइ जिमि, सुखी सिरानें नेमु ॥२३६॥

तव केवट ऊँचें चढि धाई * कहेउ भरत मन भुजा उठाई ॥
 नाथ देखियहि विटपविमाला * पाकरि जंबु रमाल तमाला ॥
 जिन्ह तरुवरन्ह मध्य बटु मोहा * मंजु विमाल देखि मन मोहा ॥
 नील मधन पल्लव फल लाला * अचल छाँह सुखद सब काला ॥
 मानहुँ तिमिर-अरुन-प्रय रासी * त्रिची विधि सकेलि सुखमामी ॥
 ए तरु सरितसमीप गोसाईं * रघुवर परनकुटी जहँ छाई ॥
 तुळसी तरुवर विविध सुहाये * कहुँ कहुँ मिय कहुँ लपन लगाये ॥
 बटछाया बेंदिका वनाई * मिय निज-पानि-सरोज सुहाई ॥
 दोहा-जहाँ बैठि मुनि-गन-सहित, नित सिय रामु सुजान ।

सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ॥२३७॥

सखात्रचन सुनि विटप निहारी * उमगे भरत विलोचन वारी ॥
 करत प्रनाम चले दोउ भाई * कहतु प्रीति मारद सकुचाई ॥
 हरपहिं निरखि राम-पद-अंका * मानहुँ पारसु पायेउ रंका ॥
 रजसिर धरि हिय नयनन्हि लावहिं * रघुवर-मिलन-सरिस सुखपावहिं ॥
 देखि भरतगति अकथ अतीवा * प्रेम मगन मृग खग जड़जीवा ॥
 सखहिं सनेहविवस मग भूला * कहि सुपंथ सुर बरपहिं फूला ॥
 निरखि सिद्धसाधक अनुरागे * सहजसनेह सराहन लागे ॥
 होत न भूतल भाउ भरत को * अचर सचर चर अचर करत को ॥
 दोहा-प्रेम अमिय मंदरु विरह, भरत पयोधिगँभीर ।

मथि प्रगटे सुर-साधु-हित, कृपासिंधु रघुबीर ॥२३८॥

सखासमेत मनोहर जोटा * लखेउ न लपन सघन वन ओटा ॥
 भरत दीख प्रभुआसमु पावन * सकल-सुमंगल-सदन सुहावन ॥
 करत प्रवेस मिटे दुखदावा * जनु जोगी परमारथ पावा ॥
 देखे भरत लपन प्रभु आगे * पूछे वचन कहत अनुरागे ॥
 सीस जटा कटि मुनिपट बाँधे * तून कसे कर सर धनु काँधे ॥
 बेदी पर मुनि-साधु-समाजू * सीयसहित राजत रघुराजू ॥
 बलकल वसन जटिल तनु स्यामा * जनु मुनिवेष कीन्ह रतिकामा ॥
 करकमलनि धनुसायक फेरत * जियकी जरनि हरत हँसि हेरत ॥

दोहा-लसत मंजु मुनि-मण्डली, मध्य सीय रघुचंद्र ।

ग्यानसभा जनु तनु धरे, भगति सच्चिदानंद ॥२३९॥

सानुज सखा समेत मगन मन * विमरे हरष-सोक-सुख-दुख-गन ॥
 पाहि नाथ कहि पाहि गोमाई * भूतल पर लकुट की नाई ॥
 वचन सपेम लपन पहिचाने * करत प्रनामु भरत जिय जाने ॥
 बंधुसनेह सरस एहि ओरा * इत साहिवसेवा वरजोरा ॥
 मिलि न जाइ नहि गुदरत वनई * सुकवि लपनमन की गति भनई ॥
 रहे राखि सेवा पर भारू * चढ़ी चंग जनु खैच खेलारू ॥
 कहत सप्रेम नाइ महि माथा * भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥
 उठे रामु मुनि प्रेम अधीरा * कहुँ पट कहुँ निपंग धनु तोरा ॥
 दोहा-बरबस लिये उठाइ उर, लाये कृपानिधान ।

भरत राम की मिलनि लखि, विसरे सबहिं अपान ॥२४०॥

मिलनिप्रीति किमि जाइ वग्वानी * कवि-कुल-अगम करम मन वानी ॥
 परम - पेम - पूरन दोउ भाई * मन बुधि चित अहमिति विमराई ॥
 कहहु सुपेमु प्रगट को करई * केहि छाया कवि मति अनुमरई ॥
 कविहिं अरथ आखर बल साँचा * अनुहरि ताल गतिहि नट नाचा ॥
 अगमसनेह भरतरघुवर को * जहँ न जाइ मनु विधि-हरि-हर को ॥
 सो मैं कुमति कहउँ केहि भाँती * बाजु सुराग कि गाँडरताँती ॥
 मिलनि विलोकि भरतरघुवर की * सुरगन समय धकधकी धरकी ॥

समुझाये सुरगुरु जड़ जागे * बरषि प्रसन प्रसंमन लागे ॥
दोहा-मिलि सपेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटेउ राम ।

भूरि भाय भेंटे भरत, लछिमन करत प्रनाम ॥२४१॥

भेंटेउ लपन ललकि लघुभाई * बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई ॥
पुनि मुनिगन दुहुं भाइन्ह बंदे * अभिमत आसिष पाइ अनंदे ॥
सानुज भरत उमगि अनुरागा * धरि सिर सिय-पद-पदुम-परागा ॥
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाये * सिर करकमल परसि बैठाये ॥
सीय असीस दीन्हि मन माहीं * मगन सनेह देहसुधि नाहीं ॥
सवविधि सानुकूल लखि सीता * भे निसोच उर अपडर बीता ॥
कोउ किछु कहइ न कोउ किछु पूछा * प्रेम भरा मन निजगति छूछा ॥
तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि * जोरि पानि विनवत प्रनामु करि ॥

दोहा--नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग ।

सेवक सेनप सचिव सब, आये विकल वियोग ॥२४२॥

सीलसिंधु सुनि गुरुआगवनू * सियसमीप राखे रिपुदवनू ॥
चले संवंग राम तेहि काला * धीर-धरम-धुर दीनदयाला ॥
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे * दंडप्रनाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिबर धाइ लिये उर लाई * प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवठ कहि नामू * कीन्ह दूरि तें दंडप्रनामू ॥
रामसखा रिषि बरबस भेंटा * जनु महि लुठत सनेहु समेटा ॥
रघुपति भगति सुमंगल मूला * नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला ॥
एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं * बड़ वसिष्ठसम को जग माहीं ॥
दोहा-जेहि लखि लपनहुं तें अधिक, मिले मुदित मुनिराउ ।

सो सीता-पति-भजन को, प्रगट प्रतापप्रभाउ ॥२४३॥

आरत लोग राम सबु जाना * करुनाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भाय रहा अभिलाखी * तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी ॥
सानुज मिलि पलमहुं सब काहू * कीन्ह दूरि दुख-दारुन-दाहू ॥
यह बड़ि बात राम कै नाहीं * जिमि घट कोटि एक रवि छाहीं ॥
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा * पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥

देखी राम दुखित महतारीं * जनु सुबेलिअवली हिम मारीं ॥
 प्रथम राम भेंटी कैकई * मरल सुभाय भगति मति भेई ॥
 पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी * काल करम विधि मिर धरि खोरी ॥
 दोहा--भेंटी रघुवर मातु सब, करि प्रबोध परितोषु ।

अंब ईसआधीन जगु, काहु न देइय दोषु ॥२४४॥

गुरु-तिय-पद बंदे दुहुँ भाई * सहित विप्रतिय जे सँग आई ॥
 गंग-गौरि-सम सब सनमानी * देहिं असीस मुदित मृदुबानी ॥
 गहि पद लगे सुमित्राअंका * जनु भेंटी संपति अति रंका ॥
 पुनि जननीचरननि दोउ भ्राता * परे पेम व्याकुल सब गाता ॥
 अतिअनुराग अंब उर लाये * नयन मनेह सलिल अन्हवाये ॥
 तेहि अवसर कर हरष विपाद * किमि कवि कहइ मूक जिमि स्वाद ॥
 मिलि जननिहि सानुज रघुराऊ * गुरुमन कहेउ कि धारिय पाऊ ॥
 पुरजन पाइ मुनीसनियोगू * जल थल तकि तकि उतरे लोगू ॥

दोहा--महिसुर मंत्री मातु गुरु, गनें लोग लिये साथ ।

पावन आस्रम गवनु किय, भरत लपन रघुनाथ ॥२४५॥

सीय आइ मुनि-वर-पग लागी * उचित असीस लही मनमाँगी ॥
 गुरुपतिनिहि मुनि तियन्ह समेता * मिली पंमु कहि जाइ न जेता ॥
 बंदि बंदि पग मिय सवही के * आमिरवचन लहे प्रिय जी के ॥
 सासु सकल जव मीयु निहारी * मूँदे नैन सहामि सुकुमारी ॥
 परी बधिकबम मनहुँ मराली * काह कीन्ह करतार कुचाली ॥
 तिन्ह सिय निरखि निपट दुख पावा * सो सब महिय जो देव महावा ॥
 जनकसुता तब उर धरि धीरा * नील-नलिन-लोयन भरि नीग ॥
 मिली सकल सासुन्ह सिय जाई * तेहि अवसर करुना महि छाई ॥

दोहा--लागि लागि पग सवनि सिय, भेंटति अतिअनुराग ।

हृदय असीसहि प्रेमबस, रहिहहु भरी सोहाग ॥२४६॥

विकल सनेह सीय सब रानी * बैठन मबहिं कहेउ गुरु ज्ञानी ॥
 कहि जगगति मायिक मुनिनाथा * कहे कहुक परमारथगाथा ॥
 नृप कर सुर-पुर-गवनु सुनावा * सुनि रघुनाथ दुमह दुख पावा ॥

मरनहेतु निजनेहु विचारी * भे अति विकल धीर-धुर-धारी ॥
 कुलिभकठोर सुनत कटु वानी * विलपत लपन सीय सब रानी ॥
 सोक विकल अति सकल समाजू * मानहुँ राजु अकाजेउ आजू ॥
 मुनिवर बहुरि रामु समुझाये * सहितु समाज सुरसरित न्हाये ॥
 वतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा * मुनिहुँ कहे जल काहु न लीन्हा ॥
 दोहा--भोर भयें रघुनंदनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह ।

स्रद्धा-भगति-समेत प्रभु, सो सबु सादर कीन्ह ॥२४७॥

करि पितुक्रिया वेद जमि वरनी * भे पुनीत पातक-तम-तरनी ॥
 जासु नाम पावक अवतूला * मुमिरत सकल-सु-मंगल-मूला ॥
 सुद्ध सो भयेउ माधु संमत अत्र * तीरथआवाहन सुरसरि जस ॥
 सुद्ध भये दुइ वामर वाते * वोले गुरु सन राम पिरीते ॥
 नाथ लाग सब नियट दुखारी * कंद-मूल-फल-अंबु-अहारी ॥
 सानुज भरतु सचिव सब माता * देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥
 सबममेत पुर धारिय पाऊ * आयु इहाँ अमरावति राऊ ॥
 बहुत कहेंउ सब कियेउं ढिठाई * उचित होय तस करिय गोसाईं ॥
 दोहा--धरमसेतु करुनायतन, कस न कहहु अस राम ।

लोग दुखित दिन दुइ दरस, देखि लहहु बिस्राम ॥२४८॥

रामवचन सुनि समय समाजू * जनु जलनिधि महँ विकल जहाजू ॥
 सुनि गुरुगिरा सु-मंगल-मूला * भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
 पावन पय तिहुँ काल नहाहीं * जो विलोकि अवओध नसाहीं ॥
 मंगलभूरति लोचन भरि भरि * निरखहिं हरषि दंडवत करि करि ॥
 राम-सैल-वन देखन जाहीं * जहँ सुख सकल सकल दुख नाही ॥
 झरना झरहिं सुधासम बारी * त्रि-विध-ताप-हर त्रिविध बयारी ॥
 विटप बेलि तृन अगनित जाती * फल प्रसून पल्लव बहु भाँती ॥
 सुंदर सिला सुखद तरु छाहीं * जाइ वरनि वन छवि केहि पाहीं ॥
 दोहा--सरनि सरोरुह जल बिहंग, कूजत गुंजत भुंग ।

वैरविगत विहरत विपिन, मृग बिहंग बहुरंग ॥२४९॥

कोल किरात भिल्ल बनवासी * मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी ॥

भरि भरि परनपुटी रचि रूरीं ❀ कंद मूल फल अंकुर जूरीं ॥
 सबहिं देहिं करि विनय प्रनामा ❀ कहि कहि स्वादुभेद गुन नामा ॥
 देहिं लोग बहु मोल न लेहीं ❀ फेरत राम दोहाई देहीं ॥
 कहहिं सनेहमगन मृदुबानी ❀ मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥
 तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा ❀ पावा दरसन रामप्रसादा ॥
 हमहिं अगम अति दरस तुम्हारा ❀ जम मरुधरनि देव-धुनि-धारा ॥
 रामकृपाल निषाद नेवाजा ❀ परिजन प्रजउ चहिय जम राजा ॥
 दोहा—यह जिय जानि सँकोचु तजि, करिय छोडु लखि नेहु ।

हमहिं कृतारथ करन लागि, फल तृन अंकुर लेहु ॥२५०॥

तुम्ह प्रिय पाहुन वन पगु धारे ❀ सेवाजोग न भाग हमारे ॥
 देव काह हम तुम्हहिं गोसाईं ❀ ईधनु पात किरात मिताई ॥
 यह हमारि अति बड़ि सेवकाई ❀ लेहिं न वामनवसन चोराई ॥
 हम जड़ जीव जीव-गन-घाती ❀ कुटिल कुचाली कुमानि कुजाती ॥
 पाप करत निसि बासरजाहीं ❀ नहिं पेट कटि नहिं पेट अघाहीं ॥
 सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ ❀ यह रघु-नंदन-दग्ग प्रभाऊ ॥
 जब तैं प्रभु-पद-पदुम निहारे ❀ मिटै दुमह-दुग्ध-दोष हगारे ॥
 बचन सुनत पुरजन अनुरागे ❀ तिन्ह के भाग मगहन लागे ॥

छंद—लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं ।

बोलनि मिलनि सिय-राम-चरन-मनहु लखि सुख पावहीं ॥

नरनारि निदरहिं नेहु निज मुनि कोल भिल्लनि की गिरा ।

तुलसी कृपा रघु-वंस-मनि की लोह लै नौका तिरा ॥

सोरठा--विहरहिं वन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।

जल ज्यों दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥२५१॥

पुरजन नारि मगन अति प्रीती ❀ वामर जाहिं पलकमम वीती ॥
 सीय सासु प्रति वंष वनाई ❀ मादर करइ मरिम सेवकाई ॥
 लखा न मरमु राम त्रिनु काहू ❀ माया सब सियमाया माहू ॥
 सीय सासु सेवा वस कीन्ही ❀ तिन्हलहि सुखमिखआमिपर्दीन्ही ॥
 लखि सियसहित सरल दोउ भाई ❀ कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥

अवनि जमहिं जाँचति कैकेई * महि न बीचु विधि मीचु न देई ॥
 लोकहु वंद विदित कवि कहहीं * राम विमुख थलु नरक न लहहीं ॥
 यह मंगउ सब के मन माहीं * रामगवँनु विधि अवध कि नाही ॥
 दोहा—निसि न नींद नहिं भूख दिन, भरतु विकल सुचि सोच ।

नीज कीच विच मगन जस, मीनहिं सलिल सँकोच ॥२५२॥

कीन्हि मातुमिस काल कुचाली * ईति भीति जम पाकत साली ॥
 केहि विधि होइ रामअभिषेक * मोहि अवकलत उपाउ न एकू ॥
 अवमि फिरहिं गुरु आयमु मानी * मुनि पुनि कहव रामरुचि जानी ॥
 मातु कहेहु बहुरहिं रघुराऊ * रामजननि हठ करवि कि काऊ ॥
 मोहि अनुचर कर केतिक वाता * तेहि महँ कुममउ वाम विधाता ॥
 जौ हठ करउ त निपट कुकरमू * हरगिरि तें गुरु मेवकधरमू ॥
 एकउ जुगुति न मन ठहरानी * मोचत भरतहिं रैन विहानी ॥
 प्रात नहाइ प्रभुहिं मिर नाई * बैठत पठये रिपय बोलाई ॥

दोहा--गुरु-पद-कमल प्रनामू करि, बैठे आयसु पाइ ।

विप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ ॥२५३॥

बोले मुनिवरु गमयसमाना * सुनहु सभासद भरत गुजाना ॥
 धरमधुरीन भानु-कुल-भानू * राजा राम स्वस भगवानू ॥
 सत्यमंध पालक सुतिमेतू * रामजनमु जग मंगलहेतू ॥
 गुरु-पितु-मातु-बचन-अनुसारी * बल-दल-दलन देव-हित-कारी ॥
 नीति प्रीति परमारथ स्वारथु * कोउ न रामसम जान जथारथु ॥
 विधि हरिहर ससि रविदिमि पाला * माया जीव करम कुलि काला ॥
 अहिप महिप जहँ लगि प्रभुताई * जोग मिद्धि निगमागम गाई ॥
 करि विचार जिय देखहु नीकें * रामरजाइ सीस सवही कें ॥

दोहा—राखें राम रजाइ रख, हम सब कर हित होइ ।

समुझि सयाने करहु अब, सब मिलि संमत सोइ ॥२५४॥

सब कहँ सुखद रामअभिषेकू * मंगल-मोद-मूल मग एकू ॥
 केहि विधि अवध चलहिं रघुराऊ * कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ ॥
 सब सादर सुनि मुनि-वर-बानी * नय - परमारथ - स्वारथ-सानी ॥

उतर न आव लोग भये भोरे * तव मिरुनाइ भरत कर जोरे ॥
 भानुवंस भये भूप घनेरे * अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥
 जनम हेतु सब कहँ पितु माता * करम सुभासुभ देइ विधाता ॥
 दलि दुख सहज सकल कल्याना * अस अमीस राउरि जगु जाना ॥
 सोइ गोसाइँ विधि गति जेहि छेंकी * सकइ को टारि टंक जो टंकी ॥
 दोहा—बृभिय मोहि उपाउ अब, सो सब मोर अभाग ।

सुनि सनेह-मय-वचन गुरु, उर उमगा अनुराग ॥२५५॥

तात बात फुरि राम कृपाहीं * रामविमुख मिधि सपनेहुँ नाहीं ॥
 सकुचउँ तात कहत एक वाता * अरध तजहिं बुध सरवस जाता ॥
 तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई * फेरियहि लपन मीय रघुराई ॥
 सुनि सुवचन हरपे दोउ भ्राता * भे प्रमोद-परिपूरन गाता ॥
 मन प्रसन्न तन तेजु विराजा * जनु जिय राउ रामु भये राजा ॥
 बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी * सम दुखमुख सब रोवहिं रानी ॥
 कहहिं भरतु मुनि कहा सो कीन्हे * फलु जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे ॥
 कानन करउँ जनम भरि वासू * एहि तें अधिक न मोर सुपामू ॥
 दोहा--अंतरजामी रामुसिय, तुम्ह सरवग्य सुजान ।

जौं पुर कहहु त नाथ निज, कीजिय बजनु प्रवान ॥२५६॥

भरतवचन सुनि देखि सनेहू * मभासहित मुनि भये विदेहू ॥
 भरत-महा - महिमा जलरासी * मुनिमति ठाढ़ि तीर अबला सी ॥
 गा चह पार जतनु हियँ हेरा * पावति नाव न वोहितु वंरा ॥
 औरु करिहि को भरत बड़ाई * मरसी मीपि कि मिंधु ममाई ॥
 भरत मुनिहिं मनभीतर भाये * महितममाज राम पहिं आये ॥
 प्रभु प्रनामु करि दीन्ह सुआमनु * बैठे सब मुनि मुनिअनुमामनु ॥
 बोले मुनिवर वचन विचारी * देस काल अवसर अनुहारी ॥
 सुनहु राम सरवग्य सुजाना * धरम - नीति-गुन-ग्यान-निधाना ॥
 दोहा--सब के उर अंतर बसहु, जानहु भाउ कुभाउ ।

पुरजन-जननी-भरत-हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥२५७॥

आरत कहहिं विचारि न काऊ * मूक जुआरिहि आपुन दाऊ ॥

सुनि मुनिवचन कहत रघुराऊ * नाथ तुम्हारेंहि हाथ उपाऊ ॥
 सब कर हित रख राउरि राखें * आयसु किये मुदित पुर भाखें ॥
 प्रथम जो आयसु मो कहँ होई * माथे मानि करउँ मिख सोई ॥
 पुनि जेहि कहँ जस कहव गोमाई * सो सब भाँति घटिहि सेवकाई ॥
 कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाखा * भरत-सनेह-विचारु न राखा ॥
 तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी * भरत-भगति-वस भइ मति मोरी ॥
 मोरें जान भरत रुचि राखी * जो कीजिअ सो सुभ सिव साखी ॥

दोहा--भरतविनय सादर सुनिय, करिय विचार बहोरि ।

करव साधुमत लोकमत, नृपनय निगम निचोरि ॥२५८॥

गुरुअनुरागु भरत पर देखी * राम हृदय आनंद विसेखी ॥
 भरतहि धरमु-धुरं-धर जानी * निज सेवक तन-मानम-वानी ॥
 बोले गुरु - आयसु - अनुकूला * वचन मंजु सृष्टु मंगलमूला ॥
 नाथ सपथ पितु चरन दोहाई * भयउ न भुवन भरतमम भाई ॥
 जे गुरु-पद - अंबुज-अनुगामी * ते लोकहुँ वेदहुँ वड़भागी ॥
 राउर जा पर अस अनुरागू * को कहि सकइ भरत कर भागू ॥
 लखि लघुबंधु बुद्धि सकुचाई * करत बदन पर भरतवडाई ॥
 भरतु कहहिं सोइ कियें भलाई * अस कहि राम रहे अरगाई ॥

दोहा-तवमुनि बोले भरत सन, सब सँकोचु तजि तात ।

कृपासिंधु प्रियबंधु सन, कहहु हृदय कै वात ॥२५९॥

सुनि मुनिवचन रामरुख पाई * गुरु साहित्व अनुकूल अघाई ॥
 लखि अपने सिर सबु अरुभारू * कहिन सकहिं कलु करहिं विचारू ॥
 पुलकि मरीर सभा भये ठाढ़े * नीरजनयन नेहजल वाढ़े ॥
 कहव मोर मुनिनाथ निवाहा * एहि तें अधिक कहाँ मैं काहा ॥
 मैं जानउँ निजनाथ सुभाऊ * अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥
 मो पर कृपा सनेह विसेखी * खेलत खुनिस न कवहुँ देखी ॥
 सिसुपन तें परिहरेउँ न संग * कवहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
 मैं प्रभु कृपारीति जिय जोही * हारेहु खेल जितावहिं मोही ॥

दोहा--महूँ सनेह-सकोच-बस, सनमुख कहा न बैन ।

दरसन तृपित न आजु लगि, प्रेम पियासे नैन ॥२६०॥

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा * नीच वीचु जननी मिम पारा ॥
 यहउ कहत मोहिं आजु न सोभा * अपनी ममुझि माधु मुचि को भा ॥
 मातु मंद मैं साधु सुचाली * उर अस आनत कोटि कुचाली ॥
 फरइ कि कोदव वालि सुमाली * मुकता प्रभव कि मंबुक ताली ॥
 सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू * मोर अभाग उदधिअवगाहू ॥
 विनु समुभें निज-अध-परिपाकू * जारिउँ जाय जननि कहि काकू ॥
 हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा * एकहि भाँति भलेहि भल मोरा ॥
 गुरु गोसाइँ साहिव सियरामू * लागत मोहि नीक परिनामू ॥
 दोहा--साधु-सभा-गुरु-प्रभु-निकट, कहउँ सुथल सतिभाउ ।

प्रेम प्रपंच कि भूठ फुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥२६१॥

भूपतिमरन प्रेम पनु राखी * जननी कुमति जगतु सबु माखी ॥
 देखि न जाहिं विकल महतारी * जरहिं दुसह जर पुर-नर-नारी ॥
 महीं सकल अनरथ कर मूला * मो सुनि ममुझि महेउँ सब मूला ॥
 सुनि वनगवनु कीन्ह रघुनाथा * करि मुनिवेष लपन-सिय-माथा ॥
 विन पानहिन्ह पयादेहि पायें * मंकरु साखि रहेउँ एहि धायें ॥
 बहुरि निहारि निषादसनेहू * कुलिस कठिन उर भयउ न बहू ॥
 अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई * जियत जीव जड़ सबइ महाई ॥
 जिन्हहिं निरखिमग सांपिनि वीळीं * तजहिं विषमविष तामम तीळीं ॥
 दोहा--तेइ रघुनंदनु लपनु सिय, अनहित लागे जाहि ।

तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावड काहि ॥२६२॥

सुनि अति विकल भरत-वर-वानी * आरति-प्रीति-विनय-नय-मानी ॥
 सोकमगन सब सभा खभारू * मनहुँ कमलवन परेउ तुषारू ॥
 कहि अनेकविधि कथा पुरानी * भरतप्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी ॥
 बोले उचित बचन रघुनंद * दिन-कर-कुल-कैरव-वन-चंद ॥
 तात जाय जिन करहु गलानी * ईसअधीन जीवगति जानी ॥
 तीनि काल तिभुवन मत मोरें * पुन्यमिलोक तात तर तोरें ॥
 उर आनत तुम्ह पर कुटिलाई * जाइ लोक-परलोक नसाई ॥

दोषु देहिं जननिहि जड तेई * जिन्ह गुरु-साधु-सभा नहिं सेई ॥

दोहा-मिटिहहिं पाप प्रपंच सब, अखिल अमंगल भार ।

लोक सुजसु परलोक सुखु, सुमिरतु नामु तुम्हार ॥२६३॥

कहहु सुभाउ मत्य सिव माग्गी * भरत भूमि रह राउरि राखी ॥

तात कुतरक करहु जनि जायें * वैर पैमु नहिं दुरइ दुरायें ॥

मुनि गुनि निकट विहँग मृग जाहीं * बाधक वधिक विलोकि पराहीं ॥

हित अनहित पमु पच्छिउ जाना * मानुपतनु गुन-ग्यान-निधाना ॥

तात तुम्हहिं में जानउँ नीकें * करउँ काह अममंजस जी के ॥

राखेउ गय मत्य मोहि त्यागी * तनु परिहरेउ पैम पनु लागी ॥

तासु वचन मेदत मन मोचू * तेहि तें अधिक तुम्हार मँकोचू ॥

तापर गुरु मोहि आयसु दीन्हा * अवमि जोकहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥

दोहा-मनु प्रसन्न करि सकुच ताज, कहहु करउँ सोइ आजु ।

सत्य-संध-रघुवर-वचन, सुनि भा सुखी समाजु ॥२६४॥

सुर-गन-सहित समय सुरराजू * सोचहिं चाहत होन अकाजू ॥

वनत उपाउ करत कलु नाहीं * रामसरन सब गे मन माहीं ॥

बहुरि विचारि परसपर कहहीं * रघुपति भगत-भगति-वस अहहीं ॥

सुधि करि अंवरीष दुरवामा * भे सुर सुरपति निपट निरासा ॥

सहे सुरन्ह बहुकाल विषादा * नरहरि किये प्रगट प्रह्लादा ॥

लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा * अब सुरकाज भरत के हाथा ॥

आन उपाउ न देखिय देवा * मानत राम सु-सेवक-सेवा ॥

हिय सपेम सुमिरहु सब भरतहिं * निज-गुन-सील रामवस करतहिं ॥

दोहा-सुनि सुरमत सुरगुरु कहेउ, भल तुम्हार बड़भाग ।

सकल सु-मंगल-मूल जग, भरत-चरन-अनुरागु ॥२६५॥

सीता - पति - सेवक - सेवकाई * काम-धेनु-सय-सरिस सुहाई ॥

भरतभगति तुम्हरें मन आई * तजहु सोचु विधि बात बनाई ॥

देखि देवपति भरतप्रभाऊ * सहज-सुभाय - विवस रघुराऊ ॥

मन थिर करहु देव डर नाहीं * भरतहिं जानि रामपरिछाहीं ॥

सुनि सुरगुरु-सुर-संमत सोचू * अंतरजामी प्रभुहिं मँकोचू ॥

निजमिर भारु भरत जिय जाना * करत कोटिविधि उर अनुमाना ॥
करि विचारु मन दीन्ही ठीका * रामरजायसु आपन नीका ॥
निजपन तजि राखेउ पनु मोरा * ब्योहु सनेहु कीन्ह नहिं थोरा ॥

दोहा—कीन्ह अनुग्रह अमित अति, सब विधि सीतानाथ ।

करि पनामु बोले भरतु, जोरिजलज-जुग-हाथ ॥२६६॥

कहउं कहावेउं का अब स्वामी * कृपा-अंबु-निधि अंतरजामी ॥
गुरु प्रसन्न माहिव अनुकूला * मिटी मलिन मनकलपित मूला ॥
अपडर डरेउं न सोच समूलें * रविहि न दोषु देव दिसि भूलें ॥
मोर अभागु मातकुटिलाई * विधिगति विपम कालकठिनाई ॥
पाउं रोपि सब मिलि मोहि घाला * प्रनतपाल पन आपन पाला ॥
यह नइ रीति न राउरि होई * लोकहु बेद विदित नहिं गोई ॥
जग अनमल भल एकु गोमाई * कहिअ होइ भल कामु भलाई ॥
देव देव-तरु-सरिस सुभाऊ * मनमुग्व विमुख न काहुहि काऊ ॥

दोहा—जाइ निकट पहिचानि तरु, छाहँ समनि सब सोच ।

माँगत अभिमत पाव जग, राउ रंक भल पोच ॥२६७॥

लग्गि सब विधि-गुरु-स्वामि-सनेहु * मिटेउ ब्योभु नहिं मन संदेहु ॥
अब करुनाकर कीजिअ मोई * जन हित प्रभुचित ब्योभुन होई ॥
जो सेवकु माहिवहि मँकोची * निजहिन चहइ नासु मति पोची ॥
सेवकहित माहिवमेवकाई * करइ मकल सुग्व लोभ विहाई ॥
स्वारथ नाथ फिरें सबही का * कियें रजाइ कोटि विधि नीका ॥
यह स्वारथ-परप्रारथ-मारु * सकलसुकृत फल सुगति सिंगारु ॥
देव एक विनती सुनि मोरी * उचित होइ तम करव वहोरी ॥
तिलक समाजु साजि सब आना * करिअ सुफल प्रभुजौ मनुमाना ॥

दोहा—सानुज पठइअ मोहिं वन, कीजिअ सबहिं सनाथ ।

नतरु फेरियहि बन्धु दोउ, नाथ चलउं मैं साथ ॥२६८॥

न तरु जाहिं वन तीनिउं भाई * बहुरिय सीयमहित रघुराई ॥
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई * करुनागागर कीजिय मोई ॥
देव दीन्ह सबु मोहि मिरभारु * मोरें नीति न धरम विचारु ॥

कहउँ वचन सब स्वारथहेतु * रहत न आरत के चित चेतू ॥
 उतर देइ सुनि स्वामिरजाई * सो सेवकु लखि लाज लजाई ॥
 अम में अवगुन-उदधि-अगाधू * स्वामि सनेह सराहत साधू ॥
 अब कृपाल मोहिसो मत भावा * सकुच स्वामि मन जाइ न पावा ॥
 प्रभु-पद-सपथ कहउँ सतिभाऊ * जग मंगल-हित एक उपाऊ ॥

दोहा-प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देव ।

सो सिर धरि धरि करिहि सब, मिटिहि अनट अवरेव ॥२६६॥

भरत वचन सुचिमुनि सुर हरषे * साधु मराहि सुमन सुर वरषे ॥
 असमंजसवम अवधनिवामी * प्रमुदित मन तापम-वन-वासी ॥

चुपहि रहे रघुनाथ मँकोची * प्रभुगति देखि मभा मव सोची ॥

जनक दत्त तेहि अवसर आये * मुनि बसिष्ठ सुनि वेंगि बोलाये ॥
 करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे * बेषु देखि भये निपट दुखारे ॥

दूतन्ह मुनिवर बूझी बाता * कहहु विदेह भूम कुसलाता ॥

सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा * बोले चरवर जोरें हाथा ॥

बूझव राउर सादर साई * कुसलहेतु सो भयउ गोसाई ॥

दोहा-नाहिं त कोसलनाथ के, साथ कुसल गइ नाथ ।

मिथिला अवध विसेप तें, जगु सब भयउ अनाथ ॥२७०॥

कोसलपति गति सुनि जनकौरा * भे सब लोक सोकवस वौरा ॥

जेहि देखे तेहि समय विदेह * नाम सत्य अस लाग न केहू ॥

रानि-कु-चालि सुनत नरपालहि * सूझ न कळु जस मनि विनु व्यालहि ॥

भरतराज रघुवर-वन-वासू * भा मिथिलेसहि हृदय हरासू ॥

नृप बूभे बुध-सचिव-समाजू * कहहु विचारि उचित का आजू ॥

समुझि अवध असमंजस दोऊ * चलिय कि रहिय न कह कळु कोऊ ॥

नृपहिं धीर धरि हृदय विचारी * पठये अवध चतुर चर चारी ॥

बूझि भरत सतिभाउ कुभाऊ * आयहु वेंगि न होइ लखाऊ ॥

दोहा-गये अवधचर भरतगति, बूझि देखि करतूति ।

चले चित्रकूटहि भरतु, चार चले तिरहूति ॥२७१॥

दूतन्ह आइ भरत कइ करनी * जनकसमाज जथामति बरनी ॥

सुनि गुरु परिजन सचिवमहोपति * भे सब सोच सनेह विकल अति ॥
 धरि धीरज करि भरत बड़ाई * लिये सुभट साहनी बोलाई ॥
 घर पुर देस राखि रखवारे * हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥
 दुधरी साधि चले ततकाला * किय बिसामु न मग महिपाला ॥
 भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा * चले जमुन उतरन सबु लागा ॥
 खवरि लेन हम पठये नाथा * तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा ॥
 साथ किरात छसातक दीन्हे * मुनिवर तुरत विदा चर कीन्हे ॥

दोहा—सुनत जनक आगवन सब, हरपेउ अवधसमाजु ।

रघुनंदनहिं सकौचु बड़, सोचविवस सुरराजु ॥२७२॥

गरइ गलानि कुटिल कैकई * काहि कहइ केहि दृषन देई ॥
 अस जन अनि मुदित नरनारी * भयेउ बहोरि रहव दिन चारी ॥
 एहि प्रकार गत बामर सोऊ * प्रात नहान लाग सबु कोऊ ॥
 करि मज्जनु पूजहिं नरनारी * गनप गौरि तिपुरारि तमारी ॥
 रमा - रमन - पद बंदि बहोरी * बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी ॥
 राजा रामु जानकी रानी * आनंदअवधि अवधरजधानी ॥
 सुवस वसउ फिरि सहित समाजा * भरतहिं रामु करहु जुवराजा ॥
 एहि सुखसुधा सींचि सब काहू * देव देहु जग-जीवन-लाहू ॥

दोहा—गुरुसमाज भाइन्ह सहित, रामराजु पुर होउ ।

अछत राम राजा अवध, मरिअ माँग सबु कोउ ॥२७३॥

सुनि सनेहमय पुर-जन-बानी * निंदहिं जोग विरति मुनि ग्यानी ॥
 एहि विधि नित्य करम करि पुरजन * रामहिं करहिं प्रनाम पुलकि तन ॥
 ऊँच नीच मध्यम नर नारी * लहहिं दरम निज निज अनुहारी ॥
 सावधान सबही सनमानहिं * सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥
 लरिकाइहि तें रघुवरबानी * पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥
 सील - सकौच - सिंधु रघुराऊ * सुमुख सुलोचन सरलसुभाऊ ॥
 कहत राम-गुन-गन अनुरागे * सब निज भाग सराहन लागे ॥
 हम सम पुन्यपुंज जग थोरे * जिन्हहिं रामु जानत करि मोरे ॥

दोहा—प्रेममगन तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेसु ।

सहित सभा संभ्रम उठेउ, रवि-कुल-कमल-दिनेसु ॥२७४॥

भाइ-मचिव-गुरु-पुरुजन-साथा * आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा ॥
 गिरिवर दीग्व जनकपति जवहीं * करि प्रनामु रथ त्यागेउ तवहीं ॥
 राम-दरसु-लालमा-उझाहू * पथस्रम लेस कलेस न काहू ॥
 मन तहँ जहँ रघुवरवेदेही * विनु मन तन दुख सुख सुधि केही ॥
 आवत जनकु चले एहि भाँती * सहितसमाज प्रेम मति माँती ॥
 आयें निकट देखि अनुरागे * सादर मिलन परसपर लागे ॥
 लगे जनक मुनि-जन-पद वंदन * रिषिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ॥
 भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहिं * चले लेवाइ ममेत समाजहिं ॥

दोहा-आस्रम सागर साँतरस, पूरन पावन पाथ ।

सेन मनहुँ करुनासरित, लिये जाहिं रघुनाथ ॥२७५॥

बोरति ग्यान विराग करारें * बचन समोक मिलत नद नारें ॥
 सोच उसास समीरतरंगा * धीरज तट-तरु-वर कर भंगा ॥
 विषम विषाद तोरावति धारा * भय भ्रम भँवर अवर्त अपारा ॥
 केवट बुध विद्या बड़ि नावा * सकहिं न खेइ एक नहिं आवा ॥
 बनचर कोल किरात वंचारे * थके विलोकि पथिक हिय हारे ॥
 आस्रम उदधि मिली जव जाई * मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥
 लोक विकल दोउ राज समाजा * रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ॥
 भूप-रूप-गुन-सील सराही * रोवहिं सोकसिंधु अवगाही ॥

छंद-अवगाहि सोकसमुद्र सोचहिं नारि-नर व्याकुल महा ।

दैं दोष सकल सरोष बोलहिं वाम विधि कीन्हो कहा ॥

सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा विदेह की ।

तुलसी न समरथु कोउ जो तरि सकै सरित सनेह की ॥

सोरठा--किये अमित उपदेस, जहँ तहँ लोगन्ह मुनिवरन्ह ।

धीरजु धरिय नरेस, कहेउ बसिष्ठ विदेह सन ॥२७६॥

जासु ग्यानुरवि भवनिसि नासा * बचनकिरन मुनि-कमल-विकासा ॥

तेहि कि मोह ममता नियराई * यह सिय-राम-सनेह बड़ाई ॥

विषयी साधक सिद्ध सयाने * त्रिविध जीव जग वेद बखाने ॥

राम-सनेह-सरस मन जासू * साधुसभा बड़ आदर तासू ॥
 सोह न रामपंम विनु ग्यानु * करनधार विनु जिमि जलजानू ॥
 मुनि बहुविधि विदेह समुझाये * रामघाट सब लोग नहाये ॥
 सकल-सोक-संकुल नरनारी * सो वासर वीतेउ विनु वारी ॥
 पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू * प्रिय परिजन कर कौन बिचारू ॥
 दोहा--दोउ समाज निमिराजू रघु-राज नहाने प्रात ।

बैठे सब बट-बिटप-तर, मन मलीन कृसगात ॥२७७॥

जे महिसुर दसरथ-पुर-वासी * जे मिथिला-पति-नगर-निवासी ॥
 हंस-बंस-गुरु जनकपुरोधा * जिन्ह जग मगु परमारथु मोधा ॥
 लगे कहन उपदेस अनेका * सहित धरम नय विरति विंवका ॥
 कौसिक कहि कहि कथा पुरानी * समुझाई सब सभा सुवानी ॥
 तव रघुनाथ कौसिकहिं कहेऊ * नाथ कालि जल विनु सबु रहेऊ ॥
 मुनि कह उचित कहत रघुराई * गयेउ बीति दिन पहर अढ़ाई ॥
 रिषि रुख लखि कह तिरहुतिराजू * इहाँ उचित नहिं अमन अनाजू ॥
 कहा भूप भल सबहिं सुहाना * पाइ रजायसु चले नहाना ॥

दोहा--तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ।

लइ आये वनचर विपुल, भरि भरि काँवरि भार ॥२७८॥

कामद भो गिरि रामप्रसादा * अवलोकत अपहरत विषादा ॥
 सर सरिता वन भूमि विभागा * जनु उमगत आनंद अनुरागा ॥
 बेलि बिटप सब सफल सफूला * बोलत खग मृग अलि अनुकूना ॥
 तेहि अवसर वन अधिक उझाहू * त्रिविध समीर सुखद सब काहू ॥
 जाइ न बरनि मनोहरताई * जनु महि करति जनक पहुनाई ॥
 तव सब लोग नहाइ नहाई * राम जनक मुनि आयसु पाई ॥
 देखि देखि तरुवर अनुरागे * जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
 दल फल मूल कंद विधि नाना * पावन सुंदर सुधासमाना ॥

दोहा--सादर सब कहँ रामगुरु, पठये भरि भरि भार ।

पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार ॥२७९॥

एहि विधि वासर वीते चारी * रामु निरखि नरनारि सुवारी ॥

दुहँ समाज असि रुचि मत माहीं * विनु मियराम फिरव भल नाहीं ॥
 सीताराम संग वनवास * कोटि अमर-पुर-सरिस सुपासू ॥
 परिहरि लपन-राम-वैदेही * जेहि घरु भाव वाम विधि तेही ॥
 दाहिन देव होइ जव सवहीं * रामसमीप वमिय वन तवहीं ॥
 मंदाकिनिमज्जनु तिहुँकाला * रामदरसु मुद-मंगल-माला ॥
 अटनु राम गिरि वन तापस थल * अपन अमियसम कंद मूल फल ॥
 सुखममेत संवत दुइ साता * पलमम होहिं न जनियहि जाता ॥
 दोहा--एहि सुख जोग न लोग सब, कहहिं कहाँ अस भागु ।

सहज सुभाउ समाज दुहँ, राम-चरन-अनुरागु ॥२८०॥

एहि विधि सकल मनोरथ करहीं * बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥
 सीयमातु तेहि समय पठाई * दासी देखि सुअवसरु आई ॥
 सावकाम सुनि सब मिय मामू * आयउ जनक-राज-रनिवासू ॥
 कौसल्या मादर सनमानी * आपन दिये ममय सम आनी ॥
 सीलु सनेहु सकल दुहँ ओरा * द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥
 पुलक मिथिल तनु वारि विलोचन * महि नख खिन लगीं सब सोचन ॥
 सब भिय-राम-प्रीति कि सी मूरति * जनु करुना बहुवेष विसूरति ॥
 सीयमातु कह विधिबुधि बाँकी * जो पयफेनु फोर पविटाँकी ॥
 दोहा--सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल ।

जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सकृत मराल ॥२८१॥

सुनि समोच कह देवि सुमित्रा * विधिगति बड़ि विपरीत विचित्रा ॥
 जो सृजि पालइ हरइ बहोरी * बाल-केलि-सम विधिमति भोरी ॥
 कौसल्या कह दोसु न काहू * करमविवस दुग्व सुख छति लाहू ॥
 कठिन करमगति जान विधाता * जो सुभ असुभ सकल फलदाता ॥
 ईस रजाइ सीस सबही के * उतपति थिति लय विषहु अमी के ॥
 देवि मोहवस सोचिय बादी * विधिप्रपंचु अस अचल अनादी ॥
 भूपति जियव मरव उर आनी * सोचियसखिलखिनज-हित-हानी ॥
 सीयमातु कह सत्य सुवानी * सुकृतीअवधि अवध-पति-रानी ॥
 दोहा--लपनु रामु सिय जाहु बन, भल परिनाम न पोचु ।

गहवरि हिय कह कौसिला, मोहि भरत कर सोचु ॥२८२॥
 ईसप्रसाद असीस तुम्हारी * सुत-सुत वधु देव-सरि-बारी ॥
 रामसपथ मैं कीन्हि न काऊ * सो करि कहउँ सखी सतिभाऊ ॥
 भरत सील गुन विनय बड़ाई * भायप भगति भरोस भलाई ॥
 कहतु सारदहु कर मति हीचे * सागर सीप कि जाहिं उलीचे ॥
 जानउँ सदा भरत कुलदीपा * बार बार मोहि कहेउ महीपा ॥
 कमे कनक मनि पारिखि पायें * पुरुष परिखियहि समय सुभायें ॥
 अनुचित आजु कहव अस मोरा * सोक सनेह सयानप थोरा ॥
 सुनि सुर-सरि-सम पावनि वानी * भई सनेह विकल सब रानी ॥
 दोहा--कौसल्या कह धीर धरि, सुनहु देवि मिथिलेसि ।

को विवेक-निधि-बल्लभाहि, तुम्हहिं सकइ उपदेसि ॥२८३॥
 रानि राय सन अवसरु पाई * अपनी भाँति कहव समुझाई ॥
 रखियहिं लपनु भरतु गवनहिं वन * जौं यह पत मानइ महीपमन ॥
 तौ भल जतन करव सुविचारी * मोरे सोच भरत कर भारी ॥
 गूढ़ सनेह भरत मन माहीं * रहें नीक मोहि लागत नाहीं ॥
 लखि सुभाउ सुनि सरल सुवानी * सब भईं मगन करुनरस रानी ॥
 नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि * मिथिल सनेह सिद्ध जोगी मुनि ॥
 सब रनिवास विथकि लखि रहेऊ * तव धरि धीर सुमित्रा कहेऊ ॥
 देवि दंडजुग जामिनि बीती * राममातु सुनि उठी सप्रीती ॥
 दोहा--बेगि पाउ धारिय थलहिं, कह सनेह सतिभाय ।

हमरें तौं अब ईसगति, कै मिथिलेस सहाय ॥२८४॥
 लखि सनेह सुनि वचन विनीता * जनकप्रिया गहि पाय पुनीता ॥
 देवि उचित अस विनय तुम्हारी * दपरथ - धरिनि राम - महतारी ॥
 प्रभु अपने नीचहु आदरहीं * अग्नि धूम गिरि मिरतिनु धरहीं ॥
 सेवक राउ करम - मन - बानी * मदा महाय महेम भवानी ॥
 रउरे अंग जोगु जग को है * दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥
 रामु जाइ वनु करि सुरकाजू * अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
 अमर नाग नर राम बाहु-बल * सुख बगिहहिं अपने अपने थल ॥

यह सब जागवलिक कहि राखा * देवि न होइ मुधा मुनि भाखा ॥
दोहा--अस कहि पग परि पेम अति, सियहित विनय सुनाइ ।

सियसमेत सियमातु तव, चली सुआयसु पाइ ॥२८५॥

प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही * जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥
तापमवेष जानकी देखी * भा सबु विकल विपाद विसेखी ॥
जनक रामगुरु आयसु पाई * चले थलहिं सिय देखी आई ॥
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी * पाहुनि पावन पेम प्रान की ॥
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू * भयउ भूपमन मनहुँ प्रयागू ॥
मियसनेह बटु वाढ़त जोहा * तापर राम - पेम - सिगु सोहा ॥
चिरजीवी मुनि ग्यानु विकल जनु * बूढ़त लहेउ बालअवलंबनु ॥
मोह मगनमति नहिं विदेह की * महिमा सिय-रघुवर-सनेह की ॥
दोहा--सिय पितु-मातु-सनेह-वस, विकल न सकी सँभारि ।

धरनिसुता धीरजु धरेउ, समउ सुधरमु विचारि ॥२८६॥

तापसवेष जनक सिय देखी * भयउ पेम परितोषु विसेषी ॥
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ * सुजस धवल जग कह सब कोऊ ॥
जिति सुरसरि कीरतिसरि तोरी * गवनु कीन्ह विधि अंड करोरी ॥
गंग अवनिथल तीनि बड़ेरे * एहि किय साधुसमाज घनेरे ॥
पितु कह सत्य सनेह सुबानी * सीय सकुचि महि मनहुँ समानी ॥
पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई * सिख आमिपहित दीन्हि सुहाई ॥
कहति न सीयसकुचि मन माहीं * इहाँ बसव रजनी भल नाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायेउ राऊ * हृदय सराहत सील सुभाऊ ॥
दोहा--बारवार मिलि भँटि सिय, विदा कीन्हि सनमानि ।

कही समयसिर भरतगति, रानि सुवानि सयानि ॥२८७॥

सुनि भूपाल भरतव्यवहारू * सोन सुगंध सुधा ससिसारू ॥
मँदे सजल नयन पुलके तन * सुजसु सराहन लगे मुदित मन ॥
सौवधान सुनु सुमुखि सुलोचनि * भरतकथा भव-बंध-विमोचनि ॥
धरम राजनय ब्रह्मविचारू * इहाँ जथामति मोर प्रचारू ॥
सो मति मोरि भरत महिमाहीं * कहइ काह छलि छुअति न छाहीं ॥
विधि गनपति अहिपति सिव सारद * कवि कोविद बुध बुद्धिविसारद ॥

भरत चरित कीरति करतूती * धरम सील गुन विमल विभूती ॥
समुझत सुनत सुखद सब काहू * सुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाहू ॥
दोहा-निरवधि गुन निरुपम पुरुष, भरत भरतसम जानि ।

कहिय सुमेरु कि सेरसम, कवि-कुल-मति सकुचानि ॥२८८॥

अगम सबहिं वरनत बरवरीनी * जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥
भरत अमित महिमा सुनु रानी * जानहिं रामु न सकहिं बखानी ॥
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ * तियजिय की रुचि लखि कह राऊ ॥
बहुरहिं लषनु भरत बन जाहीं * सब कर भल सब के मन माहीं ॥
देवि परंतु भरत रघुवर की * प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
भरतु अवधि सनेह ममता की * जद्यपि राम सीव समता की ॥
परमारथ स्वारथ सुख मारे * भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्धि रामपग नेहू * मोहि लखि परत भरतमत एहू ॥

दोहा--भोरेहुँ भरत न पेलिहहिं, मनसहुँ राम रजाइ ।

करिय न सोच सनेहवस, कहेउ भूप बिलखाइ ॥२८९॥

राम-भरत-गुन गनत सप्रीती * निसि दंपतिहिं पलकमम बीती ॥
राजसमाज प्रात जुग जागे * न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुरु पहिं रघुराई * बंदि चरन बोले रुख पाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी * सोकबिकल बनवाम दुखारी ॥
सहितसमाज राउ मिथिलेसू * बहुत दिवस भय सहत कलेसू ॥
उचित होइ सोइ कीजिय नाथा * हित मेवही कर रउरे हाथा ॥
अस कहि अतिमकुचं रघुराऊ * मुनि पुलके लखि सीलु सुभाऊ ॥
तुम्ह विनु राम सकल सुख साजा * नरकमरिस दुहुँ राजसमाजा ॥

दोहा--प्राण प्राण के जाव के, जिव सुख के सुख राम ।

तुम्ह तजि तात सुहात गृह, जिन्हहिंतिन्हहिं विधि वाम ॥२९०॥

सो सुख धरम करम जरि जाऊ * जहुँ न राम-पद-पंकज भाऊ ॥
जोग कुजोग ग्यानु अग्यानु * जहुँ नहिं रामपंम परधानू ॥
तुम्ह विनु दुखी सुखी तुम्ह तेही * तुम्ह जानहु जिय जो जंहि केही ॥
राउर आयसु सिर सबही के * विदित कृपालहिं गति सब नीके ॥

आपु आत्महिं धारिय पाऊ * भयउ सनेहसिथिल मुनिराऊ ॥
 करि प्रनामु तव रामु सिधाये * रिपि धरि धीर जनक पहिं अये ॥
 रामवचन गुरु नृपहिं सुनाये * सील सनेह सुभाय सुहाये ॥
 महाराज अत्र कीजिय मोई * सब कर धरमसहित हित होई ॥
 दोहा--ग्यान निधान सुजान सुचि, धरमधीर नरपाल ।

तुम्ह विनु असमंजस समन, को समरथ एहिकाल ॥२६१॥
 सुनि मुनिवचन जनक अनुरागे * लखि गति ग्यानु विरागु विरागे ॥
 सिथिल सनेह गुनत मन माहीं * आये इहाँ कीन्ह भल नाहीं ॥
 रामहिं राय कहेउ वन जाना * कीन्ह आपु प्रिय प्रेमप्रवाना ॥
 हम अत्र वन तें वनहिं पठाई * प्रमुदित फिरव विवेक बढ़ाई ॥
 तापस मुनि महिपुर सुनि देखी * भये प्रेमवस विकल विसंखी ॥
 समउ समुक्ति धरि धीरजु राजा * चले भरत पहिं सहितसमाजा ॥
 भरत आइ आगें भइ लीन्हें * अवसरसरिम सुआसन दीन्हें ॥
 तात भरत कह तिरहुतिराऊ * तुम्हहिं विदित खुशीरसुभाऊ ॥
 दोहा--राम सत्यव्रत धरमरत, सब कर सीलु सनेहु ।

संकट सहत संकोचवस, कहिअ जो आयसु देहु ॥२६२॥
 सुनि तन पुअकि नयन भरि वारी * बोले भरतु धीर धरि भारी ॥
 प्रभु प्रिय पूज्य पितामम आपू * कु रू-गुरु-सम हित माय न बापू ॥
 कौसिकादिमुनि सचिवसमाजू * ज्ञान-अंबु-निधि आपुनु आजू ॥
 मिसु सेवकु आयसु अनुगामी * जानि मोहि सिख देइय स्वामी ॥
 एहि समाज थल बूझव राउर * मौन मलिन मैं बोलव बाउर ॥
 छोटे बदन कहाँ बड़ि बाता * छमव तात लखि वाम विधाता ॥
 आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * सेवाधरमु कठिन जग जाना ॥
 स्वामि धरम स्वारथहिं विरोधू * बैरुअंध प्रेमहिं न प्रबोधू ॥
 दोहा--राखि राम रुख धरमुव्रतु, पराधीन मोहि जानि ।

सब के संमत सर्वहित, करिय प्रेम पहिचानि ॥२६३॥
 भरतवचन सुनि देखि सुभाऊ * सहितसमाज सराहत राऊ ॥
 सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे * अरथु अमित अति आखर थोरे ॥

ज्यों मुखु मुकुर मुकुरु निजपानी * गहि न जाइ अस अद्भुत बानी ॥
 भूपु भरतु मुनि साधु समाजू * गे जहँ विबुध-कुमुद-द्विज-राजू ॥
 सुनि सुधि सोच विकल सब लोगा * मनहुँ मीनगन नवजल जोगा ॥
 देव प्रथम कुल-गुरु-गति देखी * निरखि विदेह सनेह बिसेखी ॥
 राम-भगति-मय भरतु निहारे * सुर स्वारथी हहरि हिय हारे ॥
 सब कोउ राम प्रेममय पेखा * भये अलेख सोचवस लेखा ॥

दोहा--राम सनेह-सकोच-बस, कह ससोच सुरराज ।

रचहु प्रपंचहि पंचमिलि, नाहिं त भयेउ अकाज ॥२६४॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही * देवि देव सरनागत पाही ॥
 फेरि भरतमति करि निजमाया * पालु विबुधकुल करि छलझाया ॥
 विबुधविनय सुनि देवि सयानी * वोली सुर स्वारथ जड़ जानी ॥
 मो सन कहहु भरत मति फेरु * लोचन सहस न सृझ सुमेरु ॥
 विधि-हरि-हर माया वड़ि भारी * सोउ न भरतमति सकइ निहारी ॥
 सो मति मोहि कहत करु भोरी * चाँदिनि कर कि चंदकर चोरी ॥
 भरतहृदय मिय - रामु - निवासू * तहँ कि तिमिर जहँ तरनिप्रकासू ॥
 अस कहि सारद गइ विधिलोका * विबुध विकल निमि मानहुँ कोका ॥

दोहा--सुर स्वारथी मलीन मन, कोन्ह कुमंत्र कृठाट ।

रचि पूपंच माया पूबल, भयभ्रम अरति उचाटु ॥२६५॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू * भरतहाथ सबु काजु अकाजू ॥
 गये जनकु रघुनाथसर्मापा * मनमाने सब रवि-कुल-दीपा ॥
 समय समाज धरम अविरोधा * बोले तव रघु - बंम - पुरोधा ॥
 जनक भरत संवाटु सुनाई * भरत कहाउति कही सुहाई ॥
 तात राम जम आयसु देहू * सो सब करइ मोर मत एहू ॥
 सुनि रघुनाथ जोरि जुगपानी * बोले मत्य मरल मृदु वानी ॥
 विद्यमान आपुनु मिथिलेसू * मोर कहव सब भाँति भदेसू ॥
 राउर राय रजायसु होई * राउरिमपथ मही मिर सोई ॥

दोहा--रामसपथ सुनि मुनि जनकु, सकुचे सभासमेत ।

सकल बिलोकत भरतमुखु, बनइ न उतरु देत ॥२६६॥

सभा मकुचवस भरत निहारी * रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥
 कुसमउ देखि सनेह मँभारा * बहत विंधि जिमि घटज निवारा ॥
 सोक कनकलोचन मति छोनी * हरी विमल-गुन-गन जग जोनी ॥
 भरतविवेक वराह विमाला * अनायाम उधरी तेहि काला ॥
 करि प्रनामु सबु कहँ कर जोरे * राम राउ गुरु साधु निहोरे ॥
 छमव आजु अतिअनुचित मोरा * कहउँ वदन मृदु बचन कठोरा ॥
 हिय सुमिरी मारदा सुहाई * मानम तें मुखपंकज आई ॥
 विमल विवेक धरम नय साली * भरतभारती मंजु मराली ॥
 दोहा-निरखि विवेक विलोचनन्हि, सिथिल सनेह समाजु ।

करि प्रनामु बोले भरतु, सुमिरि सीय रघुराजु ॥२६७॥

प्रभु पितु मातु सुहद गुरु स्वामी * पूज्य परमहित अंतरजामी ॥
 सरल सुसाहिवु सील निधानू * प्रनतपाल सर्वग्य सुजानू ॥
 समरथ मरनागत हितकारी * गुनगाहकु अवगुन-अघ-हारी ॥
 स्वामि गोसाइँ हिंमरिस गोसाइँ * मोहि समान मैं साइँ दोहाई ॥
 प्रभु-पितु-बचन मोहवस पेली * आयेउँ इहाँ समाज सकेली ॥
 जग भल पोच ऊँच अरु नीचू * अमिय अमरपद माहुर मीचू ॥
 रामरजाइ मेट मन माहीं * देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
 सो में सब विधि कीन्हि दिटाई * प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥
 दोहा--कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ।

दूपन भे भूषनसरिस, सुजल चारु चहुँ ओर ॥२६८॥

राउरिरीति सुवानि बड़ाई * जगत विदित निगमागम गाई ॥
 कूर कुटिल खल कुमति कलंकी * नीच निसील निरीस निसंकी ॥
 तेउ सुनि सरन सामुहें आये * सुकृत प्रनामु किहें अपनाये ॥
 देखि दोष कवहुँ न उर आने * सुनि गुन साधुममाज वखाने ॥
 को साहिव सेवकहि नेवाजी * आपु समान साज सब साजी ॥
 निज करतूति न समुझिय रूपने * सेवक मकुच मोचु उर अपने ॥
 सो गोसाइँ नहिं दूसर कोपी * भुजा उठाइ कहौं पन रोपी ॥
 पसु नाचत सुक पाठ प्रवीना * गुनगति नट पाठक आधीना ॥

दोहा-यों सुधारि सनमानि जन, किये साधु सिरमोर ।

को कृपाल विनु पालिहै, विरदावलि बरजोर ॥२६६॥

सोक सनेह कि वाल सुभायें * आयेउँ लाइ रजायसु वायें ॥

तवहुँ कृपाल हेरि निजओरा * सवहि भाँति भल मानेउ मोरा ॥

देखेउ पाय सु--मंगल--मूला * जानेउँ स्वामि महज अनुकला ॥

वड़े ममाज विलोकेउँ भागू * वड़ी चूक माहिवअनुरागू ॥

कृपा अनुग्रह अंग अघाई * कीन्हि कृपानिधि मव अधिकाई ॥

राखा मोर दुलार गोमाई * अपने मील सुभाय भलाई ॥

नाथ निपट मैं कीन्हि ठिठाई * स्वामि ममाज सकोच विहाई ॥

अविनय विनय जथारुचि बानी * छमिहि देव अतिआरति जानी ॥

दोहा--सुहृद सुजान सुसाहिवहि, बहुतकहब बड़ि खोरि ।

आयसु देइ देव अब, सबइ सुधारी मोरि ॥३००॥

प्रभु-पद-पदुम-पराग दोहाई * मत्य मुकृत मुखसीवँ मुहाई ॥

सो करि कहउँ हिये अपने की * रुचि जागत मोवत सपने की ॥

सहज सनेह स्वामिमेवकाई * स्वारथ छल फल चारि विहाई ॥

अग्यासम न सुमाहिवसेवा * मो प्रमादु जन पावइ देवा ॥

अम कहि प्रेमविवस भये भारी * पुलक सरीर विलोचन बारी ॥

प्रभु--पद--कमल गहे अकुलाई * समउ सनेह न सो कहि जाई ॥

कृपासिंधु सनमानि सुवानी * बैठाये समीप गहि पानी ॥

भरतविनय मुनि देखि मुभाऊ * मिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥

छंद--रघुराउ सिथिल सनेह साधु ममाज मुनि मिथिलाधनी ।

मन महुँ सराहत भरत-भायप-भगति की महिमा घनी ॥

भरतहि प्रसंमत विबुध बरपत सुमन मानममलिन से ।

तुलमी विकल मव लोग मुनि मकुचे निमागम नलिन से ॥

सोरठा--देखि दुखारी दीन, दुहुँ, समाज नरनारि सब ।

मघवा महामलीन, मुये मारि मंगल चहत ॥३०१॥

कपट-कुवालि-सीवँ सुरराजू * पर-अकाज-प्रिय आपन काजू ॥

काकसमान पाक-रिपु-रीती * छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ॥

प्रथम कुमत करि कपट सँकेला * सो उचाटु सब के सिर मेला ॥
 सुरमाया सब लोग विमोहे * राममेम अतिसय न बिछोहे ॥
 भय उचाटवस मन थिर नाही * छन बन रुचि छन सदन सुहाही ॥
 दुविध मनोगत प्रजा दुखारी * सरित सिंधु संगम जनु बारी ॥
 दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं * एक एक सन मरमु न कहहीं ॥
 लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू * सरिस स्वान मघवान जुवानू ॥
 दोहा-भरत जनक मुनिजन सचिव, साधु सचेत विहाइ ।

लागि देवमाया सवहिँ, जथाजोगु जनु पाइ ॥३०२॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे * निजसनेह सुर-पति-छल भारे ॥
 मभा राउ गुरु महिसुर मंत्री * भरतभगति सब कै मति जंत्री ॥
 रामहिँ चितवत चित्र लिखे से * सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥
 भरत-प्रीति-नति-विनय - वड़ाई * सुनत सुखद बरनत कठिनाई ॥
 जासु त्रिलोकि भगति लवलेसू * प्रेममगन मुनिगन मिथिलेसू ॥
 महिमा तासु कहइ किमि तुलसी * भगति सुभाय सुमति हिय हुलसी ॥
 आपु छोटि महिमा बड़ि जानी * कविकुल कानि मानि सकुचानी ॥
 कहि न सकति गुन रुचि अधिकारै * मतिगति बालबचन की नाई ॥
 दोहा--भरत-बिमल-जसु विमल विधु, सुमति चकोर कुमारि ।

उदित विमल जनहृदय नभ, एकटक रही निहारि ॥३०३॥

भरतसुभाउ न सुगम निगमहुँ * लघुमति चापलता कवि छमहुँ ॥
 कहत सुनत मतिभाउ भरत को * सीय-राम-पद होइ न रत को ॥
 सुमिरत भरतहिँ प्रेम राम को * जेहि न सुलभ तेहि सरिस बामको ॥
 देखि दयालु दसा सबही की * राम सुजान जानि जन जी की ॥
 धरमधुरीन धीर नयनागर * सत्य सनेह सील सुख सागर ॥
 देसु कालु लखि समयममाजू * नीति-प्रीति-पालक रघुराजू ॥
 बोले बचन बानि सरवसु से * हित परिनाम सुनत समिरसु से ॥
 तात भरत तुम्ह धरमधुरीना * लोक वेद विद परमप्रवीना ॥

दोहा--करम बचन मानस विमल, तुम्ह समान तुम्ह तात ।

गुरुसमाज लघु-बंधु-गुन, कुसमय किमि कहि जात ॥३०४॥

जानहु तात तरनि-कुल-रीती * सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥
 समउ समाजु लाज गुरुजन की * उदासीन हित अनहित मन की ॥
 तुम्हहिं बिदित सबही कर करमू * आपन मोर परम हित धरमू ॥
 मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा * तदपि कहउँ अवसरअनुमारा ॥
 तात तात बिनु बात हमारी * केवल गुरु-कुल-कृपा मैंभारी ॥
 न तरु प्रजा पुरजन परिवारू * हमहिं सहित सब होत खुआरू ॥
 जौं बिनु अवसर अथव दिनेसू * जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥
 तस उतपातु तात विधि कीन्हा * मुनिमिथिलेम राखि मबु लीन्हा ॥
 दोहा--रामकाज सब लाज पति, धरम धरनि धन धाम ।

गुरुप्रभाउ पालिहि सबहिं, भल होइहि परिनाम ॥३८५॥

सहित समाज तुम्हार हमारा * घर वन गुरुप्रसाद रग्वारा ॥
 मातु-पिता-गुरु-स्वामि-निदेशू * सकलधरम धरनीधर मैसू ॥
 सो तुम्ह करहु करावहु मोहू * तात तरनि-कुल-पालक होहू ॥
 साधक एक सकलमिधि देनी * कीरति सुगति भूतिमय वनी ॥
 सो विचार सहि संकट भारी * करहु प्रजा परिवारू सुखारी ॥
 बाँटी विपति सबहि मोहि भाई * तुमहिं अवधि भरि वडि कठिनाई ॥
 जानि तुम्हहिं मृदु कहहुँ कठोरा * कुसमय तात न अनुचित मोरा ॥
 होहिं कुठायँ सुबंधु सहायँ * ओडियहि हाथ अमनि के धायँ ॥
 दोहा--सेवक कर पद नयन से, मुख सो साहिवु होइ ।

तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ ॥३०६॥

सभा सकल सुनि रघुवर वानी * प्रेम-पयोधि-अमिय जनु मानी ॥
 सिथिलसमाज सनेह समाधी * देखि दसा चुप सारद सार्धी ॥
 भरतहिं भयउ परम संतोषू * सनमुख स्वामि विमुख दुखु दोषू ॥
 मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू * भा जनु शूंगहि गिरा प्रसादू ॥
 कीन्ह सप्रेम प्रनाम बहोरी * बोले पानिपंकरुह जोरी ॥
 नाथ भयेउ सुखु साथ गये को * लहेउँ लाहु जग जनम भये को ॥
 अब कृपाल जस आयसु होई * करउँ सीम धरि सादर सोई ॥
 सो अवलंब देव मोहिं देई * अवधि पारु पावउँ जेहि सेई ॥

दोहा--देव देवअभिषेक हित, गुरुअनुसासन पाइ ।

आनेउँ सब तीरथसलिलु, तेहि कहँ काह रजाइ ॥३०७॥
 एकु मनोरथु वड मन माहीं * सभय सकोच जात कहि नाही ॥
 कहहु तात प्रभुआयसु पाई * बोले वानि सनेह सुहाई ॥
 चित्रकूट मुनि थल तीरथ बन * खग मृग सरि सर निर्झर गिरिगन ॥
 प्रभु-पद-अंकित अवनि विसेखी * आयसु होइ त आवउँ देखी ॥
 अवासि अत्रि आयसु मिर धरहू * तात विगत भय कानन चरहू ॥
 मुनिप्रसाद वनु मंगलदाता * पावन परम सुहावन भ्राता ॥
 रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं * राखेहु तीरथजलु थल तेहीं ॥
 सुनि प्रभुवचन भरत सुखु पावा * मुनि-पद-कमल मुदित सिर-नावा ॥
 दोहा--भरत-राम-संबादु सुनि, सकल-सुमंगल-मूल ।

सुर स्वारथी सराहि कुल, बरषत सुर-तरु-फूल ॥३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसाई * कहत देव हरषत वरिआई ॥
 मुनि मिथिलेस सभा सब काहू * भरत वचन सुनि भयेउ उज्जाहू ॥
 भरत - राम - गुन - ग्राम - सनेहू * पुलकि प्रसंसत राउ विदेहू ॥
 सेवक स्वामि सुभाउ सुहावन * नेमु प्रेमु अति पावन पावन ॥
 मतिअनुसार सराहन लागे * सचिव सभासद सब अनुरागे ॥
 सुनि सुनि राम-भरत-संबादू * दुहुँ समाज हिय हरष विषादू ॥
 राममातु दुख-सुख - सम जानी * कहि गुन राम प्रबोधी रानी ॥
 एक कहहिं रघुवीरबड़ाई * एक सराहत भरतभलाई ॥

दोहा--अत्रि कहेउ तव भरत सन, सैलसमाप सुकूप ।

राखिय तीरथतोय तहँ, पावन अमिय अनूप ॥३०९॥

भरत अत्रिअनुसासन पाई * जलभाजन सब दिये चलाई ॥
 सानुज आपु अत्रि मुनि साधू * सहित गये जहँ कूप अगाधू ॥
 पावनु पाथ पुन्य थल राखा * प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा ॥
 तात अनादि सिद्ध थल एहू * लोपेउ काल विदित नहिं केहू ॥
 तव सेवकन्ह सरस थलु देखा * कीन्ह सुजल हित कूप विसेखा ॥
 विधिबस भयेउ विस्व उपकारू * सुगम अगम अति धरम विचारू ॥

भरतकूप अब कहिहहिं लोगा * अतिपावन तीरथ जलजोगा ॥
प्रेम सनेम निमज्जत प्राणी * होइहहिं विमलकरम मनवानी ॥

दोहा--कहत कूपमहिमा सकल, गये जहाँ रघुराउ ।

अत्रि सुनायेउ रघुवरहि, तीरथ-पुन्य-प्रभाउ ॥३१०॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती * भयेउ भोर निसि सो सुख बीती ॥
नित्य निवाहि भरत दोउ भाई * राम-अत्रि-गुरु-आयसु पाई ॥
सहित समाज साज सब सादें * चले राम-वन-अटन पयादें ॥
कोमल चरन चलत विनु पनहीं * भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥
कुस कंटक काँकरी कुराई * कटुक कठोर कुबस्तु दुराई ॥
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे * बहत समीर त्रिविध सुख लीन्हे ॥
सुमन वरषि सुर घन करि छाहीं * विटप फूलि फल तृन मृदुताहीं ॥
मृग विलोकि खग बोलि सुवानी * सेवहिं सकल रामप्रिय जानी ॥

दोहा--सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात ।

राम-प्रान-प्रिय भरत कहँ, यह न होइ बड़ि वात ॥३११॥

एहि विधि भरत फिरत वन माहीं * नेम प्रेमु लखि मुनि मकुचाहीं ॥
पुन्य जलास्य भूमि विभागा * खग मृग तरु तृन गिरि वन वागा ॥
चारु विचित्र पवित्र विसेखी * बूझत भरत दिव्य सब देखी ॥
सुनि मन मुदित कहत रिषिराऊ * हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा * कतहुँ विलोकत मन अभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनिआयसु पाई * सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
देखि सुभाउ सनेहु सुसेवा * देहिं असीस मुदित वनदेवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई * प्रभु-पद कमल विलोकहिं आई ॥

दोहा--देखे थलतीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ ।

कहत सुनत हरिहर सुजस, गयेउ दिवसु भइ साँझ ॥३१२॥

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू * भरत भूमिसुर तिरहुति राजू ॥
भल दिन आजु जानि मन माहीं * राम कृपालु कहत सकुचाहीं ॥
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी * सकुचि राम फिरि अवनि विलोकी ॥
सील सराहि सभा सब सोची * कहँ न राम सम स्वामि संकोची ॥

भरत सुजान रामरुख देखी * उठि सप्रेम धरि धीर विसेखी ॥
 करि दंडवत कहत कर जोरी * राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥
 मोहि लगि सहेउ सवहि मंतापू * बहुत भाँति दुखु पावा आपू ॥
 अब गोसाईँ मोहि देउ रजाई * सेवउँ अबध अबधि भरि जाई ॥
 दोहा--जेहि उपाय पुनि पाय जनु, देखइ दीनदयाल ।

सो सिख देख्य अबधि लगि, कोसलपाल कृपाल ॥३१३॥
 पुरजन परिजन प्रजा गोमाई * सब सुचि सरम मनेह सगाई ॥
 राउर बदि भल भव-दुख-दाह * प्रभु विनु बादि परम-पदलाह ॥
 स्वामि सुजानु जानि सब ही की * रुचि लालभा रहनि जन जी की ॥
 प्रनत पालु पालहिं मव काह * देव दुहँ दिसि ओर निवाह ॥
 अस मोहि सब विधि भूरि भरोसो * कियें विचारु न सोचु खरो सो ॥
 आरति मोर नाथ कर ओहू * दुहँ मिलि कीन्ह दीठ हठि मोहू ॥
 यह बड़ दोषु दूरि करि स्वामी * तजि मकोच सिखइअ अनुगामी ॥
 भरतविनय सुनि सवहि प्रसंमी * खीर-नीर-विवरन-गति हंसी ॥
 दोहा--दीनबंधु सुनि बंधु के, बचन दीन छलहीन ।

देस-काल-अवसर-सरिस, बोले रामु प्रवीन ॥३१४॥
 तात तुम्हारि मोरि परिजन की * चिंता गुरुहिं नृपहिं घर बन की ॥
 माथे पर गुरु मुनि मिथिलेसू * हमहिं तुम्हहिं सपनेहुँ न कलेसू ॥
 मोर तुम्हार परमपुरुपारथ * स्वारथु सुजसु धरमु परमारथ ॥
 पितुआयसु पालिहि दुहँ भाई * लोक बंद भल भूप भलाई ॥
 गुरु-पितु-मातु-स्वामि-सिख पालें * चलेहु कु-मग-पग परहिं न खालें ॥
 अस विचारि मत्र सोच बिहाई * पालहु अबध अबधि भरि जाई ॥
 देसु कोसु परिजन परिवारु * गुरुपद रजहिं लाग ब्ररुमारु ॥
 तुम्ह मुनि-मातु-सचिव-सिख मानी * पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥
 दोहा--मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान कहँ एक ।

पालइ पोपइ सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥३१५॥
 राज-धरम-सरबसु एतनोई * जिमि मन माँह मनोरथ गोई ॥
 बंधुप्रबोध कीन्ह बहु भाँती * विनु अधार मन तोष न साँती ॥

भरत सीलु गुरु सचिव समाजू * सकुच सनेह विवस रघुराजू ॥
 प्रभु करि कृपा पावरी दीन्ही * सादर भरत सीस धरि लीन्ही ॥
 चरनपीठ करुनानिधान के * जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ॥
 संपुट भरतसनेह रतन के * आखर जुग जनु जीवजतन के ॥
 कुलकपाट कर कुमल करम के * विमलनयन सेवा - सु - धरम के ॥
 भरत मुदित अवलंब लहे तें * अस सुख जम सिय रामु रहे तें ॥
 दोहा--माँगेउ विदा प्रनामु करि, राम लिये उर लाइ ।

लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसरु पाइ ॥३१६॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी * अवधिआस मम जीवनि जी की ॥
 न तरु लपन-सिय-राम-वियोगा * हहरि मरत सबु लोग कुरोगा ॥
 रामकृपा अवरैव सुधारी * विबुधधारि भइ गुनद गोहारी ॥
 भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो * राम-प्रेम-रसु कहि न परत सो ॥
 तन मन वचन उमग अनुरागा * धीर-धुरंधर धीरजु त्यागा ॥
 वारिजलोचन मोचत वारी * देखि दमा सुरसभा दुखारी ॥
 मुनिगन गुरु धुर धीर जनक से * ग्यानअनल मन कसे कनक से ॥
 जे विरंचि निरलेप उपाये * पदुमपत्र जिमि जग जलजाये ॥

दोहा--तेउ विलोकि रघुवर-भरत-प्रीति अनूप अपार ।

भये मगन मन तन वचन, सहित विराग विचार ॥३१७॥

जहाँ जनक गुरु गति मति भोरी * प्राकृत प्रीति कहत बड़ि खोरी ॥
 बरनत रघुवर - भरत - वियोगू * सुनि कठोर कवि जानिहि लोगू ॥
 सो सकोचु रसु अकथ सुबानी * समउसनेहु सुमिरि मकुचानी ॥
 भेंटि भरतु रघुवर समुझाये * पुनि रिपुदवन हरषि हिय लाये ॥
 सेवक सचिव-भरत-रुख पाई * निज निज काज लगै मव जाई ॥
 सुनि दारुनदुख दुहँ समाजा * लगै चलन के माजन माजा ॥
 प्रभु-पद-पदुम बंदि दोउ भाई * चले मीम धरि रामरजाई ॥
 मुनि तापस बन देव निहोरी * सब मनमानि बहोरि बहोरी ॥
 दोहा--लपनहिं भेंटि प्रनाम करि, सिर धरि सिय-पद-धूरि ।

चले सप्रेम असीस सुनि, सकल-सुमंगल-मूरि ॥३१८॥

सानुज राम नृपहि भिर नाई * कीन्हि बहुत विधि बिनय बड़ाई ॥
 देव दयावस बड़ दुख पायेउ * सहित समाज काननहिं आयेउ ॥
 पुर पगु धारिय देइ असीसा * कीन्ह धीर धरि गवन महीसा ॥
 मुनि महिदेव साधु मनमाने * विदा किये हरि-हर-सम जाने ॥
 सासुसमीप गये दोउ भाई * फिरे बंदि पग आसिष पाई ॥
 कौमिक वामदेव जावाली * परिजन पुरजन सचिव सुचाली ॥
 जथाजोगु करि बिनय प्रनामा * विदा किये सब सानुज रामा ॥
 नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे * सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥
 दोहा--भरत-मातु-पद-बंदि प्रभु, सुचि सनेह मिलिभेंटि ।

विदा कीन्हि सजि पालकी, सकुच सोच सब मेंटि ॥३१६॥
 परिजन मातु पितहिं मिलि सीता * फिरी प्रान - प्रिय - प्रेम - पुनीता ॥
 करि प्रनाम भेंटि सब सासू * प्रीति कहत कवि हिय न हुलासू ॥
 मुनि मिख अभिमत आमिष पाई * रही सीय दुहुँ प्रीति समाई ॥
 रघुपति पटु पालकी मँगाई * करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाई ॥
 वार वार हिलि मिलि दुहुँ भाई * सम सनेह जननी पहुँचाई ॥
 साजि वाजि गज वाहन नाना * भूप भरतदल कीन्ह पयाना ॥
 हृदय रामु सिय लखन समेता * चले जाहिं सब लोग अचेता ॥
 बसह वाजि गज पसु हिय हारे * चले जाहिं परबस मन मारे ॥
 दोहा--गुरु-गुरु-तिय-पद बंदि प्रभु, सीता लषन समेत ।

फिरे हरष-बिसमय-सहित, आये परननिकेत ॥३२०॥
 विदा कीन्ह सनमानि निषादू * चलेउ हृदय बड़ विरह विषादू ॥
 कोल किरात भिन्न बनचारी * फेरे फिरे जोहारि जोहारी ॥
 प्रभु सिय लषन बैठि बट ब्राहीं * प्रिय-परिजन-वियोग बिलखाहीं ॥
 भरत सनेहु सुभाव सुवानी * प्रिया अनुज सन कहत बखानी ॥
 प्रीति प्रतीति बचन मन करनी * श्रीमुख राम प्रेमवस वरनी ॥
 तेहि अवसर खग मृग जलमीना * चित्रकूट चर अचर मलीना ॥
 विबुध बिलोकि दसा रघुवर की * वरषि सुमन कहि गति घर घर की ॥
 प्रभु प्रनाम करि दीन्ह भरोसो * चले मुदित मन डर न खरो सो ॥

दोहा-सानुज सीयसमेत प्रभु, राजत परनकुटीर ।

भगति ग्यान बैराग जनु, सोहत धरे सरीर ॥३२१॥
 मुनि महिसुर गुरु भरत भुआलू * रामविरह सबु साजु विहालू ॥
 प्रभु-गुन-ग्राम गुनत मन माहीं * सब चुपचाप चले मग जाहीं ॥
 जमुना उतरि पार सब भयऊ * सो बासर विनु भोजन गयऊ ॥
 उतरि देवसरि दूसर वासू * रामसखा सब कीन्ह सुपासू ॥
 सई उतरि गोमती नहाये * चौथे दिवस अवधपुर आये ॥
 जनक रहे पुर बासर चारी * राज काज सब साज सँभारी ॥
 सौंषि सचिव गुरु भरतहि राजू * तिरहुति चले साजि सब साजू ॥
 नगर-नारि-नर गुरु सिख मानी * वसे सुखेन राम-रज-धानी ॥
 दोहा--रामदरस लगि लोग सब, करत नेम उपवास ।

तजितजि भूषन भोग सुख, जियत अवधि कीआस ॥३२२॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे * निज निज काज पाइ सिख ओधे ॥
 पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई * सौंषी सकल मातुसेवकाई ॥
 भूसुर बोलि भरत कर जोरे * करि प्रनाम वरविनय निहोरे ॥
 ऊँच नीज कारज भल पोचू * आयसु देव न करव सँकोचू ॥
 परिजन पुरजन प्रजा बोलाये * समाधान करि सुबस बसाये ॥
 सानुज गे गुरुगेह बहोरी * करि दंडवत कहत कर जोरी ॥
 आयसु होइ त रहउ सनेमा * बोले मुनि तन पुलकि सप्रेमा ॥
 समुझव कहव करव तुम्ह जोई * धरमसारु जग होइहि सोई ॥

दोहा-सुनि सिख पाइ असीस बड़ि, गनक बोलि दिन साधि ।

सिंहासन प्रभुपादुका, बैठारे निरुपाधि ॥ ३२३ ॥

राममातु गुरुपद सिरु नाई * प्रभु-पद-पीठ-रजायसु पाई ॥
 नंदिगाँव करि परनकुटीरा * कीन्ह निवास धरम-धुर-धीरा ॥
 जटाजूट सिर मुनिपट धारी * महि खनि कुससाथरी सवारी ॥
 असन बसन बासन व्रत नेमा * करत कठिन रिपिधरम सप्रेमा ॥
 भूषन बसन भोग सुख भूरी * मन तन बचन तजे तिन तूरी ॥
 अवधराज सुरराज सिहाई * दूसरथ धनु सुनि धनद लजाई ॥

तेहि पुर वसत भरत बिनु रागा * चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥
 रमाबिलास रामअनुरागी * तजत बमन जिमि जन बड़ भागी ॥
 दोहा-राम-पेम-भाजन भरत, बड़े न येहि करतूति ।

चातक हंस सराहियत, टेक विवेक विभति ॥३२४॥

देह दिनहुँ दिन दूवरि होई * घटइ तेजु बलु मुखछवि सोई ॥
 नित नव राम-पेम-पनु पीना * वढत धरमदलु मन न मलीना ॥
 जिमि जल निघटत सरद प्रकासे * बिसत वेतसबनज विकासे ॥
 सम दम संजम नियम उपासा * नखत भरत हिय विमल अकासा ॥
 ध्रुव विस्वासु अवधि राका सी * स्वामिसुरति सुरवीथि विकासी ॥
 राम पेम-विधु अचल अदोखा * सहित समाज सोह नित चोखा ॥
 भरत रहनि समुझनि करतूती * भगतिविरति गुन विमल विभूती ॥
 बरनत सकल सुकवि सुकुचाहीं * सेम - गनेस - गिरा - गमुनाहीं ॥
 दोहा-नित पूजत प्रभुपावैरी, प्रीति न हृदय समाति ।

माँगि माँगि आयसु करत, राजकाज बहु भाँति ॥३२५॥

पुलक गात हिय सिय रघुवीरू * जीह नामु जप लोचन नीरू ॥
 लपन राम सिय कानन बसहीं * भरत भवन बसि तप तनु कमहीं ॥
 दोउ दिमि समुझि कहत सब लोगू * सब विधि भरत मराहन जोगू ॥
 सुनि व्रत नेम साधु मकुचाहीं * देखि दभा मुनिराज लजाहीं ॥
 परमपुनीत भरतआचरनू * मधुर-मंजु-मुद - मंगल - करनू ॥
 हरन कठिन कलि-कलुष-कलेसू * महा-मोह-निमि दलन दिनेसू ॥
 पाप-पुंज - कुंजर - मृज - राजू * समन सकल - संताप - ममाजू ॥
 जनरंजन भंजन भवभारू * रामसनेह सुधाकरसारू ॥

छंद-सिय-राम-प्रेम-पियूष-पूरन होत जनम न भरत को ।

मुनि-मन-अगम जम नियम सम दम विषम व्रत आचरत को ॥

दुखदाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ।

कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि रामसनमुख करत को ॥

सोरठा-भरतचरित करि नेमु, तुलसी जो सादर सुनहिं ।

सीय-राम-पद पेम, अवसि होइ भव-रस-विरति ॥३२६॥

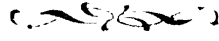
इति अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामायण

अरण्यकाण्ड



श्लोकाँ

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्दं वैराग्याम्बुजभास्करं
ह्यघधनध्वान्तापहं तापहम् । मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं
शङ्करं वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूप्रियम् ॥ १ ॥ सान्द्रानन्दप-
योदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं पाणौ वाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं
वरम् । राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन मंशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतं
पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सोरठा—उमा रामगुण गूढ, पंडित मुनि पावहिं विरति ।

पावहिं मोह विमृष्ट, जे हरि विमुख न धर्मरति ॥

पुर-नर-भरत-प्रीति में गई * मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन * करत जे वन सुर-नर-मुनि-भावन ॥
एक बार चुनि कुसुम सुहाये * निज कर भूपन राम बनाये ॥
सीतहि पहिराये प्रभु सादर * बैठे फटिकसिला पर मुंदर ॥
सुर-पति-सुत धरि बायस बेखा * सठ चाहत रघु-पति-बल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा * महा-मंद-मति पावन चाहा ॥
सीता चरन चोंच हति भागा * मूढ़ मंदमति कारन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना * सीक-धनुष-सायक संधाना ॥

दोहा—अतिकृपाल रघुनायक, सदा दीन पर नेह ।

ता सनु आइ कीन्ह छलु, मूरख अवगुनगंह ॥ १ ॥

प्रेरितमंत्र ब्रह्म सर धावा * चला भाजि वायस भयपावा ॥
 धरि निज रूप गयेउ पितु पाहीं * रामविमुख राखा तेहि नाहीं ॥
 भा निरास उपजी मन त्रासा * जथा चक्रभय रिषि दुर्वासा ॥
 ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका * फिरा समिक व्याकुल भय सोका ॥
 काहू बैठन कहा न ओही * राखि को सकै राम कर द्रोही ॥
 मातु मृत्यु पितु समनसमाना * सुधा होइ विष सुनु हरिजाना ॥
 मित्र करै सतरिपु कै करनी * ता कहुं विधुधनदी वैतरनी ॥
 सब जग ताहि अनलहु ते ताता * जो रघु-वीर-विमुख सुनु भ्राता ॥
 नारद देखा विकल जयंता * लागि दया कोमलचित संता ॥
 पठवा तुरत राम पहिं ताही * कहेसि पुकारि प्रनतहित पाही ॥
 आतुर सभय गहेसि पद जाई * त्राहि त्राहि दयालु रघुराई ॥
 अ-तुलित-बल अ-तुलित-प्रभुताई * मैं मतिमंद जानि नहिं पाई ॥
 निज कृत कर्मजनित फल पायउं * अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउं ॥
 सुनि कृपाल अति-आरत-बानी * एक नयन करि तजा भवानी ॥
 सोरठा--कीन्ह मोह बस द्रोह, जद्यपि तेहि कर बध उचित ।

प्रभु छाँडेउ करि छोह, को कृपाल रघुवीर-सम ॥ २ ॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना * चरित किये सुति सुधा समाना ॥
 बहुरि राम अस मनअनुमाना * होइहि भीर सबहिं मोहि जाना ॥
 सकल मुनिन्ह सन विदा कराई * सीतासहित चले दोउ भाई ॥
 अत्रि के आस्रम जब प्रभु गयऊ * सुनत महामुनि हरषित भयऊ ॥
 पुलकितगात अत्रि उठि धाये * देखि रामु आतुर चलि आये ॥
 करत दंडवत मुनि उर लाये * प्रेमबारि दोउ जन अन्हवाये ॥
 देखि रामछबि नयन जुड़ाने * सादर निज आस्रम तब आने ॥
 करि पूजा कहि वचन सुहाये * दिये मूल फल प्रभु मन भाये ॥

सोरठा-प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन सोभा निरखि ।

मुनिवर परम प्रबोन, जोरि पानि अस्तुति करत ॥ ३ ॥

छंद—नमामि भक्तवत्सलं । कृपालु-शील कोमलम् ।
 भजामि ते पदाम्बुजं । अकामिनां स्वधामदम् ॥

निकाम - श्याम - सुन्दरं । भवाम्बु - नाथ - मन्दरम् ।
 प्रफुल्ल - कञ्ज - लोचनं । मदादि - दोष - मोचनम् ॥
 प्रलम्ब - बाहु - विक्रमं । प्रभोऽप्रमेयवैभवम् ।
 निषङ्ग - चाप - सायकं । धरं त्रि-लोक-नायकम् ॥
 दिनेश - वंश - मंडनं । महेश - चाप - खंडनम् ।
 मुनीन्द्र - संत - रंजनम् । सुरारि - बृन्द - भंजनम् ॥
 मनोज - वैरि - वंदितं । अजादि - देव - सेवितम् ।
 विशुद्ध - बोध - विग्रहं । समस्तदूषणापहम् ॥
 नमामि इन्दिरापतिं । सुखाकरं सतां गतिम् ।
 भजे सशक्ति सानुजं । शची - पति - प्रियानुजम् ॥
 त्वदंघ्रिमूल ये नरा । भजंति हीनमत्सराः ।
 पतंति नो भवार्णवे । वितर्क - वीचि - संकुले ॥
 विविक्तवासिनस्सदा । भजंति मुक्तये मुदा ।
 निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकम् ॥
 त्वमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुम् ।
 जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलम् ॥
 भजामि भाववल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभम् ।
 स्व-भक्त - कल्प - पादपं । समं सुसेव्यमन्वहम् ॥
 अनूप - रूप - भूपतिं । नतोऽहमुर्विजापतिम् ।
 प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्जभक्तिदेहि मे ॥
 पठन्ति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदम् ।
 व्रजंति नात्र संशयः । त्वदीयभक्तिसंयुताः ॥

दोहा--विनती करि मुनि नाइ सिरु, कह कर जोरि बहोरि ।

चरनसरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥४॥

अनुसुइया के पद गहि सीता * मिला बहोरि सुसील विनीता ॥
 रिषी-पतिनी-मन सुख अधिकार्ई * आसिष देइ निकट बैठार्ई ॥
 दिव्य बसन भूषन पहिराय * जे नित नूतन अमल सुहाये ॥
 कह रिषिब्रधू सरस मृदु बानी * नारिधरम कछु व्याज बखानी ॥

मातु - पिता - भ्राता - हित - कारी * मितप्रद सब सुनु राजकुमारी ॥
 अमितदानि भर्ता वैदेही * अधम सो नारि जो सेव न तेही ॥
 धीरजु धर्म मित्र अरु नारी * आपदकाल परस्वियहि चारी ॥
 बृद्ध रोगवस जड़ धनहीना * अंध बधिर क्रोधी अतिदीना ॥
 ऐसेहु पति कर किये अपमाना * नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥
 एकइ धर्म एक व्रत नेमा * काय वचन मन पतिपद प्रेमा ॥
 जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं * वेद पुरान संत सब कहहीं ॥
 उत्तम के अम वम मन माहीं * सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥
 मध्यम परपति देखइ कैसें * भ्राता पिता पुत्र निज जैमें ॥
 धर्म विचारि समुक्ति कुल रहई * सो निकृष्ट तिय सृति अस कहई ॥
 बिनु अवसर भय तें रह जोई * जानेहु अधम नारि जग सोई ॥
 पतिबंचक पर-पति-रति करई * रौरव नरक कल्पसत परई ॥
 छन सुख लागि जनम सत कोटी * दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ॥
 बिनु सम नारि परम गति लहई * पति-व्रत-धर्म छाँड़ि छल गहई ॥
 पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई * विधवा होइ पाइ तरुनाई ॥

सोरठा--सहज अपावनि नारि, पति सेवत सुभ गति लहइ ।

जसु गावत सृति चारि, अजहुँ तुलसिका हरिहिप्रिय ॥

सुनु सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं ।

तेहि प्रानप्रिय राम, कहेउँ कथा संसारहित ॥५॥

सुनि जानकी परम सुख पावा * सादर तासु चरनु सिरु नावा ॥
 तव मुनि सन कह कृपानिधाना * आयसु होइ जाउँ वन आना ॥
 संतत मोपर कृपा करेहू * सेवक जानि तजेउ जनि नेहू ॥
 धर्म-धुरंधर प्रभु कै वानी * सुनि सप्रेम बोले मुनि ग्यानी ॥
 जासु कृपा अज सिव सनकादी * चहत सकल परमारथवादी ॥
 ते तुम्ह राम अ-काम-पियारे * दीनबंधु मृदु बचन उचारे ॥
 अब जानी मैं श्रीचतुराई * भजी तुम्हहिं सब देव विहाई ॥
 जेहि समान अतिसय नहिं कोई * ता कर सील कस न अस होई ॥
 केहि विधि कहौं जाहु अब स्वामी * कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥

अस कहि प्रभु विलोकि मुनि धीरा * लोचन जल बह पुलक सरीरा ॥

छन्द-तन पुलकनिर्भर प्रेमपूरन नयन मुख-पंकज दिये ।

मन-ग्यान-गुन-गोतीत प्रभु में दीख जप तप का किये ॥

जप जोग धर्म समूह ते नर भगति अनुपम पावई ।

रघु-वीर-चरित पुनीत निसि दिनु दास तुलसी गावई ॥

दोहा-कलि-मल-समन दमन मन, रामसुजस सुख मूल ।

सादर सुनहिं जे तिन्ह पर, राम रहहिं अनुकूल ॥

सोरठा-कठिन काल मल कोस, धर्म न ग्यान न जोग जप ।

परिहरि सकल भरोस, रामहिं भजहिं ते चतुर नर ॥६॥

मुनि-पद-कमल नाइ करि सीसा * चले बनहिं सुग-नर-मुनि-ईसा ॥

आगे राम अनुज पुनि पाळे * मुनि-बर-बंष वने अति आळे ॥

उभय बीच मिय मोहइ कैसी * ब्रह्म जीव विच माया जैसी ॥

सरिता बन गिरि अवघट घाटा * पति पहिचानि देहिं वर बाटा ॥

जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया * करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया ॥

अथ श्लोक

आश्रम विपुल दीख बनमार्हीं * देवमदन तेहि पटतर नाहीं ॥

बहु तड़ाग सुन्दर अमराई * भाँति भाँति मव मुनिन लगाई ॥

दिव्य विटप बन चहुँदिशि मोहँ * देखत मकल सुगन मन मोहँ ॥

तेहि दिन तहँ प्रभु कीन्ह निवामा * मकल मुनिन्ह मिलिकीन्ह सुपामा ॥

दोहा--निज २ आश्रम बेदिका, तेहिपर तुलसि विराज ।

अनुजजानकी सहित तहँ, राजत भे रघुराज ॥

आनि सुआसन मुदित मन, पूजि पहुनई कीन्ह ।

कंद मूल फल अमियसम, आनिराम कहँ दीन्ह ॥

अनुज मीय मह भोजन कीन्हा * जो जिहि भाव सुभग वर दीन्हा ॥

होत प्रभात मुनिन्ह शिर नावा * आशिर्वाद मवहि मन पावा ॥

सुमिरि उमा सुर मिद्ध गणेशा * पुनि प्रभु चले मुनहु विहंगेशा ॥

बन अनेक सुन्दर गिरि नाना * लाँघत चले जाहिं भगवाना ॥

मिला असुर विराध मगु जाता * गर्जत घोर कठोर रिमाता ॥

रूप भयंकर मानहु काला * बेगवन्त धायेउ जिमि व्याला ॥
 गगन देव मुनि किन्नर नाना * तेहिक्षण हृदय हारि भय माना ॥
 तुरतहि सो सीतहिं लै गयऊ * राम हृदय कछु विरमय भयऊ ॥
 समुझि हृदय कैकैयि कुकरणी * कहा अनुज मन बहुविधि बरणी ॥
 बहुरि लषण रघुवरहि प्रबोधा * पाँच बाण छाँड़े करि क्रोधा ॥
 छंद—भये क्रोध लषण संधानि धनु शर मारि तेहि व्याकुल कियो ।

पुनि उटि निशाचर राखि सीतहिं शूललै धावत भयो ॥

जनु कालदण्ड कराल धावा बिकल सब खग मृग भये ।

धनु तानि श्री रघुवंशमणि पुनि काटि तेहि रजसम किये ॥

दोहा--बहुरि एक शर मारेऊ, परा धरणि धुनि माथ ।

उठा प्रबल पुनि गर्जेउ, चला जहाँ रघुनाथ ॥

ऐसे कहत निशाचर धावा * अब नहिं बचहु तुमहिं मैं खावा ॥

तासु तेज शत मरुत समाना * टूटहिं तरु बहु उड़हिं पषाना ॥

जीव जन्तु जहँ लगि रहे जेते * व्याकुल भाजि चले सब तेते ॥

आव प्रबल यहि विधि जनु भूधर * होइहिं काह कहहिं व्याकुल सुर ॥

उरग समान जोरि शर साता * आवतही रघुवीर निपाता ॥

इति क्षेपक

तुरतहिं रुचिर रूप तेहि पावा * देखि दुखी निजधाम पठावा ॥

पुनि आये जहँ मुनि सरभंगा * सुंदर अनुज जानकी संगी ॥

दोहा--देखि राम-मुख-पंकज, मुनि-बर-लोचन भृङ्ग ।

सादर पान करत अति, धन्य जनम सरभंग ॥ ७ ॥

कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला * संकर - मानस - राज - मराला ॥

जात रहेउँ बिरंचि के धामा * सुनेउ सवन वन ऐहहिं रामा ॥

चितवत पंथ रहेउँ दिन राती * अब प्रभु देखि जुड़ानी आती ॥

नाथ सकल साधन मैं हीना * कीन्ही कृपा जानि जन दीना ॥

सो कछु देव न मोहि निहोरा * निजपन राखेहु जन-मन-चोरा ॥

तब लगि रहहु दीनहित लागी * जब लगि मिलै तुम्हहिं तनु त्यागी ॥

जोग जग्य जप तप व्रत कीन्हा * प्रभु कहँ देइ भगतिबर लीन्हा ॥
एहि विधि सर रचि मुनि सरभंगा * बैठे हृदय छाँड़ि सब संग्गा ॥
दोहा-सीता-अनुज-समेत प्रभु, नील जलद तनु स्याम ।

मम हिय वसहु निरंतर, सगुनरूप श्रीराम ॥ ८ ॥

अस कहि जोग अग्नि तनु जारा * रामकृपा वैकुण्ठ सिधारा ॥
ता तें मुनि हरिलीन न भयऊ * प्रथमहिं भेद भगतिबर लयऊ ॥
रिषिनिकाय मुनि-वर-गति देखी * सुखी भये निज हृदय विसेखी ॥
अस्तुति करहिं सकल मुनिबुंदा * जयति प्रनतहित कुरुनाकंदा ॥
पुनि रघुनाथ चले वन आगे * मुनि-वर-बुंद विपुल संग लागे ॥
अस्थिसमूह देखि रघुराया * पूछा मुनिन्ह लागि अतिदाया ॥
जानतहू पृच्छिय कस स्वामी * सवदरसी तुम्ह अंतरजामी ॥
निसि-चर-निकर सकल मुनि खाये * सुनि रघुनाथ नयन जल छाये ॥
दोहा-निसि-चर-हीन करउँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह ।

सकल मुनिन्ह के आस्रमन्हि, जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥६॥

मुनि अगस्ति कर सिध्य सुजाना * नाम सुतीछन रति भगवाना ॥
मन-क्रम-वचन राम-पद-सेवक * सपनेहु आन भरोम न देवक ॥
प्रभु आगवनु सवन सुनि पावा * करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हे विधि दीनबंधु रघुराया * मो से सठ पर करिहहिं दाया ॥
सहित अनुज मोहि राम गोसाई * मिलिहहिं निज सेवक को नाई ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं * भगति विरति न ग्यान मन माहीं ॥
नहिं सतसंग जोग जप जागा * नहिं दृढ़ चरनकमल अनुरागा ॥
एक बानि करुनानिधान की * सो प्रिय जा के गति न आन की ॥
होइहहिं सुफल आजु मम लोचन * देखि वदनपंकज भवमोचन ॥
निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी * कहि न जाइ सो दमा भवानी ॥
दिसि अरु विदिसि पंथ नहिं सूझा * को मैं चलेउँ कहाँ नहिं बूझा ॥
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई * कबहुँक नृत्य करइ गुन गाई ॥
अविरल प्रेम भगति मुनि पाई * प्रभु देखहिं तरुओट लुकाई ॥
अतिसय प्रीति देखि रघुवीरा * प्रगटे हृदय हरन भवभीरा ॥

मुनि मग माँझ अचल होइ वैसा * पुलकमरीर पनसफल जैसा ॥
 तव रघुनाथ निकट चलि आये * देखि दसा निज जन मन भाये ॥
 मुनिहिं राम बहु भाँति जगावा * जाग न ध्यानजनित मुख पावा ॥
 भूपरूप तव राम दुरावा * हृदय चतुर्भुजरूप देखावा ॥
 मुनि अकुलाइ उठा तव कैसैं * विकल हीनमनि फनिवर जैसैं ॥
 आगे देखि रामतनु स्यामा * मीता-अनुज-महित सुखधामा ॥
 परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी * प्रेममगन मुनिवर वड़भागी ॥
 भुजविमाल गहि लिये उठाई * परमप्रीति राखे उर लाई ॥
 मुनिहिं मिलत अम मोह कृपाला * कनकतरुहि जनु भेंट तमाला ॥
 रामवदन विलोकि मुनि ठाढ़ा * मानहुँ चित्र माँझ लिखि काढ़ा ॥
 दोहा--तव मुनि हृदय धोर धरि, गहि पद बारहिं बार ।

निज आस्रम प्रभु आनि करि, पूजा विविधि प्रकार ॥ १० ॥

कह मुनि प्रभु सुनु विनती मोरी * अस्तुति करौं कवन विधि तोरी ॥
 महिमा अमित मोरि मति थोरी * रघिसनमुख खद्योत अँजोरी ॥
 स्याम - तामरस - दाम - मरीरं * जटा - मुकुट - परिधन - मुनि-चीरं ॥
 पानि - चाप - सर - कटि - तूनीरं * नौमि निरंतर श्री-रघु-वीरं ॥
 मोह - विपिन - धन - दहन-कृमानुः * मंत - मरोरुह - कानन - भानुः ॥
 निमि-चर-करि-वरुथ-मृगराजः * त्रातु सदा नो भव-खग-वाजः ॥
 अरुन - नयन - राजीव - सुवेमं * मीता - नयन - चकोर - निसेसं ॥
 हर - हृदि - मानस-राज-मरालं * नौमि राम-उर-बाहु-विमालं ॥
 संमय - सर्प - ग्रसन - उरगादः * ममन-सु-कर्कस - तर्क - विषादः ॥
 भव - भंजन - रंजन-सुर - जथः * त्रातु मदा नो कृपावरुथः ॥
 निर्गुन-मगुन-विषम - सम-रूपं * ज्ञान - गिरा - गो - तीतमनूपं ॥
 अमल-मखिल - मन - वद्यमपारं * नौमि रामभंजन-महि-भारं ॥
 भक्त - कल्प - पादप - आरामः * तर्जन - क्रोध - लोभ - मद - कामः ॥
 अति - नागर - भव - सागर - सेतुः * त्रातु मदा दिन-कर-कुल-केतुः ॥
 अतुलित-भुज - प्रताप - बल-धामः * कलि-मल-विपुल - विभंजन - नामः ॥
 धर्मवर्म नर्मद गुनग्रामः * संतत संतनोतु मम रामः ॥



ऋषिषनी मन सुख अधिक्कई * आशिष दीन्ह निक्क वैठई ॥

भार्यव भूपत प्रेम, बनारम ॥ काशी रास

जदपि विरजव्यापक अविनासी * सब के हृदय निरंतर वासी ॥
 तदपि अनुज-श्री-सहित खरारी * बसतु मनसि मम काननचारी ॥
 जे जानहिं ते जानहु स्वामी * सगुन अगुन उर-अंतर-जामी ॥
 जो कोसलपति राजिवनयना * करौ सो राम हृदय मम अयना ॥
 अस अभिमान जाइ जनि भोरें * मैं सेवक रघुपति पति मोरें ॥
 मुनि मुनिवचन राममन भाये * बहुरि हरषि मुनिवर उर लाये ॥
 परम प्रसन्न जानु मुनि मोही * जो बर माँगहु देउँ सो तोही ॥
 मुति कह मैं बर कवहुँ न जाँचा * समुझि न परै भूठ का साँचा ॥
 तुम्हहिं नीक लागै रघुराई * सो मोहि देहु दास-सुख-दाई ॥
 अविरल भगति विरति विग्याना * होहु सकल-गुन-ग्यान-निधाना ॥
 प्रभु जो दीन्ह सो बरु मैं पावा * अब सो देहु मोहिं जो भावा ॥
 दोहा—अनुज-जानकी-सहित प्रभु, चाप-बान-धर राम ।

मम हियगगन इंदु इव, बसहु सदा निःकाम ॥११॥

एवमस्तु कहि रमानिवामा * हरषि चले कुंभज रिषि पामा ॥
 बहुत दिवस गुरुदरसन पाये * भये मोहिं एहि आश्रम आये ॥
 अब प्रभु मंग जाउँ गुरु पाहीं * तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥
 देखि कृपानिधि मुनिचतुराई * लिये मंग विहँसे दोउ भाई ॥
 पंथ कहत निज भगति अनूपा * मुनिआस्रम पहुँचे सुरभूपा ॥
 तुरत सुतीच्छन गुरु पहिं गयऊ * करि दंडवत कहत अम भयऊ ॥
 नाथ कोमलाधीसकुमारा * आये मिलन जगतआधारा ॥
 राम अनुज ममेत वेदेही * निमि दिनु देव जपत हहु जेही ॥
 सुनत अगस्त तुरत उटि धाये * हरि बिलोकि लोचन जल छाये ॥
 मुनि-पद-कमल परे दोउ भाई * रिषि अतिप्रीति लिये उर लाई ॥
 सादर कुमल पछि मुनि ग्यानी * आसन पर बैठारे आनी ॥
 पुनि करि बहु प्रकार प्रभुपूजा * मोहि सम भागवंत नहिं दूजा ॥
 जहँ लगि रहे अपर मुनिबृंदा * हरपे सब बिलोकि सुखकंदा ॥

दोहा—मुनिसमूह महँ बैठे, सनमुख सब की ओर ।

सरदइंदु तन चितवत, मानहुँ निकर चकोर ॥१२॥

तव रघुवीर कहा मुनि पाहीं ❀ तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
 तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ ❀ ता तें तात न कहि समुझायउँ ॥
 अत्र सो मंत्र देहु प्रभु मोही ❀ जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥
 मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु वानी ❀ पूछेहु नाथ मोहि का जानी ॥
 तुम्हरेंइ भजनप्रभाव अधारी ❀ जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी ॥
 उमरितरु विसाल तव माया ❀ फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥
 जीव चराचर जंतुममाना ❀ भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥
 ते फलभच्छक कठिन कराला ❀ तव भय डरत सदा सोउ काला ॥
 ते तुम्ह सकल लोकपति माई ❀ पूछेहु मोहि मनुज की नाई ॥
 यह वर माँगौं कृपानिकेता ❀ बसहु हृदय श्री-अनुज-ममेता ॥
 अविग्ल भगति विरति मतमंगा ❀ चरनमरोरुह प्रीति अभंगा ॥
 जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता ❀ अनुभवगम्य भजहिं जेहि मंता ॥
 अस तव रूप बखानउँ जानउँ ❀ फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ ॥
 संतत दासन्ह देहु वड़ाई ❀ ता तें मोहि पूछेहु रघुराई ॥
 हे प्रभु परम मनोहर ठाऊँ ❀ पावन पंचवटी तेहि नाऊँ ॥
 दंडक वन पुनीत प्रभु करहु ❀ उग्र साप मुनिवर कर हरहु ॥
 वास करहु तह रघु-कुल-राया ❀ कीजिय सकल मुनिन्ह पर दाया ॥
 चले राम मुनिआयसु पाई ❀ तुरतहिं पंचवटी नियराई ॥
 दोहा—गोधराजसौं भेंट भइ, बहु विधि प्रीति दृढाइ ।

गोदावरो निकट प्रभु, रहे परनगृह छाइ ॥१३॥

जब तें राम कोन्ह तहँ वासा ❀ सुखी भये मुनि वीती त्रासा ॥
 गिरि वन नदी ताल छवि छाये ❀ दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाये ॥
 स्वग-मृग-वृन्द अनंदित रहहीं ❀ मधुपु मधुर गुंजत छवि लहहीं ॥
 सो वन वरनि न सक अहिराजा ❀ जहाँ प्रगट रघुवीर विराजा ॥
 एक वार प्रभु सुख आसीना ❀ लज्जिमन वचन कहे छलहीना ॥
 सुर नर मुनि सचराचर साई ❀ में पूछउँ निज प्रभु की नाई ॥
 मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा ❀ सब तजि करौं चरन-रज-सेवा ॥
 कहहु ग्यान विराग अरु माया ❀ कहहु सो भगति करहु जेहि दाया ॥

दोहा—ईस्वर जीर्वाह भेद प्रभु, कहहु सकल समुभाइ ।

जा तें होइ चरन रति, सोक मोह भ्रम जाइ ॥१४॥

थोरेहि महँ सब कहउँ बुभाई * सुनहु तात मति मन चित लाई ॥
 मैं अरु मोरु तोर तैं माया * जेहि बस कीन्हे जीवनिकाया ॥
 गो गोचर जहँ लगि मन जाई * मो सब माया जानेहु भाई ॥
 तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ * विद्या अपर अविद्या दोऊ ॥
 एक दुष्ट अतिमय दुखरूपा * जा बस जीव परा भवकृपा ॥
 एक रचइ जग गुनबस जा कें * प्रभुपेरित नहिं निज बल ता कें ॥
 ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं * देख ब्रह्म समान सब माहीं ॥
 कहिय तात सो परम विरागी * तृनमम मिद्धि तीनि गुन त्यागी ॥
 दोहा—माया ईस न आपु कहँ, जान कहिय सो जीव ।

बंध मोच्छप्रद सर्व पर, माया प्रेरक सीव ॥१५॥

धर्म तें विरति जोग तें ग्याना * ग्यान-मोच्छ-प्रद वेद वखाना ॥
 जा तें बेगि द्रवउँ मैं भाई * सो मम भगति भगत-सुखदाई ॥
 सो सुतंत्र अवलंब न आना * तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥
 भगति तात अनुपम सुखमूला * मिलइ जो मंत होहिं अनुकूला ॥
 भगति के साधन कहउँ वखानी * सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी ॥
 प्रथमहिं विप्रचरन अतिप्रीती * निज निज कर्म निरत सुतिरीती ॥
 यहि कर फल पुनि विषयविरागा * तव मम धरम उपज अनुरागा ॥
 सवनादिक नव भगति दृढाहीं * मम लीला रति अति मन माहीं ॥
 संत-चरन-पंकज अति प्रेमा * मन क्रम वचन भजन दृढ़ नेमा ॥
 गुरु पितु मातु बंधु पति देया * मव मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा ॥
 मम गुन गावत पुतक मरीरा * गदगद गिरा नयन बह नीरा ॥
 काम आदि मद दंभ न जा के * तात निरंतर वम मैं ता के ॥
 दोहा—वचन करम मन मोरि गति, भजन करहिं निःकाम ।

तिन्ह के हृदय कमल महँ, करउँ सदा विश्वास ॥१६॥

भगतिजोग सुनि अति सुख पावा * लज्जिमन प्रभुचरनन्हि मिरुनावा ॥
 एहि विधि गये कलुक दिन बीती * कहत विराग ग्यान गुन नीती ॥

कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई * धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई ॥
 धूरि पूरि नभमंडल रहा * राम बोलाइ अनुज सन कहा ॥
 लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर * आवा निसि-चर-कटकु भयंकर ॥
 रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी * चले सहित श्री सर-धनु-पानी ॥
 देखि राम रिपुदल चलि आवा * विहँसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

छंद-कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बाँधत सोह क्यों ।

मरकत सयल पर लरत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों ॥

कटि कसि निषंग विसाल भुज गहि चाप बिसिख सुधारि कै ।

चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गज-राज-घटा निहारि कै ॥

सोरठा-आइ गये बग मेल, धरहु धरहु धावत सुभट ।

जथा विलोकि अकेल, बालरविहिं घेरत दनुज ॥१८॥

प्रभु विलोकि सर सकहिं न डारी * थकित भई रजनी-चर-धारी ॥

सचिव बोलि बोले खरदूपन * यह कोउ नृपबालक नरभूपन ॥

नाग असुर सुर नर मुनि जेते * देखे जिते हते हम केते ॥

हम भरि जनम सुनहु सब भाई * देखी नहिं असि सुंदरताई ॥

जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरूपा * बध लायक नहिं पुरुष अनूपा ॥

देहु तुरत निजनारि दुराई * जीअत भवन जाहु दोउ भाई ॥

मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु * तासु बचन सुनि आतुर आवहु ॥

दूतन्ह कहा राम सन जाई * सुनत राम बोले मुमुकाई ॥

हम क्षत्री मृगया बन करहीं * तुम्ह सेखल मृग खोजत फिरहीं ॥

रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं * एक वार कालहु सन लरहीं ॥

जद्यपि मनुज दनुज-कुल-घालक * मुनिपालक खल सालक बालक ॥

जौं न होइ बल घर फिरि जाहू * समरविमुख मैं हतउँ न काहू ॥

रन चढ़ि करिय कपट चतुराई * रिपु पर कृपा परम कदराई ॥

दूतन्ह जाइ तुरत सब कहेऊ * सुनि खरदूपन उर अति दहेऊ ॥

छंद-उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाये विकट भट रजनीचरा ।

सर - चाप - तोमर - सक्ति - मूल-कृपान- परिघ - परसु - धरा ॥

प्रभु कीन्हि धनुषकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा ।
भये वधिर व्याकुल जातुधान न ग्यान तेहि अवसर रहा ॥

दोहा--सावधान होइ धायै, जानि सबल आराति ।

लागे वरपन राम पर, अस्त्र सस्त्र बहु भाँति ॥

तिन्ह के आयुध तिल सम, करि काटे रघुवीर ।

तानि सरासन सवन लागि, पुनि छाँड़े निज तीर ॥१६॥

तोमर छंद—तब चले बान कराल * फुंकरत जनु बहु व्याल ॥
कोपेउ समर श्रीराम * चले विमिख निसित निकाम ॥
अवलोकि खरतर तीर * मुरि चले निसिचर वीर ॥
भये क्रुद्ध तीनिउ भाइ * जो भागि रन तें जाइ ॥
तेहि बंधव हम निजपानि * फिरे मरन मन महुँ ठानि ॥
आयुध अनेक प्रकार * मनमुख तें करहिं प्रकार ॥
रिपु परम कोपे जानि * प्रभु धनुष सर संधानि ॥
छाँड़े विपुल नाराच * लगे कटन विकट पिसाच ॥
उर सीस भुज कर चरन * जहँ तहँ लगे महि परन ॥
चिकरत लागत बान * धर परत कु - धर - समान ॥
भट कटत तन सतखंड * पुनि उठत करि पाखंड ॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड * विनु मौलि धावत रुंड ॥
खग कंक काक सृगाल * कटकटहिं कठिन कराल ॥

छंद—कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच खप्पर संचहीं ।
बेताल वीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं ॥
रघु-वीर-वान प्रचंड खंडहिं भटन्ह के उर भुज सिरा ।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धरु धरु धरु करहिं भयंकर गिरा ॥
अंतावरी गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं ।
संग्राम-पुर-आसी मनहुँ बहुवाल गुड़ी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे विपुल भट कहँरत परे ।
अवलोकि निज दल विकट भट तिसिरादि खर दूषन फिरे ॥
सर सक्ति तौमर परसु सूल कृपान एकहिं बारहीं ।

करि कोप श्रीरघुवीर पर अगनित निसाचर डारहौं ॥
 प्रभु निमिष महँ रिपुसर निवारि प्रचारि डारे सायका ।
 दस दस विसिख उर माँझ मारे सकल निसि-चर-नायका ॥
 महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अतिघनी ।
 सुर डरत चौदहसहस प्रेत विलोकि एक अवधधनी ॥
 सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अतिकौतुक कन्यो ।
 देखहिं परसपर राम करि संग्राम रिपदल लरि मन्यो ॥
 दोहा-राम राम कहि तनु तजहिं, पावाहं पद निर्वान ।

करि उपाय रिपु मारे, छन महँ कृपानिधान ॥

हरपित बरपहिं सुमन सुर, वाजहिं गगन निसान ।

अस्तुति करि करि सब चले, सोभितविविध विमान ॥२०॥

जव रघुनाथ समर रिपु जीते * सुर नर मुनि मत्र के भय बीते ॥
 तव लल्लिमनु सीतहिं लै आये * प्रभु पद परत हरपि उर लाये ॥
 सीता चितव स्याम मृदु गाता * परम प्रेम लोचन न अघाता ॥
 पंचवटी वमि श्री - रघु - नायक * करत चरित सुर-मुनि-मुख-दायक ॥
 धुआँ देखि खरदूपन केरा * जाइ सुपनखा रावनु प्रेरा ॥
 बोली बचन क्रोध करि भारी * देस कोस के सुरति विमारी ॥
 करसि पान सोवसि दिनु राती * सुधि नहिं तव सिर पर आराती ॥
 राजु नीति विनु धन विनु धर्मा * हरिहि समर्पे विनु सतकर्मा ॥
 विद्या विनु विवेक उपजाये * सम फल पढ़े किये अरु पाये ॥
 संग तें जती कुमंत्र तें राजा * मान तें ज्ञान पान तें लाजा ॥
 प्रीति प्रनय विनु मद तें गुनी * नासहिं वेगि नीति असि सुनी ॥

सोरठा--रिपु रुज पावक पाप, प्रभु अहि गनियन छोट करि ।

अस कहि विविध विलाप, करि लागी रोदन करन ॥

दोहा--सभा माँझ परि व्याकुल, बहु प्रकार कह राइ ।

तोहि जियत दसकंधर, मोरि कि असि गति होइ ॥२१॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई * समुझाई गाह वाह उठाई ॥
 कह लंकेस कहसि किन वाता * केइ तव नासा कान निपाता ॥

अवधनृपति दसरथ के जाये * पुरुषसिंह बन खेलन आये ॥
 समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी * रहित निसाचर करिहहिं धरनी ॥
 जिन्हकर भुजवल पाइ दसानन * अभय भये विचरत मुनि कानन ॥
 देखत बालक कालसमाना * परमधीर धन्वी गुन नाना ॥
 अतुलित-बल-प्रताप दोउ भ्राता * खल-बध-रत-सुर-मुनिसुख-दाता ॥
 मोभाधाम राम अम नामा * तिन्ह के संग नारि एक स्यामा ॥
 रूपरामि विधि नारि मँवारी * रति सतकोटि तासु बलिहारी ॥
 तासु अनुज काटे सुति नामा * सुनि तवु भगिनि करहिं परिहासा ॥
 खरदूपन सुनि लगै पुकारा * छन महँ सकल कटक उन्ह मारा ॥
 खर-दूपन-तिमिरा कर घाता * सुनि दससीस जरे सब गाता ॥
 दोहा-सूपनखहि समुभाइ करि, बल बोलेसि बहु भाँति ।

गयेउ भवन अति-सोच-बस, नींद परइ नहिं राति ॥२२॥

सुर नर अमुर नाग खग माहीं * मोरे अनुचर कहँ कोउ नार्हीं ॥
 खरदूपन मोहिं सम बलवंता * तिन्हहिं को मारइ विनु भगवंता ॥
 सुररंजन भंजन महिभारा * जौं भगवंत लीन्ह अवतारा ॥
 तौ मैं जाइ वयरु हठि करऊँ * प्रभुसर प्रान तजे भव तरऊँ ॥
 होइहि भजनु न तामम देहा * मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा ॥
 जौं नररूप भूपसुत कोऊ * हरिहउँ नारि जीति रन दोऊ ॥
 चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ * बम मारीच सिंधु तट जहवाँ ॥
 इहाँ राम जमि जुगुति बनाई * सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥
 दोहा-लछिमन गये बनहिं जब, लेन मूल फल कंद ।

जनकसुता सन बोले, विहँसि कृपा-सुख-बृंद ॥२३॥

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुसीला * मैं कछु करव ललित नरलीला ॥
 तुम्ह पावक महँ करहु निवासा * जौं लगी करउँ निसा-चर-नासा ॥
 जबहिं राम सबु कहा बखानी * प्रभु पद धरि हिय अनल समानी ॥
 निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता * तैसइ सील रूप सुबिनीता ॥
 लछिमनहँ यह मरम न जाना * जो कछु चरित रचेउ भगवाना ॥
 दसमुख गयउ जहाँ मारीचा * नाइ माथ स्वारथरत नीचा ॥

नवनि नीच कै अति दुखदाई * जिमि अंकुस धनु उरग विलाई ॥
 भयदायक खल कै प्रिय बानी * जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥
 दोहा-करि पूजा मारीच तब, सादर पूछी बात ।

कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयहु तात ॥२४॥
 दसमुख सकल कथा तेहि आगे * कही महित अभिमान अभागे ॥
 होहु कपटमृग तुम्ह झलकारी * जेहि विधि हरि आनउँ नृपनारी ॥
 तेहि पुनि कहा सुनहु दससीसा * ते नररूप चरा - चर - ईसा ॥
 ता सों तात बयरु नहिं कीजै * मारे मरिय जिआये जीजै ॥
 मुनिमख राखन गयउ कुमारा * विनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥
 सत जोजन आयउँ छन माहीं * तिन्ह सन बयरु किये भल नाहीं ॥
 भइ मम कीट भुंग की नाई * जहँ तहँ में देखउँ दोउ भाई ॥
 जौ नर तात तदापि अति सूरा * तिन्हहिं विरोधि न आइहि पूरा ॥
 दोहा-जेहि ताड़का सुबाहु हति, खंडेउ हरकोदंड ।

खर दूषन तिसिरा बधेउ, मनुज कि अस बखिंड ॥२५॥
 जाहु भवन कुलकुसल विचारी * सुनत जरा दीन्हेसि बहु गारी ॥
 गुरु जिमि मूढ़ करसि मम बोधा * कहु जग मोहि समान को जोधा ॥
 तब मारीच हृदय अनुमाना * नवहि विरोधे नहिं कल्याना ॥
 सखी मर्मी प्रभु सठ धनी * वैद्य बंदि कवि भानस गुनी ॥
 उभय भाँति देखा निजमरना * तब ताकेमि रघु-नायक-मरना ॥
 उतरु देत मोहि बधव अभागे * कस न मरउँ रघु-पति-सर लागे ॥
 अस जिय जानि दसाननसंगा * चला राम-पद-प्रेम अभंगा ॥
 मन अति हरष जनाव न तेही * आजु देखिहउँ परममनेही ॥

छंद-निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहउँ ।

श्रीसहित अनुजसमेत कृपा-निकेत-पद मन लाइहउँ ॥

निर्बानदायक क्रोध जा कर भगति अवसहिं वम करी ।

निजपानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुखसागर हरी ॥

दोहा-मम पाछे धर धोवत, धरे सरासन वान ।

फिरि फिरि प्रभुहिं विलोकिहउँ, धन्य न मोसम आन ॥२६॥

तेहि बन निकट दसानन गयऊ ॥ तव मारीच कपटमृग भयऊ ॥
 अतिविचित्र कछु बरनि न जाई ॥ कनकदेह मनि रचित बनाई ॥
 सीता परमरुचिर मृग देखा ॥ अंग अंग सुमनोहर बंखा ॥
 सुनहु देव रघुवीर कृपाला ॥ एहि मृग कर अतिसुंदर बाला ॥
 सत्यबंध प्रभु बध कर एही ॥ आनहु चर्म कहति वैदेही ॥
 तव रघुपति जानत सब कारन ॥ उठे हरपि सुरकाज सँवारन ॥
 मृग विलोकि कटि परिकर बाँधा ॥ करतल चाप रुचिरसर साँधा ॥
 प्रभु लछिमनहिं कहा समुभाई ॥ फिरत विपिन निसिचर बहु भाई ॥
 सीता केरि करेहु रखवारी ॥ बुधि विवेक बल समय विचारी ॥
 प्रभुहि विलोकि चला मृग भाजी ॥ धाये राम सरामन साजी ॥
 निगम नति सिव ध्यान न पावा ॥ मायामृग पाछे सो धावा ॥
 कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई ॥ कबहुँक प्रगटइ कबहुँ छपाई ॥
 प्रगटत दुरत करत बल भूरी ॥ एहि विधि प्रभुहि गयउ लेइ दूरी ॥
 तव तकि राम कठिन सर मारा ॥ धरनि परेउ करि घोर पुकारा ॥
 लछिमन कै प्रथमहि लै नामा ॥ पाछे सुमिरेसि मन महुँ रामा ॥
 प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा ॥ सुमिरेसि राम समेत सनेहा ॥
 अंतरप्रेमु तासु पहिचाना ॥ मुनि-दुर्लभ-गति दीन्हि सुजाना ॥
 दोहा--विपुल सुमन सुर बरषहिं, गावहिं प्रभु-गुन-गाथ ।

निजपद दीन्ह असुर कहूँ, दीनबंधु रघुनाथ ॥२७॥

खल बधि तुरत फिरे रघुवीरा ॥ सोह चाप कर कटि तूनीरा ॥
 आरतगिरा सुनी जब सीता ॥ कह लछिमन सन परम समीता ॥
 जाहु बेगि संकट अति भ्राता ॥ लछिमन त्रिहँसि कहा सुनु माता ॥
 भृकुटिविलास सृष्टि लय होई ॥ मपनेहु संकट परइ कि सोई ॥
 मरमवचन जब सीता बोला ॥ हरिप्रेरित लछिमनमन डोला ॥
 बन-दिसि-देव सौँपि सब काहू ॥ चले जहाँ रावन-समि-राहू ॥
 सून बीच दसकंधर देखा ॥ आवा निकट जती के भेखा ॥
 जा के डर सुर असुर डेराहीं ॥ निमि न नींद दिन अन्न न खाहीं ॥
 सो दससीस स्वान की नाई ॥ इत उत चितइ चली भडिहाई ॥

इमि कुपंथ पग देत खगोसा * रह न तेज तन बुधिलव - लेसा ॥
 नाना विधि कहि कथा सुहाई * राजनीति भय प्रीति देखाई ॥
 कह सीता सुनु जती गोसाईं * बोलेहु वचन दुष्ट की नाईं ॥
 तव रावन निज रूप देखावा * भई सभय जब नाम सुनावा ॥
 कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा * आइ गयउ प्रभु खल रहु ठाढ़ा ॥
 जिमि हरिवधुहि छुद्र सस चाहा * भयसि कालवस निसिचर नाहा ॥
 सुनत वचन दससीस लजाना * मन महुँ चरन बंदि सुख माना ॥
 दोहा-क्रोधवंत तव रावन, लीन्हेसि रथ बैठाइ ।

चला गगनपथ आतुर, भय रथ हाँकि न जाइ ॥ २८ ॥

हा जगदेकवीर रघुराया * केहि अपराध विसारेहु दाया ॥
 आरतिहरन सरन-सुख-दायक * हा रघु-कुल-सरोज-दिन-नायक ॥
 हा लछिमन तुम्हार नहिं दोसा * सो फल पायेउँ कीन्हेउँ रोमा ॥
 विविधि विलाप करति बैदेही * भूरिकृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
 विपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा * पुरोडाम चह रामम खावा ॥
 सीता के विलाप सुनि भारी * भये चराचर जीव दुखारी ॥
 गीधराज सुनि आरत वानी * रघु-कुल-तिलक-नारि पहिचानी ॥
 अधम निमाचर लीन्हे जाई * जिमि मलेच्छवस कपिला गाई ॥
 सीते पुत्रि करसि जनि त्रामा * करिहउँ जातुधान कै नामा ॥
 धावा क्रोधवंत खग कैसे * छूटइ पवि पर्वत कहुँ जैसे ॥
 रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही * निर्भय चलेसि न जानेसि मोही ॥
 आवत देखि कृतांतसमाना * फिरि दसकंधर कर अनुमाना ॥
 की मैनाक कि खगपति होई * मम बल जान सहित पति मोई ॥
 जाना जरठ जटायू एहा * मम करतीरथ छाडिहि देहा ॥
 सुनत गीध क्रोधातुरे धावा * कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥
 तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू * नाहिं त अस होइहि बहुवाहू ॥
 राम-रोष - पावक अतिधोरा * होइहि सलभ सकलकुल तोरा ॥
 उतरु न देत दसानन जोधा * तबहिं गीध धावा करि क्रोधा ॥
 धरि कच विरथ कीन्ह महि गिरा * सीसहिं राखि गीध पुनि फिरा ॥

चोचन मारि विदारिसि देही * दंड एक भइ मुरुझा तेही ॥
 तव सक्रोध निसिचर खिमियाना * काटेमि परमकराल कृपाना ॥
 काटेमि पंख परा खग धरनी * सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ॥
 सीतहि जान चढाइ बहोरी * चला उताइल त्रास न थोरी ॥
 करति विलाप जात नभ तीता * व्याधविवस जुनु मृगी सभिता ॥
 गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी * कहि हरिनामु दीन्ह पट डारी ॥
 एहि विधि सीतहिसो लेइ गयऊ * बन असोक महुँ राखत भयऊ ॥
 दोहा--हारि परा खल बहुविधि, भय अरु प्रीति देखाइ ।

नव असोकपादप तर, राखेसि जतनु कराइ ॥

जेहि विधि कपटकुरंग सँग, धाइ चले श्रीराम ।

सो सवि सीता राखि उर, रटति रहति हरिनाम ॥२६॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी * बाहिज चिंता कीन्हि बिसेखी ॥
 जनकसुता परिहरेउ अकेली * आयहु तात बचन मम पेली ॥
 निसि-हर निकर फिरहिं बन माहीं * मम मन सीता आस्रम नाहीं ॥
 गहि पदकमल अनुज कर जोरी * कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी ॥
 अनुजसमेत गये प्रभु तहवाँ * गोदावरितट आश्रम जहवाँ ॥
 आस्रम देखि जानकीहीना * भये विकल जस प्राकृत दीना ॥
 हा गुनखानि जानकी सीता * रूप - सील - व्रत - नेम - पुनीता ॥
 लल्लिमन समुभाये बहु भाँती * पूछत चले लता तरु पाती ॥
 हे खग मृग हे मधुकरखेनी * तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ॥
 खंजन सुक कपोत मृग मीना * मधुपनिकर कोकिला प्रवीना ॥
 कुंद कली दाडिम दामिनी * कमल सरद समि अहिभामिनी ॥
 बरुनपास मनोजधनु हंभा * गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ॥
 श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं * नेकु न संक सकुच मन माहीं ॥
 सुनु जानकी तोहि विनु आजू * हरषे सकल पाइ जुनु राजू ॥
 किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं * प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ॥
 एहि विधि खोजत विलपत स्वामी * मनहुँ महाबिरही अतिकामी ॥
 पूरनकाम राम सुखरासी * मनुजचरित कर अज अबिनासी ॥

आगे परा गीधपति देखा * सुमिरत रामचरन जिन्ह रेखा ॥
दोहा-करसरोज सिरु परसेउ, कृपासिंधु रघुबीर ।

निरखिराम-छवि-धाम-मुख, बिगत भई सब पीर ॥३०॥

तव कह गीध बचन धरि धीरा * सुनहु राम भंजन भवभीरा ॥
नाथ दसानन यह गति कीन्ही * तेहि खल जनकसुता हरि लीन्ही ॥
लेइ दच्छिन दिमि गयउ गोमाई * बिलपति अति कुररी की नाई ॥
दरस लागि प्रभु राखेउ प्राणा * चलन चहत अब कृपानिधाना ॥
राम कहा तनु राखहु ताता * मुख मुसुकाइ कही तेहि बाता ॥
जा कर नाम मरत मुख आवा * अधमहुँ मुकुत होइ सुति गावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगे * राखेउ देह नाथ केहि लागे ॥
जल भरि नयन कहहिं रघुराई * तात कर्म निज तें गति पाई ॥
परहित बम जिन्ह के मन माहीं * तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कलु नाही ॥
तनु तजि तात जाहु मम धामा * देउँ काह तुम्ह पूरनकामा ॥
दोहा--सीताहरन तात जनि, कहेउ पिता सन जाइ ।

जौं मैं राम त कुल सहित, कहिहि दसानन आइ ॥३१॥

गीध देह तजि धरि हरिरूपा * भूपन बहु पट पीत अनूपा ॥
स्याम गात विमाल भुज चारी * अस्तुति करत नयन भरि वारी ॥

छंद-दय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुनप्रेरक सही ।

जम - सीम - बाहु - प्रचंड-खंडन चंडसर मंडन मही ॥

पाथोदगात सरोजमुख राजीव-आयत-लोचनं ।

नित नौमि राम कृपाल बाहुविमाल भव-भय-मोचनं ॥

बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं ।

गोविंद गोपद द्वंदहर विज्ञानधन धरनीधरं ॥

जे राममंत्र जपंत संत अनंत जन-मन-रंजनं ।

नित नौमि राम अकामप्रिय कामादि-खल-दल-गंजनं ॥

जेहि सुति निरंजन ब्रह्म व्यापक विरज अज कहि गावहीं ।

करि ध्यान ज्ञान विराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ॥

सो प्रगट करुनाकंद सोभाबृंद अग जग मोहई ।

मम हृदय-पंकज-भृंग अंग अनंग बहु छवि सोहई ॥
 जो अगम सुगम सुभावनर्मल असम सम सीतल सदा ।
 पस्यंति जे जोगी जतनु करि करत मन गो बस जदा ॥
 सो राम रमानिवास संतत दामबस त्रि-भुवन-धनी ।
 मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी ॥
 दोहा--अविरल भगति माँगि बर, गीध गयेउ हरिधाम ।

तेहि की क्रियो जथोचित, निज कर कीन्ही राम ॥३२॥

कोमलचित अति दीनदयाला * कारन बिनु रघुनाथ कृपाला ॥
 गीध अधमखग आमिषभोगी * गति दीन्ही जो जाँचत जोगी ॥
 सुनहु उमा ते लोग अभागी * हरि तजि होहिं विषयअनुरागी ॥
 पुनि सीतहि खोजत दोउ भाई * चले विलोकत बन बहुताई ॥
 संकुल लता विटप घन कानन * बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ॥
 आवत पंथ कबंध निपाता * तेहि सब कही साप के वाता ॥
 दुर्वासा मोहि दीन्ही सापा * प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥
 सुतु गंधर्व कहउँ मैं तोही * मोहि न सुहाइ ब्रह्मकुल-द्रोही ॥

दोहा--मन क्रमवचन कपट तजि, जो कर भू-सुर-सेव ।

मोहि समेत विरंचि सिव, बस ता के सब देव ॥३३॥

सापत ताडत परुष कहंता * विप्रपूज्य अस गावहिं संता ॥
 पूजिय विप्र सील-गुन-हीना * सूद्र न गुन-गन-ज्ञान-प्रवीना ॥
 कहि निज धर्म ताहि समुझावा * निज-पद-प्रीति देखि मन भावा ॥
 रघु-पति चरन-कमल सिरु नाई * गयउ गगन आपनि गति पाई ॥
 ताहि देइ गति रामु उदारा * सबरी के आस्रम पगु धारा ॥
 सबरी देखि रामु गृह आये * मुनि के वचन समुझि जिय भाये ॥
 सरसि-ज - लोचन बाहुविसाला * जटामुकुट सिर उर बनमाला ॥
 स्याम गौर सुंदर दोउ भाई * सबरी परी चरन लपटाई ॥
 प्रेममगन मुख वचन न आवा * पुनि पुनि पदसरोज सिरु नावा ॥
 सादर जल लेइ चरन पखारे * पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥

दोहा-कंद मूल फल सुरस अति, दिये राम कहूँ आनि ।

प्रेमसहित प्रभु खाये, वारंवार बखानि ॥३४॥
 पानि जोरि आगे भइ ठाढ़ी * प्रभुहिं बिलोकि प्रीति उर बाढ़ी ॥
 केहि विधि अस्तुति करउँ तुम्हारी * अधम जाति मैं जडमति भारी ॥
 अधम तें अधम अधम अति नारी * तिन्ह महुँ मैं मतिमंद अधारी ॥
 कह रघुपति सुनु भामिनि वाता * मानउँ एक भगति कर नाता ॥
 जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई * धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
 भगतिहीन नर सोहइ कैसा * विनु जल वारिद देखिय जैसा ॥
 नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं * सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥
 प्रथम भगति संतन्ह कर संगी * दूसरि रति मम कथा प्रसंगी ॥

दोहा-गुरु-पद-पंकज-सेवा, तीसरि भगति अमान ।

चौथि भगति मम गुनगन, करइ कपट तजि गान ॥३५॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विस्वासा * पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥
 छठ दम सील विरति बहु कर्मा * निरत निरंतर सज्जन धर्मा ॥
 सातव सम मोहि मय जग देखा * मो तें संत अधिक करि लेखा ॥
 आठव जथालाभ संतोषा * सपनेहु नहिं देखइ परदोषा ॥
 नवम सरल सब सन छलहीना * मम भरोस हिय हरप न दीना ॥
 नव महुँ एकउ जिन्ह के होई * नागि पुरुष सचराचर कोई ॥
 सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे * सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे ॥
 जोगि - बृंद - दुर्लभ - गति जोई * तो कहूँ आजु सुलभ भइ सोई ॥
 मम दरसनफल परम अनूपा * जीव पाव निज सहज सरूपा ॥
 जनकसुता कै सुधि कहु भामिनि * जानहि कहु जो करि-वर-गामिनि ॥
 पंपासरहि जाहु रघुराई * तहँ होइहि सुग्रीवमिताई ॥
 सो सब कहिहि देव रघुबीरा * जानतहू पूछहु मतिधोरा ॥
 बार बार प्रभुपद मिरु नाई * प्रेममहित सब कथा सुनाई ॥

छंद-कहि कथा मकल बिलोकि हरिमुख हृदय पदपंकज धरे ।

तजि जोगपावक देह हरिपद लीन भइ जहँ नहिं फिरे ॥

नर विविध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू ।

विस्वास करि कह दाम तुलसी रामपद अनुरागहू ॥

दोहा--जातिहीन अघ जनम महि, मुकुति कीन्हि असि नारि ।

महा-मंद-मन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥३६॥

चले राम त्यागा बन सोऊ * अ-तुलित-बल नरकेहरि दोऊ ॥

बिरही इव प्रभु करत विषादा * कहत कथा अनेक संवादा ॥

लछिमन देखु विपिन कह सोभा * देखतु केहि कर मन नहिं छोभा ॥

नारि सहित मव खग-मृग-बृंदा * मानहुँ मोरि करत हहिं निंदा ॥

हमहिं देखि मृगनिकर पराहीं * मृगी कहहिं तुम्ह कहँ भय नाही ॥

तुम्ह आनंद करहु मृगजाये * कंचनमृग खोजन ए आये ॥

संग लाइ करिनी करि लेहीं * मानहुँ मोहि सिखावन देहीं ॥

सास्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिय * भूप सुसेवित वस नहिं लेखिय ॥

राखिय नारि जदपि उर माहीं * जुवती सास्र नृपति वस नाही ॥

देखहु तात बसंत सुहावा * प्रियाहीन मोहि भय उपजावा ॥

दोहा--विरहविकल बलहीन मोहि, जानेसि निपट अकेल ।

सहित विपिन मधुकर खग, मदन कीन्हि बगमेल ॥

देखि गयउ भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात ।

डेरा कोन्हेउ मनहुँ तव, कटकु हटकि मनजात ॥३७॥

विटप बिसाल लता अरुझानी * विविध बितान दिये जनु तानी ॥

कदलि तालवर ध्वजा पताका * देखि न मोह धीर मन जाका ॥

विविध भाँति फूले तरु नाना * जनु बानैत बने बहु बाना ॥

कहुँ कहुँ सुंदर विटप सुहाये * जनु भट बिलग बिलग होइ आये ॥

कूजत पिक मानहुँ गज माते * ढेक महोख ऊँट बिसराते ॥

मोर चकोर कीर बर बाजी * पारावत मराल सब ताजी ॥

तीतर लावक पद-चर-जूथा * बरनि न जाइ मनोजवरूथा ॥

रथ गिरिसिला दुंदुभी भरना * चातक बंदी गुनगन बरना ॥

मधु-कर-मुखर भेरि सहनाई * त्रिविध बयारि बसीठी आई ॥

चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हे * विचरत सबहिं चुनौती दीन्हे ॥

अरण्य काण्ड

सेवरी मंगल



कन्दमूल फल सरस अति दिये रामकहँ आनि ।

भागव भूयग प्रेस, बनारस [कार्पा राइट]

लक्ष्मिन देखत काम अनीका * रहिं धीर तिन्ह कै जग लीका ॥
 एहि के एक परमबल नारी * तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी ॥
 दोहा-तात तीनि अतिप्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ ।
 मुनि विज्ञानधाम मन, करहिं निमिष महुँ छोभ ॥
 लोभ के इच्छा दंभ बल, काम के केवल नारि ।
 क्रोध के परुषवचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि ॥३८॥

गुनातीत स-चराचर-स्वामी * राम उमा सब अंतरजामी ॥
 कामिन्ह कै दीनता देखाई * धीरन्ह के मन विरति दृढ़ाई ॥
 क्रोध मनोज लोभ मद माया * छूटहिं सकल राम की दाया ॥
 सो नर इंद्रजाल नहिं भूला * जा पर होइ सो नट अनुकूला ॥
 उमा कहउँ मैं अनुभव अपना * सत हरि भजन जगत सब सपना ॥
 पुनि प्रभु गये सरोवरतीरा * पंपा नाम सुभग गंभीरा ॥
 संतहृदय जस निर्मल वारी * बाँधे घाट मनोहर चारी ॥
 जहँ तहँ पियहिं विविध मृग नीरा * जनु उदारगृह जाचकभीरा ॥
 दोहा-पुरइनि सघन ओट जल, बेगि न पाइय मर्म ।
 मायाछन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥
 सुखी मीन सब एकरस, अति अगाध जल माहिं ।
 जथा धर्मसीलन्ह के, दिन सुखसंजुत जाहिं ॥३९॥

बिकसे मरमिज नाना रंगा * मधुर मुखर गुंजत बहु भंगा ॥
 बोलत जलकुक्कुट कलहंसा * प्रभु विलोकि जनु करत प्रमंसा ॥
 चक्रवाक - बक - खग - समुदाई * देखत बनइ वरनि नहिं जाई ॥
 सुंदर खग-गन-गिरा सुहाई * जात पथिक जनु लेत बोलाई ॥
 ताल समीप मुनिन्ह गृह बाये * चहुँ दिसि कानन बिटप सुहाये ॥
 चंपक बकुल कदंब तमाला * पाटल पनस परास रमाला ॥
 नवपल्लव कुसुमित तरु नाना * चंचरीकपटली कर गाना ॥
 सीतल मंद सुगंध सुभाऊ * संतत वहइ मनोहर बाऊ ॥
 कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं * सुनि रव मरस ध्यान मुनि टरहीं ॥

दोहा--फल भारन नमि विटप सब, रहे भूमि नियराइ ।

परउपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ ॥४०॥

देखि राम अति रुचिर तलावा * मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा ॥

देखी सुंदर तरु वर छाया * बैठे अनुज सहित रघुराया ॥

तहँ पुनि सकल देव मुनि आये * अस्तुति करि निज धाम सिधाये ॥

बैठे परमप्रसन्न कृपाला * कहत अनुज सन कथा रसाला ॥

विरहवंत भगवंतहिं देखी * नारदमन भा सोच विसेखी ॥

मोर माप करि अंगीकारा * सहत राम नाना दुखभारा ॥

ऐसे प्रभुहिं विलोकउँ जाई * पुनि न वनिहि अस अवमरु आई ॥

यह विचारि नारद करवीना * गये जहाँ प्रभु सुखआसीना ॥

गावत राम चरित मृदुवानी * प्रेमसहित बहुभाँति बखानी ॥

करत दंडवत लिये उठाई * राखे बहुत बार उर लाई ॥

स्वागत पूछि निकट वैठारे * लब्धिमन सादर चरन पखारे ॥

दोहा--नाना विधि विनती करि, प्रभु प्रसन्न जिय जानि ।

नारद बोले वचन तव, जोरि सरोरुहपानि ॥४१॥

सुनहु उदार परम रघुनायक * सुंदर अगम सुगम वरदायक ॥

देहु एक वरु मागउँ स्वामी * जद्यपि जानत अंतरजामी ॥

जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ * जन सन कवहुँ कि करउँ दुराऊ ॥

कवन वस्तु असि प्रिय मोहि लागी * जो मुनि वर न सकहु तुम्ह माँगी ॥

जन कहुँ कछु अदेह नहिं मोरे * अस विस्वास तजहु जनि भोरे ॥

तव नारद बोले हरपाई * अस वर मागउँ करउँ ढिटाई ॥

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका * सुति कह अधिक एक तें एका ॥

राम सकल नामन्ह तें अधिका * होउ नाथ अध-खग-गन-बधिका ॥

दोहा--राका रजनी भगति तव, रामनाम सोइ सोम ।

अपरनाम उडुगन बिमल, बसहु भरत-उर-व्योम ॥

एवमस्तु मुनि सन कहेउ, कृपासिंधु रघुनाथ ।

तव नारदमन हरष अति, प्रभुपद नायेउ माथ ॥४२॥

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी * पुनि नारद बोले मृदुवानी ॥
 राम जबहिं प्रेरेहु निज माया * मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया ॥
 तव विवाह मै चाहउँ कीन्हा * प्रभु केहि कारन करइ न दीन्हा ॥
 सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा * भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा ॥
 करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी * जिमि बालकहिं राख महतारी ॥
 गह सिमु वच्छ अनल अहि धाई * तहँ राखइ जननी अरु गाई ॥
 प्रौढ भये तेहि सुत पर माता * प्रीति करइ नहिं पाखिल वाता ॥
 मोरे प्रौढ-तनय-सम ज्ञानी * बालक सुत सम दास अमानी ॥
 जनहि मोर बल निज बल ताही * दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपु आही ॥
 यह विचारि पंडित मोहि भजहीं * पायेहु ज्ञान भगति नहिं तजहीं ॥
 दोहा--कोम-क्रोध-लोभादि-मद, प्रबल मोह कै धारि ।

तिन्ह महँ अतिदारुन दुखद, माया रूपी नारि ॥४३॥

सुनु मुनि कह पुरान सुति संता * मोहविपिन कहँ नारि वसंता ॥
 जप तप नेम जलास्य झारी * होइ ग्रीसम सोखइ सब नारी ॥
 काम क्रोध मद मत्सर भेका * इनहिं हरषप्रद वरपा एका ॥
 दुर्वासना कुमुदसमुदाई * तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई ॥
 धर्म सकल सरसी-रुह-बुंदा * होइ हिम तिन्हहिं दहइ सुख मंदा ॥
 पुनि ममता जवासबहुताई * पलुहइ नारि सिसिररितु पाई ॥
 पाप उलूकनिकर सुखकारी * नारि निविडरजनी अँधियारी ॥
 बुधि बल सील सत्य सब मीना * बंसी सम त्रिय कहहिं प्रवीना ॥
 दोहा--अवगुनमूल सूलप्रद, प्रमदा सब दुखखानि ।

ता तें कीन्ह निवारन, मुनि मै यह जिय जानि ॥४४॥

सुनि रघुपति के बचन सुहाये * मुनि तन पुलक नयन भरि आये ॥
 कहहु कवन प्रभु कै असि रीती * सेवक पर ममता अरु प्रीती ॥
 जेन भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी * ज्ञानरंक नर मंद अभागी ॥
 पुनि सादर बोले मुनि नारद * सुनहु राम विज्ञानविसारद ॥
 संतन्ह के लच्छन रघुवीरा * कहहु नाथ भंजन भवभीरा ॥

सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ ❀ जिन्ह तें मैं उन्हके बस रहऊँ ॥
 षट विकार जित अनघ अकामा ❀ अचल अकिंचन सुचिसुख धामा ॥
 अमित बोध अनीह मितभोगी ❀ सत्यसंध कबि कोविद जोगी ॥
 सावधान मानद मदहीना ❀ धीर भगतिपथ परम प्रवीना ॥
 दोहा—गुनागार संसार - दुख - रहित विगत संदेह ।

तजि मम चरनसरोज प्रिय, जिन्ह कहूँ देह न गेह ॥४५॥
 निज गुन सवन सुनत सकुचाहीं ❀ परगुन सुनत अधिक हरषाहीं ॥
 सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती ❀ सरल सुभाव सवहिं सन प्रीती ॥
 जप तप व्रत दम संजम नेमा ❀ गुरु - गोविंद - विप्र - पद प्रेमा ॥
 सद्धा ब्रमा मइत्री दायी ❀ मुदिता मम पदप्रीति अमाया ॥
 विरति विवेक विनय विज्ञाना ❀ बोध जथारथ वेदपुराना ॥
 दंभमान मद करहिं न काऊ ❀ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ ॥
 गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ❀ हेतु रहित पर-हित-रत-सीला ॥
 सुनु मुनि साधुन के गुन जेते ❀ कहि न सकहिं सारद सुति तेते ॥
 छंद—कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पदपंकज गहे ।

अस दीनबंधु कृपाल अपने भगतगुन निज मुख कहे ॥
 सिरु नाहिं वारहिं वार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गये ।
 ते धन्य तुलसीदास आस विहाइ जे हरिरंग रये ॥
 दोहा—रावनारिजस पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग ।
 रामभगति दृढ़ पावहिं, विनु विराग जप जोग ॥
 दीप-सिखा-सम जुवतिजन, मन जनि होसि पतंग ।
 भजहिं राम तजि काम मद, करहिं सदा सतसंग ॥४६॥

इति अरण्यकाण्ड समाप्त ।



श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामायण

किष्किन्धाकाण्ड

श्लोकौ

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिवल्लौ विज्ञानधामावुभौ शोभाब्जौ वरधन्विनौ
श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ । मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ मद्गर्भवर्म्मौ
हितौ सीतान्वेषणतत्परौ पथि गतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चान्ययं श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरं
संशोभितं सर्वदा । संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं धन्यास्ते
कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सोरठा--मुक्तिजनम महि जानि, ज्ञानखानि अघहानिकर ।
जहँ बस संभुभवानि, सो कासी सेइय कस न ॥
जरत सकल सुरबृंद, विषमगरल जेहि पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद, को कृपाल संकरसरिस ॥१॥

आगे चले बहुरि रघुराया * रिष्यमूक पर्वत नियराया ॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवाँ * आवत देखि अ-तुल-वल-मीवाँ ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना * पुरुष-जुगल वल-रूप-निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई * कहेसु जानि जिय मै न बुझाई ॥
पठये वालि होहिं मन मैला * भागौं तुरत तजौं यह सैला ॥
विप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ * माथ नाह पूछत अस भयऊ ॥
को तुम्ह स्यामल-गौर-सरीरा * छत्रीरूप फिरहु बन वीरा ॥
कठिनभूमि कोमल-पद-गामी * कवन हेतु विचरहु बन स्वामी ॥

मृदुल मनोहर सुंदर गाता * सहत दुसह वन आतपवाता ॥
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ * नरनारायन की तुम्ह दोऊ ॥

दोहा-- जगकारन तारन भव, भंजन धरनीभार ।

की तुम्ह अखिल-भुवन-पति, लीन्ह मनुजअवतार ॥२॥

कोसलेसदसरथ के जाये * हम पितुवचन मानि वन आये ॥
नाम राम लङ्घिमन दोउ भाई * संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
इहाँ हरी निमिचर बैदेही * विप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई * कहहु विप्र निजकथा बुझाई ॥
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना * सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ॥
पुलकित तन मुख आव न बचना * देखत रुचिरबेष कै रचना ॥
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्ही * हरष हृदय निजनाथहिं चीन्ही ॥
मोर न्याउ में पृष्ठा साई * तुम्ह पृष्णहु कस नर की नाई ॥
तव मायावस फिरौ भुलाना * ता तैं में नहिं प्रभु पहिचाना ॥

दोहा--एकु मंद में मोहवस, कुटिलहृदय अज्ञान ।

पुनि प्रभु मोहि विसारेउ, दीनबंधु भगवान ॥ ३ ॥

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरे * सेवक प्रभुहिं परै जनि भोरे ॥
नाथ जीव तव माया मोहा * सो निस्तरइ तुम्हारेहि छोहा ॥
ता पर मैं रघुवीर दोहाई * जानउँ नहिं कछु भजन उपाई ॥
सेवक-सुत पति-मातु भरोसे * रहइ असोच बनइ प्रभु पोसे ॥
अस कहि परेउ चरन अकुलाई * निजतनु प्रगटि प्रीति उर छाई ॥
तव रघुपति उठाइ उर लावा * निज-लोचन-जल सीचि जुड़ावा ॥
सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना * तैं मम प्रिय लङ्घिमन तैं दना ॥
समदरसी मोहि कह सब कोऊ * सेवकप्रिय अनन्यगति सौऊ ॥

दोहा--सो अनन्य जाके असि, मति न टरइ हनुमंत ।

मैं सेवक सचराचर, रूप स्वामि भगवंत ॥ ४ ॥

देखि पवनसुत पतिअनुकूला * हृदय हरष बीती सब सूला ॥
नाथ सैल पर कपिपति रहई * सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
तेहि सन नाथ मयत्री कीजै * दीन जानि तेहि अभय करीजै ॥

सो सीता कर खोज कराइहि * जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ॥
 एहि विधि सकलकथा समुझाई * लिये दुऔ जन पीठि चढ़ाई ॥
 जव सुग्रीव राम कहँ देखा * अतिसय जनम धन्य करि लेखा ॥
 सादर मिलेउ नाइ पदमाथा * भेंटेउ अनुजसहित रघुनाथा ॥
 कपि कर मन विचार एहि रीती * करिहहि विधि मो मन ये प्रीती ॥
 दोहा--तव हनुमंत उभय दिसि, कहि सब कथा सुनाइ ।

पावक साखी देइ करि, जोरी प्रीति टट्टाई ॥ ५ ॥

कीन्हि प्रीति कलु बीच न राखा * लक्ष्मिन रामचरित सब भाखा ॥
 कह सुग्रीव नयन भरि वारी * मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी ॥
 मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक वारा * बैठ रहेउँ मैं करत विचारा ॥
 गगनपंथ देखी मैं जाता * परबम परी बहुत विलपाता ॥
 राम राम हा राम पुकारी * हमहि देखि दीन्हेउ पट डारी ॥
 माँगा राम तुरत तेहि दीन्हा * पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा * तजहु सोच मन आनहुधीरा ॥
 सब प्रकार करिहउँ सेवकाई * जेहि विधि मिलिहि जानकी आई ॥

दोहा--सखावचन सुनि हरपे, कृपासिंधु बलसीवँ ।

कारन कवन बसहु बन, मोहि कहहु सुग्रीवँ ॥ ६ ॥

सुग्रीवहि प्रभु पूछत कैसे * वहु अजान कोउ मानुप जैसे ॥
 मात पिता कर नाम बतावहु * निज उत्पति सब मोहि सुनावहु ॥
 रामचन्द्र के सुनि अस वचना * कहन लगें सब अपनी रचना ॥
 चतुरानन निज नयन उधारी * कीच काढ़ि महि ऊपर डारी ॥
 तासों भयो एक कपि भारी * तेहि समान नहि कोउ बलकारी ॥
 ऋच्छराज कहि ताहि पुकान्यो * पुनि तिहिविधि यह वचन उचान्यो ॥
 बनमें जाय मधुर फल खावहु * दुष्ट असुर मारहु जहँ पावहु ॥
 विधिकी अस आज्ञा धरि शीशा * दक्षिण दिशि धावा सो कीशा ॥
 दोहा--ऋच्छराजवन महँ फिरत, निज इच्छा अनुसार ।

असुर दैत्य जहँ तहँ मिलें, सब कहँ डारत मार ॥

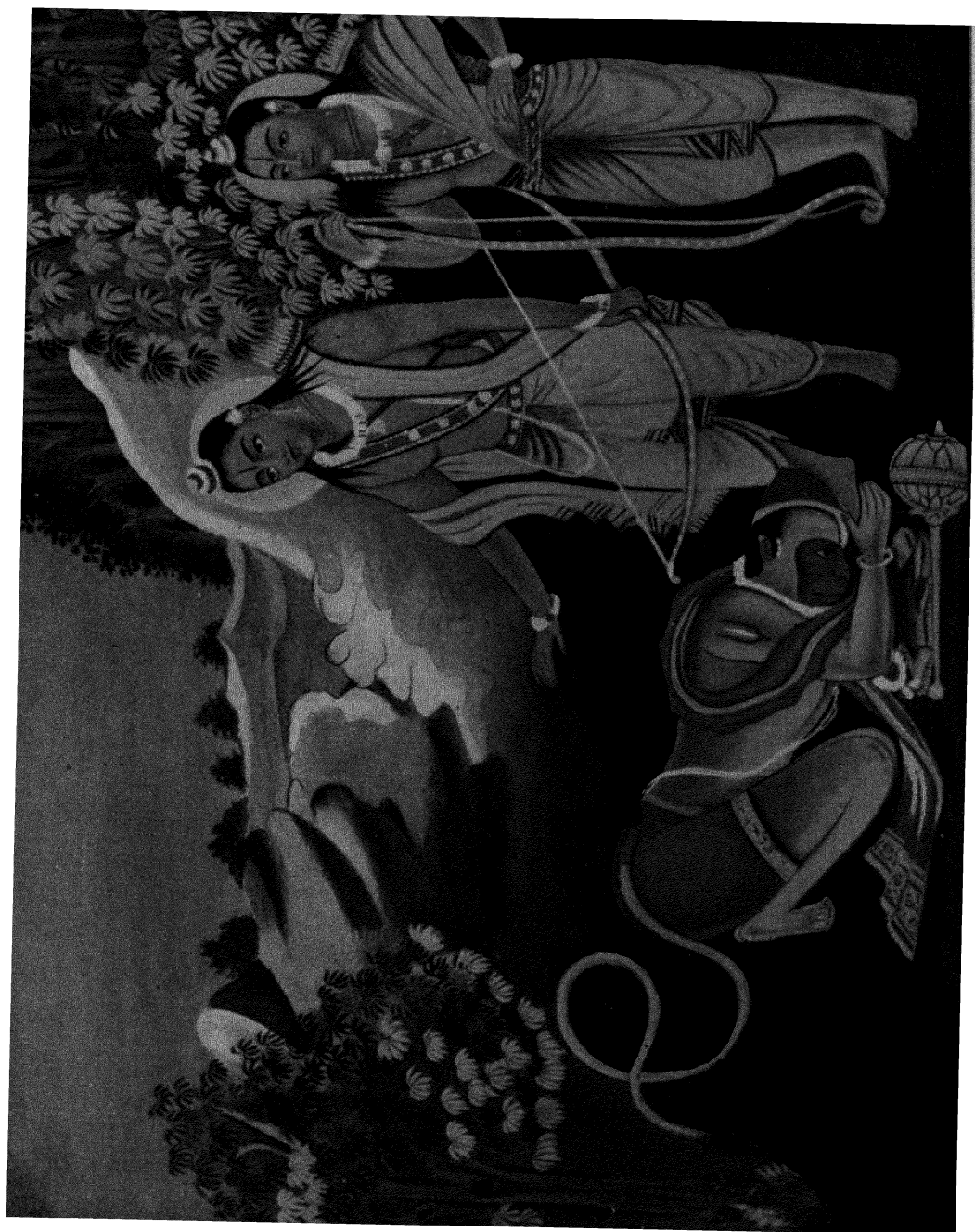
कूप रुचिर इक वन महुँ पावा * ताके निकट तुरत चलि आवा ॥
 देखी जल विच निज परझाहीं * जाना असुर कूप के माहीं ॥
 ताके वध को सो बलवाना * क्रूद पन्यो नहिं मनहिं डेराना ॥
 क्रूदतही कपि दैव बमाना * नारी रूप भयो बलवाना ॥
 सुनहु गौरि कौतुक कर वाता * आई बहिर सहित शुभ गाता ॥
 अति विचित्र लखि सुन्दरताई * तापर मोहे रवि सुरराई ॥
 इन्द्रवीर्य वालन पर गिरेऊ * ताते वाली प्रकटत भयऊ ॥
 वीर्य दिवाकर कंठ गिरायो * उपज्यो मैं सुग्रीव कहायो ॥
 ता पाछे सुनु राम कृपाला * नारी ते भा नर तत्काला ॥
 पुनि मम तात सुखी मन माहीं * हमहिं संग लेगा विधि पाहीं ॥
 दोहा--ब्रह्मलोक में पहुँच करि, कीन्हेसि विधिहि प्रणाम ।

सुत उतपति विधिवत कही, और बतायसु नाम ॥

सुनि ब्रह्मा बोले मुमकाई * हरि इच्छा भावी अधिकारी ॥
 अब तुम वास करहु तिहि ठहवाँ * किष्किन्धा शुभ थल है जहवाँ ॥
 विधिकी आज्ञा शीश चढ़ाई * किष्किन्धा आये दोउ भाई ॥

इति क्षेपक

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई * प्रीति रही कछु बरनि न जाई ॥
 मयसुत मायात्री तेहि नाऊ * आवा सो प्रभु हमरे गाऊ ॥
 अर्धराति पुरद्वार पुकारा * वाली रिपुवल सहै न पारा ॥
 धावा बालि देखि सो भागा * मैं पुनि गयउँ बंधु संग लगा ॥
 गिरि-चर-गुहा पैठ सो जाई * तब वाली मोहिं कहा बुझाई ॥
 परिखेसु मोहिं एक पखवारा * नहिं आवौँ तब जानेसु मारा ॥
 मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी * निसरी रुधिरधार तहँ भारी ॥
 बालि हतेसि मोहि मारिहि आई * सिला देइ तहँ चलेउँ पराई ॥
 मंत्रिन्ह पुर देखा विनु साई * दीन्हेउ मोहि राज वरिआई ॥
 वाली ताहि मारि गृह आवा * देखि मोहि जिह भेद बढ़ावा ॥
 रिपुसम मोहि मारेसि अति भारी * हरि लीन्हेसि सर्वसु अरु नारी ॥
 ता के भय रघुवीर कृपाला * सकलभुवन मैं फिरेउँ बिहाला ॥



इहाँ सापवस आवत नाहीं * तदपि सभीत रहौं मन माहीं ॥
सुनि सेवकदुख दीनदयाला * फरकि उठीं दोउ भुजा बिसाला ॥

अथ क्षेपक

दोहा--रामचन्द्र बोले बचन, सुनहु तात सुग्रीव ।
दुंदुभिको कैसे हन्यो, बालि महाबल सीव ॥
ऋषि मुनि समदर्शी सदा, सबकर चह कल्याण ।
चूक परी कह बालि सौं, शाप दियो सुज्ञान ॥

ऐसे जब पूछेहु रघुनाथा * सुनि सुग्रीव बखानेहु गाथा ॥
मयदानवते दो सुत भयऊ * मायावी दुन्दुभि अस कहेऊ ॥
तिनमहँ दुन्दुभि अति बलधारी * भय माने तामो बलकारी ॥
एकवार हिम गिरि पहुँ आयउ * ताल ठोंकि हिमवान उठायउ ॥
तब हिमवन्त कहे कर जोरे * हम तुम मन बलमें अति थोरे ॥
पंपापुर जावहु बल वीरा * बालि महाबल अति रणधीरा ॥

दोहा--सुनिके गिरिके बचन तब, आयउ तहाँ तुरंत ।

बालि २ भाखत भयो, सुनि दौडयो बलवंत ॥

दुन्दुभि वाली दोनों योधा * मल्ल युद्ध करते करि क्रोधा ॥
चार पहर दोनों बल कीन्हा * वाली ने पुनि मुष्टिक दीन्हा ॥
गिरा महीपर गिरिकी नाई * पशु पक्षी तरु दवं गुमाई ॥
पुनि वाली दुइ फाँक उतारी * इक दक्षिण इक उत्तर डारी ॥
ऋषि मतंगकर तहँ अस्थाना * रुधिर बह्यो तहँ नदी समाना ॥
कर अस्नान ऋषि जब आये * एक यज्ञ वृत्तान्त सुनाये ॥
पुनि मतंग कीन्हा अति क्रोधा * दियो शाप यह कीन्हा न शोधा ॥
इहि गिरि देखत वाली नासा * ताहीते भइ मन कलु त्रामा ॥

दोहा--बालि तहाँ आवत नहीं, सुनिये श्रीरघुवीर ।

करहु निडर मो कहँ प्रभो, दूर होहिँ सब पीर ॥

इति क्षेपक

दोहा--सुनु सुग्रीव मारिहउँ, बालिहि एकहि वान ।

ब्रह्म-रुद्र-सरनागत, गये न उबरिहि प्रान ॥ ७ ॥

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी * तिन्हहिं विलोकत पातक भारी ॥
 निज-दुख-गिरि-समरज करिजाना * मित्र क दुखरज मेरुसमाना ॥
 जिन्ह के असि मति सहजन आई * ते सठ कत हठि करत मितार्ई ॥
 कुपथ निवारि सुपथ चलावा * गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा ॥
 देत लेत मन संक न धरई * बल अनुमान सदा हित करई ॥
 विपतिकाल कर मतगुन नेहा * सुति कह संत मित्र गुन एहा ॥
 आगे कह मृदुवचन वनाई * पाछे अनहित मन कुटिलाई ॥
 जा कर चित अहि-गति-मम भाई * अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ॥
 सेवक सठ नृप कृपिन कुनारी * कपटी मित्र सूलसम चारी ॥
 सखा मोचु त्यागहु बल मोरें * मव विधि घटव काज में तोरे ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा * बालि महाबल अति-रन-धीरा ॥

अथ क्षेपक

दोहा--चन्द्र मण्डलाकार जो, नाथ सात ये ताल ।
 वेधे जो इकवाणते, सो बाली कर काल ॥
 सुनि बोले रघुवंशमणि, कहहु तालकर माथ ।
 कहन लग्यो जियहर्ष पुनि, हाथ जोड़ हरिनाथ ॥

एक दिवस बाली वन आयो * सफल बृक्ष देखत हुलसायो ॥
 सात फलन लायो इकवारी * तिन्हे राखि न्हायो बलधारी ॥
 तापर सर्प बैठगो आई * बालि देख बोला भुँझलाई ॥
 कियो नाश तें मोर अहारा * तासो शाप देहु अति भारा ॥
 सात ताल उपजै तव देहा * जनिकर यामें तू संदेहा ॥
 ताल बृक्ष निकसे तनु माहीं * सर्पपिता लखि शाप्यो ताहीं ॥
 जो इक शरते ताल गिरावै * बाली तेहिकर मृत्यू पावै ॥
 समाचार यह तुमहि सुनायउं * बालि बधनकी रीति जतायउं ॥

इति क्षेपक

दुंदुभि अस्थि ताल देखराये * विनु प्रयास रघुनाथ दहाये ॥
 देखि अमितबल वाढी प्रीती * बालि बधव इन्ह भइ परतीती ॥
 बार बार नावइ पद सीसा * प्रभुहि जानि मन हरप कपीसा ॥

उपजा ग्यान वचन तव बोला * नाथ कृपा मन भयउ अडोला ॥
 सुख संपति परिवार बड़ाई * सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ॥
 ए सब रामभगति के बाधक * कहहिं मंत तव पद अवराधक ॥
 सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं * मायाकृत परमारथ नाही ॥
 वालि परमहित जासु प्रसादा * मिलेहु राम तुम्ह समन विषादा ॥
 सपने जेहि सन होइ लराई * जागे समुझत मन सकुचाई ॥
 अब प्रभु कृपा करहु येहि भाँती * सब तजि भजन करौ दिनु राती ॥
 सुनि विरागसंयुत कपिवानी * बोले विहँसि रामु धनुपानी ॥
 जो कलु कहेहु सत्य सब सोई * सखावचन मम मृषा न होई ॥
 नट मरकट इव सबहिं नचावत * राम स्वगेष बेद अस गावत ॥
 लै सुग्रीव संग रघुनाथा * चले चापसायक गहि हाथा ॥
 तव रघुपति सुग्रीव पठावा * गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥
 सुनत वालि क्रोधातुर धावा * गहि कर चरन नारि समुभावा ॥
 सुनु पति जिन्हहिं मिलेउ सुग्रीवाँ * ते दोउ बंधु तेजवलमीवाँ ॥
 कोसलेमसुत लछिमनरामा * कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥
 दोहा—कहा वालि सुनु भीरुप्रिय, समदरसी रघुनाथ ।

जौं कदाचि मोहि मारहिं, तां पुनि होउँ सनाथ ॥ ८ ॥

अस कहि चला महाअभिमानी * तृनसमान सुग्रीवहि जानी ॥
 भिरे उभौ वाली अति तरजा * मुठिका मारि महाधुनि गरजा ॥
 तव सुग्रीव विकल होइ भागा * मुष्टिप्रहार वज्रसम लागा ॥
 मैं जो कहा रघुवीर कृपाला * बंधु न होइ मोर यह काला ॥
 एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ * तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ॥
 कर परसा सुग्रीव-सरीरा * तनु भा कुलिस गई सब पीरा ॥
 मेली कंठ सुमन कै माला * पठवा पुनि बल देइ विसाला ॥
 पुनि नानाविधि भई लराई * विटपओट देखहिं रघुराई ॥

दोहा--बहु छलबल सुग्रीव करि, हिय हारा भय मानि ।

मारा वाली राम तव, हृदय माँझ सर तानि ॥ ९ ॥

परा विकल महि सर के लागे * पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ॥
 स्यामगात सिर जटा वनाये * अरुननयन सर चाप चढ़ाये ॥
 पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा * सुफल जनम माना प्रभु चीन्हा ॥
 हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा * बोला चितइ राम की ओरा ॥
 धर्महेतु अवतरेहु गोसाई * मारेहु मोहि व्याध की नाई ॥
 मैं बैरी सुग्रीव पियारा * कारन कवन नाथ मोहिं मारा ॥
 अनुजबधू भगिनी सुतनारी * सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥
 इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई * ताहि बधे कछु पाप न होई ॥
 मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना * नारिसिखावन करोसि न काना ॥
 मम भुज-बल-आसित तेहि जानी * मारा चहसि अधम अभिमानी ॥
 दोहा—सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि ।

प्रभु अजहूँ मैं पातकी, अंतकाल गति तोरि ॥१०॥

सुनत राम अतिकोमल बानी * बालिसीस परसेउ निजपानी ॥
 अचल करौ तनु राखहु प्राणा * बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
 जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं * अंत राम कहि आवत नाहीं ॥
 जासु नामबल संकर कासी * देत सबहिं समगति अविनासी ॥
 मम लोचन गोचर सोइ आवा * बहुरि कि प्रभु अस वनिहि बनावा ॥

छंद—सो नयनगोचर जासु गुन नित नेति कहि सुति गावहीं ।

जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँक पावहीं ॥

मोहि जानि अति-अभिमान-वस प्रभु कहेहु राखु सरीरही ।

अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही ॥

अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर माँगऊँ ।

जंहे जोनि जनमउँ कर्मवस तहँ रामपद अनुरागऊँ ॥

यह तनय मम सम बिनयबल कल्याणपद प्रभु लीजिये ।

गहि बाहँ सुर-नर-नाह आपन दास अंगद कीजिये ॥

दोहा—रामचरन दृढ़प्रीति करि, बालि कीन्ह तनुत्याग ।

सुमनमाल जिमि कंठ तें, गिरत न जानइ नाग ॥११॥

राम बालि निजधाम पठावा * नगरलोग सब व्याकुल धावा ॥
 नानाविधि बिलाप कर तारा * छूटे केस न देह सँभारा ॥
 तारा बिकल देखि रघुराया * दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥
 छिति जल पावक गगन समीरा * पंच रचित अतिअधम सरीरा ॥
 प्रगट सो तनु तव अगे सोवा * जीव नित्य केहि तुम्ह लागि रोवा ॥
 उपजा ज्ञान चरन तब लागी * लीन्हेसि परम भगति वर माँगी ॥
 उमा दारुजोषित की नाई * सबहिं नचावत रामु गोसाई ॥
 तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा * मृतककर्म विधिवत सब कीन्हा ॥
 रामु कहा अनुजहि समुझाई * राजु देहु सुग्रीवहि जाई ॥
 रघुपति-चरन नाइ करि माथा * चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥
 दोहा-लछिमन तुरत बोलाये, पुरजन विप्रसमाज ।

राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ, अङ्गद कहँ जुवराज ॥ १२ ॥

उमा रामसम हित जग माहीं * गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं ॥
 सुर-नर-मुनि सब कै यह रीती * स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ॥
 बालि-त्रास-व्याकुल दिन राती * तन बहु ब्रन चिंता जर छाती ॥
 सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ * अति कृपाल रघुवीर सुभाऊ ॥
 जानतहँ अस प्रभु परिहरहीं * काहे न विपतिजाल नर परहीं ॥
 पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई * बहु प्रकार नृपनीति सिखाई ॥
 कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा * पुर न जाउँ दस चारि बरीसा ॥
 गत श्रीषम वरषा रितु आई * रहिहौँ निकट सैल पर छाई ॥
 अंगदसहित करहु तुम्ह राजू * संतत हृदय धरेहु मम काजू ॥
 जब सुग्रीव भवन फिरि आये * रामु प्रवरषन गिरि पर द्वाये ॥
 दोहा-प्रथमहिं देवन्ह गिरि गुहा, राखेउ रुचिर बनाइ ।

रामु कृपानिधि कछुक दिन, वास करहिगे आइ ॥ १३ ॥

सुंदर बन कुसुमित अतिसोभा * गुंजत मधुपनिकर मधुलोभा ॥
 कंद मूल फल पत्र सुहाये * भये बहुत जब तें प्रभु आये ॥
 देखि मनोहर सैल अनूपा * रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा ॥
 मधुकर-खग-मृग-तनु धरि देवा * करहिं सिद्ध मुनि प्रभु कै सेवा ॥

मंगलरूप भयउ बन तव तें ❀ कीन्ह निवास रमापति जब तें ॥
 फटिकसिला अतिसुभ्र सुहाई ❀ सुख आसीन तहाँ दोउ भाई ॥
 कहत अनुज सन कथा अनेका ❀ भगति विरति नृप नीति विवेका ॥
 बरषाकाल मेघ नभ छाये ❀ गर्जत लागत परम सुहाये ॥
 दोहा—लछिमन देखहु मोरगन, नाचत बारिद पेखि ।

गृहो विरतिरत हरष जस, विष्णुभगत कहूँ देखि ॥१४॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा ❀ प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥
 दामिनि दमकि रह न घन माहीं ❀ खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ॥
 बरसहिं जलद भूमि नियराये ❀ जथा नवहिं बुध विद्या पाये ॥
 बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे ❀ खल के वचन संत सह जैसे ॥
 छुद्र नदी भरि चली तोराई ❀ जस थोरेहु धन खल इतराई ॥
 भूमि परत भा ढावर पानी ❀ जनु जीवहि माया लपटानी ॥
 सिमिटि सिमिटि जल भरहि तलावा ❀ जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ॥
 सरिताजल जलनिधि महुँ जाई ❀ होहि अचल जिमि जिव हरि पाई ॥
 दोहा—हरित भूमि तृनसंकुल, समुझि परहिं नहिं पंथ ।

जिमि पाखंड बाद तें, गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥१५॥

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई ❀ बेद पढहिं जनु बटुसमुदाई ॥
 नव पल्लव भये विटप अनेका ❀ साधक मन जस मिले विवेका ॥
 अर्क जवास पात विनु भयऊ ❀ जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥
 खोजत कतहुँ मिलइ नहि धूरी ❀ करइ क्रोध जिमि धर्महि दूरी ॥
 ससिसंपन्न सोह महि कैसी ❀ उपकारी कै संपति जैसी ॥
 निसि तम घन खद्योत विराजा ❀ जनु दंभिन कर मिला समाजा ॥
 महावृष्टि चलि फूटि कियारी ❀ जिमि सुतंत्र भये विगरहिं नारी ॥
 कृषी निरावहिं चतुर किसाना ❀ जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
 देखियत चक्रवाक खग नाहीं ❀ कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
 ऊसर बरषइ तृन नहिं जामा ❀ जिमि हरि-जन-हिय उपजन कामा ॥
 विविध जंतुसंकुल महि भ्राजा ❀ प्रजा बाढ जिमि पाइ सुराजा ॥
 जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना ❀ जिमि इंद्रियगन उपजे ज्ञाना ॥

दोहा-कवहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं ।

जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ॥

कवहुँ दिवस महुँ निबिडतम, कवहुँक प्रगट पतंग ।

बिनसइ उपजइ ज्ञान जिमि, पाइ कुसंग सुसंग ॥१६॥

बरषाबिगत सरद रितु आई * लछिमन देखहु परम सुहाई ॥

फूले कास सकल महि छाई * जनु बरषाकृत प्रगट बुढाई ॥

उदित अगस्त पंथजल सोखा * जिमि लोभहि सोखइ संतोषा ॥

सरितासर निर्मलजल सोहा * मंतहृदय जस गत-मद-मोहा ॥

रस रस सूख सरित-सर-पानी * ममतात्याग करहिं जिमि ज्ञानी ॥

जानि सरद रितु खंजन आये * पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये ॥

पंक न रेनु सोह असि धरनी * नीति-निपुन-नृप कै जसि करनी ॥

जलसंकोच विकल भइ मीना * अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ॥

विनु घन निर्मल सोह अकासा * हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥

कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी * कोउ एक पाव भगति जसि मोरी ॥

दोहा-चले हरषि तजि नगर नृप, तापस बनिक भिखारि ।

जिमि हरिभगति पाइ स्वम, तजहिं आसमी चारि ॥१७॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा * जिमि हरिमरन न एकउ वाधा ॥

फूले कमल सोह सर कैसा * निर्गुन ब्रह्म सगुन भये जैसा ॥

गुंजत मधुकर मुखर अनूपा * सुंदर खगरव नानारूपा ॥

चक्रवाकमन दुख निसि पेखी * जिमि दुरजन परसंपति देखी ॥

चातक रटत तृषा अति ओही * जिमि सुख लहइ न संकरद्रोही ॥

सरदातप निसि ससि अपहरई * संतदरम जिमि पातक टरई ॥

देखि इंदु चकोरसमुदाई * चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥

मसकदंस बीते हिमत्रासा * जिमि द्विज द्रोह किये कुलनासा ॥

दोहा-भूमि जीव संकुल रहे, गये सरद रितु पाइ ।

सदैगरु मिले जाहिं जिमि, संसय-भ्रम-समुदाइ ॥१८॥

बरषा गत निर्मल रितु आई * सुधि न तात सीता कै पाई ॥

एकवार कैसेहुँ सुधि जानउँ * कालहु जीति निमिप महुँ आनउ ॥

कतहुँ रहउ जौं जीवत होई * तात जतन करि आनउँ सोई ॥
 सुग्रीवहु सुधि मोरि विसारी * पावा राज कोस पुर नारी ॥
 जेहि सायक मारा में वाली * तेहि सर हतउँ मूढ़ कहुँ काली ॥
 जासु कृपा छूटहिं मद मोहा * ताकहुँ उमा कि सपनेहु कोहा ॥
 जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी * जिन्ह रघु-वीर-चरन-रति मानी ॥
 लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना * धनुष चढाइ गहे कर बाना ॥

दोहा-तव अनुजहिं समुभावा, रघुपति करुनासीवँ ।

भय देखाइ लेइ आवहु, तात सखासुग्रीवँ ॥१६॥

इहाँ पवनसुत हृदय विचारा * रामकाज सुग्रीवँ विसारा ॥
 निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा * चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा ॥
 मुनि सुग्रीव परमभय माना * विषय मोर हरि लीन्हेउ ज्ञाना ॥
 अब मारुतसुत दूतसमूहा * पठवहु जहँ तहँ वानरजूहा ॥
 कहेहु पाख महुँ आव न जोई * मोरे कर ता कर वध होई ॥

अथ क्षेपक

राम काज अरु मोर निहोरा * पठवहुँ मैं तुम कहँ सब ओरा ॥
 यह सुन हनुमान बलधारी * पूरव दिशि कीन्हें तयारी ॥
 जेमिल आन वचन अस कहेऊ * वालि बन्धु तुम कहँ बुलवयऊ ॥
 सुनि हनुमन्त वचन सब आये * तुरत सबन सादर शिर नाये ॥
 गव गवाक्ष आये दोउ वीरा * संग लिये सेना रणधीरा ॥

दोहा-असी लाख अरु सातसौ, कपि सेना बलवान ।

तिनहिं भेजि रोहित गिरहिं, गये तुरत हनुमान ॥

दुर्धर्षण सन बोले जाई * तुमहिं बुलायो है कपि राई ॥
 पुनि कदली बन गये पलाई * गजसे कथा कही समुझाई ॥
 दुर्धर्षण अरु गज कपि आये * डंक बजाय सेन सब लाये ॥
 पदम सात दल अमी करोरा * डगमग करै भूमि अहिकोरा ॥
 हनुमत पुनि व्याहर गिरि आये * बड़ सुत बल वीरही बुलाये ॥
 कह्यो तुमहिं टेरयो, कपि राजू * तहँ तुम जावहु सहित समाजू ॥
 तीस लाख दल साठ हजार * लायो सो किष्किंध मझारा ॥
 धुंधुमार गिरि पर पुनि आये * श्रीखंडहिं सब वचन सुनाये ॥

दोहा--छपन कोटि बनचर लिये, आये तहँ श्रीखंड ।

कपिपतिकहँ शिरनाय करि, बैद्यो अति वरवंड ॥

पुनि हनुमत अंजनि गिरि आये * समाचार कुमुदाहँ समुझाये ॥
 पदम सात सत्तामी लक्षा * सुनिलै चल्थो कपिन कर कक्षा ॥
 नीलगिरी आये हरि नाथा * कही नीलते पुनि सब गाथा ॥
 अर्बुद चार चार शत चारा * चल्थो नील दल विकट जुभारा ॥
 पुनि हनुमान उतरदिशि आये * वदरिकाश्रम जा सुख पाये ॥
 गंधमदन सो कहि इतिहासा * जावहु तुम सुकंठ के पासा ॥
 दोहा--अर्जुन गिरिपहँ पुनि गये, ताराकर जहँ तात ।

नाम सुखेन महावली, ताहि सुनाई बात ॥

विदा होय सुमेरु गिरि आये * कह्यो चलहु कपिराज बुलाये ॥
 तिन्हें भेजकरि अंजनि नंदन * शिव पर्वत पर गा दुख भंजन ॥
 दुरदकपी तिहि जायउ माथा * हनुमान मन भयउ सनाथा ॥
 सुनि कपि वचन सैन लै धायो * मैना गिरि हनुमत पुनि आयो ॥
 अंडक राज तहाँ पर धाना * तेहि बुझाय कह करहु पयाना ॥
 विन्ध्याचल आयं हनुमाना * रह वसंत कपि जहँ बलवाना ॥
 सुनि लैचल दल कपिपति पामी * आठ पदम अरु महम अठासी ॥
 हनुमान तहँ सो पग धारे * कश्यपगिरि पुनि आन पधारे ॥
 नाम मयंद, तहाँ कर स्वामी * तेजपुंज अरु अति बलगामी ॥

दोहा--इक्किस कोटि बनचर लिये, आकर नायउ माथ ।

हनुमान तब सब कही, पंपापुर की गाथ ॥

अट्टहाम कर चल्थो मयंदा * उल्ला जिमि नभ चले गयंदा ॥
 दल टीडी सम सैन चलाई * उठि लँगूर रवि जाइ छिपाई ॥
 तीस कगौड़ नील की सैना * मध वानर बुधि बलकर पेना ॥
 सिंहनाद कर वारम्बारा * किष्किन्धा भइ भीर अपारा ॥
 कपि दुर्गन्ध नाम जहँ रहहीं * गाथा वायु पूत तिहि कहहीं ॥
 आठ लाख सवार गिनायो * सबदल लै पंपापुर आयो ॥
 चहुँदिशि से बनचर सब लाये * आय सुकंठहि पुनि शिरनाये ॥

दोहा--तव सुकंठ हनुमान को, अमित बड़ाई कीन ।

भा हर्षित धन धन्य कहि, जिमि जल पाये मीन ॥

इति क्षेपक

तव हनुमंत बोलाये दूता * सब कर करि सनमान बहता ॥
भय अरु प्रीति नीति देखगई * चले सकल चरनन्हि सिरु नाई ॥
एहि अवसर लछिमन पुर आये * क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये ॥

दोहा--धनुष चढ़ाई कहा तव, जारि करउं पुर छार ।

व्याकुल नगर देखि तव, आयउ वालिकुमार ॥ २० ॥

चरन नाइ सिरु विनती कीन्हो * लछिमन अभयवाँह तेहि दीन्ही ॥
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना * कह कपीस अतिभय अकुलाना ॥
सुनु हनुमंत संग लेइ तारा * करि विनती समुझाउ कुमारा ॥
तारामहित जाइ हनुमाना * चरन बंदि प्रभु सुजसु बखाना ॥
करि विनती मंदिर लेइ आये * चरन पखारि पलंग वैठाये ॥
तव कपीस चरनन्हि सिरु नावा * गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥
नाथ विषयसम मद कछु नाहीं * मुनिमन मोह करइ छन माहीं ॥
सुनत विनीतवचन सुख पावा * लछिमन तेहि बहु विधिसमुझावा ॥
पवनतनय सब कथा सुनाई * जेहि विधि गये दृतममुदाई ॥
दोहा--हरपि चले सुग्रीव तव, अगदादिकपि साथ ।

रामानुज आगे करि, आये जहँ रघुनाथ ॥ २१ ॥

नाइ चरन सिरु कह करजोरी * नाथ मोहि कछु नाहिं न खोरी ॥
अतिमयप्रवल देव तव माया * बूटइ राम करहु जौं दाया ॥
विषयबस्य सुर नर मुनि स्वामी * मैं पामर पसु कपि अतिकामी ॥
नारि-नयन-सर जाहि न लागा * घोर-क्रोध-तम-निमि जो जागा ॥
लोभपास जेहि गर न बंधाया * सो नर तुम्ह समान रघुराया ॥
यह गुन साधन तें नहिं होई * तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई ॥
तव रघुपति बोले मुसुकाई * तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥
अब सोइ जतन करहु मन लाई * जेहि विधि सीता कै सुधि पाई ॥

दोहा-एहि बिधि होत बतकहो, आये वानरजूथ ।

नानावरन सकल दिसि, देखिय कीसवरूथ ॥२२॥

वानरकटक उमा में देखा * सो मूरख जो कर वह लेखा ॥
 आइ रामपद नावहिं माथा * राखे वदनु सब होहिं मनाथा ॥
 अस कपि एक न सेना माहीं * राम कुमल जेहि पूछी नाहीं ॥
 यह कलु नहिं प्रभु कै अधिकार्ई * विम्बरूप व्यापक रघुगार्ई ॥
 ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई * कह सुग्रीवँ सवहिं ममुभार्ई ॥
 रामकाजु अरु मोर निहोरा * वानरजूथ जाहु चहुँओरा ॥
 जनकसुता कहँ खोजहु जाई * मासदिवस महँ आयहु भाई ॥

अथ श्लोक

नव सुकंठ दुइ दूत बुलायेसि * सुनतहिं गज गवाक्ष उठ पायेसि ॥
 मन क्रम बच कर त्रिविध प्रकारा * सुधा सरिस प्रभु बचन उचारा ॥
 मिय खोजन तुम पूरव जावहु * रामकाज करि आतुर आवहु ॥
 मात कोटि वानर परिमाना * पूरव दिशिकहँ चले सुजाना ॥
 गज गवाक्ष यूपथ बलकारी * तिनके मंग चले हँकारी ॥

दोहा--एनि सुग्रीव सुखेन कहँ, समुभार्ई सब गाथ ।

आदर कर बोले बचन, गहु मयंद कहँ साथ ॥

उत्तर दिशि कहँ तुम चलि जाहू * मीता सुधि पूछहु सब काहू ॥
 मादव गन्ध मेरु धरणीधर * अर्जुन गिरि कैलास महाधर ॥
 नीलगिरि अलकापुरि नामा * खोजहु तात सकल शुभ धामा ॥
 काक-भुशुंडि केर अस्थाना * जावहु तुम तहँ वीर सुजाना ॥
 शूरसेन कर मंडप राजै * जहँ लोमश साँडिल्य विगजै ॥
 सुमिरि राम खोजहु अब जाई * मास दिवस में आवहु भाई ॥
 राजा की सुनिके यह वाता * चले तुरत मन में हृषपाता ॥
 पद्म इकादश वानर साथी * चले सकल सुमिरत रघुनाथा ॥
 पुनि सुग्रीव सुवीर बुलायउ * अतिहित सों यह बचन सुनायउ ॥

दोहा--पश्चिम दिशिकी ओर तुम, खोजहु सीतहिं जाय ।

रामकाज कहँ तुरत करि, मोहिं सुनावहु आय ॥

सरिता सर बन गिरि गुहा, खोजत सबही ठाम ।
दशपटलख हरि जावहू, लै रघुपति कर नाम ॥

इति श्लोक

अवधि मेदि जो विनु सुधि पाये * आवइ वनिहि सो मोहि मराये ॥
दोहा--बचन सुनत सब वानर, जहँ तहँ चले तुरंत ।

तब सुग्रीवँ बोलाये, अंगद नल हनुमंत ॥ २३ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना * जामवंत मतिधीर मुजाना ॥
सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू * सीतासुधि पूछेहु मव काहू ॥
मन क्रम बचन सो जतन विचारेहु * रामचंद्र कर काज मँवारेहु ॥
भानुपीठि सेइय उर आगी * स्वामिहि सर्वभाव छल त्यागी ॥
तजि माया मेइय परलोका * मिटहि सकल भवमंभव मोका ॥
देह धरे कर यह फलु भाई * भजिय राम सब काम विहाई ॥
सोइ गुनज्ञ सोई बड़भागी * जो रघु-वीर-चरन-अनुरागी ॥
आयसु माँगि चरन मिरु नाई * चले हरषि सुमिरत रघुराई ॥
पाछे पवनतनय सिरु नावा * जानि काजु प्रभु निकट बोलावा ॥
परमा सीस सरोरुहपानी * करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥
बहुप्रकार सीतहिं समुझायेहु * कहि बल विरह वंगि तुम्ह आयेहु ॥
हनुमत जनम सुफल करि माना * चलेउ हृदय धरि कृपानिधाना ॥
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता * राजनीति राखत सुरत्राता ॥
दोहा--चले सकल बन खोजत, सरिता सर गिरि खोह ।

राम-काज-लय-लीन मन, विसरा तन कर छोह ॥२४॥

कतहुँ होइ निमिचर सों भेटा * प्रान लेहिं एक एक चपेटा ॥
बहुप्रकार गिरि कानन हेरहिं * कोउ मुनि मिलइ ताहि सब धरहिं ॥
लागि तृषा अतिसय अकुलाने * मिलइ न जल घन गहन भुलाने ॥
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना * मरन चहत सब विनु जलपाना ॥
चढ़ि गिरिसिखर चहँदिसि देखा * भूमिविवर एक कौतुक पेखा ॥
चक्रवाक वक हंस उडाहीं * बहुतेक खग प्रविसहिं तेहि माहीं ॥

गिरि तें उतरि पवनसुत आवा * सब कहूँ लेइ सोइ विवर देखावा ॥
 आगे करि हनुमंतहिं लीन्हा * पैठें विवर विलंबु न कीन्हा ॥
 दोहा-दीख जाइ उपवन बर, सर विकसित बहुकंज ।

मंदिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तपपुंज ॥२५॥

दूरि तें ताहि मवन्हि सिरु नावा * पूछे निजवृत्तांत सुनावा ॥
 तेहि तव कहा करहु जलपाना * खाहु सुरम-सुंदर-फल नाना ॥
 मज्जन कीन्ह मधुरफल खाये * तासु निकट पुनि सब चलि आये ॥
 तेहि मव आपनि कथा सुनाई * में अब जाव जहाँ रघुराई ॥
 मूँदहु नयन विवर तजि जाहू * पैहहु सीतहि जनि पछिताहू ॥
 नयन मूँदि पुनि देखहिं वीरा * ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा ॥
 सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा * जाइ कमलपद नायेसि माथा ॥
 नाना भांति विनय तेहि कीन्ही * अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥
 दोहा--बदरीवन कहूँ सो गई, प्रभुअज्ञा धरि सीस ।

उर धरि राम-चरन-जुग, जे बंदत अज ईस ॥२६॥

इहाँ विचारहिं कपि मन माहीं * वांती अवधि काज कछु नाहीं ॥
 सब मिलि कहहिं परसपर वाता * विनु सुधि लये करब का भ्राता ॥
 कह अंगद लोचन भरि वारी * दुहूँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
 इहाँ न सुधि मीता के पाई * उहाँ गये मारिहि कपिराई ॥
 पिता वध पर मारत मोही * राखा राम निहोर न ओही ॥
 पुनि पुनि अंगद कह मव पाहीं * मरन भयेउ कछु संमय नाहीं ॥
 अंगद वचन सुनत कपिवीरा * बोलि न मकहिं नयन वह नीरा ॥
 छन एक सोच मगन होइ गयऊ * पुनि अस वचन कहत सब भयऊ ॥
 हम सीता कै सोध बिहीना * नहिं जैहहिं जुवराज प्रवीना ॥
 अस कहि लवन-सिंधु-तट जाई * बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
 जामवंत अंगददुख देखी * कहो कथा उपदेमबिसेखी ॥
 तात राम कहूँ नर जनि मानहु * निर्गुन ब्रह्म अतित अज जानहु ॥
 हम सब सेवक अति-बड़-भागी * मंतत सगुन-ब्रह्म-अनुरागी ॥

दोहा--निज इच्छा प्रभु अवतरइ, सुर-महि-गो-द्विजलागि ।

सगुन उपासक संग तहँ, रहहिं मोच्छसुखत्यागि ॥२७॥

एहि विधि कथा कहहि बहुभाँती * गिरि कंदरा सुनी मंपाती ॥
वाहेर होइ देखे बहु कीसा * मोहि अहार दीन्ह जगदीमा ॥
आजु सर्वाहिं कहँ भच्छन करऊँ * दिन बहु चल अहार विनु मरऊँ ॥
कवहुँ न मिल भरि उदर अहारा * आजु दीन्ह विधि एकहि वारा ॥

डरपे गीध बचन सुनि काना * अब भा मरन सत्य हम जाना ॥
कपि सब उठे गीध कहँ देखी * जामवंत मन सोच विसेखी ॥
कह अंगद विचारि मन माहीं * धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥
राम-काज-कारन तनु त्यागी * हरिपुर गयउ परम-बड़-भागी ॥
सुनि खग हरष-सोक-जुग वानी * आवा निकट कपिन्ह भय मानी ॥
तिन्हहिं अभय करि पूछेसि जाई * कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥
सुनि मंपाति बंधु कै करनी * रघुपति-महिमा बहुविधि धरनी ॥

दोहा--मोहि लोइ जाहु सिंधु तट, देउँ तिलांजलि ताहि ।

बचनसहाय करवि में, पैहहु खोजहु जाहि ॥२८॥

अनुज क्रिया करि सागर तीरा * कह निज कथा सुनहु कपि बीरा ॥
हम दोउ बंधु प्रथम तरुनाई * गगन गये रवि निकट उड़ाई ॥
तेज न सहिसक सो फिरि आया * में अभिमानी रवि नियराया ॥
जरे पंख अति तेज अपारा * परेउँ भूमि करि धोरचिकारा ॥
मुनि एक नाम चंद्रमा ओही * लागी दया देखि करि मोही ॥
बहुप्रकार तेहि ज्ञान सुनावा * देह जनित अभिमान छुड़ावा ॥
त्रेता ब्रह्म मनुज तनु धरहीं * तासु नारि निमिचर-पति हरहीं ॥
तासु खोज पठइहि प्रभु दूता * तिन्हहिं मिले तैं होव पुनीता ॥
जमिहहिं पंख करसि जनि चिंता * तिन्हहिं देखाइ दिहेसु तैं सीता ॥

अथ क्षेपक

यह कहि मुनि निज आश्रम गयऊ * तिहिक्षण हृदय ज्ञान कछु भयऊ ॥
अस इक वात सुनहु मन लाई * दूसरि कथा कहौं रुचि पाई ॥
लुधा एक दिन मोहिं सतायो * निज सुत सो दुख जाइ सुनायो ॥

जीव लेनहित बनसो आवा * गज मृगराजहिं मार गिरावा ॥
 अस्त भये रवि घर कहँ आयउ * तव में मनमें क्रोध बढ़ायउ ॥
 पुत्रहिं शाप देन कहँ भयऊ * तिहि विलंब कारण अम कहेऊ ॥
 सुनहु तात चित धरि मम बानी * कहहुँ तुमहिं सब कथा बग्वानी ॥
 वीस भुजा अरु बड़ दशआनन * लिये जात इक नारि सुहावन ॥
 जान जन्तु में धरा प्रचारी * तुरत छोड़ दीनी तिन नारी ॥
 मोरि विनय करि कुजदिशि गयऊ * में पुनि बाट भवनकी लयऊ ॥
 भयो दुःख मोहिं सुन तत्काला * कस्यो पुत्रते में यह हाल ॥
 अहह तात तैं भल नहिं कीन्हा * रघुपति नारि ब्रौन नहिं लीन्हा ॥
 पंखहीन मेरो बस नाहीं * जाहि भिरुं तिहि निश्चर पाहीं ॥
 पुनि मुनि वचन सुरत मोहिं आवा * तुमहिं देखि अभिमत फलपावा ॥
 निशि दिन मग जोवत दिन भरऊँ * सदा रामको सुमिरण करऊँ ॥

इति ज्ञेपक

मुनि कइ गिरा मत्य भइ आजू * सुनि मम वचन करहु प्रभुकाजू ॥
 गिरि त्रिकूट उपर बस लंका * तहँ रह रावन महज अमंका ॥
 तहँ असोकउपवन जहँ रहई * सीता बैठि सोचरत अहई ॥
 दोहा--मैं देखउँ तुम्ह नाहीं, गीधहि दृष्टि अपार ।

बहु भयउँ न त करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार ॥२६॥

जो नाँवइ मतयोजन सागर * करइ मो रामकाज मतिआगर ॥
 मोहि विलोकि धरहु मन धीरा * रामकृपा कम भयउ सरीरा ॥
 पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं * अतिअपार भवभागर तरहीं ॥
 तामु दूत तुम्ह ताज कदराई * राम हृदय धरि करहु उपाई ॥
 अस कहि उमा गीध जब गयऊ * तिन्हके मन अतिविममय भयऊ ॥
 निज निज बल सब काहू भाखा * पार जाइ कर संसय राखा ॥
 जरठ भयउँ अब कहइ रिखेसा * नहिं तनु रहा प्रथम-बल-खेसा ॥
 जयहिं त्रिविक्रम भयउ खरारी * तव में तरुन रहेउँ बलभारी ॥

अथ ज्ञेपक

विकट नाम वानर अम भाखा * योजन बीस जाउ बल गव्वा ॥
 नील कहा मैं चालिस जाऊँ * अधिक जात निज मगहिं डगाऊँ ॥

दुर्धर हाथ जोड़ यों कहई ❀ मम बल पंचाशत कर अहई ॥
 नल बोल्यो दुहुँ बाँह उठाई ❀ योजन माठ लाँघ हम जाई ॥
 दधिमुख ऐसे वचन सुनावत ❀ अमी मात योजन हम धावत ॥
 यह सुनि कह अंगद युवराज ❀ इनने बलते होय न काज ॥

दोहा-अंगद मनमें भा दुखी, तव बोल्यो ऋच्छेश ।

बृह भयो अब नहिं रहा, युवावस्थ लवलेश ॥

बृह भयहुँ अब बलहिं सुनाऊँ ❀ पलमें लाँघि मिधु कहँ जाऊँ ॥
 इकदिन बदरिनाथ में आवा ❀ तहँ इक चरित देखि मनभावा ॥
 ब्रह्म ज्ञान इक विप्र सुनावै ❀ श्री भगवत सो ध्यान लगावै ॥
 असुर एक तिहि मारन आवा ❀ ताकहँ देखि कोप मोहिं लावा ॥
 योजन तीस शैल परमाना ❀ लै उखाड़ दौड़ा बलवाना ॥
 सो मारेमि मम पद तल आई ❀ नहीं तनिक मोहिं मुर्झा आई ॥
 तव मैं क्रोध किया अति भारी ❀ चार फाँक करि महिपर डारी ॥

इति चंपक

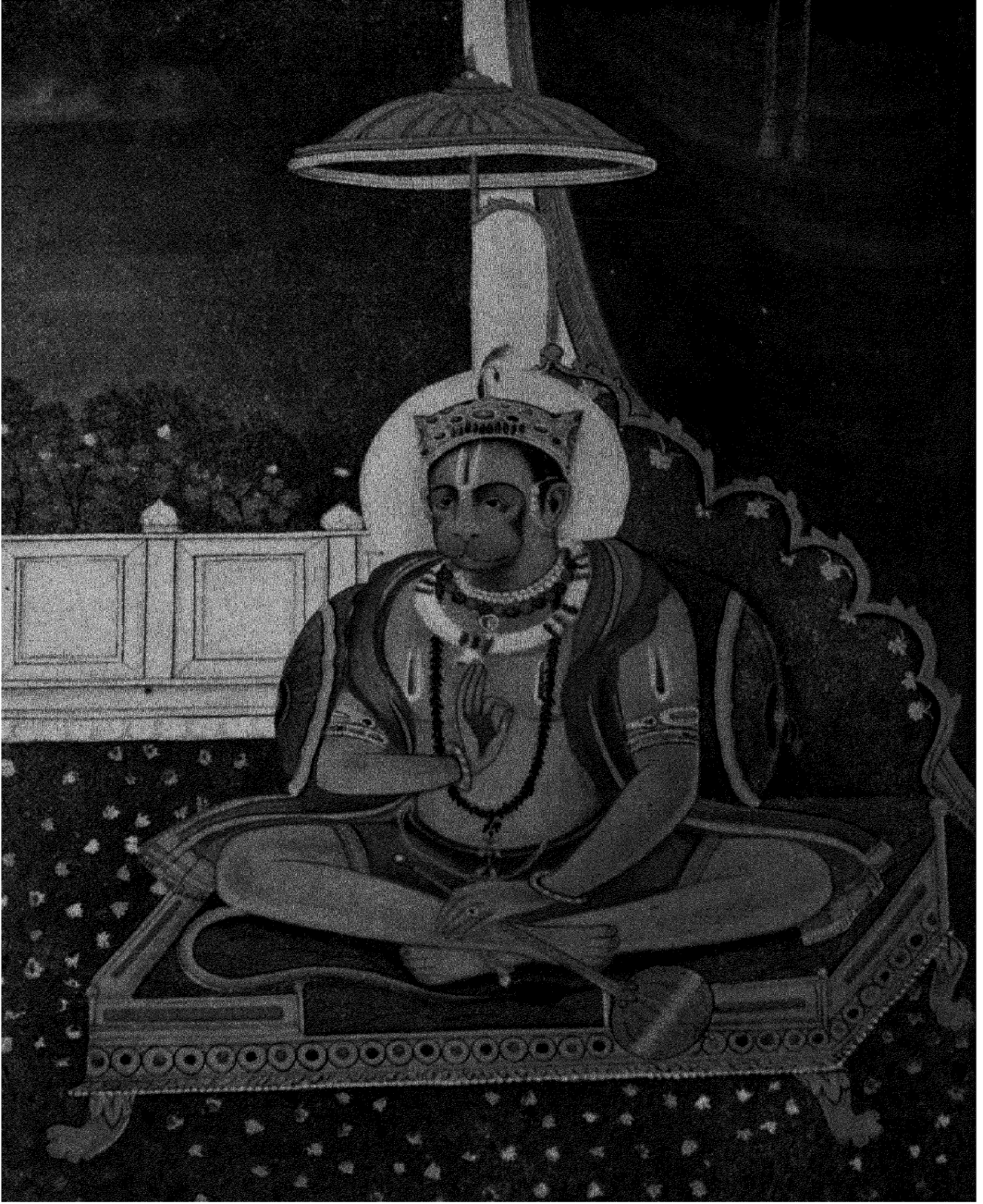
दोहा-बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ, सो तनु बरनि न जाइ ।

उभय घरी महँ दीन्ही, सात प्रदच्छिन धाई ॥ ३० ॥

अंगद कहइ जाऊँ मैं पारा ❀ जिय मंमथ कळु फिरती वारा ॥
 जामवंत कह तुम्ह सब लायक ❀ पठइय किमि मवही कर नायक ॥
 कहइ रिच्छपति सुनु हनुमाना ❀ का चुप साधि रहेउ बलवाना ॥
 पवन-तनय-बल पवनसमाना ❀ बुधि- विवेक-विज्ञान- निधाना ॥
 कवन सो काज कठिन जगमाहीं ❀ जो नहिं तात होइ तुम्ह पाहीं ॥

अथ चंपक

जन्म कथा तव वरणों भाई ❀ सादर सुनहु सकल मन लाई ॥
 नाम हिमाचल गिरि कर राजा ❀ कश्यपऋषि रह सहित समाजा ॥
 दिग्गज सम इक हाथी आयो ❀ ऋषिगण सन्मुख तुरतहि धायो ॥
 केशरि नाम तहाँ कर ईशा ❀ ताहि वध्यो तव तात हरीशा ॥
 तात प्रबल बल मुनिन्ह सराहा ❀ कह्यो माँग वर जो चित चाहा ॥
 जो प्रसन्न मोपर मुनिराई ❀ पुत्र देहु बल में अधिकारी ॥



पवन - तनय - बल पवनसमाना, बुधि - विवेक - विज्ञान - निधाना ।
कवन सो काज कठिन जगमाही, जो नाहि तात होइ तुम्ह पाही ॥

भागवत भूषण प्रेम, कल्याण (काशी राइट)

दोहा--वेगवन्त मारुत सरिस, बुधिवल रूप निधान ।

एवमस्तु कहि ऋषि गये, केशरि सुनि सुखमान ॥

अंजनि नाम तुम्हारी माता * रूप अपार जगत विख्याता ॥
करि शृंगार अति रूप बनाई * बैठी सो पर्वत पर जाई ॥
रूप देख मारुत मुख सर्सा * चीर उडाय चाह तिहि पर्सा ॥
सती अंजनी देख अनीता * शापहि लगी देन विपरीता ॥
तव मारुत कह मीठी बानी * क्षमा करहु अपराध भवाना ॥
तव पति मम मम पुत्रहि जाची * मुनि वाणी नहिं होय अमाँची ॥

दोहा--चतुर्दशी कातिक वदी, शुभ घटि अरु शनिवार ।

तादिन तुम प्रगटे सुनहु, बीच सकल संसार ॥

इक दिन मात अंक लै ठाढ़ी * करत प्यार उर आनंद वाढ़ी ॥
देखे सूर्य उदय भा लाला * तइक स्वर्ग पहुँच तत्काला ॥
सूर्य गहन को भुजा उग्राई * तवहीं कोप कियो सुरगई ॥
कर गहि वज्र तुरत जब मारा * मूर्च्छिपरं तुम पवन कुमारा ॥
चिन्ह भयो ढोढ़ी महँ लग कर * पन्यो नाम हनुमान सुकपिवर ॥
मुच्छ्रां जगी तुम्हार मुजाना * किये भक्ष रविकहँ बलवाना ॥
अंधकार मव जगमहँ भयऊ * दान धर्म जप तप मव गयऊ ॥
अस्तुति करत देव मव भागे * लगि चरित्र शिव भापन लागे ॥
देव धरहु मनमें तुम धीरा * जाय कहहु केशरिसों पीरा ॥

दोहा--शिव ब्रह्मादिक इन्द्र सब, सुर आयै तेहि पास ।

पवन देव पुनि कोप कर, रांक लिये सब स्वास ॥

मवमिलि सुर अम कहें बखानी * भई चूक हमसो अनजानी ॥
स्वास खोल रवि करौ प्रकाश * मुखप्रद बहे ब्यार सुताम ॥
तुमको मुजम हमहिं कल्याना * जो चाहिय माँगिय वरदाना ॥
मव देवन की बानी मुनकर * कहें केशरी मन महँ गुनिकर ॥
अजर अमर अरु कर बलवाना * मोरपूत मम नहिं कोउ आना ॥
रामभक्ति महँ होइ परायन * यह वरदान देहु चतुरानन ॥

एवमस्तु कह देव मिथाये ❀ सुनि यह वचन कीश हरपाये ॥
हुइहे सिद्ध रामकहँ काजू ❀ समुक्ति परा चित यह युवराजू ॥

दोहा--जामवन्त कपि जब कही, उत्पति पवन कुमार ।
सुनि हरपे नलनील हरि, द्विविद आदि कपिभार ॥
पुनि हनुमन्त समुद्र कहँ, देखन लभ्यो वहोरि ।
जामवन्त कहतौ भयो, सुनहु वचन अब मोरि ॥

इति श्लेषक

रामकाज लागि तव अवतारा ❀ सुनतहिं भयउ पर्वताकारा ॥
कनक-वरन-तन तेज विराजा ❀ मानहुं अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
सिंहनाद करि थारहिं वारा ❀ लीलहि नाँवउँ जलधि अपारा ॥
महित सहाय रावनहिं मारी ❀ आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ॥
जामवन्त में पूछउँ तोही ❀ उचित मिखावन दीजेहु मोही ॥
एतना करहु तात तुम्ह जाई ❀ सीतहि देखि कहहु सुधि आई ॥
तव निज-भुज-बल राजिवनैना ❀ कौतुक लागि मंग कपिसैना ॥

छंद--कपि-सेन-मंग नंधारि निमिचर रामु सीतहिं आनिहें ।

त्रै-लोक-पावन-सु-जम मुर भुनि नारदादि वखानिहें ॥

जो भुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावई ।

रघु-धार-पद-पाथोज-मधुकर दास तुलसी गावई ॥

दोहा--भवभेषज रघुनाथजसु, सुनहिं जे नर अरु नारि ।

तिन कर सकलमनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ॥

सोरठा--नीलोत्पल-तन-स्याम, कामकोटि सोभा अधिक ।

सुनिय तासु गुनग्राम, जासु नाम अघ-खग-बधिक ॥

इति किष्किन्धाकाण्ड समाप्त ।



श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामायण

सुन्दरकाण्ड

श्लोकाः

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ब्रह्माशम्भुफणीन्द्र-
मेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् । रामाख्यं जगदीश्वरं सुगुरुं मायामनुष्यं
हरिं वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥ नान्या स्पृहा
रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा । भक्तिं
प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवर्द्धतं वातजातं नमामि ॥३॥
जामवंत के वचन सुहाये * मुनि हनुमंत हृदय अति भाषे ॥
तव लागि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई * महि दुख कंद मूल फल खाई ॥
जव लागि आवउँ मीतहि देखी * होइ काज मोहि हरप विमेषी ॥
अम कहि नाइ भवन्हि कहूँ माथा * चलेउ हरपि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिंधुतीर एक भूधर सुन्दर * कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
वार वार रघुवीर मँभारी * तरकेउ पवनतनय बलभारी ॥
जेहि गिरि चरन देइ हनुमंता * चलेउ मो गा पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति कर वाना * तेही भाँति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघु-पति-दूत विचारी * तैं मैनाक होहि समहारी ॥

सोरठा-सिंधुवचन उर आनि, तुरत उठेउ मैनाक तव ।

कपि कहूँ कीन्ह प्रनाम, पुलकिततनु कर जोरि करि ॥

दोहा-हनूमान तेहि परमा, कर पुनि कीन्ह प्रनाम ।

रामकाजु कीन्है विनु, मोहि कहाँ विस्राम ॥ १ ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा * जानइ कहँ बल-बुद्धि-विसेखा ॥
 सुरमा नाम अहिन्ह कै माता * पठइन्हि आइ कही तेहि वाता ॥
 आजु मुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा * सुनत वचन कह पवनकुमारा ॥
 रामकाजु करि फिरि में आवउँ * मीता कै सुधि प्रभुहि सुनावउँ ॥
 तव तव वदन पैठिहउँ आई * मत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥
 कवनेहु जतन देइ नहिं जाना * अससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
 जोजन भरि तेहि वदनु पसारा * कपि तनु कीन्ह दु-गुण-विस्तारा ॥
 सोरह जोजन मुख तेहि ठयेऊ * तुरत पवनसुत वत्तिस भयेऊ ॥
 जस जस मुरमा वदनु वढावा * तासु दून कपि रूप देखावा ॥
 मत जोजन तेहि आनन कीन्हा * अति-लघु-रूप पवन सुत लीन्हा ॥
 वदन पइठि पुनि बाहेर आवा * माँगा विदा ताहि मिरु नावा ॥
 मोहि मुरन्ह जेहि लागि पठावा * बुधि-बल-मरमु तोर में पावा ॥

दोहा-राम काजु सब करिहहु, तुम्ह बल-बुद्धि-निधान ।

आसिप देइ गई सो, हरपि चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निमिचरि एक सिंधु महँ रहई * करि माया नम के खग गहई ॥
 जीव जंतु जे गगन उडाहीं * जल विलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥
 गहइ छाँह सक सो न उडाई * एहि विधि मदा गगनचर खाई ॥
 सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा * तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा ॥
 ताहि मारि मारुत-सुत-बीग * वाग्धिपार गयउ मतिधीरा ॥
 तहाँ जाइ देखी वनसोभा * गुंजत चंचरीक मधुलोभा ॥
 नाना तरु फल फूल सुहाये * खग-मृग-वृंद देखि मन भाये ॥
 मैल विसाल देखि एक आगे * तापर धाइ चढेउ भय त्यागे ॥
 उमा न कळु कपि कै अधिकारै * प्रभुप्रताप जो कालहि खाई ॥
 गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी * कहि न जाइ अति दुर्ग विसेखी ॥
 अतिउतंग जलनिधि चहुँ पासा * कनककोट कर परमप्रकामा ॥

छंद-कनक कोट विचित्र-मनि-कृत सुंदरायतना घना ।
 चउहट्ट हट्ट सुवट्ट वीथी चारु पुर बहुविधि बना ॥
 गज वाजि खच्चर निकर पदचर रथ वरूथन्हि को मनइ ।
 वहरूप निमि-चर-जूथ अतिबल सेन वरनत बहि वनइ ॥
 वन बाग उपवन वाटिका मर कूप वापी सोहहीं ।
 नर-नाग-सुर-गंधर्व-कन्या-रूप मुनिमन मोहहीं ॥
 कहूँ माल देहविमाल मैलममान अति बल गर्जहीं ।
 नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुविधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥
 करि जनक भट्ट कोटिन्ह विकटतन नगर चहुँदिमि गच्छहीं ।
 कहूँ महिष मानुष धनु खर अज खल निमाचर भच्छहीं ॥
 एहि लागि तुलसीदाम इन्ह को कथा कळुयक हे कही ।
 रघु-वीर-भर-तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पइहहिं मही ॥

दोहा-पुररखवारे देखि बहु, कपि मन कोन्ह विचार ।

अतिलघु रूप धरउँ निसि, नगर करउँ पइसार ॥३॥

ममकममान रूप कपि धरी * लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
 नाम लंकिनी एक निसिचरी * सो कह चलेमि मोहि निंदरी ॥
 जानेहि नहीं मरम मठ मोरा * मोर अहार जहाँ लागि चोग ॥
 मुठिका एक महा कपि हनी * रुधिर वमत धरनी टन मनी ॥
 पुनि मँभार उठी सो लंका * जोरि पानि कर विनय समंका ॥
 जब रावनहि ब्रह्म वर दीन्हा * चलत विरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥
 विकल होमि तें कपि के मारे * तव जानेसु निमिचर संघारे ॥
 तात मोर अतिपुन्य बढ़ता * देखेउँ नयन राम कर दृता ॥

दोहा-तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग ।

तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग ॥४॥

प्रविमि नगर कीजै मव काजा * हृदय राखि कोमल-पुर-राजा ॥
 गरल सुधा रिपु करइ मितार्इ * गोपद मिन्धु अनल मितलाई ॥
 गरुअ सुमेरु रेनुमम ताही * राम कृपा करि चितवा जाही ॥
 अति-लघु-रूप धरेउ हनुमाना * पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा * देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥
 गयउ दमानन मंदिर माँहीं * अतिविचित्र कहि जात सो नाहीं ॥
 सयन किये देखा कपि तेही * मंदिर महुँ न दीख वैदेही ॥
 भवन एक पुनि दीख सुहावा * हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥
 दोहा—रामायुध अंकित गृह, सोभा वरनि न जाइ ।

नव तुलसिको वृंद तहँ, देखि हरप कपिराइ ॥५॥

लंका निर्मि-वर-निकर-निवासा * इहाँ कहाँ सज्जन कर वासा ॥
 मन महुँ तरक करइ कपि लागा * तेहि समय विभीषनु जागा ॥
 राम राम तेहि सुमिरन कीन्हा * हृदय हरप कपि सज्जन चीन्हा ॥
 एहि मनु हठि करहउ पहिचानी * माधु तें होइ न कारज हानी ॥
 विप्ररूप धरि वचन सुनाये * सुनत विभीषन उठि तहँ आये ॥
 करि प्रनाम पूछी कुमलाई * विप्र कहहु निजकथा बुझाई ॥
 की तुम्ह हरिदासन महुँ कोई * मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
 की तुम्ह राम-दीन-अनुरागी * आयहु मोहि करन बड़ भागी ॥
 दोहा—तव हनुमंत कहो सब, रामकथा निजनाम ।

सुनत जुगलतन पुलक मन, मगन सुमिरि गुनग्राम ॥६॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी * जिमिदमनन्हि महुँ जीभ विचारी ॥
 तात कहहुँ मोहि जानि अनाथा * करिहहि कृपा भानु-कुल-नाथा ॥
 ताममतनु कळु माधन नाहीं * प्रीति न पद मरोज मन माहीं ॥
 अब मोहि भा भरोस हनुमंता * विनु हरिकृपा मिलहि नहि मंता ॥
 जौ रघुवीर अनुग्रह कीन्हा * तौ तुम्ह मोहिं दरसु हठि दीन्हा ॥
 सुनहु विभीषन प्रभु कै रीती * करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
 कहहु कवन मैं परम कुलीना * कपि चंचल सबही विधि हीना ॥
 प्रात लेइ जो नाम हमारा * तेहि दिन ताहि न मिलइ अहारा ॥
 दोहा—अस मैं अधम सखा सुनु, मोहूँ पर रघुवीर ।

कीन्ही कृपा सुमिरि गुन, भरे बिलोचन नीर ॥७॥

जानतहँ अम स्वामि विभारी * फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
 एहि विधि कहत राम-गुन-ग्रामा * पावा अनिर्वाच्य विस्वामा ॥

पुनि मव कथा विभीषन कही * जेहि विधि जनकमुता तहँ रही ॥
 तव हनुमंत कहा सुनु भ्राता * देखा चहउँ जानकी माता ॥
 जुगुति विभीषन सकल सुनाई * चलेउ पवनसुत विदा कराई ॥
 करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ * वन असोक सीता रह जहवाँ ॥
 देखि मनहिं महँ किन्ह प्रनामा * बैठेहि बीति जान निसिजामा ॥
 कृतमन सीस जटा एक वंनी * जपति हृदय रघु-पति-गुन-सेनी ॥
 दोहा—निजपद नयन दिये मन, रामचरन महँ लीन ।

परमदुखी भा पवनसुत, देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥

तरुपल्लव महँ रहा लुकाई * करइ विचार करउँ का भाई ॥
 तेहि अवसर रावनु तहँ आवा * भंग नारि बहु किये बनावा ॥
 बहुविधि खल मीतहिं समुझावा * माम दाम भय भेद देखावा ॥
 कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी * मंदोदरी आदि मव रानी ॥
 तव अनुचरी करउँ पन मोरा * एक वार विलोकु मय ओरा ॥
 तून धरि ओठ कहति बैदेही * मुमिरि अवधपति परममनेही ॥
 सुनु दसमुख खद्योत प्रकामा * कबहु कि नलिनी करइ विकामा ॥
 अस मन समुझु कहति जानकी * खल सुधि नहिं रघु-वीर-वान की ॥
 मठ सूने हरि आनेहि मोही * अधम निलज्ज लाज नहिं तोही ॥
 दोहा—आपुहि सुनि खद्योतसम रामहिं भानुममान ।

परुपवचन सुनि काटि अमि, बोला अतिखिसियान ॥ ९ ॥

सीता तैं मम कृत अपमाना * कटिहउँ तव मिर कठिनकृपाना ॥
 नाहिं त मपदि मानु मम वानी * सुमुखि होत न त जीवनहानी ॥
 स्याम—सरोज—दाम—सम सुंदर * प्रभुभुज करि-कर-मम दमकंधर ॥
 सो भुज कंठ कि तव अमि घोरा * सुनु मठ अम प्रमान पन मोग ॥
 चंद्रहाम हर मम परितापं * रघु-पति—विरह—अनल—संजातं ॥
 मीतल निसि तव अमि-वर-धारा * कह मीता हरु मम दुखभारा ॥
 सुनत वचन पुनि मारन धावा * मयननया कहि नीति बुझावा ॥
 कहेमि सकल निमिचरिन्ह बोलाई * मीतहि बहुविधि त्रामहु जाई ॥
 मास दिवस महँ कहा न माना * तौ में मारव काटि कृपाना ॥

दोहा-भवन गयउ दशकंधर, इहां पिसाचिनिवृंद ।

सीतहिं आस देखावहिं, धरहिं रूप बहुमंद ॥ १० ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका * राम-चरन-रति निपुन विवेका ॥
 सवन्हों बोलि सुनायेमि सपना * सीतहिं सेइ करहु हित अपना ॥
 सपने वानर लंका जारी * जातुधानसेना सब मारी ॥
 खरआरूढ नगन दमसीसा * मुंडितमिर खंडित-भुज-धीसा ॥
 एहिविधि सो दच्छिनदिमि जाई * लंका मनहुं विभीषन पाई ॥
 नगर फिरी रघु-वीर-दोहाई * तव प्रभु सीता बोलि पठाई ॥
 यह सपना में कहउँ पुकारी * होइहि मत्य गये दिन चारी ॥
 तासु बचन सुन ते सब डरीं * जनकमुता के चरनन्हि परीं ॥
 दोहा--जहँ तहँ गईं सकल तव, सीता कर मन सोच ।

मास दिवस बीते मोहि, मारिहि निसिचर पोच ॥ ११ ॥

त्रिजटा मन बोली कर जारी * मातु त्रिपतिमंगिनि तें मोरी ॥
 तजउँ देह करु बंगि उपाई * दुमह विरह अब नहिं सहि जाई ॥
 आनि काठ रघु चिता बनाई * मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
 सत्य करहि मम प्रीति मयानी * सुनइ को सवन सूलसम बानी ॥
 सुनत बचन पद गहि समुझायेमि * प्रभु-प्रताप-वल-सुजम सुनायेमि ॥
 निसि न अनल मिलु सुनु सुकुमारी * अस कहि सो निजभवन सिधारी ॥
 कह सीता विधि भा प्रतिकूला * मिथिहिन पावक मिटिहिन सूला ॥
 देखियत प्रगट गगन अंगाग * अवनि न आवत एकउ ताग ॥
 पावकमय ममि सवत न आगी * मानहुं मोहि जानि हतभागी ॥
 सुनहि विनय मम विटप असोका * सत्य नाम कह हरु मम मोका ॥
 नूतनकिमलय अनलममाना * देहि अगिनि जनि करहि निदाना ॥
 देखि परमविरहाकुल सीता * सो छन कपिहि कल्पसम बीता ॥
 सो ०--कपि करि हृदय विचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तव ।

जनु असोक अंगार, दीन्ह हरपि उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

तव देखी मुद्रिका मनोहर * राम-नाम - अंकित अतिसुंदर ॥
 चकित चितव मुदरी पहिचानी * हरष विषाद हृदय अकुलानी ॥

जीति को सकइ अजय रघुराई ❀ माया तें असि रचि नहिं जाई ॥
सीता मन बिचार कर नाना ❀ मधुरवचन बोलेउ हनुमाना ॥
राम - चंद्र - गुन बरनइ लागा ❀ सुनतहि सीता कर दुख भागा ॥
लागी सुनइ स्रवन मन लाई ❀ आदिहुँ तें सब कथा सुनाई ॥
स्रवनामृत जेहि कथा सुहाई ❀ कहि सो प्रगट होत किन भाई ॥
तव हनुमंत निकट चलि गयऊ ❀ फिर बैठी मन विसमय भयऊ ॥
रामदूत मैं मातु जानकी ❀ सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी ❀ दीन्हि राम तुम्ह कहँ महिदानी ॥
नर बानरहि संग कहु कैसे ❀ कही कथा भइ संगति जैसे ॥
दोहा--कपि के वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विस्वास ।

जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिंधु कर दास ॥१३॥

हरिजन जानि प्रीति अतिवाढी ❀ सजल नयन पुलकावलि ठाढी ॥
बूडत विरहजलधि हनुमाना ❀ भयहु तात मो कहँ जलयाना ॥
अव कहु कुमल जाउँ बलिहारी ❀ अनुजसहित सुखभवन खरारी ॥
कोमलचित कृपालु रघुराई ❀ कपि केहि हेतु धरी निदुराई ॥
सहजुबानि सेवक - सुख-दायक ❀ कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
कबहु नयन मम मीतल ताता ❀ होइहहिं निरखि स्याम-मृदु-गाता ॥
वचन न आव नयन भरि वारी ❀ अहह नाथ हौं निपट विमारी ॥
देखि परम विरहाकुल सीता ❀ बोला कपि मृदुवचन विनीता ॥
मातु कुसल प्रभु अनुजसमेता ❀ तव दुख दुखी सु-कृपा-निकेता ॥
जनि जननी मानहु जिय ऊना ❀ तुम्ह तें प्रेम राम के दना ॥
दोहा--रघुपति कर संदेस अब, सुनु जननो धरि धीर ।

अस कहि कपि गदगद भयउ, भरे विलोचन नीर ॥१४॥

कहेउ राम बियोग तव सीता ❀ मो कहँ सकल भये विपरीता ॥
नव-तरु-किसलय मनहुँ कृसानू ❀ काल-निमा-मम निसि मसि भानू ॥
कुबलयबिपिन कुंत-वन-परिसा ❀ वारिद तपत तेल जनु वरिसा ॥
जेहि तरु रहे करत तेइ पीरा ❀ उरग-स्वास-सम त्रिविध समीरा ॥
कहेहू ते कलु दुख घटि होई ❀ काहि कहउँ यह जान न कोई ॥

तत्त्व प्रेम कर मम अरु तोरा * जानत प्रिया एक मन मोरा ॥
 सो मन सदा रहत तोहि पाहीं * जानु प्रीतिरस एतनहि माहीं ॥
 प्रभुमंदेस सुनत वैदेही * मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥
 कह कपि हृदय धीर धरु माता * सुमिरु राम सेवक-सुख-दाता ॥
 उर आनहु रघु-पति-प्रभुताई * सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥
 दोहा--निसि-चर-निकर पतंगसम, रघु-पति-वान कृसानु ।

जननी हृदय धीर धरु, जरे निसाचर जानु ॥ १५ ॥
 जो रघुवीर होति सुधि पाई * करते नहिं विलंब रघुराई ॥
 रामवान रवि उये जानकी * तमबरूथ कहँ जातुधान की ॥
 अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई * प्रभुआयसु नहिं रामदोहाई ॥
 कल्लुक दिवस जननी धरु धीरा * कपिन सहित अइहहिं रघुवीरा ॥
 निसिचर मारि तोहि लेइ जैहहिं * तिहुँ पुर नारदादि जस गैहहिं ॥
 हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना * जातुधानभट अतिबलवाना ॥
 मोरे हृदय परम संदेहा * सुनि कपि प्रगट कीन्ह निजदेहा ॥
 कनक - भूधरा - कार - सरीरा * समरभयंकर अति-बल-वीरा ॥
 सीता मनभरोस तव भयऊ * पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ ॥
 दोहा--सुनु माता साखामृग, नहिं बल-बुद्धि-विसाल ।

प्रभुप्रताप तें गरुडहिं, खाइ परमलघु व्याल ॥ १६ ॥
 मन संतोष सुनत कपिवानी * भगति - प्रताप - तेज - बल - सानी ॥
 आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना * होहु तात बल-सील - निधाना ॥
 अजर अमर गुननिधि सुत होहु * करहिं बहुत रघुनायक छोहु ॥
 करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना * निर्भर प्रेममगन हनुमाना ॥
 वार वार नायेसि पद सीसा * बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
 अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता * आसिष तव अमोघ विख्याता ॥
 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा * लागि देखि सुंदरफल रूखा ॥
 सुनु सुत करहिं विपिनरखवारी * परमसुभट रजनीचर भारी ॥
 तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं * जाँ तुम्ह सुख मानहु मन माहा ॥

दोहा--देखि बुद्धि-बल-निपुन कपि, कहेउ जानकी जाहु ।

रघु-पति-चरन हृदय धरि, तात मधुरफल खाहु ॥ १७ ॥

चलेउ नाह सिरु बेटेउ बागा * फल खायेसि तरु तोरइ लागी ॥
 रहे तहाँ बहु भट रखवारे * कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
 नाथ एक आवा कपि भारी * तेहि असोकवाटिका उजारी ॥
 खायेसि फल अरु विटप उपारे * रच्छक मदि मदि महि डारे ॥
 सुनि रावन पठये भट नाना * तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
 सब रजनीचर कपि संघारे * गये पुकारत कछु अधमारे ॥

पुनि पठयेउ तेहि अल्यकुमारा * चला संग लेइ सुभट अपारा ॥
 आवत देखि विटप गहि तर्जा * ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥

दोहा--कछु मारेसि कछु मर्दोस, कछु मिलयेसि धरि धूरि ।

कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बलभरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना * पठयेसि मेवनाद बलवाना ॥
 मारेसि जनि सुत बाँधेसु ताही * देखिय कपिहि कहाँ कर आही ॥
 चला इंद्रजित अ-तुलित-योधा * बंधुनिधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
 कपि देखा दारुन भट आवा * कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
 अतिविसाल तरु एक उपारा * विरथ कीन्ह लंकेसकुमारा ॥
 रहे महाभट ता के संगी * गहि गहि कपि मर्दइ निजअंगा ॥
 तिन्हहि निपाति ताहि मन बाजा * भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥
 मुठिका मारि चढा तरु जाई * ताहि एक छन मुरुआ आई ॥
 उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया * जीति न जाय प्रभंजनजाया ॥

दोहा--ब्रह्म अस्त्र तेहि साधा, कपि मन कीन्ह विचार ।

जौं न ब्रह्म सर मानउँ, महिमा मिटइ अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मचान कपि कहँ तेहि मारा * परतिहुँ वार कटकु संघारा ॥
 तेहि देखा कपि मुरुद्वित भयऊ * नागपास बाँधेसि लेउ गयऊ ॥
 जासु नाम जपि सुनहु भवानी * भवबंधन काटहि नर ज्ञानी ॥
 तासु दूत की बँध तर आवा * प्रभुकारज लागि कपिहि बँधावा ॥
 कपिवंधन सुनि निसिचर धाये * कौतुक लागि सभा सब आये ॥

दस-मुख-सभा दीखि कपि जाई * कहि न जाइ कळु अतिप्रभुताई ॥
 कर जोरे सुर दिसिप विनीता * भृकुटि विलोकत सकल सभिता ॥
 देखि प्रताप न कपि मन मंका * जिमिअहिगनमहँ गरुड असंका ॥
 दोहा--कपिहि विलोकि दसानन, विहँसा कहि दुर्वाद ।

सुत-बध-सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय विपाद ॥२०॥

कह लंकैस कवन तें कीसा * केहि के बल घालेहि वन खीसा ॥
 की धौं सवन सुन नहिं मोही * देखउँ अति अमंक सठ तोही ॥
 मारे निसिचर केहि अपराधा * कहु सठ तोहि न प्रान कै वाधा ॥
 सुनु रावन ब्रह्मांडनिकाया * पाइ जासु बल बिरचति माया ॥
 जा के बल विरंचि हरि ईसा * पालत सृजत हरत दससीसा ॥
 जा बल सीस धरत सहमानन * अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
 धरे जो विविध देह सुरत्राता * तुम्ह से सठन्ह सिखावनदाता ॥
 हरकोदंड कठिन जेहि भंजा * तोहि समेत नृप-दल-मद गंजा ॥
 खर दूपन त्रिसिरा अरु वाली * बधे सकल अ-तुलित-बल-साली ॥
 दोहा--जा के बललवलेस तें, जितेहु चराचर भारि ।

तासु दूत मैं जा करि, हरि आनेहु प्रियनारि ॥२१॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई * सहसबाहु सन परी लराई ॥
 समर बालि मन करि जस पावा * सुनि कपिवचन विहँसि बहरावा ॥
 खायेउँ फल प्रभु लागी भूखा * कपिसुभाव तें तोरेउँ रूखा ॥
 सब के देह परमप्रिय स्वामी * मारहिं मोहि कु-मारग-गामी ॥
 जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे * तेहि पर बाँधेउ तनय तुम्हारे ॥
 मोहि न कळु बाँधे कइ लाजा * कीन्ह चहउँ निजप्रभु कर काजा ॥
 बिनती करउँ जोरि कर रावन * सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
 देखहु तुम निजकुलहि विचारी * भ्रम तजि भजहु भगत-भय-हारी ॥
 जा के डर अति काल डेराई * जो सुर असुर चराचर खाई ॥
 ता सों बैरु कबहुँ नहिं कीजै * मोरे कहे जानकी दीजै ॥
 दोहा--प्रनतपाल रघुनायक, करुनासिंधु खरारि ।

गये सरन प्रभु राखिहहिं, तव अपराध विसारि ॥२२॥

राम-चरन-पंकज उर धरहू * लंका अ-चल-राज तुम्ह करहू ॥
 रिषि-पुलस्ति-जस विमलमयंका * तेहि समि महँ जनि होहु कलंका ॥
 रामनाम विनु गिरा न सोहा * देखु बिचारि त्यागि मद मोहा ॥
 बसनहीन नहिं सोह सुरारी * सब - भूषन - भूषित वरनारी ॥
 रामबिमुख संपति प्रभुताई * जाइ रही पाई विनु पाई ॥
 सजल मूल जिन्ह सरित्न्ह नाहीं * वरषि गये पुनि तवहिं सुखाहीं ॥
 सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी * विमुखराम त्राता नहिं कोपी ॥
 मंकर सहस विष्णु अज तोही * सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥
 दोहा--मोहमूल बहु मूल प्रद, त्यागहु तम अभिमान ।

भजहु राम रघुनायक, कृपासिंधु भगवान ॥२३॥

जदापि कही कपि अतिहितवानी * भगति-बिवेक - विरति -नय-सानी ॥
 बोला विहँसि महाअभिमानी * मिला हमहिं कपि गुरु बड ज्ञानी ॥
 मृत्यु निकट आई खल तोही * लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
 उलटा होइहि कह हनुमाना * मतिभ्रम तोरि प्रगट मैं जाना ॥
 सुनि कपिवचन बहुत खिसिआना * बेगि न हरहु मूढ कर प्राना ॥
 सुनत निसाचर मारन धायें * सचिवन्ह महित विर्भापन आयें ॥
 नाइ सीस करि विनय बहूता * नीतिविरोध न मारिय दूता ॥
 आन दंड कल्लु करिय गोसाईं * सबही कहा मंत्र भल भाई ॥
 सुनत विहँसि बोला दसकंधर * अंगभंग करि पठइय बंदर ॥
 दोहा--कपि कै ममता पूँछि पर, सबहिं कहेउ समुभाय ।

तेल बोरि पट बाँधि पुनि, पावक देहु लगाय ॥२४॥

पूँछहीन बानर तहँ जाइहि * तव सठ निजनाथहिं लेइ आइहि ॥
 जिन्ह कै कीन्हेसि बहुत बड़ाई * देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥
 वचन सुनत कपि मन मुसुकाना * भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
 जातुधान सुनि रावनवचना * लागे रचइ मूढ सोइ रचना ॥
 रहा न नगर बसन घृत तेला * वाढी पूँछि कीन्ह कपि खेला ॥
 कौतुक कहँ आयें पुरवासी * मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी ॥
 बाजहिं ढोल देहिं सब तारी * नगर फेरि पुनि पूँछि प्रजारी ॥

पावक जरत देखि हनुमंता * भयउ परम लघुरूप तुरंता ॥
 निबुकि चढेउ कपि कनकअटारी * भईं समीत निसा-चर-नारी ॥
 दोहा--हरिप्रेरित तेहि अवसर, चले मरुत उनचास ।
 अट्टहास करि गर्जा, कपि बढि लाग अकास ॥२५॥

अथ चंपक

चढ्यो फलाँगि धाम लूम लामको उठायऊ ।
 मनो अकाश ते नदी कृपानु की बहायऊ ॥
 कि लंक लीलने को काल जीह सी पसारेहू ।
 किधौं अनी महान शूर सैफ सी निकारेहू ॥
 फिराय लाय लाय अयन मयन से लगे बरै ।
 गयंद छोर वाजि छोर ऊँट छोरिये खरै ॥
 अनेक बाल बालकी सुतात मात बोलहीं ।
 बचाय लीजिये हमें समय समान डोलहीं ॥
 अनेक नारि मारि रिंभ डिंभ काठ लावहीं ।
 अनेक डारि डारि वस्तु चारि लेन धावहीं ॥
 अनेक कंत वीरते पुकारि वैन यों कहैं ।
 उठाय लेहु लाल माल जाल दे परो तहैं ॥
 गिरैं कंगूर दूरते तबै कहै मंदोदरी ।
 विहाय लोक लाज कानि भागती न क्यों अरी ॥
 अरे अकंप नातिकाय कंटकी सहोदरं ।
 लिवाय लेउ अर्द्धगाति पूत नाति सोदरं ॥
 अनेक बार मैं कही बुझायहू विभीषणं ।
 न मानि दाढ़िजार ने कुठार वंश तीक्ष्णं ॥
 निकेत द्वार अर्द्ध उर्द्ध हाट वाट में जहाँ ।
 लुकाय जाय नीर तीर कीश देखिये तहाँ ॥
 बधू जो कुम्भकर्ण की पसारि हाथ भाषिये ।
 दुहाइ रामचन्द्रकेर मोर कंत राखिये ॥

अनेक धाय धाय आय रावणै सुनायऊ ।
 विचारि वीर मेघनाद से वली पठायऊ ॥
 अनेक अस्त्र शस्त्र लाय आय मारने लगे ।
 घुमाय दीन बालधी पुकारि कूरसे भगे ॥
 विशाल ज्वाल जानि कोप मेघ बोलै यों कही ।
 बुझाय देहु आगिरे बहाय कीशको सही ॥
 भले सुनाय मेघ आय पुंज पाथ छाड़ेऊ ।
 यथा सनेह पाप चौगुनी कृशानु वाड़ेऊ ॥
 लगो जु अंग अंग बान प्रान ले भजे सबै ।
 निहार रीत मालवान स्यान बोलियो तवै ॥
 न आहि याहि अग्नि आहि ईशकी जु वामता ।
 समीर स्वास मीयकी जु राम रोष मामता ॥
 बुलाय कालते कद्यो लंगूर लाउ मारिकै ।
 वटोर भूत प्रेत यक्ष दंड चंड धारिकै ॥
 विलोकि वात जात घात कीन मैन तासु को ।
 उठाय गालमें धरो परो खँभार जासुको ॥
 समेत शंभु इन्द्र वात जात पास आयऊ ।
 समीत पंकजासनादि वीनती सुनायऊ ॥

दोहा--देहु छाडि यमराज कहँ, यही विनय यक मोर ।
 बरवस आयो लरन सुनि, दीनगाल ते छोर ॥

इति चोपक

देह विमाल परम हरुआई * मंदिर तें मंदिर चढ धाई ॥
 जरइ नगर भा लोग विहाला * झपट लपट बहुकोटि कराला ॥
 तात मातु हा सुनिय पुकारा * एहि अवसर को हमहिं उवारा ॥
 हम जो कहा यह कपि नहिं होई * बानररूप धरे सुर कोई ॥
 साधुअवज्ञा कर फल ऐसा * जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥
 जारा नगरु निमिष एक माहीं * एक विभीषन कर गृह नाहीं ॥

ता कर दूत अनल जेहि मिरिजा * जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी * कूदि परा पुनि सिंधु मँझारी ॥

दोहा--पूँछि बुझाइ खोइ स्रम, धरि लघुरूप बहोरि ।

जनकसुता के आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥२६॥

मातु मोहि दीजै कछु चीन्हा * जैमे रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूडामनि उतारि तव दयऊ * हरषसमेत पवनसुत लयऊ ॥
कहेउ तात अम मोर प्रनामा * सब प्रकार प्रभु पूरनकामा ॥
दीन - दयालु - विरुद मंभारी * हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात सक्र - सुत - कथा सुनायहु * बानप्रताप प्रभुहिं समुझायहु ॥
मास दिवस महँ नाथ न आवा * तौ पुनि मोहि जियति नहिं पावा ॥
कहु कपि केहिबिधि राखउँ प्राणा * तुम्हहँ तात कहत अब जाना ॥
तोहि देखि सीतल भइ छाती * पुनि मो कहँ सोइ दिनु सोइ राती ॥

दोहा--जनकसुतहिं समुझाइ करि, बहुविध धोरजु दीन्ह ।

चरनकमल सिरुनाइ कपि, गवँनु राम पहिं कीन्ह ॥२७॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी * गर्भ स्रवहिंसुनि निसि-चर-नारी ॥
नाँधि सिंधु एहि पारहिं आवा * सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हरषे सब विलोकि हनुमाना * नूतन जनम कपिन्ह तव जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज विराजा * कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥
मिले मकल अति भये सुखारी * तलफत मीन पाव जनु वारी ॥
चले हरषि रघुनायक पासा * पूछत कहत नवल इतिहासा ॥
तव मधुवन भीतर सब आये * अंगदमंमत मधुफल खाये ॥
रखवारे जब बरजन लागे * मुष्टिप्रहार हनत सब भागे ॥

दोहा--जाइ पुकारे ते सब, बन उजार जुबराज ।

सुनि सुग्रीवँ हरष कपि, करि आये प्रभुकाज ॥२८॥

जौं न होति सीतासुधि पाई * मधुवन के फल सकहिं कि खाई ॥
एहि विधि मन विचार कर राजा * आइ गये कपि सहित समाजा ॥
आइ सबन्हि नावा पद सीसा * मिले सबन्हि अतिप्रेम कपीसा ॥
पूछो कुसल कुसलपद देखी * रामकृपा भा काजु विसेखी ॥

नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना * राखे सकल कपिन्ह के प्राणा ॥
 सुनि सुग्रीवँ वहुरि तेहि मिलेऊ * कपिन्हसहित रघुपति पहुँ चलेऊ ॥
 राम कपिन्ह जब आवत देखा * किये काजु मन हरष दिसेखा ॥
 फटिकसिला बैठे दोउ भाई * परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥
 दोहा--प्रीतिसहित सब भेंटे, रघुपति करुनापुंज ।

पूछी कुसल नाथ अब, कुसल देखि पदकंज ॥२६॥

जामवंत कह सुनु रघुराया * जापर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥
 ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर * सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥
 सोइ विजई विनई गुनसागर * तासु सुजसु त्रयलोक उजागर ॥
 प्रभु की कृपा भयेउ सबु काजू * जनम हमार सुफल भा आजू ॥
 नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी * सहसहुँ मुखन जाइ सो बरनी ॥
 पवन तनय के चरित सुहाये * जामवंत रघुपतिहि सुनाये ॥
 सुनत कृपानिधि मन अति भाये * पुनि हनुमान हरषि हिय लाये ॥
 कहहु तात केहि भाँति जानकी * रहति करति रच्छा स्वपान की ॥
 दोहा--नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट ।

लोचन निज-पद-जंत्रित, जाहिं प्रान केहि बाट ॥३०॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही * रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही ॥
 नाथ जुगललोचन भरि वारी * बचन कहे कळु जनककुमारी ॥
 अनुजसमेत गहेहु प्रभुचरना * दीनबंधु प्रनतारतिहरना ॥
 मन क्रम बचन चरन अनुरागी * केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
 अवगुन एक मोर मैं जाना * बिल्लुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
 नाथ सो नयनन्हि कर अपराधा * निसरत प्रान करहिं हठि वाधा ॥
 बिरह अगिनि तनु तूल समीरा * स्वास जरइ ब्रन माहँ सरीरा ॥
 नयन स्रवहिं जल निजहित लागी * जरइ न पाव देह विरहागी ॥
 सीता कै अति विपति बिसाला * विनहिं कहे भलि दीनदयाला ॥
 दोहा--निमिष निमिष करुनानिधि, जाहिं कलपसम वीति ।

बेगि चलिय प्रभु आनिय, भुजवल खलदल जीति ॥३१॥

सुनि सीतादुख प्रभु सुखअयना ❀ भरि आये जल राजिवनयना ॥
 वचन काय मन मम गति जाही ❀ सपनेहुँ बूझिय विपति कि ताही ॥
 कह हनुमंत विपति प्रभु सोई ❀ जब तव सुमिरन भजनु न होई ॥
 केतिक बात प्रभु जातुधान की ❀ रिपुहि जीति आनिवी जानकी ॥
 सुनु कपि तोहि समान उपकारी ❀ नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी ॥
 प्रतिउपकार करउँ का तोरा ❀ सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
 सुनु सुत तोहि उरिन में नाहीं ❀ देखेउँ करि विचार मन माहीं ॥
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता ❀ लोचन नीर पुलक अति गाता ॥
 दोहा-सुनि प्रभुवचन विलोकि मुख, गात हरपि हनुमंत ।

चरन परेउ प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवंत ॥३२॥

बार बार प्रभु कहहिं उठावा ❀ प्रेममगन तेहि उठव न भावा ॥
 प्रभु-कर-पंकज कपि के भीमा ❀ सुमिरि सो दसा मगन गौरीमा ॥
 सावधान मन करि पुनि संकर ❀ लागे कहन कथा अतिसुंदर ॥
 कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा ❀ कर गहि परमनिकट बैठावा ॥
 कहु कपि रावनपालित लंका ❀ केहि विधि दहेहु दुर्ग अतिवंका ॥
 प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ❀ बोला वचन त्रि-गत-अभिमाना ॥
 साखामृग के बडि मनुसाई ❀ साखा तें साखा पर जाई ॥
 नाँधि सिंधु हाटकपुर जारा ❀ निसि-चर-गन बधि त्रिपिन उजारा ॥
 सो सब तव प्रताप रघुराई ❀ नाथ न कछु मोरी प्रभुताई ॥
 दोहा-ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं, जा पर तुम्ह अनुकूल ।

तव प्रभाव बडवानलहि, जारि सकइ खलु तूल ॥३३॥

नाथ भगति अति-सुख-दायनी ❀ देहु कृपा करि अनपायनी ॥
 सुनि प्रभु परमसरल कपिवानी ❀ एवमस्तु तव कहेउ भवानी ॥
 उमा रामसुभाव जेहि जाना ❀ ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥
 यह संवाद जासु उर आवा ❀ रघु-पति-चरन-भगति सोइ पावा ॥
 सुनि प्रभुवचन कहहिं कपिवृंदा ❀ जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
 तव रघुपति कपिपतिहिं बोलावा ❀ कहा चलइ कर करहु बनावा ॥

अब बिलंबु केहि कारन कीजै * तुरत कपिन्ह कहूँ आयसु दीजै ॥
कौतुक देखि सुमन बहु वरषी * नम तें भवन चले सुर हरषी ॥
दोहा--ऋषिपति बेगि बोलाये, आये जूथप जूथ ।

नानावरन अ-तुल-बल, बानर-भालु-वरूथ ॥ ३४ ॥

प्रभु-पद-पंकज नावहिं सीसा * गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥
देखी राम सकल कपिनैना * चितइ कृपा करि राजिवनैना ॥
राम-कृपा-बल पाइ कपिंदा * भये पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना * सगुन भये सुंदर सुम नाना ॥
जासु सकल संगलमय कीती * तासु पयान सगुन यह नीती ॥
प्रभुपयान जाना वैदेही * फरकि वामअँग जनु कहि देही ॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई * असगुन भयउ रावनहि मोई ॥
चला कटकु को वरनइ पारा * गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥
नखआयुध गिरि-पादप-धारी * चले गगन महि इच्छावारी ॥
केहरिनाद भालु कपि करहीं * उगमगाहिं दिग्गज चिकरहीं ॥

छंद--चिकरहिं दिग्गज डोल महि गिरि डोल सागर स्वरभरे ।

मन हरप दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥

कटकटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।

जय राम प्रबलप्रताप कोसलनाथ गुनगन गावहीं ॥

सहि सक न भार उदार अहिपति वार वारहिं मोहई ।

गहि दसन पुनि पुनि कमठपृष्ठ कठोर सो किमि मोहई ॥

रघु-वीर-रुचिर-पयान-प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।

जनु कमठखर्पर मर्पराज सो लिखत अत्रिचल पावनी ॥

दोहा--एहि विधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागरतीर ।

जहँ तहँ लागे खान फल, भालु विपुल कपिवीर ॥३५॥

उहाँ निसाचर रहहिं समंका * जब तें जारी गयउ कपि लंका ॥

निज निजगृह सब करहिं विचारा * नहिं निमि-चर-कुल केर उवारा ॥

जासु दूतबल वरनि न जाई * तेहि आये पुर कवन भलाई ॥

दूतिन्ह सन सुनि पुर-जन-बानी * मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥

रहसि जोरि कर पतिपद लागी * बोली वचन नीति-रस-पागी ॥
 कंत करष हरिमन परिहरहू * मोर कहा अतिहित हिय धरहू ॥
 समुझत जासु दूत कह करनी * खवहिं गर्भ रजनी-वर-घरनी ॥
 तासु नारि निजमचिव बोलाई * पठवहु कंत जौं चहहु भलाई ॥
 तव कुल-कमल-विपिन-दुग्ध-दाई * सीता सीत-निसा-सम आई ॥
 सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हे * हित न तुम्हार संभु अज कीन्हे ॥
 दोहा-रामवान अहि-गन-सरिस, निकर निसाचर भेक ।

जब लागि ग्रसत न तब लागि, जतनु करहु तजिटेक ॥३६॥

खवन सुनी सठ ता करि वानी * विहँसा जुगतविदित अभिमानी ॥
 सभय सुभाव नारि कर माँचा * मंगल महुँ भय मन अतिकौचा ॥
 जौं आवइ मर्कट कटकाई * जियहिं विचारे निसिचर खाई ॥
 कंपहिं लोकप जा की त्रामा * तासु नारि सभित बड़ि हाँसा ॥
 अस कहि विहँसि ताहि उर लाई * चलेउ सभा ममता अधिकाई ॥
 मंदोदरी हृदय कर चिंता * भयउ कंत पर विधि विपरीता ॥
 बैठउ सभा खवरि अमि पाई * सिंधुपार सेना सब आई ॥
 बूझेमि मचिव उचित मत कहहू * ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
 जितेहु सुरासुर तव स्रम नाहीं * नर बानर केहि लेखे माहीं ॥
 दोहा-सचिव बैद गुरु तीनि जौं, प्रिय बोलहिं भय आस ।

राज धर्म तन तीनि कर, होई बेगिही नास ॥३७॥

सोइ रावन कहूँ बनी सहाई * अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
 अवमर जानि विभीषनु आवा * भ्राताचरन सीसु तेहि नावा ॥
 पुनि सिरु नाइ बैठ निजआसन * बोला वचन पाइ अनुसामन ॥
 जौं कृपाल पूछेहु मोहि वाता * मति-अनु-रूप कहउँ हित ताता ॥
 जो आपन चाहइ कल्याना * सुजसु सुमति सुभगति सुख नाना ॥
 सो पर-नारि-लिलारु गोसाई * तजइ चौथि के चंद कि नाई ॥
 चौदह भुवन एक पति होई * भूतद्रोह तिष्ठइ नहिं सोई ॥
 गुनसागर नागर नर जोऊ * अलपलोभ भल कहइ न कोऊ ॥

दोहा—काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक पंथ ।

सब परिहरि रघुबीरही, भजहु भजहिं जेहि संत ॥३८॥

तात रामु नहिं नर भूपाला * भुवनेस्वर कालहुँ कर काला ॥

ब्रह्म अनामय अज भगवंता * व्यापक अजित अनादि अनंता ॥

गो - द्विज - धेनु - देव - हित - कारी * कृपामिधु मानुष - तनु - धारी ॥

जनरंजन भंजन खलब्राता * वेद - धर्म - रच्छक सुनु भ्राता ॥

ताहि बयरु तजि नाइय माथा * प्र - नतारति - भंजन रघुनाथा ॥

देहु नाथ प्रभु कहुँ वैदेही * भजहु राम विनु हेतु मनही ॥

सरन गये प्रभु ताहु न त्यागा * विस्व-द्रोह-कृत अघ जेहि लागा ॥

जासु नाम त्रय - ताप - नसावन * मोइ प्रभु प्रगट समुझु जिय रावन ॥

दोहा—बार बार पद लागउँ, विनय करउँ दससीस ।

परिहरि मान मोह मद, भजहु कोसलाधीस ॥

मुनि पुलस्ति निजसिष्य सन, कहि पठई यह वात ।

तुरम सो मैं प्रभु सन कही, पाइ सुअवसरु तात ॥३९॥

माल्यवंत अति सचिव मयाना * तासु वचन सुनि अतिमुख माना ॥

तात अनुज तव नीतिविभूषन * सो उर धरहु जो कहत विभीषन ॥

रिपु-उत-करष कहत मठ दौऊ * दरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥

माल्यवंत गृह गयेउ बहोरी * कहइ विभीषनु पुनि कर जोरी ॥

सुमति कुमति सब के उर रहहीं * नाथ पुरान निगम अम कहहीं ॥

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना * जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥

तव उर कुमति बमी विपरीता * हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥

कालराति निसि - चर - कुल केरी * तेहि मीता पर प्रीति धनरी ॥

दोहा--तात चरन गहि माँगेउँ, राखहु मोर दुलार ।

सीता देहु राम कहुँ, अहित न होइ तुम्हार ॥४०॥

बुध - पुरान - सुति - संमत बानी * कही विभीषन नीति बखानी ॥

सुनत दसानन उठा रिमाई * खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥

जियसि सदा सठ मोर जियावा * रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥

कहसि न खल अस को जग माहीं * भुजवल जेहि जीता मैं नाहीं ॥

मम पुर वमि तपमिन्ह पर प्रीती * सठ मिलु जाइ तिन्हहिं कहु नीती ॥
 अस कहि कीन्हेमि चरन प्रहारा * अनुज गहे पद वारहिं वारा ॥
 उमा संत कहइ इहइ वड़ाई * मंद करत जो करइ भलाई ॥
 तुम्ह पितुमारिस भलेहि मोहि मारा * राम भजे हित नाथ तुम्हारा ॥
 सचिव भंग लेइ नभपथ गयऊ * सवहिं सुनाइ कहत अस भयऊ ॥
 दोहा--रामु सत्य संकल्प प्रभु, सभा काल बस तोरि ।

मैं रघु-वीर-सरन अब, जाउँ देहु जनि खोरि ॥४१॥

अस कहि चला विभीषन जवहीं * आयुहीन भये सब तवहीं ॥
 साधुअवज्ञा तुरत भवानी * कर कल्याण अखिल कै हानी ॥
 रावन जवहिं विभीषनु त्यागा * भयउ विभव विनु तवहिं अभागा ॥
 चलेउ हरपि रघुनायक पाहीं * करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
 देखिहउँ जाइ चरन-जल-जाता * अरुन मृदुल सेवक-सुख-दाता ॥
 जे पद परभि तरी रिपिनारी * दंडक - कानन - पावन - कारी ॥
 जे पद जनकमुता उर लाये * कपट-कुरंग-भंग धर धाये ॥
 हर-उर-सर-मरोज पद जेई * अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई ॥

दोहा--जिन्ह पायन्ह के पादुकन्हि, भरत रहे मन लाइ ।

ते पद आज विलोकिहउँ, इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥४२॥

एहिविधि करत सप्रेम विचारा * आयउ सपदि सिंधु येहि पारा ॥
 कपिन्ह विभीषनु आवत देखा * जाना कोउ रिपुदूत विसेखा ॥
 ताहि राखि कपीस पहिं आये * समाचार सब ताहि सुनाये ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * आवा मिलन दसाननभाई ॥
 कह प्रभु सखा बूझिये काहा * कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥
 जानि न जाइ निसाचर माया * कामरूप केहि कारन आया ॥
 भेद हमार लेन सठ आवा * राखिय वाँधि मोहि अस भावा ॥
 सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी * मन मप सरनागत - भय - हारी ॥
 सुनि प्रभु वचन हरष हनुमाना * सरनागतवच्छल भगवाना ॥

दोहा--सरनागत कहूँ जेतजहिं निज अनहित अनुमानि ।

ते नर पावँर पापमय, तिन्हहिं विलोक्त हानि ॥४३॥

कोटि विप्रवध लागहि जाहूँ * आयें सरन तजउ नहिं ताहूँ ॥
 सनमुख होइ जीव मोहि जवहीं * जनम कोटि अथ नामहिं तवहीं ॥
 पापवंत कर सहज सुभाऊ * भजनु मोर तेहि भाव न काऊ ॥
 जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई * मोरे सनमुख आव कि मोई ॥
 निर्मल मन जन सो मोहि पावा * मोहि कपट छल छिद्र न भावा ॥
 भेद लेन पठवा दसमीमा * तवहुँ न कलु भय हानि कपीमा ॥
 जग महुँ सखा निसाचर जेते * लछिमन हनइ निमिष महुँ तेते ॥
 जौं समीत आवा सरनाई * रखिहउँ ताहि प्रान की नाई ॥
 दोहा--उभय भाँति तेहि आनहु, हँसि कह कृपा निकेत ।

जय कृपालु कहि कपि चले, अंगद-हनू-समेत ॥४४॥

सादर तेहि आगे करि वानर * चले जहाँ रघुपति करुनाकर ॥
 दरिहि तें देखे दोउ भ्राता * नयनानंद दान के दाता ॥
 बहुरि राम छविधाम बिलोकी * रहेउ ठट्टकि एकटक पल रोकी ॥
 भुज प्रलम्ब कंजारुनलोचन * स्यामल गात प्रनत-भय-मोचन ॥
 सिंहकंध आयत उर मोहा * आनन अपित-मदन-मन मोहा ॥
 नयन नीर पुलकित अति गाता * मन धरि धीर कहाँ मृदु वाता ॥
 नाथ दमानन कर मैं भ्राता * निमि-चर-वंम-जनम सुरवाता ॥
 सहज पापप्रिय तामम देहा * जथा उलूकहिं तम पर नेहा ॥
 दोहा--स्वन सुजसु सुनि आयउं, प्रभु भंजन शतभोर ।

ब्राहि ब्राहि आरति हरन, सरन सुखद रघुवीर ॥४५॥

अस कहि करत दंडवत देखा * तुरत उठे प्रभु हरप विसेखा ॥
 दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा * भुज विमाल गहि हृदय लगावा ॥
 अनुजसहित मिलि ढिग बैठारी * बोले वचन भगत-भय-हारी ॥
 कहु लंकेश सहित परिवारा * कुपन कुटुम्ह वाम तुम्हारा ॥
 खलमंडली वसहु दिनु राती * मग्ना धर्म निवहइ केहि भाँती ॥
 मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती * अति नयनिपुन न भाव अनीती ॥
 बरु भल वास नरक कर ताता * दुष्ट मंग जनि देइ विधाता ॥
 अब पद देखि कुमल रघुराया * जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया ॥

दोहा--तव लगि कुसल न जीव कहूँ, सपनेहुँ मन बिस्वाम ।

जब लगि भजत न राम कहूँ, सोक धाम तजि काम ॥४६॥

तव लगि हृदय बसत खल नाना * लोभ मोह मत्सर मद माना ॥

जब लगि उर न बसत रघुनाथा * धरे चापसायक कटि भाथा ॥

ममता तरुन तमी अँधियारी * राग द्वेष अलूक सुखकारी ॥

तव लगि बसत जीव मन माहीं * जब लगि प्रभु-प्रताप-रवि नाहीं ॥

अब मैं कुसल मिटे भय भारे * देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥

तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला * ताहि न व्याप त्रिविध भवसूला ॥

मैं निमिचर अति-अधम-सुभाऊ * सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥

जासु रूप मुनि ध्यान न आवा * तेहि प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा ॥

दोहा--अहोभाग्य मम अमित अति, राम कृपा-सुख-पुंज ।

देखेउँ नयन विरंचि सिव, सेव्य जुगल-पद-कंज ॥४७॥

सुनहु सखा निज कहूँ सुभाऊ * जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ॥

जौं नर होइ चराचरद्रोही * आवइ सभय सरन तकि मोही ॥

तजि मद मोह कपट छल नाना * करउँ सब तेहि साधु समाना ॥

जननी जनक बंधु सुत दारा * तनु धन भवन सुहृद परिवारा ॥

सब कइ ममताताग बटोरी * मम पद मनहिं बाध बरि डोरी ॥

समदरमी इच्छा कछु नाहीं * हरष सोक भय नहिं मन माहीं ॥

अम सज्जन मम उर बस कैसे * लोभीहृदय बसइ धन जैसे ॥

तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे * धरउँ देह नहिं आन निहोरे ॥

दोहा--सगुनउपासक पर-हित-निरत नीति-दृढ-नेम ।

ते नर प्रानसमान मम, जिन्ह के द्विज-पद-प्रेम ॥४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरे * ता तैं तुम्ह अमिसय प्रिय मोरे ॥

राम वचन सुनि वानरजूथा * सकल कहहिं जय कृपावरूथा ॥

सुनत विभीषनु प्रभु कै वानी * नहिं अघात खवनामृत जानी ॥

पदअंबुज गहि वारहिंवारा * हृदय समात न प्रेमु अपारा ॥

सुनहु देव स-चराचर-स्वामी * प्रनतपाल उर-अंतर-जामी ॥

उर कछु प्रथम बासना रही * प्रभु-पद-प्रीति-सरित सो बही ॥

अब कृपाल निज भगति पावनी * देहु मदा सिव-मन-भावनी ॥
 एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा * माँगा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
 जदपि सखा तव इच्छा नाही * मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
 अस कहि राम तिलक तेहि मारा * सुमनवृष्टि नभ भई अपारा ॥

दोहा--रावनक्रोध अनल निज, स्वास समीर प्रचंड ।

जरत विभीषन राखेउ, दीन्हेउ राज अखंड ॥

जो संपति सिव रावनहिं, दीन्हि दिये दस माथ ।

सोइ संपदा विभीषनहिं, सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥४६॥

अस प्रभु द्वाडि भजहिं जे आना * ते नर पसु विनु पूछ विधाना ॥
 निजजन जानि ताहि अपनावा * प्रभुसुभाव कपि-कुल-मन भावा ॥
 पुनि सर्वज्ञ सर्व-उर-धामी * सर्वरूप सवरहित उदासी ॥

बोले वचन नीति-प्रति-पालक * कारनमनुज दनुज-कुल-धालक ॥
 सुनु कपीस लंकापति वीरा * केहि विधि तरिय जलधि गंभीरा ॥
 संकुल मकर उरग झष जाती * अतिअगाध दुस्तर सब भाँती ॥
 कह लंकेम सुनहु रघुनायक * कोटि-सिंधु-सोपक तव मायक ॥
 जद्यपि तदपि नीतिअस गाई * विनय करिय सागर मन जाई ॥

दोहा--प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहिहि उपायविचार ।

विनु प्रयास सागर तरिहि, सकल-भालु-कपि-धारि ॥५०॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई * करिय दैव जाँ होइ महाई ॥
 मंत्र न यह लज्जिमन मन भावा * रामवचन मनि अति दुख पावा ॥
 नाथ दैव कर कवन भरोसा * सोखिय सिंधु करिय मन रोसा ॥
 कादर मन कहूँ एक अधारा * दैव दैव आलसी पुकारा ॥
 सुनत त्रिहंसि बोले रघुवीरा * गेमहि करब धरहु मन धीरा ॥
 अस कहि प्रभु अनुजहि ममुझाई * सिंधु समीप गये रघुराई ॥
 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई * बैठ पुनि तट दर्भ डसाई ॥
 जबहिं विभीषन प्रभु पहिं आये * पाछे रावन दूत पठाये ॥

दोहा--सकल चरित तिन्ह देखे, धरे कपट कपिदेह ।

प्रभुगुन हृदय सराहहिं, सरनागत पर नेह ॥ ५१ ॥

प्रगट वखानहिं रामसुभाऊ * अतिसप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
 रिपु के दूत कपिन्ह तव जाने * सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥
 कह सुग्रीव सुनहु मव वानर * अंगभंग करि पठवहु निसिचर ॥
 सुनि सुग्रीववचन कपि धाये * बाँधि कटक चहुँ पास फिराये ॥
 बहु प्रकार मारन कपि लागे * दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
 जो हमार हर नामा काना * तेहि कोमलाधीस कै आना ॥
 सुनि लछिमन मव निकट बोलाये * दया लागि हँसि तुरत छोडाये ॥
 रावन कर दीजेहु यह पाती * लछिमनवचन बाँचु कुलघाती ॥
 दोहा—कहेहु मुखागर मूढ सन, मम संदेस उदार ।

सीता देखि मिलहु न त, आवा काल तुम्हार ॥ ५२ ॥

तुरत नाइ लछिमनपद माथा * चले दूत बरनत गुनगाथा ॥
 कहत रामजसु लंका आये * रावनचरन सीस तिन्ह नाये ॥
 विहँसि दसानन पूछी वाता * कहमि न सुक आपनि कुसलाता ॥
 पुनि कहु खवरि विभीषन केरी * जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
 करत राजु लंका सठ त्यागी * होइहि जव कर कीट अभागी ॥
 पुनि कहु भालु कीम कटकाई * कठिन कालप्रेरित चलि आई ॥
 जिन्हके जीवन्ह कर रखवारा * भयउ मृदुलचित सिंधु बेचारा ॥
 कहु तपसिन्ह कै बात वहोरी * जिन्ह के हृदय त्रास अति मोरी ॥
 दोहा—की भइ भेंट कि फिरि गये, सवन सुजसु सुनि मोर ।

कहसि न रिपु-दल-तेज-बल, बहुत चकित चित तोर ॥ ५३ ॥

नाथ कृपा करि पूछेहु जैसे * मानहु कहा क्रोध तजि तैसे ॥
 मिला जाइ जव अनुज तुम्हारा * जातहि राम तिलक तेहि सारा ॥
 रावनदूत हमहिं सुनि काना * कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
 सवन नासिका काटन लागे * रामसपथ दीन्हे हम त्यागे ॥
 पूछेहु नाथ रामकटकाई * बदन कोटिसत बरनि न जाई ॥
 नानावरन भालु-कपि-धारी * बिकटानन बिसाल भयकारी ॥
 जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा * सकल कपिन्ह महँ तेहि बल थोरा ॥
 अमितनाम भट कठिन कराला * अ-मित-नाग-बस बिपुल बिसाला ॥

दोहा--द्विविद मयंद नील नल, अंगदादि विकटासि ।

दधिमुख केहरि कुमुद गव, जामवंत वलरासि ॥५४॥

ए कपि सब सुग्रीवसमाना * इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥

रामकृपा अ-तुलित-बल तिन्हहीं * तृनममान त्रैलोकहिं गनहीं ॥

अस मैं सवन सुना दसकंधर * पदुम अठारह जूथप बंदर ॥

नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं * जो न तुम्हहिं जीतइ रन माहीं ॥

परमक्रोध मीजहिं सब हाथा * आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥

सोषहिं सिंधु सहितझषव्याला * पूरहिं न त भरि कुधर विमाला ॥

मर्दि गर्द मिलवहिं दससीमा * ऐमेइ वचन कहहिं मव कीसा ॥

गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका * मानहु प्रमन चहत हहिं लंका ॥

दोहा--सहज सूर कपिभालु सब, पुनि सिर पर प्रभु राम ।

रावन काल कोटि कहँ, जीति सकहिं संग्राम ॥ ५५ ॥

राम-तेज-बल-बुधि विपुलाई * सेप महमसत मकहिं न गाई ॥

सक सर एक सोखि सत मागर * तव भ्रातहिं पूछेउ नय नागर ॥

तासु बचन सुनि सागर पाहीं * माँगत पंथ कृपा मन माहीं ॥

सुनत बचन विहँसा दसमीसा * जौं अमि मति सहायकृत कीसा ॥

सहज भीरु कर बचन दृढाई * मागर सन ठानी मचलाई ॥

मूढ मृषा का करसि वड़ाई * रिपु-बल-बुद्धि-थाह में पाई ॥

सचिव समीत विभीषनु जा के * विजय विभूति कहाँ लगी ता के ॥

सुनि खलवचन दूतरिसि बाढ़ी * समय विचारि पत्रिका काढ़ी ॥

रामानुज दीन्ही यह पाती * नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती ॥

विहँसि बामकर लीन्ही रावन * मचिव बोलि सठ लाग बचावन ॥

दोहा--बातन्ह मनहिं रिभाइ सठ, जनि घालेसि कुल खीस ।

रामविरोध न उबरसि, सरन विष्णु अज ईस ॥

की तजि मान अनुज इव, प्रभु-पद-पंक-ज-भृंग ।

होहि कि रामसरानल, खल कुलसहित पतंग ॥५६॥

सुनत मभय मन मुख मुमुकाई * कहत दसानन मवहिं सुनाई ॥
 भूमि परा कर गहत अकामा * लघु तापम कर वागविलासा ॥
 कह सुक नाथ सत्य मव वानी * समुझहु झाडि प्रकृत अभिमानी ॥
 सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा * नाथ राम सन तजहु विरोधा ॥
 अतिकोमल रघु-धीर-सुभाऊ * जद्यपि अखिललोक कर राऊ ॥
 मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिहीं * उर अपराध न एकउ धरिहीं ॥
 जनकमुता रघुनाथहि दीजै * एतना कहा मोर प्रभु कीजै ॥
 जब तेहि कहा देन वैदेही * चरनप्रहार कीन्ह सठ तेही ॥
 नाइ चरन सिरु चला मो तहाँ * कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥
 करि प्रनामु निजकथा सुनाई * रामकृपा आपनि गति पाई ॥
 रिपि अगस्ति के माप भवानी * राञ्छस भयेउ रहा मुनि ज्ञानी ॥
 बंदि रामपद वारहिं वारा * मुनि निजआत्म कहँ पगु धारा ॥
 दोहा--विनय न मानत जलधि जड़, गये तीनि दिन बोति ।

बोले राम सकोप तव, भय बिनु होइ न प्रीति ॥५७॥

लङ्घिमन वानमरामन आनू * गोखडँ बारिधि त्रिसिखकृमानू ॥
 सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती * सहज कृपिन सन सुंदर नीती ॥
 ममतारत सन ज्ञानकहानी * अतिलोभी मन विरति बखानी ॥
 क्रोधिहिं मम कामिहिं हरिकथा * ऊसर बीज वये फल जथा ॥
 अस कहि रघुपति चाप चढावा * यह मत लङ्घिमन के मन भावा ॥
 मंधानेउ प्रभु विभिख कराला * उठी उदधि उरअंतर ज्वाला ॥
 मकर-उरग-झष-गन अकुलाने * जरत जंतु जलनिधि जब जाने ॥
 कनकथार भरि मनिगन नाना * विप्ररूप आयउ तजि माना ॥
 दोहा--काटेहि पइ कदली फरइ, कोटि जतन कोउ सींच ।

विनय न मानखगेस सुनु, डाँटेहि पै नव नीच ॥५८॥

मभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे * छमहु नाथ सत्र अवगुन मेरे ॥
 गगन समीर अनल जल धरनी * इन्ह कइ नाथसहज जड़ करनी ॥

तव प्रेरित माया उपजाये ❀ सृष्टि हेतु सब ग्रंथहि गाये ॥
 प्रभुआयसु जेहि कहँ जम अहई ❀ सो तेहि भाँति रहे सुख लहई ॥
 प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही ❀ मरजादा पुनि तुम्हरिय कीन्ही ॥
 ढोल गवाँर सृष्ट पसु नारी ❀ सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
 प्रभुप्रताप में जाव सुखाई ❀ उतरिहि कटक न मोरि वड़ाई ॥
 प्रभु आज्ञा अपे ल सुति गाई ❀ करइ मो बैगि जो तुम्हहिं मुहाई ॥

दोहा--सुनत विनीत वचन अति, कह कृपाल मुसुवाइ ।

जेहि विधि उतरइ कपिकटकु, तात सो कहहु उपाइ ॥५६॥

नाथ नील नल कपि दोउ भाई ❀ लरिकार्ई रिपिआसिप पाई ॥
 तिन्ह के परम क्रिये गिरि भारे ❀ तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
 मैं पुनि उर धरि प्रभुप्रभुताई ❀ करिहउँ बलअनुमान महाई ॥
 एहि विधि नाथ पयोधि बंधाइय ❀ जेहि यह मुजमु लोक तिहुँ गाइय ॥
 एहि सर मम उत्तर-तट-वामी ❀ हतहु नाथ खल नर अघरामी ॥
 सुनि कृपाल सागर-मन-पीरा ❀ तुरतहि हरी राम रनधीरा ॥
 देखि राम-बल-पौरुष भारी ❀ हरपि पयोनिधि भयउ सुखारी ॥
 सकलचरित कहि प्रभुहिं सुनावा ❀ चरन वंदि पाथोधि मिधावा ॥

छंद--निज भवन गवँनउ सिंधु श्री-रघु-पतिहि यह मत भायऊ ।

यह चरित कलि-मल-हर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥

सुखभवन मंसयसमन दमनविपाद रघु-पति-गुन-गना ।

तजि सकल आसभरोम गावहि सुनहि संतत मठ मना ॥

दोहा--सकल-सु-मंगल-दायक, रघु-नायक-गुन-गान ।

सादर सुनहि ते तरहिं भव, सिंधु विना जलजान ॥६॥

इति सुन्दरकाण्ड समाप्त ।

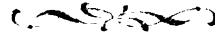


श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

रामायण

लङ्काकाण्ड



श्लोकाः

रामं कामारिमेव्यं भवभयहरणं कालपत्तेभसिंहं योगीन्द्रज्ञानगम्यं
गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् । मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं
ब्रह्मवृन्दैकदेवं वन्दे कुन्दावदातं मरमिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥
शङ्खेन्द्राभमतीवगुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं कालव्यालकरालभूषणधरं
गङ्गाशशाङ्कप्रियम् । काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं कन्दर्पहं शङ्करम् ॥ २ ॥ यो ददाति
सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् । खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं
तनोतु माम् ॥ ३ ॥

दोहा--लव निमेष परमानु जुग, वरप कल्प सर चंड ।

भजसि न मन तेहि राम कहँ, कालु जासु कोदंड ॥

सोरठा-सिंधुवचन सुनि राम, सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।

अव विलंबु कोहि काम, करहु सेतु उतरै कटक ॥

सुनहु भानु-कुल-केतु, जामवंत कर जोरि कह ।

नाथ नाम तव सेतु, नर चदि भवसागर तरहिं ॥

यह लघु जलधि तरत कति वारा * अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा ॥

प्रभुप्रताप बड़वानल भारी * मोखेउ प्रथम पयो-निधि-वारी ॥

तव रिपु-नारि-रुदन-जल-धारा * भरेउ बहोरि भयउ तेहि खारा ॥

सुनि अतिउक्ति पवनसुत केरी * हरपे कपि रघु-पति-तन हेरी ॥

जामवंत बोले दोउ भाई * नल नीलहिं मव कथा सुनाई ॥
 रामप्रताप सुमिरि मन माहीं * करहु मेतु प्रयास कलु नाही ॥
 बोलि लिये कपिनिकर बहोरी * सकल सुनहु विनती कलु मोरी ॥
 राम -- चरन -- पंकज उर धरहु * कौतुक एक भालु कपि करहु ॥
 धावहु मरकट विकटवरूथा * आनहु विटप गिरिन्ह के जूथा ॥
 सुनि कपि भालु चले करि हू हा * जय रघुवीर प्रतापसमूहा ॥

दोहा--अतिउतंग गिरिपादप, लीलहिं लेहिं उठाइ ।

आनि देहिं नल नीलहि, रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

अथ क्षेपक

जुग जुग सृजै जहाँ थल माहीं * खोजत पर्वत कतहूँ नाही ॥
 करहु विचार करिय का भाई * हर्षित मव उत्तर दिशि जाई ॥
 लेहिं महाभट सुगिरि उपारी * मारुत वेगि चलत वनचारी ॥
 कहूँ कहूँ एकहि एक प्रचारी * तौलहिं निकट केहि गिरि भारी ॥
 सेतु विषम कतहूँ नहिं कोई * रचा नीलनल द्विविद जु सोई ॥
 प्रथम दिवस नल सेतु सुहावन * चौदह जोजन कीन्ह सुपावन ॥
 द्वितिय दिवस सुभ जोजन बीसा * तीजे दिन इकइम कियो कीमा ॥
 दिवस चतुर्थ सुबाइम जोजन * पंचम तेइस कियो मुदितमन ॥
 दस जोजन आयत अति सुंदर * मत जोजन विशाल शोभापर ॥
 तब आज्ञा रघुराज सुनाई * अब पर्वत मत लावहु भाई ॥
 सुनत वचन कपि भये सुखारी * जहँ तहँ पर्वत दिये विसारी ॥

दोहा--एक चरित अति रुचिर अव, चितवरि सुनहु खगेश ।

गये पवन सुत उत्तरहिं, जो गिरि बसहिं धनेश ॥

गोवर्धन सो रुचिर पहारा * जोजन साठ तायु विस्तारा ॥
 विविध उपाय पवन सुत कीन्हा * तन नहिं उठा अचल पद लीन्हा ॥
 तव कपि राम चरन धरि ध्याना * लगे उठावन मन मुमुकाना ॥
 कह गिरीश सुनिये हनुमाना * जन्म भूमि तजिहों नहिं आना ॥
 कहा कपीश चलउँ लै तहवाँ * अच्युत राम विराजत जहवाँ ॥
 सुनत वचन गोवर्धन बोला * प्रभु यह वचन कहा अनमोला ॥

जो तुम राम दरश मोहिं देहू ॥ तौ ले चलहु अचल जस लेहू ॥
 राम सुमिरि हौंम कीन्ह पयाना ॥ ब्रंदा विपिन ताहि नियराना ॥
 दोहा--गोवरधन इत रहहु तुम, मे भवनव प्रभु पास ।

कछु संशय तहि करहु चित, पुरवहुँ सब तव आस ॥

तहँ गोवर्धन को पधरायो ॥ विप्र रूप लिन वचन सुनायो ॥
 प्रभु दरसन की इच्छा भारी ॥ तजौं न विनती सुनहु हमारी ॥
 अम कहि चले हिये सुख मानी ॥ कही जाय प्रभुसे सब वानी ॥
 रघुपति कयो मुनहु हनुमाना ॥ कहो जाय तासो मम वाना ॥
 द्वापर अन्त कृष्ण अवतारा ॥ लहउँ हरन भूमि कर भारा ॥
 मात दिना तोहि करपर धारउँ ॥ ब्रजवामिन को कष्ट निवारउँ ॥
 यह तुम ताहि मुनायहु जाई ॥ चले पवन मुन आतुर धाई ॥
 कहा सकल तेहि प्रभुकी वानी ॥ आयै पुनि प्रभुपहुँ सुख मानी ॥

इति लेखक

सैल विमाल आनि कपि देहीं ॥ कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥
 देखि सेतु अति-सुंदर -- रचना ॥ विहँसि कृपानिधि बोले वचना ॥
 परम रम्य उत्तम यह धरनी ॥ महिमा अमित जाइ नहिं बरनी ॥
 करिहउँ इहाँ भंभुथापना ॥ मोरे हृदय परम कल्पना ॥
 मुनि कपीस बहु दूत पठाये ॥ मुनिवर सकल बोलि लै आये ॥
 लिंग थापि विधिवत करि पूजा ॥ मिव समान प्रिय मोहि न दृजा ॥
 सिवद्रोही मम भगत कहावा ॥ सो नर सपनेहु मोहि न पावा ॥
 संकरविमुख भगति बह मोरी ॥ सो नारकी मूढ़ मति थोरी ॥
 दोहा--संकरप्रिय मम द्रोही, सिवद्रोही मम दास ।

ते नर करहिं कल्प भरि, घोर नरक महुँ वास ॥ २ ॥

जे रामेश्वर दरसन करिहहिं ॥ ते तनु तजि हरिलोक सिधरिहहिं ॥
 जे गंगाजल आनि चढाइहि ॥ सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
 होइ अकाम जो छल तजि सेइहि ॥ भगति मोरि तेहि भंकर देइहि ॥
 मम कृत सेतु जो दरसनु करिही ॥ सो विनुस्रम भवमागर तरिही ॥
 राम वचन सब के जिय भाये ॥ मुनिवर निज निज आस्रम आये ॥



लिङ्गं थापि विधिबत करि पूजा * शिवसमान प्रिय मोहिं न दृजा ॥

भार्गव मन्थन प्रेस, बनारस । (कापी राइट)

गिरिजा रघुपति कै यह रीती * संतत करहिं प्रनत पर प्रीती ॥
 बाँधा सेतु नील नल नागर * रामकृपा जसु भयउ उजागर ॥
 बूढ़हिं आनहिं बोरहिं जेई * भये उपल बोहित सम तेई ॥
 महिमा यह न जलधि कै वरनी * पाहन गुन न कपिन्ह कै करनी ॥
 दोहा-श्री-रघु-वीर-प्रताप तैं, सिंधु तरे पापान ।

ते मतिमंद जे राम तजि, भजहिं जाइ प्रभु आन ॥ ३ ॥

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा * देखि कृपानिधि के मन भावा ॥
 चली सेन कछु बरनि न जाई * गरजहिं मरकट-भट-समुदाई ॥
 सेतु बंध दिग चढ़ि रघुराई * चितव कृपाल सिंधुवहुताई ॥
 देखन कहूँ प्रभु करुनाकंदा * प्रगट भये सब जल-चर-बृंदा ॥
 मकर नक्र झख नाना व्याला * सत-जोजन-तन परमविमांदा ॥
 ऐमेउ एक तिन्हहि जे खाहीं * एकन्ह के डर तेपि डेराहीं ॥
 प्रभुहिं विलोकहिं टरहिं न टारे * मन हरपित सब भये मुखारे ॥
 तिन्ह की ओट न देखिय वारी * मगन भये हरिरूप निहारी ॥
 चला कटकु प्रभु आयसु न जाई * को कहि सक कपि-दल-विपुलाई ॥
 दोहा-सेतुबंध भइ भीर अति, कपि नभपंथ उड़ाहिं ।

अपर जलचरन्हि ऊपर, चाँढ चढि पारहिं जाहिं ॥ ४ ॥

अम कौतुक विलोकि दोउ भाई * विहँसि चले कृपाल रघुराई ॥
 सेनसहित उतरे रघुवीरा * कहि न जाइ कपि-जृथप भीरा ॥
 सिंधुपार प्रभु डेरा कीन्हा * सकल कपिन्ह कहँ आयमु दीन्हा ॥
 खाहु जाइ फल मूल सुहाये * सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये ॥
 सब तरु फरे राम हित लागी * रितु अरु कुरितु का-अति त्यागी ॥
 खाहिं मधुर फल विटप हलावहिं * लंका सनमुख मिखर चलावहिं ॥
 जहँ कहूँ फिरत निसाचर पावहिं * घेरि सकल बहु नाच नचावहिं ॥
 दसनन्हि काटि नासिका काना * कहि प्रभु सुजसु देहिं तव जाना ॥
 जिन्ह कर नासा कान निपाता * तिन्ह रावनहि कही सब वाता ॥
 सुनत सवन वारिधि वंधाना * दसमुख बोळि उठा अकुलाना ॥

दोहा-वाँधि वननिधि नीरनिधि, जलधि सिंधु वारीस ।

सत्य तोयनिधि कंपती, उदधि पयोधि नदीस ॥ ५ ॥

व्याकुलता निज समुझि बहोरी * विहँमि चला गृह करि भय भोरी ॥
 मंदोदरी सुनउ प्रभु आयो * कौतुकही पाथोधि वँधायो ॥
 कर गहि पतिहि भवन निज आनी * बोली परम मनोहर वानी ॥
 चरन नाइ मिरु अंचलु रोपा * सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥
 नाथ वयरु कीजे ताहा सो * बुधि बल सकिय जीति जाही सो ॥
 तुम्हहिं रघुपतिहिं अंतर केमा * खल खद्योत दिनकरहिं जैसा ॥
 अति बल मधु कैटभ जेहि मारे * महावीर दितिसुत मंहारे ॥
 जेहि बलि वाँधि सहसभुज मारा * सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ॥
 तामु विरोध न कीजिय नाथा * काल करम जिव जाके हाथा ॥
 दोहा--रामहिं साँपिय जानकी, नाइ कमल पद माथ ।

सुत कहँ राजु समर्पि बन, जाइ भजिय रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथ दीनदयाल रघुराई * बाधउ मनमुख गये न खाई ॥
 चाहिय करन सो मय करि वीते * तुम्ह सुर असुर चराचर जीते ॥
 मंत कहहिं अमि नीति दुमानन * चोथें-पन जाइहि नृप कानन ॥
 तामु भजनु कीजिय तहँ भरता * जो करता पालक मंहरता ॥
 मोइ रघुवीर प्रनतधनुरागी * भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥
 मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी * भूप राजु तजि होहिं विरागी ॥
 मोइ कोसलाधीम रघुराथा * आयउ करन तोहि पर दाया ॥
 जौ पिय मानहु मोर मिखावन * सुजसु होइ तिहुँपुर अतिपावन ॥

दोहा--अस कहि लोचन नीर भरि, गहि पद कंपितगात ।

नाथ भजहु रघु-वीर-पद, अचल होइ अहिवात ॥ ७ ॥

तव रावन मयसुता उठाई * कहइ लाग खल निज प्रभुताई ॥
 सुनु तैं प्रिया वृथा भय माना * जग जोधा को मोहि समाना ॥
 बरुन कुवेर पवन जम काला * भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥
 देव दनुज नर सब बम मोरें * कवन हेतु उपजा भय तोरें ॥
 नाना विधि तेहि कहेसि बुझाई * सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥

मंदोदरी हृदय अम जाना * कालविवम उपजा अभिमाना ॥
 सभा आइ मंत्रिन्ह तेहि ब्रूझा * करव कवनि विधि रिपु सैं जूझा ॥
 कहहिं सचिव सुनु निसि-चर-नाहा * वार वार प्रभु पूछहु काहा ॥
 कहहु कवन भय करिय विचारा * नर कपि भालु अहार हमारा ॥
 दोहा--बचन सवहिं के स्ववन सुनि, कह प्रहस्त कर जोरि ।

नीतिविरोध न करिय प्रभु, मंत्रिन्ह मति अतियोरि ॥८॥

कहहिं सचिव सब ठकुरसोहाती * नाथ न पूर आव एहि भाँती ॥
 वारिधि नाँधि एक कपि आवा * तामु चरित मन महँ सबु गावा ॥
 छुधा न रही तुम्हहिं तव काहू * जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥
 सुनत नीक आगे दुख पावा * सचिवन्ह अम मत प्रभुहिं सुनावा ॥
 जेहि वारीस बँधायउ हेला * उतरेउ मेन ममेत सुबेला ॥
 सो भनु मनुज खाव हम भाई * बचन कहहिं सब गाठ फुलाई ॥
 तात बचन मय सुनु अतिआदर * जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥
 प्रियवानी जे सुनहिं जे कहहीं * ऐमे नर निकाथ जग अहहीं ॥
 बचन परमहित सुनत कठोर * सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोर ॥
 प्रथम बसीठ पठव सुनु नीती * सीता देइ करहु पुनि प्रीती ॥
 दोहा--नारि पाइ फिरि जाहिं जौं, तौ न बढ़ाइय रारि ।

नाहिं त सनमुख समर महि, तात करिय हठि मारि ॥९॥

यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा * उभय प्रकार भुजभुजग तोरा ॥
 सुत सन कह दसकंठ रिसाई * अभि मति मठ केहि तोहि सिखाई ॥
 अबहीं तें उर मंसय होई * वंनुमूल सुत भयउ घमोमी ॥
 सुनि पितुगिरा परुष अतिधोरा * चला भवन कहि बचन कठोरा ॥
 हितमत तोहि न लागत कैमें * कालविवम कहँ भेषज जेमें ॥
 संव्यासमय जानि दससीसा * भवन चलेउ निरखत भुज वीसा ॥
 लंका सिखर उपर आगारा * अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥
 बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन * लागे किन्नर गुनगन गावन ॥
 बाजहिं ताल पखाउज बीना * नृत्य करहिं अपञ्चरा प्रवीना ॥

दोहा--सु-नासीर-सत-सरिस सो, संतत करइ विलास ।

परम-प्रवल-रिषु सीस पर, तदपि न कछु मन त्रास ॥ १० ॥

इहाँ सुखल मेल रघुवीरा * उतरे सेनसहित अतिभीरा ॥

मिखर एक उतंग अति देखी * परम रम्य सम सुभ्र विसेखी ॥

तहँ तरु-किमलय-सुमन सुहाये * लब्धिमन रचि निज हाथ डसाये ॥

ता पर रुचिर सृदुल मृगञ्जाला * तेहि आपन आसीन कृपाला ॥

प्रभु कृतसाम कपीमउछंगा * बाम दहिन दिसि चाप निपंगा ॥

दुहुँ करकमल सुधारत वाना * कह लंकैस मंत्र लागि काना ॥

बड़पार्गी अंगद हनुमाना * चरन कमल चाँपत विधि नाना ॥

प्रभुपाछें लब्धिमन वीरामन * कटि निपंग कर वान सरासन ॥

दोहा--एहि विधि कृपारूप गुन, धाम रामु आसीन ।

धन्य तेनर एहि ध्यान जे, रहत सदा लयलीन ॥

पूरव दिसा विलोकि प्रभु, देखा उदित मयंक ।

कहत सवहिं देखहु ससिहि, मृग-पति-सरिस असंक ॥ ११ ॥

पूरवदिसि गिरि-गुहा-निवासी * परमप्रताप तेज बलरासी ॥

मत्त - नाग - तम - कुंभ-विदारी * समि केसरी गगन-वन-चारी ॥

विथुरे नभ मुकुताह * तारा * निमि सुंदरी केर सिंगारा ॥

कह प्रभु ममि महँ मेचकताई * कहहु काह निज निज मति धाई ॥

कह सुग्रीवँ सुनहु रघुराई * ससि महँ प्रगट भूमि कै झाई ॥

मारेहु राहु ससिहि कह कोई * उर महँ परी स्यामता सोई ॥

कोउ कह जब विधिरतिमुख कीन्हा * सारभाग ससि कर हरि लीन्हा ॥

छिद्र सो प्रगट इंदुउर माहीं * तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं ॥

प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा * अतिप्रिय निजउर दीन्ह बसेरा ॥

विषसंजुत करनिकर पसारी * जारत विरहवंत नरनारी ॥

दोहा--कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससि तुम्हार प्रिय दास ।

तव मूरति विधुउर वसति, सोइ स्यामता अभास ॥

पवनतनय के वचन सुनि, विहँसे राम सुजान ।

दच्छिनदिसि अवलोकि प्रभु, बोले कृपानिधान ॥ १२ ॥

देखु विभीषन दच्छिन आसा * घन घमंड दामिनी विलासा ॥

मधुर मधुर गरजइ घन बोरा * होइ बृष्टि जनु उपल कठोरा ॥

कहत विभीषन सुनहु कृपाला * होइ न तड़ित न वारिदमात्रा ॥

लंकासिखर उपर आगारा * तहँ दमकंधर देख अखारा ॥

छत्र मेघडंबर सिर धारी * सोइ जनु जलदघटा अतिकारी ॥

मंदोदरी - सवन - ताटंका * सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका ॥

वाजहिं ताल मृदंग अनूपा * सोइ स्व मधुर सुनहु सुरभूपा ॥

प्रभु मुसुकान ममुझि अग्निमाना * चाप चढ़ाइ वान बंधाना ॥

दोहा--छत्र मुकुट ताटंका तव, हते एकही वान ।

सब के देखत महि परे, मरम न कोरु जान ॥

अस कौतुक करि रामसर, प्रविसेउ आइ निपंग ।

रावन सभा ससंक सब, देखि महारस-भंग ॥ १३ ॥

कंप न भूमि न मरुत विमेखा * अस्र मस्र कलु नयन न देखा ॥

सोचहिं सब निज हृदय मँझारी * असगुन भयउ भयंकर भारी ॥

दसमुख देखि सभा भय पाई * विहँसि वचन कह जुगुति वनाई ॥

सिरउ गिरे मंतत सुभ जाही * मुकुट परे कम अगुन ताही ॥

सयन करहु निज निज गृह जाई * गवन भवन मकल गिर नाई ॥

मंदोदरी सोच उर बसेऊ * जव तें सवनपूर महि स्वमेऊ ॥

सजल नयन कह जुग कर जोरी * सुनहु प्रानपति विनती मोरी ॥

कंत रामविरोध परिहरू * जानि मनुज जनि मन हट धरू ॥

दोहा--विस्वरूप रघु-वंस-मनि, करहु वचनविस्वासु ।

लोककल्पनां वेद कर, अंग अंग प्रति जासु ॥ १४ ॥

पद पाताल मीस अजधामा * अपर लोक अंग अंग विस्वामा ॥

भृकुटि विलाम भयंकर काला * नयन दिवाकर कच घनमाला ॥

जासु घान अस्विनीकुमारा * निमि अरु दिवम निमेष अपारा ॥

सवन दिसा दस वेद वखानी * मारुत स्वाम निगम निजवानी ॥

अधर लोभ जम दसन कराला * माया हास बाहु दिगपाला ॥
 आनन अनल अंबुपति जीहा * उतपति पालन प्रलय समीहा ॥
 रोमराजि अष्टादस भारा * अस्थि मैल सरिता नस जारा ॥
 उदर उदधि अधगो जातेना * जगमय प्रभु का बहु कल्पना ॥

दोहा--अहंकार सिव बुद्धि अज, मन ससि चित्त महान ।

मनुज वास चर-अचर-मय, रूप राम भगवान ॥

असं विचारि सुनु प्रानपति, प्रभु सन वयरु विहाइ ।

प्रीति करहु रघु-बीर-पद, मम अहिवात न जाइ ॥१५॥

विहँसा नारिवचन सुनि काना * अहो मोहमहिमा बलवाना ॥
 नारिसुभाउ सय कवि कहहीं * अवगुन आठ सदा उर रहहीं ॥
 साहम अनृत चपलता माया * भय अबिबेक असौच अदाया ॥
 रिपु कर रूप सकल तैं गावा * अति विसाल भय मोहि सुनावा ॥
 सो सब प्रिया सहज बस मोरें * समुझि परा प्रसाद अब तोरें ॥
 जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई * एहि विधि कहहु मोरि प्रभुताई ॥
 तब बतकही गृह मृगलोचनि * समुझत सुखद सुनत भयमोचनि ॥
 मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ * पियहि कालबम मतिभ्रम भयऊ ॥

दोहा--एहि विधि करत विनोद बहु, प्रात प्रगट दसकंध ।

सहज असंक सु-लंक-पति, सभा गयउ मदअंध ॥

सोरठा--फूलइ फरइ न बेत, जदपि सुधा बरपहिं जलद ।

मूरखहृदय न चेत, जों गुरु मिलहिं विरंचि सम ॥१६॥

अथ क्षेपक

दोहा--मंत्रिन सहित दशानन, चढ़ेउ धौरहर जाइ ।

शुकसारन कह राजसन, देखहु दल समुदाइ ॥

यह जो सिंहनाद किलकाई * तरुवर सप्त रुमान उँचाई ॥
 सहस कोटि शत संकु समाना * संग इनके बानर परिमाना ॥
 रण अजीत अरु सहज सशंका * नाद सुनै काँपै गढ़ लंका ॥
 लगि अकास वनचर लंगूरा * जनु ऋतु पावस धनु नभ पूरा ॥
 विशकर्मा के सुत अभिमानी * इन सागर बाँधेउ अनुमानी ॥

बसहिं ताम्रगिरि कंदरु माहीं * गोदावरी विमल जल पाहीं ॥
अति बल आगे धावहिं वीरा * इनपर कृपा करहिं रघुवीरा ॥
इनके परस किये गिरि शीला * जलमें तरहिं नाम नल नीला ॥

दोहा-पद्म अठारह कपि कटक, चले इनकी भुजछाँह ।

अपने हाथ सुपुष्प लै, रघुपति पूजी बाँह ॥

यह जो आवत अचल समाना * चौदह तार ऊँच परमाना ॥
वास पुलिंदा के तट करई * अंबुद ऊपर यह मंचरई ॥
रक्त कमल केसर सम देहा * जनु अकाश मंध्याकर मेहा ॥
हतै मेदिनी पूछ भ्रमाई * लंका सौह चिते जनु खाई ॥
बाली सुत तारा को जायो * अति जुझार रघुपति मन भायो ॥
मन में जपै राम कर नाऊँ * निशिदिन तिहिकर एक सुभाऊँ ॥
करै बज्र बासव कर भंगा * उदयाचल कहँ लेइ उखंगा ॥
सेनापति यह सबके आगे * रघुपति कृपा भाग इहि जागे ॥

दोहा-पाँव भूमि जो चापहीं, पन्नग होहिं अकाज ।

पाँच पद्म बानर लिये, यह अंगद युवराज ॥

यह जो श्वेत लसे तनुरेपा * जनु रूपेकर शृंग सुवंपा ॥
दीर्घ केश दारुण भुजदंडा * चलत चलत बलबुद्धि प्रचंडा ॥
बास करै जलनिधि के तीरा * पान करै गोमती सुनीरा ॥
नृप सुग्रीव केर अधिकारी * सकल व्यूह यह रचे मँवारी ॥
बल अरु बुद्धिन इन सम आना * इनकर पुरुषारथ जग जाना ॥
जेहि दिन जनमेउ बल अधिकारै * चढ़ेउ गगन शशि देखि ललाई ॥
धरणी धसकि धरन जब उड़ेऊ * मत्तारि योजन ते पुनि फिरेऊ ॥

दोहा-मरकट कोटि पचास सै, रहैं सर्वदा साथ ।

कालहुते रणमें जुझै, कुमुद नाम कपिनाथ ॥

यह देखहु जो घटा सोहाई * मानो भर भादौ बहुताई ॥
आगे पाछे दश दिशि धावहिं * शिला शृंग तरु तोरत आवहिं ॥
सहस नाग बल शंकु समाना * सप्त पद्म इनकर परिमाना ॥
ये ऋक्षप काशी के बासी * अजरअजित अविचल अधिनासी ॥

तीक्ष्ण दंत नखायुध धारी * गहि मारहिं गजदंत उपारी ॥
 इन ऋक्षन कर यूथ अपारा * धूमकेतु यह पालन हारा ॥
 इन्ह कर ज्येष्ठ बन्धु जमवंता * जिहिके बलकर अहहि न अंता ॥
 तीनि लोक सो जूझे पारै * मंकरट परै सुमेरु उखारै ॥
 वमै अशंक नर्मदा तीरा * वत्र समान अभेद शरीरा ॥

दोहा-राजाकर यह मंतरी, रघुपति कर प्रिय दास ।

कालहु ते जूझे समर, नेक न लेइ उसास ॥

अत्र देखहु यह यूथ अपारा * पीत वरण होइ गयउ पहारा ॥
 बाल अरुण रवि किरणम छूटी * कुंकुम उवटि दिशा जनु फूटी ॥
 चौबिस अर्बुद इनकर यूहा * सहस्र बंद सो कोटि समूहा ॥
 शिला शृंग जे आगे परहीं * पायन मीड़ि किरकिरा करहीं ॥
 कंचन गिरि कंदर के बासी * इनकर यूथ नाथ अविनाशी ॥
 अतिबल वासव कर हितकारी * मखा सुकंठ केर शुभकारी ॥
 पान करे गंगा कर नीरा * पर्वत शृंग समान शरीरा ॥
 क्षण क्षण मिहनाद जो होई * यह गर्जत आवत है सोई ॥

दोहा-यशतिहुँ मंडल गलित गज, बल कर नाहिं न अन्त ।

यह कपिराजा केसरी, जिहि कर सुत हनुमन्त ॥

घटा एक आवत है जूटी * जनु मधु मिधु बलै निशि फूटी ॥
 भूमि अकाश अचल अवसाने * उत्तर तें जनु सलभ उड़ाने ॥
 यहि महँ यूथ नाथ जो अहई * अति बल राजा के मंग रहई ॥
 कपि के रूप अनल अविनासी * ये दोउ पारियात के बासी ॥
 अति सुन्दर अरु समर विपक्षी * महावीर दोउ गवय गवक्षी ॥
 पीवहिं तुंग भद्र कर नीरा * मर्दन गंध मदन दोउ वीरा ॥
 साठि महस्र नाग बल जाही * इन महँ एक कहौं मैं ताही ॥
 भेरी नाद मिहकर ठाना * विक्रम शारदूल अनुमाना ॥

दोहा-देवन में जस सुरपती, ते जन में जस भानु ।

पनस नाम मर्कट यहै, अति बल नाति निधानु ॥

यह जो कमल पत्र सम देहा * जनु कैलाश शृंग की रेहा ॥

लोचन मधु पिंगल अति लोने * काम रूप चितवत चहुँ कोने ॥
 लंका सौँह लंगूर भ्रमाई * गर्जत आव वज्र की नाई ॥
 सुरपति संग युद्धकह गयऊ * तवते काम रूप यह भयऊ ॥
 एहिकर वासव सन मित्राई * ताते यह देवन को भाई ॥
 सहस कोटि कपि एहिके संग * राते पीत श्वेत बहु रंगा ॥
 वचन मृषा मम प्रभु यह नाहीं * अपर बोलि जानहु मनमाहीं ॥
 दुर्दुर शैल सदन इनकेरा * मन वच कर्म रामकर चेरा ॥

दोहा--गिरिवर लाँघत आवहीं, चलत उड़ावै रेणु ।

तरणि तेज यह रूँधेऊ, तारा तनय सुषेणु ॥

यह कपि को देखउ तनु फेरा * जनु सपक्ष उड़ चलेउ सुमेरा ॥
 एक बार लंका यहि जारी * पुनि गर्जत आवत यहि वारी ॥
 जेहि दिन गर्भ अंजनी जायो * बाल अरुन लीनन कहँ धायो ॥
 योजन तीन सहस उड़ि गयऊ * उदयाचल ऊपर होइ गयऊ ॥
 सब देवन मिलि अस्तुति कीन्हा * तव रवि अँडि पवनसुत दीन्हा ॥
 कामरूप अतुलित बल येही * कालदंड कुलिशन सम देही ॥
 बंगवंत जस गरुड़ उड़ाहीं * बुद्धिवन्त दूसर अस नाहीं ॥
 विद्या पढ़न भानु पहुँ जाहीं * उलटे गति रवि भंग उड़ाहीं ॥
 नाक नाग नरपुर गतिकारी * महा अवधि पत तेज पुगारी ॥
 बारिध लाँघेउ गोपद जैसे * यह कपीश मन जूझव केमे ॥

दोहा--तेज दिवाकर अनल इव, पवन तो बेग अपार ।

कंध लिये दोउ बंधुको, श्रीरघुवंश कुमार ॥

अतसी बरण कुसुम तनु रेषा * पुरुष पुराण धरे नर वेषा ॥
 मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुज दंडा * धनुषवाण अमि धरणि प्रचंडा ॥
 उर विशाल अति उन्नत कंधर * कंबु कंठ रेषा प्रमन्न वर ॥
 मुख अतिकी उपमा कवि जो हैं * शशि मरोज सम कहें न मोहें ॥
 दशन पाँतिकी काति कहैको * ललकत मन पटतरहिँ लहैको ॥
 देखत अधरन की अरुणाई * विवाफल बंधूक लजाई ॥
 शुक तुंडहिँ नासिका लजावै * थके सुकवि नहिँ पटतर पावै ॥

शीर्ष जटाके मुकुट वनाये * भाल विशाल तिलक अति भाये ॥
दक्षिण दिशि लक्ष्मण बलवीरा * राम बाहु अरु प्राण समीरा ॥
दोहा--वाम विभीषण सोहहीं, सिर अभिषेका राज ।

बीज मंत्र सब जानहीं, अब कस करहिं अकाज ॥

अब देखहु यह मेना आई * जस भादों की घटा सुहाई ॥
कन्या एक ब्रह्म उपजाई * नैन रुचिर अरु रूप लुनाई ॥
बाल भाव दिनकर बल दीन्हा * ऋतु जानै बामव रति कीन्हा ॥
जातक जमल वीर दोउ जाये * देव अंश बानर है आये ॥
किष्किन्धा पुरि इनकर थाना * देव सरिस मधुवन उद्याना ॥
ऋष्यमूक इनकर विश्रामा * चातुर्मास्य वसे जहँ रामा ॥
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा * यहि कह राज तिलक प्रभु सारा ॥
तारा तासु पाटकी रानी * जिहिकर सुत अंगद अभिमानी ॥
सहस शंकु कर अर्बुद एका * अर्बुद सहसकि बृन्द विशेषा ॥
सहस वृन्द जो होइ अमाना * महा पद्म तेहिकर परमाना ॥
ऐसे पद्म अठारह राजा * विग्रह बड़ेउ रामके काजा ॥
वीर वेप अरु नयन विशाला * कम्बु कंठ मोतिन की माला ॥

दोहा--हस्ती साठि सहस्रबल, सदा धर्म की सीव ।

श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ॥

इहि विधि सकल दिखाये, सारण कपिवलय्यूह ।

गनै न रावण कालवश, अतिसय गर्व समूह ॥

इति क्षेपक

इहाँ प्रात जागे रघुआई * पूछा मत सब सचिव बोलाई ॥
कहहु वेगि का करिय उपाई * जामवंत कह पद सिरु नाई ॥
सुनु सर्वग्य सकल-उर-बासी * बुधि बल तेज धर्म गुनरासी ॥
मंत्र कहउँ निज-मति-अनुसारा * दूत पठाइय बालिकुमारा ॥
नीक मंत्र सब के मन माना * अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
बालि तनय बुधि-बल-गुन-धामा * लंका जाहु तात मम कामा ॥
बहुत बुझाई तुम्हहिं का कहउँ * परम चतुर मैं जानत अहउँ ॥
काजु हमार तासु हित होई * रिपु सन करेहु बतकही सोई ॥

सोरठा--प्रभु अग्या धरि सीस, चरन बंदि अंगद उठेउ ।

सोइ गुनसागर ईस, राम कृपा जापर करहु ॥

स्वयंसिद्ध सब काज, नाथ मोहि आदर दियेउ ।

अस विचारि जुवराज, तनु पुलकित हरपित हिये ॥ १७॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई * अंगद चलेउ सबहिं सिरु नाई ॥

प्रभुप्रताप उर सहज अमंका * रनबाँकुरा बालिसुत बंका ॥

पुर पैठत रावन कर बेटा * खेलत रहा सो होइ गइ भेटा ॥

बातहिं वात करष वदि आई * जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई ॥

तेहि अंगद कहुं लात उठाई * गहि पद पटकेउ भूमि भवाई ॥

निसि-चर-निकर देखि भट भारी * जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥

एक एक मन मरम न कहहीं * समुझि तासु वध चुप करि रहहीं ॥

भयउ कोलाहल नगरमँझारी * आवा कपि लंका जेहि जारी ॥

अब धौं काह करिहि करतारा * अतिसभीत सब करहिं विचारा ॥

बिनु पूछे मग देहिं देख्वाई * जेहि विलोकि मोइ जाइ सुखाई ॥

दोहा-गयउ सभादरवार तव, सुमिरि राम-पद-कंज ।

सिंहठवनि इत उत चितव, धीर-वीर-बल-पुंज ॥ १८ ॥

तुरित निमाचर एक पठावा * ममाचार रावनहिं जनावा ॥

सुनत विहँसि बोला दससीसा * आनहु बोलि कहाँ कर कीसा ॥

आयसु पाइ दूत बहु धाये * कपिकुंजरहि बोलि लै आये ॥

अंगद दीख दसानन वैमें * सहित प्रान कज्जलगिरि जैमें ॥

भुजा बिटप सिर संग ममाना * रोमावली लता जनु नाना ॥

मुख नामिका नयन अरु काना * गिरिकंदरा खोह अनुमाना ॥

गयउ सभा मन नेकु न मुरा * वालितनय अतिबल बाँकुरा ॥

उठे सभासद कपि कहुं देखो * रावनउर भा क्रोध विसेखी ॥

दोहा--जथा मत्तगज जूथ महुं, पंचानन चलि जाइ ।

रामप्रताप सुमिरि उर, बैठ सभा सिरु नाइ ॥ १९ ॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर * में रघु-वीर—दूत दसकंधर ॥

मम जनकहि तोहि रही मित्ताई * तव हितकारन आयउं भाई ॥

उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती * मिव विरंचि पूजेहु बहु भाँति ॥
 वर पायहु कीन्हेहु सब काजा * जीतेहु लोकपाल सवराजा ॥
 नृपअमिमान मोहवस किंवा * हरि आनेहु सीता जगदंबा ॥
 अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा * सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा ॥
 दमन गहहु तृन कंट कुठारी * परिजनमहित संग निजनारी ॥
 सादर जनकसुता करि आगे * एहि विधि चलहु मकल भय त्यागे ॥
 दोहा-प्रनतपाल रघु-वंस-भनि, त्राहि त्राहि अव मोहि ।

आरत गिरा सुनत प्रभु, अभय करहिंगे तोहि ॥२०॥

रे कपिपोत बोलु संभारी * मूढ न जानेहि मोहि सुरारी ॥
 कह निज नाम जनक कर भाई * केहि नाते मानिये मितार्ई ॥
 अंगद नाम वालि कर बेटा * ता सों कवहुँ भई होइ भेटा ॥
 अंगदवचन सुनत सकुचाना * रहा वालि वानर में जाना ॥
 अंगद तहीं वालि कर वालक * उपजेहु वंस अनल कुलघालक ॥
 गर्भ न गयउ व्यर्थ तुम्ह जायहु * निजमुख तापसदूत कहायहु ॥
 अब कहु कुमल वालि कहँ अहई * विहँसि वचन तव अंगद कहई ॥
 दिन दस गये वालि पहुँ जाई * बूभेउ कुमल मखा उर लाई ॥
 रामविरोध मुकल जमि होई * सो मव तोहि सुनाइहि सोई ॥
 सुनु मठ भेद होइ मन ताके * श्री-रघु-वीर हृदय नहिं जाके ॥
 दोहा-हम कुलघालक सत्य तुम्ह, कुलपालक दससीस ।

अंधउ बहिर न अस कहहिं, नयन कान तव बीस ॥२१॥

मिव-विरंचि-सुर-मुनि-ममुदाई * चाहत जासु चरन सेवकाई ॥
 तासु दूत होइ हम कुल बोरा * ऐसिहु मति उर विहरु न तोरा ॥
 सुनि कठोर वानी कपि केरी * कहत दसानन नयन तरेरी ॥
 खल तव कठिन वचन सब महऊँ * नीति धर्म में जानत अहऊँ ॥
 कह कपि धर्मसीलता तोरी * हमहु सुनी कृत पर-त्रिय - चोरी ॥
 देखी नयन दूत रखवारी * बूड़ि न मरहु धर्म-व्रत-धारी ॥
 कान नाक विनु भगनि निहारी * छमा कीन्ह तुम्ह धर्म विचारी ॥
 धर्मसीलता तव जग जागी * पावा दरम हमहुँ बड़भागी ॥

दोहा--जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि, सठ विलोकु मम बाहु ।
 लोक-पाल-बल-विपुल-ससि-ग्रसन हेतु सव राहु ॥
 पुनि नभसर मम कर-निकर-कमलन्हि पर करि वास ।
 सोभत भयउ मराल इव, संभुसहित कैलास ॥ २२ ॥

तुम्हरे कटक माँझ सुनु अंगद * मो सन भिरिहि कवन जोधा वद ॥
 तव प्रभु नारिधिरह बलहीना * अनुज तासु दुख दुखी मलीना ॥
 तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दौऊ * अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥
 जामवंत मंत्री अतिबूढा * सो कि होइ अब समर अरूढा ॥
 मिलिपकर्म जानहिं नल नीला * हे कपि एक महा-बल-मीला ॥
 आवा प्रथम नगरु जेहि जारा * सुनि हँसि बोलेउ वालिकुमारा ॥
 सत्य वचन कहु निसि-चर-नाहा * साँचेहु कीस कीन्ह पुरदाहा ॥
 रावननगर अल्पकपि दहई * सुनि अम वचन सत्य को कहई ॥
 जो अति सुभट सराहेहु रावन * मो सुग्रीवँ केर लघुधावन ॥
 चलइ बहुत सो वीर न होई * पठवा खबरि लेन हम मोई ॥

दोहा--सत्य नगर कपि जारेऊ, विनु प्रभुआयसु पाइ ।

फिरि न गयउ सुग्रीवँ पहिं, तेहि भय रहा लुकाइ ॥
 सत्य कहेहु दसकंठ सब, मोहि न सुनि कछु कोह ।
 कोउ न हमारें कटक अस, तो सन लरत जो सोह ॥
 प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति असि आहि ।
 जौं मृगपति वध मेडुकन्हि, भल कि कहइ कोउ ताहि ॥
 जद्यपि लघुता राम कहँ, तोहि वधे वड़ दोष ।
 तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्रिजाति कर रोष ॥
 वक्रउक्ति धनु वचन सर, हृदय दहेउ रिपु कीस ।
 प्रति उत्तर सटसिन्ह मनहुँ, काढ़त भट दससीस ॥
 हँसि बोलेउ दसमौलितव, कपि कर वड़ गुन एक ।
 जो प्रतिपालइ तासु हित, करइ उपाय अनेक ॥ २३ ॥

धन्य कीम जो निज-प्रभु-काजा * जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥
 नाँचि कूदि करि लोग रिझाई * पतिहित करइ धर्म निपुनाई ॥
 अंगद स्वामिभक्त तव जाती * प्रभुगुन कस न कहसि एहि भांती ॥
 मैं गुनगाहक परम - सु - जाना * तव कटुरटनि करउँ नहिं काना ॥
 कह कपि तव गुनगाहकताई * सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥
 वन विधंसि सुत वधि पुर जारा * तदपि न तेहि कछु कृत अपकारा ॥
 मोइ विचारि तव प्रकृतिसुहाई * दसकंधर मैं कीन्हि ढिठाई ॥
 देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा * तुम्हरेँ लाज न रोष न माषा ॥
 जौँ असि मति पितु खायेहु कीमा * कहि अस वचन हँसा दससीसा ॥
 पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही * अवहीं समुझि परा कछु मोही ॥
 वालि-विमल-जम-भाजन जानी * हतउँ न तोहि अधम अभिमानी ॥
 कहु रावन रावन जग केते * मैं निजसवन सुने सुनु जेते ॥
 बलिहि जितन एकु गयउ पताला * राखा वाँधि सिमुन्ह हयमाला ॥
 खेलहिं बालक मारहिं जाई * दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ॥
 एक बहोरि सहस्रभुज देखा * धाइ धरा जिमि जंतुविसेखा ॥
 कौतुक लागि भवन लै आवा * सो पुलस्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥

दोहा—एक कहत मोहि सकुच अति, रहा बालिकी काँख ।

तिन्ह महुँ रावन तैं कवन, सत्य बदहि तजि माख ॥२४॥

सुनु मठ सोइ रावन बलसीला * हरगिरि जान जासु भुजलीला ॥
 जान उमापति जासु मुराई * पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥
 सिरसरोज निजकरन्हि उतारी * पूजेउँ अमित वार त्रिपुरारी ॥
 भुजविक्रम जानहिं दिगपाला * सठ अजहूँ जिन्ह केँ उर साला ॥
 जानहिं दिग्गज उर कठिनाई * जव जव भिरेउँ जाइ बरिआई ॥
 जिन्ह के दसन करालन फूटे * उर लागत मूलक इव टूटे ॥
 जासु चलत डोलति इमि धरनी * चढ़त मत्तगज जिमि लघुतरनी ॥
 सोइ रावन जगविदित प्रतापी * सुनेहि न सवन अलीकप्रलापी ॥

दोहा--तेहि रावन कहँ लघु कहसि, नर कर करसि बखान ।

रे कपि बर्बर खर्ब खल, अबजाना तव ग्यान ॥२५॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी * बोलु मँभारि अधम अभिमानी ॥
 सहस-बाहु-भुज-गहन अपारा * दहन अनलसम जासु कुठारा ॥
 जासु परसु-सागर-खर-धारा * बूड़े नृप अगनित बन बारा ॥
 तासु गर्ब जेहि देखत भागा * मो नर क्यों दमसीस अभागा ॥
 रामु मनुज कस रे सठ बंगा * धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ॥
 पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा * अन्न दान अरु रस पीयूखा ॥
 बैनतेय खग अहिसहसानन * चिंतामनि पुनि उपल दमानन ॥
 सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा * लाभु कि रघु-पति-भगति-अकुंठा ॥
 दोहा-सेनसहित तव मान मथि, बन उजारि पुर जारि ।

कस रे सठ हनुमान कपि, गयउ जो तव सुत मारि ॥२६॥

सुनु रावन परिहरि चतुराई * भजसि न कृपासिंधु रघुराई ॥
 जौं खल भयेसि राम कर द्रोही * ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
 मूढ़ बृथा जनि मारसि गाला * राम वयर होइहि अस हाला ॥
 तव सिरनिकर कपिन्ह के आगें * परिहहिं धरनि रामसर लागें ॥
 ते तव सिर कंदुक इव नाना * खेलिहहिं भालु कीम चौगाना ॥
 जबहिं समर कोपिहिं रघुनायक * छुटिहहिं अति कराल बहु मायक ॥
 तव कि चलिहि अस गाल तुम्हारा * अस विचारि भजु राम उदारा ॥
 सुनत बचन रावनु परजरा * जरत महानल जनु घृत परा ॥
 दोहा-कुंभकरन अस बंधु मम, सुत प्रसिद्ध सकारि ।

मोर पराक्रमनहिं सुनेहि, जितेउ चराचर भारि ॥२७॥

सठ साखामृग जोरि सहाई * बाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई ॥
 नाघहिं खग अनेक वारीमा * सूरु न होहिं ते सुनु जड़ कीमा ॥
 मम भुज-सागर-बल-जल-पूरा * जहँ बूड़े बहु सुर नर सृरा ॥
 बीस पयोधि अगाध अपारा * को अस बीर जो पाइहि पारा ॥
 दिगपालन्ह मैं नीर भरावा * भूप सुजसु खल मोहि सुनावा ॥
 जौं पै समरसुभट तव नाथा * पुनि पुनि कहसि जासु गुनगाथा ॥
 तौ बसीठ पठवत केहि काजा * रिपु मन प्रीति करत नहिं लाजा ॥
 हर-गिरि-मथन निरखु मम बाहू * पुनि मठ कपि निज प्रभुहि मराहू ॥

दोहा-सूर कवन रावन सरिस, स्वकर काटि जेहि सीस ।

हुने अनल महँ वार बहु, हरपि साखि गौरीस ॥२८॥

जरत बिलोकेउँ जवहिं कपाला * विधि के लिखे अंक निजभाला ॥
 नर के कर आपन बध वाँची * हँसेउँ जानि विधिगिरा असाँची ॥
 सोउ मन समुझि त्राम नहिं मोरें * लिखा विरंचि जरठमति भोरें ॥
 आन वीरवल मठ मम आगे * पुनि पुनि कहमि लाज पति त्यागे ॥
 कह अंगद मलज्ज जग माहीं * रावन तोहि समान कोउ नाहीं ॥
 लाजवंत तव सहज सुभाऊ * निजमुख निजगुन कहमि न काऊ ॥
 मिर अरु मैल कथा चित रही * ता तें वार वीम तें कही ॥
 सो भुजवल राखेहु उर घाली * जीतेहु महमवाहु बलि वाली ॥
 सुनु मतिमंद देहि अब पूरा * काटे सीम कि होइय सूरा ॥
 इन्द्रजालि कहँ कहिय न वीरा * काटइ निजकर सकलमरीरा ॥

दोहा--जरहिं पतंग विमोहवस, भार वहहिं खरबंद ।

ते नहिं सूर कहावहिं, समुभि देखु मतिमंद ॥२९॥

अब जनि बत बढ़ाव खल करही * सुनु मम वचन मान परिहरही ॥
 दममुख मैं न बमीठी आयेउँ * अम विचारि रघुवीर पठायेउँ ॥
 वार वार अमि कहइ कृपाला * नहिं गजारि जम बधे सृगाला ॥
 मन महँ समुझि वचन प्रभु केरे * सहेउँ कठोरवचन सठ तेरे ॥
 नाहिं त करि मुखभंजन तोरा * लै जातेउँ सीतहिं बरजोरा ॥
 जानेउँ तव बल अधम सुरारी * सूने हरि आनेहि परनारी ॥
 तैं निमि-चर-पति गर्वबहूता * मैं रघु-पति-सेवक कर दूता ॥
 जौं न राम अपमानहिं डरऊँ * तोहि देखत अस कौतुक करऊँ ॥

दोहा--तोहि पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गाउँ ।

तव जुवतीन्ह समेत सठ, जनकसुतहि लै जाउँ ॥३०॥

जौं अस करौं तदपि न वड़ाई * मुयेहि बधे कछु नहिं मनुसाई ॥
 कौल कामवस कृपिन विमूढ़ा * अतिदरिद्र अजसी अतिबूढ़ा ॥
 सदा रोग बस संततक्रोधी * विष्णुविमुख सुति-पंत-विरोधी ॥
 तनुपोषक निंदक अधखानी * जीवत स्वसम चौदह प्रानी ॥

अस विचारि खल बधुँ न तोही * अत्र जनि रिम उपजावसि मोही ॥
 सुनि सकोप कह निसि-चर-नाथा * अधर दसन दसि मीजत हाथा ॥
 रे कपिअधम मरन अब चहसी * छोटे वदन. वात बड़ि कहमी ॥
 कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके * बल प्रताप बुधि तेज न ताके ॥
 दोहा-अगुन अमान विचारि तेहि, दीन्ह पिता बनवास ।

सो दुख अरु जुवतीविरह, पुनि निसिदिन मम त्रास ।

जिन्ह के बल कर गर्व तोहि, ऐसे मनुज अनेक ।

खाहिं निसाचर दिवसनिसि, मूढ़ समुभु तजिटेक ॥३१॥

जब तेहि कीन्ह राम के निंदा * क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा ॥
 हरि-हर निंदा सुनइ जो काना * होइ पाप गो-घात-ममाना ॥
 कटकटान कपिकुंजर भारी * दुहुँ भुजदंड तमकि महि मारी ॥
 डोलत धरनि सभामद खसे * चले भागि भय मारुत ग्रमे ॥
 गिरत सँभारि उठा दसकंधर * भूतल परे मुकुट अतिशुंदर ॥
 कछु तेहि लै निजसिरन्हि मँवारे * कछु अंगद प्रभुपाम पवारे ॥
 आवत मुकुट देखि कपि भागे * दिनहीं लूक परन विधि लागे ॥
 की रावन करि कोप चलाये * कुलिस चारि आवत अतिधाये ॥
 कह प्रभु हँसि जनि हृदय डेराहू * लूक न अमनि केतु नहिं राहू ॥
 ए किरीट दसकंधर केरे * आवत बालितनय के प्रेरे ॥
 दोहा-तरकि पवनसुत कर गहे, आनि धरे प्रभुपास ॥

कौतुक देखहिं भालु कपि, दिन-कर-सरिस प्रकास ॥

उहाँ सकोप दसानन, सब सन कहत रिसाइ ॥

धरहु कपिहि धरि मारहु, सुनि अंगद मुसुकाइ ॥३२॥

एहि वधि वेगि सुभट सब धावहु * खाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु ॥
 मरकटहीन करहु महि जाई * जिअत धरहु तापम दोउ भाई ॥
 पुनि सकोप बोलेउ जुवराजा * गाल बजावत तोहि न लाजा ॥
 मरु गर काटि निलज कुलघाती * बल बिलोकि विहरति नहिं छाती ॥
 रे त्रियचोर कु - मारग - गामी * खल मलरामि मंदमति कामी ॥

सन्निपात जल्पमि दुर्वादा * भयोसि कालवम खल मनुजादा ॥
 या को फलु पावहिगो आगें * वानर-भालु-चपेटन्हि लागें ॥
 रामु मनुज बोलत असि वानी * गिरहिं न तव रसना अभिमानी ॥
 गिरिहहिं रमना मंमय नाही * सिरन्हि ममेत ममरमहि माहीं ॥
 सोरठा--सो नर क्यों दसकंध, वालि बधेउ जेहि एक सर ।
 बीसहु लोचन अंध, धिक तव जनम कुजाति जड़ ॥
 तव सोनित की प्यास, तृपित राम-सायक निकर ।
 तजउं तोहि तेहि त्रास, कटुजल्पकनिसिचर अधम ॥३३॥

मैं तव दसन तोरिबे लायक * आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥
 अम रिसि होति दसउं मुखतोरौं * लंका गहि समुद्र महं बोरौं ॥
 गूलर-फल-समान तव लंका * बमहु मध्य तुम्ह जंतु असंका ॥
 मैं वानर फल खात न वारा * आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥
 जुगुति सुनत रावन मुमुकाई * मूढ़ मीख कहँ बहुत भुटाई ॥
 वालि न कबहुँ गाल अस मारा * मिलि तपसिन्ह तैं भयसि लबारा ॥
 माँचेहुँ मैं लवार भुजबीहा * जौं न उपारिउं तव दस जीहा ॥
 समुक्ति रामप्रताप कपि कोपा * सभा माँझ पन करि पद रोपा ॥
 जौं मम चरन सकमि सठ टारी * फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
 सुनहु सुभट मव कह दसमीमा * पद गहि धरनि पद्धारहु कीमा ॥
 इंद्र-जीत-आदिक बलवाना * हरपि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
 भपटहिं करि बल विपुल उपाई * पद न टरइ बैठहिं मिरु नाई ॥
 पुनि उठि झपटहिं सुरआराती * टरइ न कीसचरन एहि भाँती ॥
 पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी * मोहविटप नहिं सकहिं उपारी ॥
 दोहा-कोटिन्ह मेघ-नाद-सम, सुभट उठे हरखाइ ।

भपटहिं टरै न कपिचरन, पुनि बैठहिं सिर नाइ ॥

भूमि न छाँडत कपिचरन, देखत रिपुमद भाग ।

कोटिविघ्न तैं संत कर, मन जिमि नीति न त्याग ॥३४॥

कपिवल देखि सकल हिय हारे * उठा आपु कपि कें परचारे ॥
 गहत चरन कह वालिकुमारा * मम पद गहे न तोर उवारा ॥

गहसि न रामचरन सठ जाई * सुनत फिरा मन अतिमकुचाई ॥
 भयउ तेजहत श्री सव गई * मध्यदिवस जिमि मसि सोहई ॥
 सिंहासन बैठेउ सिर नाई * मानहुँ संपति मकल गवाँई ॥
 जगदात्ता प्राणपति रामा * तासु विमुख किमि लह विद्यामा ॥
 उमा राम की भृकुटि विलासा * होइ विस्व पुनि पावइ नासा ॥
 तून तें कुलिस कुलिस तून करई * तासु दूतपन कहु किमि टरई ॥
 पुनि कपि कही नीति विधि नाना * मान न तासु काल नियराना ॥
 रिपुमद मथि प्रभु-सु-जस सुनायो * यह कहि चलेउ बालि-नृप-जायो ॥
 हतौं न खेत खेलाइ खेलाई * तोहि अबहिं का करौं बड़ाई ॥
 प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा * सो सुनि रावन भयउ दुखारा ॥
 जातुधान अंगदपन देखी * भय व्याकुल सव भये विमेशी ॥

दोहा—रिपुवल धरपि हरपि कपि, बालितनय बलपुंज ।

पुलक सरीर नयनजल, गहे राम-पद-कंज ॥

साँझ जानिदसमौलि तव, भवन गयउ बिलखाइ ।

मंदोदरी रावनहि, बहुरि कहा समुभाइ ॥३५॥

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही * सोह न समर तुम्हहिं रघुपतिही ॥
 रामानुज लघुरेख खँचाई * सोउ नहिं नाँधेहु अमि मनुगाई ॥
 पिय तुम्ह ताहि जितव संग्रामा * जा के दूत केर अम कामा ॥
 कौतुक सिंधु नाँधि तव लंका * आयउ कपिकेहरी अमंका ॥
 रखवारे हति बिपिन उजारा * देखत तोहि अच्छ तेहि मारा ॥
 जारि नगर सबु कान्हेमि द्वारा * कहाँ रहा बल गर्व तुम्हारा ॥
 अब पति मृषा गाल जनि मारहु * मोर कहा कछु हृदय विचारहु ॥
 पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु * अग जगनाथ अ-तुल-बल जानहु ॥
 बानप्रताप जान मारीचा * तासु कहा नहिं मानेहि नीचा ॥
 जनकसभा अगनित महिपाला * रहे तुम्हहुँ बल विपुल विमाला ॥
 भंजि धनुष जानकी विआही * तव मंग्राम जितहु किन ताही ॥
 सुर-पति-सुत जानइ बल थोरा * राखा जियत आँखि गहि फोगा ॥
 सूपनखा के गति तुम्ह देखी * तदपि हृदय नहिं लाज विमेशी ॥

दोहा-वधि विराध खरदूखनहि, लीला हतेउ कबंध ।

बालि एक सर मारेउ, तेहि जानहु दसकंध ॥३६॥

जेहि जल नाथ बंधायेउ हेला * उतरे प्रभु दल सहित सुवला ॥

कारुनीक दिन-कर-कुल-केतू * दूत पठायउ तव हित हेतू ॥

मभा माँझ जेहि तव बल मथा * करिबूरुथ महँ मृगपति जथा ॥

अंगद हनुमत अनुचर जा के * रनवाँकुरे वीर अतिवाँके ॥

तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू * मुधा मान ममता मद बहहू ॥

अहह कंत कृत राम विरोधा * कालविवस मन उपज न बोधा ॥

कालु दंड गहि काहु न मारा * हरइ धर्म बल बुद्धि विचारा ॥

निकट काल जेहि आवइ साई * तेहि भ्रम होहि तुम्हारिहि नाई ॥

दोहा--दुइ सुत मारेउ दहेउ पुर, अजहुँ पूर पिय देहु ।

कृपासिंधु रघुनाथ भजि, नाथ विमल जस लेहु ॥३७॥

नारिवचन सुनि विसिखममाना * मभा गयउ उठि होत विहाना ॥

बैठ जाइ सिंहासन फूली * अतिअभिमान त्राम सब भूली ॥

इहाँ राम अंगदहि बोलावा * आइ चरन-पंक-ज सिरु नावा ॥

अति आदर समीप बैठारी * बोले विहँसि कृपाल खरारी ॥

बालितनय कौतुक अति मोही * तात सत्य कहू पूछउँ तोही ॥

रावनु जातु-धान-कुल-टीका * भुजबल अतुल जासु जग लीका ॥

तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाये * कहहु तात कवनी विधि पाये ॥

सुनु सर्वग्य प्रनत-सुख-कारी * मुकुट न होहि भूपगुन चारी ॥

साम दान अरु दंड विभेदा * नृपउर वमहिँ नाथ कह बंदा ॥

नीतिधर्म के चरन सुहाये * अस जिय जानि नाथ पहिँ आये ॥

दोहा-धर्महीन प्रभु-पद-विमुख, कालविवस दससीस ।

तेहि परिहार गुन आये, सुनहु कोसलाधीस ॥

परमचतुरता सवन सुनि, विहँसे रामु उदार ।

समाचार पुनि सब कहे, गढ़ के बालिकुमार ॥३८॥

रिपु के समाचार जब पाये * राम सचिव सब निकट बोलाये ॥

लंका वाँके चारि दुआरा * केहि विधि लागिय करहु विचारा ॥

तब कपीस रिच्छेस विभीषन * सुमिरि हृदय दिन-कर-कुल-भूषण ॥
 करि विचार तिन्ह मंत्र दृढावा * चारि अनी कपिकटक वनावा ॥
 जथाजोग सेनापति कीन्हे * जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ॥
 प्रभुप्रताप कहि सब समुझायें * सुनि कपि सिंहनाद करि धायें ॥
 हरपिस रामचरन सिर नावहिं * गहि गिरिसिखर बीर सब धावहिं ॥
 गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीसा * जय रघुवीर कोमलाधीसा ॥
 जानत परमदुर्ग अति लंका * प्रभुप्रताप कपि चले अमंका ॥
 घटाटोप करि चहुँदिसि घेरी * मुग्वहि निमान बजावहिं भेरी ॥
 दोहा-जयति राम जय लछिमन, जय कपीस सुग्रीव ।

गर्जहिं केहरिनाद कपि, भालु महा-बल-सीवें ॥३६॥

लंका भयउ कोलाहल भारी * सुना दमानन अतिअहँकारी ॥
 देखहु वनरन्ह केरि ठिठार्ई * विहँमि निमाचर मेन बोलाई ॥
 आयें कीम काल के प्रेरे * लुधावंत सब निमिचर मेरे ॥
 अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा * गृह बैठे अहार विधि दीन्हा ॥
 सुभट सकल चारिहु दिसि जाहू * धरि धरि भालु कीम सब ग्वाहू ॥
 उमा रावनहि अस अभिमाना * जिमि टिट्टिभ खग मूत उताना ॥
 चले निसाचर आयसु माँगी * गहि कर भिंडिपाल वर माँगी ॥
 तोमर मुद्गर परिघ प्रचंडा * मूल कृपान परसु गिरिखंडा ॥
 जिमि अरुनोपलनिकर निहारी * धावहिं सठ खग मांमअहारी ॥
 चोंच-भंग-दुख तिन्हहिं न सूझा * तिमि धायें मनुजाद अवृझा ॥
 दोहा-नानायुध सर-चाप-धर, जातुधान वलवीर ।

कोटकँगूरनि चढ़ि गये, कोटि कोटि रनधीर ॥४०॥

कोटकँगूरन्हि सोहहिं कैमे * मेरु के मृगनि जनु घन वैमे ॥
 बाजहिं ढोल निमान जुझाऊ * मुनि धुनि होहि भटन्ह मन चाऊ ॥
 बाजहिं भेरि नफारि अपारा * मुनि कादरउर जाहिं दरारा ॥
 देखि न जाइ कपिन्ह के ठट्टा * अति विमाल तनु भालु सुभट्टा ॥
 धावहिं गनहिं न अवघट घाटा * पर्वत फोरि करहिं गहि वाटा ॥
 कटकटाहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं * दमन ओठ काटहिं अतितर्जहिं ॥

उत रावन इत रामदोहाई * जयति जयति जय परी लराई ॥
निसिचर सिखरसमूह दहावहिं * कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं ॥

छन्द-धरि कु-धर-खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं ।

भूपटहिं चरन गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि प्रचारहीं ॥

अतितरल तरुन प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़ चढ़ि चढ़ि गये ।

कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ रामजसु गावत भये ॥

दोहा-एकु एकु गहि निसिचर, पुनि कपि चले पराइ ।

ऊपर आपु हेठ भट, गिरहिं धरनि पर आइ ॥४१॥

राम - प्रताप - प्रबल कपिजूथा * मर्दहिं निसि-चर-निकर-वरूथा ॥

चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ वानर * जय रघु-वीर-प्रताप दिवाकर ॥

चले निसा-चर-निकर पराई * प्रबल पवन जिमि घनममुदाई ॥

हाहाकार भयउ पुर भारी * रोवहिं बालक आतुर नारी ॥

सब मिलि देहिं रावनहिं गारी * राज करत एहि मृत्यु हँकारी ॥

निजदल विचल सुना तेहि काना * फेरि सुभट लंकैस रिसाना ॥

जो रन विमुख सुना में काना * सो में हतव करालकृपाना ॥

सरबसु खाइ भोग करि नाना * समरभूमि भये दुर्लभ प्राना ॥

उग्र वचन सुनि सकल डेराने * फिरे क्रोध करि सुभट लजाने ॥

सनमुख मरन वीर कै सोभा * तव तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥

दोहा-बहु-आयुध-धर सुभट सब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि ।

कीन्हे व्याकुल भालु कपि, परिघ तिसूलन्हि मारी ॥४२॥

भय आतुर कपि भागन लागे * जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे ॥

कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता * कहँ नल नील दुबिद बलवंता ॥

निजदल विचल सुना हनुमाना * पच्छिम द्वार रहा बलवाना ॥

मेघनाद तहँ करइ लराई * टूट न द्वार परम कठिनाई ॥

पवन-तनय-मन भा अति क्रोधा * गर्जेउ प्रबल-काल-सम जोधा ॥

कूदि लंकगढ़ ऊपर आवा * गहि गिरि मेघनाद कहँ धावा ॥

भंजेउ रथ सारथी निपाता * ताहि हृदय महँ मारेसि लाता ॥

दुसरे सूत विकल तेहि जाना * स्पंदन घालि तुरत गृह आना ॥

दोहा--अंगद सुना पवनसुत, गढ पर गयउ अकेल ।

रनवाँकुरा बालिसुत, तरकि चढेउ कपिखेल ॥४३॥

जुद्धविरुद्ध क्रुद्ध दोउ वानर * रामप्रताप सुमिरि उरअंतर ॥
 रावन भवन चढे दोउ धाई * करहिं कोमलाधीसदोहाई ॥
 कलससहित गहि भवन ढहावा * देखि निसा-चर-पति भय पावा ॥
 नारिबुंद कर पीटहिं छाती * अब दुइ कपि आये उतपाती ॥
 कपिलीला करि तिन्हहिं डेरावहिं * रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं ॥
 पुनि कर गहि कंचन के खंभा * कहेन्हि करिय उतपातअरंभा ॥
 गर्जि परे रिपुकटक मँझारी * लागे मर्दइ भुजबल भारी ॥
 काहुहि लात चंपटन्हि केहू * भजहु न रामहिं सो फल लेहू ॥

दोहा--एक एक साँ मर्दहिं, तोरि चलावहिं मुंड ।

रावन आगे परहिं ते, जनु फूटहिं दधिकुंड ॥४४॥

महा-महा-मुखिया जे पावहिं * ते पद गहि प्रभुपास चलावहिं ॥
 कहहिं विभीषन तिन्ह के नामा * देहिं रामु तिन्हहू निजधामा ॥
 खल मनुजाद द्विजामिषभोगी * पावहिं गति जो जाँचत जोगी ॥
 उमा राम मृदुचित करुनाकर * वयर भाव सुमिरत मोहि निमिचर ॥
 देहिं परम गति सो जिय जानी * अम कृपालु को कहहु भवानी ॥
 अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी * नर मतिमंद ते परम अभागी ॥
 अंगद अरु हनुमंत प्रवेशा * कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा ॥
 लंका दोउ कपि सोहहिं कैसें * मथहिं मिथु दुइ मंदर जैसें ॥

दोहा--भुजबल रिपुदल दलमलि, देखि दिवस कर अंत ।

कूटे जुगल विगत स्रम, आये जहँ भगवंत ॥४५॥

प्रभु-पद-कमल सीस तिन्ह नाये * देखि सुभट रघु-पति-मन भाये ॥
 राम कृपा करि जुगल निहारे * भये विगतस्रम परम सुखारे ॥
 गये जानि अंगद हनुमाना * फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
 जातुधान प्रदोषवल पाई * धाये करि दस-सीस-दोहाई ॥
 निसि-चर-अनी देखि कपि फिरे * जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥
 दोउ दल प्रवल प्रचारि प्रचारी * लरत सुभट नहिं मानहिं हारी ॥

महावीर निसिचर सब कारे * नानावरन वलीमुख भारे ॥
 सबल जुगलदल ममवल जोधा * कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥
 प्राविट-परद-पयोद घनेरे * लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ॥
 अनिप अकंपन अरु अतिकाया * विचलत मेन कीन्हि इन्ह माया ॥
 भयउ निर्मिप महँ अति अँधियारा * बृष्टि होइ रुधरोपलञ्जारा ॥
 दोहा--देखिनिविड तम दसहुँ दिसि, कपिदल भयउ खभार ।

एकहि एक न देखहिं, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥४६॥

मकल मरमु रघुनायक जाना * लिये वोलि अंगद हनुमाना ॥
 समाचार सब कहि समुभाये * सुनत कोपि कपिकुंजर धाये ॥
 पुनि कृपाल हँमि चाप चढ़ावा * पावकमायक मपदि चलावा ॥
 भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं * ग्यान उदय जिमि मंसय जाहीं ॥
 भालु वलीमुख पाइ प्रकामा * धायं हरपि वि-गत-सम-त्रासा ॥
 हनूमान अंगद रन गाजे * हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥
 भागत भट पटकहिं धरि धरनी * करहिं भालु कपि अदभुत करनी ॥
 गहि पद डारहिं सागर माहीं * मकर उरग झप धरि धरि खाहीं ॥
 दोहा--कछु मारे कछु घायल, कछु गढ चले पराइ ।

गर्जहिं भालु वलीमुख, रिपु-दल-वल विचलाइ ॥४७॥

निसा जानि कपि चारिउ-अनी * आये जहाँ कोसलाधनी ॥
 राम कृपा करि चितवा जवहीं * भये विगतसम बानर तवहीं ॥
 उहाँ दमानन मचिव हँकारे * सब सन कहेमि सुभट जे मारे ॥
 आधा कटक कपिन्ह संहारा * कहहु बेंगि का करिय विचारा ॥
 माल्यवंत अतिजरठ निसाचर * रावनु-मातु-पिता-मंत्री-वर ॥
 बोला बचन नीति अतिपावन * सुनहु तात कछु मोर सिखावन ॥
 जव तें तुम्ह सीता हरि आनी * असगुन होहिं न जाहिं बखानी ॥
 वेद पुरान जामु जस गायो * राम विमुख काहु न सुख पायो ॥
 दोहा--हि न्यात्त भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान ।

जेहि मारे सोइ अवतरेउ, कृपासिंधु भगवान ॥

कालरूप खल-वन-दहन, गुनागार घनबोध ।

सिव विरंचि जेहि सेवहिं, तासों कवन विरोध ॥४८॥

परिहरि वयरु देहु वैदेही * भजहु कृपानिधि परममनेही ॥
 ता के वचन वानसम लागे * करियामुख करि जाहि अभागे ॥
 बूढ़ भयमि न त मरतेउँ तोही * अब जनि नयन देखावसि मोही ॥
 तेहि अपने मन अस अनुमाना * बध्यौ चहत एहि कृपानिधाना ॥
 सो उठि गयउ कहत दुर्वादा * तव सकोप बोलेउ घननादा ॥
 कोतुक प्रात देग्वियहु मोरा * करिहउँ बहुत कहों का थोरा ॥
 सुनि सुतवचन भरोसा आवा * प्रीतिसमेत अंक वैठावा ॥
 करत विचार भयउ भिनुसारा * लागे कपि पुनि चहँदुआरा ॥
 कोपि कपिन्ह दुरघट गढ़ घेरा * नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥
 विविधायुधधर निसिचर धाये * गढ़ तें पर्वतमिखर दहाये ॥
 छन्द-ढाहे मही-धर-सिखर कोटिन्ह विविधविधि गोला चले ।

घहरात जिमि पविपात गर्जत जनु प्रलय के बादने ॥

मर्कट विकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर भये ।

गहि मैल तेइ गढ़ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निमिचर ह्ये ॥

दोहा--मेघनाद सुनि सवन अस, गढ़ पुनि छोंका आइ ।

उतरि दुर्ग तें वीरवर, सनमुख चलेउ वजाइ ॥४९॥

कहँ कोसलाधीम दोउ भ्राता * धन्वी मकल-लोक-विख्याता ॥
 कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवाँ * अंगद हनुमंत बलसीवाँ ॥
 कहाँ विभीषनु भ्राता द्रोही * आजु मठहि हठि मारउँ ओही ॥
 अम कहि कठिन वान संधाने * अतिमय क्रोध सवन लागि ताने ॥
 सरसमूह सो झँड़ै लागा * जनु मपच्छ धावहिं बहु नागा ॥
 जहँ तहँ परत देखियहि वानर * मनमुख होइ न मके तेहि अवसर ॥
 जहँ तहँ भागि चले कपि रिच्छा * विमरी सवहिं युद्ध के इच्छा ॥
 सो कपि भालु न रन महँ देखा * कीन्हेंसि जेहि न प्रान अवमेखा ॥

दोहा--दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि वीर ।

सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बलधीर ॥५०॥

देखि पवनसुत कटक विहाला * क्रोधवंत जनु धायउ काला ॥
 महामल एक तुरत उपारा * अतिरिमि मेघनाद पर डारा ॥
 आवत देखि गयउ नभ सोई * रथ मारथी तुरग मव खोई ॥
 वार वार प्रचार हनुमाना * निकट न आव मरमु सो जाना ॥
 रघु-पति-निकट गयउ घननादा * नानाभाँति कहेमि दुर्वादा ॥
 अस्त्र सम्र आयुध मव डारे * कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे ॥
 देखि प्रताप मूढ़ खिमियाना * करै लाग माया विधि नाना ॥
 जिमि कोउ करै गरुड़ मे खेला * डरपावै गहि स्वल्प मपेला ॥
 दोहा-जासु प्रवल-माया-विवस, सिव विरंचि वड़ छोट ।

ताहि देखावइ निसिचर, निज माया मतिखोट ॥५१॥
 नभ चढ़ि वरपइ विपुल अँगारा * महि तें प्रगट होहिं जलधारा ॥
 नाना भाँति पिमाच पिमाची * मारु काटु धुनि बोलहिं नाँची ॥
 विष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा * वरपइ कवहुँ उपल बहु छाड़ा ॥
 वरपि धूरि कीन्हेमि अँधियारा * मृञ्ज न आपन हाथ पमारा ॥
 कपि अकुलाने माया देखे * सत्र कर मरन बना यहि लेखे ॥
 कौतुक देखि राम मुमुकाने * भये मभीत सकल कपि जाने ॥
 टक वान काटी सब माया * जिमि दिनकर हर तिमिरनिकाया ॥
 कृपादृष्टि कपि भालु विलोके * भये प्रवल रन रहहिं न रोके ॥
 दोहा-आयसु माँगि राम पहिं, अंगदादि कपि साथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध होइ, वान सरासन हाथ ॥५२॥
 छत-ज-नयन उर बाहु विसाला * हिम-गिरि-निभ तनुकळुएकलाला ॥
 इहाँ दमानन सुभट पठाये * नाना सम्र अस्र गहि धाये ॥
 भू-धर-नख-विटपायुध धारी * धाये कपि जय राम पुकारी ॥
 भिरे सकल जोरिहि सन जोरी * इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥
 मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं * कपि जय मील मारि पुनि डाटहिं ॥
 मारु मारु धरु धरु धरु मारु * सीस तोरि गहि भुजा उपारु ॥
 अमि ख पूरि रही नव खंडा * धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥
 देखहिं कौतुक नभ सुरबंदा * कवहुँक विममय कवहुँ अनंदा ॥

दोहा--रुधिर गाड़ भरि भरि जमेउ, ऊपर धूरि उड़ाइ ।

जनु अंगाररासीन्ह पर, मृतकधूम रह छाइ ॥५३॥

घायल बीर विराजहि कैसे * कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥
लछिमन मेघनाद दोउ जोधा * भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा ॥

एकहिं एक सकहिं नहिं जीति * निसिचर छल बल करइ अनीती ॥
क्रोधवंत तव भयउ अनंता * भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥

नाना विधि प्रहार कर सेषा * राच्छस भयउ प्रानअवसेषा ॥

रावनसुत निजमन अनुमाना * संकठ भयउ हरिहि मम प्राना ॥

विरधातिनी छाड़ेसि साँगी * तेजपुंज लछिमन उर लागी ॥

मुरझा भई सक्ति के लागे * तव चलि गयउ निकट भय त्यागे ॥

दोहा--मेघ-नाद-सम कोटिसत, जोधा रहे उठाइ ।

जगदाधार सेष किमि, उठै चले खिसिआइ ॥५४॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू * जारइ भुवन चारि दम आसू ॥

सक संग्राम जीति को ताही * सेवहिं सुर नर अग जग जाही ॥

यह कौतूहल जानइ मोई * जा पर कृपा राम कै होई ॥

संखय भई फिरी दोउ बाहिनी * लगे मँभारन निज निज अनी ॥

व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर * लछिमनु कहाँ बृझ करुनाकर ॥

तव लगि लै आयउ हनुमाना * अनुज देखि प्रभु अतिदुख माना ॥

जामवंत कह वैद सुपेना * लंका रहइ को पठइय लेना ॥

धरि लघु रूप गयउ हनुमंता * आनेउ भवन ममेत तुरंता ॥

दोहा--रघु-पति-चरन-सरो-ज सिरु, नायउ आय सुपेन ।

कहा नाम गिरि औपधी, जाहु पवनसुत लेन ॥५५॥

अथ क्षेपक

कह हनुमन्त जोरि युग हाथा * लपण सोचु जनि कीजे नाथा ॥

कहा चन्द्र में पट इव गारी * अरहीं देउ अर्मा मुख डारी ॥

कहो विबुध वैदहिं गहि आवौं * मौत मारि सबके दुख भानौं ॥

कहो फोरि नभ रविहिं निकारों * रिपु तेहि द्वार राहु वैठारों ॥

कहो ब्रह्म हरिहर कहँ आनी * अमर अमर बुलवावों वानी ॥

कहो पताल जाय हति नागा * आनौ जमी कुंड यहि जागा ॥
कहो देहूँ निज देहै त्यागी * अवहीं उठो लषण घट जागी ॥

दोहा--जौ कछु तव मनमें रुचै, सो मोहि आयसु होय ।
नाथ शपथ क्षण में करौं, प्रभु प्रताप बल सोय ॥

इति श्लोक

राम-चरन-सरमि-ज उर राखी * चलेउ प्रभंजनसुत बल भाखी ॥
उहाँ दूत एक मरमु जनावा * रावन काल-नेमि-गृह आवा ॥
दसमुख कहा मरमु तेहि सुना * पुनि पुनि कालनेमि सिरु धुना ॥
देखत तुम्हहिं नगर जेहि जारा * तासु पंथ को रोकनिहारा ॥
भजि रघुपति करु हित आपना * ब्रौंड़हु नाथ मृषा जलपना ॥
नील-कंज-तनु सुंदर स्यामा * हृदय राखु लोचन अभिरामा ॥
मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू * महा मोहनिसि सूतत जागू ॥
कालव्याल कर भच्छक जोई * सपनेहु समर कि जीतिय सोई ॥

दोहा--सुनि दसकंध रिसान अति, तेहि मन कीन्ह विचार ।

राम-दूत-कर मरउँ वरु, यह खल रत मलभार ॥५६॥

अस कहि चला रचेसिमग माया * सर मंदिर वर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा सुभ आस्रम * मुनिहि ब्रूझि जलु पियउँ जाइ स्रम ॥
राच्छस-कपट-वेष तहँ सोहा * माया-पति-दूतहि चह मोहा ॥
जाइ पवनसुत नायेउ माथा * लाग सो कहइ राम-गुन-गाथा ॥
होत महारन रावनरामहिं * जितिहहिं राम न मंसय या महिं ॥
इहाँ भये मैं देखउँ भाई * ग्यान-दृष्टि-बलु मोहि अधिकारि ॥
माँगा जल तेहि दीन्ह कमंडल * कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल ॥
सरमज्जनु करि आतुर आवहु * दिच्छा देउँ ग्यान जेहि पावहु ॥

दोहा--सर पैठत कपि-पद-गहा, मकरी तव अकुलान ।

मारी सो धरि दिव्यतनु, चली गगन चढ़ि जान ॥५७॥

कपि तव दरम भइउँ निःपापा * मिटा तात मुनिवर कर सापा ॥
मुनि न होइ यह निमिचर घोरा * मानहु सत्य वचन प्रभु मोरा ॥
अस कहि गई अपछरा जवहीं * निसि-चर-निकट गयउ सो तवहीं ॥
कह कपि मुनि गुरुदखिना लेहू * पाखे हमहिं मंत्र तुम्ह देहू ॥

मिर लंगूर लपेटि पञ्चारा * निज तनु प्रगटंसि मरती वारा ॥
 राम राम कहि छाड़ेसि प्राणा * सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना ॥
 देखा सैल न औषध चीन्हा * सहमा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥
 गहिगिरिनिसि नभ धावत भयऊ * अवध - पुरी - ऊपर कपि गयऊ ॥
 दोहा--देखा भरत विसाल अति, निसिचर मन अनुमान ।

विनु फर सायक मारेउ, चाप सवन लगि तानि ॥५८॥

परेउ मुरुछि महि लागत सायक * सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
 सुनि प्रियवचन भरत तव धाये * कपि समीप अतिआतुर आये ॥
 विकल बिलोकि कीस उरलावा * जागत नहिं बहु भाँति जगावा ॥
 मुख मलीन मन भये दुखारी * कहत वचन लोचन भरि वारी ॥
 जेहि विधि राम विमुखमोहि किन्हा * तेहि पुनि यह दारुन दुख दीन्हा ॥
 जौ मोरे मन वच अरु काया * प्रीति राम - पद-कमल अमाया ॥
 तौ कपि होउ विगत - स्वम-सूला * जौ मो पर रघुपति अनुकूला ॥
 सुनत बचन उठि बैठ कपीमा * कहि जय जयति कोसलार्थीमा ॥
 सोरठा-लीन्ह कपिहि उर लाइ, पुलकित तन लोचन सजल ।

प्रीति न हृदय समाइ, सुमिरि राम रघु-कुल-तिलक ॥५९॥

तात कुमल कहु सुखनिधान की * सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥
 कपि सब चरित समास बखाने * भये दुखी मन महँ पछिताने ॥
 अहह दैव में कत जग जायउ * प्रभु के एकहु काज न आयउ ॥
 जानि कुअवसरु मन धरि धीरा * पुनि कपि सन बोले बल वीरा ॥

अथ चपक

भले भरत कहँ बोले ताता * पीछे सुनि दुख पैहें माता ॥
 तेहिते चलि दीजै समुझाई * आय भवन मव कथा सुनाई ॥
 सुत घायल सुनि मातु सुमित्रहिं * भयउ हर्ष औ मोच विचित्रहिं ॥
 बोली धन्य सुवन मम आजू * जूझैउ ममर स्वामि के काजू ॥
 पर एक दुःख होत अति ताता * कुममय भये राम विनु भ्राता ॥
 पुनि स्वभाव रिपुहन ते कहेऊ * जाहु तात प्रभु पहुँ तुम रहेऊ ॥
 सुनत उठे मुद सहित प्रकासा * विधि वम सुदर दरु जनु पास ॥

दोहा-अम्ब अनुजगाति देख मन, माना सबनि गलानि ।
 बोली रघुपति मातु तब, कपिते धीरज आनि ॥
 जेहि सोंपेउ मै लषण कहँ, तिनकी यह गति होय ।
 अब कब देखों नयन भरि, पुत्र कमल मुख सोय ॥
 बोले मास्त सुवन तब, सकल धरहु मन धीर ।
 कुशल जानकी लषण युत, ऐहों श्रीरघुबीर ॥

इति क्षेपक

तात गहरु होइहि तोहि जाता * काज नसाइहि होत प्रभाता ॥
 चहु मम मायक मैलसमेता * पठवों तोहि जहँ कृपानिकेता ॥
 सुनि कपिमन उपजा अभिमाना * मोरे भार चलिहि किमि बाना ॥
 रामप्रभाव विचारि बहोरी * बंदि चरन कपि कह कर जोरी ॥

दोहा--तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहउँ नाथ तुरंत ।

अस कहि आयसु पाइ पद, बंदि चलेउ हनुमंत ॥

भरत-बाहु-बल-सौल-गुन, प्रभु-पद-प्रीति अपार ।

मन महुँ जात सराहत, पुनि पुनि पवनकुमार ॥६०॥

उहाँ राम लक्ष्मिनहिं निहारी * बोले वचन मनुजअनुसारी ॥
 अर्धराति गइ कपि नहिं आयउ * राम उठाइ अनुज उर लायउ ॥
 सकहु न दुखित देहि मोहि काऊ * बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥
 मम हित लागि तजेहु पितु माता * महेउ विपिन हिम आतप वाता ॥
 सो अनुराग कहाँ कब भाई * उठहु न सुनि मम वचविकलाई ॥
 जौ जनतेउँ बन बंधुबिछोडू * पितावचन मनतेउँ नहिं ओडू ॥
 सुत बित नारि भवन परिवारा * होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
 अस विचारि जिय जागहु ताता * मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ॥
 जथा पंख त्रिनु खग अति दोना * मनि त्रिनुफनि करिवर करहीना ॥
 अस मम जिवन बंधु त्रिनु तोही * जौ जइ दैव जियावै मोही ॥
 जैहउँ अवध कवन मुंह लाई * नारिहेतु प्रियभाइ गवाई ॥
 बरु अपजसु सहतेउँ जग माहीं * नारि हानि बिसेष छति नाहीं ॥

अव अपलोकु सोकु सुत तोरा * सहिहि निटुर कठोर उर मोरा ॥
 निजजननी के एक कुमारा * तात तामु तुम्ह प्रानअधारा ॥
 सौपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी * मव विधि सुखद परम हित जानी ॥
 उतरु काह दैहउँ तेहि जाई * उठि किन मोहि सिखावहु भाई ॥
 बहु विधि मोचत मोचविमोचन * सवत मलिल राजिव-दल-लोचन ॥
 उमा एक अखंड रघुराई * नरगति भगतकृपाल देखाई ॥
 सोरठा--प्रभुप्रलाप सुनि कान, विकल भये वानरनिकर ।

आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस ॥६१॥

हरपि राम भेंटउ हनुमाना * अति कृतग्य प्रभु परम मुजाना ॥
 तुरत वेद तव कीन्हि उपाई * उठि बैठे लछिमन हरपाई ॥
 हृदय लाइ भेंटउ प्रभु भ्राता * हरपे मकल भालु-कपि - वाता ॥
 पुनि कपि वेद तहाँ पहुँचावा * जेहि विधि तवहिं ताहि लेइ आवा ॥
 यह वृत्तांत दमानन सुनेऊ * अतिविपाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ॥
 व्याकुल कुंभकरन पहिं आवा * विविध जतन करि ताहि जगावा ॥
 जागा निमिचर देखिय कैभा * मानहुँ काल देह धरि वैभा ॥
 कुंभकरन बूझा कहु भाई * काहे तव मुख रहा सुखाई ॥
 कथा कही मव तेहि अभिमाना * जेहि प्रकार माता हरि आनी ॥
 तात कपिन्ह मव निमिचर मारे * महा - महा - जोधा मंहारे ॥
 दुर्मुख सुरारिपु मनुजअहारी * मट अतिकाय अकंपन भारी ॥
 अपर महोदर आदिक वीरा * परे समरमहि सव रन्धीग ॥
 दोहा--सुनि दस-कंधर-वचन तव, कुंभकरन विलखान ।

जगदंवा हरि आनि अव, सठ चाहत कल्यान ॥६२॥

मल न कीन्ह तैं निमि-चर-नाहा * अव मोहि आइ जगायेहि काहा ॥
 अजहूँ तात त्यागि अभिमाना * भजहु राम होइहि कल्याना ॥
 हैं दससीम मनुज रघुनायक * जा के हनुमान से पायक ॥
 अहह वन्धु तैं कीन्हि खोटार्ह * प्रथमहिं मोहि न सुनायेहि आई ॥
 कीन्हेहु प्रभु विरोध तेहि देवक * मिव विरंचि मुर जाके संवक ॥
 नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा * कहतेउँ तोहि ममय निरवहा ॥

अब भरि अंक भेंटु मोहि भाई * लोचन सुफल करों में जाई ॥
 स्यामगात सरसीरुह - लोचन * देखों जाइ ताप - त्रय - मोचन ॥
 दोहा-राम-रूप-गुन सुमिरत, मगन भयउ छन एक ।

रावन माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिष अनेक ॥६३॥

महिष खाइ करि मदिरापाना * गर्जा वज्राघातसमाना ॥
 कुंभकरन दुर्मद रनरंगा * चला दुर्ग तजि सेन न संगी ॥
 देखि विभीषनु आगे आयउ * परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥
 अनुज उठाइ हृदय तेहि लावा * रघु-पति-भगत जानि मनभावा ॥
 तात लात रावन मोहि मारा * कहत परमहित मंत्र विचारा ॥
 तेहि गलानि रघुपति पहिँ आयउँ * देखि दीन प्रभु के मन भायउँ ॥
 सुनु सुत भयउ कालवस रावन * सो कि मान अब परमसिखावन ॥
 धन्य धन्य तैं धन्य विभीषन * भयउ तात निमि-चर-कुल-भूषन ॥
 बंधुवंस तैं कीन्ह उजागर * भजेहु राम मोभा - सुख - सागर ॥
 दोहा--बचन कर्म मन कपट तजि, भजेहु राम रनधीर ।

जाहु न निज परसूभ मोहि, भयउँ कालवस वीर ॥६४॥

बंधुवचन सुनि फिरा विभीषन * आयउ जहँ त्रै-लोक-विभूषन ॥
 नाथ भूधराकार सरीरा * कुम्भकरण आवत रनधीरा ॥
 एतना कपिन्ह सुना जव काना * किलकिलाइ धाये वलवाना ॥
 लिये उपारि विटप अरु भूधर * कटकटाइ डारहिँ ता ऊपर ॥
 कोटि कोटि गिरि-सिखर-प्रहारा * करहिँ भालु कपि एकहिँ बारा ॥
 मुरेउ न मन तन टरेउ न टारे * जिमि गज अर्क फलन्हिँ के मारे ॥
 तव मारुतसुत मुष्टिका हनेऊ * परेउ धरनि व्याकुल सिर धुनेऊ ॥
 पुनि उठि तेहि मारेउ हनुमंता * धुर्मित भूतल परेउ तुरंता ॥
 पुनि नल नीलहिँ अवनि पडारेसि * जहँ तहँ पटकि पटकि भट डारेसि ॥
 चली बली - मुख - सेन पराई * अति-भय-त्रसित न कोउ समुहाई ॥
 दोहा--अंगदादि कपि मुच्छित करि समेत सुग्रीव ।

काँख दावि कपिराज कहँ चला अमित-बल-सीवाँ ॥६५॥

उमा करत रघुपति नरलीला * खेल गरुड़ जिमि अहिगन मीला ॥
 भृकुटि भंग कालहि जो खाई * ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥
 जगपावनि कीरति विस्तरिहहिं * गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं ॥
 मुरझा गइ मारुतसुत जागा * सुग्रीवहिं तव खोजन लागा ॥
 सुग्रीवहुँ कै मुरुझा बीती * निबुकि गयउ तेहि मृतकप्रतीती ॥
 काटंसि दसन नासिका काना * गरजि अकाम चलेउ तेहि जाना ॥
 गहेउ चरन धरि धरनि पद्धारा * अतिलाघव उठि पुनि तेहि मारा ॥
 पुनि आयउ प्रभु पहिं बलवाना * जयति जयति जय कृपानिधाना ॥
 नाक कान काटे जिय जानी * फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥
 सहज भीम पुनि विनु सुति नासा * देखत कपिदल उपजी त्रामा ॥
 दोहा-जय जय जय रघु-वंस-मनि, धाये कपि दै हूह ।

एकहि बार तासु पर, छाड़ेन्हि गिरि-तरु-जूह ॥६६॥

कुम्भकरन रनरंग विरुद्धा * मनमुख चला काल जनु कुद्धा ॥
 कोटि कोटि धरि धरि खाई * जनु टीडी गिरिगुहा समाई ॥
 कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा * कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥
 मुख नासा सवनन्हि की वाटा * निसरि पराहिं भालु-कपि-ठाटा ॥
 रन-मद-मत निसाचर दर्पा * विस्व प्रसिहि जनु एहि विधिअर्पा ॥
 मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे * सृञ्ज न नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥
 कुम्भकरन कपिफौज विडारी * सुनि धाई रजनीचर-धारी ॥
 देखी राम विकल कटकाई * रिपुअनीक नानाबिधि आई ॥

दोहा-सुनु सुग्रीव विभीषन, अनुज सँभारेहु सैन ।

मैं देखउँ खल-बल-दलहि, बोले राजिवनेन ॥६७॥

कर सारंग साजि कटि भाथा * अरि-दल-दलन चले रघुनाथा ॥
 प्रथम कीन्हि प्रभु धनुपटकोरा * रिपुदल बधिर भयउ सुनि मोरा ॥
 सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा * कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥
 जहँ तहँ चले बिपुल नाराचा * लगे कटन भट विकट पिमाचा ॥
 कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा * बहुतक वीर होहिं मत गंडा ॥
 धुर्मि धुर्मि घायल महि परहीं * उठि सँभारि सुभट पुनि लरहीं ॥

लागत वान जलद् जिमि गाजहिं * बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं ॥
 रुंड प्रचंड मुंड विनु धावहिं * धरु धरु मारु मारु धुनि गावहिं ॥
 दोहा--छन महुँ प्रभु के सायकन्हि, काटे विकट पिसाच ।

पुनि रघुवीर निपंग महुँ, प्रविसे सब नाराच ॥६८॥

कुम्भकरन मन दीख विचारी * हति छन माँझ निसा-चर-धारी ॥
 भा अति क्रुद्ध महा बल वीरा * कियो मृग-नायक-नाद गँभीरा ॥
 कोपि महीधर लेइ उपारी * डारइ जहँ मर्कटभट भारी ॥
 आवत देखि सैल प्रभु भारे * सरन्हि काटि रजसम करि डारे ॥
 पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक * छाड़े अति कराल बहु सायक ॥
 तन महुँ प्रविसि निमरि सर जाहीं * जनु दामिनि घन माँझ समाहीं ॥
 सोनित खवत सोह तन कारे * जनु कज्जलगिरि गेरुपनारे ॥
 बिकल विलोकि भालु कपि धाये * विहँसा जवहिं निकटकपि आये ॥
 दोहा--महानाद करि गर्जा, कोटि कोटि गहि कीस ।

महि पटकइ गजराज इव, सपथ करइ दससीस ॥६९॥

भागे भालु-बलीमुख-जूथा * बृक विलोकि जिमि मेषवरूथा ॥
 चले भागि कपि भालु भवानो * बिकल पुकारत आरत बानी ॥
 यह निसिचर दुकाल-सम अहई * कपिकुल देस परन अब चहई ॥
 कृपा-वारिधर राम खरारी * पाहि पाहि प्रनतारतिहारी ॥
 सकरुन वचन सुनत भगवाना * चले सुधारि मरासनवाना ॥
 राम सेन निज पात्रे घाली * चले सकोप महा-बल-साली ॥
 खँचि धनुष सरसत संधाने * छूटे तीर सरीर समाने ॥
 लागत सर धावा रिसभरा * कुधर डगमगत डोलति धरा ॥
 लीन्ह एक तेहि सैल उपाटी * रघु-कुल-तिलक भुजा सोइ काटी ॥
 धावा वामबाहु गिरि धारी * प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी ॥
 काटें भुजा सोह खल कैसा * पच्छहीन मंदरगिरि जैसा ॥
 उग्र विलोकनि प्रभुहि विलोका * प्रसन चहत मानहुँ त्रैलोका ॥
 दोहा--करि चिक्कार घोर अति, धावा बदन पसारि ।

गगन सिद्ध सुर त्रासित, हा हा होति पुकारि ॥७०॥

सभय देव करुनानिधि जानेउ ❀ सवन प्रजंत मरासनु तानेउ ॥
 विसिखनिकर निमि-चर-मुख भरेऊ ❀ तदपि महावल भूमि न परेऊ ॥
 सरन्हि भरा मुख सनमुख धावा ❀ कालत्रोन सजीव जनु आवा ॥
 तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा ❀ धर तें भिन्न तासु मिर कीन्हा ॥
 सो सिरु परेउ दमानन आगें ❀ विकल भयउ जिमि फनि मनि त्यागें ॥
 धरनि धमइ धर धाव प्रचंडा ❀ तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा ॥
 परे भूमि जिमि नभ तें भूधर ❀ हेठ दावि कपि भालु निसाचर ॥
 तासु तेज प्रभुबदन समाना ❀ सुर मुनि सवहिं अचंभौ माना ॥
 सुर दुंदुभी वजावहिं हरषहिं ❀ अस्तुति करहिं सुमन बहु वरषहिं ॥
 करि विनती सुर सकल सिधाये ❀ तेही ममय देवरिषि आये ॥
 गगनोपरि हरि-गुन-गन गाये ❀ रुचिर वीररस प्रभुमन भाये ॥
 बेगि हतहु खल कहि मुनि गये ❀ राम समर महि सोहत भये ॥
 छन्द-संग्रामभूमि विराज रघुपति अतुलवल कोसलधनी ।
 स्रमविंदु मुख राजीवलोचन अरुन तन सोनितकनो ॥
 भुजजुगल फेरत सरसरामन भालु कपि चहुँ दिसि वने ।
 कह दास तुलसी कहि न सक छवि सेष जेहि आनन घने ॥

दोहा-निसिचर अधम मलाकर, ताहि दीन्ह निज धाम ।

गिरिजा ते नर मंदमति, जे न भजहिं श्रीराम ॥७१॥

दिन के अंत फिरी दोउ अनी ❀ समर भई सुभटन्ह स्रम घनी ॥
 रामकृपा कपिदल बल बाढा ❀ जिमि तृन पाइ लाग अति डाढा ॥
 छीजहिं निसिचर दिन अरु राती ❀ निज मुख कहें सुकृत जेहि भाँती ॥
 बहु विलाप दसकंधर करई ❀ बंधुमीम पुनि पुनि उर धरई ॥
 रोवहिं नारि हृदय हति पानी ❀ तासु तेज बल विपुल वखानी ॥
 मेघनाद तेहि अवसर आयो ❀ कहि बहु कथा पिता समुझायो ॥
 देखेहु कालि मोरि मनुमाई ❀ अवहिं बहुत का करौं वड़ाई ॥
 इष्टदेव सों बल रथ पायउँ ❀ मो बल तात न तोहि देखायउँ ॥
 एहि विधि जलपत भयउ विहाना ❀ चहुँ दुआर लागे कपि नाना ॥
 इत कपि भाल कालसम बीरा ❀ उत रजनीचर अति-रन-धारा ॥

लरहिं सुभट निज निज जय हेतू * बरनि न जाइ ममर खगकेतू ॥
दोहा--मेघनाद मायामय, रथ चढ़ि गयउ अकास ।

गजेंउ अट्टहास करि, भइ कपिकटकहि त्रास ॥७२॥

सक्ति मूल तलवारि कृपाना * अस्त्र शस्त्र कुलिमायुध नाना ॥
डारइ परमु परिघ पापाना * लागेउ वृष्टि करै बहु बाना ॥
दम दिमि रहे बान नभ झाई * मानहुँ मघा मेघ झरि लाई ॥
धरु धरु मारु मुनिअ धुनिकाना * जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥
गहिगिरि तरु अकाम कपि धावहिं * देवहिंतेहि न दुखित फिरिआवहिं ॥
अवघट घाट वाट गिरि कंदर * मायावल कीन्हेमि सरपंजर ॥
जाहिं कहाँ भये व्याकुल वंदर * सुरपति वंदि परे जनु मंदर ॥
मारुतसुत अंगद नल नीला * कीन्हेमि बिकल सकल बलमीला ॥
पुनि लछिमन सुग्रीव विभीषन * मरन्हि मारि कीन्हेमि जर्जरतन ॥
पुनि रघुपति मन जूझइ लागा * मर झाँड़इ होइ लागहिं नागा ॥
व्याल-पास-वस भयउ खरारी * स्वयम अनंत एक अधिकारी ॥
नट इव कपट चरित कर नाना * मदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥
रनसोभा लगि प्रभुहिं वँधायों * देखि दसा देवन्द भय पायों ॥
दोहा--गिरिजा जासु नाम जपि, मुनि काटहिं भवपास ।

सो कि बंध तर आवइ, व्यापक विस्वनिवास ॥७३॥

चरित राम के मगुन भवानी * तरकि न जाहिं बुद्धि बल वानी ॥
अम बिचारि जे तग्य विरार्गी * रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी ॥
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा * पुनि भा प्रगट कहइ दुर्वादा ॥
जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा * सुनि करि ताहि क्रोध अति बाढ़ा ॥
बूढ़ जानि सठ झाँड़ेउं तोही * लागेसि अधम पचारै मोही ॥
अस कहि तरल त्रिसूल चलावा * जामवंत मो कर गहि धावा ॥
मारसि मेघनाद कै छाती * परा धरनि घुर्मित सुरघाती ॥
पुनि रिमान गहि चरन फिरावा * महि पछारि निज बल देखरावा ॥
बर प्रसाद सो मरइ न मारा * तव गहि पद लंका पर डारा ॥
इहाँ देवरिषि गरुड़ पठावा * राममभीष सपदि सो आवा ॥

दोहा-खगपति सब धरि खाये, माया-नाग-वरूथ ।

माया विगत भये सब, हरपे वानरजूथ ॥

गहि गिरि पादप उपल नख, धाये कीस रिसाइ ।

चले तमीचर विकलतर, गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ ७४ ॥

मेघनाद कै मुख्या जागी * पितहि विलोकि लाज अति लागी ॥

तुरत गयेउ गिरि-वर-कंदरा * करौं अजय मख अम मन धरा ॥

इहाँ विभीषन मंत्र विचारा * सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥

मेघनाद मख करइ अपावन * खल मायावी देवसतावन ॥

जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि * नाथ वेगि पुनि जीति न जाइहि ॥

सुनि रघुपति अतिमयसुख माना * बोले अंगदादि कपि नाना ॥

लछिमन मंग जाहु मव भाई * करहु विधम जग्य कर जाई ॥

तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही * देखि मभय सुर दुख अति मोही ॥

मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई * जेहि छीजै निमिचर सुनु भाई ॥

जामवंत सुग्रीव विभीषन * मेन समेत रहेउ तीनिउँ जन ॥

जव रघुवीर दीन्हि अनुमान * कटि निपंग कमिमाजि मरासन ॥

प्रभुप्रताप उर धरि रनधीरा * बोले घन इव गिरा गँभीरा ॥

जौं तेहि आजु वधे विनु आवौं * तौ रघु-पति-मेवक न कहावौं ॥

जौं मत संकर करहि सहाई * तदपि हतउँ रघु-वीर-दोहाई ॥

दोहा--रघु-पति-चरन नाइ सिरु, चलैउ तुरंत अनंत ।

अंगद नील मयंद नल, संग सुभट हनुमंत । ७५ ॥

जाइ कपिन्ह सो देखा वैसा * आहुति देत रुधिर अरु भैसा ॥

कीन्ह कपिन्ह सब जग्य विधमा * जव न उठइ तव करहि प्रममा ॥

तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई * लातन्हि हति हति चले पराई ॥

लै त्रिमूल धावा कपि भाग * आपे जहँ रामानुज आगे ॥

आवा परम क्रोध कर मारा * गर्ज घोरग्व वारहि वारा ॥

कोपि मरुतसुत अंगद धाये * हति त्रिमूल उर धरनि गिराये ॥

प्रभु कहँ छँड़िसि मूल प्रचंडा * मर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥

उठि बहोरि मारुति जुवराजा * हतहिं कोपि तेहि घाउ न वाजा ॥

फिरे वीर रिपु मरइ न मारा * तव धावा करि घोर चिकारा ॥
 आवत देखि क्रुद्ध जनु काला * लञ्जिमन छाड़े विसिख कराला ॥
 देखेसि आवत पविमम वाना * तुरत भयउ खल अंतरधाना ॥
 विविध वेष धरि करइ लराई * कवहुँक प्रकट कवहुँ दुरि जाई ॥
 देखि अजय रिपु डरपे कीसा * परम क्रुद्ध तव भयउ अहीसा ॥
 एहि पापिहिं में बहुत खेलावा * लञ्जिमन मन अस मंत्र ददावा ॥
 सुमिरि कोमला - धीम - प्रतापा * मरमंधान कीन्ह करि दापा ॥
 छाँड़ेउ वान माँझ उर लागा * मरती वार कपट सब त्यागा ॥
 दोहा--रामानुज कहँ रामु कहँ, अस कहि छाड़ेसि प्रान ।

धन्य धन्य तव जननी, कह अंगद हनुमान ॥७६॥

अथ क्षेपक

शीश परेउ धरणी पर जवई * भुजा दाहिनी नभ सो गवई ॥
 जो जग कह दंडक यम दंडा * हरि द्रोही सुत समर प्रचंडा ॥
 महिमा अमित महा बल सीवा * जासु प्रताप भयउ दशग्रीवा ॥
 भुज बल सुरनायक वश कीन्हा * चौदह भुवन जीति यश लीन्हा ॥
 रिपु तरु लषण मूलखनि गंजेउ * जिमि गज काल ताल गहि भंजेउ ॥
 जिमि वामव गहि कुलिश कराला * कीन्ह विकल गिरि पक्ष विहाला ॥
 रण मागर महँ परेउ शरीरा * तरै दारु जिमि रुधिर सुनीरा ॥
 दन्त विकट मुख परम भयावन * चिकुर सघन चख अशुभ अपावन ॥
 रसना लाल रंग जनु जावक * देवकि सिखा सोइ जनु पावक ॥
 पाइ सुआयसु ऋषभ कपीशा * करगहि लीन्ह दुष्ट कर शीशा ॥
 दोहा--करि श्रम मारेउ महारिपु, रामानुज रणधीर ।

निडर सुमन वर्षहिं विबुध, कहिजयगिरा गंभीर ॥

इति क्षेपक

बिनु प्रयास हनुमंत उठावा * लंका द्वार राखि तेहि आवा ॥
 तामु मरन सुनि सुर गंधर्वा * चढ़ि विमान आये नभ सर्वा ॥
 वरपि सुमन दुंदुभी बजावहिं * श्री-रघु-वीर-विमल-जसु गावहिं ॥
 जय अनंत जय जगदाधारा * तुम्ह प्रभु सब देवन्ह निस्तारा ॥

अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाये * लङ्घिमन कृपासिंधु पहिं आये ॥

अथ क्षेपक

प्रभुहिं विलोकि शीश पद नाये * उठि प्रभु अनुज हर्ष उर लाये ॥
 मुख प्रसन्नता देखि पूछ जब * रिपु वध कहा विभीषणहू तब ॥
 कृपा दृष्टि करि अनुजहिं हेरा * विगत घाव कीन्हैउ कर फेरा ॥
 वाण वेध देखिय तनु कैसे * कनक त्रोन शर पूरित जैसे ॥
 धर तेहि सीस आनि प्रभु आगे * वानर भालु विलोकन लागे ॥
 प्रभु कौतुकी विलोकेउ शीशा * राखन कहेउ कोशलाधीशा ॥
 दोहा-प्रभु आयसु सुनि कौशपति, राखे यतन कराइ ।

कटक सहित रघुवंश मणि, शोभित दोनों भाइ ॥

कृपा दृष्टि कपि भालु निहारे * भए श्रम रहित राम बैठारे ॥
 सुनहु उमा एहिविधि रिपु मारे * सुर नर मुनि सब भए सुखारे ॥
 अब सो सुनहु वाँह तिहि केरी * खग जो लाँघ गई शर प्रेरी ॥
 मेघनाद आँगन महँ परी * वाण विद्ध शोणित सो भरी ॥
 राजति तहँ सुलोचना वैसी * रतिते रुचिर रूप गुण जैसी ॥
 नाग सुता दशकंध पतोहू * वामव रिपुतिय छविमय जाहू ॥
 हेम सिंहासन सोहति वाला * मेवहिं विद्याधर तिय माला ॥
 पूजहिं विबुध विनय करि ताही * सुख प्रमोद को सकहिं सराही ॥
 तहँ पति भुजा परी यहि माँती * मनहुँ मकल सुख तरुकी काँती ॥
 दोहा-तिहि दिशि दासी देखि कहँ, सोणित श्रव भुज दगड ।

भयउ समर आश्चर्य मय, मनहुँ अखंडन खंड ॥

मुनिके सकल सखी मुख वयना * तजि सिंहासन उठी मुनेना ॥
 नारि सुभाव धकधकी धरकी * मृचक अशुभ दहिन भुज फरकी ॥
 होत महा रण रावण रामहिं * वीर धुरीण मोर पिय तामहिं ॥
 सकल सुरामुर सकहिं न जूझी * विधि की मती परै नहिं बूझी ॥
 इतना कहति गई चलि आपू * पति भज लखि करि कोटि विलापू ॥
 कंकण मणि गण भूषण सोई * महा विद्यप सम आन न होई ॥
 देखति मनहिं न आवत तेही * तामु प्रभाव मुनत पहिलेही ॥

नींद नारि भोजन परिहरई * बारह वरप तासु कर मरई ॥
दोहा-करि विचार मन टेक दे, मैं पति देवतनारि ।

भुज लिखि मेटहु दुचितई, सुनि कर दीन्ह पसारि ॥

लखि रूख तासु सखी उठि धाई * तुरतहिं खोजि खरी लै आई ॥
दीन्ह हाथ पर मणि अंगनाई * लिखित लपण कीरति रुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शत कोटिक * तजै तासु महिमा यह छोटिक ॥
अक्षय अव्यय अज अविनासी * अतुल अमित घट घट के वामी ॥
प्रगटहिं पालहिं पुनि जग हरहीं * त्रिगुण रूप त्रय मूरति करहीं ॥
जो कालहु कर काल भयंकर * वरणत सुयश शारदा शंकर ॥
धरहिं विविध तनु सेवक हेतु * जासु नाम भवसागर सेतु ॥
मुनि मन पुंडरीक जाके घर * वचन विवेक विचार बुद्धिवर ॥
दोहा--कोटि कल्प वरणत निगम, अगम जासु गुण गाथ ।

तम शरीर जटु जीव बिनु, किमि वरणों लिखि हाथ ॥

मम शिर गयउ जहाँ रघुराई * तव बचननि लागि भुजा पठाई ॥
एहिविधि लिखी सकल भुज वाता * परी भूमि तल अति विलपाता ॥
वाँचि सकल भुज लिखित जथारथ * लक्ष्मण राम जानि परमारथ ॥
नारि सुभाव तदपि बहु भाँती * विलपहिं मिलि सखियन को पाँती ॥
गुण गण साहस शील नाह के * कहि रोवहिं बल विजय बाँह के ॥
जिहि भुजवल मुर नाथ विगोए * सो प्रभु आज ममर महि सोए ॥
मणि गण भूषण वमन विमारति * महि लोटति करतल मिर मारति ॥
मगन शोक सरि तनु सुधि नाहीं * दारुण विपति कहौं किहि पाहीं ॥
क्षणिक प्रबोध सखी कोउ करई * बहुरि शोक दावानल जरई ॥
क्षण क्षण उठति परति धरणी तल * पुनि रोवहिं सराहि पति कर बल ॥

दोहा-तिन्ह महँ सखी सयानि इक, कहि समुझाई बैन ।

शोकछाँडि पतिदेवता, सुमति करिय जिय चैन ॥

सुनि कह सहसानन तनु जाता * सत्य कहा तुम्ह सखी सुवाता ॥
विधि निर्मित मोकहँ दुख लाहू * सुख परिपूर भवन सब काहू ॥
विजय राम लक्ष्मण कहँ आयउ * सुयशसकल मर्कट कुल पायउ ॥

कुल कलंक वड़ लहेउ विभीषण ॥ कुल कुठार अग मुनेउ न दीषण ॥
 छूटि बंदि अत्र सुरगण केरी ॥ निज २ पुरनि दुहाई फेरी ॥
 मुनि पुलस्त्य कर भा कुल नाशा ॥ अवरविशशि मुख करहिं प्रकाशा ॥
 तेजवंत पावक परिहरि दुख ॥ बहहिं समीर आजु अपने सुख ॥
 मलिल गगन भू निर्मल आजू ॥ सुबस वसहिं सुरनायक राजू ॥
 दोहा-यम कुबेर दिगपाल सब, प्रमुदित सुर नर नाग ।

स्वाय अघाय विहाय दुख, पाय सुयज्ञ विभाग ॥

इतना कहि मंदिर महँ आई ॥ देखति मणि गण धनु बहुताई ॥
 सुरपति भवन पटोतर ताई ॥ ऋद्धि मिद्धि जहँ मकल कमाई ॥
 देखत विभवन मन अनुरागेउ ॥ पति पद नेह निपुण मन लागेउ ॥
 दीन्हे मणि गण भूपण चीरा ॥ धनु धरणि गज हाटक हीरा ॥
 मणिमय शिविका रचउ बनाई ॥ भुज चढ़ाइ पहराव बनाई ॥
 आपुन चढ़ति भई तहँ आई ॥ सुर दुर्लभ सुख सदन विहाई ॥
 वीत राग जिमि तजहिं विषय गण ॥ महस भाँति पति पद लागेउ मन ॥
 शुक मारिक सुलोचन जाये ॥ कनक पींजरन्हि गखि पढ़ाये ॥
 व्याकुल कहहिं ते कहाँ सुनयना ॥ सुधि धीरज परिहरिय सुवयना ॥
 भयो विकल खग मृग यहि भाँती ॥ अपर दशा कैमे कहि जाती ॥
 प्रजा लोग आतुर मँग लागे ॥ प्रेम उमगि लोचन जल पागे ॥

दोहा-वाजन लगे निसान गण, ढोल दुन्दुभी भेरि ।

पुरजन परिजन संग सब, चलें पालकी घेरि ॥

देखि भीर दशकंधर द्वारे ॥ सजग होउ सब वीर प्रचारें ॥
 जाना कटक रिपुन्हि कर आई ॥ अम्र शम्र कर धरहु बनाई ॥
 धनुष चढ़ाय तूण कटि बाँधहिं ॥ गहि अमि चर्म वीरवर माजहिं ॥
 तोमर परशु प्रचंड गदागहि ॥ तीक्ष्ण चांखे शूल शक्ति लहि ॥
 मारु मारु धरु धरु कहि धावहिं ॥ प्रगट दशानन विजय सुनावहिं ॥
 गर्जि तर्जि कहि गिरा गँभीरा ॥ समर भयंकर निशिचर वीरा ॥
 निपटहिं निकट पालकी आई ॥ चीन्ह मकल भट रहे लजाई ॥
 देखि जुहारि नाग पति कन्या ॥ मती गिरामणि त्रिभुवन धन्या ॥

दोहा-द्वारपाल दशकंध के, खबर सुनायउ जाइ ।

भई रजायसु बेगिही, लेहु सुताहि बुलाइ ॥

दोहा-तिहि अवसरहि सुलोचना, गहे चरण शिरनाइ ।

राखि भुजा घननादकी, करुणा बचन सुनाइ ॥

तुमहि अछत अम हाल हमारी * सुख तजि भयउँ शोक अधिकारी ॥

नभ मारग भुज मम गृहपरी * संशय जानि दीन्ह कर खरी ॥

लिखा राम लक्ष्मण महि माइन्ह * क्रममों सब विधि कथा कही तिन्ह ॥

ठगिसी रही वाँचि गुण गाथा * जरहुँ मंग जो पावउँ माथा ॥

रण कबन्ध भुज मम गृह आई * शिर तहँ जहँ नरैस दोउ भाई ॥

करि मो जतन मिले मोहि शीशा * तुन्ह मर्वज्ञ चराचर ईशा ॥

मुनत कुलिश मम गिरा बधुकी * जीवन आम दशानन मूकी ॥

तदपि धीर धरि करत प्रबोधा * कहु जग मोहिं ममान को जोधा ॥

दोहा-राम लपण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमंत ।

माथ विभीषण ऋषभको, आनों मारि तुरंत ॥

अब लगि रहा भरोसा भारी * कुम्भकर्ण घननाद सुरारी ॥

मैहु आजुलगि कीन्ह न जूझा * इन्ह सबकर पुरुषारथ बूझा ॥

मरे ते नर बानर के मारे * बात सुनत बड़ि लाज हमारे ॥

गणना कवन वीर महँ तिनकी * अति दुर्दशा कीन्ह कपि जिन्हकी ॥

छाँड़ि शोच कुल बधु पतोहू * जानेउ उन्ह समान जिन मोहू ॥

पुत्रि विलंब करहु घट चारी * देखहु मोरि भयंकर मारी ॥

आनि शीश सब शत्रुन्ह केरा * विनु प्रयास नहिं लागहिं बेरा ॥

भुगवहिं जंतु पराकृत भोगा * नतुकत निशिचर बनचर योगा ॥

दोहा-मेरु उपारनहार जे, धरा धरहिं कर बीच ।

ते भट खाये मशक शिशु, काल कुटिलता नीच ॥

क्रोधावेश घोर ख बोलहिं * हृदय शोक तरु अचल न डोलहिं ॥

समाधान नहिं मानति सोई * सुनि प्रलाप परितोष न होई ॥

नर बानर पुरुषारथ देखत * बड़ौ प्रचंड छोट करि लेखत ॥

कूदि सिंधु लंका कपि जारी * लघुकर मानत ताहि सुरारी ॥

कुम्भकर्ण अति काय महोदर * मम पति गिरेउ समेत सहोदर ॥
 तेहि रिपु चहहिं दशानन जीती * देखिय महा मोह की रीती ॥
 उतर देउँ तो पातक होई * करि विषाद अव सर्वसु खोई ॥
 फिरेउ राज तो मोहिं न काजू * बिनु पिय सकल नरक कर साजू ॥
 दोहा--तुरतहिं उठी सुलोचना, गइ मयसुता जु पास ।

पदगहि रोवति सबकही, प्रगट शोक उपहास ॥

आदिहि ते सब कथा बखानी * सुनि सुनि रोवहिं रावण रानी ॥
 कही सोपति भुज लिखित बहोरी * राम लषण महिमा नहिं थोरी ॥
 कहेउ बहुरि दशकंधर क्रोधा * सहेउ विडंबन कीन्ह सो जोधा ॥
 सुनि सोउ पुत्र बधू की बानी * बोली दुखित मंदोदरि रानी ॥
 कहौँ सो मानव मत्य सयानी * मुनी जो नारद मुनिकी बानी ॥
 पाब्लिल वात भई सब साँची * अनुभव कीन्ह न एको वाँची ॥
 देवि न होइ वृथा ऋषि भाषित * अपने महा मोह मन माँषित ॥
 आगिल कथा समाज समेता * सुनहु पुत्रि ऋषि वर्णन जंता ॥
 वीर भाव दशकंधर जूझहिं * प्राणहु गये नीति नहिं बूझहिं ॥
 बंधु भेद लंका गढ़ टूटहिं * सुर नर नाग वंदिते छूटहिं ॥
 सिया शोक मंकट ते छूटहिं * वानर भालु राज गृह लूटहिं ॥
 घन मणि भूषण वसन विमाना * भोग करहिं मर्कट कुल नाना ॥
 दोहा--राज विभीषण पाइहैं, अमर कल्प निर्वाहि ।

भावीबश सुख दुख जगत, उपदेशिय कहु काहि ॥

मुनि वचनन की मोहिं प्रतीती * अनुभव मदा हारि अरु नीती ॥
 तैं पुत्री परिहरि अब शोका * पति मँग तुरत माध पग्लोका ॥
 जाहि राम पहुँ पति शिरलागी * तजि मँकोच आनहिं शिरमाँगी ॥
 होव न लाज आजु को भूषण * समयहीन मनगणिय न दूषण ॥
 एक नारि व्रत रघुपति केरा * लषण सुयम ते सुना घनेरा ॥
 है पुनि ससुर विभीषण तोरा * वालि सुवन है वालक मोरा ॥
 मंत्री जामवन्त सुग्रीवा * दुविद मयंद पनमवल सीवा ॥

जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता * शिव स्वरूप भय हर भगवन्ता ॥
सदा नीति रस राम नरेशू * तहाँ जात कहु कवन कलेशू ॥
दोहा-विदित तोहि पतिभुज लिखित, लक्ष्मण राम प्रभाउ ।

महा सुभ्रूषि भाषित भयउ, अब बिलम्ब नहिं लाउ ॥

सुनत तासु मुखकी हितबानी * जाहुँ राम पहिं यह उर आनी ॥
बार बार चरणन शिर नाई * चली जहाँ लक्ष्मण रघुराई ॥
देखी कटक भालु कपि केरी * मिथु सुवेल महीधर घेरी ॥
उमगेउ मनहुँ महोदधि दूसर * हरित पिंग धूमिल तनु धसर ॥
स्वर्ग लाल भासत अनहेरी * मनहुँ लपट वड़वानल कैरी ॥
स्रवत रुधिर भुज सहज भयंकर * जहँ तहँ प्रगट होत जनु जलधर ॥
लक्ष्मण शेष सुअंक शीश धरि * कटक जलधि सोवत राघव हरि ॥
अक्षय वट तहँ बैठ विभीषण * अस सुकृती जग सुना न दीषण ॥

दोहा-देखत हर्ष सुलोचना, धोरज धरति बहोरि ।

महाराज रघुवीर कहँ, विनय सुनावहु मोरि ॥

बानर सकल उठे अम बोली * अरिपुर ते आवत एक डोली ॥
इह जानिय रावण अब बूझा * भइ मति मेघनाद जब जूझा ॥
हठ तजि मीतहिं दीन्ह पठाई * तजहु शोच अब मिटी लराई ॥
जेहि लगि प्रगट कीन्ह पुर आगी * वाँधेउ सेतु हेतु जेहि लागी ॥
सो सीता अब विनु श्रम पाई * जानहु विधि अनुकूल अघाई ॥
विजय राम सुग्रीवहिं आयउ * सुयश सकल बानर कुल पायउ ॥
विरह राम लक्ष्मण कर छूटेउ * विनु प्रयास लंका गढ़ टूटेउ ॥
युग युग कीरति रहहिं इमारी * कत रण कत हम लघु बनचारी ॥

दोहा-यहिविधि चारु विचारकरि, दीन्ह ठीक मन माहिं ।

भयउ काज रघुराजकर, बात दूसरी नाहिं ॥

पैठत कटक अतिहि सकुचाई * अन चिन्हारि जिमि पर घर जाई ॥
आगे जाइ दीख रघुवीरहिं * छवि मय श्यामल गौर शरीरहिं ॥
मर्कत कनक छविहिं जनु निंदक * सो जन धन्य उमा जे बंधक ॥
मत्तगयंद शुण्ड भुज दंडा * धनुष बाण असि धरे प्रचंडा ॥

उर विशाल अति उन्नत कंधर * कंबु कंठ रेखा वर त्रय धर ॥
 मुख छवि को उपमा कवि जोहहिं * शशि सरोजमम कहेन सोहहिं ॥
 दशन पाँतिको काँति कहै को * ललकत मन पट तरहि लहै को ॥
 देखत अधरनि की अरुणाई * विवाफल बंधक लजाई ॥
 शुक तुडहिं नासिका लजावहिं * थके सुकवि नहिं पेटतर पावहिं ॥

दोहा-छविमय गुणमय तेजमय, राम उदधि अवगाह ।

जहाँ न पावत पार सुर, को वरणै कवि थाह ॥

भृकुटी विकट कपोल सुहाये * शीश जटा शुचि मुकुट बनाये ॥
 भाल विशाल तिलक जुत सोहइ * ध्यान समय लखि मुनिमन मोहइ ॥
 वल्कल वसन तूण कटि बाँधे * कर शर सुभग सरासन काँधे ॥
 वीरासन आसन मृगञ्जाला * नवपल्लव प्रसून की माला ॥
 चरण सरोज वरणि नहिं जाई * जहँ मुनि मधुकर सदा लुभाई ॥
 प्रगट भई तेहि थल ते गंगा * श्रुति पुराण कहि कथा प्रसंगा ॥
 नवहिं महेश विरंचि जाहि कहँ * लोचन गोचर होइ काहि कहँ ॥
 भय भंजन जनरंजन जोहित * भवमागर तारण कहँ वोहित ॥

दोहा-प्रणतपाल विरदावली, जिन्ह चरणनिकी बानि ।

शोक हरण संशय दलन, सकल सुमंगलखानि ॥

कर जोरे अंगद हनुमाना * दुविद मयंद कुमुद बलवाना ॥
 जाम्बवन्त कपि पति बल शीला * ऋषभ सुपेण महित नल नीला ॥
 महावीर वानर सब राजहिं * लपणविभीषण दुहुदिशि भ्राजहिं ॥
 मित भाषित सर्वज्ञ सु सेवक * चितवहिं रुख रघुनन्दन देवक ॥
 सभा मध्य शोभित रघुनन्दन * कीन्हेमिसफल निरखि निज अंजन ॥
 करति दंडवत शिर धरि धरणी * तव सब कथा विभीषण वरणी ॥
 पुत्र बधू दसकंधर वारी * पति देवता सुलोचनि नारी ॥
 मेघनाद की नारि सुसीला * यह गति तव विरोध की लीला ॥

दोहा-मुये जान पति भुज लिखित, सब समुभाई ओहि ।

महाराज रघुवंशमणि, जाचन आई तोहि ॥

करि प्रणाम आदर नहिं थोरे * करुणा वचन कहत कर जोरे ॥
 अति अस्तुति कीन्ही बहु भाँती * हृदय सोच चिंता दिन राती ॥
 अस्तुति कीन्ह अहो प्रभु देवा * कृपा अनुग्रह अद्भुत सेवा ॥
 नित सुमिरों मैं तुम्हें गुसाईं * जेहि विधि मोहिं होउ सुखदाई ॥
 दया करहु देवन के देवा * राम नाम हुइए एक खेवा ॥
 दीन दयालु अनुग्रह कारी * मोहि पतित प्रभु लेहु उवारी ॥
 पतितहु महँ जे पतित कहाई * ताहू गति दीन्ही रघुराई ॥
 तुम त्रिभुवन पति सब कर स्वामी * करौ दया प्रभु गरुड़ा गामी ॥
 दोहा--अस प्रभु दिनवन्धु हरि, कारन रहित कृपालु ।

तुलसिदास शठ ताहि भजु, छाँड़ि कपट जंजालु ॥

तुम्ह त्रिभुवन त्रैलोक के, दूसर अवर न कोइ ।

काहि पुकारों छाँड़ि तुहि, नाम सत्य प्रभु होइ ॥

तुम अंतर्यामी भगवाना * प्रभुता आदि मध्य अवमाना ॥
 करुणा वचन सुनत रघुवीरा * पुलक रोम भये सिथिल मरीरा ॥
 देउं जिवाय तोर पति आजू * भोगहु लंक कल्प सत राजू ॥
 छाँड़ि मोच मन अति हर्षाई * तुरत भवन अपने फिरि जाई ॥
 सुनि अस सत्य सिंधु की वानी * मन महँ वानर चमू डरानी ॥
 कहि न मकैं कछु प्रभु मुख देखी * कहा करिय करतार अलेखी ॥
 सीय सोचकर फल नहिं होइहि * जो करि कृपा राम यह जोइहि ॥
 सब देवन कर सोच न जाई * जो अस कृपा करैं रघुराई ॥
 दोहा--राज विभीषण लंककर, केहिविधि करिहहिं भाइ ।

समाभि बरै घननाद जब, गहहिं शरासन जाइ ॥

मुख रुख लाखि कपोश जब जाना * प्रणतपाल भगवान समाना ॥
 देखि बहुत रघुपति कर ब्योहू * विनय करति दशकंठ पतोहू ॥
 आपु उदार देव सब लायक * करुणा मय देखेउं रघुनायक ॥
 हमहुँ विचार कीन्ह मन माहीं * जीवन ते अस मरण सराहीं ॥
 भुज बल जीति लोक सब कीन्हे * चौदह भुवन भोग करि लीन्हे ॥
 रण तीरथ जाचक भल कीन्हेउं * प्राण सोध लक्ष्मण करि दीन्हेउं ॥

अब न उचित पति लेउ उभारा * धन्य धन्य भा दर्श तुम्हारा ॥
जानिय हमहु मख सत साथी * मिलव तुम्हहि जिमि मिले समाधी ॥
दोहा--निर्मल गति अवसर भयउ, सुनिय सत्य रघुवीर ।

तुमहि मिले नहिं होहिं भव. यथा सिंधु गति नीर ॥

मनकी जानन हार सुदेवा * भव सागर तारहु इहि सेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई * मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई ॥
पाइ कृतारथ मानेउ आपू * मिटा विरह संभव परितापू ॥
अंचल पोंछति मुख की धरी * कहि मम प्राण सजीवन मूरी ॥
देखि करत संशय सुग्रीवो * भुजमहि लिखा सो मोहिनसीवा ॥
हँसै बदन तौ तिय यह साँची * नाहिं तो निशिचर माया काँची ॥
कहँ यह ज्ञान मृतक भुज गावै * जो मुनिचर साधन ते पावै ॥
प्रभु यह कहेउ हँसत यह शीशा * किये कुतर्क न उचित कपीशा ॥

दोहा—शिर सो कहति सुलोचना, हँसहु वेगि मम नाथ ।

नतरु प्रतीति न मानिहैं, लिखि जो तुम्हरे हाथ ॥

क्षणक बिलम्ब कीन्ह नहिं बोला * मृतक सोमुख मुदित नहिं खोला ॥
पुनि पुनि कहति सो नागकुमारी * श्रमित भयउ रण महि करि मारी ॥
लगेउ लषण शर क्षोभ बढ़ावहिं * प्रभु समीप कत मोहिं लजावहिं ॥
जो मन बचन कर्म यह देही * पति देवता न आन सनेही ॥
तौ प्रभु सभा बीच मिर बोलहिं * रहि जाइहि जग सुयश अमोलहिं ॥
जौ जानति तव यह गति साई * बोलि पठावति पितहिं सहाई ॥
सुनि तिय बचन हँसेउ तव शीशा * चौंकि उठे सब भालु कपीशा ॥
हँसे ठठाइ बदन सब देखत * विस्मय भयउ सकल जन देखत ॥
कोटि मेघ सम सुनि नहिं जाई * रहेउ सो बदन बहुरि अरगाई ॥
सकुच कपीशहिं तोषेउ नारिहिं * बड़ आश्चर्य भयउ वन चारिहिं ॥
कह सुग्रीव चरण शिरनाई * कारण कवन हँसा शिर साँई ॥
यह सुनि बिहँसि कहा रघुराई * सुनु सुग्रीव कुतर्क बिहाई ॥
पतिव्रत तिय जिनके गृह माहीं * यह बड़ि वात तिन्हहिं कलु नाहीं ॥
पुनि तव संशय भयउ कपीशा * तिहि कारणहिं हँसा यह शीशा ॥

दोहा-शीश पाइ प्रभु चरण गहि, बहुविधि विनय सुनाय ।
आजु के दिन रणपरिहरहु, ममहित कोशलराय ॥

वहुरि विभीषणपदाहि न मित सो * रघुवर गुण हृदय भणित सो ॥
तुम पितु सम दशकंधर भाई * यहि कुल की तोहिं लाज बड़ाई ॥
मुनि पुलस्त्य परिवार के दीपक * पायउ फल रघुवीर समीपक ॥
प्रथम मोहवश अनहित मानउ * ज्ञान भये तव गुण पहिचानउ ॥
युग युग करब अकंटक राजू * सहित सुकीरति सुकृत समाजू ॥
सुमिरत तुमहिं सुयश जन पैहैं * रघुवर चरित संग कर गैहैं ॥
सुनत विभीषण करुणा भारी * प्रगट न करत समय अनुहारी ॥
काल कर्म गति कहि ममुझाई * चली तुरत गुरु आयसु पाई ॥

दोहा-वाहिर करि कापि कटकते, फिरे विभीषण आपु ।

विसरेउ दशकंधर वयर, हृदय अधिक संतापु ॥

शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो * रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ी सो ॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामहिं * रसना रटाते निरंतर रामहिं ॥
सरित सिंधु संगम जहँ पावन * यह सुधि पाइ गये तहँ रावन ॥
मंग मँदोदरि सब रनिवासू * मनहु शोक रवि कीन्ह प्रवासू ॥
पाइ रजायसु सेवक धाये * चंदन अगर भार बहु ल्याये ॥
रची दारुमय चिता बनाई * जनु सुरलोक निसेनी लाई ॥
शिर भुज धरि बैठी करि आसन * भइ जनु योव सिद्धिको वासन ॥

दोहा-दीन्ह अग्नि दशमौलि तव, लपट गगन लगिजाइ ।

लखी न काहू जात सो, सुरपुर पहुँची धाइ ॥

सुतबध सुना दसानन जवहीं * मुरझित भयउ परेउ महि तवहीं ॥
दुखित हृदय नयन भरि आवा * जनु सिरमणि अहिराज गँवावा ॥
हा सुत संतत आज्ञा कारी * करि विलाप दशकंध पुकारी ॥
शक्र आदि जीतेहु सब देवा * सुर मुनि नाग करायहु सेवा ॥
दूसर रहा न भुजबल दापा * स्वर्ग भूमितल तपेउ प्रतापा ॥
इहि विधि करि विलाप लंकेशा * भयउ तेज हत सुनु उरगेशा ॥

मंदोदरी रुदन करि भारी * उर ताड़त बहु भाँति पुकारी ॥
नगर लोग सब व्याकुल सोचा * सकल कहहिं दमकंधर पोचा ॥
दोहा--तव दसकंठ विविध विधि, समुभाई सब नारि ।

नस्वरूप जगत सब, देखहु हृदय विचारि ॥७७॥

तिन्हहिं ग्यान उपदेसा रावन * आपुन मंद कथा सुभ पावन ॥
परउपदेश कुसल बहुतेरे * जे आचरहिं ते नर न घनरे ॥

अथ क्षेपक

तासु क्रिया करि निशिचर नाहा * भयउ शोचवश अति उरदाहा ॥
सचिव आइ सब लगे बुझावन * बादि विपाद करिय जिन रावन ॥
सुत बित नारि विविध सुख कैसे * उपजहिं घटा जाहिं उड़ि जैसे ॥
तड़ित दमक देखिय घनमाहीं * रहइ न थिरत बहुरि छिपाहीं ॥
अस जिय जानि सुनिय दशभाला * बचहि न कोउ जग आए काला ॥
अब प्रभु जतन विचारहु सोई * रिपुकर नाश कवन विधि होई ॥
बचन सुनत तेहि कछु सुख माना * काल विवश जिमि तीरथ जाना ॥

अहिरावण की कथा

दोहा--लागेउ करन विचार पुनि, बहु प्रकार दशशीश ।

समुझि हृदय अहिरावणहि, आयउ जहाँ गिरोश ॥

दंड चारि तब तहँ निशि बीती * सन्ध्या बन्दन कीन्ह मप्रीती ॥
लागेउ करन ध्यान दशशीशा * बहुरि हर्ष जारेउ कर धीशा ॥
शिव सेवक मन क्रम अनुरागी * सुनु खगेश तिहिते बड़ भागी ॥
मंत्राकर्षण जप दशभाला * अहिरावण चित डोल पता ॥
लागेउ करन सो मन अनुमाना * केहि कारण दशमुख अकुलाना ॥
निशिचरनाह भुवन वश जाके * जीत न कह न बीर कोउ ताके ॥
मन क्रम बचन आन नहिं सेवी * धरेउ ध्यान उर कामद देवी ॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहवाँ * शिव मंडप दशमुख रह जहँवा ॥
निशिचर पति कहँतेहि शिर नायउ * करगहि निज आसन बैठायउ ॥

दोहा--अहिरावण तव रावणहिं, पूछेउ कुशल सप्रीति ।

प्रथम कही तेहिसो कथा, भगिनी कीन्ह अनीति ॥

वध खरदृपण जिमि सुधि पाई * पुनि मरीच कर कथा सुनाई ॥
 कहेसि वदुरि मीता कर हरना * पवन तनय बल लंका दहना ॥
 सेतु बाँधि जिमि प्रभु चलि आयउ * बालि तनय संवाद सुनायउ ॥
 अवनि अकंपन अरु अति काया * परे समर महँ सुनु अहिराया ॥
 तात कुशल अब आइ मिरानी * कटक निशाचर सकल नसानी ॥
 कुम्भकर्ण घननादहु मारे * राम लपण ते मनुज विचारे ॥
 आनेइ बोलि तोहि निज पासा * कहु सोइ जतन होइ रिपुनासा ॥
 सुनत बचन कहि केतिक बाता * हरि लै जैहों दोनों भ्राता ॥
 लै जाऊँ जानेउ तुम तवहीं * रविसम तेज होय निशि जवहीं ॥

दोहा--कहि अस बचन प्रबोध करि, शीशनाइ बल भाषि ।

आयउ रघुपति कटक महँ, निज देविहिं उर राषि ॥

सूझन पर निशिचर अँधियारी * मर्कट भट जागहिं तहँ भारी ॥
 कहहिं जयति जय जयति कृपाला * अतिहि अगम गम नाहिं न काला ॥
 तहँ मारुत सुत रचा उपाई * निज लँगूर कर कोट बनाई ॥
 सो शोभा कलु वरणि न जाई * जनु भुजंग पति रहे तहँ छाई ॥
 अरु जिमि देखिय शैल समाना * द्वार विराजत मुख हनुमाना ॥
 देखि हृदय अहिरावण हारा * जिमि रवि उदय न तिमिर पमारा ॥
 एकौ युक्ति न मन ठहरानी * कपट भेष तव कीन्ह भवानी ॥
 वेष विभीषण कर अनुहारी * पवन तनय पहँ गै छलकारी ॥

दोहा--सहज प्रतापी पवनसुत, पुनि सुरपति पति दास ।

तिन्हहि निदरि चल रामपहँ, मूढ हृदय नहिं त्रास ॥

मरम न जानेउ कलु सुत पवना * वेष विभीषण खल धरि गवना ॥
 ठाढ़ होउ बोलेउ सुनु भ्राता * चलेउ जहाँ कृपाल जन त्राता ॥
 मैं रघुपति सन आयसु पाई * संध्या करन गयउ सुनु भाई ॥
 तेहिते तुरति चलेउ प्रभु पाहीं * भइ विलम्ब जनिराय रिसाहीं ॥
 सत्य बचन कपि निज मनमाना * सुनु खगेश भावी बलवाना ॥
 कपट चतुर गति जानि न जाई * पर मन हरै हरै धन भाई ॥
 आयसु पाइ गयउ सो तहवाँ * फणिपति प्रभु दोनों रह जहवाँ ॥

कपिपति जामवन्त नल नीला * वालितनय सुषेण बलशीला ॥
दोहा--द्विविद मयंद कपीश गण, गव गवाक्ष कपि वीर ।

सहित विभीषण अपर भट, सोये सब रणधीर ॥

तिनहिं मध्य रावण शशिराहू * एक संग सोवत फणिनाहू ॥
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा * अनुज बाम दिशि तिहिपर हाथा ॥
प्रभुकर उर पर राजत कैसे * जात रूप पर फणिपति जैसे ॥
कपि समूह जनु सागर क्षीरा * तहँ सोये मानहुँ दोउ वीरा ॥
सुभग बाण धनु धरे बनाई * लक्ष्मण सहित नियर रघुराई ॥
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा * देखि राम धन सुन्दर श्यामा ॥
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं * मुनि महेश पूजा मन लावहिं ॥
करहिं विविध जप जोग विरागी * रटहिं निरंतर दिन निशि जागी ॥
सो प्रभु तेहि देखा भरि लोचन * कृपासिंधु सबके भयमोचन ॥
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह विचारा * रावण काज करौ अनुसारा ॥
पुनि निज मायाकृत गुण आई * कवनी भाँति जाइ दोउ भाई ॥
दोहा--मोहन ते मोहे सबहिं, मन्त्रन्ह ते मुख मूँदि ।

भयउ अदृश्य उठाइ करि, प्रभुहिं चलेउ लै कूदि ॥

यहि विधि प्रभुहिं गयो लै सोई * नभ मारग प्रकाश अति होई ॥
मनमें हर्ष करै अति भारी * अहिरावण लै गा असुरारी ॥
गै निज लोक गयो क्षण माहीं * सोरु भयो तब कपि दल माहीं ॥
जागे वानर श्रीहत झारी * देखिय जिमि सरिता विनु चारी ॥
अस देखिय जिमि निशि विनु इन्दू * तेज हीन वासर जिमि चन्दू ॥
रवि विनु दिवस जीव विनु देहा * जिमि दीपक विनु देखिय गेहा ॥
एकहि एक लगे तब पूछन * कहाँ गये त्रैलोक्य विभूषण ॥
दोहा--शोधा सब मिलि कटक तिन्ह, नहिं पाये दोउ वीर ।
भै व्याकुल सब भालुकपि, जिमि जलचर विनु नीर ॥
सहित पवन सुत ऋक्षपति, दुख मनभा बहुभाँति ।
खगपति सूझन कतहुँ कछु, तम अपार तेहि राति ॥

पवन तनय पुनि कह मव पाहीं * विस्मय होइ एक मन माहीं ॥
 कोउ इक आव विभीषण वेषा * प्रभुके निकट जात हम देखा ॥
 पूछत वचन कहेसि अति नीका * कपट न जानौ निशिचर जीका ॥
 बचन सुनत बोलेउ लंकेशा * अहिरावण लै गा अवधेशा ॥
 पन्नग लोक वमतु हे सोई * मम तनु वेष अवर नहिं कोई ॥
 जिहि बल होइ वहाँ सो जाई * ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
 कहहिं भालु पति सुनु हनुमाना * तव बल तात मकल जग जाना ॥
 बेगि सो जतन विचारहु ताता * कृपामिधु आनहु दोउ भ्राता ॥
 दोहा—विलखि कहेउ कपिपति बहुरि, मारुतसुत सुनु तात ।

विनुरघुपति धिक २ जनम, पलयुग मरिस विहात ॥

तृपित होय विनु वारि दुखारी * तैसे हम सब विना खरारी ॥
 दीप अर्वाति मकल क्षण भंगी * तिमि हम सब देखिय बजरंगी ॥
 सीता सुधि जिमि औपधि आनी * तेहि प्रकार आनहु गुण खानी ॥
 यह सुनि बहुरि पवनसुत बोला * चित्त करहु थिर सेन न डोला ॥
 भुवन चारिदश तीनहु लोका * आनहुँ प्रभुहिं तजहु तुम शोका ॥
 अबते सजग रहेउ सब भाई * लरहु कालसो जो चढ़ि आई ॥
 यह कहि गर्जि चलेउ हनुमाना * प्रलय कालके मेघ समाना ॥
 चले जात इक तरु तर गयऊ * गृद्धनि गृद्ध कहत अग भयऊ ॥
 दोहा—गृद्ध नारि रहि गर्भिणी, बोली पति सो बैन ।

आनहु आमिप मनुजकर, खाउँ होइ जिय चैन ॥

तासु बचन सुनि खग अम कहेऊ * अहिरावण रामहिं लै गयऊ ॥
 देइहि बलि देविहि सो जाई * बड़े भाग्य आमिप जो पाई ॥
 कवनहु जतन देव मैं आनी * अमकहि गृद्ध नारि सनमानी ॥
 जबहिं पवनसुत यह सुधि पाई * चले हृदय सुमिरत रघुराई ॥
 तुरत पतालहि तिहि क्षण गयऊ * अहिरावण पुर प्रविशत भयऊ ॥
 द्वारपाल मकरध्वज कीशा * कपिसन डाटि कहत बहु रीशा ॥
 निदरहि मोहिं तोहिं डर नाहीं * जिमि दीपक न पतंग डेराहीं ॥
 मारुतसुत कर हौं मैं बालक * स्वामी भक्त भजन मुख कालक ॥

सोरठा--सुनत बचन हनुमान, विस्मय ह्वै बोलत भयउ ।

अरे मूढ़ अज्ञान, मेरे सुत सपने नहीं ॥

कहत बचन शठ तोहि न खोरी * काम विवश कव मति मै भोरी ॥
मम सुत होसि मूढ़ केहि काजा * इतनी कहत तोहिं नहिं लाजा ॥
किहि प्रकार ते मम सुत भयसी * निज उत्पति मोसन किन कहसी ॥
सुनत कहहिं मकरध्वज वचना * कीन्ह तात जब लंका दहना ॥
छूटि प्रस्वेद सागर महँ गयऊ * मो झप पाय तहाँ मैं भयऊ ॥
इहि प्रकार मैं तव सुत ताता * गोपहुँ नहिं निज पिता न माता ॥
अहिरावण सेवा मैं करऊँ * प्रभु आयसु इहि द्वारे रहऊँ ॥

दोहा--सत्य बचन हनुमान कहि, पुनि पूछेउ सब वात ।

आनेउ लक्ष्मण राम कहँ, कहा करत है तात ॥

कहहु तात तिहि थलको जाऊँ * जान चहौं मैं निज प्रभु ठाऊँ ॥
यह वृत्तान्त न जानहु ताता * अम मैं श्रवण सुना कळु वाता ॥
सीतापति अरु फणिपति साथ * मो लै आयऊ निशिचर नाथा ॥
करत सो अहै होम धौ आजू * देविहि बलि देइहि अहिराजू ॥
जो कळु निज श्रवणन सुनि पायउँ * तात मकल मैं तुमहिं सुनायउँ ॥
निज प्रभु काज लागि दुख सहऊँ * तुम मन मत्स्य मरम मैं कहेऊँ ॥
जान कही पै जान न देऊँ * प्रभु अज्ञा तजि अयश न लेऊँ ॥
सुनि असंपलि चलेउ हनुमाना * भयउ क्रोध मकरध्वज जाना ॥

दोहा--तेहिं मुष्टिक कपि कहँ हनेउ, पुनि मारेउ कपि ताहि ।

हनहिं परस्पर एकइक, बल समान घट नाहि ॥

एकहिं एक सकहिं नहिं टारी * पिता पुत्र दोऊ भट भारी ॥
सुतहिं लूमसन वाँधि भवानो * चलेउ बातसुत विलँव न आनी ॥
धरि लघु रूप होम गृह देखा * जीव सजीव परे नहिं लेखा ॥
तहँ देवीकर मण्डप रहई * शोणित घट बहुको कहि मकई ॥
विविध भाँति मेवा पकवाना * धरे आनि देवी अस्थाना ॥
सुमनहुँ ते करि असि हलुकाई * लेत पानि जेहि जानि न जाई ॥

दोहा--छुवत चरण देवी तुरत, धरणी रही समाइ ।

मुख पसारि ठाढ़े भयै, कपि छवि लखत डराइ ॥

जब देविहिं सो पुष्प चढायउ * विकट रूप तब कपि दिखरायउ ॥
 देवी प्रगट समुझि खल झारी * करहिं विचार हृदय अति भारी ॥
 कहहिं कि देवि प्रगट भइ आजू * वड़ भागी भा निशिचर राजू ॥
 करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं * जो चढाउ सो कपि मुख परहीं ॥
 जो जहँ रही वस्तु समुदाई * वची न कलुक सकल कपि खाई ॥
 कपि खिलारि कौतुक विस्तारा * भा चह निशिचर कुल संहारा ॥
 अहिरावण उरभा सुख कैसे * चढ़े काँध पर बलि पशु जैसे ॥
 जबही होम सिद्ध तेहि जाना * लक्ष्मण राम तुरत तहँ आना ॥
 ठाढ़ कीन्ह प्रभु कहँ तहँ आनी * निशिचर बहु आयुध धरि पानी ॥
 कोउ गदा कोऊ धनु बाणा * शक्ति शूल धरि कोउ कृपाणा ॥

दोहा--तोमर मुद्गर परशु असि, पाश परिघ अरु बेत ।

शुल भुशुगडी पटि परशु, देखत बिसरत चेत ॥

मायाबल ते सकल विलक्षण * अति विकार मय मूढ़ कुलक्षण ॥
 यहि विधि सकल वीर तहँ रहहीं * अहिरावण आज्ञा दृढ़ गहहीं ॥
 आयसु पाइ खंग तिन्ह काढ़े * मारन कहँ प्रभु पर भए ठाढ़े ॥
 कोउ कह राजनीति अनुसरहू * भरि त्रय दण्ड विलंब अव करहू ॥
 पुनि अस वचन मूढ़ मति कहहीं * सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं ॥
 नाहित काल आइ नियराना * निशा स्वप्न सम दोउ जन प्राना ॥
 बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी * सकुच लगे सो कहत भवानी ॥

दोहा--फणिपति चितवत रामतन, राम चितव अहिराज ।

प्रभुकर कौतुक कहिय किमि, सुनो दशा खगराज ॥

बिहँमि कीन्ह प्रभु हृदय विचारा * जपै सकल जग नाम हमारा ॥
 जाना देवि रूप हनुमाना * बिहँसि कहा तब राम सुजाना ॥
 काल कौर तुम सुमिरहु रक्षक * भई तुम्हारि देवि तुम भक्षक ॥
 सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ * घन समान कपि गर्जत भयऊ ॥
 निशिचर मकल त्रसित भें भारी * कहहिं वचन भय हृदय विचारी ॥

अहिरावण भल कीन्ह न काजू * आने कपट वेष सुर राजू ॥
 तेहिते देवि क्रुद्ध भइ आजू * अब भा सबको मरण समाजू ॥
 संभ्रम बश तव निशिचर झारी * बहुरि कीश गजेंउ अति भारी ॥
 दोहा--प्रगट रूप धरि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर ।

अति भय त्रसित निशाचर, सुनहु उमा मतिधीर ॥

तेद्विक्षण कपि लीन्हे दोउ भाई * धुनत तूल निशिचर समुदाई ॥
 स्त्रीनि कृपाण लीन हनुमाना * काटत भुज शिर कृपी समाना ॥
 खण्ड खण्ड तव खल दल कीन्हा * गहिपद डारि अनल महँ दीन्हा ॥
 करि लंगूर कोट कपिराई * तेहि महँ धरि कपि भागि न जाई ॥
 यहि विधि सब निशिचर मंहारे * अहिरावण लखि वचन उचारे ॥
 रे कपि ढीठ त्राम नहिं तोहीं * अहिरावण तैं जान न मोहीं ॥
 जम्बुमाल कहँ जिमि तैं मारा * अरु रावण सुत हतेउ विचारा ॥
 दोहा--कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपि वचन प्रमान ।

अस कहि खड्गप्रहार किय, कपितनु बज समान ॥

लै असि ताहि पवनसुत मारा * कोटि शीश पावक महँ डारा ॥
 आहुति पूर्ण दीन्ह तव कीशा * लै पुनि चलेउ लषन जगदीशा ॥
 मकरध्वज विनती तव कीन्हा * बन्धन छोरि राज्य तेहि दीन्हा ॥
 इहाँ राज्य भोगहु तुम ताना * भजहु सदा मम प्रभु दोउ भाता ॥
 असकहि कपि निजदल सो आवा * हपेंउ कटक सवनि सुख पावा ॥
 मृतक शरीर प्राण जिमि आवहिं * गइ मणि पाइ फणी सुख पावहिं ॥
 बिल्लुरि अलभ्य मिले जनु आई * तिमि हपें सब लखि दोउ भाई ॥
 मिलेउ कपीश चरण धरि माथा * पुनि पद गहे निशाचर नाथा ॥
 दोहा--जाम्बवन्त अङ्गद सहित, मिले भालु अरु कीश ।

सनमाने कहि वचन टिय, लषन कौशलाधीश ॥

बहुरि सर्वाहिं भेंटेउ हनुमाना * कहहिं तात तुम राखे प्राणा ॥
 देवन सुमन वृष्टि तव कीन्हीं * प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्हीं ॥
 अनुज सहित हरषित रघुवीरा * कहेउ वचन सुनु तनय समीरा ॥
 तव समान नहिं कोउ हितकारी * सुर मुनि सिद्ध मनुज तनुधारी ॥

यश तुम्हार त्रिभुवन महँ भयऊ ॥ सुनि प्रभु वचन चरण कपि नयऊ ॥
 तैसे सब प्रताप तव नाथा ॥ सुनि अस मिले कपिहिं रघुनाथा ॥
 कटक सहित हर्षे दोउ भाई ॥ तेहि अवसर सुख किमि कहि जाई ॥

छंद-कहिजाइ सुख किमि तेहि समयकर सुनहु गिरिजा चितधरे ।

रघुवीर स्व अवलोकि हर्षत आरती सुर गण करे ॥

अति प्रेममों मारुत सुवन यश गाइ विबुध न अस कहा ।

नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मंगल महा ॥

दोहा--करि बहुविधि हरि आरतो, वाणी सत्य सुनाय ।

रामचरण अनुरागेउ, अपर सुमन भरिलाय ॥

देव निडर प्रभु गुण गण गावहिं ॥ आरत हरकहँ विनय सुनावहिं ॥

विबुध विनय रघुपति सुनि काना ॥ कह प्रभु सत्य सिन्धु भगवाना ॥

चतुरानन वर दीन्ह अपेला ॥ तेहि कारण यह वाढ्यो खेला ॥

नाहित लपण एक पलमाहीं ॥ राखत यातुधान कुलनाहीं ॥

अजहुँ होय रण कौतुक भारी ॥ निरखहु तुम सब शोच विचारी ॥

अब जो रहेउ निशाचर शंपा ॥ भट महँ जासु भुजा कर रेषा ॥

तेहि रण महँ हम हतहुँ प्रचारी ॥ विनु श्रम सबसों कहत खरारी ॥

शम्भु कृपा अव भंशय नाहीं ॥ सुनि सुर अति हर्षे मनमाहीं ॥

दोहा--सत्यवचन सुनि रामके, आनन्दित सुर व्यूह ।

चले कहति जय जयति प्रभु, वर्षे सुमन समूह ॥

यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा ॥ खगपति रामकृपा में गावा ॥

अब हिय हरषि सुनहु द्विज राई ॥ मानस कहहुँ सुमिरि रघुराई ॥

याज्ञवल्क्य पद बन्दि सप्रीती ॥ भरद्वाज बोले शुचि नीती ॥

यह चरित्र अति रुचिर सुहावा ॥ सुनि मम नाथ परम सुख पावा ॥

अहिरावण वधान्त भगवाना ॥ चरित किये सो करहु बखाना ॥

सुनि मुनि विनय ऋषय पुलकाई ॥ बोले हृदय सुमिरि गिरिराई ॥

प्रश्न तुम्हार तात अतिपावन ॥ सहज सुभग सज्जन मन भावन ॥

मानस हरि चरित्र सुठि नीका ॥ सुनत करत जो कोउ मन फीका ॥

दोहा--सोइ जगबंचक सुनहु मुनि, जेहि मानस न सुहाय ।

भवसागर महँ भ्रमतसो, अमित कल्प चलि जाय ॥

मानस सुन तन मनहिं अघाहीं * तासम धन्य अवर कोउ नाही ॥
 धन्य धन्य तुम सन कोउ आना * ललितचरित अतिसुनहु सुजाना ॥
 राम लषन दल सहित विराजे * जयति राम कहि कपि गणगाजे ॥
 उहाँ दशानन सब सुधि पाई * दूत सँदेश दीन्ह सब जाई ॥
 अहिरावण कर बध सुनि काना * भयउ तेजहत अति दुख माना ॥

नारान्तक की कथा

बचन बत्रसम लागेउ ताहीं * संभ्रम मूर्च्छि परेउ महिमाहीं ॥
 मुख सुखान लोचन जल बहई * बचन न आव शीश धुनि रहई ॥

दोहा--मयतनया तब आइ पुनि, बहु प्रकार समुभाइ ।

मान न मूरख कालवश, परम क्रोध कहँ पाइ ॥

नारि बचन सुनि तेहि रिसिवादी * उठि बैठेउ धरि धीरज गादी ॥
 सिन्धुर नाद नाम बलवाना * बृद्ध ज्ञानमय परम सुजाना ॥
 सदा विभीषण कर सँग ठयऊ * कबहुँ दशमुख सभा न गयऊ ॥
 आवा सो भल अवसर पाई * कहेसि नीति रावणहिं बुभाई ॥
 ज्ञान कथा दशमुख न सुहानी * तब बहिराइ वात कह आनी ॥
 करिवर नाद हृदय अस गुनेऊ * प्रभु दुहु ताग हृदय पट बुनेऊ ॥
 अब यहि कहौ सो सहज उपाई * जेहि यहि मूल समूल नसाई ॥

दोहा--यह विचार बोलेउ सचिव, सुनहु दनुजकुल राउ ।

धोर धरहु संसय विगत, कहहुँ सो करिय उपाउ ॥

अक्षादिकन सुनत बल दूना * कस सुरारि मन मानहु ऊना ॥
 सचिव बचन सुनि दशमुख कहई * अब हमरे कुल को भट अहई ॥
 अपने मन महँ करहु विचारा * है नारान्तक तनय तुम्हारा ॥
 मूल अभुक्त माहिं भा जोई * दियो वहाइ मरा नहि सोई ॥
 शम्भु प्रसाद ताँहि कछु भयऊ * पुर विहावल नृपती दयऊ ॥
 कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ * राजा प्रजा भेद नहिं काऊ ॥
 दूत पठाइ बुलावहु ताहीं * जीतिहि सो रिपु रणके भाहीं ॥

दनुज अधीश चतुरचर पठवौ * धरहु धीर चित चिन्ता घटवौ ॥

दोहा--तासु मन्त्र सुनिदसवदन, हृदय प्रमोद अमान ।

धूमकेतु कहँ बोलि ढिग, समुभायउ सनमान ॥

धूमकेतु तुम परम सयाना * लै मम पाती करहु पयाना ॥

वसत जहाँ नारान्तक राजा * तहाँ न तात अवरकर काजा ॥

अवसर पाइ हेतु समुभाई * सर्पादि ताहि लै आनौ भाई ॥

आयसु पाइ चार तहँ गवना * यहसुनि विहरि कह्यो अहिदवना ॥

काक नाथ यह गाथ सुहाई * मोरुन तात कहहु समुझाई ॥

नारान्तक उत्पत्ति यथाविधि * पुर विहवल पहुँचा कवर्नीमिधि ॥

सुमिरि काकपति उर अवधेशा * मन प्रमन्न कर कह काकेशा ॥

दोहा--नख चौथुन वसु ऊन तहँ, सप्त अकास मिलाइ ।

इतने निशिचर एक दिन, भे रावण पुर आइ ॥

पुर महँ उपजे खल इक साथी * तव सुनिहर्षा निशिचर नाथा ॥

निज गुरु बोलि चरण शिरनाई * बूझा मुदित सो कलश धराई ॥

भृगुनन्दन तव तेहिसन कहेऊ * आजु बाल सब मूलन भयऊ ॥

सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं * भये आजु जे तव पुर माहीं ॥

वे सुत सब निज निज पितु घाती * मुख देखत सुन सुर आराती ॥

घर राखे धन सहित विनाशा * होइ अवशि नहिँ उबरन आशा ॥

शुक बचन सुनि डरे निशाचर * कह करिये अति बाद परस्पर ॥

निश्चय कीन्ह प्रसव शिशु आजू * सौंपिय सिन्धुहि अवर न काजू ॥

दोहा--सपद करहु सब काज यह लावहु बाल बटोर ।

राखे होई हानि अति, कह दशवदन बहोर ॥

सेवक दशमुख आयसु पाई * धाये तुरत चरण शिर नाई ॥

रावण आयसु नगर पुकारी * सुनहु सकल पुरनर अरुनारी ॥

आजु अभुक्त मूल भये बालक * डारहु सागर सब कुलघालक ॥

बोरे सबनि बाल इकठाई * भावी वश मधुमाखी नाई ॥

पाय अधार वृक्ष बट बोरा * पीवन लगे छीर चहुँ ओरा ॥

पीवत क्षीर अब्द भर साती * पुष्ट भये खल निशिचर जाती ॥

पुनि सब एकसङ्ग तहँ जाई * सुरसरि सङ्गम भा तेहि ठाई ॥
तहँ शिव मंदिर परम सुहावा * सवनि विलोकि मुदित शिरनावा ॥

छन्द—शिरनाइ मुदित विलोकि शिव मन्दिर सुहावन पावनं ।

कल्लु दिन रहे तहँ सकल पुनि उठि चले सुनि अहि दावनं ॥

रावण पुरीते दिशाप्राची कोश शत रस चलि गये ।

बैठे जलधि महँ पाइ थल वर शम्भु चरणन चित दिये ॥

दोहा--जानत नहिं उत्पत्ति निज, छन महँ करत विचार ।

गे तेहि ढिग जाकर विदित, रविते छठवीं बार ॥

हरि अरिगुरु निजशिष्य न चीन्हा * करत प्रणामसु आशिष दीन्हा ॥

कहि निज नाम सवनि समुझावा * कुलगुरु जाना विनय सुनावा ॥

निज उतपति बूझी शिरनाई * भृगुन्दन तिन्ह सकल सुनाई ॥

सुनत अपन वृत्तान्त लजाने * लखि रुख भृगुनायक सनमान ॥

करि प्रतोष मन्त्र गुरु दीन्हा * शिक्षा पाइ ममन तिन कीन्हा ॥

ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी * भे विरंचि पद सब अनुरागी ॥

निराहार बैठे इक आसन * वर्ष सहम तप किय उरगासन ॥

श्वासधार कृत वर्ष हजार * रहे ऊर्ध्वमुख दिना अहारा ॥

दोहा--एक पाद पुहुमी दये, अपर अंग अनसाय ।

सबल पुष्ट तनु मन हरप, सपनेहु भूख न प्यास ॥

तप अति उग्र विचार विधाता * तिन ढिग गमने मुख मुमकाता ॥

हंसारूढ कमण्डलु हाथे * श्वेत मुकुट शुचि चारिउ माथे ॥

आनन चारि नयन वसु नीके * चारिउ भाल भस्म शुभ टीके ॥

उपमा मय प्रभु सब जग अयना * भाष्यो दया मदन वर वयना ॥

माँगहु वर जो सब मन भावा * सुनउ सवनि विधिपद शिरनावा ॥

नाथ चहत हम यह वरदाना * हमहिं न कोउ जीते मयदाना ॥

एवमस्तु विधि कहेउ विचारी * आन पाणि नहिं मृत्यु तुम्हारी ॥

हरि सुत है तुम्हार गुरु भाई * तेहिसन किहेउ न कवहुँ लराई ॥

दोहा--जो तेहिसन करिहौ समर, मारिहौ वचन प्रमान ।

एकहि कहँ वरदान यह, दै कह कृपानिधान ॥

दियउ नरान्तक कहँ बरदाना * रहे अपर जे धरि उर ध्याना ॥
 तिनसन बरं ब्रूहि विधि कहेऊ * सुनत प्रमोद सबनि उर लहेऊ ॥
 सुनि विधिगिरा सबनि कह स्वामी * देहु एक बर अन्तर्यामी ॥
 देवासुर संग्रामहि माहा * जीतहिं हम यह बर सुरनाहा ॥
 असकहि रहे दनुज शिर नाई * तिनसन कहेउ विरंचि बुझाई ॥
 तुम अजीत सब मन सब भाँती * वानर भालु त्यागि दुइ जाती ॥
 विधिते लहिवर तिन सुख वाढ़ा * लागे करन बहुरि तप गाढ़ा ॥
 दोहा--गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तर नाम ।

जोरि युगलकर एक पद, निशिदिन आठो याम ॥

विनु प्रयास ठाढ़े सब भाई * क्षुधा तृषा निद्रा बिसराई ॥
 गुण सहस्र सम्वत सब ऐसे * गये बीति प्रथमहिं तप जैसे ॥
 सबन शीश पुनि अबनी दीन्हा * उभय चरण ऊरध कहँ कीन्हा ॥
 जोरे कर निरोध कर श्वासा * जपहिं मन्त्र शंकर वर आसा ॥
 हरि इच्छा बल हृदय विचारी * निरखि चले मुनि जपत पुरारी ॥
 अयुत अब्द बीते खगनायक * भे प्रसन्न शिव जनसुखदायक ॥
 चढ़े बरद हिमसुता समेता * आये तिन तट कृपानिकेता ॥
 दोहा--बोले तिनहिं प्रशंसि शिव, माँगहु वर मन भाव ।

नारान्तक करि दण्डवत, बोला सुन सुरराव ॥

मैं तप किहेउँ दरश तव लागी * नाथ दीन जन चित अनुरागी ॥
 अब माँगत आवत मोहिं लाजा * ठाढ़ रहा कहि निशिचर राजा ॥
 माँगु सकुच तजिअस हर कहेऊ * नारान्तक तव माँगत भयऊ ॥
 मोहिं विभव अस देहु गोसाँई * भूप प्रजा नहिं परहु लखाई ॥
 पुर अनयास बसहिं मम नाथा * यह कहि रहा जोरि युग हाथा ॥
 एवमस्तुं कहि हरि सुर ईशा * गवने भवन सहित वागीशा ॥
 शिव प्रसाद नारान्तक पावा * अन्तरिक्ष पुर मपदि बसावा ॥
 पुर विहावल की रुचिराई * कहत कञ्जुक अब तुम सन गाई ॥
 दोहा--ऋतु रवि दूने कोटि सो, भवन बसे इकठोर ।

जात रूप मय नग जटित, अति शोभित चहुँओर ॥

योजन ढाई शत चकलाई * चौसठ कोस उतंग सुहाई ॥
 दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा * विस्मय विश्वकर्म मन घेरा ॥
 चारि दुवार कुलिश पट रूरे * गड़ भीतर चौहट निधि पूरे ॥
 वणिक पद्म धन तुच्छ बखाना * वन उपवन सरिता सर नाना ॥
 वसत प्रजा पुर सघन अपारा * नारान्तक गढ़ मध्य सँभारा ॥
 षोडश कोश कोट चहुँ ओरा * मणि माणिक लागे नहिं थोरा ॥
 हय गज रथ खच्चर समुदाई * कहि न जाइ खगमृग विपुलाई ॥
 कोटि बहत्तर एकै साथ * विद्या पढ़न लगे खग नाथा ॥
 दोहा--हरि प्रेरित तेहि कालमहँ, दधिबल पहुँचा आय ।

पुर बिहवावल निरखि सो, कछुदिन रहा लुभाय ॥

भावी बश निशिचर सँग कीशा * वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा ॥
 गुरु इकवार कहेउ रिसियाई * हतिहसि तैं आपन गुरु भाई ॥
 त्रिनुअघ सुनि दधिबल गुरुशापा * बिदा माँगि गवनउ करिदापा ॥
 मारग मिले देवऋषि तेही * गहे सुकण्ठ सुवन पग नेही ॥
 लखि असीष दै ब्रूभा तेही * दधिबल कवन काज गए जेही ॥
 तव नारान्तक पुर प्रभुताई * दधिबल नारद मुनिहिं सुनाई ॥
 सुनी निशाचर संपति भारी * रहे ब्रह्मसुत हृदय बिचारी ॥
 क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना * वार वार सुमिरे भगवाना ॥

दोहा--दधिबल ते नारद कहेउ, सुनहु तात चितलाइ ।

तनुधरि जेहि हरिभक्ति नहिं, जन्मवादि जग जाइ ॥

यह विचार भजु रामहिं ताता * उपजेउ सुनत ज्ञान मुनिवाता ॥
 ऋषिपद परसि आशिषा पाई * कपि पति सुत गवन हर्षाई ॥
 सपदि कीश तव पहुँचा जहँवाँ * पयनिधि मध्य रुचिरगिरि तहँवाँ ॥
 धवलागिरि तेहि नाम सुहावा * सुभग देखि कपिवर मन भावा ॥
 गौरि गिरीश सुमिरि गणराई * कीन्ह निवास बैठ हरपाई ॥
 नारद ताहि देइ उपदेशा * गये विरंचिहिं धाम खगेशा ॥
 उत दशमुख सुत विद्यापाई * जहाँ तहाँ की विविध तराई ॥
 बिन्दु नाम इक निशिचर आहा * सो खल रहा वितल थलगाहा ॥

सोरठा--अति रणधोर जुभार, चढ़े शक्रपर वलि विपुल ।

कीन्हैउ समर अपार, शब्द एक श्रुतिसन्त कह ॥

सप्तकोटि निशिचर संग ताके * असित मेरु समखल भट वाँके ॥

सुनासीर काँपउ इक वारा * सब कहँ समर मध्य संहारा ॥

भाजि विन्दु केवल गृह गयऊ * तासुनारि निशिचर सुख दयऊ ॥

सब निशि भोग करा खल पापी * उपजे बहु वालक पर तापी ॥

सप्तकोटि सुत नाना नामा * उदर वक्रमव अति बलधामा ॥

कोटि बहत्तर तनया जाके * लाजहिँ मृगलोचन लखि ताके ॥

तिन महँ विन्दुमती इक सुन्दरि * नभवारिनि रतिरूप निरंतरि ॥

निरखि विन्दु निज मन अनुमाना * नहिँ नारान्तक सम कोउ आना ॥

दोहा--यह विचारि चित विन्दु तव, नारान्तकहि बुलाइ ।

विन्दुमती आदिक सुता, सुन्दर साज सजाइ ॥

सकल सुता इक संग विवाही * यथायोग्य जेहि कहँ जसचाही ॥

नारान्तक सब सेन समेता * करिविवाह फिरि गयउ निकेता ॥

पुर विहवात्रल कोन्ह वसेरा * प्रजा सहित सुख करत घनेरा ॥

जो तिय चाहिय विबुध गृह भाई * सो भावी वश निशिचर पाई ॥

नारि पतिव्रता जेहि घर माहीं * तेहि प्रताप निज अमर डराहीं ॥

विन्दुमती विद्या सम ताता * बुधजन सभा चरित विख्याता ॥

नारान्तक उत्पति में गात्रा * मुन खगेश पुनि चरित सुहावा ॥

पुनि पुनि हरिहरपद शिर नाई * गुरुपतेन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई ॥

दोहा--चारन दशमुख को तरत, भगचलि पहुँचो जाय ।

ग्रामान्तर जोजन युगल, ठाढ़ भयउ हरषाय ॥

तेहि मारुत दिशि कानन भारी * पर्ण लेत देखेउ तहँ वारी ॥

सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा * बूकेसि ताहि धोर धरि गाढ़ा ॥

कवन रीति यहि पुर महँ भाई * तरुपर चढ़त भूपसुत आई ॥

चार बचन सुनि सो मुसुकाना * कवन नगर तुम वसत अयाना ॥

नारान्तक नृप कै यह बारी * तेहिकर सेवक मैं लघुचारी ॥

धूपकेतु तेहि उतर न दीन्हा * कञ्जुडरिपुनि निज मारग लीन्हा ॥

लिये कनक घट सुखमा पूरी * वारि लेन आई तिय रूरी ॥

देखि भयउ तेहि संशय भारी * बूझा सत्य कहहु सुकुमारी ॥

दोहा--तुम्हरे पुर कहँ चेरि नहिं, रानो कहहु स्वभाव ।

आइउ तुम जल भरन कहँ, बोलेउ त्याग डराव ॥

दूत बचन सुनि निशिचर चेरी * बोली हँमिकरि एकदि चेरी ॥

नारान्तक दासिन की दासी * हम ताकी दासी विश्वासी ॥

सदा भएँ यहि सागर पानी * यह आवहिं केहि कारण रानी ॥

कहिहउ और काहु असवाता * पैहहु मार मुष्टिका लाता ॥

अमकहि गवनी लै जल नारी * तिन मँग धूमकेतु पग धारी ॥

गढ़ भीतर कीन्हेमि पैसारी * निरखे विपुल कूप सर चारी ॥

नाना गजरथ खच्चर घोरा * फिरत थिलोकत पुर चहुँ ओरा ॥

अन्तर गढ़ तेहि चारि दुवारा * तहाँ न चर पावहिं पैसारा ॥

छन्द-पावत नहीं पैसार चरगति द्वार लगि फिरि आयऊ ।

यहि भाँति रावण दूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ ॥

मनमहँ विसूरत डाढ़ चौहट मध्य सो जव रहिगयो ।

निशिचर निकंदन होन लगि विधिताहि इक अवसर दयो ॥

सोरठा--गमने भूपति द्वार, नृत्य करन इक कौतुकी ।

लीन्ह धार तेहि सार, गढ़ इमि कीन्ह प्रवेश चर ॥

बैठेउ सभा नरान्तक जाई * कोटि बहतर संयुत भाई ॥

व्योम तीनरस गुणवसु एका * अंकराति लिखि गुणा विवेका ॥

वन्दीजन नट कौतुक करहीं * प्रतिदिन कवि कोविद उचरहीं ॥

रावणदूत सभा सो देखा * मन महँ चकृत भयो विशेषा ॥

तव चारण मन अस अनुमाना * कोटि बहतर रूप न आना ॥

भूषण बसन सुआसन जोहा * देखि सुखद चारण मन मोहा ॥

याम दिवस गत अवसर पावा * नारान्तक कहँ शीश नवावा ॥

दीन्ह पत्रिका पद शिर नाई * कुशल तासु बूझा हरपाई ॥

दोहा--नारान्तक निज कुशल कहि, बूझा दशमुख हेतु ।

समाचार गढ़ लंककर, बरणेउ दूत सचेतु ॥

चर भाषित नारान्तक सुनेऊ * क्षणकमाहिनिज कारण गुनेऊ ॥
 पुनि पत्री निशिचर पति बाँची * मानी चार वात सब साँची ॥
 उठेउ सभाते हृदय रिसाई * गा निज भवन शोच सरसाई ॥
 बिन्दुमती कहँ बाँचि सुनाई * पितुपर भीर पत्रिका आई ॥
 समाचार सुनि कहँ तेइ नारी * तुम जनि करहु रामसन रारी ॥
 गहहु चरण पिय अकसर जाई * रमन सफल करि विनय सुनाई ॥
 माँगि भक्तिवर प्रेम दृढ़ाई * निर्भय राज्य करहु गृह आई ॥
 नारि बचन तेहि मनहि न भावा * तब उठि कोटद्वार खल आवा ॥
 दोहा--कहत बजाव निसान घन, सजहु सेन चतुरंग ।

जन्मभूमि जावा चहुँ, पितु चारन के संग ॥

आयसु दीन्ह नरान्तक राजा * लगे निशाचर सजन समाजा ॥
 अमित बाजि गज उष्टर नाना * रथ खच्चर खेचर बहु याना ॥
 नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी * निशिचर अनी न जाइ बखानी ॥
 जय सब संयुत साज सजाई * विविध निसान हने हर्षाई ॥
 कन्त जात निश्चय जिय जानी * बिन्दुमती निज चित अनुमानी ॥
 राम विरोध न यहि कल्याना * महुँ संग अब करहुँ पयाना ॥
 भूपन वसन सुअंग बनाई * कन्त चरण गहि विनय सुनाई ॥
 सासु ससुर दर्शन हित नाथा * हमहुँ चलव प्राणपति साथी ॥
 दोहा--दशमुख सुतसुनितिय बचन, हृदयपरम सुखमानि ।

कहेउ चलहु सबसखिन सह, प्रमुदित छाडि गलानि ॥

सुनि पतिवचन नारि हर्षानी * चली संग लै सखी सयानी ॥
 लै दल नारान्तक पग धारा * अमित सेनको कहि सकपारा ॥
 बुधजन कहत सुनहु खग राजा * अयुत सतावन बाजत बाजा ॥
 धूम्रकेतु कहँ दिग संग लीन्हें * अति आतुर गमनारिस कीन्हें ॥
 चलत शकुन मग ताहि न होई * गनइ न मृत्यु विवश शठ सोई ॥
 तासु पयान जानि दिगपाला * जिय महुँ संशय करत विशाला ॥
 कालकूर्म अहिपति अति डरहीं * पुनिपुनि रामचरण चित धरहीं ॥
 समुझि राम बल संशय त्यागी * सुर दिगेश प्रभुपद अनुरागी ॥

दोहा--नारान्तक लंका तुरत, दल समेत नियरान ।

दिगयोजन दल रहेउ जब, सुनु मुनीश सज्ञान ॥

इहाँ कृपालु रमेश खरारी * असित जलदसम सेन निहारी ॥
 प्रभु सर्वज्ञ नीति हित सेतू * सचिव बोलि कह रघुकुलकेतू ॥
 सखा बिलोकहु दक्षिण ओरा * गर्जत घन आवत नहिं थोरा ॥
 उमा राम सब अन्तरयामी * चरित हेतु बूझा अस स्वामी ॥
 राम बचन सुनि दशमुख भ्राता * कह हँसि गहि प्रभुपद जलजाता ॥
 देव देव नहिं दल जल बाहा * अहहि नरान्तक निशिचर नाहा ॥
 बिहवावलपुर बसत गुसाई * पठवा तेहि दशकन्ध बुलाई ॥
 आवत धूप्रकेतु चर मंगा * करत कुलाहल नाद उत्तंगा ॥

दोहा--तेहि संग गुणी अनेक प्रभु, गावत हनत निशान ।

सेन संग चतुरंग खल, डोलत विविध दिशान ॥

यह प्रभाव तेहि सुनि भगवाना * विहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना ॥
 पाइ राम रुख पवनकुमारा * उठे हरपि हिय गरजि प्रचारा ॥
 सहित लषण प्रभु पद शिस्नाई * धाये कहि जय जय रघुराई ॥
 वात जात निशिचर समुदाई * देखि सपदि ढिग पहुँचे जाई ॥
 कटकटाइ गर्जेउ अति भारी * देखेउ इमि आवत वनचारी ॥
 बूझेउ दूतहिं निशिचर त्राता * यह आवत धावत को भ्राता ॥
 स्वर्ण शैल बिकराल शरीरा * गर्जत प्रलय जलद सम वीरा ॥
 तव नारान्तक सन कह दूता * यहै पवन सुत बली अकूता ॥

दोहा--सिंधु लाँघि लंका दहेसि, पुनि हति अक्षयकुमार ।

कालनेमि कह मारि मग, लावा मेरु उपार ॥

पुनि अहिरावण सह परिवारा * पैठि पताल सदन संहारा ॥
 लै आवा तापस दोउ भाई * आवत अब तव ढिग सोइ धाई ॥
 यहि कर भुज बल अहै अपारा * सुनि रिसान दशकण्ठकुमारा ॥
 चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना * तजन न पाव गहेउ हनुमाना ॥
 सो शर धनुष तोरि कपि डारा * पुनि रिमाय उर मुष्टिक मारा ॥
 परा दशानन सुत महि कैसे * बज्र रसातल गे गिरि जैसे ॥

पवन पूत बल लूम पसारा * कोटिन रथ गहि तापर डारा ॥
रथ सारथी चूर्ण सम भयऊ * विधिवश तेहिकर प्राण न गयऊ ॥

दोहा--एकदण्ड अति विकल खल, रह भूतल धुनि माथ ।

पुनि शठ उठा सँभार तनु, धायल धनु धरि हाथ ॥

छाँड़ैमि अगणित शायक कोपी * क्षणइक कीश कटक गा तोपी ॥
राम प्रताप प्रभंजन जाया * करगहि अरिशर तोरि वहाया ॥
देखि पवनसुत की प्रभुताई * वर्षत सुमन त्रिबुध झरि लाई ॥
जय जय पिंगलाक्ष सुर भाषा * सुनि दमकन्धु तनय मन माषा ॥
नारान्तक अति हृदय रिमाई * कपि तट पहुँचा आतुर धाई ॥
कह खल कीश जो कछु बल धरहू * मोमन मल्लयुद्ध रण करहू ॥
गावहि त्रिबुध तोरि भुज जोरा * निज उरसहु इक मुष्टिक मोरा ॥
लागत ठाढ़ रहे जो वानर * तौ जानहुँ तव बल भुज आगर ॥
सोरठा--हरि सुनि ताकर बात, रामदूत रिसि रोकि उर ।

अति सक्रोप मुसकात, क्षणक ठाढ़ सन्मुख रहेउ ॥

तव तेहि कपि कहँ मुष्टिक मारा * भयउ तड़ित सम शब्द अपारा ॥
टरा न तहँ ते पग हनुमाना * हृदय न निशिचर नेकु लजाना ॥
दुइ मुष्टिक तेहि फेरि चलावा * तव मारुतसुत कोप बढ़ावा ॥
किलकिलाय लंगूर लंपटा * डारि भूमि तिन दीन्ह चपेट ॥
विकल ताहि करि कपि अति गाजे * भे व्याकुल निशिचर बहु भाजे ॥
कोटिन निशिचर कपिकर गहहीं * रामदूत कर कौतुक अहहीं ॥
मर्दि मर्दि बहु वारिधि डारे * देखि देव जय जयति पुकारे ॥
एक दंड गत निशिचर जागा * बहु विधि समर करन सो लागे ॥

छन्द--लागेउ करन पुनि समर बहु विधि निज सुभट बहु फेरि कै ।

खल कोटि कोटि प्रचण्ड नायक कपिहि रणमहँ घेरि कै ॥

रणरंग रंजति वीर मारुत पूत पुनि पुनि गर्जही ।

गहि गहि त्रिपुल दनुजहि पञ्जारत उर विदारत तर्जही ॥

दोहा-सघन वाहिनी जलजवन, जिमि करि कृत उतपात ।

रिपु न हनत तिमि वायुसुत, विनुश्रम प्रमुदित गात ॥

करत समर आयउ तेहि ठामा ॥ जहँ नित होत रहा मंग्रामा ॥
 लरत अकेल तहाँ हनुमाना ॥ धायउ बालितनय बलवाना ॥
 ता पीछे कपि चम् अपारा ॥ चले कहत जय कृपा अगारा ॥
 लीन्हें गिरिवर तरु पापाना ॥ जहँ तहँ करन लगै मैदाना ॥
 अंगद आइ पवनसुत पाहाँ ॥ कहि जय रघुवर सन द्विज नाहाँ ॥
 दोऊ भट इक मँग करि हूहा ॥ हतन लगै अरि सेन समूहा ॥
 देखत भालु कीश कृत भारी ॥ भागि चले निशिचर भय भारी ॥
 देखि अनी निज त्रसित बहूता ॥ भा अति कुपित दशानन पूता ॥
 छन्द-अति कुपित भा दशमुख सुवन निज भटन शपथ दिवाइके ।
 फेरेउ सवनि करि कोप बोला जात कहहुँ पराइके ॥
 विधि दीन विविध अहार कपिदल खात कस न अघाइके ।
 विनु भालु कपि महि करहु पुनि हठ धरहु तापस धाइके ॥

दोहा-सुनि नारान्तक सरूप वच, रजनीचर समुदाय ।

लागँ लरन सकोप सब, माया कपट कुभाय ॥

माया तिमिर पसार अपारा ॥ अस्र शस्त्र दुहुभाँति प्रहारा ॥
 शक्ति शूलवर विशिख कराला ॥ डारहिँ रज तरु शैल विशाला ॥
 गिरत ऋक्ष कपि लागत शायक ॥ उठहिँ बहुरि कहि जय रघुनायक ॥
 निज दल विकल बिलोकि खरारी ॥ सत्य सिन्धु इक शर मंचारी ॥
 रिपुशर काटि तिमिर कर दूरी ॥ प्रभु शर हते निशाचर भूरी ॥
 हरि निषंग महँ पुनि मो तीरा ॥ प्रविसेउ आइ सुनहु मुनि धीरा ॥
 निरखि प्रकाश भालु अरु कीशा ॥ गहि गिरि तरु कहि जय जगदीशा ॥
 निशिचर अनी मध्य गे जवहीं ॥ दिये डारि गिरि रज तरु तवहीं ॥
 दोहा-मरे तमोचर कोटिपट, जानि निशा परिवेश ।

दलयुत अंगद पवनसुत, चले जहाँ अवधेश ॥

अंगद हनुमदादि कपि भालू ॥ आयं जहँ रघुवीर कृपालू ॥
 प्रभुहिँ बिलोकि चरण शिरधरे ॥ भे श्रम रहित सकल सुख भरे ॥
 अति आदर प्रभु किय सन्माना ॥ सब कहँ बैठन कहँ भगवाना ॥

पुनि रजाइ लै थलहिं सिधाये * छवि वारिधि प्रभुपद शिरनाये ॥
 अंगद हनुमत निकट निवासी * रामचरण सुषमा गुणरासी ॥
 दोउ भट कर परसत प्रभु पाऊ * देखि सुरन मनभा अति चाऊ ॥
 हमहुँ होत जग कीश स्वरूपा * पदगहि नित रहत नर भूपा ॥
 हरि न सिहाहिं सुमन झरलाये * निज २ आश्रम अमर सिधाये ॥
 दोहा--बन्धु सचिव सेना सहित, शोभित श्री भगवान ।

तुलसिदास ते धन्य नर, जे यह ध्यान भुलान ॥

उत नारान्तक सेन समेता * गयउ जहाँ दशकन्ध निकेता ॥
 सुतहिं सुरारि मिला पुलकाई * कुशल बूझि बैठेउ हर्षाई ॥
 देखि नरान्तक कै समुदाई * दशमुख शठ सब शोच दुराई ॥
 जेहिविधि हरि लावा जगमाता * ताहि आदि कृत कृत विख्याता ॥
 कुम्भकर्ण घननाद निपाता * कहि बिलखा अहिरावण घाता ॥
 पितु मनमलिन नरान्तक देखा * बोला खल उर गर्व विशेषा ॥
 तजहु सकल संशय विबुधारी * करिहहुँ प्रात समर अति भारी ॥
 चमूकीश विनु क्षिति करि ताता * धरिहौं तापस होत प्रभाता ॥
 छन्द--धरि आनि तापस भ्रात दोउ परभात बार न लाइहौं ।

धरि धरि विपुल कपि भालु दीन निशाचरन अघवाइहौं ॥

भुजबल कहहुँ निज नहिं बहुत करि रिपुन प्रगट दिखाइहौं ।

विनु श्रमहिं तातन को वयरलै तव चरण शिर नाइहौं ॥

दोहा--सुनत बीस भुज सुत वचन, बार बार उरलाइ ।

लाग करावन नृत्य जड़, गुणी समूह बुलाइ ॥

बिन्दुमती आदिक रनिवासू * सब चलि गईं मँदोदरि पासू ॥
 सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी * मयतनया करि आदर भारी ॥
 बूझि परस्पर रावण घरणी * प्रभुयश ताहि सुनायउ बरणी ॥
 देइ पतोहुन वास सुहावन * आपु लगी सुमिरन जगपावन ॥
 शयन करहु कह सुतहिं निशाचर * उठा आपु मतिमन्द अघाकर ॥
 गा तेहि भवन कुटिल दशग्रीवा * जहँ मयतनया सदगुण सीवा ॥

आयउ पिय मन्दोदरि जानी * पाइ सुअवसर गहि पग पानी ॥
पिय सुनाय अति कोमल बयना * लगी कहन जलभरि युग नयना ॥
दोहा--नाथ निगम आगम विबुध, कहत प्रगट यह बात ।

बुधजन सो जो आधहु, राखै सर्वस जात ॥

सो विचारि प्रभु परम सुजाना * मोर वचन सुनि कीजिय काना ॥
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसाँई * अनुज भाँति मिलिये प्रभु जाई ॥
प्रथमहिं सीतहिं देहु पठाई * पुनि तुम गवनेहु पुत्र लखाई ॥
प्रभु पद गहि माँगहु वर एहु * पद पंकज रति विमल सनेहु ॥
प्रिया वचन तेहि विष समलागा * सो गृह तजिगा अनत अभागा ॥
निज नारी कहि कटु अभिमानी * कीन्ह शयन निशि गइ बड़ जानी ॥
सो रजनी गत भयउ प्रभाता * जागे रघुवर त्रय जग त्राता ॥
कपि घेरा गढ़ यह सुनि काना * रावण सुत लखि निपट रिमाना ॥
दोहा--ऋक्ष कीश जगदीश पद, शीश नाइ रुख पाइ ।

धरि गिरि तरु धावत भयउ, कहि जय २ रघुराइ ॥

साजि विपुल दल हनत निशाना * गढ़ते चला निकर बलवाना ॥
चारि द्वार करि कठिन लराई * विशिष वरषि कपिदल बिचलाई ॥
निकरे निशिचर गढ़ ते कैसे * शलभ समूह शैल ते जैसे ॥
मारुतसुत देखा कपि भाजे * कटकटाइ अति विक्रम गाजे ॥
कपि लंगूर चहुँ और भवाई * रोके खल निशिचर समुदाई ॥
पटकत महि निशिचर फल बेलू * केतिन देत विदिशि दिशि मेलू ॥
इक दिशि इमि हरिकृत संग्रामा * दिग दूजी अंगद बलधामा ॥

दोहा--निशिचर सेना उदधिसम, मन्दर इव दोउ कीश ।

मथत देखि जय रतन लगि, हँसे विबुध सुर ईश ॥

छंद--इमिनिरखि पराक्रम करतकीश * भा क्रोध परम रजनीचरीश ॥
करि प्रलय कन्द ते घोर शोर * धरे कुधर शस्त्र धाये कठोर ॥
इक बार मार कर शर समूह * किय विकल अस्त्र हनि कीशजूह ॥
कोउ टेरत कपिपति चितउ चोट * कोउ मुरत करत निज धाम ओट ॥
बहु चले कन्दरा शैल ताकि * कोउ दक्कत इत उतपात झाँकि ॥

कोउ देत दुहाई लपण राम * कोउ कहत विधाता भयो वाम ॥
 यहि बीच नरान्तक कर प्रधान * तेहि धाय गहेउ युवराज पान ॥
 बहु भट लपटाने अंग अंग * मव मंग उटेउ अंगद उत्तंग ॥
 नम कीश कीन्ह कौतुक अभूत * रवि मण्डल पहुँचउ वालिपूत ॥
 अँगारे जारे तपनि आँच * पुनि आयउ जहँ मंत्राम राँच ॥
 यह निरखि अपर सूथप पिशाच * तुर आइ गयउ सेना समाच ॥
 लै विषम शूल मारेमि प्रचंड * उरलाग आन अति कटिन दंड ॥
 महि परेउ तनय तारा तुरन्त * लखि दौरि परेउ हनुमन्त सन्त ॥
 सोइ सूल खैचि मारेउ प्रचंड * है गिरेउ सूथपति सहम खंड ॥
 सब चरित सुनेउ रविकुल दिनेश * कह जाहु बेगि अहिराज शेश ॥
 चले नाइ माथ शंकर मनाइ * धनु वाँधि वाँधि विकराल लाइ ॥
 उर अंगद कर धरि सुमिरि राम * श्रम विगत भयउ बल अतुल धाम ॥
 दोहा--विगत भई मूर्छा तुरत, बहुरि चलेउ युवराज ।

लक्ष्मण चाप टँकोर सुनि, फिरा कीश दलसाज ॥

सुनत टँकोर शरामन निशिचर * बधिर भये नहिं सुनत शब्द पर ॥
 बर्षा विशिष कीन्ह अहिनाथा * काटे पाणि पायँ बहु माथा ॥
 उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे * धुनकत तूल रोमगण जैसे ॥
 रुण्ड अशीश फिरहिं रण धरणी * यथा अकाल लुधारत करणी ॥
 इत कपि भालु विजय अभिलाग्ये * उतहि निशाचर जयहित राखे ॥
 मारुतसुत अंगद बलवीरा * समर वाँकुरे अति रणधीरा ॥
 सिंहनाद कीन्हा हरि दोऊ * भाजे कपि रण गाजे सोऊ ॥
 दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं * प्रमुदित भट कायर हिय डरहीं ॥

छन्द--कायर डरहिं प्रमुदित सुभट सब लरत हारि न मानहीं ।

जहँ तहँ गिरैं पुनि उठि फिरैं दुहुँ ओर जयति बखानहीं ॥

कौतुक विलोकत विबुधगण विस्मय हरप उर आनहीं ।

रघुवीर सेननिपर सुमन भरि लाय विनती ठानहीं ॥

दोहा--अति अद्भुत करणी करहि, ऋक्षकीश बलभूरि ।

करपद विनकर रजनिचर, तिन मुख डारहि धूरि ॥

वहुतनिके शिर तोरि चलावहिं ❀ निज भुजवल रावणहिं जनावहिं ॥
 गये याम युग दिवस भवानी ❀ नारान्तक अघ सेन सिरानी ॥
 मरे निशाचर अमित निहारी ❀ रावण सुवन कोप करि भारी ॥
 रथ समेत ऊपर नभ जाई ❀ भयउ अदृश्य अस्त्र झरि लाई ॥
 क्षणमँह करि मूढित कपिमैना ❀ पुनि शठगा जहँ राजिवनैना ॥
 गर्जा मनहुँ मेघ समुदाई ❀ कहन लगा कटु वचन रिमाई ॥
 होसि सजग निशिचर कुलद्रोही ❀ बन्धु वैर लगि मारहुँ तोही ॥
 प्रभु कहँ कटुक कहत मुनि काना ❀ कोपउ जाम्बवन्त वलवाना ॥
 दोहा--शूल एक तेहि छाँड़ेऊ, सो कर गहि ऋक्षेश ।

धाय तासु उर मारेऊ, भापि जयति अवधेश ॥

लागत शूल सो मूढित भयऊ ❀ जाम्बवन्त तत्र कर गहि लयऊ ॥
 वार अमित महि माँह पञ्चारा ❀ बाँधि गाड़ि वारु महँ डारा ॥
 जागे सकल बलीमुख ऋक्ष्या ❀ लगे करन रण निज निज इच्छा ॥
 जाम्बवन्त यह हृदय विचारा ❀ मरे नहीं यह खल मम मारा ॥
 विधि इच्छा पुनि ताहि उखारी ❀ मुष्टि चारि उरमाहिं प्रचारी ॥
 गहि पद संचारा गढ़ माहा ❀ मपदि परा जहँ निशिचरनाहा ॥
 दशोवदन हाहा करि धावा ❀ नारान्तकहिं हृदय तव लावा ॥
 निरखि निशाचर गण समुदाई ❀ गढ़ कहँ गे सत्र सम्भ्रम धाई ॥
 दोहा--कपिगण समय प्रदोष लखि, रामचरण धरि माथ ।

ठाढ़ भये सब तन चिते, दयादृष्टि रघुनाथ ॥

विनुश्रम कीन्ह सवनि जगदीशा ❀ गये सुवाम भालु अरु कीशा ॥
 रुचिरामन आसीन रमेशा ❀ ढिग वीरामन उरग नरेशा ॥
 अंगद मारुतसुत प्रभु चरणा ❀ लाग पलोठन सुनहु अपरणा ॥
 पुण्य पुंज अरु भाग्य निधाना ❀ जिनपर नित प्रमन्न भगवाना ॥
 वहाँ सुरारि सुतहिं पौढ़ाई ❀ बिलम्बहिं तासु नारि समुदाई ॥
 होत प्रभात नरान्तक जागा ❀ पितु बिलोकि लज्जा रिमु पागा ॥
 रथ चढ़ि तुरत इकाको धावा ❀ नभ पय ममर पुहुमि महँ आवा ॥
 कीश कटक यह मर्म न जाना ❀ होई लोप कीन्हेसि झरि वाना ॥

दोहा--धावहि ब्योमहिं भालुकपि, ताहि न हेरै नैन ।

घायल ह्वै ह्वै गिरहिं महिं, भाषहिं आरत बैन ॥

बाण एक शत तड़ित ममाना * छाँड़ेसि शठ जहँ कृपानिधाना ॥

लागत विपुल कीश मुरझाने * बहुतक कायर देखि पराने ॥

भागि सेतु दिग एक अयाना * टेरें फिरहिं न सुनु हरियाना ॥

मारुतसुत अंगद सुग्रीवा * कुमुद मयन्द द्विविद बल सीवा ॥

ये सब वीर हाँक दै धावहिं * नभ पथ ताहिं न खोजत पावहिं ॥

तव सब वीर एक मत ठाना * लै गिरि तरु किये लंक पयाना ॥

दशमुख भवन तासु कंगूरा * बैठे कपि पसारि लंगूरा ॥

करते डारि देहिं पाषाणा * बहुत दनुज भे चूर्ण समाना ॥

छन्द-भे चूर्ण निशिचर यूथ * गै निशिचरी भय गूथ ॥

मुख वीन आरत दीन्ह * मईं भवन रावण लीन्ह ॥

सुनि बोलि भट दशभाल * कह खाहु कीश कराल ॥

करि यत्न भागहिं कीश * अस कहेउ वच दशशीश ॥

मम लहहु आयसु छोर * सोइ जानिहौं रिपु मोर ॥

सो शूर मोकहँ प्यार * जो खाय मर्कट धार ॥

दोहा-एतु एतु गुण रजनिचर, एक एक भुज जोर ।

रावण पावन राखि शिर, धाये करि रव घोर ॥

देखि लँगूर सकल हरषाने * मधुमाखी सम सब लपटाने ॥

कपि उर सुमिरि रमेश प्रतापा * डारे सबनि पटक कर दापा ॥

काचे घट सम दनुज विदारी * जयति राम जय लषण खरारी ॥

सुभट छुहनि पुनि फेरि लँगूरा * भूमि गिरावहिं कोटि कँगूरा ॥

अति विशाल गहि कञ्चन खम्भा * जिमि प्रयास विनु करु आरम्भा ॥

लै ढाहत अपक घट जूहा * कपि तिमि तोरत दनुज समूहा ॥

पुनि विचारि करि हरि भट धाये * निशिचर निकर मध्य चलि आये ॥

करि कोटिन विनु नासा काना * कर पद हीन कीन्ह रिपु नाना ॥

छन्द-रिपु कीन्ह कर पद हीन अगणित दीन वचन पुकारहीं ।

गढ़ते निकर निशिचर अखिल खल बिपिन वाट सिधारहीं ॥

बाजि नाग शोर घोर पूरिगे दशो दिशान ।
 धूरि पूरि मेघ ओघ शोध ना परौ अपान ॥
 कूदि कूदि व्योम पन्थ जाइ आइ जाइ भूमि ।
 अस्त्र शस्त्र कादि कादि कुद्ध कुद्ध भूमि भूमि ॥

दोहा-प्रलय मनहुँ चाहत करन, अनौ तमीचर चण्ड ।

सुनु खगेश मर्कट बिकट, जिमि धाये बरबण्ड ॥

छन्द-निहारि हर्ष कीश ऋक्ष फूलि फूलि शैल मे ।
 बजाइ कटकटाइ हूह एक वार कै अभे ॥
 उपारि भूधरा अपार वृक्ष अश्म शृंगहू ।
 मरे निशाचरानि रुण्ड भुण्ड मुण्ड भंगहू ॥
 रदी हरीं मृगामती सवार उग्र मण्डहू ।
 मनो विचित्र वाहिनी दई मनोज खण्डहू ॥
 हलै धरा वलै विचारि भार धारिको सकै ।
 सुनै पुकार जयति राम शत्रु से नहीं सकै ॥
 लँगूर शूल से अकाश भीत उच्च औचख्यो ।
 गिरे पयोद पौन ते झपेट भेट ते फख्यो ॥

सोरठा--शब्द करत अतिघोर, इमि पहुँच्यो दल भालुकपि ।

आयुध भरि अति जोर, परै लागि घन प्रलय सम ॥

सजग होन कपि भालु न पाये * अतिशय निकट तमीचर आये ॥
 असित निशाचर अति अँधियारी * तापर करै शत्रु कै मारी ॥
 सूम्हहि कपिन न हाथ पसारे * जहँ तहँ एकनि एक पुकारे ॥
 सन्मुख कोउ न करत लराई * कपिन मारि रण भूमि सुवाई ॥
 गे अनेक भजि सिन्धु समीपा * सेन विकल लखि रघुकुलदीपा ॥
 सजि शारंग तजा इक बाना * भा प्रकाश दिग तरणि समाना ॥
 लखि तम विगत भालु कपि हरषे * कटकटाइ धाये रिपु धरषे ॥
 भिरे एक सन एक प्रचारी * लागे करन कठिन हठ मारी ॥

दोहा-शीश शिला तरु करन धरि, काँखन भरि २ धूरि ।

गजें भालु बलीबदन, धाय धाय नभ दूरि ॥

डारहिं गिरितरु निशिचर शीशा * दधि घटसम फोरहिं भट कीशा ॥
 चढ़हिं अनेक कन्ध पर जाई * काटहिं कान दृगनि रज्जनाई ॥
 तोरहिं शूल चाप नाराचा * अरिदल अस्र न एकौ बाँचा ॥
 शस्त्र हीन रिपु सेन पराई * देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई ॥
 बैठि अवनि अति लूम लफाई * अनि उतंग दीरघ चौड़ाई ॥
 तर्कित खसे निशाचर कैसे * पक्षहीन नभ ते खग जैसे ॥
 गिरतकीश गहिचरण फिरावहिं * पटक भूमि गाड़हिं बिहँमावहिं ॥
 तुम्बरिसम अगणित भुज तोरत * अगणित रुण्ड सिंधु महँ बोरत ॥
 दोहा-कोटि बयालिस तमीचर, नारान्तक कर घात ।

रामकृपा बल हति खलनि, कपिन बिताई रात ॥

प्रभु तुणीर महँ हरिशर जवहीं * प्रविशे कीन्ह उदय रवि तवहीं ॥
 देखि कटक निज परम बिहाला * नारान्तक भट कोटि कराला ॥
 करि बहु शपथ लिये संग वीरा * वर्षत शक्ति उपलगण तीरा ॥
 शर अस्तम्भन विपुल पवारे * भये अचल कपि टरहिं न टारे ॥
 लै लै पाश निशाचर धाई * बाँधत जिमि चुंगुलि शुकपाई ॥
 व्याध पींजरा सम बहु जाना * भरे जान प्रति अयुत प्रमाना ॥
 जो कपि लखें विपुल बल बंका * ते मुञ्चित फेंकें गढ़ लंका ॥
 रावण देखि तनय की करणी * बन्दी जन जिमि भुजबल बरणी ॥
 दोहा-हरिइच्छा जानै न सक, सुतहिं सराहत मूढ़ ।

कालबिबश मति संभ्रमित, सुनहु ऋपय बुधि मूढ़ ॥

अंगद हनूमान जब जागे * नारान्तक सन जूझन लागे ॥
 क्षणइक कीश न पायउ लरई * पुनि शर हति मूर्खा बश करई ॥
 अंमा युगल तेहिकर बरदाना * राखेउ तेहि कारण भगवाना ॥
 रिपुहिं खिलावत रघुकुलकेतू * पालक बुधि वाणी श्रुति सेतू ॥
 सो युग याम गये जब वीती * तब रघुवीर सजी जय रीती ॥
 हाँक देइ कपि भालु जगाये * भये विगत मूर्खा सब धाये ॥
 हनूमान अंगद जब जागे * राम लषण चरणन अनुरागे ॥
 प्रभु पद शीश रहे धरि कीशा * तब हँसि बोले श्री जगदीशा ॥

सोरठा-विधि वाचालगि आज, तात तुमहिं मूर्छा भई ।

पुनि कहि प्रभु रघुराज, अवश्रम स्वानेहु अनत नहिं ॥

तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना * जितिहैं जगत मनुज रणनाना ॥

अमवर जबहिं रमापति भाखा * सुनत गिरा हर्षे मृग शाखा ॥

कहेउ बहोरि वचन रघुवीरा * सुनु अंगद हनुमत रणधीरा ॥

तात तुरत तुम उभय सिधावहु * लंक गये कपि तिन्हें छुटावहु ॥

सुनि दोउ भट गहि शैल विशाला * सुमिरि कोशलाधीश कृपाला ॥

सपदि कीश गढ़पर चहि गयऊ * देखि लंक महँ खरभर भयऊ ॥

सकल कपिन कै मुर्छा वीती * तोरि पाश भजि राम सप्रीती ॥

वायुसून युवराज निहारी * हर्षे कहि जय जयति खरारी ॥

दोहा--मेप वरूथहिं पाइ जिमि, वृकगण करहिं संहार ।

तिमिमर्दहिं दनुजन सुभट, कीश भालु वरियार ॥

याम एक वामर अवशेखा * कह अंगद कीशन तन देखा ॥

चलिय तात अब जहँ सुरभूपा * देखिय पद पाथोज अनूपा ॥

अंगद वचन पवनसुत भाये * सपदि सहित दल प्रभुपहँ आये ॥

निशिचर कोटि नरान्तक मंगा * करत रहे बहु विधि रणरंगा ॥

माया करि निज गात वचावहिं * जहँ तहँ खल रावण यश गावहिं ॥

अदितिन्द लखि तिनकर माया * सभय भये जाना रघुराया ॥

दीन नाथ अनुजहिं अनुशामन * उठे नमित गहि विशिख शरामन ॥

अहिपति कहेउ तिष्ठ क्षणएका * तैं कीन्हें रण खेल अनेका ॥

छन्द--तैं कीन्ह खेल अनेक विधि अत्र तिष्ठ खल रण भूथला ।

इमि कहि अहीश चढ़ाइ धनुशर करन निशिचर दलमला ॥

निज अनी निरखि निदान हरिअरि सुवन धावा रिमभरा ।

डारत अनेक नराच प्रभुपर शिला तरुवर भूधरा ॥

छन्द--रघुवीर अनुज प्रवीण खलवल दलन श्रुति यश गावहिं ।

तरु उपल गिरि अरि तीर उपरहि बाण लषण चलावहीं ॥

रिपुशस्त्र अस्त्र अनेक आयुध कनक करि करि डारहीं ।

सुरगण प्रफुल्लित सुमन झरि करि जयति लषण पुकारहीं ॥

दोहा—मायापति के अनुज सन, माया करत अयान ।

लगत न एको जानजिय, तव खल निकट तुलान ॥

हना लपण उर पवि सम सायक * लगत गिरे रण महि अहिनायक ॥
 पुनि खल दल भा प्रबल अपारा * भक्षण लाग भालु कपिधारा ॥
 चले पराय कीश भय भीता * अब न वचव करि काल प्रतीता ॥
 निशिचर धारि भालु कपि वेषा * लागे खान कपिन अम देखा ॥
 कपि डर कीश भालु डर ऋच्छा * आपु आपु भइ मिलन अनिच्छा ॥
 कोउ न काहु निकट नियराई * जो जेहि पाव ताहि तेहि खाई ॥
 पुनि शठ माधि विभीषण रूपा * गहि अंगद हनुमत कपि भूपा ॥
 काहु न यह माया कह्यु जानी * कपट मिलाप विभीषण ठानी ॥
 दोहा--तेहि अवसर जागे लपण, देखा सेन विनाश ।

अहिरावण छल पवनसुत, समुभक्त उड़ा अकाश ॥

गजेउ जाय भयंकर भारी * फटेउ हृदय सुनि निशिचर झारी ॥
 माया हर शर लपण पँवारा * उघरे कपट कपाट अपारा ॥
 नारान्तक के माया बीती * गयउ यज्ञशाला अति प्रीती ॥
 खोजिमि मव सामग्री ताकी * कीन्ह अरंभ विजय निज ताकी ॥
 यज्ञ आसुरी तेहि तव ठाना * पशु समूह बलि कारण आना ॥
 भई निशामुख श्रमवश मैना * फिरे सुमिरि भव राजिवनेना ॥
 तुरत अहीश राम पहुँ आये * सहित अनी प्रभुपद शिरनाये ॥
 कृपा अयन निरखे मृगशाखा * प्रभु श्रमद्वीन दान अभिलापा ॥

दोहा--टिकहु थलनि सबसन कहा, सुखसागर रघुनाथ ।

पाय सुआयसु भालुकपि, चले सुमिरि श्रीनाथ ॥

तव रघुराज अनुज उर लावा * निज आमन समीप बैठावा ॥
 मधवासुत सुत अरु हनुमाना * इन सम भाग्यवंत नहिँ आना ॥
 अमलाम्बुज पद गहि निज पानी * परसे मयनि मनेह भवानी ॥
 जाम्बवंत लंकेश हरीशा * प्रभु समीप सब मुदित मुनीशा ॥
 अनुज सखा नारान्तक करणी * युद्ध प्रबलता बहुविधि वरणी ॥
 शिव प्रताप तेहि अमित प्रतापा * मरण न दान्हे बहु मन्तापा ॥

सुने वचन रघुपति मुसुकाने * अति सनेह हर चरित बखाने ॥
 सुनहु सकल हम शम्भु न आनी * जिनहिं भेद ते बश अज्ञानी ॥
 दोहा--जे सुमिरहिं शिवसह उमा, ते जानहु मम प्रीय ।

शंकर भजहिं सो मोहिं भजहिं, मोहिते शंभु अतीय ॥

चारि पदारथ करतल ताके * बसहिं महेश उमा उर जाके ॥
 जो मम प्रण शिव सदा निवाहा * सो जय देव न संशय आहा ॥
 सुख कलत्र जयविजय विभूति * शंकर सुमिरत होय अकूती ॥
 भक्ति मोरि शंकर आधीना * जलाधीन जिमि जीवन मीना ॥
 कहँ आश्चर्य नरान्तक एहा * मोपर गिरि पति परम सनेहा ॥
 सुमिरहु सदा विश्व इक नाथा * कपट त्यागि नावहु सब माथा ॥
 होइहि विजय धीर मन धरहु * बेगि उपाय पाव सुख करहु ॥
 शम्भु उपासन कर मम दासा * तात हृदय धरि दृढ़ विश्वासा ॥
 दोहा--जो नर चाहत भक्ति मम, सो छल कपट दुराइ ।

विश्वसमेत गिरीश पद, निशदिन रहु मनलाइ ॥

मन क्रम वचन शम्भु पद आसा * करहिं ताहिं उर सब गुण बासा ॥
 निर्भय करि जो हरिपद नेहू * ता उर रमा सहित मम गेहू ॥
 भव बारिधि लाँघहिं विनु खेवहिं * यह विचारि बुधजन भव सेवहिं ॥
 भवभंजन यह हित उपदेशा * अनुजहिं सखहिं बुभाव रमेशा ॥
 ध्रुव वाणी सुनि अति सुख पावा * अहिपति रामचरण शिर नावा ॥
 अंगद हनुमान नल नीला * कपिपति अरु ऋक्षेश सुशीला ॥
 सहित विभीषण राजन साता * सुनि श्रीमुख हरयश विख्याता ॥
 रामहिं शिवहिं एक जे जाने * भय तजि नाम जपत हर्षाने ॥
 दोहा--कहत सुनत इतिहास शुचि, निशि बीती युग याम ।

स्वर्गपति आगम देवऋषि, जित शोभित श्रीराम ॥

राम लपण सुख सीव विराजे * मार अपार निहारत लाजे ॥
 निरखि मान मुनि हृदय सनाथा * उठे हरषि प्रभु रघुकुलनाथा ॥
 सीस नाइ प्रभु आसन दीन्हा * आसिष पाइ हर्ष हित कीन्हा ॥
 मुनि नीके हरि रूप बिलोका * यथाइन्दु लखि सुखलह कोका ॥

पुलकि गात तव कह ऋषिराजा * सुनहु नाथ आयउँ जेहि काजा ॥
 चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी * यदपि कृपानिधि अन्तरयामी ॥
 सदा अनाथ नाथ भगवाना * विभव विरंचि करिय परिमाना ॥
 जबलगि होन प्रभात न पावहिं * तबलगि हरि हरिसुत लै आवहिं ॥
 दोहा--जपत निरंतर नाम तव, सो जानहु भगवान ।

विधिविरहित इत आनिये, तेहि कहँ कृपानिधान ॥

नारान्तक बध है तेहि हाथा * दधिवल नाम भक्त तव नाथा ॥
 नाथ बहुत यहि खलहिं खेलावा * रण विलोकि देवन दुख पावा ॥
 अब रघुवीर करहु सोइ वाता * विनु प्रयास रिपु मरइ प्रभाता ॥
 तेइसन तुमहिं न सोह लराई * दधिवल सन्मुख करहु बोलाई ॥
 सविनय नाइ शीश बर भाग्वी * गवनं मुनि प्रभु छवि उर राखी ॥
 नारद गये जबहिं विधिलोका * वायुतनय तन राम विलोका ॥
 तात तुरत तुम गवनहु तहवाँ * बारिधि महँ धवलागिरि जहवाँ ॥
 तहँ दधिवल रह ध्यान लगाये * बहुत दिवस चलि गये सुभाये ॥
 दोहा--अहै तपोवल तेजसी, तांत तासु ढिग जाइ ।

मन प्रसन्न करि चतुरई, आनहु बेगि बुलाइ ॥

पवनकुमार पाइ अनुशासन * चले वन्दि पद हरपि उदामन ॥
 बेगवन्त धावा कपि कैसे * वर नाराच धनुषते जैसे ॥
 लोक अर्द्ध घटिका तेहि ठामा * पहुँचे वायुपुत्र बलधामा ॥
 देखि तरणि सम तासु प्रकामा * ठाढ़ भयउ कपि मन्दिर पासामा ॥
 दण्ड युगल कपि इस्थित रहेऊ * हियमहँ राम राम अम कहेऊ ॥
 उत रण होइहिं होत प्रभाता * इत इनकर चित हरिपद राता ॥
 क्षणइक कपि मन कीन्ह विचारा * प्रभुपहँ चलिये कवन प्रकारा ॥
 जो गृह सहित चलहुँ लै येही * नहिं अस आयसु भक्त सनेही ॥
 दोहा--बुधजन शीश शिरोरतन, अति लजात मुनिराउ ।

ताहि जगावन हेतु तव, कीन्हें अमित उपाउ ॥

अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना * तजि प्रवीणता भजि भगवाना ॥
 राम चरण चित कपिवर दयऊ * दंड एक औरों चलि गयऊ ॥

विधि प्रेरित दधिवल लघु शंका * करन उठेउ देखा भट बंका ॥
 जय श्रीराम वायुसुत बोला * सुनिदधिवल निजलोचन खोला ॥
 बूझि हरिहि कीशहि उरलाई * कही परस्पर दोउ कुशलाई ॥
 पुनि हनुमान कहेउ सुनु भ्राता * चलहु बिलोकन त्रिभुवन त्राता ॥
 सानुज राम सुखद पदकंजा * जिन मकरंद शिला अध-गंजा ॥
 जेहिलगि तप कीन्हेउ बहुकाला * सो तुमपर अनुकूल कृपाला ॥
 दोहा--धूरजटी हृद मानसर, बसत हंस इव जोइ ।

सांढर तुमकहँ लेन लगि, पठवा मोहि प्रभु सोइ ॥

सुनि शुभ वचन सुकंठ कुमारा * हरिपहँ हरिसँग तुरत सिधारा ॥
 आये नाथ निकट मृग शाखा * देखे पद जे हर हिय राखा ॥
 रहेउ चरण गहि प्रीति समेता * दधिवल निरखेउ कृपानिकेता ॥
 सानुज हरषि मिलेउ सुख कंजा * तासु पाणिगहि निजकर कंजा ॥
 बैठे ताहि निकट बैठावा * तेहि अवसर सुकंठ तहँ आवा ॥
 निरखि तनय कपिपति हर्षाना * मिलत प्रेम नहिं जाय बखाना ॥
 गइ मणि पन्नग जनु पुनि पाई * देही देह मीन जल जाई ॥
 सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेटे * अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे ॥

सोरठा--दधिवल बालिकुमार, मिले परस्पर हर्षि हिय ।

भयउ आइ भिनुसार, न्हाइ सबनि प्रभु पद गहे ॥

जहँ तहँ समर करन बनचारी * चले कहत जय लषण खरारी ॥
 वहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा * रथ चढ़ि चलेउ भयंकर योधा ॥
 निशिचर अनी सुभट सँग ताके * आयुध अखिल भयानक वाके ॥
 महि संग्राम निशाचर ठाढ़े * असित मेघ सम अति रिम बाढ़े ॥
 करि माया तेइ गात छिपावा * भयउ प्रगट जब प्रभु ढिग आवा ॥
 दधिवल लखा मखा चलि आयउ * भुजा पसारि हरषि उठि धायउ ॥
 नारान्तकहु दीख गुरु भाई * मुदित मिले उर भयउ अधाई ॥
 भेंटि सप्रेम बूझि कुशलाता * निज निज दशा कीन्ह विख्याता ॥

दोहा--हरिपति पूत प्रवीण अति, सुनि तेहि मुख विख्यात ।

लगे बुझावन मित्रकहँ, सुनहु वीर्यपति वात ॥

बंश स्वभाव सत्य कवि कहहीं * फल पियूष विष बेलि न लहहीं ॥
 समुझहु तात विचारि निदाना * किये अनीति न जग कल्याना ॥
 पितु चरित्र समुझहु मनमाहीं * राम विरोध कतहुँ जय नाहा ॥
 तुम प्रवीण भा मति भ्रम कैसे * कूप धँसत विच वाट अनैसे ॥
 तुमहुँ कीन्ह दिन चारि लड़ाई * जानेउ भालु कीश बल भाई ॥
 तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना * कहहु पाहि रघुवर भगवाना ॥
 सफल करहु भव प्रभु पद परसी * करिहै अभय तोहिं सम दरसी ॥
 मानहु सीख मोरि सुखकारी * प्रणतपाल रघुवीर खरारी ॥
 दोहा--शारंगीशर तरणि सम, दसमुख वपु खग लेख ।

जगत राखु यहि समय तुव, करि विज्ञान विशेष ॥

सुनत बचन गुरु भ्राता केरा * नारान्तक भा क्रुद्ध घनेरा ॥
 कहन लाग खल ताहि कुभाँती * सहज समीत कीश दिन राती ॥
 वालिहि हतेउ जौन तप धारी * भा अंगद तिन्ह आज्ञाकारो ॥
 दधिवल यह बानर कुल रीती * हमरे करहिं न अरिमन प्रीती ॥
 यह कहि प्रभु सन्मुख सो धावा * दधिवल लूम लपेटि टिकावा ॥
 नारान्तक कह रे शठ बानर * तव तनु नहीं मोर डर कादर ॥
 छाँड़हु मूढ़ समुझि गुरु भाई * कहि अम पेलि चला कठिनाई ॥
 तव सुकंठ सुत क्रोधित भयऊ * सपदि कूदि आगे गहि लयऊ ॥
 दोहा--नारान्तक दधिवल भिरे, निरखि भालु कपि कीश ।

लगे लरन सँग निशिचरन, कहि जय श्रीजगदीश ॥

छन्द--कपिशूर भंहारे शिलनि मारि । बहु मदि करे शिकता पहारि ॥
 भट विहावल वासी जितेक । कपि मारि गिराये बच न एक ॥
 रह एकाकी मनुजाद वीर । किय द्वन्द युद्ध उरगाद धीर ॥
 दोउ लरत लहैं छवि एक भाँति । गिरि कज्जल कञ्चन उभय गाति ॥
 युग घटिका ऊपर एक याम । दोउ भिरे समर बल योग धाम ॥
 पुनि भा अलक्ष सोकरत युद्ध । बलवन्त उभय श्रमगत सकुद्ध ॥
 कहपट प्रकार श्रुति युद्ध रीती । सुख मानेउ सुर देखत सर्पती ॥
 लखि पुत्र इकाकी पुलकगात । कह बालि अनुज अति हपि वात ॥

दोहा--जाम्बवन्त सन वचन मृदु, कहेउ सुकंठ पुकारि ।

कहहु तात दधिवल कवहिं, दनुजहिं डारिहि मारि ॥

समर करत लागी अति वारा * यह सुनि बोले ऋक्ष भुञ्जारा ॥
 क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा * दधिवल गुरुसन लही अशीशा ॥
 सो अवसर अब आनि तुलाना * एक पलक महँ मरिहिं अयाना ॥
 सुनी हरीश मनमहँ अति हर्षे * तवही विबुध सुमन बहु वर्षे ॥
 दधिवल धन्य भुजा बल तोरा * रण कौतूहल कीन्ह न थोरा ॥
 हरि अस्तुति सुनि हरि अरि कोपा * कपिहि सहित खल भयउ अलोपा ॥
 योजन अयुत अष्ट नभ जाई * दधिवल सुमिरि हृदय रघुराई ॥
 गहि मनुजाद भूमि पर डारा * करि चिकार तेहि मरती वारा ॥
 छन्द--मरती समय अति शब्दकरि दशमुख तनय हरिहरकही ।

तजिअधमतनु धरिसुभगवपु द्विजनाथ सुनि सोगति लही ॥

जेहि हेतु सुर सुनि मिद्धि नाना भाँति जप तप मख किये ।

श्रीराम करुणासिन्धु सो फल सहजही दनुजहि दिये ॥

दोहा--देखि तासुगति विबुधगण, अभय भये खगराइ ।

प्रमुदित वर्षे पुहुप भरि, रामचरण चितलाइ ॥

मरा नरान्तक दधिवल जानी * तोरि तासु शिर गहि निजपानी ॥
 रुण्ड तासु गहि लंक सँचारी * आपु चले जहँ नाथ खरारी ॥
 निशा प्रवेश भूत बैताला * चढ़ि चढ़ि बाहन वेष कराला ॥
 जाइ समर महि सुखद समेता * उदर अघाइ गये सुनिकेता ॥
 आयउ दधिवल प्रभु के पासा * देखि हरषि उठि रमानिवासा ॥
 सानुज राम मिले अति प्रीती * परम प्रसाद नाथ नित रीती ॥
 बैठे रघुकुल मणि दोउ भाई * सखा सुतहिं निज ढिग बैठाई ॥
 हनुमदादि मर्कट प्रभुपार्हीं * नाइ माथ प्रमुदित मनमार्हीं ॥

दोहा--रामरजायसु पाय पुनि, होइ विगत श्रम कीश ।

तवदधिवल प्रभु चरणगहि, आगे धर अरि शीश ॥

समुझि कौतुकी रिपुसुत शीशा * सुनहु सुकंठ कहा जगदीशा ॥

नारान्तक कर शीश धरावहु * यतन समेत न सेन चलावहु ॥

नाथ रजाय पाय कपिराई ❀ राखहु सो शिर यतन कराई ॥
 पुनि दधिवल हरि कीन्ह बड़ाई ❀ श्रीपति श्रीमुख बहुविधि गाई ॥
 जासु बड़ाई किय बड़ ईशा ❀ सखहिं सराहत मो जगदीशा ॥
 दधिवल प्रभु अनुकूल विलोकी ❀ सफलजन्म लग्निभयउ विशोकी ॥
 प्रेम बारि लोचन कर जोरी ❀ बोलेउ गिरा भक्ति रस वोरी ॥
 जगदातमा तुम्हार यह बाना ❀ सन्तत करहु दीन मनमाना ॥

दोहा--वनचर पामर सहज जड़, बुद्धि विषम अज्ञान ।

विर स्वभाव कृपालु प्रभु, सेवक सुयश बखान ॥

तव यश विमल विदित अवधेशा ❀ कहन न पार पाव श्रुति शेषा ॥
 सो मैं प्रभु कहि मकहुँ न कैसे ❀ पर्णवणिक गज मणि गुण जैसे ॥
 अस कहि हरि हरिपद लपटाने ❀ देखि प्रेम कपि विबुध मिहाने ॥
 अन अभिमान ताहि प्रभु जाना ❀ दीनदयालु बहुरि सनमाना ॥
 माँगु वत्स जो वर मन भावा ❀ सुनिदधिवलकरि विनय सुनावा ॥
 नाथ तुम्हार रूप गुण नामा ❀ करहिं निरन्तर मम उर धामा ॥
 होइ मोहिं प्रिय पदपंकज कैसे ❀ कामिहिं वाम सूम धन जैसे ॥
 एवमस्तु तुम कहँ वर येहू ❀ मम इच्छा कछु औरौ लेहू ॥

सोरठा--विहवावलपुर राज, करहु तात तुम मुदित मन ।

छाँडि और सब काज, शिवाशम्भु पद भक्ति दृढ ॥

यहै काज शुभ संतत चहई ❀ जो सो प्राणी मम मन रहई ॥
 उमा राम कर यहै स्वभाऊ ❀ जनपर प्रेम न कबहुँ दुराऊ ॥
 मोहि निज रूप रमापति जाने ❀ ताते वारम्बार बखाने ॥
 जानेउ श्रीरघुवर स्वभाउ जिन ❀ मव तजि प्रेमभक्ति माँगी तिन ॥
 राम भक्ति बारीश जासु उर ❀ महिमा तासु कहत श्रुतिबुधवर ॥
 सर सरिता मव सुखद सुहाये ❀ सहजहिं आवत विनहिं बुलाये ॥
 ताहि शुद्ध शिखदै रघुनाथा ❀ पुनि प्रभु कीन्ह तिलकनिज हाथा ॥
 सारंगी रूख सबहीं पावा ❀ अंगदादि ताकहँ शिर नावा ॥

दोहा--पाइ भक्तिवर राज्य वर, प्रभु चरणन शिरनाइ ।

दधिवल पठयउ तुरत हठि, सुनहु ऋपय मनलाइ ॥

तन मन राम चरण अनुरागे * दधिवल राज्य करत भय त्यागे ॥
 सेन सहित श्रीराजिवनयना * राजत देखि विबुध चित चयना ॥
 हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा * पुहुपमाल भरि करत अपारा ॥
 करि अस्तुति वर विनय पुकारे * अदिति सूनु निज गेह सिधारे ॥
 उतहि जहाँ बैठा दशभाला * विनु शिर वपुमो परा विशाला ॥
 देखि विकल आपै उठि धावा * पहिचानतु तेहि अति दुख पावा ॥
 हा नारान्तक कहि खल परा * महा खंभार लंकगढ़ भरा ॥
 मयतनया आदिक निशिचरी * शोक समाज विषादहिं भरी ॥
 दोहा—विन्दुमती आदिक सकल, नारान्तक की नारि ।

व्याकुल महि लोटत परी, निज निज दशा विसारि ।
 करिविलाप जिमि निशिचर नारी * सो न जात कहि सुनु नभचारी ॥
 शोक जलधि लंका लघु तरणी * चढ़ीसकल निशिचरकी घरणी ॥
 बूढ़त जानि न कतहुँ निवाहा * कहत मंदोदरि तव भव पाहा ॥
 विन्दुमती कर गहि वैठाई * नागसुता की कथा सुनाई ॥
 सुनत सुनयना की शुचिकरणी * धारि धीर नारान्तक घरणी ॥
 सवनि बुझाय सासु पगलागी * तजि धनधाम स्वामि अगुरागी ॥
 मातु कहहु सो यतन उतावल * मिलहुँ जाइ जेहिपद निजरावल ॥
 सुनु सुतवधू न आन उपाऊ * जाउ जहाँ राजत रघुराऊ ॥
 दोहा—जेहि विधि गई सुलोचना, तेहिगत तुम भय त्यागि ।

निरखहु रघुपति पद कमल, लावहु पति शिर माँगि ॥
 सासु वचन सुनि जानि प्रभाता * उठिनिशिचरतिय पुलकितगाता ॥
 जात रूप मय यान मंगाई * निजकर गहि पतिदेह चढ़ाई ॥
 चली अकेलि यान चढ़ि जवहा * तासु सवति इक आई तवहीं ॥
 नाम चित्ररेखा अस तासू * गुणगण सुभग वसैं तनु जासू ॥
 सोकरि विनय चढ़ी तेहि मंगा * कीन्ह पयान रंगी शतरंगा ॥
 रथ अकेल आवत कपि देखा * कायर डरपे हृदय विशेषा ॥
 आवत मानि सबल रिपु कोई * नल अरु नील सुभट वर दोऊ ॥
 आये धाय मपदि तव आगे * युगल नारि तनु निरखन लागे ॥

दोहा-समुझि बूझि वृत्तान्त दोउ, फिरि आये प्रभुपास ।

वन्दि कंजपद उभय कह, सुनिये रमा निवास ॥

नाथ नरान्तक की दोउ नारी * आवत शरण प्रणत भयहारी ॥

सुनि रघुवीर हृदय मुसुकाने * उतहि टिकावहु सखा मयाने ॥

सुनि प्रभु वचन बहुरि सो धाये * कटक विगत तिन दरि टिकाये ॥

विन्दुमती चितरेखा दूनौ * विनय हमारि कीश अम मूनौ ॥

कहहु जाइ तुम प्रभुहि बुझाई * केहि कारण हम दर्श न पाई ॥

हम अबला कपि विनवौ तोहीं * बूझि नाथ मन कहिये मोहीं ॥

नारि विनय सुनि कपि दोउ भले * नीति विचारि रामपहँ चले ॥

विनती नारि जाय नल वरणी * सुनि विहँसे प्रभु तिनकी करणी ॥

दोहा-परम मृदुल रघुनाथ चित, कहत सन्त बुध वेद ।

तिन कहँ देत न दर्श प्रभु, सुन स्वगेश सो भेद ॥

प्रेम परीक्षा हित रघुनाथक * कौतुक करत ममर सुखदायक ॥

नाथ सखा तव बहुरि बुझाई * पुनि नल नारिन पाम पटाई ॥

कह कपि सुनहु नरान्तक नारी * दर्शन तुमहि न देहिं खरारी ॥

तुम गृह जाहु वचन मम मानी * बोलीं सो तिय वचन मयानी ॥

हम अबला दर्शन हित आई * नयन सफल विनु किमि गृहजाई ॥

यहि विधि करत विनय दोउ नारी * कीशन कटक कीन्ह पैमारी ॥

आवत निकट जानि रिपुरवनी * यद्यपि पतिव्रत हें मुखभवनी ॥

तदपि नाथ तेहि दर्श न देहीं * जाइ निकट विनती किय तेहीं ॥

दोहा--प्रभु सीतापति जगतपति, सुर नर पति रघुनाथ ।

देउ दर्श करुणायतन, दीनबन्धु श्रुति माथ ॥

बोले राम न मो तिय बोली * विमल ज्ञान पतिव्रत अनु डोली ॥

नाथ सत्य यह नीति बखाने * पुरुष न परतिय स्वनेहु जाने ॥

प्राकृत पुरुषन की यह रीती * जिनके हृदय कपट पर प्रीती ॥

समदर्शी कुल्य दोष न स्वामी * सो विचारु प्रभु अन्तरयामी ॥

आरत बन्धु विलम्ब न कीजे * करुणाकर अब दर्शन दीजे ॥

नहिं बोले प्रभु पुनि मो कहई * तवयश अम श्रुति गावत अहई ॥

गौतम नारि राम तुम तारी * अधम जाति भिखनि निस्तारी ॥
 सुनि मम हृदय परी परतीती * अब प्रभु कस देखिय बिपरीती ॥
 दोहा-तारि तारि अधमनि अमित, बार बार श्रम जान ।

ताते करत अनाकनी, मोरि ओर भगवान ॥

प्रभु मुसुकाहिं न उत्तर देहीं * ताकर प्रेम परीक्षा लेहीं ॥
 विकल उभय नारान्तक वाला * बार बार करि बिनय विशाला ॥
 धर्म धुरन्धर प्रभु अवतारा * केवल पतिव्रत धर्म हमारा ॥
 जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी * द्रवहु बेगि उर अन्तर्यामी ॥
 बृथा करत कत प्रभु श्रुति भाषा * पूजत नाथ न मम अभिलाषा ॥
 लीन भयउ पति प्राण रामपहँ * अर्द्ध भाग हम कहहु जाईँ कहँ ॥
 बृन्दा चरित नाथ सुधि करहु * बिनय हमारि बेगि उर धरहु ॥
 बिनय प्रीति सत धर्म जनाई * परी प्रेमवश महि अकुलाई ॥

दोहा--पाहि पाहि रघुवंश मणि, हतहु न विरद प्रतीति ।

प्रीतम प्रीति न करत डर, तुम कहँ नाथ अनीति ॥

सती निराश बिनय सुनि बानी * पुलके दीनदयाल भवानी ॥
 दुहँन लीन निज निकट बुलाई * परी युगल प्रभु पदतर आई ॥
 तिन्हें उठाय राम बैठावा * जगदीश्वर मृदु बचन सुनावा ॥
 बिन्दुमती तैं परम सयानी * पतिपद रति दृढ़ हृदय समानी ॥
 बहुत करहुँ का तव गुण गाना * माँगु बेगि वर जो मनमाना ॥
 सुनत बचन लोचन जल बाढी * जोरि युगल कर दोऊ ठाढी ॥
 प्रभु तुम दानि देव तरुवर से * पद जलजात देखि सुरसरि से ॥
 परम पवित्र भई हम दोऊ * हम सम धन्य नारि नहिं कोऊ ॥

छन्द-कोधन्य हमसम नारि जगमहँ सुनहु श्रीरघुनायकं ।

दैं दरश कीन्ही पतित पावन नाथ सुर अरि धायकं ॥

अब कृपासागर यश उजागर देहु वर सुरभावरं ।

जेहि मिलैं पति कहँ जाइ बिनुश्रम बढै तव यश श्रीधरं ॥

सोरठा-यह कहि बिन्दु कुमारि, सहित सौति प्रभु पदपरी ।

तिन्है उठाइ खरारि, जगत्राता इमि कहत पुनि ॥

धरहु धीर तुम जनि अब डरहु ❀ निज पति लेहु भवन सुख करहु ॥
 कहेउ देव हम कहँ यह नीका ❀ हमहुँ कहत अब भावतजीका ॥
 गिरिजा सहित गिरीश बिरागी ❀ नाथ तुम्हार दरश अनुरागी ॥
 नारदादि सनकादिक जेते ❀ जपतप करहिं विविध विधि तेते ॥
 तेउ न कबहुँ हमारी नाई ❀ देखहिं पद जलजात अघाई ॥
 हरि दर्शन लवलेश प्रमाना ❀ जगके सब सुख नाहिं समाना ॥
 अमिय अघाइ गरल को खाई ❀ विनय हमारि यहै सुरसाई ॥
 देहु कन्त शिर सपदि मँगाई ❀ दया शील सागर रघुराई ॥

दोहा—नारान्तक कर शीश तब, दीन्ह मँगाइ रमेश ।

पाइ स्वामि शिर मुदित व्है, बोलीं दोउ उरगेश ॥

नाथ विनय हम औरौ करहीं ❀ दारु बिना हम केहि विधि जरहीं ॥
 सुखसागर सुनि बचन प्रमाना ❀ हनुमत अंगदादि भट नाना ॥
 कह प्रभु सखा लंक महँ धावहु ❀ चन्दन अंगर भार बहु लावहु ॥
 पाइ राम अनुशासन धाये ❀ लंका गढ़ गृह गृह सचुपाये ॥
 कपिन शोधि चन्दन बहु भारा ❀ लाये जहँ श्रीनाथ उदारा ॥
 कह रघुबीर सुनहु लंकेशा ❀ तात यहै बड़ हित उपदेशा ॥
 बिन्दुमती जहँ चाहत ठाऊ ❀ दाहभार सँग तुम तहँ जाऊ ॥
 दशकन्धर कर बैर बिहाई ❀ चिता चारु शुचि देहु बनाई ॥

दोहा—रघुवर आज्ञा धारि शिर, उठे दशानन भाइ ।

अयत भार चन्दन अंगर, तेहि सँग चले लिवाइ ॥

जहाँ जरी मघवाजित नारी ❀ तेहिं गहर शुचि चिता सँवारी ॥
 उहवाँ अपर सौति मनु नारी ❀ बिन्दुमती मन भाव पियारी ॥
 मूर्च्छित परी प्रथम सुधि नाहीं ❀ चली सुनत गति दुख मन माहीं ॥
 चली चतुर्दश निशिचरि कैसे ❀ निरखि दवास मृगी गण जैसे ॥
 हाहा बिन्दुमती पति प्यारी ❀ कहाँ गई तुम हमहिं बिसारी ॥
 पहुँची सह बिलाप तहँ सोऊ ❀ हरषी हृदय बिलोकत दोऊ ॥
 षोडश निशिचर भई सभागी ❀ मन वच क्रम पति पद अनुरागी ॥
 सकल अन्हाय मृतक अन्हवाई ❀ सुमिरत हृदय राम गतिदाई ॥

दोहा—उत दसकन्धर जगेउ शठ, सुनेउ श्रवण सब हेतु ।

संग मँदोदरि आदि तिय, गवनेउ लै स्वर्गकेतु ॥

वाजत ढोल कपिन मुनि काना * अपने मन किय अस अनुमाना ॥

आव युद्ध हित उत कोउ वीर * हम कहँ ठाढ़ करत यहि तीरा ॥

कीश अयुत तव प्रभु पहँ आये * पूरण प्रेम चरण शिर नाये ॥

नाथ उतहिँ दशकन्धर जाना * कीश एक कह सुनु जन त्राता ॥

प्रभु कह कुमुद तुरत तुम धावहु * बेगि विभीषण कहँ लै आवहु ॥

राम ग्जायसु शिर धरि धाये * मपदि विभीषण पहँ सो आये ॥

तात तुमहिँ रघुराज बुलावा * सुनत लंकपति आतुर आवा ॥

हेतु पतोहुन कहि ममुभावा * कुमुद सहित रघुपति पहँ आवा ॥

दोहा--मोह निशा कहँ तरुण रवि, तिन चरणन शिरनाइ ।

भाग्यवन्त रावण अनुज, बैठेउ प्रभु स्व पाइ ॥

दशमुख तिय न महितगा तहँवाँ * बिन्दुमती चितरेखा जहँवाँ ॥

देखत अति विलखा विबुधारी * करुणा करत निशाचरि झारी ॥

सासु मसुर कहँ देखि दुखारी * ज्ञान नवीन नरान्तक नारी ॥

कहि शुचि गाथ सबन समुभाई * स्वामि समेत चितापर आई ॥

यथा योग्य बैठी सब तैसे * पति गृह रहत रहीं नित जैसे ॥

अग्नि दीन्ह ज्वाला अति धाई * पहुँचीँ सुरपुर भव तिय जाई ॥

देखि दशा तिनकी सुररवनी * तिनहिँ सराहि भवन निज गवनी ॥

रावण सहित युवति निज गेहा * गयउ भवन सासति सन्देहा ॥

छंद—मन्देह सामति भरेउ रावण सहित दारनि गृह गयो ।

इमि मयसुतादिक निशिचरिन लखि विकल बल मुञ्चित भयो ॥

दशमाथ गति देखत विपुल विलखें निशाचर निशिचरी ।

मन्ताप शोक विलाप भय भ्रम कटक लंका महँ परी ॥

दोहा--राम विरोधहिँ जस उचित, तस दिन पहुँचा आइ ।

सो विचार करि लंकगढ़, उतरी विपति वजाइ ॥

इहाँ देव देवायसु जाना * वर आसन शोभित भगवाना ॥

यथा योग्य बैठे मृगशाखा * सब कीन्हे प्रभु पद अभिलाखा ॥

रिपुवड मरेउ हर्ष सबके मन * पुनि पुनि हेरत सुभग श्याम तन ॥
 तिनकी रुचि लखि दीनदयाला * शिव यश गावहु कहा कृपाला ॥
 भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई * गावहिं कपि कलकंट लजाई ॥
 डमरु भृंगि शृंगी करतारी * घ्राण पाणि मुखते बनचारी ॥
 गोंडर तन्तु बेणु मंजीरा * शंख मृदंग नाद गम्भीरा ॥
 नृत्यत कीश भाव दिखरावत * शिवा महित शिव कीरति गावत ॥

छन्द-शिव शिवा कीरति विमल गावत भालु बानर सुखभरे ।

अहिनाथ युत रघुनाथ छवि निरखत सकल चित पद धरे ॥

प्रभु देखि कौतुक अनुज सहित सखन बखानत श्रीमुखम् ।

तुलसी पगे यहि ध्यान जेजन पाइहैं नित यश सुखम् ॥

सोरठा--गतरजनी युग याम, तव कीशन करुणा अयन ।

करि पूरण मनकाम, सबनि कहेउ राजहु थलन ॥

वैठे निज निज थल रणधीरा * अनुज सहित राजत रघुवीरा ॥

सुखमा सीव सेन युत राजैं * जय जय ध्वनि कपि भालु समाजैं ॥

उमा चरित यह रुचिर सुहावा * नाथ कृपा मैं तुमहिं सुनावा ॥

अपर चरित गिरिराज कुमारी * सुनहु कहत तव प्रीति निहारी ॥

उहाँ मध्य निशि रावण जागा * कोउ कोउ सचिव सिखावन लागा ॥

उग्र सिखावन कहि बुध वाके * थके न कछु मन मानै ताके ॥

रावण मन औरै कछु लसई * मेटि को सकै जो विधि उर वमई ॥

प्रभु विरोध करि चह कल्याणा * मोह विवश सो सठ अज्ञाना ॥

वचन सुनत तेइ कछु सुख माना * काल विवश जस तीरथ ज्ञाना ॥

इति क्षेपक

निमा सिरानि भयउ भिनुमारा * लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥

सुभट बोलाइ दमानन बोला * रनसनमुख जा कर मन डोला ॥

मो अवहीं वरु जाउ पराई * संजुगविमुख भये न भलाई ॥

निज-भुज-बल मैं बैर बढ़ावा * देइहउँ उतरु जो रिपु चढ़ि आवा ॥

अस कहि मरुतवंग रथ साजा * बाजे सकल जुझाऊ वाजा ॥

चले वीर सब अतुलित बली * जनु कज्जल कै आँधी चली ॥

असगुन अमित होहिं तेहि काला * गनइ न भुजवल गर्ब विसाला ॥

छंद—अतिगर्व गनइ न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ तें ।

भट गिरत रथ तें वाजि गज चिक्करत भागहिं साथ तें ॥

गोमायु गीध कराल खरख स्वान बोलहिं अति घने ।

जनु कालदृत उल्क बोलहिं वचन परम भयावने ॥

दोहा--ताहि कि संपति सगुन सुभ, सपनेहु मन विस्वाम ।

भूत-द्रोह-रत मोहवस, रामविमुख रतकाम ॥७८॥

चलेउ निमा-चर-कटक अपारा * चतुरंगिनी अनी बहुधारा ॥

विविध भाँति वाहन रथ जाना * विपुल बरन पताक ध्वज नाना ॥

चले मत्त गजयूथ घनेरे * प्राविट-जल-द मरुत जनु प्रेरे ॥

बरन बरन विरदैत निकाया * ममरसूर जानहिं बहु माया ॥

अति विचित्र बाहिनी विराजी * वीर वमंत मेन जनु माजी ॥

चलत कटक दिगमिंधुर डगहा * लुभित पयोधि कुधर डगमगहीं ॥

उठी रेनु रवि गयउ झपाई * पवन थकित बसुधा अकुलाई ॥

पनव निमान घोरख वाजहिं * प्रलयसमय के घन जनु गाजहिं ॥

भेरि नफीर वाज सहनाई * मारू राग सुभट सुखदाई ॥

केहरिनाद वीर सब करहीं * निज निज बल पौरुष उच्चरहीं ॥

कहइ दमानन सुनहु सुभट्टा * मर्दहु भालु कपिन्ह के टट्टा ॥

हौं मारिहुँ भूप दोउ भाई * अस कहि सनमुख फौज रेंगाई ॥

यह सुधि सकल कपिन्ह जव पाई * धाये करि रघु-वीर-दोहाई ॥

छन्द—धाये विसाल कराल मरकट भालु काल समान ते ।

मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधरबंद नाना वान ते ॥

नख-दसन-सैल-महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।

जय राम रावन-मत्त-गज-मृग-राज सुजस बखानहीं ॥

दोहा--दुहुँ दिसिजय जयकार करि, निज निज जोरो जानि ।

भिरे वीर इत रघुपतिहिं, उत रावनहिं बखानि ॥७९॥

रावन रथी विरथ रघुवीरा * देखि विभीषन भयउ अधीरा ॥

अधिकप्रीति मन भा संदेहा * बंदि चरन कह सहित सनेहा ॥

नाथ न रथ नहिं तनु पदत्राना * केहि विधि जितव वीर बलवाना ॥
 सुनहु सखा कह कृपानिधाना * जेहि जय होइ मो स्यंदन आना ॥
 सौरज धीरज तेहि रथ चाका * सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
 बल विवेक दम परहित घोरे * छमा कृपा समता रजु जोरे ॥
 ईसभजन सारथी सुजाना * विरति चर्म मंतोप कृपाना ॥
 दान परसु बुधि सक्ति प्रदंडा * वर विभ्यान कटिन कौदंडा ॥
 अमल अचल मन त्रोनसमाना * सम जम नियम सिलीमुख नाना ॥
 कवच अभेद विप्र-गुरु-पूजा * यहि सम विजय उपाय न दृजा ॥
 सखा धर्ममय अस रथ जा कें * जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ता कें ॥
 दोहा--महा अजय संसाररिपु, जीति सकइ सो वीर ।

जा कें अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर ॥

सुनि प्रभु वचन विभोपन, हरपि गहे पदकंज ।

एहि मिस मोहि उपदेसेहु, रामकृपा सुखपुंज ॥

उत प्रचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान ।

लरत निसाचर भालु कपि, करि निज निज प्रभु आन ॥८०॥

सुर ब्रह्मादि मिद्ध मुनि नाना * देखत रन नभ चहुं विमाना ॥
 हमहुँ उमा रहे तेहि मंगा * देखत राम-चरित-रन-रंगा ॥
 सुभट समर रस दुहुँ दिसि माते * कपि जयसील गम बल ताते ॥
 एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं * एकन्ह एक मदि महि पारहिं ॥
 मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं * सीम तोरि सीसन्ह मन मारहिं ॥
 उदर विदारहिं भुजा उपारहिं * गहि पद अवनि पट कि भट डारहिं ॥
 निसिचर भट महि गाड़हिं भालू * उपर डारि देहिं बहु बालू ॥
 वीर बलीमुख जुद्ध विरुद्धे * देखिअत विपुल काल जनु क्रुद्धे ॥

छन्द-क्रुद्धे कृतांत समान कपि तनु स्रवत मोनित राजहीं ।

मर्दाहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं ॥

मारहिं चपेटन्हि डाँटि दाँतन्हि काटि लातन्हि मीजहीं ।

चिक्करहिं मरकट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं ॥

धरि गाल फारहिं उर विदारहिं गल अँतावरि मेलहीं ।

प्रह्लादपति जनु विविध तनु धरि समरअंगन खेलहीं ॥
 धरु मारु काटुपद्धारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।
 जय राम जो तून तें कुलिस कर कुलिस तें तून कर सही ॥
 दोहा—निज दल विचलत देखेसि, बीस भुजा दस चाप ।

रथ चढ़ि चलेउ दसानन, फिरहु फिरहु करि दाप ॥८१॥

धायेउ परम क्रुद्ध दसकंधर * सनमुख चले हूह दै बंदर ॥
 गहि कर पादप उपल पहारा * डारेहिं ता पर एकहि वारा ॥
 लागहिं सैल वज्रतनु तासू * खंड खंड होइ फूटहिं आसू ॥
 चला न अचल रहा रथ रोपी * रनदुर्मद रावन अति कोपी ॥
 इत उत भपटि दपटि कपिजोधा * मदै लाग भयेउ अति क्रोधा ॥
 चले पराइ भालु कपि नाना * त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
 पाहि पाहि रघुवीर गोसाई * यह खल खाइ काल की नाई ॥
 तेहि देखे कपि सकल पराने * दमहुँ चाप सायक संधाने ॥
 छन्द—मंधानि धनु सरनिकर झाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं ।
 रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि विदिसि कहँ कपि भागहीं ॥
 भयो अति कोलाहल विकल कपि दल भालु बोलहिं आतुरे ।
 रघुवीर करुनासिंधु आरतबंधु जनरच्छक हरे ॥

दोहा--निजदल विकल देखि कटि, कसि निपंग धनु हाथ ।

लाछमनु चले सक्रुद्ध होइ, नाइ रामपद माथ ॥८२॥

रे खल का मारसि कपि भालू * मोहि विलोकु तोर मैं कालू ॥
 खोजत रहेउँ तोहि सुतघाती * आजु निपाति जुड़ावउँ छाती ॥
 अस कहि झाड़ेसि वान प्रचंडा * लछिमन किये मकल सतखंडा ॥
 कोटिन्ह आयुध रावन डारे * तिल प्रवान करि काटि निवारे ॥
 पुनि निज वानन्ह कीन्ह प्रहारा * स्यंदन भंजि सारथी मारा ॥
 सत मत सर मारे दस भाला * गिरिखिंगन्ह जनु प्रविसहिं व्याला ॥
 मत सर पुनि मारा उर माहीं * परेउ अवनितल सुधि कहु नाहीं ॥
 उठा प्रवल पुनि मुरुखा जागी * झाँड़ेसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी ॥

छन्द--सो ब्रह्मदत्त प्रचंडसक्ति अनंतउर लागी सही ।
परथौ बीर विकल उठाव दसमुख अतुलबल महिमा रही ॥
ब्रह्मांड भुवन विराज जा के एक सिर जिमि रजकनी ।
तेहि चह उठावन मूढ रावन जान नहिं त्रिभुवन-धनी ॥

दोहा--देखि पवनसुत धायहु, बोलत वचन कठोर ।

आवत कपिहि हनेउ तेहि, मुष्टिप्रहार प्रघोर ॥८३॥

जानु टंकि कपि भूमि न गिरा * उठा सँभारि बहुत रिसभरा ॥
मुठिका एक ताहि कपि मारा * परेउ सैल जनु बज्रप्रहारा ॥
मुरुझा गइ बहोरि सो जागा * कपिवल विपुल सराहन लागा ॥
धिग धिग मम पौरुष धिग मोही * जौं तैं जियत उठेसि सुरद्रोही ॥
अस कहि लज्जिमन कहूँ कपि ल्यायो * देखि दमानन विस्मय पायो ॥
कह रघुवीर ममुभु जिय भ्राता * तुम्ह कृतांतभञ्जक सुरत्राता ॥
सुनत वचन उठि बैठ कृपाला * गई गगन सो मक्ति कराला ॥
पुनि कोदंडवान गहि धाये * रिपुसनमुख अतिआतुर आये ॥

छंद--आतुर बहोरि विभंजि स्यंदन सूत हति व्याकुल कियो ।

गिरथौ धरनि दसकंधर विकलतर बानमत वेध्यो हियो ॥
मारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।
रघु--वीर-बंधु प्रतापपुंज बहोरि प्रभुचरनन्हि नयो ॥

दोहा--उहाँ दसानन जागि करि, करै लाग कछु जग्य ।

राम विरोध विजय चहत, सठ हठबस अतिअग्य ॥८४॥

इहाँ विभीषन सब सुधि पाई * सपदि जाइ रघुपतिहिं सुनाई ॥
नाथ करइ रावनु एक जागा * सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा ॥
पठवहु देव वेगि भट वंदर * करहिं विधंस आव दसकंधर ॥
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये * हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका * पैठ रावनभवन अमंका ॥
जग्य करत जवहीं सो देखा * सकल कपिन्ह भा क्रोध विसेखा ॥
रन तैं निलज भाजि गृह आवा * इहाँ आइ बकध्यान लगावा ॥
अस कहि अंगद मारेउ लाता * चितव न मठ स्वारथ मन राता ॥

छन्द-नहिं चितव जव कपि कोपि तव गहि दमन लातन्ह मारहीं ।
 धरि केम नारि निकारि वाहेर तेजतिदीन पुकारहीं ॥
 तव उठउ क्रुद्ध कृतांतमम गहि चरन वानर डारई ।
 एहि बीच कपिन्ह विधंमकृत मख देखि मन महँ हारई ॥

दोहा-मख विधंसि कपि कुसल सब, आये रघुपांति पास ।

चलेउ लंकपति क्रुद्ध होइ, त्यागि जिवन कै आस ॥८५॥

चलत होहिं अति अमुभ भयंकर * बैठहिं गीध उड़ाहिं भिरन्ह पर ॥
 भयउ कालवस काहु न माना * कहेसि बजावहु जुद्धनिसाना ॥
 चली तमी - चर-अनी अपारा * बहु गज रथ पदाति अमवारा ॥
 प्रभु मनमुख धाये खल कैमें * मलभममूह अनल कहँ जेमें ॥
 इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्हो * दारुनविपति हमहिं एहि दीन्ही ॥
 अब जनि राम खेलावहु एही * अतिमय दुखित होति वैदेही ॥
 देववचन मुनि प्रभु मुमुकाना * उठि रघुवीर सुधारे वाना ॥
 जटाजूट दृढ़ बाँधे माथे * सोहहिं सुमन बीच विच गाँथे ॥
 अरुननयन वारिद-तनु-स्यामा * अखिल-लोक-लोचन-अभिरामा ॥
 कपितट परिकर कसेउ निपंगा * कर कोदंड कठिन सारंगा ॥

छन्द-मारंग कर मुंदर निपंग मिलीमुखाकर कटि कस्यो ।

भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरा-सुर-पद लस्यो ॥

कह दास तुलसी जवहिं प्रभु सरचाप कर फेरन लगे ।

ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे ॥

दोहा-हरपे देव विलोकि छवि, वरपहिं सुमन अपार ।

जय जय प्रभु गुन-ग्यान-बल-धाम हरन महिभार ॥८६॥

एही बीच निमा-चर-अनी * कसमसाति आई अतिवनी ॥
 देखि चले मनमुख कपि भट्टा * प्रलय काल के जनु घनघट्टा ॥
 बहुकृपान तरवारि चमंकहिं * जनु दम दिसि दामिनी दमंकहिं ॥
 गज रथ तुरग चिकार कठोरा * गर्जहिं मनहुँ वलाहक घोरा ॥
 कपिलंगूर विपुल नभ छाये * मनहुँ इंद्रधनु उये सुहाये ॥
 उठइ धूरि मानहुँ जलधारा * बान बंद भइ बृष्टि अपारा ॥

दुहुँ दिसि पर्वत करहिं प्रहारा * बज्रपात जनु बारहिं वाग ॥
 रघुपति कोपि वानभरि लाई * घायल भे निसि-चर-समुदाई ॥
 लागत वान वीर चिकरहीं * घुमि घुमि जहँ तहँ महि परहीं ॥
 खवहिं सैल जनु निर्भरवारी * सोनित सरि कादर भयकारी ॥

छंद-कादर भयंकर रुधिरसरिता चली परम अपावनी ।
 दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अघूर्त्त बहति भयावनी ॥
 जलजंतु गज पदचर तुरग खर विविध वाहन को गने ।
 सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दोहा-वीर परहिं जनु तीरतरु, मज्जा बहु बह फेन ।

कादर देखि डराहिं तेहि, सुभटन के मन चैन ॥८७॥

मज्जहिं भूत पिसाच बेताला * प्रथम महा झोटिंग कराला ॥
 काक कंक लै भुजा उड़ाहीं * एक ते छीनि एक लै खाहिं ॥
 एक कहहिं ऐसिउ साँघाई * सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥
 कहँरत भट घायल तट गिरे * जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥
 खैचहिं गीध आँत तट भये * जनु बंसी खेल्हिं चित दये ॥
 बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं * जनु नावरि खेलहिं मरि माहीं ॥
 जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं * भूत - पिमाच - वधू नभ नंचहिं ॥
 भट कपाल करताल वजावहिं * चामुंडा नानाविधि गावहिं ॥
 जंबुकनिकर कटक्कट कट्टहिं * खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥
 कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहिं * सीम परे महि जय जय बोल्लहिं ॥
 छन्द-बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड मिर विनु-धावहीं ।

खप्परिन्ह खगग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह दहावहीं ॥

निसि-चर-ब्रूथ विमर्दि गरजहिं भालु कपि दर्पित भये ।

संग्रामअंगन सुभट सोवहिं राम-सर-निकरन्हि हये ॥

दोहा-रावन हृदय विचारा, भा निसिचर संहार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु, माया करों अपार ॥८८॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा * उपजा उर अतिबोभ विसेखा ॥

सुरपति निजरथ तुरत पठाया * हरपसहित मातलि लै आवा ॥

तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा * हरषि चढे कोसल-पुर-भूपा ॥
 चंचल तुरग मनोहर चारी * अजर अमर मन-सम-गति-कारी ॥
 रथारूढ रघुनाथहि देखी * धाये कपि बल पाइ बिसेखी ॥
 सही न जाइ कपिन्ह के मारी * तव रावन माया विस्तारी ॥
 सो माया रघुबीरहिँ बाँची * सब काहू मानी करि साँची ॥
 देखी कपिन्ह निमा-चर-अनी * अनुजसहित बहु कोसलधनी ॥

छन्द—बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।
 जनु चित्रलिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिँ खरे ॥
 निजसेन चकित विलोकि हँसि सर चाप सजि कोसलधनी ।
 माया हरी हरि निमिष महँ हरषी सकल मरकटअनी ॥

दोहा—बहुरि राम सब तन चितइ, बोले बचन गँभीर ।

द्वंद्वद्व देखहु सकल, समित भये अति बीर ॥८६॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा * विप्र-चरन-पंकज सिरु नावा ॥
 तव लंकेस क्रोध उर छावा * गर्जत तर्जत सनमुख धावा ॥
 जीतेहु जे भट संजुग माहीं * सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाही ॥
 रावन नाम जगत जस जाना * लोकप जा के बंदीखाना ॥
 खर-दृषन-कबंध तुम्ह मारा * बधेहु ब्याध इव बानि विचारा ॥
 निसिचर-निकर सुभट संहारेहु * कुंभकरन घननादहिँ मारेहु ॥
 आजु बैरु सब लेउँ निवाही * जौं रन भूप भाजि नहिँ जाही ॥
 आजु करउँ खलु कालहवाले * परेहु कठिन रावन के पाले ॥
 सुनि दुर्बचन कालवस जाना * बिहँसि बचन कह कृपानिधाना ॥
 सत्य सत्य मव तव प्रभुताई * जलपसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

छन्द—जनि जलपना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि अमा ।

संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल-रसाल-पनस-समा ॥

एक सुमनप्रद एक सुमनफल एक फलइ केवल लागहीं ।

एक कहहिँ कहहिँ करहिँ अपर एक करहिँ कहत न बागहीं ॥

दोहा--रामबचन सुनि बिहँसिकह, मोहि सिखावत ग्यान ।

बयरु करत नहिँ तव डरे, अब लागे प्रिय प्रान ॥६०॥

कहि दुर्वचन क्रुद्ध दसकंधर * कुलिससमान लाग छाड़ै मर ॥
 नानाकार सिलीमुख धाये * दिसि अरु बिदिसि गगन महि छाये ॥
 अनलवान छाड़ेउ रघुवीरा * छन महँ जरे निसा-चर-तीरा ॥
 छाड़ेसि तीव्र सक्ति खिसिआई * बानसंग प्रभु फेरि पटाई ॥
 कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारइ * बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारइ ॥
 निफल होहिं रावन सर कैसें * खल के सकल मनोरथ जैसें ॥
 तव सतवान सारथी मारेसि * परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥
 राम कृपा करि सूत उठावा * तव प्रभु परमक्रोध कहँ पावा ॥

छन्द-भये क्रुद्ध जुद्धविरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे ।

कोदंडधुनि अतिचंड सुनि मनुजाद सब मारुत त्रसे ॥

मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे ।

चिकरहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥

दोहा-तानेउ चाँप सवन लगि, छाँड़े विसिख कराल ।

राम-मारगन-गन चले, लहलहात जनु ब्याल ॥६१॥

चले वान सपच्छ जनु उरगा * प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥
 रथ विभंजि हति केतु पताका * गर्जा अति अंतर बल थाका ॥
 तुरत आन रथ चढ़ि खिसिआना * अस्र सस्र छाँड़ेसि विधि नाना ॥
 विफल होहिं सब उद्यम ता के * जिमि परद्रोह-निरत-मनसा के ॥
 तव रावन दस मूल चलावा * बाजि चारि महि मारि गिरावा ॥
 तुरग उठाइ कोपि रघुनायक * खँचि मरासन छाड़े मायक ॥
 रावन-सिर-सरोज-वन-चारी * चलि रघुवीर सिलीमुख धारी ॥
 दस दस वान भाल दस मारे * निसरि गये चले रुधिरपनारे ॥
 सवत रुधिर धायउ बलवाना * प्रभु पुनि कृत धनु-सर-मंधाना ॥
 तीस तीर रघुवीर पवारे * भुजन्ह समेत सीस महि पारे ॥
 काटतही पुनि भये नवीने * राम बहोरि भुजासिर छीने ॥
 कटत झटिति पुनि नूतन भये * प्रभु बहु वार बाहु सिर हये ॥
 पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा * अतिकौतुकी कोमलाधीसा ॥
 रहे छाड़ि नभ सिर अरु बाहु * मानहुँ अमित केतु अरु राहु ॥

छन्द-जनु राहु केतु अनेक नभपथ स्वतमोनित धावहीं ।
 रघुवीर-तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
 एक एक सर मिरनिकर छेदे नभ उड़त इमि सोहहा ।
 जनु कोपि दिनकर-कर-निकर जहँ तहँ विधुंतुद पोहहीं ॥

दोहा--जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर, तिमि तिमि होहिं अपार ।

सेवत विषय विवर्ध जिमि, नित नित नतन मार ॥६२॥

दसमुख देखि मिरन्ह कै वाढ़ी * धिमरा मरन भई रिम गाढ़ी ॥
 गर्जेउ मूढ महा अभिमानी * धायउ दमहु सरासन तानी ॥
 ममरभूमि दसकंधर कोप्यो * वरपि वान रघु-पति-रथ तोप्यो ॥
 दंड एक रथ देखि न परा * जनु निहार महँ दिनमनि दुरा ॥
 हाहाकार सुरन्ह जव कीन्हा * तव प्रभु कोपि कार्मकहि लीन्हा ॥
 सर निवारि रिपु के मिर काटे * ते दिमि विदिमि गंगन महि पाटे ॥
 काटे मिर नभमारग धावहिं * जय जय धुनि करि भय उपजावहिं ॥
 कहँ लल्लिमन हनुमान कपीसा * कहँ रघुवीर कोसलाधीसा ॥

छन्द-कहँ राम कहि मिरनिकर धाये देखि मर्कट भजि चले ।

संधानि धनु रघु-वंस-मनि हँमि सरन्ह मिर भेदे भले ॥

मिरमालिका गहि कालिका कर बृंद बृदन्हि बहु मिलीं ।

करि रुधिरमरि मज्जन मनहुँ संग्रामवट पूजन चलीं ॥

दोहा--पुनि दसकंठ क्रुद्ध है, छाँड़ी सक्ति प्रचंड ।

चली विभीषन सनमुख, मनहुँ काल कर दंड ॥६३॥

आवत देखि सक्ति खरधारा * प्रनतारतिहर विरद सँभारा ॥
 तुरस विभीषन पाछे मेला * मनमुख राम सहेउ सो सेला ॥
 लागि सक्ति मुरुब्बा कछु भई * प्रभु कृत खेल सुरन्ह विकलई ॥
 देखि विभीषन प्रभु सम पायउ * गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायउ ॥
 रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे * तँ सुर नर मुनि नाग विरुद्धे ॥
 सादर सिव कहँ सीम चढ़ाये * एक एक के कोटिन्ह पाये ॥
 तेहि कारन खल अत्र लागि वाँचा * अत्र तव काल सीम पर नाँचा ॥
 रामविमुख सठ चह संपदा * अस कहि हनेमि माँझ उर गदा ॥

छन्द-उर माँझ गदाप्रहार घोर कठोर लागत महि पन्थो ।
 दमवदन सोनित स्रवत पुनि संभारि धायउ रिम भन्थो ॥
 दोउ भिरे अतिबल मल्ल जुद्ध विरुद्ध एक एकहि हने ।
 रघु-वीर-बल-गर्वित विभीषन घालि नहिं ता कहँ गने ॥

दोहा--उमा विभीषन रावनहिं, सनमुख चितव कि काउ ।

भिरत सो कालसमान अब, श्री-रघु-वीर-प्रभाउ ॥६४॥

देखा समित विभीषन भारी * धायउ हनुमान गिरिधारी ॥
 रथ तुरंग मारथी निपाता * हृदय माँझ तेहि मारेमि लाता ॥
 ठाढ़ रहा अतिकंपित गाता * गयउ विभीषनु जहँ जनत्राता ॥
 पुनि रावन तेहि हतेउ प्रचारी * चला गगन कपि पूछ पमारी ॥
 गहेमि पूछ कपिमहित उड़ाना * पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना ॥
 लरत अकाश जुगल सम जोधा * हनत एक एकहिं करि क्रोधा ॥
 सोहहिं नभ बल बल बहु करहीं * कज्जल गिरि मुमेरु जनु लरहीं ॥
 बुधिवल निमिचर परइ न पारा * तव मारुतमुत प्रभु संभारा ॥
 छन्द-संभारि श्री-रघु-वीर धीर प्रचारी कपि रावन हन्थो ।

महि परत पुनि उठि लरत देवन जुगल कहँ जय जय भन्थो ॥
 हनुमंत मंकट देखि मंकट भालु क्रोधातुर चले ।
 रनमत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलमले ॥

दोहा--तव रघुवीर प्रचारे, धाये कौस प्रचंड ।

कपिदल प्रबल देखि तेहि, कीन्ह प्रगट पाखंड ॥६५॥

अंतरधान भयउ छन एका * पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥
 रघु-पति-कटक भालु कपि जेते * जहँ तहँ प्रगट दमानन तेते ॥
 देखे कपिन्ह अमित दससीमा * भाग भालु विकल भट कीसा ॥
 चले वलीमुख धरहिं न धीरा * त्राहि त्राहि लडिमन रघुवीरा ॥
 दह दिमि कोटिन्ह धावहिं रावन * गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
 डरे मकल सुर चले पराई * जय के आम तजहु अव भाई ॥
 मव सुर जिते एक दसकंधर * अब बहु भये तकहु गिरिकंदर ॥
 रहे विरंचि संभु मुनि ग्यानी * तिन्ह जिन्ह प्रभुमहिमा कलु जानी ॥

छन्द-जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।
 चले विचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ॥
 हनुमंत अंगद नील नल अतिवल लरत रनवाँकुरे ।
 मर्दाहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपटभू भट अंकुरे ॥

दोहा-सुर वानर देखे विकल, हँसे कोसलाधीस ।

सजि सारंग एक सर, हते सकल दससीस ॥६६॥

प्रभु छन महुँ माया सब काटी * जिमि रवि उये जाहिं तम फाटी ॥
 रावनु एकु देखि सुर हरपे * फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरपे ॥
 भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे * फिरे एक एकन्ह तव टेरे ॥
 प्रभुबल पाइ भालु कपि धाये * तरल तमकि संजुगमहि आये ॥
 अस्तुति करत देव तेहि देखे * भयउँ एक मै इन्ह के लेखे ॥
 सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल * अस कहि कोपि गगनपथ घायल ॥
 हाहाकार करत सुर भागे * खलहु जाहु कहँ मोरें आगे ॥
 विकल देखि सुर अंगद धावा * कूदि चरन गहि भूमि गिरावा ॥

छन्द-गहि भूमि पान्यौ लात मान्यौ बालिसुत प्रभु पहिं गयो ।
 संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो ॥
 करि दाप चाप चढ़ाइ दस मंधान सर बहु बरषई ।
 किये सकल भट घायल भयाकुल देखि निजवल हरषई ॥

दोहा-तव रघुपति रावन के, सीस भुजा सर चाप ।

काटे बहुत बड़े पुनि, जिमि तीरथ कर पाप ॥६७॥

सिर भुज वाढ़ि देखि रिपु केरी * भालुकपिन्ह रिस भई घनेरी ॥
 मरत न मूढ़ कटेहु भुज सीसा * धाये कोपि भालु भट कीसा ॥
 बालितनय मारुति नल नीला * बानरराज दुविद बलसीला ॥
 विटप महीधर करहिं प्रहारा * सोइ गिरि तरु गहि कपिन्ह सो मारा ॥
 एक नखन्ह रिपुवपुष विदारी * भागि चलहिं एक लातन्ह मारी ॥
 तव नल नील सिरन्ह चढ़ि गये * नखन्ह लिलार विदारत भये ॥
 रुधिर विलोकि सकोप सुरारी * तिन्हहिं धरन कहँ भुजा पसारी ॥
 गहे न जाहिं करन्ह पर फिरहीं * जनु जुग मधुप कमलवन चरहीं ॥

कोपि क्रुदि दोउ धरेसि वहोरी * महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥
 पुनि सकोप दस धनु कर लीन्हे * सरन्ह मारि घायल कपि कीन्हे ॥
 हनुमदादि मुरुञ्चित करि बंदर * पाइ प्रदोष हरष दसकंधर ॥
 मुरुञ्चित देखि सकल कपिबीरा * जामवंत धायउ रनधीरा ॥
 मंग भालु भूधर तरु धारी * मारन लगे प्रचारि प्रचारी ॥
 भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना * गहि पद महि पटकइ भट नाना ॥
 देखि भालुपति निज-दल-घाता * कोपि माँझ उर मारेसि लाता ॥
 छन्द-उर लात घात प्रचंड लागत विकल रथ तें महि परा ।
 गहि भालु वीसहु कर मनहुँ कमलन्ह वसे निसि मधुकरा ॥
 मुरुञ्चित विलोकि वहोरि पदहति भालुपति प्रभु पहिँ गयो ।
 निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तव सूत जतनु करत भयो ॥
 दोहा--मुरुञ्छा विगत भालु कपि, सब आये प्रभु पास ।

निसिचर सकल रावनहिँ, घेरि रहे अतित्रास ॥६८॥

तेही निसि सीता पहिँ जाई * त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥
 सिर भुज वाढ़ि सुनत रिपु केरी * सीता उर भइ त्राम घनेरी ॥
 मुख मलीन उपजी मन चिंता * त्रिजटा मन बोली तव सीता ॥
 होइहि काह कहसि किन माता * केहि विधि मरिहि विस्व-दुख-दाता ॥
 रघु-पति-सर सिर कटेहु न मरई * विधि विपरीत चरित सब करई ॥
 मोर अभाग्य जिआवत ओही * जेहिहौं हरि-पद-कमल विछोही ॥
 जेहि कृत कपट कनकमृग भूठा * अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥
 जेहि विधि मोहि दुख दुसह सहाये * लछिमन कहँ कटु वचन कहाये ॥
 रघु-पति-विरह सविष सर भारी * तकि तकि मार वार बहु मारी ॥
 ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राणा * सोइ विधि ताहि जिआवन आना ॥
 बहु विधि करति विलाप जानकी * करि करि सुरति कृपानिधान की ॥
 कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी * उर सर लागत मरइ सुरारी ॥
 प्रभु ता तें उर हतइ न तेही * एहि के हृदय वमति वैदेही ॥
 छन्द-एहि के हृदय बस जानकी जानकी उर मम वास है ।

मम उदर भुवन अनेक लागत वान सब कर नास है ॥

सुनि वचन हरष विपाद मन अति देखि पुनि त्रिजटा कहा ।

अव मरिहि रिपु एहि विधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा ॥

दोहा--काटत सिर होइहि विकल, छुटि जाइहि तव ध्यान ।

तव रावन कहँ हृदय महँ, मरिहिहिं राम सुजान ॥६६॥

अम कहि बहुत भाँति समुझाई * पुनि त्रिजटा निजभवन सिधाई ॥

रामसुभाउ सुमिरि वैदेही * उपजी विरहव्यथा अति तेही ॥

निमिहि समिहि निंदति बहु भाँती * जुग मम भई न राति मिराती ॥

करति विलाप मनहिं मन भारी * रामविरह जानकी दुखारी ॥

जव अति भयउ विरह उर दाहू * फरकेउ वाम नयन अरु बाहू ॥

सगुन विचारि धरी मन धीरा * अव मिलिहहिं कृपाल रघुवीरा ॥

इहाँ अर्धनिमि रावन जागा * निजमारथि सन खीझन लागा ॥

सठ रनभूमि छडायसि मोही * धिग धिग अधम मंदमति तोही ॥

तेहिं पद गहि बहु त्रिधि समुझावा * भोर भये रथ चढि पुनि धावा ॥

सुनि आगमन दसानन केरा * कपिदल खरभर भयउ घनेरा ॥

जहँ तहँ भूधर विटप उपारी * धायँ कटकटाइ भट भारी ॥

छंद—धाये जो मर्कट विकट भालु कराल कर भूधर धरा ।

अति कोपि करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा ॥

विचलाइ दल वलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावन लियो ।

चहँ दिसि चपेटन्ह मारि नखन्हि विदारि तनु व्याकुल कियो ॥

दोहा--देखि महा मर्कट प्रबल, रावन कीन्ह विचार ।

अंतरहित होइ निमिष महँ, कृतमाया विस्तार ॥१००॥

तोमरछंद—जव कीन्ह तेहि पाखंड * भये प्रगट जंतु प्रचंड ॥

वेताल भूत पिसाच * कर धरे धनु नाराच ॥

जोगिनि गहे करवाल * एक हाथ मनुजकपाल ॥

करि सद्य सोनित पान * नाचहिं करहिं बहु गान ॥

धरु मारु बोलहिं घोर * रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥

मुख बाइ धावहिं खान * तव लगे कीस परान ॥

जहँ जाहिं मर्कट भागि * तहँ वरत देखहिं आगि ॥

भये विकल बानर भालु * पुनि लाग बरपै बालु ॥
 जहँ तहँ थकित करि कीस * गजेउ बहुरि दसमीस ॥
 लछिमन कपीमसमेत * भये सकल वीर अचेत ॥
 हा राम हा रघुनाथ * कहि सुभट मीजहिं हाथ ॥
 एहिबिधिसकलबल तोरि * तेहि कीन्ह कपट बहोरि ॥
 प्रगटेसि विपुल हनुमान * धाये गहे पापान ॥
 तिन्ह राम घेरें जाइ * चहुँ दिसि वरूथ बनाइ ॥
 मारहु धरहु जनि जाइ * कटकटहिं पूछ उठाइ ॥
 दस दिमि लँगूर विराज * तेहि मध्य कोसलराज ॥

छंद—तेहि मध्य कोसलराज सुंदर स्यामतन मोभा लही ।
 जनु इंद्रधनुष अनेक की बर वारि तुंग तमालही ॥
 प्रभु देखि हरष विपाद उर सुर बदत जय जय जय करी ।
 रघुवीर एकहि तीर कोपि निमेष महँ माया हरी ॥
 माया विगत कपि भालु हरषे विटप गिरि गहि सब फिरे ।
 सरनिकर झाड़े राम रावन-बाहु-सिर पुनि महि गिरे ॥
 श्रीराम-रावन समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
 सत सेष सारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥

दोहा—ता के गुन गन कछु कहे, जड़मति तुलसीदास ।

निज-पौरुष-अनुसार जिमि, मसक उड़ाहिं अकास ॥

काटे सिरभुज बार बहु, मरत न भट लंकेस ।

प्रभुक्रोड़तमुनि सिद्ध सुर, व्याकुल देखि कलेस ॥ १०१ ॥

कायत बढ़हिं सीसममुदाई * जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥
 मरइ न रिपु स्रम भयउ विसेखा * राम विभीषनतन तब देखा ॥
 उमा काल मरु जा की ईछा * मोइ प्रभु जन कर प्रीतिपरीछा ॥
 सुनु सर्वग्य चराचर नायक * प्रनतपाल सुर-मुनि-सुख-दायक ॥
 नाभीकुंड सुधा वस या कें * नाथ जियत रावन बल ता कें ॥
 सुनत विभीषनवचन कृपाला * हरपि गहे कर बान कराला ॥
 असुभ होन लागे तब नाना * रोवहिं बहु सृगाल खर स्वाना ॥

बोलहिं स्वग जग-आरति-हेतू * प्रगट भये नभ जहँ तहँ केतू ॥
 दस दिमि दाह होन अति लागा * भयउ परव विनु रविउपरागा ॥
 मंदोदरि उर कंपति भारी * प्रतिमा स्वहिं नयनमग वारी ॥

छन्द-प्रतिमा स्वहिं पवि तात नभ अतिवात बहु डोलति मही ।

वरषहिं बलाहक रुधिरु कच रज असुभ अतिसक को कही ॥

उतपात अमित विलोकि नभ सुर विकल बोलहिं जय जये ।

सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भये ॥

दोहा--खैचि सरासन सवन लागि, छाड़े सर एकतीस ।

रघुनायक-सायक चले, मानहुँ काल फनीस ॥१०२॥

मायक एक नाभिसर सोखा * अपर लगे सिर-भुज करि रोखा ॥

लै सिर बाहु चले नाराचा * सिर-भुज-हीन रुंड महि नाचा ॥

धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा * तव प्रभु सर हति कृत जुग खंडा ॥

गजेंउ मरत घोररव भारी * कहाँ राम रन हतौ प्रचारी ॥

डोली भूमि गिरत दसकंधर * लुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर ॥

धरनि परेउ दोउ खंड बढ़ाई * चापि भालु - मर्कट - समुदाई ॥

मंदोदरि आगे भुज सीसा * धरि सर चले जहाँ जगदीसा ॥

प्रविसे सब निषंग महुँ जाई * देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ॥

तासु तेज समान प्रभुआनन * हरषे देखि मंभु चतुरानन ॥

जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा * जय रघुवीर प्रबल-भुज-दंडा ॥

वरषहिं सुमन देव-मुनि-बृंदा * जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥

छन्द-जय कृपाकंद मुकुंद द्वंदहरन सरन-सुख-प्रद प्रभो ।

खल-दल-विदारन परमकारन कारुनीक सदा विभो ॥

सुर सुमन वरषहिं हरष संकुल वाज दुंदुभि गहगही ।

संग्रामअंगन रामअंग अनंग बहु सोभा लही ।

सिर जटामुकुट प्रसून विच विच अति मनोहर राजहीं ।

जनु नीलगिरि पर तडित पटल समेत उडुगुन भ्राजहीं ॥

भुजदंड सरकोदंड फेरत रुधिरकन तन अति बने ।

जनु रायमुनी तमाल पर बैठीं विपुल सुख आपने ॥

दोहा--कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किये सुखबृंद ।

भालु कीस सब हरपे, जय सुखधाम मुकुंद ॥१०३॥

पतिसिर देखत मंदोदरी * मुरुच्छित विकल धरनि खासि परी ॥
 जुवतिबृंद रोवत उठि धाई * तेहि उठाइ रावन पहिं आई ॥
 पतिगति देखि ते करहिं पुकारा * छूटे कच नहिं वपुष सँभारा ॥
 उरताड़ना करहिं विधि नाना * रोवत करहिं प्रताप बखाना ॥
 तव बल नाथ डोल नित धरनी * तेजहीन पावक सप्ति तरनी ॥
 सेष कमठ सहि सकहिं न भारा * सो तनु भूमि परेउ भरि छारा ॥
 वरुन कुबेर सुरेस समीरा * रन सनमुखधर काहु न धीरा ॥
 भुजबल जितेहु काल जम साई * आजु परेहु अनाथ की नाई ॥
 जगतविदित तुम्हारि प्रभुताई * सुत परिजन बल वरनि न जाई ॥
 रामविमुख अस हाल तुम्हारा * रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ॥
 तव बस विधिप्रपंच सब नाथा * सभय दिसिप नित नावहिं माथा ॥
 अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं * रामविमुख यह अनुचित नाहीं ॥
 कालविवस पति कहा न माना * अग-जग-नाथु मनुज करि जाना ॥
 छन्द-जानेउ मनुज करि दनुज-कानन-दहन-पावक हरि स्वयं ।

जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥

आजन्म तें पर-द्रोह-रत पापौघमय तव तनु अयं ।

तुम्हहँ दियो निजधाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दोहा--अहह नाथ रघुनाथ सम, कृपासिंधु नहिं आन ।

मानदुर्लभ जो परमगति, तोहि दीन्हि भगवान ॥१०४॥

मंदोदरीबचन सुनि काना * सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना ॥
 अज महेस नारद सनकादी * जे मुनिवर परमारथवादी ॥
 भरि लोचन रघुपतिहिं निहारी * प्रेममगन सब भये सुखारी ॥
 रुदन करत देखी सब नारी * गयउ विभीषन मन दुख भारी ॥
 बंधुदसा बिलोकि दुख कीन्हा * राम अनुज कहँ आयसु दीन्हा ॥
 लछिमन तेहि बहुविधि समुझायो * बहुरि विभीषन प्रभु पहिं आयो ॥

कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलोका * करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥
कीन्हि क्रिया प्रभुआयसु मानी * विधिवत देस काल जिय जानी ॥
दोहा-मंदोदरी आदि सब, देइ तिलांजलि ताहि ।

भवन गईं रघुपति गुन, गन वरनत मन माहिं ॥१०५॥

आइ विभीषन पुनि सिरु नायो * कृपासिंधु तव अनुज बोलायो ॥
तुम्ह कपीस अंगद नल लीला * जामवंत मारुति नयसीला ॥
सब मिलि जाहु विभीषन साथी * सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ॥
पितावचन मैं नगर न आवौं * आपु सरिस कपि अनुज पठावौं ॥
तुरत चलेकपि सुनि प्रभुवचना * कीन्ही जाइ तिलक कै रचना ॥
सादर सिंहासन बैठारी * तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥
जोरि पानि सबहीं सिर नाये * सहित विभीषन प्रभु पहिं आये ॥
तव रघुवीर बोलि कपि लीन्हे * कहि प्रियवचन सुखी सब कीन्हे ॥

छन्द-किये सुखी कहि बानी सुधासम बस तुम्हारे रिपु हयो ।
पायो विभीषन राजु तिहुँ पुर जस तुम्हारो नित नयो ॥
मोहि महित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जे गाइहैं ।
संसार सिंधु अपार पार प्रयास विनु नर पाइहैं ॥

दोहा-प्रभु के वचन सवन सुनि, नहिं अघाहिं कपिपुंज ।

बार बार सिर नावहीं, गहहिं सकल पदकंज ॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना * लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु * तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥
तव हनुमंत नगर महुँ आये * सुनि निसिचरी निसाचर धाये ॥
वहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही * जनकसुता दिखाइ पुनि दीन्ही ॥
दृरिहिं तें प्रनाम कपि कीन्हा * रघुपति-दूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता * कुसल अनुज-कपि-सेन-समेता ॥
सब विधि कुसल कोसलाधीसा * मातु समर जीतेउ दससीसा ॥
अविचल राजु विभीषन पावा * सुनि कपिवचन हरष उर छावा ॥

छन्द-अतिहरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।

का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि किमपि नहिं बानी समा ॥

सुनु मातु मैं पायउँ अखिल-जग-राजु आजु न संसयं ।
रन जीति रिपुदल बंधुगत पस्यामि राममनामयं ॥
दोहा-सुनु सुत सदगुन सकल तव, हृदय बसहु हनुमंत ।

सानुकूल कोसलपति, रहहु समेत अनंत ॥१०७॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता * देखौं नयन स्याम मृदुगाता ॥
तव हनुमान राम पहिं जाई * जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥
सुनि संदेस भानु-कुल-भूषन * बोलि लिये जुवराज विभीषन ॥
मारुतसुत के संग सिधावहु * सादर जनकसुतहिं लै आवहु ॥
तुरतहिं सकल गये जहँ सीता * सेवहिं सब निसिचरी विनीता ॥
बेगि विभीषन तिन्हहिं मिखावा * सादर तिन्ह सीतहिं अन्हवावा ॥
वहु प्रकार भूषन पहिरायें * सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याये ॥
ता पर हरषि चढ़ी बैदेही * सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥
वंतपानि रञ्जक चहुँ पासा * चले सकल मन परम हुलासा ॥
देखन भालु कीस सब आये * रञ्जक कोपि निवारन धाये ॥
कह रघुबीर कहा मम मानहु * सीतहिं सखा पयादें आनहु ॥
देखहिं कपि जननी की नाई * विहँसि कहा रघुनाथ गुसाई ॥
सुनि प्रभुवचन भालु कपि हरषे * नभतें सुरन्ह सुमन बहु वरषे ॥
सीता प्रथम अनल महुँ राखी * प्रगट कीन्हि चह अंतर माखी ॥
दोहा-तेहि कारन करुनानिधि, कहे कछुक दुर्वाद ।

सुनत जातुधानी सब, लागीं करै विषाद ॥१०८॥

प्रभु के वचन सीस धरि सीता * बोली मन-क्रम-वचन-पुनीता ॥
लछिमन होहु धरम कै नेगी * पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ॥
सुनि लछिमन सीता कै बानी * धिरह-विबेक-धरम-जुति-सानी ॥
लोचन सजल जोरि कर दोऊ * प्रभु सन कछु कहि मकत न ओऊ ॥
देखि रामरुख लछिमन धाये * पावक प्रगटि काठ बहु लाये ॥
पावक प्रबल देखि बैदेही * हृदय हरष कछु भय नहिं तेहि ॥
जौं मन बच क्रम मम उर माहीं * तजि रघुबीर आन गति नाहीं ॥
तौ कृमानु सब कै गति जाना * मो कहँ होहु श्रीखंड समाना ॥

छन्द-श्री-खंड-मम पावक प्रवेम कियो सुमिरि प्रभु मैथिली ।
 जय कोसलेस महेम-बंदित-चरन रति अतिनिर्मली ॥
 प्रतिविंब अरु लौकिककलंक प्रचंड पावक महुँ जरे ।
 प्रभुचरित काहु न लखे सुर नभ सिद्ध मुनि देखहिं खरे ॥
 धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य स्रुति जग विदित जो ।
 जिमि श्रीरमागर इंदिरा रामहिं ममर्पी आनि सो ॥
 मो राम वाम विभाग राजति रुचिर अतिसोभा भली ।
 नवनील-नीरज निकट मानहुँ कनक-पंकज की कली ॥

दोहा--वरषहिं सुमन हरषि सुर, बाजहिं गगन निसान ।
 गावहिं किन्नर सुरबधू, नाचहिं चढी विमान ॥
 श्रीजानकी-समेत प्रभु, सोभा अमित अपार ।

देखत हरपे भालु कपि, जय रघुपति सुखसार ॥१०६॥

तव रघुपति-अनुसासन पाई * मातलि चलेउ चरन सिरु नाई ॥
 आये देव मदा स्वारथी * बचन कहहिं जनु परमारथी ॥
 दीनबंधु दयाल रघुराया * देव कीन्ह देवन्ह पर दाया ॥
 विस्व-द्रोहरत यह खल कामी * निज अघ गयउ कुमारगगामी ॥
 तुम्ह सम रूप ब्रह्म अविनासी * मदा एक रस सहज उदासी ॥
 अकल अगुन अघ अनघ अनामय * अजित अमोघसक्ति करुनामय ॥
 मीन कमठ सूकर नरहरो * वामन परसुराम वपु धरी ॥
 जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावा * नानातनु धरि तुम्हहिं नसावा ॥
 रावन पापमूल सुरद्रोही * काम-लोभ-मदरत अति कोही ॥
 सोउ कृपाल तव धाम सिधावा * यह हमरे मन विसमय आवा ॥
 हम देवता परम अधिकारी * स्वारथरत तव भगति बिसारी ॥
 भवप्रवाह संतत हम परे * अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे ॥

दोहा--करि बिनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ कर जोरि ।

अतिसम प्रेम सरोज-भव, अस्तुति करत बहोरि ॥११०॥

छंद तोटक--जय राम सदा सुख धाम हरे * रघुनायक सायक-चाप-धरे ।
 भव-वारन-दारन सिंह प्रभो * गुनसागर नागर नाथ विभो ॥

तन काम अनेक अनूप छथी * गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कवी ।
जसु पावन रावन नाग महा * खगनाथ जथाकरि कोप गहा ॥
जनरंजन भंजन सोक भयं * गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ।
अवतार उदार अपारगुनं * महि-भार-विभंजन ग्यानघनं ॥
अज व्यापकमेकमनादि सदा * करुनाकर राम नमामि मुदा ॥
रघु-वंस-विभूषन दूपनहा * कृत भूप विभीषन दीन रहा ॥
गुन-ग्यान-निधान अमान अजं * नित राम नमामि विभुं विरजं ॥
भुज - दंड - प्रचंड - प्रताप - बलं * खल - बृंद - निकंद - महा - कुसलं ॥
विनु कारन दीनदयाल हितं * छवि धाम नमामि रमासहितं ॥
भवतारन कारन काजपरं * मन - संभव - दारुन - दोष - हरं ॥
सर चाप मनोहर त्रोनधरं * जल - जारुन - लोचन भूपवरं ॥
सुखमंदिर सुंदर श्रीरमनं * मद मार मुधा -ममता-ममनं ॥
अनवद्य अखंड न गोचर गो * सब रूप सदा सब होइ न सो ॥
इत वेद वदति न दंतकथा * रवि आतपभिन्न न भिन्न जथा ॥
कृतकृत्य विभो सब वानर ए * निरखंत तवानन सादर जे ॥
धिगजीवन देव सरीर हरे * तव भक्ति विना भव भूलि परे ॥
अब दीनदयाल दया करिये * मति मोरि विभेदकरी हरिये ॥
जेहि तें विपरीत क्रिया करिये * दुखसो सुख मानि सुखी चरिये ॥
खलखंडन मंडन रम्य छमा * पद-पंक-ज सेवित संभु उमा ॥
नृपनायक दे वरदानमिदं * चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं ॥
दोहा-बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अति गात ।

सोभा सिंधु विलोकत, लोचन नहीं अघात ॥१११॥

तेहि अवसर दमरथ तहँ आये * तनय विलोकि नयन जल छायें ॥
अनुज महित प्रभु बंदन कीन्हा * आसिबाद पिता तव दीन्हा ॥
तात सकल तव पुन्यप्रभाउ * जीतेउँ अजय निमा-चर-राउ ॥
सुनि सुतवचन प्रीति अति बाढ़ी * नयन मलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना * चितइ पितहिं दीन्हेउ दृढ़ ग्याना ॥
तातें उमा मोच्छ नहिं पावा * दमरथ भेदभगति मन लावा ॥

सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं * तिन्ह कहँ रामु भगति निजदेहीं ॥
 वार वार करि प्रभुहिं प्रनामा * दसरथ हरपि गये सुरधामा ॥
 दोहा-अनुज-जानकी-सहित प्रभु, कुसल कोसलाधीस ।
 सोभा देखि हरपि मन, अस्तुति कर सुरईस ॥११२॥

छन्दतोमर--जय राम सोभाधाम * दायक प्रनत विश्वाम ॥
 श्रुत त्रोन वर सर चाप * भुद दंड प्रवल प्रताप ॥
 जय दूषनारि खरारि * मर्दन - निसा - चर - धारि ॥
 यह दुष्ट मारेउ नाथ * भये देव सकल मनाथ ॥
 जय हरन धरनीभार * महिमा उदार अपार ॥
 जय रावनारि कृपाल * किये जातुधान विहाल ॥
 लंकेस अति बल गर्व * किये वस्य सुर गंधर्व ॥
 मुनि सिद्ध खग नर नाग * हटि पंथ सब के लाग ॥
 पर-द्रोह-रत अतिदुष्ट * पायो सो फल पापिष्ट ॥
 अब सुनहु दीनदयाल * राजीव - नयन - विसाल ॥
 मोहि रहा अति अभिमान * नहिं कोउ मोहि समान ॥
 अब देखि प्रभु-पद-कंज * गत मानप्रद दुखपुंज ॥
 कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव * अव्यक्त जेहि सुति गाव ॥
 मोहि भाव कोसलभूप * श्रीराम सगनसरूप ॥
 बैदेहि - अनुज - समेत * मम हृदय करहु निकेत ॥
 मोहि जानिये निजदास * दे भगति रमानिवास ॥

छन्द-दे भक्ति रमानिवास त्रासहरन सरन - सुख - दायकं ।
 सुखधाम राम नमामि काम अनेकद्वि रघुनायकं ॥
 सुर - बृंद - रंजन द्वन्दभंजन मनुजतनु अतुलितबलं ।
 ब्रह्मादि - संकर - सेव्य राम नमामि करुनाकोमलं ॥

दोहा--अब करि कृपा बिलोकि मोहि, आयस देहु कृपाल ।

काह करौं सुनि प्रिय बचन, बोले दीनदयाल ॥११३॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे * परे भूमि निसिचरन्ह जे मारे ॥
 मम हित लागि तजे इन्ह प्राणा * सकल जियाउ सुरेस सुजाना ॥

सुनु खगेस प्रभु कै यह वानी * अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी ॥
 प्रभु सक त्रिभुवन मारि जियाई * केवल सकहि दीन्हि बड़ाई ॥
 सुधा वरषि कपि भालु जियाये * हरषि उठे सब प्रभु पहिं आयै ॥
 सुधा वृष्टि भइ दुहुँ दल ऊपर * जिये भालु कपि नहिं रजनीचर ॥
 रामाकार भये तिन्ह के मन * मुक्त भये छूटे भवबंधन ॥
 सुरअंसक सबकपि अरु रीछा * जिये सकल रघुपति की ईछा ॥
 रामसरिस को दीन-हित-कारी * कीन्हे मुक्त निमाचर-झारी ॥
 खल मलधाम कामरत रावन * गति पाई जो मुनिवर पाव न ॥
 दोहा--सुमन वरषि सब सुर चले, चढ़ि चढ़ि रुचिर विमान ।

देखि सुअवसर राम पहिं, आये संभु सुजान ॥

परमप्रीति कर जोरि जुग, नलिननयन भरि वारि ।

पुलकिततन गदगदगिरा, विनय करत त्रिपुरारि ॥११४॥

छन्द--मामभिरक्षय रघुकुल नायक * घृत-वर-चाप रुचिर-कर-सायक ॥
 मोह महा घनपटल प्रभंजन * मंमय - विपिन-अनल सुररंजन ॥
 मगुन अगुन गुनमंदिर सुंदर * भ्रम - तम-प्रवल - प्रताप - दिवाकर ॥
 काम - क्रोध - मद - गज-पंचानन * वसहु निरंतर जन-मन-कानन ॥
 विषय - मनोरथ - पुंज - कंज - वन * प्रवलतुषार उदार पार मन ॥
 भव - वारिधि - मंदर परमंदर * वारय तारय मंसृति दुस्तर ॥
 स्यामगात राजीवविलोचन * दीनबंधु प्रनतारतिमोचन ॥
 अनुज-जानकी-सहित निरंतर * वसहु राम नृप मम उरअंतर ॥
 मुनिरंजन महि - मंडल - मंडन * तुलसि - दास-प्रभु त्रासविखंडन ॥
 दोहा--नाथ जबहिं कोसलपुरी, होइहि तिलकु तुम्हार ।

कृपासिंधु मैं आउब, देखन चरित उदार ॥११५॥

करि विनती जब संभु सिधायै * तव प्रभु निकट विभीषन आयै ॥
 नाइ चरन सिर कह मृदु वानी * विनय सुनहु प्रभु सारंगपानी ॥
 सकुल सदल प्रभु रावन मारा * पावन जसु त्रिभुवन विस्ताग ॥
 दीन मलीन हानमति जाती * मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥
 अब जनगृह पुनीत प्रभु कीज * मज्जन करिय समरस्रम छीजै ॥

देखि कोस मंदिर संपदा * देहु कृपाल कपिन्ह कहँ मुदा ॥
 सब विधि नाथ मोहि अपनाइय * पुनि मोहि सहित अत्रवधपुर जाइय ॥
 सुनत वचन मृदु दीनयाला * सजल भये दोउ नयन विसाला ॥

दोहा--तोर कोस गृह मोर सब, सत्य वचन सुनु भ्रात ।
 दसा भरत सुमिरत मोहि, निमिप कल्पसमजात ॥
 तापस बेप गात कृस, जपत निरंतर मोहि ।
 देखों बेगि सो जतन करू, सखा निहोरउँ तोहि ॥
 बीते अवधि जाउँ जाँ, जियत न पावउँ वीर ॥
 सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु, पुनि पुनि पुलकसरीर ।
 करेहु कल्प भरि राज तुम्ह, मोहि सुमिरेहु मन माहिं ॥
 पुनि मम धाम पाइहहु, जहाँ संत सब जाहिं ॥११६॥

सुनत विभीषन वचन राम के * हरपि गहे पद कृपाधाम के ॥
 वानर भालु सकल हरपाने * गहि प्रभुपद गुन विमल ब्रखाने ॥
 बहुरि विभीषन भवन सिधावा * मनि-गन-वसन विमान भरावा ॥
 लै पुष्पक प्रभु आगे राखा * हँसि करि कृपासिंधु तव भाखा ॥
 चढ़ि विमान सुनु सखा विभीषन * गगन जाइ वरपहु पट भूपन ॥
 नभ पर जाइ विभीषन तवहीं * वरपि दिये मनि अंबर मवहीं ॥
 जोड़ जोड़ मन भावइ मोड़ लेहीं * मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ॥
 हँसे राम श्री - अनुज - ममेता * परमकौतुकी कृपानिकेता ॥

दोहा--मुनि जेहि ध्यान न पावहिं, नेति नेति कह वेद ।
 कृपा-सिंधु सोइ कपिन्ह सन, करत अनेक विनोद ॥
 उमा जोग जप दान तप, नाना व्रत मख नेम ।
 रामकृपा नहिं करहिं तसि, जसि निस्केवल प्रेम ॥११७॥
 भालु कपिन्ह पट भूपन पाये * पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आये ॥
 नाना विनिस देखि प्रभु कीसा * पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥

चितइ सवन्ह पर कीन्ही दाया * बोले मृदुल वचन रघुराया ॥
 तुम्हरे बल में रावन मारा * तिलक विभीषन कहूँ पुनि सारा ॥
 निज-निज-गृह अब तुम्ह सव जाहू * सुमिरेहु मोहि डरपेहु जनि काहू ॥
 वचन सुनत प्रेमाकुल वानर * जोरी पानि बोले मव सादर ॥
 प्रभु जोइ कहहु तुम्हहिं सव मोहा * हमरे होत वचन सुनि मोहा ॥
 दीन जानि कपि किये सनाथा * तुन्ह त्रैलोक ईम रघुनाथा ॥
 सुनि प्रभुवचन लाज हम मरहीं * मसक कतहुँ खगपति-हित करहीं ॥
 देखि रामरुख वानर रीझा * प्रेममगन नहिं गृह कै ईझा ॥

दोहा-प्रभुप्रेरित कपि भालु सव, रामरूप उर राखि ।

हरष विपाद सहित चले, विनय विविध विधि भापि ॥

कपिपति नील रीछपति, अंगद नल हनुमान ।

सहित विभीषन अपर जे, जूथप कपि बलवान ॥

कहि न सकहिं कछु प्रेमवस, भारि भारि लोचन वारि ।

सनमुख चितवहिं रामतन, नयननिमेष निवारि ॥ ११८ ॥

अतिसय प्रीति देखि रघुराई * लीन्हे सकल विमान चढ़ाई ॥

मन महुँ विप्रचरन सिरु नावा * उत्तर दिसिहिं विमान चलावा ॥

चलत विमान कोलाहल होई * जय रघुवीर कहहिं मव कोई ॥

सिंहासनु अतिउन्न मनोहर * श्रीममेत प्रभु बैठे ता पर ॥

राजत रामसहित भामिनी * मेरुमृंग जनु धनु दामिनी ॥

रुचिर विमान चलेउ अतिआतुर * कीन्ही सुमनवृष्टि हरपे सुर ॥

परम-सुख-द चलि त्रिविध वयारी * मागर मर मरि निर्मल बारी ॥

सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा * मन प्रमन्न निर्मल नभ आसा ॥

कह रघुवीर देखु रन सीता * लछिमन इहाँ हतउ इंद्रजीता ॥

हनूमान अंगद के मारे * रन महि परे निसाचर भारे ॥

कुंभकरन रावन दोउ भाई * इहाँ हत सुर - मुनि - दुखदाई ॥

दोहा--इहाँ सेतु वाधेउँ अरु, थापेउँ सिव सुखधाम ।
 सीतासहित कृपानिधि, संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥
 जहँ जहँ करुनासिंधु बन, कीन्ह वास विस्वाम ।
 सकल देखाये जानकिहँ, कहे सबन्हि के नाम ११६ ॥

सपदि विमान तहाँ चलि आवा * दंडकवन जहँ परम सुहावा ॥
 कुंभजादि मुनिनायक नाना * गये राम सब के अस्थाना ॥
 सकल रिषिन्ह सन पाइ असोसा * चित्रकूट आयउ जगदीसा ॥
 तहँ करि मुनिन्ह केर संतोखा * चला विमान तहाँ ते चोखा ॥
 बहुरि राम जानकिहि देखाई * जमुना कलि-मल-हरनि सुहाई ॥
 पुनि देखी सुरसरी पुनीता * राम कहा प्रनाम करु सीता ॥
 तीरथपति पुनि देखु प्रयागा * देखत जनम-कोटि-अघ भागा ॥
 देखु परमपावनि पुनि बनी * हरनि सोक हरि-लोक-निसेनी ॥
 पुनि देखु अवधपुरी अतिपावनि * त्रिविध-ताप भवरोग नसावनि ॥
 दोहा--सीतासहित अवध कहँ, कीन्ह कृपाल प्रनाम ।

सजल नयन तन पुलकित, पुनि पुनि हरपत राम ॥
 बहुरि त्रिवेनी आइ प्रभु, हरपित मज्जनु कीन्ह ॥
 कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहँ, दान विविधविधि दीन्ह ॥१२॥
 प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई * धरि बटरूप अवधपुर जाई ॥
 भरतहि कुसल हमारि सुनायहु * समाचार लै तुम्ह चलि आयहु ॥
 तुरत पवनसुत गवनत भयऊ * तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ॥
 नाना विधि मुनि पूजा कीन्ही * अस्तुति करि पुनि आसिष दीन्ही ॥
 मुनिपद बंदि जुगल कर जोरी * चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी ॥
 इहाँ निषाद सुना हरि आये * नाव नाव कहँ लोग बोलाये ॥
 सुरसरि नाँधि जान जब आवा * उत्तरेउ तट प्रभुआयसु पावा ॥
 तब सीता पूजि सुरसरी * बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ॥
 दीन्हि असीस हरषि मन गंगा * सुंदरि तब अहिवात अभंगा ॥

सुनत गुहा धायेउ प्रेमाकुल ❀ आयउ निकट परम-सुख-संकुल ॥
 पूभुहि सहित विलोकि वैदेही ❀ परेउ अवनि तन सुधि नहिं तेही ॥
 पीति परम विलोकि रघुगई ❀ हरषि उठाइ लियो उर लाई ॥

छन्द-लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राय रमापती ।
 वैठारि परमसमीप बूझी कुसल सो कर वीनती ॥
 अव कुसल पदपंकज विलोकि विरंचि-संकर-सेव्य जे ।
 सुखधाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ॥
 सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यां उर लाइयो ।
 मतिमंद तुलसीदास सो पूभु मोहवस विसराइयो ॥
 यह रावनारिचरित्र पावन राम-पद-रति-पद सदा ।
 कामादिहर विग्यानकर सुर सिद्ध मुनिं गावाहिं मुदा ॥

दोहा-समर विजय रघुवोर के, चरित जे सुनहिं सुजान ।
 विजय विवेक विभूति नित, तिन्हहिं देहिं भगवान ॥
 यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु बिचार ।
 श्रीरघुनाथ नाम तजि, नाहिं न आन अधार ॥१२१॥

इति लङ्काकाण्ड समाप्त ।



श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामायण

उत्तरकाण्ड



श्लोकाः

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विपपादाव्जचिह्नं शोभाढ्यं पीत-
वस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रमन्नम् । पाणौ नाराचचापं कपिनिक-
रयुतं बन्धुना सेव्यमानं नौमीढ्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पका-
रूढरामम् ॥१॥ कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ॥
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥२॥ कुन्द-
इन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् । कारुणीककलकञ्ज-
लोचनं नोमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥३॥

दोहा--रहा एक दिन अवधि कर, अति आरत पुरलोग ।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर, कृसतन रामवियोग ॥
सगुन होहिं सुंदर सकल, मन प्रसन्न सब केर ।
पूमुआगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँ फेर ॥
कौशल्यादि मातु सब, मन अनंद अस होइ ।
आयउ पूमुसिय-अनज-युत, कहन चहतअवकोइ ॥
भरत-नयन-भुज दच्छिन, फरकत वारहिं वार ।
जानि सगुन मनहरष अति, लागे करन विचार ॥१॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा * ममुझत मन दुख भयउ अपारा ॥
 कारन कवन नाथ नहिं आये * जानि कुटिल किधौं मोहि विमराये ॥
 अहह धन्य लब्धिमन वड़ भागी * राम - पदारविंदु - अनुरागी ॥
 कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा * ता तें नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
 जौं करनी समुझहिं प्रभु मोरी * नहिं निस्तार कल्पसत कोरी ॥
 जनअवगुन प्रभु मान न काऊ * दीनबंधु अतिमृदुल सुभाऊ ॥
 मोरे जिय भरोम दृढ़ सोई * मिलिहहिं राम सगुन सुग होई ॥
 वीते अवधि रहहिं जौं प्राणा * अधम कवन जग मोहि समाना ॥
 दोहा--राम-बिरह-सागर महँ, भरत मगन मन होत ।

विप्ररूपधरि पवनसुत, आइ गयउ जनु पोत ॥

बैठे देखि कुसासन, जटामुकुट कृसगात ।

राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात ॥१॥

देखत हनूमान अति हरपेउ * पुलकगात लोचनजल वरपेउ ॥
 मन महँ बहुत भाँति सुख मानी * बोलेउ स्रवन-सुधा-सम बानी ॥
 जासु बिरह सोचहु दिन राती * रटहु निरंतर गुन-गन-पाँती ॥
 रघु-कुल-तिलक सु-जन-सुख-दाता * आयउ कुसल देव-मुनि-त्राता ॥
 रिपु रन जीति सुजस सुर गावत * सीता अनुज सहित पुर आवत ॥
 सुनत वचन बिसरे सब दूखा * तृषावंत जिमि पाव पियूखा ॥
 को तुम्ह तात कहाँ तें आये * मोहि परम प्रिय वचन सुनाये ॥
 मारुतसुत मैं कपि हनुमाना * नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
 दीनबंधु रघुपति कर किंकर * सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर ॥
 मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता * नयन स्रवत जल पुलकित गाता ॥
 कपि तव दरस सकल दुख वीते * मिले आजु मोहि राम पिरिते ॥
 बार बार बूझी कुसलाता * तो कहँ देउँ काह सुनु भ्राता ॥
 एहि मंदेससरिस जग माहीं * करि विचार देखेउँ कळु नाहीं ॥
 नाहिं न तात उरिन मैं तोही * अब प्रभुचरित सुनावहु मोही ॥
 तव हनुमंत नाइ पद माथा * कहे सकल रघु-पति-गुन-गाथा ॥
 कहु कपि कबहुँ कृपाल गुसाईं * सुमिरहिं मोहि दाम की नाई ॥

छन्द—निज दास ज्यों रघु-वंस-भूषण कबहुँ मम सुमिरन करयो ।
 मुनि भगतवचन विनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि परयो ॥
 रघुवीर निजमुख जासु गुनगन कहत अग-जग-नाथ जो ।
 काहे न होइ विनीत परम पुनीत सद-गुन-सिंधु सो ॥

दोहा—राम-प्रान-प्रिय नाथ तुम्ह, सत्य बचन मम तात ।
 पुनि पुनि मिलत भरत सुनि, हरष न हृदय समात ॥
 सारठा—भरतवचन सिरु नाइ, तुरित गयउ कपि राम पहिं ।
 कही कुसल सब जाइ, हरषि चले प्रभु जान चहि ॥२॥

हरषि भरत कोसलपुर आये * समाचार सब गुरुहि सुनाये ॥
 पुनि मंदिर महँ वात जनाई * आवत नगर कुसल रघुराई ॥
 सुनत मकल जननी उठि धाई * कहि प्रभुकुसल भरत समुझाई ॥
 समाचार पुरवासिन्ह पाये * नर अरु नारि हरषि सब धाये ॥
 दधि दुर्वा रोचन फल फूला * नव तुलसीदल मंगलमूला ॥
 भरि भरि हेमथार भामिनी * गावत चलीं सिंधुरगामिनी ॥
 जो जैसेहि तैसेहि उठि धावहिं * बाल बृद्ध कहँ मंग न लावहिं ॥
 एक एकन्ह कहँ बूझहिं भाई * तुम्ह देखे दयाल रघुराई ॥
 अवधपुरी प्रभु आवत जानी * भई सकल सोभा कै खानी ॥
 भइ सरजू अति-निर्मल-नीरा * बहइ सुहावन त्रिविध समीरा ॥

दोहा—हरषित गुरु परिजन अनुज भू-सुर-बृंद-समेत ।
 चले भरत अतिप्रेम मन, सनमुख कृपानिकेत ॥
 बहुतक चढ़ीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन विमान ।
 देखि मधुर सुर हरषित, करहिं सुमंगल गान ॥
 राकाससि रघुपाति पुर, सिंधु देखि हरषान ।
 वढ़ेउ कोलाहल करत जनु, नारि-तरंग-समान ॥३॥

इहाँ भानु-कुल-कमल-दिवा-कर * कपिन्ह देखावत नगर मनोहर ॥
 सुनु कपीस अंगद लंकेसा * पावन पुरी रुचिर यह देसा ॥

जद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना * वेद-पुरान-विदित जग जाना ॥
 अवध सरिम प्रिय मोहि न सोऊ * यह प्रमंग जानै कोउ कोऊ ॥
 जनमभूमि मम पुरी सुहावनि * उत्तर दिसि वह सरजू पावनि ॥
 जा मज्जन तें विनहिं प्यासा * मम समीप नर पावहिं वासा ॥
 अतिपिय मोहि इहाँ के वासी * मम धामदा पुरी सुखरामी ॥
 हरपे सेव कपि सुनि प्रभुवानी * धन्य अवध जो राम बखानी ॥

दोहा-आवत देखि लोग सब, कृपासिंधु भगवान ।

नगर निकट प्रभु प्ररेउ, उतरेउ भूमि विमान ॥

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं, तुम्ह कुबेर पहिं जाहु ।

प्रेरित राम चलेउ सो, हरप विरहु अति ताहु ॥४॥

आये भरत मंग सब लोगा * कृतसन श्री-रघु-वीर-वियोगा ॥
 वामदेव वमिष्ठ मुनिनायक * देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥
 धाइ धरे गुरु-चरन-सरोरुह * अनुजसहित अति-पुलक-तनोरुह ॥
 भेंटि कुसल ब्रूभी मुनिराया * हमरे कुसल तुम्हारिहि दाया ॥
 सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा * धरम-धुरं-धर रघु-कुल-नाथा ॥
 गहे भरत पुनि प्रभु-पद-पंकज * नमत जिन्हहिं सुर मुनि संकर अज ॥
 परे भूमि नहिं उठत उठाये * वर करि कृमासिंधु उर लाये ॥
 स्यामलगात रोम भये ठाढ़े * नव-राजीव-नयन जल वाढ़े ॥

छन्द-राजीवलोचन स्रवत जल तन ललिता पुलकावलि बनी ।

अतिप्रेम हृदय लगाइ अनुजहिं मिले प्रभु त्रि-भुवन-धनी ॥

प्रभु मिलत अनुजहिं सोह मो पहिं जाति नहिं उपमा कही ।

जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले वर सुखमा लही ॥

बूझत कृपानिधि कुसल भरतहिं बचन वेगि न आवई ।

सुनु सिवा सो सुख बचनमन तें भिन्न जान जो पावई ॥

अब कुसल कोसलनाथ आरत जाति जन दरसन दियो ।

बूढ़त विरहवारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥

दोहा-पुनि प्रभु हरषित सत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ ।

लछिमन भरत मिले तव, परम प्रेम दोउ भाइ ॥५॥

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटें * दुसह विरहमंभव दुख मेटे ॥
 सीताचरन भरत मिरु नावा * अनुजसमेत परमसुख पावा ॥
 प्रभु विलोकि हरषे पुरवासी * जनित वियोग विपति सब नासी ॥
 प्रेमातुर मव लोग निहारी * कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी ॥
 अमित रूप प्रगटे तेहि काला * जथाजोग मिले सबहिं कृपाला ॥
 कृपादृष्टि रघुवीर विलोकी * किये सकल नर नारि विमोकी ॥
 छन महँ सबहिं मिले भगवाना * उमा मरमु यह काहु न जाना ॥
 एहि विधि सबहिं सुखी करि रामा * आगे चले सील - गुन - धामा ॥
 कौसल्यादि मातु सब धाई * निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ॥

छन्द-जनु धेनु बालक वच्छ तजि गृह चरन बन परवस गई ।
 दीनअंत पुरु रुख सवत थन हुंकार करि धावत भई ॥
 अतिप्रेम प्रभु सब मातु भेंटी बचन मृदु बहु विधि कहे ।
 गइ विषम विपति वियोगभव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे ॥

दोहा--भेंतेउ तनय सुमित्रा, राम-चरन-रति जानि ।

रामहिं मिलत कैकई, हृदय बहुत सकुचानि ॥

लछिमन सबमातन्ह मिलि, हरषे आसिप पाइ ।

कैकई कहँ पुनि मिले, मन कर छोभ न जाइ ॥ ६ ॥

मासुन्ह सबन्ह मिली बैदेही * चरनन्हि लागि हरष अति तेही ॥
 देहिं असीस बृद्धि कुसलाता * होहु अचल तुम्हार अहिवाता ॥
 सब रघु-पति-मुख-कमल विलोकहिं * मंगल जानि नयनजल रोकहिं ॥
 कनकथार आरती उत्तारहिं * वार वार प्रभुगात निहारहिं ॥
 नाना भाँति निञ्जावरि करहीं * परमानंद हरष उर भरहीं ॥
 कौसल्या पुनि पुनि रघुवीरहिं * चितवति कृपासिंधु रनधीरहिं ॥
 हृदय विचारति बारहिं बारा * कवन भाँति लंकापति मारा ॥
 अतिसुकुमार जुगल मेरे वारे * निसिचर सुभट महाबल भारे ॥

दोहा--लछिमन अरु सीतासहित, प्रभुहिं बिलोकति मात ।

परमानंद-मगन-मन, पुनि पुनि पुलकितगात ॥७॥

लंकापति कपीस नल नीला * जामवंत अंगद सुभसीला ॥
 हनुमदादि सब बानरबीरा * धरे मनोहर मनुजसरीरा ॥
 भरत - सनेह - सील - व्रत - नेमा * सादर सब बरनहिं अतिप्रेमा ॥
 देखि नगरवासिन्ह कै रीती * सकल सराहहिं प्रभु-पद-प्रीती ॥
 पुनि रघुपति सब सखा बोलाये * मुनिपद लागहु सकल मिखाये ॥
 गुरु बसिष्ठ कुलपूज्य हमारं * इन्ह की कृपा दनुज रन मारे ॥
 ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे * भये समरसागर कहँ बरे ॥
 मम हित लागि जनम इन्ह हारे * भरतहुँ तें मोहि अधिक पियारे ॥
 सुनि प्रभुवचन मगन सब भये * निमिष निमिष उपजत सुख नये ॥

दोहा—कौसल्या के चरनन्हि, पुनि तिन्ह नायेउ माथ ।

आसिप दीन्ही हरपि तुम्ह, प्रिय मम जिय रघुनाथ ॥

सुमनचृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकंद ।

चढ़ी अटारिन्ह देखहिं, नगर नारि-बर-चंद्र ॥८॥

कंचनकलम विचित्र सँवारे * सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ॥
 बंदनवार पताका केतू * सबन्हि वनाये मंगलहेतू ॥
 बीथी सकल सुगंध सिंचाई * गजमनि रचि बहु चौक पुराई ॥
 नाना भाँति सुमंगल साजे * हरपि नगर निसान बहु वाजे ॥
 जहँ तहँ नारि निझावरि करहीं * देखिं असीस हरष उर भरहीं ॥
 कंचनथार आरती नाना * जुवती सजे करहिं सुभ गाना ॥
 करहिं आरती आरतिहर कै * रघुकुल-कमल-विपिन-दिन-कर कै ॥
 पुरसोभा संपति कल्याना * निगम सेष सारदा वखाना ॥
 तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं * उमा तासु गुन नर किमि कहहीं ॥

दोहा--नारि कुमुदिनो अवध सर, रघु-पति-विरह दिनेस ।

अस्त भये विगसत भई, निरखि राम राकेस ॥

होंहि सगुन सुभ विविध विंध, बाजहिं गगन निसान ।

पुर-नर-नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान ॥९॥

प्रभु जानी कैकई लजानी * प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
 ताहि प्रबोध बहुत सुख दीन्हा * पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा ॥

कृपामिंधु जव मंदिर गये * पुर - नर - नारि सुखी सब भये ॥
 गुरु वमिष्ठ द्विज लिये बोलाई * आज सुधरी सुदिन सुभदाई ॥
 सब द्विज देहु हरषि अनुमामन * रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन ॥
 मुनि वमिष्ठ के वचन सुहाये * सुनत मकल विप्रन्ह अति भाये ॥
 कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका * जगअभिराम रामअभिषेका ॥
 अब मुनिवर विलंबु नहिं कीजै * महाराज कहुं तिलक करीजै ॥
 दोहा - तव मुनि कहेउ सुमंत्र सन, सुनत चलेउ हरपाइ ।
 रथ अनेक बहु वाजि गज, तुरत सँवारेउ जाइ ॥
 जहँ तहँ धावन पठइ पुनि, मंगल द्रव्य मँगाइ ।
 हरष समेत वसिष्ठपद, पुनि सिरु नायेउ आइ ॥१०॥

अवधपुरी अतिरुचिर वनाई * देवन्ह मुमनवृष्टि भरि लाई ॥
 राम कहा सेवकन्ह बोलाई * प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
 सुनत वचन जहँ तहँ जन धाये * सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
 पुनि करुनानिधि भरत हँकारे * निज कर राम जटा निरुवारे ॥
 अन्हवाये प्रभु तीनिउँ भाई * भगतवञ्जल कृपाल रघुराई ॥
 भरतभाग्य प्रभु - कोमल - ताई * सेष कोटि मत सकहिं न गाई ॥
 पुनि निज जटा राम विवराये * गुरु अनुसासन माँगि नहाये ॥
 करि मज्जन प्रभु भूपन माजे * अंग अनंग कोटि अवि लाजे ॥

दोहा--सासुन्ह सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराइ ।
 दिव्य वसन वर भूपन, अँग अँग सजे वनाइ ॥
 राम-बाम-दिसि सौभित, रमारूप गुनखानि ।
 देखि मातु सब हरषीं, जनम सुफल निज जानि ॥
 सुनु खगेस तेहि अवसर, ब्रह्मा सिव मुनिबृंद ।
 चढि विमान आये सब, सुर देखन सुखकंद ॥११॥

प्रभु विलोक मुनि मन अनुरागा * तुरत दिव्य सिंहासन माँगा ॥
 रविमम तेज सो बरनि न जाई * बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई ॥
 जनक - सुता - ममेत रघुराई * पंखि प्रहरपे मुनिसमुदाई ॥
 वेदमंत्र तव द्विजन्ह उचारे * नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥

प्रथम तिलक वसिष्ठ मुनि कीन्हा * पुनि सब विप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥
 सुत विलोकि हरपीं महतारी * बार बार आरती उतारी ॥
 विप्रन्ह दान विविध विधि दीन्हे * जाचक सकल अजाचक कीन्हे ॥
 सिंहासन पर त्रि-भुवन-साईं * देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ॥

छंद-नभ दुंदुभी बाजहिं विपुल गंधर्व किन्नर गावहीं ।

नाचहिं अपहरावृंद परमानन्द सुर मुनि पावहीं ॥

भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमदादि समेत ते ।

गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म सक्ति विराजते ॥

श्रीसहित दिन-कर-बंस-भूपन काम बहु छवि सोहई ।

नव-अंबु-धर-वर-गात अंबर पीत मुनिमन मोहई ॥

मुकुटांगदादि विचित्र भूपन अंग अंगन्हि प्रति सजे ।

अंभोजनयन विमाल उर भुज धन्य नर निरखंत जे ॥

दोहा--वह सोभा समाज सुख, कहत न बनै स्वगेस ।

वरनै सारद सेप सुति, सोरस जान महेश ॥

भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गये सुर निज निज धाम ।

बंदिबेप धरि वैद तव, आये जहँ श्रीराम ॥

प्रभु सर्वग्य कीन्ह अति, आदर कृपानिधान ।

लखेउ न काहू मरमु कछु, लगे करन गुनगान ॥१२॥

छंद-जय सगुन निर्गुनरूप रूपअनूप भूप - मिरोमने ।

दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रवल खल भुजवल हने ॥

अवतार नर मंसारभार विभंजि दारुन दुख दहे ।

जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्तसक्ति नमामहे ॥

तव विषम मायावस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।

भवपंथ भ्रमत अमित दिवस निमि काल कर्म गुनन्हि भरे ॥

जे नाथ करि करुना विलोके त्रिविध दुख ते निर्वहे ।

भव-खेद-छेदन-दच्छ हम कहै रच्छ राम नमामहे ॥

जे ज्ञान-मान-विमत्त तव भवहरनि भगति न आदरी ।

ते पाइ सुर-दुर्लभ-पदादपि परत हम देखत हरी ॥

विस्वाम करि सब आम परिहरि दाम तव जे होइ रहे ।
 जपि नाम तव विनु स्रम तरहिं भवनाथ सोइ स्मरामहे ॥
 जे चरन मिव अज पूज्य रज सुभ परमि मुनिपतिनी तरी ।
 नखनिर्गता मुनिवंदिता त्रै-लोक्य-पावनि सुरसरी ॥
 ध्वज-कुलिम-अंकुम-कंज-जुत वन फिरत कंककिन लहे ।
 पद - कंज - द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥
 अ-व्यक्त-मूल-मनादि तरु त्वच चारि निगमागम भनं ।
 पट कंध साखा पंचवीस अनेक पर्न सुमन घने ॥
 फल जुगल विधि कटु मधुर वेलि अकेलि जेहि आसित रहे ।
 पल्लवत फूलत नव ललित मंसारविटप नमामहे ॥
 जे ब्रह्म अजमद्वैत-मनु-भव-गम्य मन पर ध्यावहीं ।
 ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं ॥
 करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह वर माँगहीं ।
 मन वचन कर्म विकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं ॥

दोहा—सब के देखत बेदन्ह, विनती कीन्हि उदार ।

अंतरधान भये पुनि, गये ब्रह्मआगार ॥

वैनतेय सुनु संभु तव, आये जहँ रघुबीर ।

विनय करत गदगद गिरा, प्रीति पुलक सरीर ॥१३॥

तोमरच्छन्द-जय रामरमा रमनं समनं * भव-ताप-भयाकुल पाहि जनं ॥
 अवधस सुरेस रमेस विभो * सरनागत माँगत पाहि प्रभो ॥
 दस-सीस-विनासन बीस भुजा * कृत दूरि महा-महि-भूरि-रुजा ॥
 रजनी - चर - बृंद - पतंग रहे * सर-पावक-तेज प्रचंड दहे ॥
 महि - मंडल - मंडल चारुतरं * धृत-सायक-चाप - निपंग - वरं ॥
 मद मोह महा ममता रजनी * तमपुंज दिवाकर-तेज-अनी ॥
 मन जात किरात निपात किये * मृग लोग कुभोग सरेन हिये ॥
 हति नाथ अनाथन्हि पाहि हरे * विषयावन पाँवर भूलि परे ॥
 बहु रोग वियोगन्हि लोग हये * भवदंघिनिरादर के फल ये ॥
 भवसिंधु अगाध परे नर ते * पद-पंकज-प्रेम न जे करते ॥

अतिदीन मलीन दुखी नितहीं * जिनके पदपंकज प्रीति नहीं ॥
 अलंब भवंत कथा जिन्ह के * प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥
 नहिं राग न लोभ न मान मदा * तिन्ह के सम वैभव वा विपदा ॥
 एहि तें तव सेवक होत मुदा * मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥
 करि प्रेम निरंतर नेम लिये * पदपंकज सेवित सुद्ध हिये ॥
 सम मानि निरादर आदरहीं * सब संत सुखी विचरंति मही ॥
 मुनि-मानस-पंकज - भृंग भजे * रघुवीर महा - रन - धीर अजे ॥
 तव नाम जपामि नमामि हरी * भवरोग महा मद मान अरी ॥
 गुनसील कृपापरमायतनं * प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
 रघुनंद निकंदय द्वंदघनं * महिपाल विलोकय दीनजनं ॥
 दोहा-बार बार बर माँगउं, हरषि देहु श्रीरंग ।
 पद-सरोज अनपायनी, भगति सदा सतसंग ॥
 वरनि उमापति रामगुन, हरषि गये कैलास ।

तव प्रभु कपिन्ह दिवाये, सब विधि सुखप्रद बास ॥१४॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी * त्रिविध ताप भव-भय-दावनी ॥
 महाराज कर सुभ अभिपेका * सुनत लहहिं नर विरति विवेका ॥
 जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं * सुख संपति नाना विधि पावहिं ॥
 सुरदुर्लभ सुख करि जग माहीं * अंतकाल रघु-पति-पुर जाहीं ॥
 सुनहिं विमुक्त विरत अरु विपई * लहहिं भगति गति संपति नई ॥
 खगपति राम कथा में वरनी * स्व-मति-विलाम त्राम-दुख-हरनी ॥
 विरति विवेक भगति दृढ़ करनी * मोह नदी कहँ मुंदर तरनी ॥
 नित नव मंगल कोमलपुरी * हरषित रहहिं लोग सब पुरी ॥
 नित नइ प्रीति राम-पद-पंकज * सबकेजिन्हहिं नमत सिव मुनिअज ॥
 मंगन बहु प्रकार पहिराये * द्विजन्ह दान नाना विधि पाये ॥
 दोहा-ब्रह्मानंदमगन कपि, सब के प्रभु पद प्रीति ।

जात न जाने दिवस तिन्ह, गये मास पट बीति ॥१५॥

विसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाही * जिमि पर द्रोह मंत मत माहीं ॥
 तब रघुपति सब सखा बोलाये * आइ सबन्हि सादर गिर नाये ॥

परम प्रीति समीप वैठारे * भरत सुखद मृदु वचन उचारे ॥
 तुम्ह अति कीन्ह मोरि सेवकाई * मुख पर केहि विधि करौ बड़ाई ॥
 ता तें मोहि तुम्ह अतिप्रिय लागे * मम हित लागि भवन सुख त्यागे ॥
 अनुज राज मंपति वैदेही * देह गेह परिवार सनेही ॥
 सब मम प्रिय नहिं तुम्हहिं समाना * मृषा न कहाँ मोर यह वाना ॥
 सब के प्रिय सेवक ये नीती * मोरे अधिक दास पर प्रीती ॥

दोहा--अब गृह जाहु सखा सब, भजेहु मोहि दृढ नेम ।

सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करेहु अतिप्रेम ॥१६॥

सुनि प्रभुवचन मगन सब भये * को हम कहाँ विसरि तन गये ॥
 एकटक रहे जोरि कर आगे * सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे ॥
 परमप्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा * कहा विविधविधि ग्यान विसेखा ॥
 प्रभु मनमुख कछु कहइ न पारहिं * पुनि पुनि चरन-सरोज निहारहिं ॥
 तब प्रभु भूषन वसन मँगाये * नाना रंग अनूप सुहाये ॥
 सुग्रीवहिं प्रथमहि पहिराये * वसन भरत निज हाथ वनाये ॥
 प्रभुप्रेरित लल्लिमन पहिराये * लंकापति रघुपति मन भाये ॥
 अंगद बैठि रहा नहिं डोला * प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दोहा--जामवंत नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ ।

हिय धरि रामरूप सब, चले नाइ पद माथ ॥

तब अंगद उठि नाइ सरु, सजल नयन कर जोरि ।

अतिविनीत बोलेउ वचन, मनहुँ प्रेमरस बोरि ॥१७॥

सुनु सर्वग्य कृपा-सुख-सिंधो * दीन-दया-कर आरतबंधो ॥
 मरती वार नाथ मोहि वाली * गयउ तुम्हारेहिं कोछे घाली ॥
 अ-सरन-सरन बिरद संभारी * मोहि जनि तजहु भगत-हित-कारी ॥
 मोरे तुम्ह प्रभु गुरु पितु माता * जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥
 तुम्हई विचारि कहहु नरनाहा * प्रभु तजि भवन काजु मम काहा ॥
 बालक ग्यान-बुद्धि-बल-हीना * राखहु सरन जानि जन दीना ॥
 नीचि टहल गृह कै सब करिहौं * पद-पंकज बिलोकि भव तरिहौं ॥
 अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही * अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥

दोहा--अंगदबचन विनीत सुनि, रघुपति करुनासीवें ।

प्रभु उठाइ उर लायेउ, सजल नयनराजीव ॥

निज उरमाल बसन मनि, बालितनय पहिराइ ।

विदा कीन्ह भगवान तव, बहु प्रकार समुभाइ ॥१८॥

भरत - अनुज - सौमित्रि - समेता * पठवन चले भगत कृतचेता ॥

अंगदहृदय प्रेम नहिं थोरा * फिरि फिरि चितव राम की ओरा ॥

बार बार कर दंडप्रनामा * मन अस रहन कहहिं मोहि रामा ॥

राम विलोकनि बोलनि चलनी * सुमिरि सुमिरि मोचत हँसि मिलनी ॥

प्रभुरुख देखि विनय बहु भाखी * चलेउ हृदय पद-पंकज राखी ॥

अति आदर सब कपि पहुँचाये * भाइन्ह महित भरत पुनि आये ॥

तव सुग्रीव चरन गहि नाना * भाँति विनय कीन्ही हनुमाना ॥

दिन दस करि रघुपति-पद-सेवा * पुनि तव चरन देखिहौं देवा ॥

पुन्यपुंज तुम्ह पवनकुमारा * सेवहु जाइ कृपाआगारा ॥

अम कहि कपि मव चले तुरंता * अंगद कहइ सुनहु हनुमंता ॥

दोहा--कहेहु दंडवत प्रभु सन, तुम्हहिं कहों कर जोरि ।

वार बार रघुनायकहिं, सुरति करायेहु मोरि ॥

अस कहि चलेउ बालिसुत, फिरि आयेउ हनुमंत ।

तासु प्रीति प्रभु सन कही, मगन भये भगवंत ॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि ।

चित खगैस अस राम कर, समुझि परै कहु काहि ॥१९॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा * दीन्हें भूपन बसन प्रसादा ॥

जाहु भवन मम सुमिरन करेहु * मन क्रम वचन धर्म अनुसरहु ॥

तुम्ह मम सखा भरतमम भ्राता * मदा रहेहु पुर आवत जाता ॥

बचन सुनत उपजा सुख भारी * परेउ चरन भरि लोचन वारी ॥

चरननलिन उर धरि गृह आवा * प्रभुसुभाउ परिजनन्हि सुनावा ॥

रघुपतिचरित देखि पुरवामी * पुनि पुनि कहहिं धन्य सुवरासी ॥

राम राज बैठे त्रैलोका * हरपित भये गये सब सोका ॥
 वयरु न कर काहू सन कोई * रामप्रताप विषमता खोई ॥
 दोहा--वरनास्रम निज निज धरम, निरत वेदपथ लोग ।

चलहिं सदा पावहिं सुख, नहिं भय शोक न रोग ॥२८॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा * रामराज नहिं काहुहि व्यापा ॥
 सब नर करहिं परसपर प्रीती * चलहिं स्वधर्म निरत सुतिरीती ॥
 चारिहु चरन धरम जग माहीं * पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाही ॥
 राम-भगति-रत सब नर नारी * मकल परम गति के अधिकारी ॥
 अल्प मृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा * सब सुंदर सब विरुज सरीरा ॥
 नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना * नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना ॥
 सब निर्दभ धर्मरत पुनी * नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥
 सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी * सब कृतग्य नहिं कपट स्यानी ॥

दोहा--रामराज नभगेस सुनु, सचराचर जग माहिं ।

काल कर्म सुभाव गुन, कृत दुख काहुहि नाहिं ॥२९॥

भूमि सप्त सागर मेखला * एक भूप रघुपति कोसला ॥
 भुवन अनेक रोम प्रति जासू * यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥
 सो महिमा समुझत प्रभु केरी * यह वरनत हीनता घनेरी ॥
 सो महिमा खगेस जिन्ह जानी * फिरि येहि चरित तिन्हहुँ रति मानी ॥
 सोउ जाने कर फल यह लीला * कहहिं महा मुनिवर दमसीला ॥
 रामराज कर सुख संपदा * बरनि न सकइ फनीस मारदा ॥
 सब उदार सब परउपकारी * विप्र - चरन - सेवक नरनारी ॥
 एक-नारि-व्रत-रत सब ज्ञारी * ते मन वच क्रम पति-हित-कारी ॥

दोहा--दंड जतिन्ह कर भेद जहँ, नर्तक नृत्यसमाज ।

जितहु मनहिं अस सुनिय जग, रामचंद्र के राज ॥२२॥

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन * रहहिं एक सँग गज पंचानन ॥
 खग मृग सहज वयरु बिसराई * सबन्हि परसपर प्रीति बढ़ाई ॥
 कूजहिं खग मृग नाना बृंदा * अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ॥
 सीतल सुरभि पवन बह मंदा * गुंजत अलि लै चलि मकरंदा ॥

लता विटप माँगे मधु चवहीं * मनभावतो धेनु पय सवहीं ॥
 सससंपन्न सदा रह धरनी * त्रेता भइ कृतजुग कै करनी ॥
 प्रगटी गिरिन्ह विविध मनिखानी * जगदातमा भूप जग जानी ॥
 सरिता सकल वहहिं वर वारी * सीतल अमल स्वादु सुखकारी ॥
 सागर निज मरजादा रहहीं * डारहिं रतन तटन्हि नर लहहीं ॥
 सरसिज-संकुल सकल तड़ागा * अतिप्रसन्न दस-दिसा-विभागा ॥

दोहा--विधु महि पूर मयूखन्हि, रवि तप जेतनेहिं काज ।

माँगे बारिद देहिं जल, रामचंद्र के राज ॥२३॥

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे * दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ॥
 सुति-पथ - पालक धरम-धुरंधर * गुनातीत अरु भोगपुरंदर ॥
 पति अनुकूल सदा रह सीता * सोभाखानि सुसील विनीता ॥
 जानति कृपा-सिंधु-प्रभुताई * सेवति चरनकमल मन लाई ॥
 जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी * विपुल सकल सेवाविधि गुनी ॥
 निज कर गृहपरिचरजा करई * रामचंद्र - आयसु अनुमरई ॥
 जेहि विधि कृपा-सिंधु सुख मानइ * सोइ कर श्री सेवाविधि जानइ ॥
 कौमल्यादि सासु गृह माहीं * सेवइ मवन्हि मान मद नाहीं ॥
 उमा-रमा-ब्रह्मादि-बंदिता * जगदंबा संततमनिंदिता ॥

दोहा--जासु कृपाकटाच्छ सुर, चाहत चितवन सोइ ।

राम-पदारविंद-रति, करति सुभावहिं सोइ ॥२४॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई * राम-चरन-रति अति अधिकारई ॥
 प्रभु-मुख-कमल विलोकत रहहीं * कवहुँ कृपाल हमहिं कलु कहहीं ॥
 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती * नाना भाँति मिखावहिं नीती ॥
 हरपित रहहिं नगर के लोगा * करहिं सकल मुरदुर्लभ भोगा ॥
 अहनिमि विधिहिं मनावत रहहीं * श्रीरघुवीर - चरन - रति चहहीं ॥
 दुइ सुत सुंदर सीता जाये * लव कुस वेद पुरानन्हि गाये ॥

दोउ विजई धिनई गुनमंदिर * हरि-प्रतिविंघ मनहुँ अति सुंदर ॥
दुइ दुइ सुत मव भ्रातन्ह केरे * भये रूप गुन मील घनेरे ॥

दोहा--ग्यान-गिरा-गो-स्तीत अज, माया-मन-गुन-पार ।

सोइ सच्चिदानन्दघन, कर नरचरित उदार ॥२५॥

प्रातकाल सरजू करि मज्जन * बैठहिं सभा मंग द्विज सज्जन ॥
वेद पुरान बमिष्ठ बखानहिं * सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ॥
अनुजन्ह मंजुत भोजन करहीं * देखि सकल जननी सुख भरहीं ॥
भरत सत्रुहन दूनों भाई * सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
बूझहिं वैठि राम-गुन-गाहा * कह हनुमान सुमति अरुगाहा ॥
सुनत विमल गुन अतिसुख पावहिं * बहुरि बहुरि करि बिनय कहावहिं ॥
सब के गृह गृह होहिं पुराना * रामचरित पावन विधि नाना ॥
नर अरु नारि राम-गुन-गानहिं * करहिं दिवम निमि जात न जानहिं ॥

दोहा--अवध-पुरी-वासिन्ह कर, सुख संपदा समाज ।

सहस सेप नहिं कहि सकहिं, जहँ नृप राम विराज ॥२६॥

नारदादि मनकादि मुनीसा * दरसन लागि कोसलार्थीमा ॥
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं * देखि नगर विराग विसरावहिं ॥
जातरूप-मनि-रचित अटारी * नाना रंग रुचिर गच ठारी ॥
पुर चहुँ पास कोटि अतिमुंदर * रचे कंगूरा रंग रंग बर ॥
नवग्रह निकर अनीक बनाई * जनु घेरी अमरावति आई ॥
महि बहुरंग रचित गच काँचा * जो विलोकि मुनिवर मन राँचा ॥
धवल धाम ऊपर नभ चुंवत * कलस मनहुँ रवि-समि-दुति निंदत ॥
बहु मनिरचित झरोखा भ्राजहिं * गृह गृह प्रति मनिदीप विराजहिं ॥
छन्द-मनिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची ।

मनिखंभ भीति विरंचि विरची कनकमनि मरकत खची ॥

सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ।

प्रतिद्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु ब्रह्मिन्ह खचे ॥

दोहा--चारु चित्रसाला गृह, गृह प्रति लिखे बनाइ ।

रामचरित जे निरख मुनि, ते मन लेहिं चोराइ ॥२७॥

सुमनवाटिका सवहिं लगाई * विविधभाँति करि जतन बनाई ॥
 लता ललित बहु जाति सुहाई * फूलहिं सदा बसंत कि नाई ॥
 गुंजत मधुकर मुखर मनोहर * मारुत त्रिविध सदा वह सुंदर ॥
 नाना खग बालकन्हि जिआये * बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
 मोर हंस सारस पारावत * भवनन्हि पर सोभा अतिपावत ॥
 जहँ तहँ देखहिं निज परिआहा * बहुविधि कूजहिं नृत्य कराहीं ॥
 सुक सारिका पढ़ावहिं बालक * कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
 राजदुआर सकल विधि चारु * वीथी चौहट रुचिर बजारु ॥
 छन्द-वाजार चारु न वनइ वरनत वस्तु विनु गथ पाइये ।

जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइये ॥

बैठे वजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुवेर ते ।

सब सुखी सब सन्नरित सुंदर नारि नर सिसु जगठ जे ॥

दोहा-उत्तर दिसि सरजू वह, निर्मलजल गंभीर ।

बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं तीर ॥२८॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा * जहँ जल पिआहिं वाजि-गज-ठाटा ॥
 पनिघट परम मनोहर नाना * तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ॥
 राजघाट सब विधि सुंदर वर * मज्जहिं तहाँ वरन चारिउ नर ॥
 तीर तीर देवन्ह के मंदिर * चहुँ दिसि जिन्ह के उपवन सुंदर ॥
 कहुँ कहुँ सरितातीर उदासी * बसहिं ग्यानरत मुनि मन्यामी ॥
 तीर तीर तुलसिका सुहाई * बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥
 पुरसोभा कछु वरनि न जाई * वाहिर नगर परम रुचिराई ॥
 देखत पुरी अखिल अघ भागा * वन उपवन बापिका तड़ागा ॥

छन्द-वापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत मोहहीं ।

सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ॥

बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ।

आराम रम्य पिकादि-खग-रव जनु पथिक हंकारहीं ॥

दोहा--रमानाथ जहँ राजा, सो पुर वरनि कि जाइ ।

अनिमादिक-सुख-संपदा, रही अवध सब छाइ ॥२९॥

जहँ तहँ नर रघु-पति-गुन गावहिं * बैठि परसपर इहै सिखावहिं ॥
 भजहु प्रनत-प्रति-पालक रामहि * सोभा-सील - रूप-गुन - धामहि ॥
 जलज-विलोचन स्यामल गातहिं * पलक नयन इव सेवकत्रातहिं ॥
 धृत - मर - रुचिर - चाँप - तूनीरहिं * मंत-कंज-वन रवि-रन-धीरहिं ॥
 काल कराल व्याल खगराजहिं * नमत राम अकाम ममता जहिं ॥
 लोभ - मोह-मृग - जूथ - किरातहिं * मनसिज-करि-हरिजन-सुख-दातहिं ॥
 संसय-मोक - निबिड़ - तम-भानुहिं * दनुज-गहन - घन-दहन-कृसानुहिं ॥
 जनक-सुता-समेत रघुवीरहिं * कम न भजहु भंजन भवभीरहिं ॥
 वसु - वासना-ममक - हिम-रासिहिं * सदा एकरस अज अविनासिहिं ॥
 मुनिरंजन भंजन महिभारहिं * तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि ॥
 दोहा--एहि विधि नगर-नारि-नर, करहिं राम-गुन-गान ।

सानुकूल सब पर रहहिं, संतत कृपानिधान ॥३०॥

जव तें रामप्रताप खगोसा * उदित भयेउ अतिप्रबल दिनेसा ॥
 पूरि प्रकाम रहेउ तिहुँ लोका * बहुतेन्ह सुख बहुतेन्ह मन सोका ॥
 जिन्हहिं सोक ते कहौ बखानी * प्रथम अविद्यानिसा नसानी ॥
 अध उलूक जहँ तहाँ लुकाने * काम - क्रोध - कैरव मकुचाने ॥
 विविध-कर्म-गुन-काल-सुभाऊ * ए चकोर सुख लहहिं नु काऊ ॥
 मत्सर मान मोह मद चोरा * इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा ॥
 धरम तड़ाग ग्यान विग्याना * ए पंकज विकसे विधि नाना ॥
 सुख संतोष विराग विवका * विगत सोक ए कोक अनेका ॥
 दोहा--यह प्रतापरबि जा के, उर जब करै प्रकास ।

पछिले बाढ़हिं प्रथम जे, कहे ते पावहिं नास ॥३१॥

भ्रातन्ह सहित राम एक वारा * संग परमप्रिय पवनकुमारा ॥
 सुंदर उपवन देखन गये * सत्र तरु कुसुमित पल्लव नये ॥
 जानि समय सनकादिक आये * तेजपुंज गुनसील सुहाये ॥
 ब्रह्मानंद सदा लयलीना * देखत बालक बहुकालीना ॥
 रूप धरे जनु चारिउ बेदा * समदरसी मुनि विगतविभेदा ॥
 आसा वसन व्यसन यह तिन्हहीं * रघुपति-चरित होइ तहँ सुनहीं ॥

तहाँ रहे सनकादि भवानी * जहँ घटसंभव मुनिवर ग्यानी ॥
रामकथा मुनि बहु विधि वरनी * ग्यान-जोनि-पावक जिमि अरनी ॥
दोहा--देखि राम मुनि आवत, हरषिं दंडवत कीन्ह ।

स्वागत पूछि पीतपट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥३२॥

कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई * सहित पवनसुत सुखअधिकार्ई ॥
मुनि रघुपति-छवि अतुल बिलोकी * भये मगन मन सके न रोकी ॥
स्यामलगात सरोरुह - लोचन * सुंदरतामंदिर भवमोचन ॥
एकटक रहे निमेष न लावहिं * प्रभु कर जोरे सीस नवावहिं ॥
तिन्ह कै दमा देखि रघुवीरा * खवत नयन जल पुलक सरीरा ॥
कर गहि प्रभु मुनिवर वैठारे * परम मनोहर वचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा * तुम्हरे दरस जाहिं अथ खीसा ॥
वड़े भाग पाइय सतसंगा * विनहिं प्रयास होइ भवभंगा ॥

दोहा--संतसंग अपवर्ग कर, कामी भव कर पंथ ।

कहहिं संत कवि कोविद, स्तुति पुरान सदग्रंथ ॥३३॥

मुनि प्रभुवचन हरषि मुनि चारी * पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवंत अनंत अनामय * अनघ अनेक एक करुनामय ॥
जय निर्गुन जय जय गुनसागर * सुखमंदिर सुंदर अति आगर ॥
जय इंदिरारमन जय भूधर * अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥
ग्यान निधान अमान मानप्रद * पावन सुजम पुरान वेद वद ॥
तग्य कृतग्य अग्यताभंजन * नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्व सर्वगत सर्वउरालय * बससि मदा हम कहँ परिपालय ॥
द्वंद विपति भवफंद विभंजय * हृदि बसि राम काममद गंजय ॥

दोहा--परमानन्द कृपायतन, मन-परि-पूरन काम ।

प्रेम भगति अनपायनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥३४॥

देहु भगति रघुपति अतिपावनि * त्रि-विध-ताप-भव-दाप-नसावनि ॥
प्रनत काम सुरधनु कलपतरु * होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह वरु ॥
भव-वारिधि-कुम्भज रघुनायक * मेवकसुलभ सकल-सुख-दायक ॥
मन-संभव - दारुन - दुख दारय * दीनबंधु ममता विस्तारय ॥

आम-त्राम-इरिपादि निवारक * विनय-विवेक-विरति - विस्तारक ॥
 भूप-मौलि-मनि मंडन धरनी * देहि भगति संसृति-सरि-तरनी ॥
 मुनि - मन - मानस- हंस निरंतर * चरनकमल वंदित अज मंकर ॥
 रघुकुल - केतु सेतु स्रुतिरच्छक * काल - कर्म - सुभाव - गुन - भच्छक ॥
 तारन तरन हरन सब दूषन * तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन-भूषन ॥
 दोहा-बार बार अस्तुति करि, प्रेमसहित सिर-नाइ ।

ब्रह्मभवन सनकादि गे, अतिअभीष्ट वर पाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिक विधिलोक सिधाये * भ्रातन्ह रामचरन सिरु नाये ॥
 पूछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं * चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥
 सुनी चहहिं प्रभुमुख कै वानी * जो सुनि होइ सकल-भ्रम-हानी ॥
 अंतरजामी प्रभु सब जाना * बूझत कहहु काह हनुमाना ॥
 जोरि पानि कह तव हनुमंता * सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥
 नाथ भरत कछु पूछन चहहीं * प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं ॥
 तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ * भरतहिं मोहि कछु अंतर काऊ ॥
 सुनि प्रभुवचन भरत गहे चरना * सुनहु नाथ प्रनतारतिहरना ॥
 दोहा--नाथ न मोहि संदेह कछु, सपनेहुँ सोक न मोह ।

केवल कृपा तुम्हारिही, कृपा-नंद-संदोह ॥ ३६ ॥

करौ कृपानिधि एक ढिठाई * मै सेवक तुम्ह जन-सुखदाई ॥
 संतन कै महिमा रघुराई * बहुविधि वेद पुरानन्हि गाई ॥
 श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई * तिन्ह पर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई ॥
 सुना चहौं प्रभु तिन्ह कर लच्छन * कृपासिंधु गुन-ग्यान-विचच्छन ॥
 संत अमंत भेद बिलगाई * प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई ॥
 संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता * अगनित स्रुति पुरान विख्याता ॥
 संत अमंतन्ह कै असि करनी * जिमि कुठार चंदन आचरनी ॥
 काटै परसु मलय सुनु भाई * निजगुन देइ सुगंध बसाई ॥
 दोहा-ताते सुरसीसन्ह चढ़त, जगबल्लभ श्रीखंड ।

अनल दाहिं पीटत घनहिं, परसुवदन यह दंड ॥ ३७ ॥

विषय अलंपट सीलगुनाकर * परदुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
 सम अभूतरिपु विमद धिरागी * लोभामरण हरप भय त्यागी ॥
 कोमलचित दीनन्ह पर दाया * मन वच क्रममम भगति अमाया ॥
 मबहिं मानप्रद आपु अमानी * भरत प्रानमम मम तें प्रानी ॥
 विगतकाम मम नामपरायन * सांति विरति विनती मुदितायन ॥
 सीतलता सरलता मइत्री * द्विज-पद-प्रीति धरमजनयित्री ॥
 ये सब लच्छन बसहिं जासु उर * जानहु तात संत संतत फुर ॥
 सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं * परुष वचन कबहुं नहिं बोलहिं ॥
 दोहा--निंदा अस्तुति उभय सम, ममता मम पदकंज ।

ते सज्जन मम प्रानप्रिय, गुणमंदिर सुखपुंज ॥३८॥

सुनहु अमंतन्ह केर सुभाऊ * भूलेहु संगति करिय न काऊ ॥
 तिन्ह कर संग सदा दुखदाई * जिमि कपिलहि घाले हरदाई ॥
 खलन्ह हृदय अतिताप विसेखी * जरहिं सदा परसंपति देखी ॥
 जहँ कहँ निंदा सुनहिं पराई * हरपहिं मनहुं परी निधि पाई ॥
 काम-क्रोध-मद-लोभ-परायन * निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
 वयरु अकारन सब काहू साँ * जो कर हित अनहित ताहू माँ ॥
 झूठै लेना झूठै देना * झूठै भोजन झूठ चवना ॥
 बोलहिं मधुरवचन जिमि मोरा * खाहिं महाअहि हृदय कठोरा ॥
 दोहा--परद्रोही पर--दार--रत, परधन परअपवाद ।

ते नर पावँ पापमय, देह धरे मनुजाद ॥३९॥

लोभै ओढन लोभै डामन * सिस्नोदरपर जमपुर--त्रासन ॥
 काहू कै जाँ सुनहिं वड़ाई * स्वाम लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
 जब काहू कै देखहिं विपती * सुखी भये मानहुं जगनृपती ॥
 स्वारथरत परिवारविरोधी * लंपट काम लोभ अतिक्रोधी ॥
 मातु पिता गुरु विप्र न मानहिं * आपु गये अरु घालहिं आनहिं ॥
 करहिं मोहवम द्रोह परावा * संत संग हरिकथा न भावा ॥
 अव--गुन--सिंधु मंदमति कामी * वेदविदूषक पर - धन - स्वामी ॥
 विप्रद्रोह सुरद्रोह विसेषा * दंभ कपट जिय धरे सुवंपा ॥

दोहा--ऐसे अधम मनुज खल, कृतजुग त्रेता नाहिं ।

हापर कळुक वृंद बहु, होइहहिं कलिजुग माहिं ॥४०॥
 परहित मरिम धर्म नहिं भाई * परपीडा सम नहिं अधमाई ॥
 निरनय सकल पुरान वेद कर * कहेउं तात जानहिं कोविद नर ॥
 नर सरीर धरि जे परपीरा * करहिं ते सहहिं महा-भव-भीरा ॥
 करहिं मोहवस नर अध नाना * स्वारथरत परलोक नसाना ॥
 कालरूप तिन्ह कहैं में भ्राता * सुभ अरु असुभ करम-फल दाता ॥
 अम विचारि जे परमसयाने * भजहिं मोहि संसृति दुख जाने ॥
 त्यागहिं कर्म सुभा-सुभ-दायक * भजहिं मोहिं सुर-नर-मुनि-नायक ॥
 संत अमंतन के गुन भाखे * ते न परिहिं भव जिन्ह लखि राखे ॥
 दोहा--सुनहु तात मायाकृत, गुन अरु दोष अनेक ।

गुन यह उभय न देखियहिं, देखिय सो अविबेक ॥४१॥
 श्रीमुख-वचन सुनत सब भाई * हरपे प्रेमु न हृदय ममाई ॥
 करहिं विनय अति वारहिं वारा * हनूमान हिय हरष अपारा ॥
 पुनि रघुपति निज मंदिर गये * एहि विधि चरित करत नित नये ॥
 बार बार नारदमुनि आवहिं * चरित पुनीत राम के गावहिं ॥
 नित नव चरित देखि मुनि जाहीं * ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
 मुनि विरंचि अतिसय सुख मानहिं * पुनि पुनि तात करहु गुनगानहिं ॥
 मनकादिक नारदहिं सराहहिं * जद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं ॥
 मुनि गुनगान समाधि विसारी * सादर सुनहिं परमअधिकारी ॥
 दोहा--जीवनमुक्त ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजि ध्यान ।

जे हरि कथा न करहिं रति, तिन्ह के हिय पापान ॥४२॥
 एक बार रघुनाथ बोलाये * गुरु द्विज पुरवासी सब आये ॥
 बैठ सदसि अनुज मुनि सज्जन * बोले वचन भगत-भय-भंजन ॥
 सुनहु सकल पुरजन मम बानी * कहौं न कळु ममता उर आनी ॥
 नहिं अनीति नहिं कळु प्रभुताई * सुनहु करहु जौ तुम्हहिं सुहाई ॥
 मोइ सेवक प्रियतम मम सोई * मम अनुसासन मानै जोई ॥
 जौं अनीति कळु भाषउं भाई * तौ मोहि बरजहु भय विसराई ॥

बड़े भाग मानुषतनु पावा * सुरदुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥
साधनधाम मोच्छ कर द्वारा * पाइ न जेहि परलोक सँवारा ॥
दोहा--सो परत्र दुख पावइ, सिरु धुनि धुनि पछिताइ ।

कालहि कर्महि ईस्वरहि, मिथ्या दोष लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तन कर फल विषय न भाई * स्वरगउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
नरतनु पाइ विषय मन देहीं * पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं ॥
ताहि कवहुँ भल कहै न कोई * गुंजा गहै परसमनि खोई ॥
आकर चारि लच्छ चौरासी * जोनि भ्रमत यह जिव अविनासी ॥
फरत सदा माया कर प्रेरा * काल कर्म सुभाव गुन घेरा ॥
कवहुँक करि करुना नरदेही * देत ईस विनु हेतु सनेही ॥
नरतनु भववारिधि कहुँ बेरो * सनमुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
करनधार सदगुरु दृढ़ नावा * दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥
दोहा--जो न तरै भवसागर, नर समाज अस पाइ ।

सो कृतनिंदक मंदमति, आतम-हन-गति जाइ ॥ ४४ ॥

जौं परलोक इहाँ सुख चहहू * सुनि ममवचन हृदय दृढ़ गहहू ॥
सुलभ सुखद मारग यह भाई * भगति मोरि पुरान सुति गाई ॥
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका * साधन कठिन न मन कहै टेका ॥
करत कष्ट बहु पावै कोऊ * भगतिहीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ ॥
भगति सुतंत्र सकल-सुख-खानी * विनु सतसंग न पावहिं प्राणी ॥
पुन्यपुंज विनु मिलहिं न संता * सतसंगति संसृति कर अंता ॥
पुन्य एक जग महँ नहिं दूजा * मन क्रम वचन विप्र-पद-पूजा ॥
सानुकूल तेहि पर मुनि देवा * जो तजि कपट करै द्विज सेवा ॥
दोहा--अउरउ एक गुपुत मत, सबहिं कहहुँ कर जोरि ।

संकरभजन विना नर, भगति न पावै मोरि ॥ ४५ ॥

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा * जोग न मख जप तप उपवामा ॥
सरल सुभाव न मन कुटिलाई * जथालाभ मंतोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा * करै त कहहु कहा विस्वासा ॥
बहुत कहाँ का कथा बड़ाई * एहि आचरन वस्य मै भाई ॥

बयरु न बिग्रह आम न त्रासा * सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
 अनारंभ अनिकेत अमानी * अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी ॥
 प्रीति सदा सज्जन संसर्गा * तृनसम बिषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
 भगति पच्छ हठ नहिं सठताई * दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई ॥

दोहा-मम गुनग्राम नाम रत, गत-ममता-मद-मोह ।

ता कर सुख सोइ जानइ, परानंदसंदोह ॥ ४६ ॥

सुनत सुधासम वचन राम के * गहे सबन्हि पद कृपाधाम के ॥
 जननि जनक गुरु बंधु हमारे * कृपानिधान प्रान तेँ प्यारे ॥
 तनु धनु धाम राम हितकारी * सब विधि तुम्ह प्रनतारतिहारी ॥
 अस मिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ * मातु पिता स्वारथरत ओऊ ॥
 हेतुरहित जग जुग उपकारी * तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ॥
 स्वारथमीत सकल जग माहीं * सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं ॥
 सब के बचन प्रेमरससाने * सुनि रघुनाथ हृदय हरपाने ॥
 निज गृह गये सुआयसु पाई * बरनत प्रभु बतकही सुहाई ॥
 दोहा--उमा अवधवासी नर, नारि कृतारथ रूप ।

ब्रह्म सच्चिदानंद घन, रघुनायक जहँ भूप ॥ ४७ ॥

एक बार बसिष्ठ मुनि आये * जहाँ राम सुखधाम सुहाये ॥
 अतिआदर रघुनायक कीन्हा * पद पखारि चरनोदक लीन्हा ॥
 राम सुनहु मुनि कह कर जोरी * कृपासिंधु बिनती कछु मोरी ॥
 देखि देखि आचरन तुम्हारा * होत मोह मम हृदय अपारा ॥
 महिमा अमित बेद नदिं जाना * मैं केहि भाँति कहौं भगवाना ॥
 उपरोहिती कर्म अतिमंदा * बेद पुरान सुसृति कर निंदा ॥
 जब न लेउँ मैं तव विधि मोही * कहा लाभ आगे सुत तोही ॥
 परमात्मा ब्रह्म नररूपा * होइहि रघु कुल-भूपन भूपा ॥
 दोहा--तव मैं हृदय विचारा, जोग जग्य ब्रत दान ।

जा कहँ करिय सो पाइहौं, धर्म न एहि सम आन ॥ ४८ ॥

जप तप नियम जोग निज धर्मा * सुतिसंभव नाना सुभ कर्मा ॥
 ग्यान दया दम तीरथ मज्जन * जहँ लगी धरम कहत सुति सज्जन ॥

आगम निगम पुरान अनेका * पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥
 तव पद-पंकज प्रीति निरंतर * सब माधन कर यह फल सुंदर ॥
 छट्टे मल कि मलहि के धोये * घृत कि पाव कोउ बारि बिलोये ॥
 प्रेम भगति जल विनु रघुराई * अभि-अंतर-मल कवहुँ न जाई ॥
 सोइ सर्वग्य तग्य सोइ पंडित * सोइ गुनगृह विग्यान अखंडित ॥
 दच्छ सकल-लच्छन-जुत सोई * जा के पद -- सरोज रति होई ॥
 दोहा--नाथ एक बर मागउँ, राम कृपा करि देहु ।

जनम जनम प्रभु-पद-कमल, कवहुँ घटै जनि नेहु ॥४६॥

अस कहि मुनि वसिष्ठ गृह आये * कृपामिंधु के मन अति भाये ॥
 हनूमान भरतादिकभ्राता * संग लिये सेवक - मुख - दाता ॥
 पुनि कृपाल पुर बाहर गये * गज रथ तुरग मँगावत भये ॥
 देखि कृपा करि सकल सराहे * दिये उचित जिन्ह जिन्ह जेइ चाहे ॥
 हरन सकलस्रम प्रभु स्रम पाई * गये जहाँ मीतल अवर्राई ॥
 भरत दीन्ह निज वसन डसाई * बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
 मारुतसुत तव मारुत करई * पुलक वपुष लोचन जल भरई ॥
 हनूमान समान बड़ भागी * नहिं कोउ राम-चरन-अनुरागी ॥
 गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई * बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥
 दोहा--तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल बीन ।

गावन लागे राम-कल-कीरति सदा नवीन ॥५०॥

मामवलोक्य पंकज-लोचन * कृपा विलोकनि सोचविमोचन ॥
 नील-तामरस-स्याम कामअरि * हृदय-कंज-मकरंद-मधुप हरि ॥
 जातुधान - वरूथ - बल - भंजन * मुनि-सज्जन-रंजन अधगंजन ॥
 भूसुर मसि नव बृंद बलाहक * अ-सरन-सरन दीन-जन-गाहक ॥
 भुज बल विपुल भार महि खंडित * खर-दूषन-विराध-वध पंडित ॥
 रावनारि सुखरूप भूपवर * जय दमरथ-कुल-कुमुद-सुधाकर ॥
 सुजसु पुरानविदित निगमागम * गावत गुर-मुनि-संत-ममागम ॥
 कारुणीक व्यलीक-मद-खंडन * मव विधि कुमल कोसलामंडन ॥
 कलि-मल-मथन-नाम ममताहन * तुलमि-दास-प्रभु पाहि प्रनतजन ॥

दोहा-प्रेमसहित मुनि नारद, वरनि राम-गुन-ग्राम ।

सोभासिंधु हृदय भरि, गये जहाँ विधिधाम ॥५१॥

गिरिजा सुनहु विसद यह कथा * मैं सब कही मोरि मति जथा ॥

रामचरित सत कोटि अपारा * सुति सारदा न वरनइ पारा ॥

राम अनंत अनंतगुनानी * जनम कर्म अनंत नामानी ॥

जलसीकर महिरज गनि जाहीं * रघुपति-चरित न वरनि सिराहीं ॥

विमल कथा हरि-पद-दायिनी * भगति होइ सुनि अनपायिनी ॥

उमा कहेउँ सब कथा सुहाई * जो भुसुंड़ि खगपतिहिं सुनाई ॥

कल्लुक रामगुन कहेउँ बखानी * अब का कहौं सो कहहु भवानी ॥

सुनि सुभकथा उमा हरषानी * बोली अतिविनीत मृदुवानी ॥

धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी * सुनेउँ रामगुन भव-भय-हारी ॥

दोहा--तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह ।

जानेउँ रामपूताप प्रभु, चिदानंदसंदोह ॥

नाथ तवानन ससि स्रवत, कथा सुधा रघुवीर ।

स्रवनपुटन्हि मन पान करि, नहिं अघात मतिधीर ॥५२॥

रामचरित जे सुनत अघाहीं * रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं ॥

जीवनमुक्त महामुनि जेऊ * हरिगुन सुनहिं निरंतर तेऊ ॥

भवसागर चह पार जो पावा * रामकथा ता कहै दृढ़ नावा ॥

विषइन्ह कहैं पुनि हरि-गुन-ग्रामा * स्रवनसुखद अरु मनअभिरामा ॥

स्रवनवंत अस को जग माहीं * जाहि न रघुपति-चरित सुहाहीं ॥

ते जड़ जीव निजा-त्मक-घाती * जिन्हहिं न रघुपति-कथा सुहाती ॥

हरि-चरित्र-मानस तुम्ह गावा * सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ॥

तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई * कागभुसुंड़ि गरुड प्रति गाई ॥

दोहा--बिरति ग्यान विग्यान दृढ़, रामचरित अतिनेह ।

बायसतन रघुपति-भगति, मोहि परम संदेह ॥ ५३ ॥

नरसहस्र महुँ सुनहु पुरारी * कोउ एक होइ धर्म-व्रत-धारी ॥

धर्मसील कोटिक महुँ कोई * विषयविमुख विरागरत होई ॥

कोटि-विरक्त-मध्य सुति कहई * सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई ॥
 ग्यानवंत कोटिक महँ कोऊ * जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ ॥
 तिन्ह सहस्र महँ सब सुखखानी * दुर्लभ ब्रह्मलीन बिग्यानी ॥
 धर्मसील विरक्त अरु ग्यानी * जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्राणी ॥
 सब तैं सो दुर्लभ सुरराया * राम-भगति-रत गत-मद-माया ॥
 सो हरिभगति काग किमि पाई * विस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई ॥
 दोहा-रामपरायन ग्यानरत, गुनागार मतिधीर ।

नाथ कहहु केहि कारन, पायेउ कागसरीर ॥ ५४ ॥

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा * कहहु कृपाल काग कहँ पावा ॥
 तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी * कहहु मोहि अति कौतुक भारी ॥
 गरुड़ महाग्यानी गुनरासी * हरिसेवक अतिनिकट निवासी ॥
 तेहि केहि हेतु काग सन जाई * सुनी कथा मुनिनिकर बिहाई ॥
 कहहु कवन विधि भा संवादा * दोउ हरिभगत काग उरगादा ॥
 गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई * बोले सिव सादर सुख पाई ॥
 धन्य सती पावनि मति तोरी * रघुपति-चरन प्रीति नहिं थोरी ॥
 सुनहु परम पुनीत इतिहासा * जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा ॥
 उपजै रामचरन विस्वासा * भवनिधि तर नर विनहिं प्रयासा ॥
 दोहा--ऐसइ प्रस्न बिहंगपति, कीन्ह काग सन जाइ ।

सो सब सादर कहिहउँ, सुनहु उमा मन लाइ ॥ ५५ ॥

मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि * सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि ॥
 प्रथम दच्छगृह तव अवतारा * सती नाम तव रहा तुम्हारा ॥
 दच्छजग्य जब भा अपमाना * तुम्ह अति क्रोध तज तव प्राणा ॥
 मम अनुचरन्ह कीन्ह मखभंगा * जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ॥
 तव अति सोच भयेउ मन मोरें * दुखी भयउँ वियोग प्रिय तोरें ॥
 सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा * कौतुक देखत फिरैउँ विरागा ॥
 गिरि सुमेरु उत्तर दिसि दूरी * नील सैल एक सुंदर भूरी ॥
 तासु कनकमय सिखर सुहाये * चारि चारु मोरे मन भाये ॥

तिन्ह पर एक एक विटप विसाला * वट पीपर पाकरी रसाला
सैलोपरि सर सुंदर सोहा * मनिसोपान देखि मन मोहा ॥

दोहा—सोतल अमल मधुर जल, जलज विपुल बहुरंग ।

कजत कलरव हंसगन, गुंजत मंजुल भृंग ॥ ५६ ॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई * तासु नास कलपांत न होई ॥
मायाकृत गुन दोष अनेका * मोह मनोज आदि अविबंका ॥
रहे व्यापि समस्त जग माहा * तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं ॥
तहँ बसि हरिहि भजै जिमि कागा * सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥
पीपर तरु तर ध्यान जो धरई * जाप जग्य पाकरि तर करई ॥
आमझाहँ कर मानस पूजा * तजि हरिभजन काज नहिं दूजा ॥
बर तर कह हरि-कथा-प्रमंगा * आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा ॥
रामचरित विचित्र विधाना * प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
सुनहिं सकल मति विमल मराला * बसहिं निरंतर जो तेहि ताला ॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा * उर उपजा आनंद विसेखा ॥

दोहा—तब कछु काल मरालतनु, धरि तहँ कीन्ह निवास ।

सादर सुनि रघुपति-गुन, पुनि आयउँ कैलास ॥५७॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा * मैं जेहि समय गयउँ खग पासा ॥
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू * गयउ काग पहिं खग-कुल-केतू ॥
जब रघुनाथ कीन्ह रनक्रीड़ा * समुक्त चरित होत मोहि ब्रीड़ा ॥
इंद्रजीत कर आपु बंधायो * तब नारद मुनि गरुड़ पठायो ॥
बंधन काटि गयउ उरगादा * उपजा हृदय प्रचंड विषादा ॥
प्रभुबंधन समुझत बहु भाँति * करत विचार उरगआराती ॥
व्यापक ब्रह्म विरज बागीसा * माया - मोह - पार परमीसा ॥
सो अवतार सुनेउँ जग माहीं * देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दोहा--भवबंधन तें छूटहिं, नर जप जा कर नाम ।

खर्व निसाचर बाँधेउ, नागपास सोइ राम ॥५८॥

नाना भाँति मनहिं समुझावा * प्रगट न ग्यान हृदय भ्रम छावा ॥
खेदखिन्न मन तर्क बढ़ाई * भयउ मोहबस तुम्हरिहि नाई ॥

व्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं * कहेसि जो संसय निज मन माहीं ॥
 सुनि नारदहिं लागि अति दाया * सुनु खग प्रबल राम कै माया ॥
 जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई * बरिआई विमोह मन करई ॥
 जेहि बहु वार नचावा मोही * सोइ व्यापी विहंगपति तोही ॥
 महामोह उपजा उर तोरे * मिटिहि न बेगि कहे खग मोरे ॥
 चतुरानन पहिं जाहु खगोसा * सोइ करेहु जो देहिं निदेसा ॥

दोहा--अस कहि चले देवरिषि, करत राम-गुन-गान ।

हरि-माया-बल बरनत, पुनि पुति परम सुजान ॥५६॥

तव खगपति विरंचि पहिं गयऊ * निज संदेह सुनावत भयऊ ॥
 सुनि विरंचि रामहिं सिरु नावा * समुक्ति प्रताप प्रेम उर छावा ॥
 मन महुँ करै विचार विधाता * मायाबम कवि कोविद ग्याता ॥
 हरिमाया कर अमित प्रभावा * विपुल वार जेहि मोहि नचावा ॥
 अग-जग-मय सब मम उपराजा * नहिं आचरज मोह खगराजा ॥
 तव बोले विधि गिरा सुहाई * जान महेस रामप्रभुताई ॥
 बैनतेय मंकर पहिं जाहु * तात अनत पूछहु जनि काहु ॥
 तहँ होइहि तव संसयहानी * चलेउ विहंग सुनत विधिवानी ॥

दोहा--परमातुर विहंगपति, आयउ तव मो पास ।

जात रहेउँ कुबेरगृह, रहिहु उमा कैलास ॥६०॥

तेहि मम पद सादर मिरु नावा * पुनि आपन संदेह सुनावा ॥
 सुनि ता करि विनीत मृदुबानी * प्रेम सहित में कहेउँ भवानी ॥
 मिलेहु गरुड़ मारग महुँ मोही * कवन भाँति समुझावौं तोही ॥
 तवहिं होइ सब संसय भंगा * जब कहु काल करिय मतमंगा ॥
 सुनिय तहाँ हरिकथा सुहाई * नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई ॥
 जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना * प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
 नित हरिकथा होतिजहँ भाई * पठवौं तहाँ सुनहु तुम्ह जाई ॥
 जाइहि सुनत सकल मंदेहा * रामचरन होइहि अतिनेहा ॥

दोहा--विनु सतसंग न हरिकथा, तेहि विनु मोह न भाग ।

मोह गये विनु रामपद, होइ न दृढ़ अनुराग ॥६१॥

मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा * किये जोग जप ग्यान विरागा ॥
 उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला * तहँ रह कागभुसुंडि सुसीला ॥
 राम-भगति-पथ परमप्रबीना * ज्ञानी गुनगृह बहुकालीना ॥
 रामकथा सो कहइ निरंतर * सादर सुनहिं विविध विहंगवर ॥
 जाइ सुनहु तहँ हरिगुन भूरी * होइहि मोहजनित दुख दूरी ॥
 मैं जब तेहि सब कहा बुझाई * चलेउ हरषि मम पद सिरु नाई ॥
 ता तें उमा न मैं समुझावा * रघुपति कृपा मरम मैं पावा ॥
 होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना * सो खोवइ चह कृपानिधाना ॥
 कळु तेहितें पुनि मैं नहिं राखा * समुझइ खग खग ही कै भाखा ॥
 प्रभुमाया बलवंत भवानी * जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ॥
 दोहा--ग्यानी भगत सिरोमनि, त्रि-भुवन-पति कर जान ।

ताहि मोह माया नर, पावँर करहिं गुमान ॥

सिव विरंचि कहँ मोहै, को है बपुरा आन ।

अस जिय जानि भजहिं मुनि, मायापति भगवान् ॥६२॥

गयउ गरुड़ जहँ वसै भुसुंडी * मति अकुंठ हरिभगति अखंडी ॥
 देखि सयल प्रसन्न मन भयऊ * माया मोह सोच सब गयऊ ॥
 करि तड़ाग मज्जन जलपाना * बट तर गयउ हृदय हरपाना ॥
 बृद्ध बृद्ध विहंग तहँ आये * सुनै राम के चरित सुहाये ॥
 कथाअरंभ करे सोइ चाहा * तेही समय गयउ खगनाहा ॥
 आवत देखि सकल खगराजा * हरषेउ बायस सहित समाजा ॥
 अतिआदर खगपति कर कीन्हा * स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
 करि पूजा समेत अनुरागा * मधुर वचन तब बोलेउ कागा ॥

दोहा--नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दरसन खगराज ।

आयसु देहु सो करौं अब, प्रभु आयहु केहि काज ॥

सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदुवचन खगेस ।

जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुख कीन्हि महेस ॥६३॥

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ * सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥
 देखि परम पावन तव आस्रम * गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥
 अब श्रीराम-कथा अतिपावनि * सदा सुखद दुख-पुंज-नमावनि ॥
 सादर तात सुनावहु मोही * बार बार बिनवौं प्रभु तोही ॥
 सुनत गरुड़ कै गिरा विनीता * सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
 भयउ तासु मन परम उझाहा * लाग कहै रघुपति-गुन-गाहा ॥
 प्रथमहिं अति अनुराग भवानी * राम-चरित-सर कहेसि बखानी ॥
 पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥
 प्रभु-अवतार-कथा पुनि गाई * तव सिसुचरित कहेसि मन लाई ॥
 दोहा-बालचरित कहि विविधविधि, मन महुँ परमउछाह ।

रिंषिआगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुवीर-बिवाह ॥ ६४ ॥

बहुरि राम-अभिषेक-प्रमंगा * पुनि नृपवचन राज-रस-भंगा ॥
 पुरवासिन्ह कर विरह विषादा * कहेसि राम-तन्त्रिमन-संवादा ॥
 विपिनगवन केवटअनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
 बालमीकि-प्रभु-मिलन बखाना * चित्रकूट जिमि बस भगवाना ॥
 सचिवागवँन नगर नृपमरना * भरतागवँन प्रेम बहु वरना ॥
 करि नृपक्रिया संग पुरवासी * भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी ॥
 पुनि रघुपति बहु विधि समुझाये * लेइ पाटुका अवधपुर आये ॥
 भरतरहनि सुर-पति-सुत-करनी * प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि वरनी ॥
 दोहा-कहि विराध बध जेहि विधि, देह तजी सरभंग ।

वरनि सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभुअगस्ति सतसंग ॥ ६५ ॥

कहि दंडक वन पावनताई * गीधमइत्री पुनि तेहि गाई ॥
 पुनि प्रभु पंचवटी कृत वासा * भंजी सकल मुनिन्ह क त्रासा ॥
 पुनि लछिमन उपदेस अनूपा * सूपनखा जिमि कीन्ह कुरूपा ॥
 खर-दूषन-बध बहुरि बखाना * जिमि सब मरमु दसानन जाना ॥
 दसकंधर - मारीच - बतकही * जेहि विधि भई मो सब तेहि कही ॥
 पुनि माया सीता कर हरना * श्रीरघुवीर-विरह कहु वरना ॥

पुनि प्रभु गीधक्रिया जिमि कीन्ही * बधि कबंध सवरिहि गति दीन्ही ॥
बहुरि विरह वरनत रघुवीरा * जेहि विधि गये सरोवरतीरा ॥

दोहा-प्रभु-नारद-संवाद कहि, मारुत-मिलन-प्रसंग ।

पुनि सुग्रीवमिताई, बालिप्रान कर भंग ॥

कपिहि तिलक करि प्रभुकृत, सैल पूवरपन बास ।

वरनत वरपा सरद कर, रामरोष कपित्रास ॥६६॥

जेहि विधि कपिपति कीस पठाये * सीताखोजन सकल सिधाये ॥

विवरप्रवेस कीन्ह जेहि भाँती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥

सुनि सब कथा समीरकुमारा * नाँघत भयउ पयोधि अपारा ॥

लंका कपि प्रवेस जिमि कीन्हा * पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा ॥

वन उजारि रावनहिँ प्रवोधी * पुर दहि नाँघेउ बहुरि पयोधी ॥

आये कपि सब जहँ रघुराई * वैदेही क कुमल सुनाई ॥

सेनसमेत जेहि रघुवीरा * उतरे जाइ वारि-निधि-तीरा ॥

मिला विभीषन जेहि विधि आई * सागरनिग्रह कथा सुनाई ॥

दोहा-सेतु बाँधि कपिसेन जिमि, उतरी सागरपार ।

गयउ बसीठी बीरवर, जेहि विधि बालिकुमार ॥

निसिचर-कीस-लराई, वरनेसि विविध प्रकार ।

कुंभकरन घननाद कर, बल - पौरुष - संहार ॥६७॥

निसिचर-निकर-मरन विधि नाना * रघुपति - रावन - समर बखाना ॥

रावनबध मंदोदरि सोका * राज विभीषन देव असोका ॥

सीता - रघुपति - मिलन बहोरी * सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी ॥

पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता * अवध चले प्रभु कृपानिकेता ॥

जेहि विधि राम नगर निज आये * वायस विसद चरित सब गाये ॥

कहेसि बहोरि रामअभिषेका * पुर बरनन नृपनीति अनेका ॥

कथा समस्त भुसुंडि बखानी * जो मैं तुम्ह सन कही भवानी ॥

सुनि सब रामकथा खगनाहा * कहत बचन मन परमउच्चाहा ॥

सोरठा-गयउ मोर संदेह, सुनेउँ सकल रघुपति-चरित ।

भयउ राम-पद-नेह, तव प्रसाद बायसतिलक ॥

मोहि भयउ अति मोह, प्रभुबंधन रन महुँ निरखि ।

चिदानन्द संदोह, राम विकल कारन कवन ॥६८॥

देखि चरित अति नर अनुसारी * भयउ हृदय मम संसय भारी ॥

सोइ भ्रम अब हित करिमें जाना * कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥

जो अतिआतप व्याकुल होई * तरुवाया सुख जानइ सोई ॥

जौं नहिं होत मोह अति मोही * मिलतेउँ तात कवन विधि तोही ॥

सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई * अतिविचित्र बहु विधि तुम्ह गाई ॥

निगभागम पुरानमत एहा * कहहिं मिद्ध मुनि नहिं संदेहा ॥

मंत विसुद्ध मिलहिं परि तेही * चितवहिं राम कृपा करि जेही ॥

रामकृपा तव दरसन भयऊ * तव प्रसाद सब संसय गयऊ ॥

दोहा--सुनि विहंगपति वानी, सहित विनय अनुराग ।

पुलक गात लोचन सजल, मन हरपेउ अति काग ॥

स्रोता सुमार्त सुसीलसुचि, कथा रसिक हरिदास ।

पाइ उमा अतिगोप्य अति, सज्जन करहिं प्रकास ॥६९॥

बोलेउ कागभुमुंडि बहोरी * नभगनाथ पर प्रीति न थोरी ॥

सब विधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे * कृपापात्र रघुनायक केरे ॥

तुम्हहिं न संसय मोह न माया * मो पर नाथ कीन्हि तुम्ह दायी ॥

पठइ मोहमिम खगपति तोही * रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही ॥

तुम्ह निज मोह कहा खगमाई * सो नहिं कलु आचरज गोसाई ॥

नारद भव विरंचि सनकादी * जे मुनिनायक आतमवादी ॥

मोह न अंध कीन्ह केहि केही * को जग काम नचाव न जेही ॥

तृष्णा केहि न कीन्ह बौरहा * केहि कर हृदय क्रोध नहिं दहा ॥

दोहा-ग्यानी तापस सूर कवि, कोविद गुनआगार ।

केहि कै लोभ विडंबना, कीन्हि न एहि संसार ॥

श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि ।

मृग-लोचनि-लोचन सर, को अस लाग न जाहि ॥७०॥

गुन कृत सन्यपात नहिं केही * कोउ न मान मद तजेउ निवेही ॥

जोवनज्वर केहि नहिं बलकावा * ममता केहि कर जसुन नसावा ॥

मच्छर काहि कलंकु न लावा * काहि न सोक समीर डोलावा ॥

चिंतासाँपिन को नहिं खाया * को जग जाहि न व्यापी माया ॥

कीट मनोरथ दारु सरीरा * जेहि न लागु धुन को अस धीरा ॥

सुत बित लोक ईषना तीनी * केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥

यह सब माया कर परिवारा * प्रबल अमित को बरनै पारा ॥

सिव चतुरानन जाहि डेराहीं * अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दोहा-व्यापि रहेउ संसार महुँ, मायाकटक प्रचंड ।

सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाखंड ॥

सो दासी रघुबीर कै, समुझे मिथ्या सोपि ।

छूट न राम कृपा विनु, नाथ कहौं पद रोपि ॥७१॥

जो माया सब जगहि नचावा * जासु चरित लखि काहु न पावा ॥

सोइ प्रभु भ्रूलिलास खगराजा * नाच नटी इव सहित समाजा ॥

सोइ सच्चिदानंदधन रामा * अज विग्यानरूप बलधामा ॥

व्यापक व्याप्य अखंड अनंता * अखिल अमोघसक्ति भगवंता ॥

अगुन अदभ्र गिरागोतीता * सबदरसी अनवद्य अजीता ॥

निर्मल निराकार निर्मोहा * नित्य निरंजन सुखसंदोहा ॥

प्रकृतिपार प्रभु सब उर बासी * ब्रह्म निरीह बिरज अविनासी ॥

इहाँ मोह कर कारन नाही * रविसनमुख तम कबहुँ कि जाहीं ॥

दोहा-भगत हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप ।

किये चरित पावन परम, प्राकृत-नर-अनुरूप ॥

जथा अनेक वेष धरि, नृत्य करइ नट कोइ ।

सोइ सोइ भाव देखावइ, आपुन होइ न सोइ ॥७२॥

असि रघु-पति-लीला उरगारी * दनुजविमोहनि जन-सुख-कारी ॥
 जै मतिमलिन विषयवस कामी * प्रभु पर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
 नयनदोष जा कहँ जब होई * पीतवरन ससि कहँ कह सोई ॥
 जब जेहि दिसिभ्रम होइ खगोसा * सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा ॥
 नौकारूढ़ चलत जग देखा * अचल मोहवस आपुहि लेखा ॥
 बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी * कहहिं परसपर मिथ्यावादी ॥
 हरि विषैक अस मोह विहंगा * सपनेहुँ नहिं अग्यान-प्रमंगा ॥
 मायावस मतिमंद अभागी * हृदय जवनिका बहु विधि लागी ॥
 ते सठ हठवस संसय करहीं * निज अग्यान राम पर धरहीं ॥

दोहा—काम-क्रोध-मद-लोभ-रत, गृहासक्त दुखरूप ।

ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ़ परे तमकूप ॥

निर्गुनरूप सुलभ अति, सगुन न जानहिं कोइ ।

सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनिमन भ्रम होइ ॥७३॥

सुनु खगोस रघुपति-प्रभुताई * कहौं जथामति कथा सुहाई ॥
 जेहि विधि मोह भयउ प्रभु मोही * सो सब कथा सुनावौं तोही ॥
 राम-कृपा-भाजन तुम्ह ताता * हरि-गुन-प्रीति मोहि सुखदाता ॥
 ता तें नहिं कछु तुम्हहिं दुरावौं * परम रहस्य मनोहर गावौं ॥
 सुनहु राम कर सहज सुभाऊ * जन अभिमान न राखहिं काऊ ॥
 मंसृतमूल सूत्रप्रद नाना * सकल-सोक-दायक अभिमाना ॥
 ता तें करहिं कृपानिधि दूरो * सेवक पर ममता अतिभूरी ॥
 जिमि सिसुतन ब्रन होइ गोसाई * मातु चिराव कठिन की नाई ॥

दोहा—जदपि प्रथम दुख पावइ, रोवइ बाल अधीर ।

व्याधि-नास-हित जननी, गनत न सो सिसुपीर ॥

तिमि रघुपति निजदास कर, हरहिं मान हित लागि ।

तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कस न भजसि भ्रम त्यागि ॥७४॥

रामकृपा आपनि जड़ताई * कहौं खगोस सुनहु मन लाई ॥
 जब जब राम मनुजतनु धरहीं * भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥

तव तव अवधपुरी मैं जाऊँ * वालचरित विलोकि हरषाऊँ ॥
 जनममहोत्सव देखौं जाई * वरष पाँच तहँ रहौं लोभाई ॥
 इष्टदेव मम वालक रामा * सोभा वपुष कोटि-सत-कामा ॥
 निज-प्रभु-वदन निहारि निहारी * लोचन सुफल करौं उरगारी ॥
 लघु वायमवपु धरि हरिसंगा * देखौं वालचरित बहुरंगा ॥
 दोहा-लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।

जूठनि परइ अजिर महुँ, सोइ उठाइ करि खाउँ ॥

एक वार अतिसय सब, चरित किये रघुवीर ।

सुमिरत प्रभुलीला सोइ, पुलकित भयउ सरीर ॥७५॥

कहइ भुसुंड़ि सुनहु खगनायक * रामचरित सेवक-सुख-दायक ॥
 नृपमंदिर सुंदर सब भाँती * खचित कनक मनि नाना जाती ॥
 वरनि न जाइ रुचिर अँगनाई * जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
 वालविनोद करत रघुराई * विचरत अजिर जननि-सुख-दाई ॥
 मरकतमृदुल कलेवर स्यामा * अंग अंग प्रति छवि बहु कामा ॥
 नव-राजीव-अरुन मृदु चरना * पदज रुचिर नख ससि-दुति-हरना ॥
 ललित अंक कुलिसादिक चारी * नूपुर चारु मधुर-रव कारी ॥
 चारु पुरट -- मनि-रचित बनाई * कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई ॥
 दोहा-रेखा त्रय सुंदर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ।

उर आयत भ्राजत विविध, बालविभूषन वीर ॥७६॥

अरुन पानि नखकरज मनोहर * वाहु विमाल विभूषन सुंदर ॥
 कंध बालकेहरि दर ग्रीवाँ * चारु चिबुक आनन छविसीवाँ ॥
 कलबल वचन अधर अरुनारे * दुइ दुइ दसन विसद वर वारे ॥
 ललित कपोल मनोहर नासा * सकल सुखद ससि-कर-सम हाँमा ॥
 नील-कंज-लोचन भवमोचन * भ्राजत भाल तिलक गोरोचन ॥
 बिकट भृकुटि सम सवन सुहाये * कुंचित कच मेवक छवि छाये ॥
 पीत झीनि झिगुली तन सोही * किलकनि चितवनि भावति मोही ॥
 रूपरासि नृप-अजिर -- विहारी * नाचहिं निजप्रतिविंब निहारी ॥

मोहि सन करहिं विविध विधिक्रीडा * वरनत मरित होत मोहि ब्रीडा ॥
किलकत मोहि धरन जब धावहिं * चलउँ भागि तव पूष देखावहिं ॥

दोहा--आवत निकट हसहिं प्रभु, भाजत रुदन करहिं ।

जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥

प्राकृत सिसु इव लीला, देखि भयउ मोहि मोह ।

कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानंदसंदोह ॥ ७७ ॥

एतना मन आनत खगराया * रघु-पति-प्रेरित व्यापी माया ॥

सो माया न दुखद मोहि काहीं * आन जीव इव मंसृति नाहीं ॥

नाथ इहाँ कछु कारन आना * सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥

ग्यान अखंड एक सीतावर * मायावस्य जीव सचराचर ॥

जौं सब के रह ग्यान एक रस * ईश्वर जीवहिं भेद कहहु कस ॥

मायावस्य जीव अभिमानी * ईसवस्य माया गुनखानी ॥

परवस जीव स्ववस भगवंता * जीव अनेक एक श्रीकंता ॥

मुधा भेद जद्यपि कृत माया * विनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

दोहा--रामचंद्र के भजन विनु, जो चह पद निर्वाण ।

ग्यानवंत अपि सो नर, पसु विनु पृच्छ विखान ॥

राकापति पोटस उअहिं, तारा-गन-समुदाइ ।

सकल गिरिन्हदव लाइय, विनु रविराति न जाइ ॥ ७८ ॥

ऐसेहि विनु हरिभजन खगेमा * मिटै न जीवन्ह केर कलेसा ॥

हरि सेवकहिं न व्याप अविद्या * प्रभुप्रेरित व्यापइ तेहि विद्या ॥

ता तें नास न होइ दास कर * भेद भगति बाढ़इ विहंगवर ॥

भ्रम तें चकित राम मोहि देखा * विहँसे सो सुनु चरित विसेखा ॥

तेहि कौतुक कर मरम न काहू * जाना अनुज न मातुपिता हू ॥

जानुपानि धाये मोहि धरना * स्यामलगात अरुन-कर-चरना ॥

तव मैं भागि चलेउँ उरगारी * राम गहन कहँ भुजा पमारी ॥

जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा * तहँ हरिभुज देखउँ निजपासा ॥

दोहा--ब्रह्मलोक लगि गयउँ मै, चितयउँ पाछ उड़ात ।

जुग अंगुल कर बीच सब, रामभुजहिं मोहि तात ॥

सप्तावरन भेद करि, जहाँ लगे गति मोरि ।

गयउ तहाँ प्रभु भुज निरखि, व्याकुल भयउँ बहोरि ॥७६॥

मूदेउँ नयन त्रसित जव भयऊँ * पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ ॥

मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं * विहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं ॥

उदर माँझ सुनु अंडज-राया * देखेउँ बहु ब्रह्मांडनिकाया ॥

अति विचित्र तहँ लोक अनेका * रचना अधिक एक तें एका ॥

कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा * अगनित उडुगन रवि रजनीसा ॥

अगनित लोकपाल जम काला * अगनित भूधर भूमि विसाला ॥

सागर सरि सर विपिन अपारा * नाना भाँति सृष्टिविस्तारा ॥

सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर * चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दोहा--जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनहूँ न समाइ ।

सो सब अद्भुत देखेउँ, बरनि कवनि विधि जाइ ॥

एक एक ब्रह्मांड महुँ, रहेउँ बरष सत एक ।

एहि विधि देखत फिरेउँ मै, अंडकटाह अनेक ॥८०॥

लोक लोक प्रति भिन्न विधाता * भिन्न बिष्णु सिव मनु दिसित्राता ॥

नर गंधर्व भूत बेताला * किन्नर निसिचर पसु खग व्याला ॥

देव-दनुज-गन नाना जाती * सकल जीव तहँ आनहिं भाँती ॥

महि सरि सागर सर गिरि नाना * सब प्रचंड तहँ आनहिं आना ॥

अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा * देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा ॥

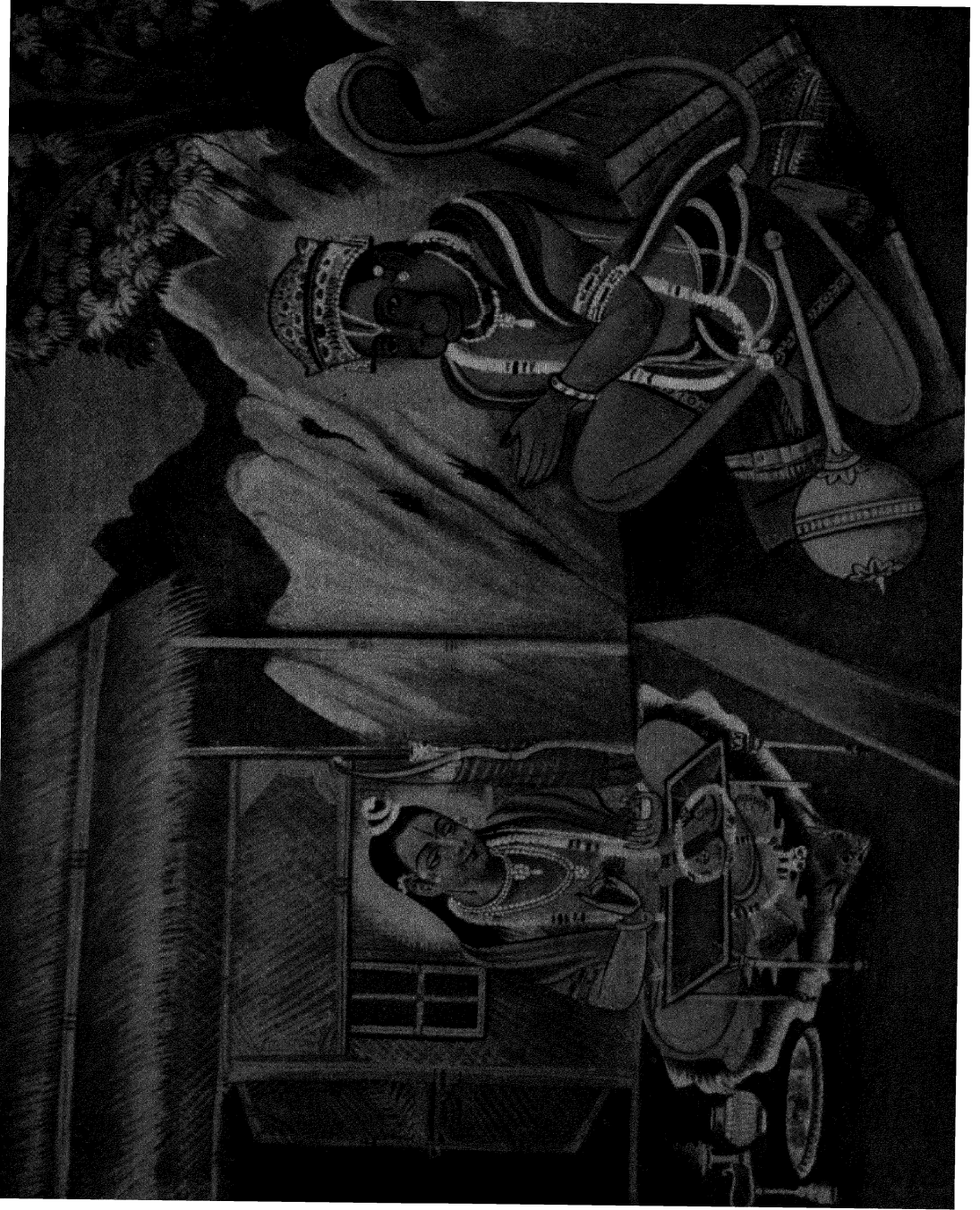
अवधपुरी प्रतिभुवन निहारी * सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥

दसरथ कौसल्या सुनु ताता * विविधरूप भरतादिकभ्राता ॥

प्रतिब्रह्मांड रामअवतारा * देखेउँ बालविनोद उदारा ॥

दोहा--भिन्न भिन्न मै दीख सब, अतिविचित्र हरिजान ।

अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु, रामु न देखेउँ आन ॥



रामविरह सागर महँ, भरत मगन मन होत ।
विप्ररूप धरि पवनमुत, आय गये जिमि पोत ॥

भार्गव भूषण प्रेम, बनारस । (कापी राइट)

सोइ सिछुपन सोइ सोभा, सोइ कृपाल रघुबीर ।

भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरिउँ माह सरीर ॥ ८१ ॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका * वीते मनहुँ कल्पसत एका ॥

फिरत फिरत निज आस्रम आयउँ * तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ ॥

निज-प्रभु-जनम अवध सुनि पायउँ * निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ ॥

देखेउँ जनममहोत्सव जाई * जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई ॥

रामउदर देखेउँ जग नाना * देखत वनै न जाइ वस्त्राना ॥

तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना * मायापति कृपाल भगवाना ॥

करोँ विचार बहोरि बहोरी * मोह कलिल व्यापित मति मोरी ॥

उभय धरी महुँ मैं सब देखा * भयउँ समित मन मोह विसेखा ॥

दोहा-देखि कृपाल विकल मोहि, विहँसे तव रघुबीर ।

विहँसतही मुख बाहेर, आयउँ सुनु मतिधीर ॥

सोइ लरिकाई मो सन, करन लगे पुनि राम ।

कोटि भाँति समुझावउँ, मन न लहै विस्वाम ॥ ८२ ॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई * समुझत देहदसा विमराई ॥

धरनि परेउँ मुख आव न वाता * त्राहि त्राहि आरत-जन-त्राता ॥

प्रेमाकुल प्रभु मोहि विलोकी * निज-माया-प्रभुता तव रोकी ॥

कर सरोज प्रभु मम मिर धरेऊ * दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥

कीन्ह राम मोहि विगत-विमोहा * सेवकसुखद कृपामंदोहा ॥

प्रभुता प्रथम विचारि विचारी * मन महुँ होइ हरष अति भारी ॥

भक्तवद्वलता प्रभु के देखी * उपजी मम उर प्रीति विसेखी ॥

सजल नयन पुलकित कर जोरी * कीन्हेउँ बहु विधि विनय बहोरी ॥

दोहा-सुनि सप्रेम मम बानी, देखि दीन निजदास ।

बचन सुखद गंभीर मृदु, बोले रमानिवास ॥

काग भुसुंडी माँगु बर, अति प्रसन्न मोहि जानि ।

अनिमादिकसिधिअपरक्रुधि, मोच्छसकलसुखखानि ॥ ८३ ॥

ग्यान बिवेक विरति विग्याना * सुरदुर्लभ गुन जे जग जाना ॥
 आजु देउँ तव संसय नाहीं * माँगु जो तोहि भाव मन माहीं ॥
 सुनि प्रभुवचन अधिक अनुरागेउँ * मन अनुमान करन तव लागेउँ ॥
 प्रभु कह देन सकलसुख सही * भगति आपनी देन न कही ॥
 भगतिहीन गुन सब सुख ऐसे * लवन विना बहु व्यंजन जैसे ॥
 भजनहीन सुख कवने काजा * अम विचारि बोलेउँ स्वगराजा ॥
 जौ प्रभु होइ प्रसन्न वर देहू * मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥
 मन भावत वर माँगुँ स्वामी * तुम्ह उदार उर-अंतर-जामी ॥

दोहा--अविरल भगति विसुद्ध तव, सुति पुरान जो गाव ।

जेहि खोजत जोगीस मुनि, प्रभुप्रसाद कोउ पाव ॥

भगत-कल्प-तरु प्रनतहित, कृपासिंधु सुखधाम ।

सोइ निजभगति मोहि प्रभु, देहु दया करि राम ॥८४॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक * बोले वचन परम-सुख-दायक ॥
 सुनु वायस तैं सहज सयाना * काहे न माँगसि अस वरदाना ॥
 सब सुखखानि भगति तैं माँगी * नहिं जग कोउ तोहि मम वड़भागी ॥
 जो मुनि कोटिजतन नहिं लहहीं * जे जप-जोग-अनल तन दहहीं ॥
 रीभेउँ देखि तोरि चतुराई * माँगेहु भगति मोहि अति भाई ॥
 सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे * सब सुभ गुन बमिहहिं उर तोरे ॥
 भगति ग्यान विग्यान विरागा * जोग चरित्र रहस्य-विभागा ॥
 जानव तैं सबही कर भेदा * मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दोहा--मायासंभव भ्रम सकल, अब न ध्यापिहहिं तोहि ।

जानेसु ब्रह्म अनादि अज, अनुज गुनाकर मोहि ॥

मोहि भगतप्रिय संतत, अस विचारि सुनु काग ।

काय वचन मन मम पद, करेसु अचल अनुराग ॥८५॥

अब सुनु परमविमल मम बानी * सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥
 निजमिद्धान्त सुनावौं तोही * सुनि मन धरु मव तजि भजु मोही ॥
 मम मायासंभव परिवारा * जीव चराचर विविध प्रकारा ॥

सब मम प्रिय सब मम उपजाये * सब तें अधिक मनुज मोहि भाये ॥
 तिन्ह महुँ द्विज द्विज महुँ सुतिधारी * तिन्ह महुँ निगम-धर्म-अनुमारी ॥
 तिन्ह महुँ प्रिय विरक्त पुनि ग्यानी * ग्यानिहुँ तें अतिप्रिय विग्यानी ॥
 तिन्हतें पुनि मोहि प्रिय निज दासा * जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
 पुनि पुनि सत्य कहौ तोहि पाहीं * मोहि सेवकसम प्रिय कोउ नाहीं ॥
 भगतिहीन विरंचि कि न होई * सब जीवहु सम प्रिय मोहि मोई ॥
 भगतिवंत अतिनीचउ प्राणी * मोहि प्रानप्रिय अस मम बानी ॥
 दोहा--सुचि सुसील सेवक सुमति, प्रिय कहु काहिन लाग ।

सुति पुरान कहनीति असि, सावधान सुनुकाग ॥८६॥

एक पिता के विपुल कुमारा * होहिं पृथक गुन सील अचारा ॥
 कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता * कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥
 कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई * सब पर प्रीति पितहि सम होई ॥
 कोउ पितुभगत वचन मन कर्मा * सपनेहु जान न दूसर धर्मा ॥
 सो सुत प्रिय पितु प्रानसमाना * जद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥
 एहि विधि जीव चराचर जेते * त्रिजग देव नर अमुर समेते ॥
 अखिल विस्व यह मम उपजाया * सब पर मोहि बरावरि दाया ॥
 तिन्ह महुँ जो परिहरि मद माया * भजइ मोहि मन बच अरु काया ॥
 दोहा--पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ ।

भगति भाव भजि कपट तजि, मोहि परम प्रिय सोइ ॥

सोरठा--सत्य कहउँ खग तोहि, सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।

अस विचारि भजु मोहि, परिहरि आस भरोस सब ॥८७॥

कवहुँ काल न व्यापिहि तोही * सुमिरि स्वरूप निरंतर मोही ॥
 प्रभुवचनामृत सुनि न अघाऊँ * तन पुलकित मन अति हरपाऊँ ॥
 सो सुख जानै मन अरु काना * नहिं रमना पहिं जाइ वखाना ॥
 प्रभु-सोभा-सुख जानहिं नयना * कहिकिमिसकहिंतिन्हहिंनहिंबयना ॥
 बहु विधि मोहि प्रबोधि सुख देई * लगे करन सिसुकौतुक तेई ॥
 सजल नयन कलु मुख करि रूखा * चितइ मातु लागी अति भूखा ॥

देखि मातु आतुर उठि धाई * कहि मृदु वचन लिये उर लाई ॥
 गोद राखि कराव पयपाना * रघुवर-चरित ललित कर गाना ॥
 सोरठा-जेहि सुखलागि पुरारि, असुभ-बेप-कृत सिव सुखद ।
 अवधपुरी नरनारि, तेहि सुख महुँ संतत मगन ॥
 सोई सुख लवलेस, जिन्ह वारक सपनेहु लहेउ ।
 तेहि नहिं गनहिं खगेस, ब्रह्मसुखहिं सज्जनसुमति ॥८८॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला * देखेउँ बालविनोद रसाला ॥
 रामप्रसाद भगति बर पायउँ * प्रभुपद बंदि निजास्रम आयउँ ॥
 तव तें मोहि न व्यापी माया * जब तें रघुनायक अपनाया ॥
 यह सब गुप्त चरित मैं गावा * हरिमाया जिमि मोहि नचावा ॥
 निज अनुभव अव कहउँ खगेसा * विनु हरि भजन न जाहिं कलेसा ॥
 रामकृपा विनु सुनु खगराई * जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥
 जाने विनु न होइ परतीती * विनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥
 प्रीति विना नहिं भगति दृढ़ाई * जिमि खगपति जल कै चिकनाई ॥
 सोरठा--विनु गुरु होइ कि ग्यान, ग्यान कि होइ विराग विनु ।
 गावहिं वेद पुरान, सुख कि लहहिं हरिभगति विनु ॥
 को विस्राम कि पाव, तात सहज संतोष विनु ।
 चलईकजलविनुनाव, कोटिजतनपचिपचिमरिय ॥८९॥

विनु संतोष न काम नसाहीं * काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं ॥
 रामभजन विनु मिटहि कि कामा * थलविहीन तरु कबहुँ कि जामा ॥
 विनु विग्यान कि समता आवइ * को अवकास कि नभ विनु पावइ ॥
 सद्धा विना धरम नहिं होई * विनु महि गंध कि पावइ कोई ॥
 विनु तप तेज कि कर विस्तारा * जल विनु रस कि होइ संसारा ॥
 सील कि मिल विनु बुधसेवकाई * जिमि विनु तेज न रूप गुसाई ॥
 निजसुख विनु मन होइ कि थीरा * परस कि होइ बिहीन समीरा ॥
 कवनिउ सिद्धि कि विनु बिस्वासा * विनु हरिभजन न भव-भय-नासा ॥

दोहा-बिनु विस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।

रामकृपा बिनु सपनेहुँ, जीवन लह विस्राम ॥

सोरठा-अस विचारि मतिधीर, तजि कुतर्क संसय सकल ।

भजहु राम रघुवीर, करुनाकर सुंदर सुखद ॥ ६० ॥

निज-मति-सरिस नाथ मैं गाई * प्रभु-प्रताप-महिमा खगराई ॥

कहेउँ न कछु करि जुगुति विसेखी * यह सब मैं निज नयनन्हि देखी ॥

महिमा नाम रूप गुनगाथा * सकल अमित अनंत रघुनाथा ॥

निजनिजमतिमुनिहरिगुनगावहिं * निगम सेप सिव पार न पावहिं ॥

तुम्हहिं आदि खग मसकप्रजंता * नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता ॥

तिमि रघुपति-महिमा अवगाहा * तात कवहुँ कोउ पाव कि थाहा ॥

राम काम-सत-कोटि-सुभग-तन * दुर्गा-कोटि - अमित अरिमर्दन ॥

सक्र-कोटि-सत-सरिस विलासा * नभ-सत-कोटि- अमित अवकासा ॥

दोहा--मरुत-कोटि-सत-विपुल बल, रवि-सत-कोटि प्रकास ।

ससि-सत-कोटि सो सीतल, समन-सकल-भव-त्रास ॥

काल-कोटि - सत - सरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरंत ।

धूम-केतु-सत-कोटि-सम, दुराधर्ष भगवंत ॥ ६१ ॥

प्रभु अगाध सत-कोटि-पताला * समन-कोटि-सत-सरिस कराला ॥

तीरथ-अमित-कोटि-सम पावन * नाम अखिल-अघ-पुंज - नमावन ॥

हिम-गिरि-कोटि अचल रघुवीरा * सिंधु - कोटि - सत - सम गंभीरा ॥

काम - धेनु-सत-कोटि - समाना * सकल - काम - दायक - भगवाना ॥

सारद - कोटि - अमित चतुराई * विधि - सत - कोटि सृष्टिनिपुनाई ॥

बिष्णु - कोटि-सम पालन करता * रुद्र - कोटि - सत - सम मंहरना ॥

धनद-कोटि-सत-सम धनवाना * माया कोटि प्रपंचनिधाना ॥

भार धरन सत-कोटि-अहीमा * निरवधि निरुपम प्रभु जगदीमा ॥

छन्द-निरुपम न उपमा आन रामसमान निगमागम कहे ।

जिमि कोटि-सत-खद्योत-सम रवि कहत अतिलघुता लहे ॥

एहि भाँति नित निज मति विलास मुनीम हरिहि बखानहीं ।

प्रभु भावगाहक अतिकृपाल सप्रेम मुनि सुख मानहीं ॥

दोहा-राम अमित-गुन-सागर, थाह कि पावइ कोइ ।

संतन्ह सन जस कछु सुनेउँ, तुम्हहिं सुनायउँ सोइ ॥

सोरठा-भाववस्य भगवान, सुखनिधान करुनाभवन ।

तजि ममता मद मान, भजिय सदा सीतापतिहिं ॥६२॥

सुनि भुसुंड़ि के बचन सुहाये * हरषित खगपति पंख फुलाये ॥

नयननीर मन अति हरषाना * श्रीरघुवर-प्रताप उर आना ॥

पाञ्चिल मोह समुझि पञ्चिताना * ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥

पुनि पुनि कागचरन सिरु नावा * जानि रामसम प्रेम बढ़ावा ॥

गुरु विनु भवनिधि तरइ न कोई * जौं विरंवि-मंकर-सम होई ॥

संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता * दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ॥

तव सरूप गारुड़ि रघुनायक * मोहि जिआयेउ जन-सुख-दायक ॥

तव प्रसाद मम मोह नमाना * रामरहस्य अनूपम जाना ॥

दोहा-ताहि प्रसंसि विविधविधि, सोस नाइ कर जोरि ।

बचन विनीत सप्रेम मृदु, बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥

प्रभु अपने अविबेक तें, बूझउँ स्वामी तोहि ।

कृपासिंधु सादर कहहु, जानि दास निज मोहि ॥६३॥

तुम्ह सर्वग्य तग्य तमपारा * सुमति सुसील सरलआचारा ॥

ग्यान-विरत-विग्यान-निवामा * रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा ॥

कारन कवन देह यह पाई * तात सकल मोहि कहउ बुझाई ॥

राम-चरित-सर सुंदर स्वामी * पायउ कहाँ कहहु नभगामी ॥

नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं * महा प्रलयहु नास तव नाहीं ॥

मुधा बचन नहिं ईश्वर कहई * मो मोरे मन संसय अहई ॥

अग जग जीव नाग नर देवा * नाथ सकलजग कालकलेवा ॥

अंडकटाह अमित लयकारी * काल सदा दुरतिक्रम भारी ॥

सोरठा--तुम्हहिं न व्यापत काल, अति कराल कारन कवन ।

मोहि सो कहहु कृपाल, ग्यानप्रभाउ कि जोगबल ॥

दोहा-प्रभु तव आस्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग ।

कारन कवन सो नाथ सब, कहहु सहित अनुराग ॥६४॥

गरुड़गिरा सुनि हरपेउ कागा * बोलेउ उमा सहित अनुरागा ॥

धन्य धन्य तव मति उरगारी * प्रसन्न तुम्हार मोहि अतिप्यारी ॥

सुनि तव प्रसन्न मप्रेम सुहाई * बहुत जनम की सुधि मोहि आई ॥

अब निज कथा कहउँ मैं गाई * तात सुनहु सादर मन लाई ॥

जप तप व्रत मख सम दम दाना * विरति विवेक जोग विग्याना ॥

सब कर फल रघुपति-पद प्रेमा * तेहि विनु कोउ न पावइ क्रेमा ॥

एहि तन रामभगति मैं पाई * ता तें मोहि ममता अधिकाई ॥

जेहि तें कछु निज स्वारथ होई * तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सोरठा--पन्नगारि असि नीति, सुतिसंमत सज्जन कहहिं ।

अतिनीचहु सन प्रीति, करिय जानि निज-परम-हित ॥

पाट कीट तें होइ, तेहि तें पाटंबर रुचिर ।

कृमि पालइ सब कोइ, परम अपावन प्रानसम ॥६५॥

स्वारथ साँच जीव कहुँ एहा * मन-क्रम-वचन रामपद नेहा ॥

सोइ पावन सोइ सुभग सरोरा * जो तनु पाइ भजिय रघुवीरा ॥

रामविमुख लहि विधिसम देही * कवि कोविद न प्रसंसहिं तेही ॥

रामभगति एहि तन उर जामी * तातें मोहि परमप्रिय स्वामी ॥

तजउँ न तनु निज इच्छा मरना * तनु विनु वेद भजन नहिं वरना ॥

प्रथम मोह मोहि बहुत विगोवा * रामविमुख सुख कवहुँ न सोवा ॥

नाना जनम करम पुनि नाना * कियें जोग जप मख तप दाना ॥

कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं * मैं खगोस भ्रमि भ्रमि जग माहीं ॥

देखेउँ सब करि करम गुसाई * सुखी न भयउँ अबहिं की नाई ॥

सुधि मोहि नाथ जनम बहु केरो * सिवप्रसाद मति मोह न घेरी ॥

दोहा-प्रथम जनम के चरित अब, कहउँ सुनहु विहँगेस ।

सुनिप्रभु-पद-रति उपजै, जातें मिटहिं कलेस ॥

पूरव कल्प एक प्रभु, जुग कलिजुग मलमूल ।

नर अरु नारि अधर्म-रत, सकलनिगम प्रतिकूल ॥६६॥

तेहि कलिजुग कोसलपुर जाई * जनमत भयउँ सूद्रतनु पाई ॥

मिवसेवक मन क्रम अरु बानी * आन देव निंदक अभिमानी ॥

धन - मदमत - परम वाचाला * उग्रबुद्धि उर दंभ विसाला ॥

जदमि रहेउँ रघुपति-रजधानी * तदपि न कळु महिमा तव जानी ॥

अव जाना मै अवधप्रभावा * निगमागम पुरान अस गावा ॥

कवनेहु जनम अवध बस जोई * रामपरायन सो पर होई ॥

अवधप्रभाव जानि तव प्राणी * जब उर बसहिं राम धनुपानी ॥

सो कलिकाल कठिन उरगारी * पापपरायन सब नरनारी ॥

दोहा--कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रन्थ ।

दंभिन्ह निज मति कलिप करि, प्रगट किये बहु पंथ ॥

भये लोग सब मोहवस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म ।

सुनु हरिजान ग्याननिधि, कहउँ कळुक कलि धर्म ॥६७॥

वरनधरम नहिं आस्रम चारी * सुति-बिरोध-रत सब नरनारी ॥

द्विज सुतिबेचक भूप प्रजासन * कोउ नहिं मान निगम-अनु-सासन ॥

मारग सोइ जा कहँ जोइ भावा * पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥

मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ता कहँ संत कहहिं सब कोई ॥

सोइ सयान जो पर-धन-हारी * जो कर दंभ सो बड़ आचारी ॥

जो कह भूठ मसखरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना ॥

निराचार जो सुतिपथ त्यागी * कलिजुग सोइ ग्यानी बैरागी ॥

जाके नख अरु जटा विसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दोहा--असुभ बेप भूपन धरे, भच्छामच्छ जे खाहिं ।

तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर, पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥

सोरठा-जे अपकारी चार, तिन्ह कर गौरव मान्य बहु ।

मन क्रम बचन लवार, ते बकता कलिकाल महँ ॥६८॥

नारि विवस नर सकल गोसाईं * नाचहिं नटमरकट की नाई ॥
 सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना * मेलि जनऊ लेहिं कुदाना ॥
 सब नर काम-लोभ-रत क्रोधी * वेद - विप्र - गुरु - संत - विरोधी ॥
 गुनमंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी ॥
 सौभागिनी विभूषनहीना * विधवन्ह के मृंगार नवीनां ॥
 गुरुमिष वधिर अंध कर लेखा * एक न सुनहिं एक नहिं देखा ॥
 हरइ सिष्यधन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महुँ परई ॥
 मातु पिता बालकन्ह बोलावहिं * उदर भरइ सोइ धर्म सिखावहिं ॥
 दोहा--ब्रह्मग्यान विनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात ।

कौड़ी लागि लोभवस, करहिं विप्र-गुरु-घात ॥

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन, हम तुम्ह तें कछु घाटि ।

जानइ ब्रह्म सो विप्रवर, आँखि देखावहिं डाँटि ॥६६॥

परतिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
 तेइ अभेदवादी ग्यानी नर * देखेउँ मैं चरित्र कलिजुग कर ॥
 आपु गये अरु औरनि घालहिं * जो कहुँ सतमारग प्रतिपालहिं ॥
 कल्प कल्प भरि एक एक नरका * परहिं जे दूखहिं सुति करि तरका ॥
 जे वरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपत्र किरात काल कलवारा ॥
 नारि मुई घर संपति नासी * मूँड़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी ॥
 ते विप्रन्ह सन पाँव पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नमावहिं ॥
 विप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृपलीस्वामी ॥
 सूद्र करहिं जप तप व्रत दाना * बैठि वरामन कहहिं पुराना ॥
 सब नर कल्पित करहिं अचारा * जाइ न वरनि अनीति अपारा ॥

दोहा--भये बरनसंकरसकल, भिन्न सेतु सब लोग ।

करहिं पाप पावहिं दुख, भय रुजसोक बियोग ॥

सुतिसंमत हरि-भक्ति-पथ, संजुत बिरति विवेक ।

तेहिं न चलहिं नरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक ॥१००॥

तोमरछंद-बहुदाम सवारहिं धामजती * विषया हरि लीन्हि गई बरती ॥
 तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही ॥
 कुलवंत निकारहिं नारि मती * गृह आनहिं चेरि निवेरि गती ॥
 सुत मानहिं मातु पिता तब लौं * अबला नहिं डीठ परी जब लौं ॥
 ससुरारि पियारि लगी जब तें * रिपुरूप कुटुंब भये तब तें ॥
 नृप पापपरायन धर्म नहीं * करि दंड विडंब प्रजा नितहिं ॥
 धनवंत कुलीन मलीन अपी * द्विजचिह्न जनेउ उधार तपी ॥
 नहिं मान पुरानन्ह वेदहिं जो * हरिसेवक मंत सही कलि सो ॥
 कबिबृंद उदार दुनी न सुनी * गुन-दूषन-त्रात न कोपि गुनी ॥
 कलि बारहिं बार दुकाल परै * विनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥

दोहा--सुनु खगेस कलि कपट हठ, दंभ द्वेष पाखंड ।

मान मोह मारादि मद, ब्यापि रहे ब्रह्मंड ॥

तामस धर्म करहिं सब, जप तप मख ब्रत दान ।

देव न बरपहिं धरनि पर, बये न जामहिं धान ॥१०१॥

तोटक--अबला कच भूषन भूरि लुधा * धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
 सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता * मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥
 नर पीड़ित रोग न भोग कहीं * अभिमान विरोध अकारनहीं ॥
 लघु जीवन संवत पंचदसा * कलपांत न नाम गुमान असा ॥
 कलिकाल विहाल किये मनुजा * नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा ॥
 नहिं दोष विचार न सीतलता * मव जाति कुजाति भये मंगता ॥
 इरषा परुखाच्छर लोलुपता * भरि पूरि रही ममता विगता ॥
 सब लोग वियोग विसोक हये * बरनास्रम धर्म विचार गये ॥
 दम दान दया नहिं जानपनी * जड़ता पर-बंधनताति-धनी ॥
 तनपोषक नारि नरा सगरे * परनिंदक ते जग माँ बगरे ॥

दोहा--सुनु ब्यालारि कराल कलि, मल अवगुन आगार ।

गुनउ बहुत कलिजुग कर, विनु प्रयास निस्तार ॥

कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग ।

जा गति होइ सो कलि हरि, नाम तें पावहिं लोग ॥१०२॥

कृतजुग सब जोगी विग्यानी * करि हरिध्यान तरहिं भव प्रानी ॥
 त्रेता विविध जग्य नर करहीं * प्रभुहिं समर्पिं करम भव तरहीं ॥
 द्वापर करि रघुपति-पद-पूजा * नर भव तरहिं उपाउ न दूजा ॥
 कलिजुग केवल हरि-गुन-गाहा * गावत नर पावहिं भवथाहा ॥
 कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना * एक अधार राम - गुन-गाना ॥
 सब भरोस तजि जो भज रामहिं * प्रेमसमेत गाव गुनग्रामहिं ॥
 सोइ भव तर कछु संसय नाहीं * नामप्रताप प्रगट कलि माहीं ॥
 कलि कर एक पुनीत प्रतापा * मानम पुन्य होइ नहिं पापा ॥
 दोहा--कलि-जुग-सम जुग आन नहिं, जो नर कर बिस्वास ।

गाइ राम-गुन-गन विमल, भव तर बिनहिं प्रयास ॥

प्रगट चारि पद धर्म के, कलि महँ एक प्रधान ।

जेन केन विधि दीन्हे, दान करइ कल्याण ॥ १०३ ॥

नित जुग होहिं धर्म सब केरे * हृदय राम माया के प्रेरे ॥
 सिद्ध सत्व समता विग्याना * कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना ॥
 सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा * सब विधि सुख त्रेता कर धर्मा ॥
 बहु रज सत्व स्वल्प कछु तामस * द्वापर धर्म हरप भव मानस ॥
 तामस बहुत रजोगुन थोरा * कलिप्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥
 बुध जुग धर्म जानि मन माहीं * तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥
 काल धर्म नहिं व्यापहिं तेही * रघुपति-चरन-प्रीति रति जेही ॥
 नटकृत कपट विकट खगराया * नटसेवकहिं न व्यापइ माया ॥

दोहा--हरि-माया-कृत दोष गुन, बिनु हरिभजन न जाहिं ।

भजिय राम सब काम तजि, अस विचारि मन माहीं ॥

तेहि कलिकाल बरप बहु, बसेउ अवध विहगेस ।

परेउ दुकाल विपतिबस, तव में गयउँ विदेस ॥ १०४ ॥

गयेउँ उजेनी सुनु उरगारी * दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
 गये काल कछु संपति पाई * तहँ पुनि करौं संभुसेवकाई ॥
 विप्र एक वैदिक सिवपूजा * करै मदा तेहि काज न दूजा ॥
 परमसाधु परमारथविंदक * संभुउपासक नहिं हरिनिंदक ॥

तेहि सेवउँ मैं कपटसमेता * द्विज दयाल अति नीतिनिकेता ॥
 बाहिज नम्र देखि मोहि साई * विप्र पढ़ाव पुत्र की नाई ॥
 संभुमंत्र मोहि द्विजवर दीन्हा * सुभउपदेस विविधविधि कीन्हा ॥
 जपउँ मंत्र सिवमंदिर जाई * हृदय दंभ अहमिति अधिकारै ॥

दोहा—म खल मलसंकुल मति, नीच जाति बस मोह ।

हरिजन द्विज देखे जरउँ, करउँ विष्णु कर द्रोह ॥

सोरठा—गुरु नित मोहि प्रबोध, दुखित देखि आचरन मम ।

मोहि उपजै अतिक्रोध, दंभिहि नीति कि भावई ॥१०५॥

एक बार गुरु लीन्ह बोलाई * मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥
 सिवसेवा कै सुत फल सोई * अविरल-भगति रामपद होई ॥
 रामहिं भजहिं तात सिव धाता * नर पावँर कै केतिक वाता ॥
 जासु चरन अज सिव अनुरागी * तासु द्रोह सुख चहमि अभागी ॥
 हर कहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ * सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥
 अधम जाति मैं विद्या पाये * भयउँ जथा अहि दूध पिआये ॥
 मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती * गुरु कर द्रोह करौं दिन राती ॥
 अतिदयाल गुरु स्वल्प न क्रोधा * पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा ॥
 जेहि तें नीच बढ़ाई पावा * सो प्रथमहिं हठि ताहि नसावा ॥
 धूम अनलसंभव सुनु भाई * तेहि बुझाव घनपदवी पाई ॥
 रज मग परी निरादर रहई * सव कर पगप्रहार नित सहई ॥
 मरुत उड़ाइ प्रथम तेहि भरई * नृपकिरीट पुनि नयनन्ह परई ॥
 सुनु खग खगपति समुक्ति प्रसंगा * बुध नहिं करहिं अधम कर संग्गा ॥
 कवि कोविद गावहिं असि नीती * खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ॥
 उदासीन नित रहिय गोसाई * खल परिहरिय स्वान की नाई ॥
 मैं खल हृदय कपट कुटिलाई * गुरु हित कहहिं न मोहि सुहाई ॥

दोहा—एक बार हरिमंदिर, जपत रहेउ सिवनाम ।

गुरु आयउ अभिमान तें, उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥

गुरु दयाल नहिं कछु कहेउ, उर न रोष लवलेस ।

अतिअघ गुरुअपमानता, सहि नहिं सके महेस ॥१०६॥

मंदिर माँझ भई नभवानी * रे हतभाग्य अग्य अभिमानी ॥
 जद्यपि तव गुरु के नहिं क्रोधा * अतिकृपाल चित सम्यक बोधा ॥
 तदपि साप लठ देइहौं तोही * नीतिविरोध सुहाइ न मोही ॥
 जौं नहिं दंड करौं खल तोरा * भ्रष्ट होइ सुतिमारग मोरा ॥
 जे सट गुरु सन इरपा करहीं * रौरव नरक कोटिजुग परहीं ॥
 त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा * अयुत जनम भरि पावहिं पीरा ॥
 वैठि रहेसि अजगर इव पापी * सर्प होहि खल मल मति व्यापी ॥
 महा-बिटप-कोटर महुँ जाई * रहु अधमाधम अधगति पाई ॥
 दोहा--हाहाकार कीन्ह गुरु, दारुन सुनि सिवस्त्राप ।

कंपित मोहि विलोकि अति, उर उपजा परिताप ॥

करि दंडवत सप्रेम द्विज, सिव सनमुख कर जोरि ।

विनय करत गदगद गिरा, समुक्ति घोरगति मोरि ॥१०७॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपम् * विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ॥
 अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहम् * चिदाकाशमाकाशवामंभजेऽहम् ॥
 निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयम् * गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ॥
 करालं महाकालकालं कृपालम् * गुणागारमंसारपारं नतोऽहम् ॥
 तुपाराद्रिसङ्काशगौरं गभीरम् * मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम् ॥
 स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा * लमद्बालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥
 चलत्कुण्डलं शुभ्रनेत्रं विशालम् * प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ॥
 मृगार्थीशचर्माम्बरं मुण्डमालम् * प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ॥
 प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशम् * अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ॥
 त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिम् * भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥
 कलातीतकल्याण कल्पान्तकारी * सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
 चिदानन्दसन्दोहमोहापकारी * प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
 न यावद् उमानाथपादारविन्दम् * भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ॥
 न तावत्सुखं शान्तिसन्तापनाशम् * प्रसीद प्रभो सर्भभूताधिवासम् ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजाम् * नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ॥

जराजन्मदुःखौघतातप्यमानम् * प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥

श्लोक—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोपये ।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

दोहा--सुनि बिनती सर्वज्ञ सिव, देखि विप्रअनुरागु ।

मंदिर नभ बानी भई, द्विजवर अब बर माँगु ॥

जौं प्रसन्न प्रभु मो पर, नाथ दीन पर नेहु ।

निज पद-पद्म-भगति दृढ, पुनि दूसर बर देहु ॥

तव मायाबस जीव जड, संतत फिरहिं भुलान ।

तेहि पर क्रोध न करिय प्रभु, कृपासिंधु भगवान ॥

संकर दीनदयाल अब, एहि पर होहु कृपाल ।

सापअनुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरही काल ॥१०८॥

एहि कर होइ परमकल्याना * सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥

विप्रगिरा सुनि पर-हित-सानी * एवमस्तु इति भई नभबानी ॥

जदपि कीन्ह यह दारुन पापा * में पुनि दीन्ह कोप करि सापा ॥

तदपि तुम्हार साधुता देखी * करिहउँ एहि पर कृपा विमेखी ॥

छमासील जे परउपकारी * ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी ॥

मोर साप द्विज व्यर्थ न जाइहि * जनम सहस्र अवसि यह पाइहि ॥

जनमत मरत दुसह दुख होई * एहि स्वल्पउ नहिं व्यापिहि सोई ॥

कवनेहु जनम मिटिहि नहिं ग्याना * सुनहि सूद्र मम वचन प्रमाना ॥

रघुपति-पुरी जनम तव भयऊ * पुनि तैं मम सेवा मन दयऊ ॥

पुरीप्रभाव अनुग्रह मोरे * रामभगति उपजिहि उर तोरे ॥

सुनु मम वचन सत्य अति भाई * हरितोषक व्रत द्विजसेवकाई ॥

अब जन करिहि विप्रअपमाना * जानेसु संत अनंतसमाना ॥

इंद्रकुलिस मम सूल विसाला * कालदंड हरिचक्र कराला ॥

जो इन्ह कर मारा नहिं मरई * विप्र-द्रोह-पावक सो जरई ॥

अस विवेक राखेहु मन माहीं ❀ तुम्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
अउरौ एक आसिषा मोरी ❀ अ-प्रति-हत गति होइहि तोरी ॥

दाहा--सुनि सिववचन हरपि गुरु, एवमस्तु इति भाखि ।

मोहि प्रबोधि गयउ गृह, संभु चरन उर राखि ॥

प्रेरित काल विंधगिरि, जाइ भयउँ मैं ब्याल ।

पुनि प्रयास विनु सो तनु, तजेउँ गये कछु काल ॥

जोइ तन धरउँ तजउँ पुनि, अनायास हरिजान ।

जिमि नूतन पट पहिरै, नर परिहरै पुरान ॥

सिव राखी सुतिनीति अरु, मैं नहिं पाव कलेस ।

एहि विधि धरेउँ विविधितनु, ग्यान न गयउ स्वगेस ॥ १०६ ॥

त्रिजग देव नर जो तनु धरऊँ ❀ तहँ तहँ रामभजन अनुमरऊँ ॥

एक शूल मोहि विसर न काऊ ❀ गुरु कर कोमल सील सुभाऊ ॥

धरमदेह मैं द्विज कै पाई ❀ सुरदुर्लभ पुरान सुति गाई ॥

खेलौं तहाँ बालकन्ह मीला ❀ करौ सकल रघुनायक लीला ॥

प्रौढ़ भये मोहि पिता पढ़ावा ❀ समुझउँ सुनउँ गुनउँ नहिं भावा ॥

मन तें सकल बासना भागी ❀ केवल रामचरन लय लागी ॥

कहु स्वगेस अस कवन अभागी ❀ खरी सेव सुरधनुहिं त्यागी ॥

प्रेममगन मोहि कछु न सुहाई ❀ हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई ॥

भये कालत्रस जव पितु माता ❀ मैं बन गयउँ भजन जनत्राता ॥

जहँ जहँ विपिन मुनीस्वर पावउँ ❀ आस्रम जाइ जाइ मिरु नावउँ ॥

बूझउँ तिन्हहिं राम-गुन-गाहा ❀ कहहिं सुनउँ हरपित स्वगनाहा ॥

सुनत फिरउँ हरिगुन अनुवादा ❀ अ-व्याहत-गति संभुप्रमादा ॥

छूटी त्रिविधि इर्षना गाढ़ी ❀ एक लालमा उर अति बाढ़ी ॥

राम-चरन-वारिज जव देखौं ❀ तव निजजनम मुफल करि लेखौं ॥

जेहिं पूछहुँ सोइ मुनि अस कहई ❀ ईश्वर सर्व-भूत-मय अहई ॥

निर्गुन मत नहिं मोहि सुहाई ❀ मगुन ब्रह्मरति उर अधिकारई ॥

दोहा--गुरु के वचन सुरति करि, रामचरन मन लाग ।

रघुपति-जस गावत फिरउँ, छन छन नव अनुराग ॥

मंसिखर बटछाया, मुनि लोमस आसीन ।

देखि चरन सिरु नायउँ, वचन कहेउँ अतिदीन ॥

सुनि मम वचन विनीत मृदु, मुनि कृपाल खगराज ।

मोहि सादर पृच्छत भये, द्विज आयउ केहि काज ॥

तव मैं कहा कृपानिधि, तुम्ह सर्वग्य सुजान ।

सगुन ब्रह्म आराधना, मोहि कहहु भगवान ॥११०॥

तव मुनीम रघुपति-गुन-गाथा * कहे कछुक सादर खगनाथा ॥

ब्रह्म-ग्यान-रति मुनि विग्यानी * मोहि परम अधिकारी जानी ॥

लागे करन ब्रह्म उपदेसा * अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥

अकल अनीह अनाम अरूपा * अनुभव-गम्य अखंड अनूपा ॥

मनगोतीत अमल अविनासी * निर्विकार निरवधि सुखरासी ॥

सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा * बारि बीच इव गावहिं वेदा ॥

विविध भाँति मुनि मोहि ममुझावा * निर्गुनमत मम हृदय न आवा ॥

पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा * सगुन उपासन कहहु मुनीसा ॥

राम-भगति-जल मम मन मीना * किमि विलगाइ मुनीम प्रबीना ॥

सो उपदेश करहु करि दाया * निज नयनन देखउँ रघुराया ॥

भरि लोचन विलोकि अवधेसा * तव सुनिहौं निर्गुन उपदेसा ॥

मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा * खंडि सगुनमत निर्गुनरूपा ॥

तव मैं निर्गुनमति करि दूरी * सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी ॥

उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा * मुनितन भये क्रोध के चीन्हा ॥

सुनु प्रभु बहुत अवग्या किये * उपज क्रोध ग्यानिहु के हिये ॥

अति संघरपन जाँ कर कोई * अनल प्रगट चंदन तैं होई ॥

दोहा--बारंबार सकोप मुनि, करै निरूपन ग्यान ।

मैं अपने मन बैठि तव, करउँ विविध अनुमान ॥

द्वैत बुद्धि बिनु क्रोध किमि, द्वैत कि बिनु अग्यान ।

मायाबस परिछिन्न जड़, जीव कि ईससमान ॥१११॥

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताके * तेहि कि दरिद्र परसमनि जा के ॥
 परद्रोही कि होइ निःसंका * कामी पुनि कि रहै अकलंका ॥
 बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें * कर्मकि होहिं स्वरूपहिं चीन्हें ॥
 काहू सुमति कि खल संग जामी * सुभगति पाव कि पर-त्रियगामी ॥
 भव कि परहिं परमात्मविंदक * सुखी कि होहिं कबहुँ परनिंदक ॥
 राज कि रहइ नीति बिनु जाने * अघ कि रहइ हरिचरित बखाने ॥
 पावन जस कि पुन्य बिनु होई * बिनु अघ अजस कि पावइ कोई ॥
 लाभ कि कछु हरि-भगति-समाना * जेहि गावहिं सुति संत पुराना ॥
 हानि कि जग एहि सम कछु भाई * भजिय न रामहिं नरतनु पाई ॥
 अघ कि पिसुनतासम कछु आना * धर्म कि दयासरिस हरिजाना ॥
 एहि विधि अमितजुगुतिमन गुनऊँ * मुनि उपदेस न सादर सुनऊँ ॥
 पुनि पुनि स-गुन-पच्छ मै रोपा * तव मुनि बोले बचन सकोपा ॥
 मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि * उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि ॥
 सत्यबचन विस्वास न करही * वायम इव सबही तें डरही ॥
 सठ स्वपच्छ तव हृदय विसाला * सपदि होहु पच्छी चंडाला ॥
 लीन्ह साप में सीम चढ़ाई * नहिं कछु भय न दीनता आई ॥

दोहा—तुरत भयउँ मैं काग तव, पुनि मुनिपद सिरु नाइ ।

सुमिरि राम रघुवंस-मनि, हरषित चलेउँ उडाइ ॥

उमा जे रामचरन-रत, विगत-काम-मद-क्रोध ।

निज प्रभुमय देखहिं जगत, केहि सन करहिं विरोध ॥११२॥

सुनु खगेस नहिं कछु रिषिदूषन * उरप्रेरक रघुवंस-विभूषन ॥
 कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी * लीन्ही प्रेम परीछा मोरी ॥
 मन बच क्रम मोहि निज जन जाना * मुनि मति पुनि फेरी भगवाना ॥
 रिषि मम सहनसीलता देखी * रामचरन-विस्वास विसेखी ॥
 अतिविममय पुनि पुनि पछिताई * सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई ॥
 मम परितोष विविधविधि कीन्हा * हरषित राममंत्र तव दीन्हा ॥

बालकरूप राम कर ध्याना ❀ कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥
 सुंदर सुखद मोहि अति भावा ❀ सो प्रथमहिं मैं तुम्हहिं सुनावा ॥
 मुनि मोहि कञ्चुक काल तहँ राखा ❀ रामचरित-मानस तव भाखा ॥
 सादर मोहि यह कथा सुनाई ❀ पुनि बाले मुनि गिरा सुहाई ॥
 रामचरित मर गुप्त सुहावा ❀ मंभुप्रसाद तात मैं पावा ॥
 तोहि निजभगत राम कर जानी ❀ ता तें मैं मव कहेउँ बखानी ॥
 रामभगति जिन्ह के उर नाहीं ❀ कबहुँ न तात कहिय तिन्ह पाहीं ॥
 मुनि मोहि विविधभाँति समुझावा ❀ मैं सप्रेम मुनिपद सिरु नावा ॥
 निज-कर-कमल परसि मम सीसा ❀ हरषित आसिष दीन्हि मुनीसा ॥
 रामभगति अवरिल उर तोरे ❀ बसहु मदा प्रमाद अब मोरे ॥

दोहा—सदा रामप्रिय होहु तुम्ह, सुभ-गुन-भवन अमान ।

कामरूप इच्छा मरन, ग्यान-विराग-निधान ॥

जेहि आत्मम तुम्ह बसब पुनि, सुमिरत श्रीभगवंत ।

व्यापिहि तहँ न अविद्या, जोजन एक प्रजंत ॥११३॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ ❀ कछु दुख तुम्हहिं न व्यापिहि काऊ ॥
 रामरहस्य ललित विधि नाना ❀ गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
 विनु स्रम तुम्ह जनाव मव सोऊ ❀ नित नवनेह रामपद होऊ ॥
 जो इच्छा करिहहु मन माहीं ❀ हरिप्रमाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
 सुनि मुनिआसिष सुनु मति धीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥
 एवमस्तु तव वच मुनि ग्यानी ❀ यह मम भगत करम मन वानी ॥
 सुनि नभ गिरा हरष मोहि भयऊ ❀ प्रेम मगन मव मंसय गयऊ ॥
 करि विनती मुनिआयसु पाई ❀ पदसरोज पुनि पुनि सिरु नाई ॥
 हरषसहित एहि आत्मम आयउँ ❀ प्रभुप्रसाद दुर्लभ वर पायउँ ॥
 इहाँ बसत मोहिं सुनु खगईसा ❀ वीते कल्प सात अरु बीसा ॥
 करौं सदा रघुपति-गुन-गाना ❀ सादर सुनहिं विहंग सुजाना ॥
 जब जब अवधपुरी रघुवीरा ❀ धरहिं भगतहित मनुजसरीरा ॥
 तव तव जाइ रामपुर रहऊँ ❀ सिसुलीला विलोकि सुख लहऊँ ॥
 पुनि उर राखि राम सिसुरूपा ❀ निज आत्मम आवउँ खगभूषा ॥

कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई * कागदेह जेहि कारन पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रसन्न तुम्हारी * राम-भगति-महिमा अतिभारी ॥

दोहा--तातें यह तनमौहि प्रिय, भयउ राम-पद-नेह ।

निज -प्रभु-दरसन पायऊँ, गयउ सकल संदेह ॥

भगति पच्छ हठ करि रहेउँ, दीन्हि महा-रिपि-साप ।

मुनिदुर्लभ वर पायऊँ, देखहु भजनप्रताप ॥११४॥

जे असिं भगति जानि परिहरहीं * केवल ग्यानहेतु सम करहीं ॥

ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी * खोजत आक फिरहिं पय लागी ॥

सुनु खगेष हरिभगति विहाई * जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥

ते सठ महा मिन्धु विनु तरनी * पैरि पार चाहहिं जड़करनी ॥

सुनि भुसुंडि के वचन भवानी * बोलेउ गरुड़ हरपि मृदुवानी ॥

तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं * मंगय-सोक-मोह-भ्रम नहीं ॥

सुनेउँ पुनीत राम-गुन-ग्रामा * तुम्हरी कृपा लहेउँ विस्वामा ॥

एक वात प्रभु पूछउँ तोही * कहउ बुझाइ कृपानिधि मोही ॥

कहहिं संत मुनि वेद पुराना * नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥

सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोमाई * नहिं आदरेहु भगति की नाई ॥

ग्यानहिं भगतिहिं अंतर केता * सकल कहउ प्रभु कृपानिकेता ॥

सुनि उरगारिवचन सुख माना * सादर बोलेउ काग गुजाना ॥

भगतिहिं ग्यानहिं नहिं कछु भेदा * उभय हरहिं भवभंभव खेदा ॥

नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर * सावधान सोउ सुनु विहंगवर ॥

ग्यान विराग जोग विग्याना * ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना ॥

पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती * अबला अबल सहज जड़ जाती ॥

दोहा--पुरुष त्यागि सक नारिहिं, जो विरक्त मतिधीर ।

न तु कामो जो विषयवस, विमुख जो पद रघुवीर ॥

सोरठा--सोमुनिग्याननिधान, मृगनयनीविधुमुखनिरसि ।

बिबस होइ हरिजान नारि बिस्व माया प्रगट ॥११५॥

इहाँ न पच्छपात कलु राखौं ❀ वेद-पुरान-संत-मत भाखौं ॥
 मोह न नारि नारि के रूपा ❀ पन्नगारि यह रीति अनूपा ॥
 माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ ❀ नारिवर्ग जानहिं सब कोऊ ॥
 पुनि रघुवीरहिं भगति पियारी ❀ माया खलु नर्त्तकी विचारी ॥
 भगतिहिं सानुकल रघुराया ❀ ता तें तेहि डरपति अति माया ॥
 रामभगति निरुपमै निरुपाधी ❀ बसइ जासु उर सदा अशाधी ॥
 तेहि विलोकि माया सकुचाई ❀ करि न सकै कलु निज प्रभुताई ॥
 अस विचारिजे मुनि विग्यानी ❀ जाचहिं भगति सकल-सुख-खानी ॥
 दोहा--यहरहस्य रघुनाथ कर, बेगि न जानै कोइ ।

जो जानै रघुपति-कृपा, सपनेहुँ मोह न होइ ॥

अउरौ ग्यान भगति कर, भेद सुनहु सुप्रवीन ।

जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अविच्छीन ॥११६॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी ❀ समुझत वनै न जाइ वखानी ॥
 ईस्वरअंस जीव अविनासी ❀ चेतन अमल सहज सुखरामी ॥
 सो मायावस भयउ गोमाई ❀ वँधेउ कीर मरकट की नाई ॥
 जड़ चेतनहिं ग्रंथि परि गई ❀ जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
 तब तें जीव भयउ संसारी ❀ छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी ॥
 सुति पुरान बहु कहेउ उपाई ❀ छूट न अधिक अधिक अरुभाई ॥
 जीवहृदय तम मोह विसेखी ❀ ग्रंथि छूटि किमि परइ न देखी ॥
 अम संजोग ईम जब करई ❀ तवहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥
 सात्विक सद्धा धेनु सुहाई ❀ जो हरिकृपा हृदय बसि आई ॥
 जप तप व्रत जम नियम अपारा ❀ जे सुति कह सुभ धर्म अचारा ॥
 तेइ तृन हरित चरइ जब गई ❀ भाव बच्छ मिसु धेनु पेन्हाई ॥
 नोइ निवृत्ति पात्र बिस्वासा ❀ निर्मल मन अहीर निजदासा ॥
 परम-धरम-मय पय दुहि भाई ❀ अवटइ अनल अकाम बनाई ॥
 तोष मरुत तब छमा जुडावइ ❀ धृतिसम जावन देइ जमावइ ॥
 मुदिता मथइ विचार मथानी ❀ दम अधार रजु सत्य सुबानी ॥
 तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता ❀ विमल विराग सुपरम पुनीता ॥

दोहा--जोग अगिनि करि प्रगट तब, कर्म सुभासुभ लाइ ।
 बुद्धि सिरावइ ग्यान घृत, ममता मल जरि जाइ ॥
 तब विग्यानरूपिनी, बुद्धि विसद घृत पाइ ।
 चित्तदिया भरि धरइ दृढ़, समता दियटि बनाइ ॥
 तीनि अवस्था तीनि गुन, तेहि कपास तें काढ़ि ।
 तूल तुरीय सँवारि पुनि, बाती करइ सुगाढ़ि ॥
 सोरठा--एहि विधि लेसइ दीप, तेजरासि विग्यानमय ।

जातहिं जासु समीप, जरहिं मदादिकसलभसब ॥ ११७ ॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा * दीपमिखा सोइ परमप्रचंडा ॥
 आतम-अनुभव-सुख सुप्रकासा * तब भवमूल भेदभ्रम नासा ॥
 प्रबल अविद्या कर परिवारा * मोहआदि तम मिटइ अपारा ॥
 तब सोइ बुद्धि पाइ उँजियारा * उरगृह बैठि ग्रंथि निरुवारा ॥
 झोरन ग्रंथि पाव जौं कोई * तौ यह जीव कृतारथ होई ॥
 झोरत ग्रंथि जानि खगराया * विघन अनेक करै तब माया ॥
 रिद्धि मिद्धि प्रेरै बहु भाई * बुद्धिहि लोभ देखावहिं आई ॥
 कल बल छल करि जाइ समीपा * अंचल वात बुझावहिं दीपा ॥
 होइ बुद्धि जो परम सयाने * तिन्ह तनु चितव न अनहित जाने ॥
 जौं तेहि विघन बुद्धि नहिं बाधी * तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥
 इंद्री द्वार झरोखा नाना * तँह तँह सुर बैठे करि थाना ॥
 आवत देखहिं विषय वयारी * ते हटि देहिं कपाट उधारी ॥
 जब सो प्रभंजन उरगृह जाई * तवहिं दीप विग्यान बुझाई ॥
 ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा * बुद्धि विकल भइ विषयवतासा ॥
 इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सुहाई * विषयभोग पर प्रीति सदाई ॥
 विषय समीर बुद्धि कृत भोरी * तेहि विधि दीप को बार बहोरी ॥

दोहा--तब फिरि जीव विविधविधि, पावइ संसृतिक्लेस ।

हरिमाया अतिदुस्तर, तरि न जाइ बिहँगेस ॥

कहत काठिन समुभक्त काठिन साधन कठिन विवेक ।

हाइ बुनाच्छर न्याय जौं, पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ ११८ ॥

ग्यानपंथ कृपान कै धारा ❀ परत खगोस होइ नहिं वारा ॥
 जौं निरविघन पंथ निरबहई ❀ सो कैवल्य परमपद लहई ॥
 अतिदुर्लभ कैवल्य परमपद ❀ संत पुरान निगम आगम वद ॥
 राम भजन सोइ मुक्ति गोमाई ❀ अनइच्छित आवइ बरिआई ॥
 ांजमि थल विनु जल रहि न सकाई ❀ कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥
 तथा मोच्छस्व सुनु खगराई ❀ रहि न सकै हरिभगति विहाई ॥
 अस विचारि हरिभगत सयाने ❀ मुक्ति निरादर भगति लोभाने ॥
 भगति करत विनु जतन प्रयासा ❀ संसृतिमूल अविद्या नासा ॥
 भोजन करिय तृप्ति हित लागी ❀ जिमि सो असन पचवइ जठरागी ॥
 अमि हरिभगति सुगम सुखदाई ❀ को अम मृदु न जाहि सुहाई ॥

दोहा—सेवक सेव्य भाव विनु, भव न तरिय उरगारि ।

भजहु राम-पद पंकज, अस सिद्धांत विचारि ॥

जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य ।

अस समर्थ खुनाय कहिं, भजहिं जीव ते धन्य ॥ ११९ ॥

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई ❀ सुनहु भगतिमनि कै प्रभुताई ॥
 रामभगति चिंतामनि सुंदर ❀ वसइ गरुड़ जा के उरअंतर ॥
 परमप्रकाम रूप दिन राती ❀ नहिं कळु चहिय दिया घृत वाती ॥
 मोह दरिद्र निकट नहिं आवा ❀ लोभ वात नहिं ताहि बुझावा ॥
 अचल अविद्या तम मिटि जाई ❀ हारहिं सकल मलभसमुदाई ॥
 खल कामादि निकट नहिं जाहीं ❀ वसइ भगति जाके उर माहा ॥
 गरल सुधा सम अरि हित होई ❀ तेहि मनि विनु सुख पाव न कोई ॥
 व्यापहिं मानस रोग न भारी ❀ जिन्ह के वस सब जीव दुखारी ॥
 राम-भगति-मनि उर वस जाके ❀ दुख-लव-लेस न सपनेहुं ता के ॥
 चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं ❀ जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥
 सो मान जदपि प्रगट जग अहई ❀ रामकृपा विनु नहिं कोउ लहई ॥
 सुगम उपाइ पाइवै केरे ❀ नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ॥

पावन पर्वत वेद पुराना * रामकथा रुचिराकर नाना ॥
 मर्मी सज्जन सुमति कुदारी * ग्यान विराग नयन उरगारी ॥
 भावमहित खोजइ जो प्रानी * पाव भगतिमनि मव सुखखानी ॥
 मोरे मन प्रभु अस विस्वासा * राम तें अधिक राम कर दामा ॥
 राम सिंधु घन सज्जन धीरा * चंदन तरु हरि मंत ममीरा ॥
 सब कर फल हरिभगति सुहाई * सो विनु मंत न काहू पाई ॥
 अस विचारि जो कर मतसंगा * रामभगति तेहि सुलभ विहंगा ॥

दोहा—ब्रह्म पयोनिधि मंदर, ग्यान सन्त सुर आहि ।

कथा सुधा मथि काढइ, भगति मधुरता जाहि ॥

विरति चर्म असि ग्यानमद, लोभ मोह रिपुमारि ।

जय पाइय सो हरिभगति, देखु खगैस विचारि ॥१२०॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ * जो कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥
 नाथ मोहि निज सेवक जानी * मम प्रश्न मम कहहु वखानी ॥
 प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा * सब तें दुर्लभ कवन मरीरा ॥
 बड़ दुख कवन कवन सुख भारी * सोउ संछेपहिं कहहु विचारी ॥
 मंत अमंत मरमु तुम्ह जानहु * तिन्ह कर सहज सुभाउ बगवानहु ॥
 कवन पुन्य सुतिविदित विमाला * कहहु कवन अध परम कृपाला ॥
 मानमरोग कहहु ममुझाई * तुम्ह सर्वग्य कृपा अधिकाई ॥
 तात सुनहु सादर अतिप्रोती * मैं मंछेप कहउं यह नीती ॥
 नर-तन-सम नहिं कवनिउ देही * जीव चराचर जाचत जेही ॥
 नरक - सर्ग - अपवर्ग - निसेनी * ग्यान-विराग-भगति-सुख-देनी ॥
 मो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर * होहिं विषयरत मंद मंदतर ॥
 काँच किरिच बदले जिमि लेहीं * कर तें डारि परसमानि देहीं ॥
 नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं * मंत-मिलन-मम सुख कहूँ नाहीं ॥
 परउपकार बचन मन काया * मंत सहज सुभाव खगराया ॥
 मंत सहहिं दुख परहित लागी * पर-दुख-हेतु अमंत अभागी ॥
 भूरज - तरु - सम मंत कृपाला * परहित नित सह विपति विमाला ॥
 सन इव खल परबंधन करई * खाल कढाई विपति महि मरई ॥

खल विनु स्वारथ परअपकारी * अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
 परसंपदा इबनासि नसाहा * जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं ॥
 दुष्टहृदय जग आरत हेतू * जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
 संतउदय संतत सुखकारी * विखसुखद जिमि इंदु तमारी ॥
 परमधरम सुतिविदित अहींसा * पर-निंदा-सम अध न गिरीसा ॥
 हरि-गुरु-निंदक दादुर होई * जनम सहस्र पाव तन सोई ॥
 द्विजनिंदक बहु नरक भोग करि * जग जनमइ बायससरीर धरि ॥
 सुर-सुति-निंदक जे अभिमानी * रौरव नरक परहिं ते प्राणी ॥
 होहिं उलूक मंत - निंदा-रत * मोहनिसा प्रिय ग्यान भानु मत ॥
 सब कै निंदा जे जड करहीं * ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
 सुनहु तात अव मानसगोगा * जेहि तें दुख पावहिं सब लोगा ॥
 मोह सकल व्याधिन कर मूला * तेहि तें पुनि उपजै बहु सूला ॥
 काम बात कफ लोभ अपारा * क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
 प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई * उपजै सन्निपात दुखदाई ॥
 विषय मनोरथ दुर्गम नाना * ते सब सूल नाम को जाना ॥
 ममता दादु कंडु इरपाई * हरष विषाद गरह बहुताई ॥
 परसुख देखि जरनि सोइ छई * कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ॥
 अहंकार अतिदुखद डवरुआ * दंभ कपट मद मान नहरुआ ॥
 तृस्ना उदरबुद्धि अतिभारी * त्रिविधि ईषना तरुन तिजारी ॥
 जुगविधि ज्वर मत्सर अविवेका * कहँ लगि कहौं कुरोग अनका ॥
 दोहा-एक व्याधिवस नर मरहिं, ए असाध्य बहु व्याधि ।
 पीड़हिं संतत जाव कहँ, सो किमि लहै समाधि ॥
 नेम धर्म आचार तप, ग्यान जग्य जप दान ।
 भेषज पुनि कोटिक नहों, रोग जाहिं हरिजान ॥१२१॥
 एहि विधि सकल जीव जड़ रोगी * सोक हरष भय प्रीति त्रियोगी ॥
 मानसरोग कछुक मैं गाये * होहिं सबके लखि बिरलइ पाये ॥
 जाने तें बीजहिं कछु पापी * नाम न पावहिं जनपरितापी ॥
 विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे * मुनिहु हृदय का नर बापुरे ॥

रामकृपा नासहिं सब रोगा * जो एहि भाँति बनइ संजोगा ॥
 सदगुरु बेदबचन विस्वासा * संजम यह न विषय कै आमा ॥
 रघुपति - भगति सजीवनमूरी * अनूपान सद्दा मति पूरी ॥
 एहि विधि भलेहिसो रोग नसाहीं * नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं ॥
 जानिय तव मन विरुज गोसाईं * जब उर बल बिराग अधिकारै ॥
 सुमति छुधा बाढ़इ नित नई * विषय आस दुर्बलता गई ॥
 विमल ग्यानजल जब सो नहारै * तव रह रामभगति उर छारै ॥
 सिव अज सुक सनकादिक नारद * जे मुनि ब्रह्म-विचार-विसारद ॥
 सब कर मत खगनायक एहा * करिय राम-पद-पंकज नहा ॥
 सुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं * रघुपति-भगति विना सुख नाहीं ॥
 कमठपीठि जामहिं बरु वारा * बंध्यासुत बरु काहुहि मारा ॥
 फूलहिं नभ बरु बहुविधि फूला * जीव न लह सुख हरि-प्रतिकूला ॥
 तृषा जाइ बरु मृग-जल-पाना * बरु जामहिं सससीस विखाना ॥
 अंधकार बरु रविहि नसावइ * रामविमुख न जीव सुख पावइ ॥
 दोहा-बारि मथे घृत होइ बरु, सिकता तें बरु तेल ।
 विनु हरिभजन न भव तरहिं, यह सिद्धान्त अपेल ॥
 मसकहि करइ विरंचि प्रभु, अजाहि मसक तें होन ।
 अस विचारि तजि संसय, रामहिं भजहिं प्रवीन ॥ १२२ ॥
 नगस्वरूपिणी-विनिश्चितं बदांमि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
 हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥
 कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा * व्यास समास स्वमति-अनुरूपा ॥
 सुतिसिद्धांत इहै उरगारी * राम भजिय सब काम बिसारी ॥
 प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही * मो से सठ पर ममता जाही ॥
 तुम्ह विग्यानरूप नहिं मोहा * नाथ कीन्ह मो पर अति ब्रह्मा ॥
 पूछेहु रामकथा अतिपावनि * सुक-सनकादिक-प्रभु-मन-भावनि ॥
 सतसंगति दुर्लभ संसारा * निमिष दंड भरि एकउ वारा ॥
 देखु गरुड़ निजहृदय विचारी * मैं रघुवीर - भजन - अधिकारी ॥
 सकुनाधम सब भाँति अपावन * प्रभु मोहि कीन्ह विदित जगपावन ॥

दोहा-आजु धन्य मैं धन्य आत, जत्रपि सबविधि हीन ।

निजजन जानि राम मोहि, संतसमागम दीन्ह ॥

नाथ जथामति भापेउँ, राखेउँ नहिं कछु गोइ ।

चरितसिंधु रघुवीर के, थाह कि पावइ कोइ ॥१२३॥

सुमिरि राम के गुनगन नाना * पुनि पुनि हरष भुसुंड़ि सुजाना ॥

महिमा निगम नेति करि गाई * अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥

सिव-अज-पूज्य-चरन रघुराई * मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥

अस सुभाव कहूँ सुनउँ न देखउँ * केहि खगोस रघुपति सम लेखउँ ॥

साधक सिद्ध विमुक्त उदासी * कवि कोविद कृतग्य संन्यासी ॥

जोगी सूर सुतापस ग्यानी * धर्मनिरत पंडित विग्यानी ॥

तरहिं न विनु सेये मम स्वामी * राम नमामि नमामि नमामी ॥

सरन गये मो से अधरामी * होहिं सुद्ध नमामि अविनासी ॥

दोहा-जासु नाम भवभेषज, हरन ताप त्रयसूल ।

सो कृपालु मोहि तोहि पर, सदा रहहु अनुकूल ॥

सुनि भुसुंड़ि के वचन सुभ, देखि रामपद नेह ।

बोलेउ प्रेमसहित गिरा, गरुड विगत-संदेह ॥१२४॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव वानी * सुनि रघु-वीर-भगति-रस-सानी ॥

रामचरन नूतन रति भई * मायाजनित विपति सब गई ॥

मोहजलधि बोहित तुम्ह भयऊ * मो कहूँ नाथ विविध सुख दयऊ ॥

मो पर होइ न प्रतिउपकारा * बंदउँ तव पद बारहिं वारा ॥

पूरनकाम रामअनुरागी * तुम्ह सम तात न कोउ वड़भागी ॥

संत बिटप सरिता गिरि धरनी * परहित हेतु सबन्हि कै करनी ॥

संतहृदय नव-नीत-समाना * कहा कविन्ह पै कहइ न जोना ॥

निजपरिताप द्रवै नवनोता * परदुख द्रवहिं सुसंत पुनीता ॥

जीवन जनम सुफल मम भयऊ * तव प्रसाद भंसय सब गयऊ ॥

जानेहु सदा मोहि निज किंकर * पुनि पुनि उमा कहइ विहंगवर ॥

दोहा--तासु चरन सिरु नाइ करि, प्रेमसहित मतिधीर ।

गयउ गरुड बैकुण्ठ तव, हृदय राखि रघुवीर ॥

गिरिजा संत-समागम-सम न लाभ कछु आन ।

बिनु हरि कृपा न होइ सो, गावहिं वेद पुरान ॥१२५॥

कहेउँ परमपुनीत इतिहासा * सुनत सवन छूटहि भवपासा ॥

प्रनत-कल्प-तरु करुनापुंजा * उपजइ प्रीति राम-पद-कंजा ॥

मन बच कर्म जनित अघ जाई * सुनहिं जे कथा सवन मन लाई ॥

तीर्थाटन साधन समुदाई * जोग विराग ग्याननिपुनाई ॥

नाना कर्म धर्म ब्रत दाना * मंजम दम जप तप मख नाना ॥

भूतदया द्विज-गुरु-सेवकाई * विद्या विनय विवेक बड़ाई ॥

जहँ लागि साधन वेद बखानी * मव कर फल हरिभगति भवानी ॥

सो रघुनाथ-भगति स्तुति गाई * रामकृपा काहू एक पाई ॥

दोहा--मुनिदुर्लभ हरिभगति नर, पावहिं विनहिं प्रयास ।

जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि वस्वास ॥१२६॥

सोइ सर्वग्य सोइ गुनग्याता * सोइ महिमंडित पंडित दाता ॥

धर्मपरायन सोइ कुलत्राता * रामचरन जा कर मन राता ॥

नीतिनिपुन सोइ परमसयाना * स्तुतिमिद्धांत नीक तेहि जाना ॥

सो कवि कोबिद सो रनधीरा * जो छल छाँड़ि भजै रघुवीरा ॥

धन्य सुदेस जहाँ सुरसरी * धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी ॥

धन्य सो भूप नीति जो करई * धन्य सो द्विज निजधर्म न टरई ॥

सो धन धन्य प्रथम गति जा की * धन्य पुन्यरत मति सोइ पाकी ॥

धन्य घरी सोइ जब सतसंगा * धन्य जनम द्विज भगति अभंगा ॥

दोहा--सो कुल धन्य उमा सुनु, जगतपूज्य सुपुनीत ।

श्रीरघुवीर-परायन जेहि नर उपज विनीत ॥१२७॥

मति-अनुरूप कथा मैं भाखी * जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥

तव मन प्रीति देखि अधिकाई * तव मैं रघुपति-कथा सुनाई ॥

यह न कहिय सठहीं हठ सीलहिं * जो मनलाइ न सुन हरिलीलहिं ॥
 कहिय न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि * जो न भजै सचराचर-स्वामिहि ॥
 द्विजद्रोहिहि न सुनाइय कवहूँ * सुर-पति-सरिस होइ नृप तवहूँ ॥
 रामकथा के ते अधिकारी * जिन्ह के सतमंगति अतिप्यारी ॥
 गुरु-पद-प्रीति नीतिरत जेई * द्विजसेवक अधिकारी तेई ॥
 ता कहँ यह बिसेष सुखदाई * जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई ॥

दोहा—रामचरन-रति जो चहै, अथवा पद निर्बान ।

भावसाहित सो यह कथा, करउ सवनपुट पाना ॥१२८॥

रामकथा गिरिजा में बरनी * कलि-मल-हरन मनो-मल-हरनी ॥
 संसृतिरोग सजीवन मूरी * रामकथा गावहिं सुति भूरी ॥
 एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना * रघुपति-भगति केर पंथाना ॥
 अति हरि कृपा जासु पर होई * पाउँ देहि एहि मारग सोई ॥
 मन-कामना-सिद्धि नर पावा * जो यह कथा कष्ट तजि गावा ॥
 कहहिं सुनिहिं अनुमोदन करहीं * ते भवनिधि गोपद इव तरहीं ॥
 सुनि सुभ कथा हृदय अति भाई * गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
 नाथकृपा मम गत संदेहा * रामचरन उपजेउ नव नेहा ॥

दोहा—मैं कृतकृत्य भइउँ अव, तव प्रसाद बिस्वेस ।

राम भगति दृढ़ उपजी, बीते सकल कलेस ॥१२९॥

यह सुभ संभु-उमा-मंवादा * सुखमंपादन समन बिषादा ॥
 भवभंजन गंजन संदेहा * जनरंजन सज्जनप्रिय एहा ॥
 रामउपासक जे जग माहीं * एहिसम प्रिय तिनके कछु नाहीं ॥
 रघुपति-कृपा जथामति गावा * मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
 एहि कलिकाल न साधन दूजा * जोग जग्य जप तप व्रत पूजा ॥
 रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं * संतत सुनिय राम-गुन-श्रामहिं ॥
 जासु पतितपावन बड़ बाना * गावहिं कवि सुति संत पुराना ॥
 ताहि भजहिं मन तजि कुटिलाई * राम भजे गति के नहिं पाई ॥

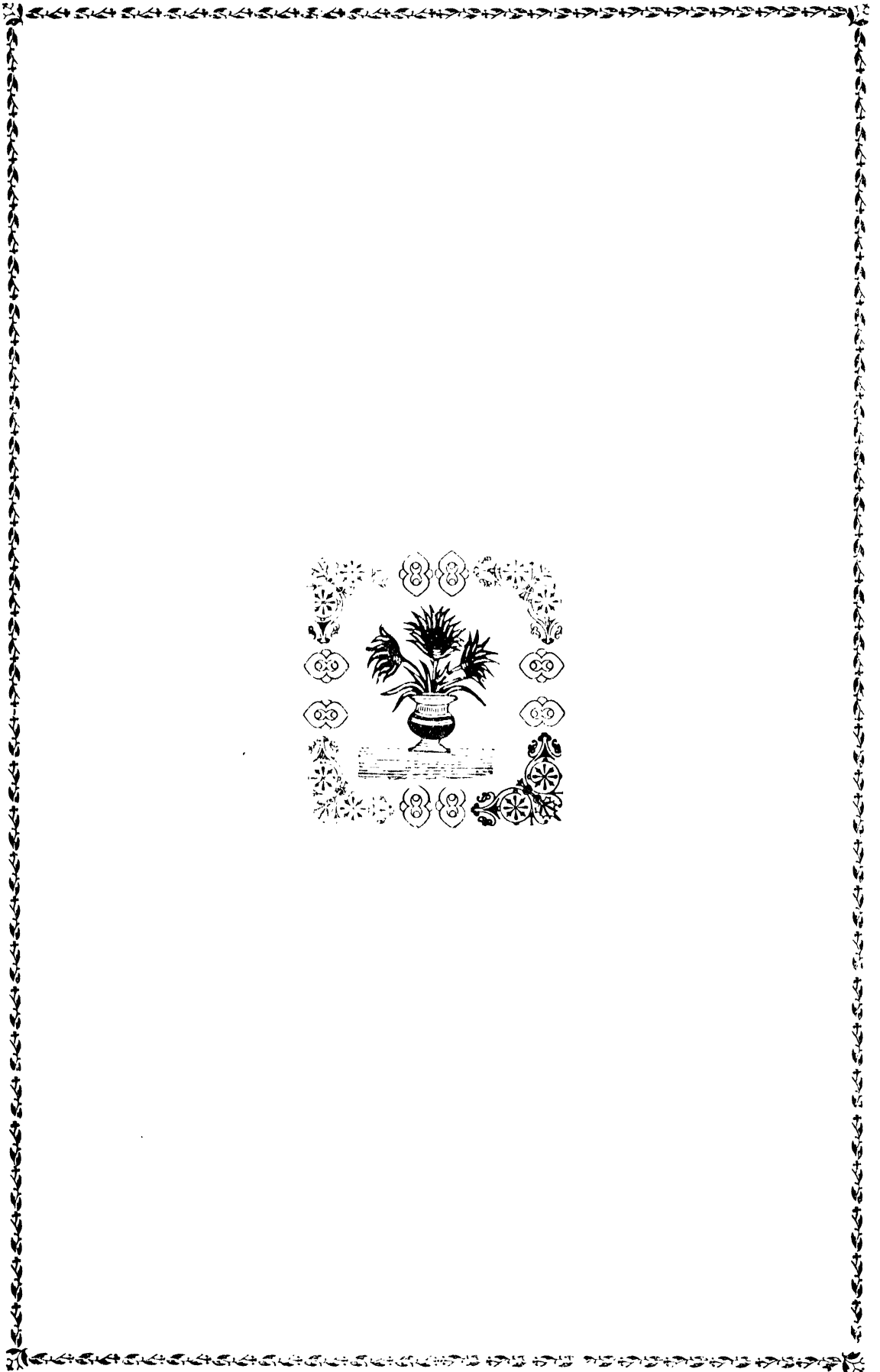
छन्द-पाई न केहि गति पतितपावन राम भजि सुनु सठ मना ।
 गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥
 आभीर जवन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
 कहि नाम बारक तेऽपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥
 रघुवंस-भूषन-चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
 कलिमल मनोमल धोइ विनु सम रामधाम सिधावहीं ॥
 सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे ।
 दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्रीरघुवर हरे ॥
 सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
 सो एक राम अकाम-हित निर्वाणप्रद मम आन को ॥
 जा की कृपा-लव-लेस तें मतिमंद तुलमीदामहें ।
 पायउ परमविद्याम राम समान प्रभु नाहीं कहें ॥

दोहा--मो सम दीन न दीनहित, तुम्ह समान रघुवीर ।
 अस विचारि रघुवंस-मनि, हरहु विषम-भव-भीर ॥
 कामिहि नारि पियारि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दान ।
 तिमि रघुवंस निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३०॥

श्लोक-यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं श्रीमद्रामप-
 दाञ्जभक्तिमनिशं प्राप्नोतु रामायणम् । मत्त्वा तद्रघुनाथनामनिरतं
 स्वान्तस्तमःशान्तये भाषाबन्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥१॥
 पुण्यं पापहरं मदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं मायामोहमलापहं सुविमलं
 प्रेमाम्बुपूरं शुभम् । श्रीमद्रामचरित्रमानममिदं भक्त्यावगाहन्ति ये ते
 संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥ २ ॥

इति उत्तरकाण्ड समाप्त ।



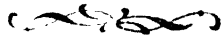


श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामायण

लवकुशकाण्ड



दोहा—श्रीभुशुण्डि के वचन सुनि, देखि राम पद प्रीति ।

है प्रसन्न बोले गरुड, वाणी परम पुनीत ॥ १ ॥

सुरसरि सम पावन भयो, नाथ हृदय अव मोर ।

जन्म जन्म छूटै नहीं, नाथ पदाम्बुज तोर ॥ २ ॥

मुने अखिल गुणगण प्रभु करे ॥ पूजे नाथ मनोरथ मेरे ॥

तव प्रसाद वायम कुल नाथा ॥ हृदय वमहिं अब प्रभु गुण गाथा ॥

मन मन्तोष न चित्त अघाहीं ॥ यथा उदधि मरिता मर जाहीं ॥

पक्षी पशु जंगम जड़जाती ॥ चर अरु अचर वने केहि भाँती ॥

जे जन अवध वमहिं मुख धामा ॥ लिये मंग सादर श्रीरामा ॥

तजि तनु अवध गये महदेवा ॥ यह सुनि नाथ परम मन्देहा ॥

अब प्रभु मोहिं मत्र कहौ बुझाई ॥ पिता जानि में कीन्ह दिठाई ॥

यह इतिहास पुनीत कृपाला ॥ जिमि मख कीन्ह राम महिपाला ॥

दोहा—असकहि गद्गद वचन मृदु, पुलकावली शरीर ।

सुनि सप्रेम हर्षे विहंग, वायस मति अति धीर ॥ ३ ॥

धन्य धन्य तुम धनि खगराया ॥ कीन्हीं अमित मोहिं पर दाया ॥

रामकृपा तुम्हरे मन माहीं ॥ मंशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥

अति प्रिय वचन रमज तुम्हारे ॥ लागत नाथ मोहिं अति प्यारे ॥

अब प्रभु कथा विशद विस्तारी ॥ सकल मुनावहु मम हितकारी ॥

तव मन प्रीति देखि खगराया * मिटें अमंगल कोटिहु माया ॥
 सुनु अब रामरहस्य अनूपा * चरित पुनीत अबध सुरभूपा ॥
 अज अद्वैत अमल अविनाशी * चरित मकल कलिमल करफाँसी ॥
 नव महस्र नवशत कमवासी * कृत चरित्र रह पुरजग दासी ॥
 दोहा--विधि वर वचन सँभारि उर, राजत करुणागार ।

युगलजोरि शोभा निरखि, लजित कोटि शतमार ॥ ४ ॥

अनुज मचिव प्रभु प्रजा बुलाये * गुरुगृह मादर सुनि सब आये ॥
 मकर मास रवि पर्व सुहावा * विदा माँगि गुरुपद शिरनावा ॥
 काशी क्षेत्र धर्म जग जाना * चले सकल मजि वाहन नाना ॥
 चतुरंगिनी अनी मव साजा * यहि विधि चले राम रघुराजा ॥
 बीच वाम करि शिवपुर आये * मादर पुरहिं शीश सब नाये ॥
 आय सुरमरिहिं कीन्ह प्रणामा * अभय अनन्त पाय विश्रामा ॥
 महिसुर दंडि यती मन्यासी * पूजेउ कृपासिंधु सुखरासी ॥
 दान दिये वरणें किमि जाई * धनद कुंवर सुरेश लजाई ॥

दोहा--प्रभु रहेउ इमि अमित दिन, सुखी किये मुनिवृन्द ।

आये पुनि निज नगर महँ, रविकुल कैरवचन्द ॥ ५ ॥

प्रतिदिन अबध अनंद उझाहू * दान देहिं प्रतिदिन नरनाहू ॥
 भूठ प्रपंच न दुखद न काहू * व्यापन कवहुँ सुना खगनाहू ॥
 सुनहिं जहाँ तहँ वेद पुराना * दूसर धर्म न काहू जाना ॥
 दिन २ प्रीति देखि भगवाना * अमित अनंद सकल पुरजाना ॥
 शत संवत परिमाण हमारा * रहेउ शोच वश राम उदारा ॥
 अश्वमेध मख करौ सुहावन * गाइ तरहिं भवदुःख नशावन ॥
 पुनि निज धामहिं तुरत सिधावौ * विधिके वचन बिलंब न लावौ ॥
 प्रात जाय गुरु भवन सप्रीती * कहै करौ सब सुन्दर रोती ॥

दोहा--अस बिचारि उर राखिकर, कृपासिंधु मतिधीर ।

करत चरित नाना अमित, हरण शोक भवपीर ॥ ६ ॥

कहहुँ सुनहु रघुपति प्रभुताई * जो पुराण श्रुति नारद गाई ॥
 रामचन्द्र महिमा अति भूरी * मो वर्णत मन कवि कदरूरी ॥

मैं मतिमन्द कहों केहि भाँती * सोहत हंसकि बगुला पाँती ॥
 सुनिय न पुहुमि कतहुँ अघकाना * पढ़हिं चतुर नर वेद पुराना ॥
 गावहिं प्रभु गुणगण भयहारी * निन्दहिं अमर लोक नरनारी ॥
 आज्ञा मात पिता गुरु करहीं * तप मुख दान हर्ष हरि भजहीं ॥
 प्रजा अनन्द राज प्रभु केरे * मानहुँ शक्र कुंवर घनेरे ॥
 राजत सब रनिवास अनन्दा * सुखी चकोर लखत जिमिचन्दा ॥

छन्द—जिमि शरद चन्द चकोर देखत मातु प्रभु मुख जोहहीं ।

तिमि भरत लक्ष्मण शत्रुसूदन वेष लखि मन मोहहीं ॥

नित जात प्रभु चौगान खेलन साथ लै चतुरंगिनी ।

जब गये भूतल भार टारन संग बहु मरकट अनी ॥

चढ़ि बाजि रथ गज नगर देखहिं श्रमित पुनि गृह आवहीं ।

सारंग हेम बिलोकि विनु पद त्राणहीं प्रभु धावहीं ॥

यदि कुसुम कंटक अंग लागत मोरि मुख मुसकावनी ।

सो शत्रु सन्मुख सही तीक्ष्ण शक्ति अस रिपु दाहनी ॥

निशि नींद नाशक भूख बासर वेष चौदह हो सहै ।

निज भक्त हेतु ममेत लक्ष्मण प्रौढ रिपु मारे सहै ॥

दोहा--रघुवर राजविराज अति, सकल अवनि अघ भाग ।

विचरहि कानन मुनि विपुल, प्रीतिसहित अनुराग ॥७॥

मही सुहावनि कानन चारू * स्वग मृग इक मँग कहहिं विहारू ॥

बैर न सुनिय राम के राजा * मिलि विचरहिं वन सकल समाजा ॥

नाना ग्रन्थ शास्त्र समुदाई * गाय न सकहिं राम प्रभुताई ॥

सादर कोटि कोटि अहि ईशा * अगणित चतुरानन गौरीशा ॥

जहँ लगि जग कोविद कविराई * रामराज गुण नहिं सक गाई ॥

असित आदि कज्जल गिरि भूरी * पात्र समुद्र मसी भरि पूरी ॥

करजु लेखनी सुरतरु डारी * सप्त द्वीप महिपत्र विचारी ॥

सुरसति हरिहर विधि अरु शेषा * महस कल्प शत लिखहिं विशेषा ॥

सोरठा--तदपि न पावहिं पार, राम काज कौतुक अमित ।

सुनु सब चरित अपार, जस स्वगपति आगे भयउ ॥ १ ॥

राजत राम मभा महँ भाई * तहँ आये एक द्विज विलखाई ॥
 परुष वचन मुग्ध कहत पुकारा * हंस वंश बूड़ेउ संमारा ॥
 रघु दिलीप अरु मगर नरेशा * अतुल प्रभाव भये अवधेशा ॥
 पितु जीवन सुत त्यागेउ प्राणा * अन्तर्यामी प्रभु मव जाना ॥
 नर लीला कर राम कृपाला * लगे विचार करन तेहिकाला ॥
 कारण कवन मृतक सुत भयऊ * द्विज दुख देखि विकल प्रभु भयऊ ॥
 प्रभु चित देखि गगन भइ वानी * शूद्र तपै मुनु सारंगपानी ॥
 विन्ध्याचल गहवर वन जाहाँ * द्विज सुत मरण हेतु नरनाहा ॥

छन्द—इहि भाँति द्विजसुत मृतक सुनि रथ साजि प्रभु आतुर चले ।
 सोइ परम शैल विलोकि पावन मुदित चित सन्मुख भले ॥
 शुचि रुचिर आश्रम वेदिका तहँ देखि मुनिमन भावनी ।
 बहुबाग सुमन तड़ाग गुञ्जत मंजु मधुकर सावनी ॥
 पिक मोर हंस चकोर चातक कीर शोभा पावनी ।
 वन विविध कोल किरात सादर खोह कीन्ही तहँ घनी ॥
 पुनि कोह मंयुत विशिख छाँड़े माथलै तव शरगयो ।
 बर भक्ति आरत जान तेहि दै आप तीरय व्रत कियो ॥

दोहा--द्विजवर बालक मृतक सो, उठि बैठेउ हरषाय ।

आये पुर रघुपति भगत, दुख भंजन सुखदाय ॥ ८ ॥

ताहि समय तहँ श्वान पुकारी * पाहि पाहि भक्तन भयहारी ॥
 विनु अघ नाथ कृपाल खरारी * हत्यो मोहि द्विज अति बलभारी ॥
 सुनिके श्वान वचन तव काना * द्विज पहँ दृत भेजि भगवाना ॥
 आनेउ विप्र बोलि तेहिकाला * कहे वचन तव दीनदयाला ॥
 हन्यो श्वान सो केहि अपराधा * मुनु सर्वज्ञ न कलु कृत बाधा ॥
 क्रोध विवम प्रभु विन परिचारा * नाथ प्रबल मैं इहिको मारा ॥
 करौ दण्ड द्विज सकल समाजा * विप्र अदंड देव रघुराजा ॥
 उचित दंड तुम देहु बताई * कहहु श्वान जस तुम्हें सुहाई ॥

दोहा--प्रभु याको मठपति करहु, मम भावन सुख ऐन ।

तुरत मँगायो पीतपट, गज कुंडल प्रभुदेन ॥ ९ ॥

पूजि चरण तब विप्र पठायो * दुन्दुभि बाजत मटमो आयो ॥
 कहैं परस्पर सब नर नारी * देख्यो श्वान दंड अति भारी ॥
 प्रभुसे रंक कीन्ह अति दीनी * जो कछु श्वान कहा सो कीनी ॥
 तासु अनन्द देख नरनारी * कहो दंड फल कवन खरारी ॥
 पूछेहु श्वान कही मो बाता * पूरव मव प्रमंग सुखदाता ॥
 काशी विप्र वंश में भयऊ * शिव सेवा सादर चित दयऊ ॥
 हिम ऋतु कीन्ही होम सर्पानी * घृत नख रह्यो नाथ जिमि मीती ॥
 दोहा--तातोदन भोजन करत, खाय गयो सो भाग ।

विविध योनि घूमत फिर्यो, मिट्यो न सो अनुराग ॥१०॥

राजसभहिं सिर नाय बहोरी * चला श्वान मन त्राम न थोरी ॥
 उठि मध्यान्ह कीन्ह रघुनन्दन * पूजे शंभु भक्त उर चन्दन ॥
 भोजन शयन जगतपति कीन्हा * आयसु पुनि मवहीं कहैं दीन्हा ॥
 रह्यो दिवस जब घटिका चारी * सभा जुरी तब आय खरारी ॥
 सुनि पुराण प्रभु अनुज समेता * मन्ध्या भई दान शुभ देता ॥
 भवन चले प्रभु आयसु पाई * मवही मन्ध्या कीन्ह सुहाई ॥
 दूत अवध निशिवाभर धावहिं * आय माँझ सब खवर सुनावहिं ॥
 पृथक पृथक मुनि चरवर बानी * बोला एक मो सुनहु भवानी ॥
 छन्द--कछु कब्यो नहिं तेहि पूछि सादर वचन वेगि न आवहीं ।

इक रजक पन्निहिं कहत डाँटत व्यंग वचन सुनावहीं ॥

मुनि वचन कृपानिधान चर के मध्य उर राखत भये ।

निशि स्वप्न देखत जगत पति उठि जागि दारुण दुख ब्रये ॥

दोहा--बोती अवधि प्रमाण युग, कीन्ह विचार कृपाल ।

एक सहस पितु राज्यसुचि, करहु सत्य यहिकाल ॥११॥

त्यागहुँ जनकमुता वन माँही * राखहुँ श्रुतिपथ धर्म न जाहीं ॥
 देवन तुरत मीय पहुँ आये * सादर बोले वचन सुहाये ॥
 निज छाया धरि यहाँ विनीता * रहहु जाय निजधाम पुनीता ॥
 प्रभु पद बन्दि गई नभ सोई * जीव चराचर लखा न कोई ॥
 तेहिसन प्रभु अम कहा बुझाई * आयसु तुम गृहमन मकुचाई ॥

मुनि तिय भूषण वमन मुहाये * पहिराये प्रभु जो मन भाये ॥
हसि कह कृपा निकेत मकारे * पूजे मन अभिलाष तुम्हारे ॥
दोहा-होत प्रात जब जगतपति, जागे रमा निवास ।

याचक जन गावत मुदित, लखिमुख कंज प्रकास ॥ १२ ॥

भरत लषण रिपुदमन ममेता * आये जहँ प्रभु कृपानिकेता ॥
कीन्ह प्रणाम माथ महिलार्ई * बोले नहिं कछु श्री रघुर्आई ॥
बदन विलोकि सशंकित अंगा * श्रीहत देख वपुषकर रंगा ॥
थरथर काँपहिं तीनों भाई * जानि न जाय चरित रघुर्आई ॥
ऐचि स्वाम तकि कछु मन जानी * बोले गूढ़ मनोहर बानी ॥
सुनि लघु भाइ कहेउ रघुनाथा * लै बन जाहु जानकिहि साथी ॥
सूखिसहमि मुनि वचन कराला * जरेउ गात उपजी उर ज्वाला ॥
हँसत कि माँच कहत रघुर्आई * असमंजस मन दुख अधिकाई ॥

दोहा-भरतादक भ्राता विकल, मख आवत नहिं बैन ।

जोरि युगल कर शत्रुहन, कहत नीर भरि नैन ॥ १३ ॥

सुनि प्रभु वचन हृदय विलखाना * जगतनननि सिय सब जगजाना ॥
जगत पिता प्रभु सब उर बासी * जड़ चेतन घन आनँदरासी ॥
कारण कवन जानकी त्यागी * मनक्रम वचन चरण अनुरागी ॥
सुनि सर्वज्ञ सगर्व मुज्ञानी * रिम परिहास कि सत्य सुबानी ॥
पंकज नैज नीर भरि आये * कहिप्रिय वचन अनुज समुझाये ॥
आयसु मम टारहिं जो ताता * रहे न प्राण तात मम गाता ॥
हरि इच्छा भावी बलवाना * तुम कहँ तात सर्व कल्याना ॥
मम यह वचन पालु लघु भाई * प्रात जानकिहि जाहु लिवार्ई ॥
सोरठा-सुनि प्रभुवचन कठोर, भरत कहेउ युग जोरि कर ।

नाथ हमहिं मति थोर, सुनु विनती सर्वज्ञ प्रभु ॥ २ ॥

हंस बंस जग में विख्याता * दशरथ पिता कौशिला माता ॥
त्रिभुवनपति प्रभु सब जगजाना * गावहिं यश सब वेद पुराना ॥
सत्य भक्ति तव प्रगट सुहाई * बरणि न सकहिं वेद अहिराई ॥
शोभा खानि जगत की माता * रहित अमंगल मंगल दाता ॥

झाया जेहि प्रिय पतिव्रत धरहीं * तुमहि विहाय क्षणहु किमि भरहीं ॥
 विनु जल मीच कि जिये कृपाला * कृपी कि रह विनु बारिद माला ॥
 जीवहि क्षण तुम विनु किमि सीता * ज्ञानवंति अति चतुर विनीता ॥
 सुनि करुणामय वचन सप्रीती * कही भरत तुम सुन्दर नीती ॥
 दोहा--तदपि नृपहिं चाहिय सदा, राजनीति धन धर्म ।

वसुधा पालहि सोच तजि, वचन प्रीति सुचिकर्म ॥१४॥

दूतन कहा सो अपयश कहेऊ * कुल कलंक यह दारुण भयऊ ॥
 तरणिवंश नृप भये अनेका * एक एकते निपुण विवेका ॥
 स्वायंभुव मनु रघु नृप जानौं * सगर भगीरथ विरद बखानौं ॥
 दशरथ दीख सदा तुम नीके * वचन न टारेउ लालच जीके ॥
 तेहि कुल रंचक सुनत कलंक * रहे जीव तो अधम अशंक ॥
 सुनु सर्वज्ञ सकल अवहारी * विनु कलंक अह जनककुमारी ॥
 विधि हरिहर दिवि देखि सुहाई * पावक अवाटि अनट सब भाई ॥
 जो सुर नर मुनि स्वप्नेहु माहीं * यह चरित्र जग लखि हरषाहीं ॥
 दोहा--ते शठ रौरव नरक महँ, कोटि कल्प करि वास ।

रहहिं कल्पशत रोग बस, भोगहिं नरक निवास ॥१५॥

रिस रुख देखि नयन करि तीन्हे * आयहु भरत लपण कर पीन्हे ॥
 सुनु सौमित्र छाँड़ि हठ मोचू * जगभल कहे कहौ किन पोचू ॥
 तजि आज्ञा प्रत्युत्तर करिहौ * मोहिबिन मोच जन्म भर भरिहौ ॥
 जनकसुता रथ तुरत चढ़ाई * गंग ममीप फिरहु पहुँचाई ॥
 अति गहवर बन जहाँ न कोई * छाँड़हु तात यतन कर सोई ॥
 फेरहु तुम मति वचन उदासा * मरण ठानकर चलेउ निरामा ॥
 सुभग विमान भीय बैठारी * भूषण पट बहु धरे मँवारी ॥
 सुधा सरस पकवान बनावा * जो कछुवाँछत सो फल पावा ॥
 अति आनंद मन चली जानकी * अतिशय प्रिय करुणानिधानकी ॥

दोहा--विवरण लपण निहारिकर, शोचविकल भइ बाल ।

हृदय विचार न कहि सकति, मणिबिनुव्याकुलव्याल ॥१६॥
 उत्तरि देवसरि यान सुहावा * देखति घनवन मन भय पावा ॥

कारण अपर जान भयभीता ॥ बोली वचन मनोहर सीता ॥
 दीखत नहीं मुनिनकर धामा ॥ जात कहाँ प्रिय अनुज सकामा ॥
 खग मृग केहरि विपथर व्याला ॥ करि वराह वृक बाध कराला ॥
 कोउ मुनि मिलतन आवत जाता ॥ निकसत प्राण तात मम गाता ॥
 सीय विकल लखि मनहि अहीशा ॥ कीन्ह कहा हरि विधि गौरीशा ॥
 भूछित रथमे हुइ विकराला ॥ गिरत भूमि तव आप भँभाला ॥
 मिय विलोकि मन धीरज आना ॥ तृषा विना जल जैयत प्राणा ॥

दोहा—धरणि सुता व्याकुल निरखि, प्राण कंठगत जान ।

तजन चहत तनुशेष तव, धृक धृक जीवन प्राण ॥१७॥

प्राण विना लक्ष्मण कहँ देखा ॥ गगन गिरा तव भई विशेषा ॥
 सुनु मौमित्र जाहु सिय त्यागी ॥ जनकपुत्रिका जियहि सुभागी ॥
 ब्रह्म गिरा मुनि धीरज कीन्हा ॥ हाथ जोरि परिदक्षिण दीन्हा ॥
 लै रथ चरण वन्दि मिय केरे ॥ चले अवधपुर त्राम घनेरे ॥
 जागी मिया सकल दिशि देखा ॥ नहिं रथ अश्व नहीं कहिं शेषा ॥
 रहे प्रथम दुख महिहें प्राणा ॥ पुनि सोइ चाहत करन पयाना ॥
 करुणा करत विपिन अति भारी ॥ बालमीकि आये बन चारी ॥
 पुत्री बालमीक कह ज्ञानी ॥ बन आवन निज चरित वखानी ॥

दोहा—मुनि पुत्री मैं जनककी, रामप्रिया जगजान ।

त्यागन हेतु न जानु कलु, विधिगति अति बलवान ॥१८॥

देवर लपण गये पहुँचाई ॥ तव सब हेतु लख्यों मुनिराई ॥
 सुनु सीता मिथिलापति मोरा ॥ परम शिष्य मम अरु पितु तोरा ॥
 चिन्ता अत्र जनि करसि कुमारी ॥ मिलिहहिं तोहिं शेष हितकारी ॥
 सादर पर्णकुटी मिय आनी ॥ करि मज्जन पुनि मव गति जानी ॥
 विविध भाँति मुनि धीरज दीन्हा ॥ मिय तव सुरसरि मज्जन कीन्हा ॥
 सुमिरि राम मूरति उर राखी ॥ दीने फल सुन्दर शुभ भाखी ॥
 मुनिवर कथा अनेक प्रमंगा ॥ कहे सुने मिय मंग विहंगा ॥
 ज्ञान अनेक प्रकार दृढावा ॥ लक्ष्मण अवध सुनो जव आवा ॥

छन्द—आये जु लक्ष्मण त्यागि सीतहिं विकल निज आश्रम गये ।

बहुभाँति रोवत मातु सन सिय त्याग दारुण दुख दये ॥

सुनि महामि मूर्च्छित मातु बाणी विकल फणिजिमि मणि गये ।
 इहि भाँति व्याकुल विकल पति कौशलहिं अतिही दुख भये ॥
 रोदति वदति बहु भाँति को कहँ विपति यह दारुन अये ।
 सुनि शोर रावर सहित लक्ष्मण राम निज मंदिर गये ॥
 निज ज्ञान दे समभाय तोहि मव खुले पट अन्तर नये ।
 हम जानि तोहि सुत मान प्रभु जग भूल भ्रम फंदन भये ॥
 अब कृपा करि जगदीश स्वामी देहु भक्ति सुहावनी ।
 जेहि खोज मुनि योगीश तापस परम अविचल पावनी ॥
 बर चह्यो मोइ सोइ दियो मातुहिं कारुणिक रघुपति तवै ।
 मन शोध कर निज योग पावक तजी तनु सादर सबै ॥

दोहा--योग अग्नि तनु भस्म करि, सकल गई पति धाम ।

भरत शत्रुसूदन लपन, शोक भवन श्रीराम ॥ १६ ॥

विधिवत किये कर्म श्रुति गाये * प्रभुते गुरु सादर करवाये ॥
 दान दीन्ह पुनि कोटि प्रकारा * को अस कवि जग वरणै पारा ॥
 धेनु बसन हाटक मणि हीरा * हय गज गोमुक्ता वर चीरा ॥
 पुनि परलोक हेतु धन धामा * दिये किये द्विज पूरण कामा ॥
 रही न चाह याचकन केरी * रंक धनद पदवी जनु हेरी ॥
 वेद पढ़हिं द्विज देहिं अशीशा * चिरजीवहु कोशलपुर ईशा ॥
 राम दान दे सब विधि तोषे * भये निवृत्त काज करि चोखे ॥
 गृह द्विज याचक सकल सिधाये * अमित प्रकार राम सुख पाये ॥
 विप्र दंड तापस वध कीन्हा * सुरपुर वास मातु कहँ दीन्हा ॥

दोहा-करहु अजय मख यज्ञ पुनि, अश्वमेध जगजान ।

कलुपसकल संताप हर, अंगदादि हनुमान ॥ २० ॥

एक वार गुरु गृह अवधेशा * गये अनुज मँग सचिव स्वगेशा ॥
 कीन्हा दण्डवत पद शिरनाई * सादर हर्षि मिले मुनिगाई ॥
 पूछा कुशल देखि मृदु गाता * कुशल देखि तव पद जल जाता ॥
 गुरु पद बंदि द्विजन सिरनाई * बैठे अमित अर्शापहिं पाई ॥
 कहत पुराण नवल इतिहासा * मुनत कृपानिधि परम हुलासा ॥

भाइन सहित अमित सुख दीन्हा * मुनिते लखेउ प्रेम कर चीन्हा ॥
 दोउ कर जोरि सच्चिदानन्दा * बोले बचन भानुकुलचन्दा ॥
 नाथ चरण तव सकल प्रसादा * भे जग विदित मोर मर्यादा ॥
 दोहा--समय समुंभि करुणा यतन, सादर बयन बहोरि ।

प्रभु अन्तर्यामी करहु, सफल कामना मोरि ॥२१॥

तव प्रमाद जग यज्ञ अनेका * कीन्हे अधिक एक ते एका ॥
 नाथ सकल पुरजन मन कहहीं * देखन अश्वमेध अब चहहीं ॥
 जस कछु आयसु दीजिय नाथा * सो मैं करव नाय पद माथा ॥
 तनु पुलके मुनि बचन सर्प्राती * कस न कहौ तुम सुन्दर नीती ॥
 पूजहिं मन अभिलाष तुम्हारी * उठव भरत अब करव तयारी ॥
 सुनि मुनि बचन भरत रिपुदमनू * हर्षि सचिव लक्ष्मण गृह गमनू ॥
 विविध प्रकार चरण करि सेवा * चले भरत भंग सब महिदेवा ॥

दोहा--सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बोलाय ।

हाटवाट पुरद्वार गृह, रचहु बितान बनाय ॥२२॥

चले सकल किंकर सुनि बानी * सुनत बचन हरषीं सब रानी ॥
 रचे बितान अनेकन भारी * देखि अवध विधि विलपत भारी ॥
 लगे सवारन गज रथ बाजी * सुनि सुर गगन दुंदुभी बाजी ॥
 तुरत सचिव चर विपुल बुलाये * कहि जयजीव शीश तिननाये ॥
 जाहु मुनिन्हके आश्रम ताहीं * सादर निवत देहु सब पाहीं ॥
 वहाँ राम पूछेउ गुरु देवा * आज्ञा देउ करौं सोइ सेवा ॥
 प्रभु मनकी गति मुनिवर जानी * बोले अति सनेह वर बानी ॥
 पठवहु दूत जनकपुर आजू * आवहिं जनक समेत समाजू ॥

दोहा--सुनहु राम रघुवंशमणि, न्योति सकल पुर जाति ।

वरुण कुबेर इन्द्रयम, पुनि मुनिवर सब ज्ञाति ॥ २३ ॥

गुरु समेत प्रभु अवधहिं आये * देखि बनाव अमित सुख पाये ॥
 जनक नगर चर तुरत पठाये * देश देश के नृपति बुलाये ॥
 जामवन्त सुग्रीव विभीषण * अरु नलनील द्विविद कुलभूषण ॥
 आये सब जहँ रामकृपाला * वरुण कुबेर इन्द्र यम काला ॥

चढ़ि विमान सुरनारि सिहाहीं * करहिं गान कलकंठ लजाहीं ॥
 आये मुनिवर यूथ घनरे * देहिं कृपानिधि सुन्दर डेरे ॥
 शशि हरिहर विधि रवि सनकादी * आये सुर जे परम अनादी ॥
 विश्वामित्र संग मुनि झारी * सहस सात रिषि इच्छा चारी ॥
 दोह-आये ऋषि भृगु अंगिरा, नारद व्यास अगस्त्य ।

नाना यथप मुनि सकल, देवल सहित पुलस्त्य ॥२४॥

मख थल वर अति देखि सुहाये * नाना भाँति देखि सुख पाये ॥
 मिथिलापुर जे दूत पठाये * देखि नगर बासिन मन भाये ॥
 द्वारपाल सब खबरि जनाई * अवध नगर सन पाती आई ॥
 सुनि विदेह सहसा उठि धाये * तनमन पुलकि नयन जल छाये ॥
 शिथिल आपु उठि द्वारे आये * देखि दूत अतिशय सुख पाये ॥
 कहहु कुशल रघुपति कर भाई * गद्गद कंठ न कछु कहि जाई ॥
 दोहा-भूप्रेम तिहि समयजस, तस न कहहिं मति धीर ।

तुलसी भयउ उछाहवस, जय जय शब्द गँभीर ॥२५॥

बाँचत प्रीति न हृदय समानी * चरवर बोलि कही हँसि बानी ॥
 नगर ग्राम पुर मंगल माजे * अमित प्रकार वाजने वाजे ॥
 सचिव बोलि नृप पाती दीन्ही * उठि करजोरि विनय कर लीन्ही ॥
 पढ़ी सचिव अति प्रेमानन्दा * सुमिरि राम कोशलपुरचन्दा ॥
 घरघर खबरि व्यापि क्षण माहीं * मंगल कलश माजि सब पाहीं ॥
 भयो अनंद न जाय बखाना * कीन्हें विविध भाँति नृप दाना ॥
 धरि तन देव अमित नभवासी * आये भूप नगर सुखरासी ॥
 कहहिं बचन नृप के हितकारी * चलो अवध सब काज विमारी ॥
 दोहा-कहि कहि सुर सादर चले, बाहन रचे बनाय ।

जारि युगल कर मुकुटमणि, अस्तुति करहिं सुभाय ॥२६॥

छन्द-पद सुमिरि करुणाकन्द रघुकुल चन्द दशरथनायकं ।
 श्री सहित अनुज समेत सुस्थिर वमहु मम उरलायकं ॥
 अंभोज नयन विशाल भाल कृपालु दशरथनंदनं ।
 शत कोटि मार उदार शोभा अतुल बल महिमंडनं ॥

तूण कटि शुभ कर शरामन कपट मृग मदगंजनं ।
 वैदेहि अनुज ममेत कृपानिकेत जन मनरंजनं ॥
 मम हृदय वसहु निवास करि करुणायतन करुणामयं ।
 महिमा न कोउ जन जान सुनु हरियान ज्ञान विशालयं ॥
 सोइ हेतु करि वृषकेतु प्रभु खरदूषणादि निकंदनं ।
 नर अंध पामर कामवश मन भजहिं नहिं रघुनंदनं ॥
 नव ललित लीला मवहिं जेहि उर तासु उर धरणीधरं ।
 कहि सक न शारद शेष नारद जान किमि जन वापुरं ॥
 सोइ आन तुलसी दास निज उर शरण अब काकी गहै ।
 सुख पाय मन वच काय नहिं गति दूसरी सपनेहु लहै ॥
 सब कुशल पूछि महीप सादर विहँसि आनँद उर छयो ।
 मन भाय रुचिर बनाय विधिवत दान बहु विप्रन दयो ॥
 गज वाजि भूषण भूमि वस्तु अनेक विधि अवको गनै ।
 इकवार लै नृपद्वार दीन्हीं कहहु कवि कैसे भनै ॥

दोहा-पूजे विविध प्रकार नृप, सादर दूत हँकारि ।

गुरुगृह गवनेउ सुकुटमणि, पाय पदारथ चारि ॥२७॥

सकल कथा महिपाल सुनाई * शतानन्द आनन्द अघाई ॥
 चलहु नृपति मख देखहिं जाई * साजहु जाय सकल कटकई ॥
 करि विनती नृप मन्दिर आई * बाँचि पत्रिका सकल सुनाई ॥
 आनँद युत सब करो वधाई * दिए दान महिदेव बुलाई ॥
 याचक सकल अयाचक कीन्हें * सादर बोलि युगल चर लीन्हें ॥
 विलग विलग सब पूछहिं वामा * सुने राम के पूरण कामा ॥

छन्द-सब काम पूरण रामके सुनि विपुल वाजन वाजहीं ।
 पुर द्वार घर रग्वार राखे सैन्य भट सब साजहीं ॥
 दश सहस्र सिंधुर षष्ठि शत रथ वाजि वर्णत नाह वनै ।
 जगमगत जीन जड़ाव रवि मणि देखि कवि कैसे भनै ॥
 चढ़ि शूर प्रबल प्रवीन जे असि चलत सब सादर भये ।
 सुखपाल परम विशाल युग चढ़ि गुरुहिं लै आदर नये ॥

महि डोल धसकत कमठ अहि दल देखि अमित विदेहको ।

रथ यूथ पदचर अमित वर्णहिं जगत अस कवि मृदको ।

दोहा--चलेउ राव मुनिगण सहित, विपुल निसान बजाय ।

प्रात तीसरे पहर सोइ, अवध नगर नियराय ॥२८॥

पुर बाहिर मरथु शुचि तीरा * वाम दीन्ह हर्षित रघुवीरा ॥

मौपि अनुज कहै राम समाजू * आये प्रभु जहँ नृपमणि राजू ॥

मिति पुनि नृपति निकट वैठारे * गद्गद गिरा सुवचन उचारे ॥

बदन मथंक निरखि मव गाता * आनंद मगन न हृदय समाता ॥

प्रभु विनीत सबही सेवकाई * सचिव भरत पुनि लिये बुलाई ॥

नृप शय्या सब भरत मँभारी * सुनि खगपति जस कीन्ह खरारी ॥

आय गुरुहिं सादर शिरनाई * मन भावत आशिष तिन पाई ॥

पुनि प्रभु मकल देव गुरु वंदे * अभिमत आशिष पाइ अनंदे ॥

दोहा--दश सहस्र मुनिवर सहित, आयउ प्रभु मम धाम ।

बोले बचन विनीत गुरु, मंत्र सुनहु मम राम ॥२९॥

धर्म सकल जेहि वेद बखाने * संत पुराण लोक मव जाने ॥

धिन तिय नहिं फल होय खरारा * अत्र चहिये मिथिलेशकुमारी ॥

सुनि मुनि वचन मौन गहि रहेऊ * मत्य अमत्य न एको कहेऊ ॥

मम प्रण विरद जान मुनिराया * रहे मुकृत जेहि करहु मो दाया ॥

द्वैगुरु मिल नारद मनकादी * वचन कहेउ सुन परम अनारी ॥

कनक जड़ित मणि सुंदर वाला * रचि मियरूप सुशील विशाला ॥

अंग अंग मव भूषण साजे * तासु रूप लखि रतिपति लाजे ॥

सहसा लखि न सकहिं नर नारी * भिय देखेउँ मव अचरज भारी ॥

दोहा--तेहि अवसर शोभा अमित, को कवि वरणै पार ।

जगदाधार कृपाल प्रभु, कीन्ह चरित्र अपार ॥३०॥

जटित कनक सुन्दर मृगझाला * तेहि आमन आसीन कृपाला ॥

सिया सहित लखि सुर मुसुकाही * कीन्ह प्रणाम मवन हरपाही ॥

भीर अपार देखि गुरु ज्ञानी * ऋधिमिधिवोलि मकल सनमानी ॥

कहा जाय जो उचित मो करहु * जो जेहि चहिय सकल अनुमरहु ॥

सुनि रजाय रघुपति रुख पाई * रचे कोटि गृह विधिहि सिद्धाई ॥
 सुर सुरभी सुरतरु सुख खानी * शारद शेष न सकहिं बखानी ॥
 पुर गृह वाहर गली अटारी * भरि सुगंध सब रची सँवारी ॥
 रहे तहाँ दिशिपाल अनेका * जे परमारथ निपुण विवेका ॥

छन्द-जे निपुण परम विवेक पावक भरत लै राखे तेही ।
 निज भाग्य प्रबल सराह निदरहिं धनदकी पदवी सही ॥
 आये त्रिलोकी नाग खग सुर असुर जे विधि ने रचे ।
 सन्मानि सकल सनेह सादर राम सन को नहिं वचे ॥

दोहा-युग सहस्र जो विप्रवर, सुन्दर परम प्रवीन ।

जानहिं श्रुतिकर मत सकल, रहिमख संग अधीन ॥३१॥

मकर मास ऋतु शिशिर सुहाई * मख मंडप बैठे रघुराई ॥
 तव बोले गुरु वचन सुहाये * आनहु बाजि जो वेद वताये ॥
 लक्ष्मण सुनि गुरु वचन अनंदे * वार वार पद पंकज बंदे ॥
 हयशाला सादर चलि आये * विविध विभूषण तेहि पहिराये ॥
 श्वेत वर्ण सुन्दर श्रुति कारे * रवि हय निदरि मनोज सँवारे ॥
 जीन जराव न जाय बखाना * चढ़ि रवि रथ आवत जग जाना ॥
 माथे मोर पक्ष मणि लागे * सोइ नभ नखत देव अनुरागे ॥
 सेवक चारु पाटमय डोरी * दामिनि दमकि निपट अति थोरी ॥

दोहा-पट सहस्र दश वीरवर, रामानुज रणधीर ।

मध्य ताहि आनहु तहाँ, जहाँ राम रघुवीर ॥३२॥

पूजेहु हय प्रभु जय जग हेतू * जस कछु कहा गाधिकुलकेतू ॥
 दीन्ह विविध विधि दान अनेका * लिख्यो मंत्र सोइ कर अभिषेका ॥
 एक वार कोशलपुर माहीं * अरिदल दलन सुरेश सकाहा ॥
 जिहिबल होइ गह्यो सोइ बाजी * देहु दंड वन जाहु कि भाजी ॥
 लखि वाँधो हय शीश सँभारी * यह सुन वचन चले मुनि चारी ॥
 भार्गव आदि सकल मुनि संगी * रहे जहँ रघुकुल कमल पतंगा ॥
 कथा सकल लवणासुर केरी * मुनिन त्रास जिन दीन्ह घनेरी ॥
 सुनि ऋषि वचन नयन जल छाये * बिहँसि राम निज त्रौण मँगाये ॥

दोहा-रिपुसूदनहिं दीन्ह सोइ, बाण अमोघ कराल ।

मंत्र मोर पढ़ ताहि हति, जीतहु सकल भुवाल ॥३३॥

बहुरि विभीषण राम बुलाये * सादर आय माथ तिन नाये ॥

लवणासुर के चरित अपारा * पूछेउ दिनमणि बंश उदारा ॥

करयुग जोरि निशाचर नाहा * मत्य कहौं अब सुनु अवगाहा ॥

भगनि विमात्र नाथ सोइ मोरी * कुंभ निशा तेहि नाग बहोरी ॥

मधु दानव कहँ रावण दीन्ही * बहु विनती कर तेहि तब लीन्ही ॥

तनय तासु लवणासुर भयऊ * शिव सेवा सादर मन दयऊ ॥

अगम तासु तप शंकर जाना * दीन्ह त्रिशूल सुकृपानिधाना ॥

जेहिकर रहे अस्र यह भारी * चौदह भुवन जीति सब झारी ॥

दोहा-तेहिवल प्रभुसो नहिं गनहिं, अपर दनुज नरनाग ।

जाति सकल बश कीन्ह सोइ, हठि पथ सबके लाग ॥३४॥

तासु चरित सुनि मन मुसकाने * रिपुहि हतहु बल दै मनमाने ॥

मैन्य संग चतुरंग बनाई * रहे माथ दोउ तनय सुहाई ॥

सुनि प्रभु वचन निशान अपारा * तीन सहस्र हने इक बारा ॥

दलक वसुधा कुंजर गाजे * दश सहस्र रथ रवि रथ लाजे ॥

पुर बाहिर सब कोन्ह सँभारी * तनय युगल लखि परमसुवारी ॥

द्वादश निशि बीते मग माहीं * पहुँच जाय यमुनतट पाहीं ॥

दिन प्रति दान देहिं बहु भाँती * प्रभुपद पूजे दिन ओ राती ॥

दोहा-रवितनया पद वंदिके, सादर पूजि पुरारि ।

चलेउ शत्रुसूदन सुमिरि, स्वामिहि राम खरारि ॥३५॥

चमूचपल अति सुभट जुझारा * धेरयो नगर वीर बरियारा ॥

विपुल निशान हने तेहि काला * सुनि निशिचर पति गर्व विशाला ॥

षट सहस्र दम शूर जुझारा * लवणासुर संग अनी अपारा ॥

सुभट प्रचारत गज रथ आवा * देखि कटक निज अतिमुख पावा ॥

मारहु खावहु नृप धरि बाँधहु * जेहि जयहोय जतन सोइ साधहु ॥

अस कहि सन्मुख सैन्य चलाई * कज्जलगिरि जनु आँधी आई ॥

मारु शब्द मुनन भट गाजहिं * विपुल वाजने चहुँदिशि वाजहिं ॥

निज प्रभु कहि जय जोरी जानी * हरपि भिरे भट मन हठ ठानी ॥

छन्द-हठ ठानि प्रबल प्रवीण जे अमि भिरे अति रिपु प्रबल से ।

इक मल्ल युद्ध मराहि रोकहिं एक एक न कर स्वमे ॥

शर शक्ति तोमर शूल परशु कृपाण शूर चलावहीं ।

कर चरण शिर हत तीर धारहिं भूमि जान न पावहीं ॥

भट गिरहिं पुनि उठि लरहिं धरके करहिं माया अतिवनी ।

प्रभु तनय सुन्दर वीर बाँके हनहिं रिपु निश्चर अनी ॥

देखहिं परस्पर युद्ध कौतुक मुभट एकहिं इक हनै ।

सजि कोटि रथ सुर आय नभ पथ सुमन बरपा करि भनै ॥

दोहा-विचलत अनी विलोकि निज, लवणासुर बरबंड ।

संग तनय मातंगभट, दूसर केतु अखंड ॥३६॥

प्रभु सुतज्येष्ठ सुबाहु विशाला * भिरा मतंग हृदय जनु काला ॥

यूपकेतु अरु केतु प्रचारी * लड़हिं सुखेन न मानहिं हारी ॥

लवणासुर रिपु अति बल भारी * कौतुक करहिं प्रचारि प्रचारो ॥

अनी समूह जानि निज जोरी * अस्त्र शस्त्र गहि भिरे बहोरी ॥

विपम युद्ध लखि देव मकाने * पूछेउ सुरगुरु कहि मुमुकाने ॥

जनि हिय मोच अपरमित करहु * राम प्रताप सुभिरि उर धरहु ॥

यूपकेतु करि कोप अपारा * हति रिपुकेतु खंड महि डारा ॥

इहाँ सुबाहु मत्त गहि मारा * कर पद काटि अवनि पर डारा ॥

छंद-महि डारि कर पद शीश आतुर तूण शर प्रविशत भये ।

रविवंश के अवतंस दोनों समर महि राजत भये ॥

सुनि मरण युगयुत विकल निशिचर भूमि पर घुमित गिरयो ।

पुनि जागि शूल मँभार प्रभु के समर सन्मुख सो भिरयो ॥

दोउ प्रबल वीर प्रताप निशिचर सैन्य दुहु दिशि मुरि चली ।

शिर बाहु चरण उड़ात नभ पथ योगिनी आनंद भली ॥

बहु रुधिर मज्जन करहिं मादर गुहहिं नर शिर मालिका ।

आनंद ह्वे मन मुदित गावहिं गीत खेचर बालिका ॥

धुनि पड़हिं शंख मृदंग की सुनि शूर हर्ष बढ़ावहीं ।
गति लेत निरतत प्रेत तिय शिर माल हर्ष बढ़ावहीं ॥
कहुँ करत वान प्रमाण नय कहुँ भरी शोणित शाकिनी ।
सब मद माँस अहार कर मन मुदित बोलहिं डाकिनी ॥

दोहा-मारै रघुवर बार बहु, गिरे समर रणधीर ।

क्षण इक निशिचर बध निरखि, अन्तर हुइ बलवीर ॥३७॥
करि छल प्रगट सो विविध वरूथा * अस्र शस्त्र लै सब सुरयूथा ॥
धाए अज अरु शिव सनकादी * जे मुनि अपर कहे श्रुतिवादी ॥
शक्ति शूल अमि चर्म सुहाई * गदा परशु धनु बाण बनाई ॥
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं * लरत न भट विस्मित होइ रहहीं ॥
निश्चर प्रबल भए रघुनाथा * कौतुक धीर मले निज हाथा ॥
मैन्य विकल लखि नारद आप * समाचार सब कह समुझाये ॥
रिपुसूदन प्रभु विशिख सँभारी * जोरि समर सुमिरे त्रिपुरारी ॥
जिमि तम अँचै तरणि गो सोई * समर अमर नहिं दीमै कोई ॥
दोहा--मंत्र प्रेरि चल कोटि शर, रहे जहँ तहँ नभ छाये ।

मनहुँ बलाहक प्रबल वसु, मारुत देखि विलाय ॥३८॥

सुर समाज कतहुँ नहिं देखा * चलेहु सुवाहु केतु जनु वेपा ॥
खल सम्हारु गहु शूल सुरारी * असकहि गदा कोप उर मारी ॥
सहि न सका सोइ तेज अपारा * मूर्च्छित अवनि परा विकरारा ॥
निज पति विकल देखि भटभारी * धायें बहुकर शस्त्र सँभारी ॥
कैटभ नाम वीर बलवाना * मूर्च्छित लवणामुर मन जाना ॥
तीन सहस्र लिये रण गाढ़े * आइ सुवाहु मामुहे ठाढ़े ॥
कटुक वचन कहि आड़ेमि वाना * ताहि काटि प्रभु तीव्र कृपाना ॥
सोरठा-मारैसि हृदय सँभारि, गिरे जपत करुणायतन ।

मूर्च्छित बेर पुकारिं, रामचन्द्र दिनमणि तिलक ॥ ३ ॥

तव विमियान शूल लै धावा * घूपकेतु के मन्मुख आवा ॥
मूर्च्छित बंधु सुवाहु विलोकी * भे रिस अमित गहे नहिं गेकी ॥

कठिन बाण कर क्रोध अपारा * छाँड़िंमि तीनि सहस इकवारा ॥
 ताहि विकल करि अनुज समीपा * आतुर आये निज कुल दीपा ॥
 लाग्यो शूल देख मन माहीं * परयो अवनितल सुधि कछु नाहीं ॥
 खैच शूल तनु बाहिर कीन्हा * राम नाम वर औषधि दीन्हा ॥
 उठि शुचि अंग अनुज के मंगा * लीन्ह बिहँमि धनुबाण निपंगा ॥
 आय समर महि सुभट प्रचारे * वाणते विपुल देव अरि मारे ॥
 मूर्च्छागत कैटभ बलवाना * रथ चढ़ाय तेहि तुरत सिधाना ॥
 दोहो--कर उपाय रथ राखि तेहि, पठय भवन रणधीर ।

आय समर गर्जत भयो, संग महाबल वीर ॥ ३६ ॥

जागा निशिचर देखि लड़ाई * पठयसि कुमक संग निज भाई ॥
 शूरवीर जेहि काल सकाई * हारेउ समर सुनहु खगराई ॥
 जाना कैटभ जाम्यक आवा * समर धीर नहिं चलहिं चलावा ॥
 नायउ माथ आनि कर जोरी * तात समर रुचि पूजेउ मोरी ॥
 रावण रिपु लघु भ्राता जानू * तनय तासु बल रूप निधानू ॥
 कोटिन शूर समर हम मारे * बालक नृपति निरखि हिय हारे ॥
 रिपु गुण सुनि कर हृदय कलापू * पावहिं मोह जानि जिय आपू ॥
 रवि तनया महि सैन्यहि डारूँ * तनय ममेत अनुज रिपु मारूँ ॥
 लेकर गदा अनी विचलाई * घेर रहे निशिचर समुदाई ॥
 भागा रथ आनहु बलवाना * ताहि चढ़ाय उपाय विधाना ॥

छन्द--रिपु अनुज मारूँ मैन्य यमुनहिं डारि नृप शिर नायऊ ।

तज सोच सैन मँभार चले भट वंगि जो अरि पायऊ ॥

दोउ मत्त गर्व विशाल निशिचर आय रण गर्जत भये ।

इत जूपकेतु सुबाहु शर धनु हाथ लै आतुर गये ॥

भट भिरे निज निज जयति कह निज जान जोरी समर की ।

शिर कटत खंडत चरण योगिनि खात बालक बालिकी ॥

हठि गीध जम्बुक काक शोणित पिवहिं अति सुख पावहीं ।

बहु दान देहिं अनेक मनुमहँ बिहँसि मंगल गावहीं ॥

दोहा--भिरे समर सहरोप अति, फिरे आकरे कर ।

लागे लोहे रूठ रह, समर धीर वरशूर ॥ ४० ॥

कहहिं शूर किमि होत न टाढ़े ❀ फिरे लजाय क्रोध कर गाढ़े ॥
 भिरे प्रचार सुभट समुदाई ❀ भयो युद्ध तेहि वरणि न जाई ॥
 वरषहिं ममर शूर शर कैमे ❀ प्राविट ममय जलद जल जैमे ॥
 हय पग उठे धूर नभ छाई ❀ भयो प्रदोष मुनहु खगराई ॥
 समर देखि रिपु प्रबल प्रभाये ❀ प्रभु ममीप मादर सुत आये ॥
 देख तनय बल विपुल विशाला ❀ रिपुहन हर्ष मनुज सुर व्याला ॥
 यातुधान बल बुद्धि गँवाई ❀ निजपुर गये गज यश पाई ॥
 निशि निशिचर मव वात विचारी ❀ होत प्रान पुनि लगी गुहारी ॥
 दोहा--साजि बाजि गज बाहनहिं, गहगह हने निशान ।

आयो समर सकोप अति, लवणासुर बलवान ॥४१॥

शिवहिं सुमिरि लै शूल विशाला ❀ रिपु बल परयो मनहुँ यम काला ॥
 द्विनक माहिं मारे बहु योधा ❀ चला सकोप मनुज करि क्रोधा ॥
 आवत शूल हन्यो प्रभु छाती ❀ बुर्मित गिरयो धरणिपर घाती ॥
 मूर्च्छित देखि खड्ग लै धावा ❀ निरखि मुवाहु क्रोध उर धावा ॥
 प्रबल गदा रथ मारथि भंजा ❀ त्वहँमि महाबल रिपु दलगंजा ॥
 रथ विहीन व्याकुल मन माहा ❀ मूर्च्छित परयो अवनि मुधि नाहीं ॥
 पुनि उठि गर्जि सकोप सुरारी ❀ अस्त्र मँभारि कोप करि भागी ॥
 उठे शत्रुहन मन अनुमाने ❀ मादर मव हियते मनमाने ॥
 विस्मित विकल देख सब जाने ❀ रामवाण अति मादर आने ॥
 दोहा--सुमिरि अवधपति चरण युग, छाड़े युग नाराच ।

पन्यो अवनि तनु भिन्न ह्वै, व्याकुल विकट पिशाच ॥४२॥

तासु मरण मुनि मव सुर यूथा ❀ चढ़ि विमान नभ सकल वरुथा ॥
 बाजहिं दुंदुभि वर्षहिं फूला ❀ आज नाथ बीते मव शूला ॥
 देहिं अशीष देव धुनि करहीं ❀ जयति मंत्र कहि आशिष वरहीं ॥
 यातुधान पति हीन विलोकी ❀ कैटभ जाम्ब नहीं रिपु गेकी ॥
 करि किलकारि गर्जि अति घोरा ❀ शिला एक धारी बहु जारा ॥

शर शत शैल सुबाहु प्रचारी * काटी दुष्ट भुजा महि डारी ॥
 वदन पमारि ताहि तक धावा * देव सुबाहु प्रबल पहुँ आवा ॥
 खेंचि धनुष तव श्रवण प्रयंता * अति कराल शर छाँड़ि तुरंता ॥
 काटि शीश तेहि भूमि गिरावा * सुनामीर आतुर चलि आवा ॥
 जोरि युगल कर अति अनुरागे * बोले वचन प्रेम रम पागे ॥
 हमहि सहित सुर कीन्ह सनाथा * अस्तुति योग नहीं हम ताता ॥
 सुरपति सुर लखि प्रभु लघुभाई * कीन्ह प्रणाम माथ महि नाई ॥
 अस्तुति विनय शक्र तव कीन्ही * वार वार बहु आशिप दीन्ही ॥
 दोहा--देवन सहित सुदेव गुरु, आये जहँ मखधाम ।

समाचार सादर सकल, कहे सवन को नाम ॥४३॥

तहँ युग नगर रचें अति रुरे * राखे तनय युगल बल पूरे ॥
 मथुरा नाम जगत यश जाना * दूमरि विश्व जो वेद बखाना ॥
 ज्येष्ठ तनय बल बुद्धि विशाला * नाम सुबाहु विदित महिपाला ॥
 राखेउ यमुनातट बल भूरी * विदित नगर पश्चिम दिशि दूरी ॥
 यूपकेतु पुनि साथ रखावा * राजनीति दोउ सुत समुझावा ॥
 सौंपि नगर बहु आशिप दीना * नृपमणि गवन विजयकहँ कीना ॥
 चिरंजीव करि हन्यो निशाना * दक्षिण अश्व चला जग जाना ॥
 मचिव समेत राखि सुत संगे * उतरे सय जल यमुन तरंगा ॥
 दोहा--रवितनया पद बन्दिके, चली अनी हय संग ।

हापित शूर समूह अति, चली सैन्य चतुरंग ॥४४॥

बालमीकि थल सैन्य समेता * कानन मधन मुनीश निकेता ॥
 मियमुत युगल वीर बरवंडा * भुजबल अमित दिनेश प्रचंडा ॥
 वीर बली हय देख्यो आई * पत्र बाँधो शिर बाँधो ताई ॥
 कटि कमि तूण हाथ धनु तीरा * समर हेतु बैठे बल वीरा ॥
 शूर सहस्र साठि हय साथे * आय गये तहँ रघुकुलनाथा ॥
 तहँ तरु बाँध्यो वाजि विलोकी * बालक जानि सकल रिमि रोकी ॥
 देहु तुरंग घर जाहु सुहाये * धन्य मातु पितु जिन्ह तुम जाये ॥
 माँगहु भीख समर चढ़ि भाई * क्षत्रिय कुलहिं कलंक लगाई ॥

छंद--जनि क्षत्रिय कुलहि कलंक लावहु समर शूर सुहावने ।
 बल हीन तुरंग प्रवीन ब्राह्म्यो धरा विनु भट जानने ॥
 सुनि वचन कटुक कठोर बालक जानि भट धावत भये ।
 शर तानि एकहिं बार हँसि हने तनु जर जर भये ॥
 महि पेर पुनि कछु भिरे योधा जाय रिपुहन सो कहा ।
 पुनि बाल हत संगम सैन्यहि बाजि लै रणमह रहा ॥
 सुनि कोप करि अति शत्रुहन तब सैन्य लै धावत भयो ।
 रण माहि गाजत वीर बाँके कोप लखि लज्जित भयो ॥२१॥

सोरठा--सुनि मुनि बालमराल, देहु अश्वतजिकोप निज ।

पूज तुमहि तेहि काल, करिहहिं जन्म सफल प्रभु ॥४॥

कौन नाम नृप किहि पुर बाशी * फिरहु विपिन संग सैन्य प्रकाशी ॥
 छँडेउ बाजि हेतु किहि लागी * लिख्यो पत्र बाँध्यो भय त्यागी ॥
 नहिं तव तनु बल पौरुष भाई * छँडेहु पत्र बाजि गृह जाई ॥
 सुनि रिपुहन कटु गिरा लजाने * गहहु अस्त्र अस कहि मुसकाने ॥
 हमहिं प्रचारत नृप बल भारी * डरपहिं सिंह बाजते तारी ॥
 असकहि धनुष बाण कर लीना * मुनिवर विनय चरण शिर दीना ॥
 मारोमि रथ मारथी तुरंगा * कोटिन बाण हने मव अंगा ॥
 करि मूर्च्छित नृप कटक सँहारा * खाहिं माँस अति गीध करारा ॥
 दो०--एकहिं एक प्रचार कर, हने सकल रणशूर ।

आये तव रघुवीर पहुँ, कायर करनी धूर ॥४५॥

पूछेउ सकल भानुकुलनाथा * रिपुके मवन कहे गुण गाथा ॥
 मुनि बालक दोउ कटक सँहारी * रिपुहन आदि समर महँ डारी ॥
 रिपु बालक सुनि विकल खरारी * विकल होय पुनि कहेउ पुकारी ॥
 लक्ष्मण मंग जाउ दोउ भाई * मुनि बालक बाँध्यो वरियाई ॥
 मारहु जनि आनहु पुरमाहीं * ऋषि सुत बँधन उचित न काहीं ॥
 चलयो शेष संग सैन्य अपारा * आयउ तुरत ममर जेहि मारा ॥
 लै घर जीव जाहु मुनि बालक * दिनकर वंश देव द्विज पालक ॥
 आँखिन ओट होहु अब ताता * लखि अति कोप चढ़त ममगाता ॥

दोहा--सुनि लक्ष्मण के वचन तब, विहंसे बालक वीर ।

अनुज विलोकहु जाय अब, प्रबल महा रणधीर ॥४६॥

अनुज विलोकि वचन सुनि काना * धनुष चढ़ाय गहे कर बाना ॥
 वेष विलोकि वाल सुनि जाना * निजकुल मसुझि करौं मन काना ॥
 निज महाय शठ आन बुलाई * केवल तोहि हते न भलाई ॥
 सुनि कुश कठिन वाण मंधाने * काँपी पुहुमि शेष अकुलाने ॥
 छूटै विशिष रहे नभ छाई * वाण भानु प्रतिबिंब छिपाई ॥
 रिपुहिं प्रबल लखि चला सकोपी * डरा न मनहिं रहा रथ रोपी ॥
 काटे विशिष विशिष सन भाई * कौतुक करहिं विविध खगराई ॥
 झपटि गदा लक्ष्मण तब झारी * गिरेउ भूमि कुश मूर्च्छित भारी ॥
 दोहा--मूर्च्छित कुशहिं निहारि करि, धाये लव करि शोर ।

आवतही शर उर हने, गिन्यो धरनि बलजोर ॥४७॥

मल्लयुद्ध दोउ भिरे प्रचारी * लरहिं सुखेन न मानत हारी ॥
 भिरहिं उपाय विपुल बल करहीं * गिरतहि धरणि बहुरि उठि लरहीं ॥
 विकल मैन्य सब भानु सँहारी * सुमिरि कोशलाधीश खरारी ॥
 मारेउ बाण लवहिं क्षिति डारा * मूर्च्छित होय गिरेउ विकरारा ॥
 विकल विलोकि बन्धु लघुजानी * चल्यो वीर मन बहुत गलानी ॥
 लक्ष्मण देखि वीरवर धाये * धनुष वाणि धरि आगे आये ॥
 शक्रजीत अरि जे सर मारेउ * ते सब बालक काटि निवारेउ ॥

दोहा--रामानुज विस्मित विकल, देखि सकल आराति ।

सीय त्यागि उरशोच बड़, प्राण देहुँ किमि भाँति ॥४८॥

कुशकरि क्रोध विशिखसो लीने * मंत्र प्रेरि मुनिवर जे दीने ॥
 नाक रसातल भूतल माहीं * यह शर छूटै बचै कोउ नाहीं ॥
 मोहत अस्त्र नाम तेहि जाना * विष्णु महेश ब्रह्म जेहि माना ॥
 मारेसि शेष ताकि उर माहीं * परा धरणितल सुधि कछु नाहीं ॥
 चली सैन्य सब भागि अपारा * कोशलपुर महँ जाय पुकारा ॥
 करनी सकल युद्ध कै बरणी * लक्ष्मण वीर परे जिमि धरणी ॥
 जेहि बिधि कटक सकल संहारा * निज लोचन हम नाथ निहारा ॥

वय किशोर दोउ बाल अनूपा * तव प्रतिविं व मनहुँ सुर भूपा ॥
काकपक्ष शिर धरे बनाई * बालक वीर वरणि नहि जाई ॥
दोहा--भरत जोरि करके कहेउ, वचन अमिय विलखाय ।

सीयत्याग फलदीन विधि, प्रभुकहि देखेउ जाय ॥४६॥

अनुज समर महँ तुम हिय हारे * साजहु हय गज रथ मतवारे ॥
रही यज्ञ रिपु देखहु जाई * बालक रावण के दुखदाई ॥
तीव्र वचन सुनि भरत लजाने * बहुत भाँति रघुपति मनमाने ॥
प्रथम सखा सब लिये बुलाई * हनुमदादि अंगद समुदाई ॥
जाम्भवन्त कपिराज विभीषण * द्विविद मयंद नील नल भूषण ॥
रिपुहि मारिके समर भगाई * तात अनुज दोउ आनहु जाई ॥
माथ नाय सँग कटक विशाला * चले भरत उर उपजी ज्वाला ॥
शोणित सरिता समर विलोकी * डरपेउ वीर आश रण रांकी ॥
दोहा--समर सीय दोउ वीरवर, आयगये बलवान ।

देख डरे कपि भालु सब, तव बोलेउ हनुमान ॥५०॥

धन्य मातु पितु जेहि तुम जाये * पुरुष युगल घर जाहु सुहाय ॥
समर विमुख सुन भट विलखाना * कीन्ह क्रोध कह सुनु हनुमाना ॥
नहिं बल होउ जाहु घर भाई * हतौं न ठौर जान कदराई ॥
भाषै वचन भरत सुनि काना * लेहु सँभार बाल धनु वाना ॥
कटकटाय कपि भालु समूहा * लान्ह उपार प्रबल तरु जूहा ॥
एकहिं वार सकल तिन मारा * लव काटहिं तिलमम करि डारा ॥
रिपुशर काटि निमिष यकमाहीं * यथा मनोरथ खल मिटि जाहीं ॥
कर लव क्रोध वाण फटकारे * मारे वीर भूमि गज डारे ॥
छंद--गजबाजि घने रण भूमि परे * तहँ शोणित वीर वरुथ भरे ॥
लव तानि शरामन वान भले * रिपुमागर वीर प्रचार दले ॥
लगते शर है रण घायल ते * धरणी परि जाहिं विषाकुलते ॥
कहुँ भूमहिं कुंजर पुँज परे * महि लोटहिं शोणित नार भरे ॥
शर लागत गायल वीर गिरे * तहँ हाँक उठे रणधीर धरे ॥

तव शोणित की मरिता उमगी ❀ अतितीक्ष्ण धार अपार पगी ॥
तहँ योगिन भूत पिचाश घने ❀ सुख पालक कंक कराल बने ॥

पु—छंद—पल भपहि कंक कराल जहँ तहँ गीध मन प्रमुदित भये ।
तहँ प्रेत सिद्ध ममाज सोहत व्याह प्रति मंगल ठये ॥
तहँ डाकिनी मन मुदित डोलहिं शाकिनी शोणित भरी ।
दोउ करन खेंचहिं कालिका शिव प्रेत प्रति कीरति करी ॥
अन्तावरी गहि गर लपेटहिं पिवत शोणित आतुरे ।
गज खाल खेंचहिं भूत शंकर प्रेत शंकर चातुरे ॥
बैताल वीर कराल कर बर करी कर इक कर धरे ।
है भार रुधिर प्रभाव पूरण पान करत हरे हरे ॥
रघुवंश समर मराहि दुहुँ दिशि करहिं निज मन भावने ।
गज बाजि नर कपि भालु जहँ तहँ गिरे महि शुभ पावने ॥
दोउ राम तनय प्रचारि बहु विधि निकट कोउ न आवहीं ।
जे त्रसित व्याकुल त्राहि त्राहि सुवीर निज गुहरावहीं ॥

दोहा--विषम युद्ध दोउ बन्धु करि, जीति सुभट संग्राम ।

आयउ पुनि जहँ नपभरत, सुमिरि विधाता वाम ॥५१॥
कपि भालुहि घायल सब आवहिं ❀ बाणत्रास मनअति दुख पावहिं ॥
जाम्बवन्त कपिराज बुलाये ❀ अंगद हनूमान सुनि आये ॥
सब मिलि सहित निशाचर राजा ❀ धरि आनहु दोउ बाल समाजा ॥
आय जुटे कपिभालु भवानी ❀ तिनकळु प्रभुमहिमा नहिं जानी ॥
बोले कुश सुन बालि कुमारा ❀ तुम बल विदित जान संसारा ॥
पितहिं भराय मातु पर हेली ❀ सकल लाज आये तुम पंली ॥
सो फल लेहु समर महँ आजू ❀ त्यागहु सकल कलंक समाजू ॥
सुनत क्रोध अंगद उर छावा ❀ गहि गिरि एक ताहि पर धावा ॥
दोहा--आवत शैल विशाल लखि, तिलसम शरहति कोन ।
अंगद गर्व अपार अति, तस प्रभु उत्तर दीन्ह ॥५२॥

तमकि तमकि कुश बाण चलावा ❀ अंगद नील अकाश उड़ावा ॥
आवत जानि पुहुमि कपि भारी ❀ मारा बाण प्रचारि प्रचारी ॥

इतउत जानि कतहुँ नहिं पावै * पवन वहै जिमि महि नहिं आवै ॥
 छिन अकाश छिन भूतल माहीं * बोलेउ शरण शरण प्रभु पाहीं ॥
 रहेउ गर्व मोहिं कृपानिधाना * जग जगनाथ न में पहिचाना ॥
 पाँच बाण बंधेउ कपि दोऊ * दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ ॥
 परे भरत के सन्मुख जाई * दशा देखि कपि दशा भुलाई ॥
 जाम्बवन्त हनुमान कपीशा * धाये तरु गिरि लै बहु कीशा ॥
 दोहा--हँसे कुमर कुश देखि कपि, अनुजहिं कहेउ बुझाइ ।

आज समर जीते भरत, भालु कपिन्ह बिलगाइ ॥५३॥

प्रभु सुत समर कीन्ह जस करणी * निगम शेष शारद नहिं वरणी ॥
 चरित तासु सुनु शैलकुमारी * मारेउ समर शूर कपि भारी ॥
 समर धीर दोउ बाल विराजै * निरखि भालु कपिमन अतिलाजै ॥
 पेंचि धनुष गुण छाँड़ेउ सायक * कपिपति आदि हने कपिनायक ॥
 मूर्च्छित सैन परी महि माहीं * बचो न कपि घायल जो नाहीं ॥
 देखि भरत मन्त्र भेन निपाती * कोपि बाण मारेउ लव छाती ॥
 मुञ्चित विकल परेउ महिमाहीं * अतिहिविकल तनुकी सुधि नाहीं ॥
 दुखित देखि कुश अमित रिसाना * चाँप चढ़ाय बाण संधाना ॥
 श्रवण प्रयंत खेंचि धनु बीरा * भरत हृदय मारेउ शत तीरा ॥
 भयो युद्ध तहँ विविध प्रकारा * वीर बाँकुरे सुभट अपारा ॥
 दोहा--समर भूमि सोये भरत, लवहिं लीन उर लाय ।

सुमिर मातु गुरु चरण युग, रहे समर जय पाय ॥५४॥

आये खबर लेन चर चारी * भरत मैन्य तिन मकल निहारी ॥
 शोणित सरिता देखि डराने * हय गज बहे जाय स्थ जाने ॥
 देखी मरित भयंकर भारी * कठिन कराल मुनहु उरगारी ॥
 बहुतक उछरि वृद्धि पुनि जाई * चर्म मनहु कच्छप की नाई ॥
 ग्राह नक्र अप जन्तु घनरे * देखे दूर ते तिन मन फेरे ॥
 लहर तरंग वीर बहि जाहीं * घायल परे वीर लवग्राहीं ॥
 फिरे दूत कौशल पुर आयें * ममाचार मव राम सुनायें ॥
 चरवर वचन सुनत दुख पावा * त्यागेउ मखनिज कटक बनावा ॥

चले मकोप कृपालु उदारा * आयें जहँ प्रभु कटक संहारा ॥
मुनिवर बालक देखि मुहाये * शिरनवाय प्रभु निकट बुलाये ॥
दोहा-पूछेउ बाल बुलाय दोउ, कहहु मातु पितु नाम ।

देश ग्राम निज कहहु सब, बड़ जीतहु संग्राम ॥५५॥

गहहु अम्भ जिन कहहु कहानी * पूछहुँ सुजन लोग अम जानी ॥
समर बात बहु अति कदराई * छाँड़ि मोच अब करहु लराई ॥
वंश नाम विनु पूछेउ ताता * हतौं न बाण मनोहर गाता ॥
माता साय जनक की जाता * बालमीकि बोल्यो मुनि ताता ॥
पिता वंश नहिं जानहिं आजू * लवकुश नाम सुनहु रघुराजू ॥
मुनि सब कथा राखि मनमाहीं * बाल विलोकि बधव भल नाहीं ॥
आवत मुभट समूह हमारे * लरिहहिं तुममन ममर मुग्गारे ॥
असकहि अंगद नील उठावा * जाम्भवन्त कपिपतिहिं बुलावा ॥
छन्द-कपिराज अंगद जाम्भवन्तहिं बोलि निशिचर नायकं ।

हनुमान द्विविद मयंद नील मुभट जे अति लायकं ॥
तव हरण शूलहिं पाप नाशक कह्यो हँसि रघुनन्दनं ।
भरतादि रिपुहनं सहित लक्ष्मण परे खल मद गंजनं ॥
लंकेश आदिक मुभट मारे वीर जे महि मंडनं ।
ते आज बालक विप्रमो रण परे रिपुमद गंजनं ॥
कुलकान अब निज जान मुभटन शैल तरु बहु लै चले ।
दैं हूह बानर यूह पर्वत डारि पुनि रण मुरि चले ॥

दोहा-सावधान धनु बाण लै, धायउ लव बलवान ।

सन्मुख आनि विभीषणहिं, बोलेउ बहुरि रिसान ॥५६॥

मुनि शठ वन्धुहिं समर जुझाई * शत्रुहि मिलेउ निपट कदराई ॥
पिता समान बंधु बड़ तोरा * त्रिया तामु लै घर बर जोरा ॥
पापी मातु कहा इक वारा * सो पत्नी यह धर्म तुम्हारा ॥
बूड़ मरहु सागर महँ जाई * मर गर काटि अधम अन्याई ॥
समर भूमि मम सन्मुख आवा * लाज होत नहिं गाल बजावा ॥
आँखिन आगे ते हटि जाई * नहिंतो मृत्यु निकट चलि आई ॥

मनि खिसियान गदा तेहि लीनी * शरहति खंड खंड लव कीनी ॥
 सात वाण मारेउ करि क्रोधा * डगमगात शर लागत योधा ॥
 गिरत कोपकर मूल चलाया * लवतनु तडित समान समाया ॥
 दोहा-दूरिगूलकरिवंधु दोउ, लखि मारेउ करि दाप ।

जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगद करहिं बिलाप ॥ ५७ ॥

जो गिरि तरु कपि डारहिं आई * रज समान तेहि देहिं उड़ाई ॥
 निज वाणन कपि घायल कीन्हें * दो जंहि उचितसु तमफल दीन्हें ॥
 रघुकुल तिलक प्रचारित पात्रे * वीर धुरीन बने सब आत्रे ॥
 अंगद हनुमान भट भारी * ते धायें तरु शैल उपारी ॥
 डारि शैल दोउ भिरे रिमाई * खड्गन हने वीर बरिआई ॥
 कपिन कोप करि उरहत तेही * जिमि खग मशक चाटि गजदेही ॥
 इत दोनों कपि भूमि गिरायें * जामवन्त कपिपतिपहं आयें ॥
 इहि तनु कोटिन समर लड़ाई * जीते लड़े बहुत हम भाई ॥
 दोहा-ये बालक त्रिभुवन बली, जीत सकै नहिं कोय ।

चलहु प्राण दीजै समर, अजय जगत नहिं होय ॥ ५८ ॥

आवत भालु बली भट नाना * तानि शरामन शर मंधाना ॥
 हृदय तानि लव मारेउ मायक * योजन मात गयो कपिनायक ॥
 घायल भालु लपेटे जाहीं * मलयुद्ध कुश कीन्ह बनाहीं ॥
 निज बल ऋक्षहिं अवनि पछारा * दुइ कर चरण बाँधि विकरारा ॥
 हनुमंतहिं बाँच्यो लव धाई * राखेउ निकट अश्व-थल आई ॥
 रखवारी छाँड़ेउ लव वीरा * आप गयो रघुनायक तीरा ॥
 देखेउ रथ पर श्रीपति सोये * फिरेउ वीर निज लाज विगोये ॥
 सुभग अस्त्र पट भूषण नाना * लव धरि अश्व ऋच्छ हनुमाना ॥

छन्द- सुभ अस्त्रपट भूषण सुमर्कट ऋच्छ संग हय धर चले ।

सिय निकट नायो माथ दोउ सुत भेंटि भूषण जे भले ॥

पहिवानि कपि दोउ निरखि भूषण महमि सिय धरणी परी ।

इहि बीच मुनिवर सदन आयें सियहिं अति विनती करी ॥

हनुमान भालुहिं छाड़ि बंगहि त्याग बहु समुझायऊ ।

रिपुदमन लल्लिमन महित भरतहिं राम समर सुवायऊ ॥
 मुत कीन्ह कर्म कलंक कुल महँ मोहिं विधि विधवा करी ।
 तजि मोच चंदन अंगर आनहु जाउँ पिय संग अब जरी ॥
 सुनि धीर जानकि देइ लव कुश संग लै साद चले ।
 रथ देखि वालक चकित चितवहिं विहँसि मन मंशय भले ॥
 रण देखि कर पहिचान प्रभु कहँ जाय मुनि चरनन पड़े ।
 उठि बैठि कोशलनाथ आतुर तनय तव आगे खड़े ॥

सोरठा-सुनि मुनिवर के बैन, जागे रघुपति भयहरण ।

बिहँसि उघारेउ नैन, लीन्हें हृदय लगाय मुनि ॥५॥

प्रभुहिं देखि मुनि अति हर्षाने ❀ बार बार निज भाग्या बखाने ॥
 जेहि विधि शेष सीय बन आनी ❀ मुनि सो सबही कह्यो बखानी ॥
 लव कुश कथा सकल मुनि भाखी ❀ शिव विरंचि सूरज कर माखी ॥
 मिले तनय दोउ हृदय लगाई ❀ सुधा वर्षि सुर सैन जिवाई ॥
 भरत आदि जागे सब भ्राता ❀ लक्ष्मण चले जहाँ गिय माता ॥
 बहुरि राम लक्ष्मणहिं बुलाई ❀ सुनहु तात अस वचन सुनाई ॥
 ऐसे वचन मानि मम भाई ❀ सिय मन दिव्य लेहु तुम जाई ॥
 लक्ष्मण जाय शीश सिय नावा ❀ कुशल कही बहु विधि समुझावा ॥
 हरि इच्छा तिन मन अस आवा ❀ शैव सहस्रफणि आन दिखावा ॥

दोहा-जटितमणिन सिंहासनहिं, सादर सीय चढ़ाय ।

भये अलोप पतालमहँ, महिमा किमि कहि जाय ॥५६॥

लक्ष्मण चरित देखि सब ठाढ़े ❀ नयन प्रवाह चले अति गाढ़े ॥
 सकल चरित सुनि कृपानिधाना ❀ चलन हमार सीय मन जाना ॥
 तनय महित पुनि निजपुर आये ❀ दीन दान शुभ यज्ञ कराये ॥
 जेहि जेहि विधि सुर आयसु दीने ❀ कोटि कोटि विधि सोइ प्रभु कीने ॥
 कोटिन धेनु धाम धन धरणी ❀ दीन कृपानिधि को सक वरणी ॥
 भोजन विविध भाँति करवाये ❀ विदा कीन्ह मुनिवृंद बुलाये ॥
 जनकहिं पूजि विदा प्रभु कीन्हा ❀ दोउ पद पूजि पयोदक लीन्हा ॥
 आये जनक गुरुहिं पहुँचाई ❀ बैठे प्रभु महिदेव बुलाई ॥

दोहा-लक्षलक्ष वर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पायँ ।

एक एक विप्रन दर्ई, हर्षित कोशलगाय ॥६०॥

गे सब मुनि सज्जन निज धामा * पायो अमित अमित सुखरामा ॥
 पुरवासी आये सब झारी * सुनहिं पुराण अनंद सुखारी ॥
 जे जड़ चेतन जीव घनेरे * सचराचर कोशलपुर केरे ॥
 तिन सुख बढ़त सुनत सुरराया * करहिं विनोद विहाय अमाया ॥
 यहिविधि विपुलकाल चलि गयऊ * निजपुर गमन सो अवसर भयऊ ॥
 बीती अवधि ब्रह्म तब जानी * नारद मुनि सन कहा बखानी ॥
 निजपुर आवन चहहिं खरारी * धर्मराज कहँ करहु हँकारी ॥
 विनती बहु बिरंचि तब भाखी * चले धर्म रघुपति उर राखी ॥
 द्वारपाल लक्ष्मण कहँ जानी * बोलेउ तापस अति मृदुवानी ॥
 तुरत शेष तब खबर जनार्ई * सुनत बचन आये रघुराई ॥
 मुनिहिं निरखि प्रभु कीन्ह प्रणामा * सादर उचित कहेउ श्रीरामा ॥
 अर्घ्य दीन्ह आगे बैठारी * मुनिवर मुन्दर गिरा उचारी ॥
 सुनु सर्वज्ञ कृपालु दिनेशा * आयमु मुनिवर तापस बेपा ॥
 हम तुम रहैं अवर ना कोई * तिमरे सुनत नाश तेहि होई ॥
 सुनै शब्द तेहि देउँ शरापू * विधि हरिहर आवै जो आपू ॥
 सुनहु लषण चलि बैठहु द्वारे * ना कोउ आव न गिरा उचारे ॥
 मम कर बध आवै पुनि कोई * मरहिं सत्य यह वृथा न होई ॥

दोहा-बोलेउ तापस बचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ ।

कहा सकल इतिहास मुनि, कपि मुनि नायो माथ ॥६१॥

प्रभु इच्छा भावी बलवाना * दुर्वासा मुनि आय तुलाना ॥
 मुनिहिं देखि लक्ष्मण चलि आगे * गये निकट विनती अनुरागे ॥
 पँछेउ मुनि कहँ रघुकुल ईशा * जाउँ तहाँ मैं सुनहु अहीशा ॥
 जो प्रति उत्तर करिहौं आजू * भस्म करौं तब घर पुर राजू ॥
 कम्पेउ लषण सुनत मुनि वानी * निजबध जाना चलेउ भवानी ॥
 दोउ कर जोर कही प्रभु मनहीं * दुर्वासा मुनि आवन चहहीं ॥

तात कीन्ह अति अत्रगुण भारी * काल कर्मगति टरै न टारी ॥
कीन्ह वचन दिनकर कुल केतू * सुनहु खगेश कथा कर हेतू ॥
दोहा--तुरत कहेउ मुनि आनहु, सादर कृपानिधान ।

चलहु वेगि मुनि तुरत अब, कहा राम भगवान ॥६२॥

छन्द--अति तेज पुञ्ज विलोकि आरति उचित उठि आसन दियो ।
जल आनि सादर चरण धोये सुभग पादोदक लियो ॥
जन जानि मुनिवर देहु आयसु वेगि मो सादर करौं ।
बहुकाल क्षुधित कृपायतन विन अशन दिन भर मैं परौं ॥
मनभाव भोजन दीन रघुपति बहुत विधि विनती करी ।
संतोष पाय मुनीश अस्तुति करि विनय आशिष भरी ॥
करि विदा मुनिवर देखि लक्ष्मण हृदय दारुण दुख भये ।
भरतादि अनुज समेत पुरजन ताहि छिन देखत भये ॥
पदवंदि ठाढ़े जोरि दोउ कर बदन लखि अति कंपहीं ।
भरि नयन पंकज नीर आरत भरत सन प्रभु सब कही ॥
अब गुरुहि आनहु वेगि सादर दुखित अति आतुर गये ।
सब कथा गुरुहि सुनाय आतुर यान चढ़ि आवत भये ॥
आये बशिष्ठ विलोकि रघुपति विकल उठि चरनन परे ।
संवाद मुनि मुनि समय जान्यो त्यागिहै हमको हरे ॥
मुनि वचन शेष विचार निज उर राम विन धिक जीवना ।
गहि चरण सरसूतीर आये देखि जल शुभ पावना ॥

दोहा--कटि प्रणाम जल मध्य में, कीनी ध्यान अखण्ड ।

योगयत्न करि राम कहि, फोन्यो निज ब्रह्मण्ड ॥६३॥

राम धाम पहुँचे तुरत, लपण चतुर्थम भाग ।

सुनि व्याकुल रघुपति भरत, मिटेउ सकल अनुराग ॥६४॥

मैं नहिं तज्यों तज्यों मोहिं ताता * अब करु यत्न सो देखहु भ्राता ॥
करहु भरत पुर जन्म सुखारी * सुनत गिरेउ महि व्याकुल भारी ॥
चलन चहत अब प्राण गुसाईं * प्रभु लक्ष्मण विनुरह न सकाईं ॥
तात चलहु कहि तनय बुलाई * कीन्ह तिलक बहु भाँति सिखाईं ॥

भरत सुतनय शील वैनामा * दक्षिण नगरदियो तिहि रामा ॥
दुसरे पुष्कल जेहि जग जाना * पुहकर नगर दीन भगवाना ॥
प्रथम दैत्य हति तहाँ बसाये * दीन कृपानिधि तिन मन भाये ॥
चित्रकेतु अद्भुत रणधीरा * लक्ष्मण तनय सुभट गंभीरा ॥
दोहा--पश्चिम दिशा पिशाच बहु, जीति हते संग्राम ।

तहँ राखे सुत सरिस दोउ, विलग विलग कहि नाम ॥ ६५ ॥
अवध नृपति कुश कीन्ह निहोरी * सिखै नीति पुनि कह्यो बहोरी ॥
भ्रातन पर सुत दया करेहू * राजनीति उर माहिं धरेहू ॥
उत्तर नगर सु उत्तर दूरी * सुख संपदा जहाँ अति रूरी ॥
लव कहँ दीन कृपानिधि सोई * पट्टरि अवध नगर नहिं कोई ॥
आठ सहस रथ तुरंग पचासा * दस सहस्र गज मत्त विलासा ॥
लजहिं इंद्रगज तिनहिं विलोकी * दिगपालन निज प्रभुता रोकी ॥
शक्र कुबेर देखि सकुचाने * तिनकी महिमा कौन बखाने ॥
इकइक सुतन दीन रघुराया * वरणि को सकै मुनहु खगराया ॥
धनद कोटि सम भरे भंडारा * यथा योग करि भाग उदारा ॥
दोहा--सकल तनय परितोपकरि, विदा कीन्ह रघुवीर ।

विप्रवृन्द याचक सकल, लिये बोलि मति धीर ॥ ६६ ॥
धेनु वमन धरणी धन धामा * दिये द्विजन किये पूरणकामा ॥
याचक सबै अवध के वामी * बोले प्रभु मन अज अविनामी ॥
हम भरि जन्म चरण अनुरागी * अन्तकाल अव होत अवागी ॥
जो जन जान लेहु प्रभु साथी * करहु कृपानिधि मकल सनाथी ॥
सुनि सनेहमय वचन सुहाये * चलहु कहेउ प्रभु अति सुख पाये ॥
समय जानि कपिपति तहँ आवा * अंगद राज दीन सुख पावा ॥
जाम्बवन्त लंकापति वीरा * नल अरु नील द्विविद रणधीरा ॥
सोरठा-कह प्रभु सुन लंकेश, राज कल्पशत करहु तम ।

वचन अचल मम शेष, अंत अमरपुर गवन करु ॥ ६७ ॥

कोटिन कीश जु सुर अवतारी * आये जहाँ कृपालु खरारी ॥
 जाम्बवन्त मन कह मृदु बानी * रहु द्वापर भर अस जियजानी ॥
 कृष्ण रूप धरि मिलिहौं तोहीं * समर भूमि तब जानेसि मोहीं ॥
 मव कहँ मवविधि धीरज दीना * आप गमन सरयू तट कीना ॥
 दक्षिण भरत वाम रिपुदमनू * पुरवासी सब निजकुल तरनू ॥
 अग्नि वेद गायत्री छन्दा * धरि निजरूप चले सुरबृन्दा ॥
 पीताम्बर पट सुन्दर धारी * जड़ चेतन चर अचर सुखारी ॥
 प्रथम रूप धरि सुन्दर आई * जस कळु कीन्ह सो सुनु खगराई ॥
 समय जानि तब पवनकुमारा * बोले वचन कृपा आगारा ॥
 दोहा-चिरंजीव सुत रहहु तम जब लगि रवि शशि शेष ।

तुहि सेवत मिटिहहि सकल, दुस्तर कठिन कलेश । ६८ ॥

चतुरानन पहुँ धर्म मिधाये * सरयू तीर जगत पति आये ॥
 चले देव अज भव मनकादी * जो मुनि परम अलौकि अनादी ॥
 कोटिन रथ बाहन विधि नाना * अरुण अकाश न जाइ बखाना ॥
 नभपर जय जय जय धुनि होई * पावहिं वर सुर याचहिं जोई ॥
 देखि नाक रथ मग परिछाहीं * जिमिगिरि कृमिनभपंथ उड़ाहीं ॥
 करि पुर सगज देव तनु धारी * पाइ चतुरभुज रूप सुखारी ॥
 चढ़ि विमान प्रभु धाम मिधाये * सकल अपरमित कहँ सकुचाये ॥
 सुमन बृष्टि नम होत अपारा * होइ नाद विधि वेद उचारा ॥
 छन्द-उच्चरित वेद प्रमन्न भरत कृपालु हंसि सादर लयो ।

जल परसि कर रिपुदमन सादर पद्म बन राजा भयो ॥
 कपि आदि यूथप राखि उर प्रभु सकल निज २ घर गये ।
 सुग्रीव प्रभु पद बंदि वारहिं वार रविमंडल छये ॥
 सुर सहित दिनकर वंश भूषण आय जल आश्रित रहे ।
 तेहिसमय बोलि अनादि प्रभुज वचन पावनमय कहे ॥
 इक माम रहु तुम नीर तहँ ममपुरी आवजु आवहीं ।
 तेहि सुभग देहु विमान पद निर्बान जो मम पावहीं ॥
 अति प्रीति रुचिर सनेह मज्जहिं मन चरण रति है सदा ।

तरि जाय सुरपुर सकल सादर सुनहु मम वाणी मुदा ॥
 जे जन्म भरि मम संगवासी रहे निशि वासर सदा ।
 तिन तुरत आनो सहित सादर सुनहु मम वाणी मुदा ॥
 कहि वचन अन्तर्धान प्रभु जिमि दामिनी घनमें धमै ।
 नभ जयति जय जय कार जय जय जयति कगलै सुर लमै ॥
 इहि भाँति रघुपति सह चराचर लै गये निज धामको ।
 सो कछो उमहिं कृपायतन उर राखि सादर रामको ॥१६॥

दोहा--गिरिजा सन्त समागमहिं, सम न लाभ कछु आन ।
 विनु हरिकृपा न होय सो, गावहिं वेद पुरान ॥ ६८ ॥
 इहि विधि सबसम्बाद सुनि, प्रकृतित गरुड़ शरीर ।
 बार बार तेहि चरण गहि, जानि दास रघुवीर ॥ ६९ ॥

मैं कृतकृत्य भयों तव वानी * सुनि प्रभुकथा भक्ति रससानी ॥
 राम वरण नूतन रति भयऊ * बहुविधि नाथ मोहिं मुख दयऊ ॥
 मोपर होय न प्रति उपकारा * वन्दों तव पद बारहिं बारा ॥
 पूरण काम राम अनुरागी * तुममम तात न कोउ बड़भागी ॥
 मोहिं जलधि वोहित तुम भयऊ * तव प्रताप मंशय सब गयऊ ॥
 मंत विटप सरिता गिरि धरणी * परहित हेत सवन की करणी ॥
 संत हृदय नवनीति समाना * कहा कविन पर कहे न जाना ॥
 निज परिताप द्रवै नवनीता * पर दुख द्रवहिं सुमन्त पुनीता ॥
 जीवन जन्म सफल मम भयऊ * पर पुनीत विबुध सुख दयऊ ॥
 जानहु मदा मोहिं निज किंकर * पुनि पुनि उमा कहेउ विहंगवर ॥
 दोहा--तासु चरण शिरनाय करि, हृदय राखि रघुवीर ।
 गयउ गरुड़ वैकुण्ठ तव, प्रेमसहित मतिधीर ॥७०॥

इति लवकुशकाण्ड समाप्त ।



